

तर्जुमा

क़ुरान शरीफ़

अनुवादक

श्री मौलवी अहमद बशीर, एम. ए.

कामिल, दबीरकामिल, मौलवी (फ़िरंगी महल)

सम्पादक

ग़ुलाम मुहम्मद क़ुरैशी

राहतगढ़ (सागर) म. प्र.

प्रकाशक

श्री प्रभाकर साहित्यालोक

रानीकटरा — लखनऊ

छठवाँ-संस्करण

मूल्य आठ रुपया

कम्पोज—
वर्णमाला टाइप फाउण्ड्री,
रानीकटरा, लखनऊ।

मुद्रक—
अधिकार प्रेस,
लखनऊ।

शुद्धि--पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
ग	१७	४-सोलहवाँ	४-पन्द्रहवाँ
ग	१७	कहफ़	बनी इसराईल
ग	१७	३०७	२६५
३५	१६	वज़स	वज़ह
४३	२३	ख़ु ा	ख़ुदा
४६	१६	ा	का
४६	२०	मुज़ ल्फ़ा	मुज़दल्फ़ा
८३	१८	(आ ि रत में)	(आख़िरत में)
८५	१३	म्ल तुहर	तुम्हारा
८५	१४	ा ा अलह	अल्लाह
१७१	१५	अलह लह म ारे	अल्लाह हमारे
१६०	४	ा गभ	भाग
२२८	१०	इनक कोई ि ान८ हामता	इनका कोई हिमायती
२३३	२१	बछेड़ा	बछड़ा
२३६	२४	बानय	बयान
२३७	४	लिए ो ज	लिए जो
२४७	२६	पू ा र	पूरा
२५६	१२	अयाता ६	आयात ६
२६५	२०	(ब नज़माक्षुः७) बद२ लक	जब कि ज़मीन बदलकर
२६५	२१	! सदूी	दूसरी
२६५	२२	ख़ु कद जबास्दर	ख़ुदा जबरदस्त
२६८	१	२८ [चादहवाँ ६ पारा]	२६८ [चौदहवाँ पारा]
२८८	२६	बरद आश्त करने वाला गेरे	बरदाश्त करने वाला और

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६३	१३	पर जा	पर ला
२६५	७	×	(१०६) ★ [सिजदा ४]
३०७	६,१०	★ [सिजदा ४]	×
३१६	२६	(फ़िरहौन)	(फ़िरऔन)
३५७	२०	अल्लाह को	अल्लाह जो
३६३	१७	जिह	जिस
३६६	१४	उनछा	उनका
३८४	१८	अ ।	और यह
३६३	१०	अदन वाले	अदब वाले
४६३	१३	जुल्म होगा	जुल्म न होगा
४८३	२०	हव	हम
४८५	२२	पक	एक
५२१	२५	ि या	दिया
५३०	२६	।	ले लें।
५६६	१२	सूरेर	सूरे
५६६	१३	औ	और
५७८	१४	१८	८१

प्रेस के प्रमाद-वश, इस संस्करण में होगई छपाई की अशुद्धियों का यह शुद्धिपत्र प्रस्तुत करते हुये, पाठकों से नम्र निवेदन है कि पुस्तक हाथ में आते ही इसके अनुसार यथास्थान संशोधन कर लें।

इस कष्ट के हेतु पाठकों से क्षमायाची—

प्रकाशक

"तर्जुमा क़ुरान-शरीफ़" की पारा-तालिका । (क)

पारा शुमार	नाम-पारा	सफ़ा	रुकूअ	आयत	सूरत
—	—	१६	(१)	(७)	सूरे फ़ातिहा-७
१	अलिफ़-लाम-मीम	१६	१६	१४१	,, बक़र-१४१-
२	सयक़ूल	४०	१६	१११	,, बक़र १११-
३	तिलकरु सूल	६०	१७	१२५	,, बक़र ३४ आल इमरान ६१-
४	लन्तना	८१	१४	१३२	,, आल इमरान १०६, निसा २३-
५	वल्मुहसनात	१०१	१७	१२४	,, निसा १२४-
६	लायुहिब्बुल्लाह	११८	१४	१११	,, निसा २६, मायदा ८२-
७	इज़ा समिउ	१३५	१६	१४८	,, मायदा ३८, अनआम ११०-
८	वलौ अन्नना	१५४	१७	१४२	,, अनआम ५५, आराफ़ ८७-
९	क़ालल्मलउल	१७१	१८	१५६	,, आराफ़ ११६, अन्फ़ाल ४०-
१०	वालमू	१९०	१७	१२८	,, अन्फ़ाल ३५, तौबा ९३-
११	यातज़िरून	२०८	१६	१५०	,, तौबा ३६, यूनिस १०९, हूद ५
१२	वमामिन दाब्बतिन	२२६	१६	१७०	,, हूद ११८, यूसुफ़ ५२-
१३	वमा उबर्रिऊ	२४६	१६	१५५	,, यूसुफ़ ५६, राद ४३, इब्राहीम ५२, हिज्र १-
१४	रुबमाँ	२६६	२२	२२६	,, हिज्र ९८, नहल १२८,
१५	सुभानल्लज़ी	२८४	२१	१८५	,, बनी इसराईल १११, कहफ़ ७४-
१६	क़ालअलमअक़ुल	३०४	१७	२६९	,, कहफ़ ३६, मरियम ९८, ताहा १३५
१७	इक़ तरबलिन्नास	३२६	१७	१९०	,, अम्बिया ११२, हज्ज ७८
१८	क़दअफ्लहलमौमिनून	३४४	१७	२०२	,, मौमिनून ११८, नूर ६४, फ़ुर्क़ान २०-
१९	वक़ालल्लज़ीन	३६२	१९	३४३	,, फ़ुर्क़ान ५७, शुअरा २२७, नम्ल ५६-
२०	अम्मन खलक़	३८२	१६	१६६	,, नम्ल ३४, क़सस ८८, अन्कबूत ४४-

२१	उत्लुमा ऊाहया	४०१	१६	१७६	पूरे अन्कबूत २५, रूम६०, लुक़मान ३४, सिजदा ३०, अहज़ाब ३०-
२२	नमैं यक़्नुत	४१६	१८	१६३	,, अहज़ाब४३, सबा५४, फ़ातिर ४५, यासीन २१-
२३	वमालिय	४३७	१७	३६३	,, यासीन ६२, साफ़्फ़ात १८२, साद ८८, ज़ुमर ३१-
२४	फ़मन अज़लमु	४५७	१६	१७५	,, ज़ुमर ४४, मोमिन ८५, हामीम सिजदा ४६-
२५	इलैहि युरद्दु	४७४	२०	२४६	,, हामीम सिजदा ८, शूराय ५३ ज़ुखरुफ़ ८६, दुखान ५६ जासियह ३७,
२६	हामीम	४६३	१८	१६५	,, अहक़ाफ़ ३५, मुहम्मद ३८, फ़तह २६. हुजरात १८, क़ाफ़ ४५. ज़ारियात ३०-
२७	क़ाल फ़मा खत्बुकुम	५१३	२०	३६६	,, ज़ारियात ३०, तूर ४६, नज्म ६२, क़मर ५२, रहमान ७८ वाक़िया ६६, हदीद २६,
२८	क़द समि अल्लाह	५३३	२०	१३७	,, मुजादिला २२, हश्र २४, मुम्तहिना १३, सफ़्फ़ १४, जुमा ११, मुनाफ़िक़ून ११, तग़ाबुन १८, तलाक़ १२, तहरीम १२,
२६	तबारकल्लज़ी	५५३	२२	४३१	,, मुल्क ३०, क़लम ५२, हाक़्क़ा ५२, मआरिज ४४, नूह २८, जिन्न २८, मुज़्ज़म्मिल २०, मुद्दस्सिर ५६, क़यामत ४०, दहर ३१, मुर्सलात ५०
३०	अम	५७३	३६	५६४	,, नबा ४०, नाज़ियात ४६, अबस ४२, तकवीर २६, इन्फ़ितार१६, मुतफ़्फ़ीन (ततफ़ीफ़) ३६, इन्शिक़ाक़ २५, बुरूज२२, तारिक़ १७, आला १६, ग़ाशियह२६,

☞ पृष्ठ (ग) पर सम्पूर्ण

पारा अम क्रमशः

फ़जर ३०, बलद २०, शम्स १५, लैल२१, ज़ुहा११, अलम नशरह (इन्शिराह)८, तीन ८, अलक़१९, क़दर ५, बय्यिनह८, ज़िलज़ाल८, आदियात ११, क़ारियह ११, तकासुर ८, असर ३, हुमज़ह९, फ़ील ५, क़ुरैश ४, माऊन ७ कौसर ३, काफ़िरून ६, नसर ३, लहब ५, इखलास ४, फ़लक़ ५, नास ६

आयात क़ुरान- ६२३६
रुकूअ— ५५८

क़ुरान शरीफ़ में सिजदा (सूची)।

सिजदा	पारा		नाम सूरत		रुकू	आयत	सफ़ा (पृष्ठ)
१	नवाँ	पारा	सूरे	आराफ़	२४	२०६	१८५
२	तेरहवाँ	,,	,,	राद	२	१५	२५६
३	चौदहवाँ	,,	,,	नहल	६	५०	२७६
४	सोलहवाँ	,,	,,	कहफ़	१२	१०९	३०७
५	सोलहवाँ	,,	,,	मरियम	४	५८	३११
६	सत्रहवाँ	,,	,,	हज्ज	२	१८	३३७
	सिजदा शाफ़ई	,,	,,	हज्ज	१०	७७	३४४
७	उन्नीसवाँ	,,	,,	फ़ुर्क़ान	५	६०	३६५
८	,,	,,	,,	नम्ल	२	२६	३८०
९	इक्कीसवाँ	,,	,,	सिजदा	२	१५	४१४
१०	तेईसवाँ	,,	,,	साद	२	२४	४५०
११	चौबीसवाँ	,,	,,	हामीम सिजदा	५	३८	४७३
१२	सत्ताईसवाँ	,,	,,	नज्म	३	६२	५२०
१३	तीसवाँ	,,	,,	इन्शिक़ाक़	१	२१	५८२
१४	तीसवाँ	,,	,,	अलक़	१	१९	५९२

क़ुरान शरीफ़ में पठन क्रमांक व अवतरण क्रमांक।

१०१	३०	सूरे क़ारियह	५६४	१०८	१५	सूरे कौसर	५६७
१०२	१६	,, तकासुर	५६५	१०६	१८	,, काफ़िरून	५६७
१०३	१३	,, असर	५६५	११०	११४	,, नस्र	५६८
१०४	३२	,, हुमज़ह	५६५	१११	६	,,लहब	५६८
१०५	१६	,, फ़ील	५६६	११२	२२	,, इख़लास	५६६
१०६	२६	,, क़ुरैश	५६६	११३	२०	,, फ़लक़	५६६
१०७	१७	,, माऊन	५६७	११४	२१	,, नास	५६६

क़ुरान शरीफ़ में अवतरण क्रमांक व पठन क्रमांक

अवतरण क्रं.	पठन क्रमांक	नाम सूरत	सफ़ा	अवतरण क्रं.	पठन क्रमांक	नाम सूरत	सफ़ा
१	६६	सूरे अलक़	५६१	१५	१०८	सूरेकौसर	५६७
२	६८	,, क़लम	५५५	१६	१०२	,, तकासुर	५६५
३	७३	,, मुज़्ज़म्मिल	५६५	१७	१०७	,, माऊन	५६७
४	७४	,, मुद्दस्सिर	५६६	१८	१०६	,, काफ़िरून	५६७
५	१	,, फ़ातिहा	१६	१६	१०५	,, फ़ील	५६६
६	१११	,, लहब	५६८	२०	११३	,, फ़लक़	५६६
७	८१	,, तक्वीर	५७८	२१	११४	,, नास	५६६
८	८७	,, आला	५८४	२२	११२	,, इख़लास	५६६
६	६२	,, लैल	५८६	२३	५३	,, नज्म	५१७
१०	८६	,, फ़ज्र	५८६	२४	८०	,, अबस	५७६
११	६३	,, ज़ुहा	५६०	२५	६७	,, क़द्र	५६२
१२	६४	,, इन्शिराह	५६१	२६	६१	,, शम्स	५८८
१३	१०३	,, असर	५६५	२७	८५	,, बुरूज	५८२
१४	१००	,, आदियात	५६४	२८	६५	,, तीन	५६१

नोटः-हरएक रुकू के सामने, रुकू में आयात की तादाद (संख्या) लिखी हुई है।

——०——

प्रस्तावना

वैसे तो (धर्म-ग्रंथ) 'क़ुरान पर एक दृष्टि' शीर्षक से मेरी निजी प्रस्तावना शुरू से इस हिन्दी अनुवाद के हर संस्करण के आरंभ में दी जा रही है। लेकिन छठे संस्करण में कुछ बातें उल्लेखनीय होने के कारण ये कुछ पंक्तियाँ पाठकों और पुस्तक-विक्रेताओं की जानकारी के लिए दी जा रही हैं।

हमारा यह अनुवाद अत्यंत लोकप्रिय हुआ और आलिमों और जनता ने इसकी बराबर सराहना की। फिर भी इस अनूठे ग्रंथ में जितनी भी तौसीफ़ (प्रशस्तता) लाई जाय थोड़ी है। नियत तो हमारी हमेशा यही रही है, जिसका सुबूत हमारी वह सन् १९५२ से लगातर मेहनत और लगन है जिसके फलस्वरूप न केवल यह अनुवाद वरन् क़ुरान मूल हिन्दी अक्षरों में अनुवाद सहित की हस्ब-मन्शा (इच्छानुकूल) तैयारी कर लेने में हम समर्थ हुये हैं। किन्तु बिना ईश्वर की कृपा के इच्छा रहते भी कोई काम होने का सुयोग होता नहीं। हमारे दोस्त श्री अहमद बशीर साहब (अनुवादक) की भाँति ही, गत वर्ष सागरनिवासी श्री ग़ुलाम मोहम्मद साहब क़ुरैशी का सहयोग हमको प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। क़द्र की बात यह है कि क़ुरैशी साहब ने नेकी भी गला बाँध कर हमें बख्शी। ऐसे लोग कम होते हैं।

क़ुरैशी साहब ने पाँच संस्करणों से छप रहे इस अनुवाद में छपाई, प्रूफ़ अथवा किसी भी प्रमादवश आ गये दोषों को दुरुस्त किया। हिन्दी में नुक़्तेदार हुरूफ़ों को लोग भूल सा रहे हैं—उन्होंने हर वाजिब अक्षर पर नुक़्ता देकर सही उच्चारण को प्रस्तुत किया। हर रुकू में आयतों की संख्या, हर सूरत पर उनकी अवतरण और पठन-क्रम की संख्या तथा समुचित स्थान पर सिजदा-संकेत देते हुये, प्रथक इन सबकी एक निर्देश-तालिका (Index) भी तैयार की। इन ख़ूबियों से इस लोकप्रिय अनुवाद में और भी चाँद लग गये हैं। क़ुरैशी साहब के इस सहयोग के हेतु आभार-

प्रदर्शन के साथ-साथ हम उनसे भविष्य में भी पथ-प्रदर्शन पाकर यथासंभव उसका सदुपयोग करने का यत्न करेंगे। पाठकों को उत्तरोत्तर संतोष प्राप्त होता रहेगा।

इधर नावेल क़िस्सेज़ात छापने वालों ने भी इस प्रकार के कामों में हाथ डालना शुरू किया है। उनकी दाढ़ में बिना दीदारेज़ी और परिश्रम के अर्थोपार्जन का स्वाद लग गया है। उनके बस की बात यह नहीं। संसार में साहित्य और ग्रंथों की कमी नहीं। बुद्धिजीवी मौलिकता लाते हैं— यह केवल पैसे से नहीं क्रय की जा सकती; इसके लिए लगन, श्रम और संतोष की ज़रूरत होती है। दूसरों की बुद्धि पर कमाने वाले के बस का यह नहीं। 'परहेज़गार' के लिए 'मुन्किर' और 'नायब' के लिए 'मददगार' उनके लिए कोई खास फ़र्क़ नहीं रखता। हमारा इतना लिखना यथेष्ट है। इससे ज़्यादा फ़िक्र लेना पाठकों व ताजिरों का काम है।

क़ुरान मूल टीका सहित प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है, उसका ज़िक्र पहले किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त प्रोफ़ेसर हिट्टी कृत 'संक्षिप्त अरब का इतिहास' (मैकमिलन कं., लन्दन द्वारा अंग्रेज़ी में प्रकाशित) का हिन्दी संस्करण उनसे अधिकार प्राप्त करके हमने प्रकाशित किया है। इसके अलावा और भी कुछ इस्लामी पुस्तकें हमने प्रकाशित की हैं जिनका विवरण इस अनुवाद की पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर दिया है। और भी यथासाध्य सेवा करते रहेंगे।

पाठकों और विद्वानों के सहयोगापेक्षी।

नन्दकुमार अवस्थी

—प्रकाशक-
श्री प्रभाकर साहित्यालोक
रानीकटरा, लखनऊ

१ सितंबर १९६४ ई.

कुरान पर एक दृष्टि

सर्वशक्तिमान, सारे संसार का स्वामी, सृजन-पालन-संहार का एकमात्र अधिकारी, जगदीश्वर, परमेश्वर अथवा खुदा एक ही है, यह आस्तिक (खुदा में एतक़ाद रखनेवाले) जगत में सबको मान्य है। उसी प्रकार जीव और ईश्वर के सम्बन्ध तथा एक प्राणी का दूसरे प्राणी से सम्बन्ध समझते हुए भगवत्-प्राप्ति अथवा परमशांति (नजात) तक पहुँचने के लिये कुछ मूल सिद्धांत भी हैं, जिन पर किसी को मतभेद नहीं। उपासना पूजा का ढंग) भले ही देश-काल-पात्र के अनुसार एक दूसरे से कुछ अलग हो परन्तु उन मूल सिद्धांतों को, साधनों को, सब धर्म मानते हैं। इसलिये ईश्वर के समान ही मानव-धर्म भी एक है, अनेक नहीं। फिर भी सारा मानव-समूह समय-समय पर और एक ही समय में अनेक धर्मों में बटा हुआ दिखाई देता है। हम यह समझने लगते हैं कि धर्म अनेक है और प्रत्येक धर्म का वैकल्पित ईश्वर दूसरे धर्म के ईश्वर से भिन्न तथा अपने समर्थकों का पक्षपाती और दूसरे धर्मावलम्बियों का शत्रु है। इस भ्रांति में फँसकर एक ही सृष्टिकर्ता की रचना और एक ही मूल पुरुष (आदम) की संतानें धर्म के नाम पर परस्पर एक दूसरे के प्रति कैसे-कैसे अनाचार करती रही हैं, सारा इतिहास इसका साक्षी है।

परम शान्ति के पथ से भटककर, लुभावने संसारी जीवन में फँसे हम लोग अपने-अपने स्वार्थ और पिपासा की तृप्ति के लिए धर्म के नाम पर जाने या अनजाने अनेक छोटे-बड़े गुटों में बँटकर छिन्न-भिन्न हो गये। दार्शनिक वर्ड्सवर्थ ने कहा है—"जगत्पिता की परमानन्द-दायिनी प्रकृति के सर्वसुलभ सुखों को छोड़कर मनुष्य ने नाना प्रकार के अपने ही रचे हुए बंधनों में अपने आपको जकड़कर कितना दुखी कर लिया है। हाय! मानव ने मानव को किस दुर्गति में पहुँचा दिया है।" राग और द्वेष में फँसा, अहंकार की मूर्ति तथा अपने को ही कर्ता-धर्ता माननेवाला आसुरी मनुष्य किसी भी विगत जननायक, महात्मा अथवा पैगम्बर के नाम पर उसी की शिक्षाओं के प्रतिकूल अनाचार में प्रवृत्त हो जाता है। और इसी अनाचार एवं दुराचार से जब लोक काँप उठता है तब गीता और क़ुरान के अनुसार, गुनाह (पाप) और कुफ़्र (नास्तिकता) को मिटाने और सही

मार्ग को दिखाने के लिये ईश्वर-कृपा से किसी महान शक्ति, ईश्वरदूत, वली, पैग़म्बर अथा जननायक का अवतार होता है।

उदाहरणस्वरूप, आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व, अरब मरुस्थल और उसके आस-पास के भूखण्ड में, रूढ़िवादिता के नाम पर चल रहे दम्भ, पाखण्ड, अनाचार और व्यभिचार से त्रस्त जनता को, अज्ञान के अन्धकार से निकालकर सत्य अथवा ज्ञान के प्रकाश में लाने के निमित्त ईश्वर की अनुकम्पा से मुहम्मद-जैसा महात्मा और क़ुरान-जैसा ज्ञान अवतरित हुआ। परन्तु धर्म से केवल अपना स्वार्थ साधन करनेवाले अरब मठाधीशों, राजनैतिक और सामाजिक सामन्तों और उनके चंगुल में फँसी हुई रूढ़ि और परम्परा की शिकार, त्रस्त और कराहती हुई भ्रांत जनता तक ने उस अपौरुषेय क्रांति का घोर विरोध किया। फिर भी हज़रत मुहम्मद और उनके अनुयायी अनेक अत्याचार और संकटों को झेलकर अपने सर्वस्व बलिदान (बैअत) द्वारा ईश्वर-कृपा से जनकल्याण करने में सफल हुए। उस भूखण्ड में अधर्म का नाश हुआ और धर्म की एक बार पुनः स्थापना हुई।

अस्तु, उस क्रांति को सफल बनानेवाली, ईश्वरीय ज्ञान और सत्य का भण्डार, तत्कालीन राजनैतिक और सामाजिक दुरवस्था से छुटकारा दिलाने वाली और एक ही परमपिता परमेश्वर में अखण्ड विश्वास उत्पन्न कराने वाली पुनीत पुस्तक क़ुरान में क्या है? उस क़ुरान को मुसलमान अब किस रूप में समझते हैं, विशेषकर भारतीय मुस्लिम और मुस्लिमेतर बन्धु? नीचे की पंक्तियों में कुछ चर्चा इसी संबन्ध में है।

अरब भूखण्ड की प्राचीन झलक

अरब का अर्थ ही मरुभूमि है। एशिया के दक्षिण-पश्चिम में यह रेगिस्तान-प्रधान देश भी अति प्राचीन काल में आद, समूद-जैसी उन्नत जातियों के अधिकार में सभ्यता के शिखर पर आसीन था। इस सूखे प्रदेश में उपजाऊ घाटियाँ और हरे-भरे स्थल भी हैं। अरब के आस-पास के देश और अफ़्रीका में मिस्र और अबीसीनिया (हब्श) तक यहाँ के धर्म, आचार और सभ्यता का प्रायः सदैव प्रभाव रहा। ईसा से हज़ार डेढ़ हज़ार वर्ष पूर्व इन प्राचीन और परम उन्नतिशील जातियों के काव्य, कला और

कौशल के उत्कर्ष की साक्षी, उस समय की प्रचलित सैकड़ों किंवदंतियाँ और तत्कालीन इमारतों के ध्वंसावशेष आज भी विद्यमान हैं।

क़ुरान-अवतरण क्यों ?

क़ुरान की आयतों से स्पष्ट है—"परमेश्वर की कृपा से संसार के सभी भूखण्डों में ईश्वर-दूत (अथवा जननायक) अवतरित होते रहते हैं और उनके द्वारा सत्य और ज्ञान का प्रकाश होता है। जातियाँ और गिरोह सन्मार्ग पर चलकर समुन्नत होते हैं, और वही जातियाँ और गिरोह कालान्तर में उन्नति की चकाचौंध, स्वार्थ एवं अहंकार में भटककर अधर्म के मार्ग में फँसे, ईश्वर के कोप से नष्ट होते हैं। फिर उनके स्थान पर नवीन समूह नये जननायकों के राह बताने पर ईश्वर-कृपा से सुख और समृद्धि प्राप्त करते हैं। ईश्वर एक है, भले ही उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाय। सभी अवतार, वली या पैग़म्बर आदर के पात्र हैं और उनके द्वारा प्राप्त सत्य और ज्ञान सब की संपत्ति है।" धर्म-ग्रन्थ क़ुरान में ऐसे अनेक महापुरुषों की चर्चा आई है और अनेक की चर्चा नहीं भी आई है जो अन्यत्र हुए हैं। वे सब धर्म-शिक्षक और धर्म-ग्रन्थ एक दूसरे के विपरीत नहीं वरन् एक दूसरे के समर्थक और प्रतिपादक हैं। क़ुरान का ज्ञान, जो ईश्वरीय ज्ञान है, किसी एक पोथी में अथवा एक भाषा तथा जन-समुदाय के लिये सीमित नहीं। ईश्वरदूत हज़रत मुहम्मद द्वारा, अरबी भाषा में क़ुरान इसलिये अवतरित हुआ कि उस भाषा के भाषी और उस भूखण्ड के निवासी अपनी उस समय की धर्म-विपरीत दशा को त्याग कर ईश्वर और ईश्वरीय मार्ग को पहचानें। क़ुरान की आयतें हज़रत मुहम्मद के पास ज्ञान के प्रकाश-स्वरूप उदय होती थीं, न कि किसी किताब की शक्ल में। इसीलिये लिखा है कि क़ुरान 'लौह महफ़ूज़' अर्थात् लोहे की पेटी में सुरक्षित है, अर्थात् कोई भूले या भटके वह ज्ञान सर्वकालीन और चिरस्थायी है। क़ुरान-काल से पूर्व अवतरित तौरेत, ज़बूर और इन्जील आदि धर्म-पुस्तकों, और इब्राहीम, हूद, सालेह, लूत, शुऐब, दाऊद, मूसा, ईसा आदि पैग़म्बरों का क़ुरान समर्थन करती है। इन धर्म-ग्रन्थों और महापुरुषों के अनुयायी उनके उपदेशों को त्यागकर एक मनगढ़न्त और

अपने स्वार्थ में ढाले हुए आचरण को धर्म मानकर उनके नाम पर चलते थे। ऐसा प्रायः सभी देशों, काल और धर्मों में देखने को मिलेगा। आज मुसलमान भी दुर्बलता के शिकार होने से बचे नहीं हैं और न दूसर ही मतावलम्बी। अस्तु, आज से प्रायः १४०० वर्ष पूर्व अरब की इसी शोचनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिये क़ुरान और मुहम्मद का जन्म हुआ।

मुहम्मदकालीन प्रचलित मत-मतान्तर

क़ुरान में जिन उपदेशों पर बार-बार और विशेष ज़ोर दिया गया है, उससे तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक पतन का पूरा पता लगता है। स्थल स्थल पर विभिन्न गिरोह शासन करते थे। स्वेच्छाचारी महन्त, धर्माधीशों और सामन्तों का बोलबाला था। प्रचलित मतमतांतरों में प्रधानतः चार समूह उल्लेखनीय हैं। ईसाई, यहूदी, मज्जूसी (अग्नि-उपासक) और मुश्रिक। मुश्रिक से तात्पर्य उन लोगों से है जो उपासना में ईश्वर के साथ-साथ अन्य महापुरुषों, देवी-देवताओं तथा मूर्तियों को भी शरीक (शिर्क) करते हैं। अरब के प्रधान नगर मक्का की प्रबल और प्रधान जाति क़ुरैश प्रायः मुश्रिक ही थे। अग्नि उपासक भी मुश्रिकों की श्रेणी में लाये जा सकते हैं। यहूदी और ईसाई क्रमशः तौरेत और इंजील धर्म-पुस्तकों और हज़रत मूसा और ईसा के अनुयायी थे। वह भी एक ईश्वरवाद के समर्थक थे और क़ुरान भी इन पैग़म्बरों के धर्म-ग्रंथों को मानती है। किन्तु जो दैनिक आचार इन लोगों का उस समय था वह स्वयं इनकी धर्म-पुस्तकों के प्रतिकूल था। उदाहरण के लिये देखिये। तौरेत के अनुसार शनिश्चर को मछली का शिकार वर्जित था। यहूदियों को सप्ताह के इस एक दिन में भी मछली का अभाव खटकने लगा। वे शुक्रवार को गड्ढे खोदकर खाड़ियों से जल उनमें भर लेते। शनिश्चर को उस जल की मछलियाँ पकड़कर खाते और कहते कि यह शिकार तो धर्मानुसार शुक्रवार को ही कर लिया गया था। इसी प्रकार ईसाई एकमात्र ईश्वर की उपासना न कर ईसा को भी ईश्वर का पुत्र मानकर पूजने लगे। यही नहीं, यहूदी और ईसाई एक ही प्रकार की धर्म-शिक्षा मानते हुए भी यह कहते थे कि मूसा और ईसा

ईश्वर से सिफ़ारिश करके अपने-अपने अनुयायियों के पापों की क्षमा प्राप्त करवा देंगे; इस प्रकार अन्य धर्मावलम्बियों की अपेक्षा नरक से बच जायेंगे। मुश्रिक तो नाना प्रकार की देव-मूर्तियों की उपासना में ही मस्त थे। मक्का के प्रधान मन्दिर काबा में ही ३६० मूर्तियाँ थीं। इन सब में 'हुब्ल' देवप्रधान थे। मुश्रिक तो मूर्ति-पूजा में ऐसा उलझे कि परमात्मा को भूल ही गये। उन मूर्तियों को अपने उचित और अनुचित सभी सुखों को प्राप्त करानेवाला समझकर उन्हीं में लिपट गये। हाँ, धार्मिक दृष्टि से दो वर्ग और थे। एक साइबी, जो सभी मतों की अच्छी बातों को मानते थे और किसी धर्म के विरोधी न थे, दूसरे मुनाफ़िक़ अर्थात् वह धूर्त जो किसी-न-किसी धर्म का अनुयायी अपने को बताते हुए भी कोई भी धर्माचरण न करते और कुमार्ग और भ्रांति की ही बातें सदैव करते थे। उदाहरण के लिये जो अधिक दान देता उसके लिये कहते कि पाखंडी है और धन का वैभव दिखाता है और यदि कोई धनहीन भी दान न दे पाता तो उसे कहते कि कैसा स्वार्थी और मक्खीचूस अथवा अभागा है। मुसलमान होते हुए भी ये मुनाफ़िक़ (वञ्चक) निन्दनीय हैं।

मुहम्मदकालीन सामाजिक स्थिति

क़ुरानकाल और उससे पूर्व, सामाजिक आचरण उच्छृंखलता (मनमानी) की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। क्या यहूदी और ईसाई आदि अद्वैतवादी और क्या मुश्रिक-जैसे द्वैतवादी, सब, अपने-अपने प्राचीन शुद्ध धार्मिक सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़कर अपने स्वार्थों के अनुकूल बनाये चल रहे थे। पूजन, बलिदान, उपासना सब कुछ अपनी श्रेष्ठता और दूसरों को तिरस्कृत करने के भाव से होती थी, सब में आसुरी भाव का समावेश था। गीता का कथन है—"आढ्योऽभि जनवानस्मि कोऽन्योस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञान विमोहिताः" अर्थात् "मैं बड़ा धनवान और बड़े कुटुम्बवाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है। मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा, हर्ष को प्राप्त होऊँगा, इस प्रकार के अज्ञान से मोहित हैं" यही सब ओर चरितार्थ था। शराब, सूदखोरी, महन्ती, सामंती, व्यभिचार, अप्राकृतिक व्यभिचार, स्त्रियों को पशुवत् हीन समझना, लड़की-

लड़कों में भेद, कन्याओं का वध, घटतौली, दूसरे धर्मों के प्रति असीह-ष्णुता, ग़ुलामों के साथ अमानुषिक व्यवहार तथा पैग़म्बरों और धर्मगुरुओं एवं संतों का क़त्ल, समाज में चारो ओर हो रहा था। अरब की पुरानी सभ्यता और कला-कौशल नष्ट हो चुका था। विचरते हुए बद्दुओं का-सा जीवन था। पिता की स्त्रियों को पिता के मरने के बाद पुत्र आपस में दाय-भाग के समान बाँटकर अपनी स्त्रियाँ बना लेते थे। यह सब क़ुरान अथवा तत्कालीन उपलब्ध अन्य साहित्य से प्रगट होता है। इन्हीं बातों का खण्डन, इन अपराधों के लिये कठोर दण्ड और विश्व के सभी धर्मों को मान्य सदाचार और सन्मार्ग की पुनर्स्थापना ही क़ुरान का अभीष्ट था।

हज़रत मुहम्मद

क्रूरता, नृशंसता के स्वेच्छाचार में सराबोर अरब के इसी अज्ञान-काल के विक्रमीय संवत् ६१७, ईसवी ५६० (हर्षवर्धन काल) में मक्का के प्रसिद्ध क़ुरैश-वंश के हाशिम-परिवार में मुहम्मद का जन्म हुआ। इनकी माता का नाम आम्ना और पिता का अब्दुल्ला था। इनके पिता इनके गर्भकाल में ही स्वर्गवासी हुए। माता धनहीन थीं और शायद मुहम्मद के स्वावलम्बी होने के लिये ही ईश्वर-प्रेरणा से ५ वर्ष की अवस्था में वह माता से भी वंचित हो गये। ८ वर्ष की अवस्था में इनके एकमात्र स्नेही और अभिभावक पितामह (बाबा) भी संसार से चल बसे। अब इनका भार इनके चचा अबूतालिब पर आ पड़ा। अबूतालिब के स्नेहमय संरक्षण में पशुओं को चराते, खेलते-कूदते उनका स्वच्छन्द बाल्यकाल बीता। युवावस्था में ही उनको अनेक ईसाई सन्तों का समागम प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप, काबा में स्थित मूर्तिपूजा के विकृत स्वरूप ने उनके मन को अधिक विद्रोही होने में प्रेरणा दी।

सदाचारी मुहम्मद धर्म और नीति दोनो में कुशल थे। सत्य और धर्म की स्थापना और रक्षा के हेतु नीति को अपनाना वह उचित मानते थे। उदाहरण के लिये रमज़ान के माह में युद्ध मना था। किन्तु यदि शत्रु उस समय आक्रमण करें तो उनके साथ उस समय युद्ध अनुचित नहीं। यदि शत्रु की आशंका हो तो नमाज़ (प्रार्थना) के अवसर पर भी हथियारबन्द

रहना चाहिए। अस्तु, उन्होंने उस समय मक्का में प्रचलित रूढ़ि और पाखण्डवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई। कोई देश और कोई काल क्यों न हो, 'बाप-दादा के चल रहे धर्म' पर आस्था होना स्वाभाविक है। कोई यह नहीं सोचता कि बाप-दादों की शृंखला, जब से सृष्टि चल रही है, जोड़ी जाय तो गिनी नहीं जा सकती। उन बाप दादों ने समय-समय पर कितनी भिन्न-भिन्न मान्यतायें मानीं और उनमें कितने सुर-असुर सभी होते रहे, इसका विचार कोई नहीं करता। अस्तु, उसी बाप-दादा से प्राप्त तत्कालीन पाखण्डवाद और अनाचार में ग्रस्त क़ुरैश-वंश, युवक मुहम्मद के खण्डनात्मक तर्कों से कुपित हो, उसे कष्ट देने लगा। छिपते, भागते फिर भी अपने मार्ग पर दृढ़ मुहम्मद धीरे-धीरे लोगों को अपने मतानुकूल बनाते रहे। आरम्भ में तो यह हाल था कि वह अपने प्रकार की (इस्लाम के अनुसार) नमाज़ भी खुलकर नहीं पढ़ सकते थे। इनके निज के परिवार के लोग, इनके चचा अबुजहल आदि इनके परम शत्रु बन बैठे और इनके वध का भी यत्न करने लगे। हाँ, इनके संरक्षक और चचा अबूतालिब, जो कहा जाता है मुसलमान तो अन्त तक न हुए, परन्तु इनके सदैव सहायक रहे।

विचारों में समुन्नत और क्रांतिकारी होते हुए भी मुहम्मद पढ़े-लिखे न थे। ईश्वर-कृपा और सत्संग से ४० वर्ष की अवस्था में उन्हें 'जिब्राइल' फ़रिश्ता (देवदूत) के दर्शन हुए और तब से उन्हें क़ुरान की आयतों का ज्ञान प्रगट होता रहा। यहीं से उनकी पैग़म्बरी आरम्भ हुई। यह ज्ञान-पद 'आयतें' कहलाती हैं। मुहम्मद ने इन आयतों को मक्का के प्रतिष्ठित मन्दिर के धर्माचार्यों और जनता, सभी को सुनाना-समझाना आरम्भ किया। अबूबकर (इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा) हज़रत अली (मुहम्मद साहब के दामाद) तथा कुछ और ज़ोरदार व्यक्ति इनके अनुयायी हो चुके थे। इनका बल कुछ बढ़ता देख क़ुरैश सरदारों को अपनी प्रतिष्ठा और स्वार्थ की हानि का भय हुआ। उन्होंने इस्लाम के अनुयायियों पर असहनीय अत्याचार आरम्भ कर दिये जिससे भयभीत हो वे मुहम्मद साहब की आज्ञा से अरब छोड़-छोड़कर अफ्रीका के हब्श प्रदेश में जा बसने लगे।

इसी बीच इनके शक्तिशाली चचा अबूतालिब का भी देहान्त हो गया। क़ुरैशों का रहा-सहा भय भी जाता रहा। उन्होंने एक दिन इनकी हत्या का षड़यन्त्र रचा डाला। किन्तु ईश्वर-कृपा से, पूर्वही सूचना मिल जाने के कारण ५३ वर्ष की अवस्था में वे मक्का से मदीना नगर को चुपचाप प्रस्थान कर गये। इस मक्का-प्रस्थान को 'हिजरत' कहते हैं, और उसी काल से हिजरी सम्वत् का आरम्भ माना जाता है।

मुहम्मद साहब इस्लाम के अन्तिम प्रवर्तक (खातिमुन्नबी) माने जाते हैं। रसूलेख़ुदा, पैग़म्बर, नबी आदि श्रेष्ठ और परम श्रद्धासूचक सम्बोधनों से उन्हें पुकारकर मुस्लिम धर्मावलम्बी अपने को गौरवान्वित समझते हैं। आरम्भ ही से उनके अनुयायी और सहयोगी 'सहाबाई' कहलाते हैं और मदीना आने पर जिन लोगों ने उनके लिये और इस्लाम के लिए आत्म-समर्पण किया वे अन्सार (सहायक) कहलाते हैं। दोनो ही का स्थान पवित्र और श्रेष्ठ था परन्तु कभी-कभी अपने-अपने दृष्टिकोण से एक दूसरे से अधिक प्रधानता के अधिकारी समझने की होड़ में फँस जाते थे।

इस्लाम धर्मावलम्बियों के लिये तो क़ुरान सर्वस्व है ही परन्तु धर्म, नीति, समाज, न्याय, आचार आदि की सर्वतोमुखी शिक्षा देनेवाला यह पवित्र ग्रन्थ इस्लामेतर बन्धुओं के लिये भी माननीय और आदरणीय है। प्रत्येक आयत का किसी-न-किसी घटना, व्यक्ति अथवा उस समय के वर्तमान किसी ऐतिहासिक तथ्य से सम्बन्ध अवश्य है। बिना उसको समझे और ध्यान में रखे, आयत के अर्थ को समझने जानने में भ्रम की सदैव आशंका है।

क़ुरान की आयतों और सूरतों का संकलन और वर्गीकरण मुहम्मदसाहब के बाद इस्लाम के खलीफ़ा तथा अन्य प्रमुख सहाबा व अन्सारों के सहयोग से हुआ, और उसी संग्रह को हम सब आज क़ुरान के रूप में मानते हैं।

मदीना आने के बाद इस्लाम में दीक्षित लोगों की सख्या तो बहुत बढ़ने लगी फिर भी रसूल का जीवन शान्तिमय न रहा। मुसलमान और काफ़िरों मे बराबर युद्ध चलते रहे, मुश्रिकों और यहूदियों से विशेषकर। मक्का-विजय और वहाँ के प्रतिष्ठित देवल काबा की मूर्तियों को ध्वंस करने के बाद

से मुश्रिकों का बल तो टूट ही गया बाद में जो युद्ध हुए, वे प्रायः यहूदियों ईसाइयों और फ़ारस के अग्निपूजकों से हुए।

मक्का-विजय के बाद भी मुहम्मद साहब मदीना में ही निवास करते रहे। वहीं ६३ वर्ष की आयु में अपने मिशन को पूरा कर मुसलमानों को विछोह में डाल वे संसार से विदा हो गये। उनकी मृत्यु के बाद वही हुआ, जो संसार में सर्वत्र और सदैव होता आया है। सादा जीवन और उच्च विचार का आचरण क्षीण पड़ने लगा। क़ुरान की ही व्यवस्था को त्यागकर लोग खिलाफ़त के नाम पर बादशाहत के सुख भोगने लगे। इस्लाम के नाम पर वही सब काम होने लगे जो उसमें वर्जित हैं। राजसी पोशाक, महल, दास-दासी, रत्न-आभूषण, साम्राज्य को बढ़ाने के लिये बड़े-बड़े युद्ध, बरबस धर्म-परिवर्तन और क़त्ले-आम, सभी कुछ अपनी आत्मपिपासा के लिये होने लगा। यही सब देख-पढ़कर जो मुसलमान नहीं हैं, वह समझने लगे कि क़ुरान की शिक्षा कदाचित् यही है, और मुसलामान स्वयं भी यही समझने लगे कि क़ुरान की शिक्षा यही है, इसी के अनुकरण से सवात्र और धर्म का पालन होगा। इतना ही नहीं, इस्लाम के नाम पर इस्लाम के विपरीत आचरण ने ही मुसलमानों में उस गृह-युद्ध को जन्म दिया जिससे स्वयं उनका समुदाय सदैव के लिये छिन्न-भिन्न हो गया। इसकी बहुत कुछ ज़िम्मेदारी क़ुरैश गोत्र के ही उमैया-वंश पर थी जिसका बीज इस्लाम के तीसरे खलीफ़ा हज़रत उस्मान के समय पड़ा और हज़रत मुआविया के समय से फलने-फूलने लगा।

क़ुरान

परन्तु क़ुरान' क़ुरान ही है। वह अति पवित्र है। किसी की शत्रु नहीं, सबकी सखा, सबको हितकर। थोड़ा परिचय नीचे दिया जाता है।

क़ुरान की आयतों का अभ्युदय महात्मा मुहम्मद के द्वारा उनकी चालीस वर्ष की अवस्था में रमज़ान के पुनीत मास से आरम्भ होकर मरण पर्यन्त होता रहा। यह ३० खण्डों (पारों) और ११४ सूरतों (अध्यायों) में सम्पूर्ण होता है। प्रत्येक सूरत (अध्याय) में कई-कई रुकूअ (विराम विशेष) हैं और प्रत्येक रुकूअ में अनेक आयतें (ज्ञान-वाक्य) हैं। जो

सूरतें मक्का में नाज़िल (अवतरित) हुईं वह मक्की और जो मदीना में अवतरित हुईं वह मदनी कहलाती हैं। सूरतों का विभाग किसी विशेष प्रसंग अथवा विषय को लेकर नहीं है। प्रायः अनेक विषय और कथानक मिले-जुले से स्थल-स्थल पर वर्णित हैं। एक ही चर्चा बार-बार भी आई है।

आयतों की भाषा अरबी है, इसलिये कि इस ज्ञान का अवतरण उस समय अरब-निवासियों के उद्धार के लिये ही हुआ था। भाषा गद्य होते हुए भी अनुप्रासों की भरमार से अत्यन्त ललित और आकर्षक है। उदाहरण के लिये देखिये—"वन्नाज़िआति ग़रक़न् (१) + वन्नाशिताति नश्तन् (२) + वस्साबिहाति सब्हन् (३) + फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (४) + फ़ल् मुदब्बिराति अम्रन् (५)।" ईश्वरीय ज्ञान महात्मा मुहम्मद के हृदय में समय-समय पर जब उदय होता तो इसी को 'आयत' अथवा 'वही' का उतरना कहते हैं।

क़ुरान के अनुसार एक ईश्वर ही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करनेवाला है। सर्वत्र निराकार स्वरूप का प्रतिपादन है। कहीं-कहीं साकार-जैसा भी वर्णन प्राप्त है, जैसे "ईश्वर सृष्टि-रचना करने के उपरांत अर्श पर जा विराजा", "फ़रिश्ते अर्श को उठाये हैं" आदि। परन्तु वस्तुतः बार-बार यही शिक्षा आई है जिससे प्रभावित होकर, मनुष्य किसी प्रकार की भी साकार उपासना न करके ईश्वर-विमुख होने के कुफ़्र से बचा रहे।

इस्लाम नवीन धर्म नहीं

'इस्लाम' के अर्थ यह नहीं कि केवल १४०० वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद द्वारा कोई नवीन मत अथवा धर्म की स्थापना हुई थी। आदि से चले आ रहे मानव धर्म, संसार के विभिन्न देश और काल में अवतरित धर्मग्रन्थ और आप्त पुरुषों द्वारा प्रदर्शित, बहुत समय पूर्व हज़रत इब्राहीम और सर्वोपरि मूलपुरुष हज़रत आदम का मान्य एक मात्र मार्ग ही इस्लाम धर्म है, भले ही वह किसी नाम से पुकारा जाय। क़ुरान का कथन है कि "पहले एक ही जाति और धर्म था।" बाद में लोगों के भटकने पर समय-समय पर महापुरुष और धर्मग्रन्थ पथ-प्रदर्शन के लिये आते रहे, और पुनः इन्हीं के अनुयायी भ्रान्तिवश अपने-अपने को पृथक-पृथक धर्म

का अनुयायी कहने लगे। ईश्वर को सर्वांग आत्मसमर्पण ही वास्तविक सनातन धर्म है जिसका क़ौरानिक इस्लाम निर्देश करता है।

क़ुरान के अनुसार यह भी पुष्ट है कि मूल और अपरिवर्तनशील धर्म के अतिरिक्त दैनिक व्यवहार देश-काल-पात्र के भेद से आवश्यकतानुसार बदलते रहते हैं। मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी पर आक्षेप करते हुए तत्-कालीन धर्माचार्य कहते थे कि ईश्वर-दूत भला मनुष्य ही के समान सोता-खाता है! उसे तो अलौकिक होना चाहिए। इस पर क़ुरान का कथन है कि नहीं, पैग़म्बर भी तुम मनुष्यों के ही समान होता है, सांसारिक धर्मों में वह भी सकल जनों के समान ही बँधा है। वह तो भगवत् प्रेरणा से अलौ-किक ज्ञान का जगत् में प्रकाश करता और भूले-हुओं को राह बताता है। धर्म-प्रदर्शन के लिए ईश्वरप्रेरित महान पुरुष मृत्यु पश्चात् अपने अनुयायियों द्वारा उपास्य देव अथवा ईश्वरत्व का साम्राज्य भोगने लगते हैं। जनता कभी इस भ्रान्ति में न पड़े इसलिये 'मुहम्मद केवल प्रेरित मात्र हैं, ईश्वर अथवा उसके साथ में पूजा-उपासना के अधिकारी नहीं' इस पर बहुत ज़ोर दिया गया है।

क़ुरान में नारी का स्थान

समाज की जननी और निर्माता नारियों की दशा उस समय अरब में अति दयनीय थी। वे केवल विलास और सेवा की सामग्री समझी जाती थीं। उन्हें पुरुषों की बात को काटने तक का अधिकार न था। एक साथ अनेक पत्नियाँ रखना, यहाँ तक कि पिता के मरने पर अन्य सम्पत्ति के समान उसकी स्त्रियाँ भी पुत्रों में बाँट ली जाती थीं। ऐसी विपरीत दशा में स्त्रियों के लिए सम्पत्ति में उत्तराधिकार, तलाक़, मेहर (विवाह में पत्नी को दिया जानेवाला दहेज़) और निकाह आदि के नियम और संयम क़ुरान में एक महान क्रान्ति के परिचायक हैं। अपनी निकाह की हुई पत्नी के अतिरिक्त किसी भी स्त्री के साथ व्यभिचार उतना ही निषिद्ध और दण्डनीय था जितना स्त्री के लिए दुश्चरित्रा होना। क़ुरान का कथन है—
"स्त्री अथवा पुरुष जो भी व्यभिचार का दोषी हो उसे १०० कोड़े की

सज़ा दी जाय। उनकी इस सज़ा पर लोग तरस न खायँ बल्कि उस अवसर पर तमाशा देखने को एकत्र हों ताकि वह लज्ज़ाजनक दृश्य दूसरों को शिक्षाप्रद हो।"

मूर्तिपूजा

मूर्तिपूजा का क़ुरान में सर्वोपरि विरोध है। कुफ़्र (नास्तिकता) का यह सबसे बड़ा लक्षण है। मूर्तिपूजा का जो विकृत स्वरूप उस समय अरब में फैला था उस गढ़े से समाज को निकालने के लिये यह आवश्यक था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस की माता काली की आराधना द्वारा भगवान् में तन्मयता और तल्लीनता को सामने रखकर साकार उपासना के शुद्ध स्वरूप से भले ही क़ुरान के प्रेरक को विरोध न हो फिर भी अपवाद को छोड़कर प्रायः यही भय सम्भव है कि भगवल्लीनता के स्थान पर मनुष्य भगवद्विमुख हो कालान्तर में ध्यान के इस साधन से, अपने को विभिन्न वर्गों में बाँटने और मानव के द्वारा मानव के शोषण में लग जाय इसलिए परिष्कृत से परिष्कृत स्वरूप में भी मूर्तिपूजा अथवा व्यक्तिपूजा क़ुरान को ग्राह्य नहीं।

'इखलास'

लोग मानें या न मानें, 'इखलास' इस्लाम का सार है। ज़रा गीता के संन्यास और योग के समन्वय की झलक देखिये। 'इखलास, मस्तिष्क की उस स्थिति का द्योतक है जब वह फल की कोई आशा न रखते हुए निष्काम भगवदर्पण कर्म करते हुए मनसा-वाचा-कर्मणा आत्मा को परमात्मा में लीन कर दे। स्वर्ग और मोक्ष तक की कामना 'इखलास' में बाधक है— (तफ्सीर कबीर)। "इखलास के साथ मेरा ही भजन करनेवाला मुझे सबसे पहले प्राप्त करेगा।" "मानवमात्र की सेवा ही प्रधान कर्म है।" "किसी का अधिकार छीननेवाला ईश्वर के एकत्व में कभी विश्वास नहीं करता।" 'जेहाद' भी इसी निष्काम और निस्संग कर्म का ही स्वरूप है। "अपने को भूलकर, अपने स्वार्थों को त्यागकर, क़ुरान के अनुसार ही कर्म करते-करते बलिदान हो जाना" इस प्रकार आचरण (इबादत) करनेवाला ही मुस्लिम है। यही इस्लाम है। यही इब्राहीम आदि का आचरित सनातन धर्म है।

फ़रिश्ता-शैतान

क़ुरान में फ़रिश्ते और शैतान की चर्चा का बाहुल्य है। मनुष्य को कुमार्ग पर रोकने और प्रेरित करनेवाला सद्बुद्धि और पापबुद्धि ही के यह प्रतिनिधि है। पवित्रता, सच्चरित्रता, व्रत-उपवास (रोज़ा), प्रार्थना (नमाज़), अनाथों की रक्षा, वृद्ध, स्त्रियों और अन्य धर्मों के आचार्यों के बध और उन पर अत्याचार का निषेध, बलिदान (क़ुर्बानी), खाद्य-अखाद्य (हराम-हलाल), तीर्थ-यात्रा (हज्ज-उम्रा), प्रायश्चित्त (कफ़्फ़ारा), दान-पुण्य (ज़कात), शरणार्थियों (ज़िम्मी) की सुरक्षा, दासप्रथा का विरोध, भ्रातृभाव, समानता; अकारण हिंसा, जुआ-शराब-घटतौली का निरोध, स्त्रियों को दायभाग, रजस्वला-काल में अस्पृश्यता, सृष्टि-रचना, प्रलय (क़यामत) कृपणता और फ़िज़ूलखर्ची दोनो की समान निन्दा, स्वाध्याय, उपासना, अतिथि-सत्कार आदि पंच महायज्ञों जैसे पुण्य कार्य, स्त्रियों का सम्मान, कन्याओं का बध तथा अनाथ धनापहरण का तिरस्कार—इस प्रकार सार्वभौम मान्य विधि और निषेध, प्रकारान्तर से पुनीत क़ुरान में भी स्थल-स्थल पर जनमात्र को चेतावनी देते हैं।

काफ़िर

इस्लाम के साथ 'काफ़िर' शब्द भी एक दिलचस्पी की वस्तु है। क्या मुसलमान और क्या अन्य धर्मावलम्बी—जनसाधारण को इसको समझने में भ्रान्ति रहती है। काफ़िर के अर्थ हैं 'इन्कार करनेवाला'। इस्लाम के अनुसार ईश्वर के एकत्व और सत्ता में अविश्वासी काफ़िर है। यदि यही अर्थ है तब तो किसी के मन को ठेस लगने की बात नहीं। एक विशेष अर्थवाची शब्द मात्र है, गाली नहीं। फिर भी कहनेवाला और जिसके लिये कहा जाय, दोनो ही 'काफ़िर' शब्द को अपमानजनक समझते हैं। इसका कारण एक विशेष व्यवहार का लम्बा इतिहास है।

काफ़िर दो प्रकार के होते हैं। एक तो वह जो इस्लाम को स्वीकार न कर ईश्वर के एकत्व को नहीं मानते अथवा उसके अतिरिक्त अन्य देवों की उपासना (शिर्क) करते हैं। दूसरे वह काफ़िर जो न केवल यही करते

वरन् मुसलमानों के धर्म में बाधा देकर उनके विरुद्ध युद्ध और अत्याचार करते हैं, जैसा सामना मुसलमानों को आरम्भ में मक्का में हुआ था। इन दूसरे प्रकार के काफ़िरों के लिए ही क़ुरान में आया है, "जहाँ पाओ उनका वध करो। उनके नाश में उस समय तक प्रवृत्त रहो जब तक एक ईश्वर धर्म की स्थापना न हो जाय।" पहले प्रकार के काफ़िर क़ुरान में सह्य हैं। हज़रत मुहम्मद साहब के अभिभावक और चचा स्वयं अबूतालिब अन्त तक मुसलमान न होते हुए भी सदैव सबके श्रद्धा के पात्र रहे। मदीना-प्रस्थान के आपत्तिकाल में मुश्रिकों की ही सहायता पैग़म्बर को बराबर प्राप्त हुई थी।

मुश्रिक द्वैत उपासनावादियों को कहते हैं। सब मुश्रिक काफ़िर हैं किन्तु सब काफ़िर मुश्रिक नहीं। उदाहरण के लिये, एक नास्तिक काफ़िर है किन्तु वह मुश्रिक नहीं कहा जायगा। यहूदी और ईसाई ईसा आदि को पूजने लगने पर भी मुश्रिक नहीं कहे जा सकते। साधारणतः हिन्दू मुश्रिक समझा जाता है। प्रचलित मूर्तिपूजा-पद्धति को देखते हुए इस्लाम के अनुसार वे काफ़िर या मुश्रिक हैं, केवल इसलिए यह अर्थ नहीं कि उनका नाश अथवा जबरन उनका धर्म-परिवर्तन इस्लाम को स्वीकार है। और वेदान्त दर्शन की भित्ति पर आधारित देवोपासन पर तो लाञ्छन क़ुरान की दृष्टि से भी नहीं आता।

तात्पर्य यह कि काफ़िर शब्द से मुस्लिम और अमुस्लिम जनता में उत्पन्न कटुता एक कोरी भ्रान्ति है। अपनी-अपनी अवस्था के अनुसार एक दूसरे के सह-अस्तित्व का विचार करते हुए दोनो एकसाथ मेल जोल से रहें, यही क़ुरान का आदेश है। "पृथ्वी के प्रत्येक भाग में, प्रत्येक गिरोह में सदैव महापुरुष आ-आकर ईश्वर का मार्ग दिखलाते रहे हैं। वे सभी आदरणीय और मान्य हैं। उनमें भेद डालनेवाले काफ़िर हैं।" भले ही संसार में वे किसी भी नाम से पुकारे जाते हों। मुनाफ़िक़ (वंचक-धूर्त) की सबसे अधिक निन्दा है। उनकी सद्गति असम्भव है। चाहे वह किसी भी धर्म के नाम-लेवा हों। काफ़िर के एक अर्थ यह भी हैं कि 'वह, जो

छिपाता है, अर्थात् बाहरी रूप तो कुछ है और उस आडम्बर के भीतर न जाने वह कितने राग-द्वेष और अहंकार को छिपाता है। संसार भले ही न जाने परन्तु खुदा से वह छिपा नहीं। अपने असली रूप को छिपाने वाले भी उपरोक्त अर्थ से काफ़िर की संज्ञा में आते हैं। ऐसे काफ़िर संसार के प्रत्येक धर्म में (इस्लाम में भी) दिखाई देंगे।

आईन (क़ानून)

आईन (न्याय) की भी क़ुरान में स्थान-स्थान पर व्यवस्था है। स्त्रियों को सम्पत्ति में भाग, निकाह, तलाक़ आदि के नियम, व्यभिचार पर स्त्री-पुरुष को समान ही कठोर दण्ड, गवाहियों का विचार, चोरी, हत्या आदि पर नियम और दण्ड का विधान है। दण्ड अति कठोर है। उदाहरण के लिए—"चोर के हाथ काट डालो", "प्राण के बदले प्राण, आँख के बदले आँख और प्रत्येक अंग के बदले उसी अंग का बदला अपराधी को मिले।"

स्वर्ग-नरक

इस्लाम के मूल लक्ष्य निःस्वार्थ भगवदर्पण के अतिरिक्त, सांसारिक सुखों की कामना करनेवालों को स्वर्ग का भी मार्ग है। स्वर्ग-नरक के भले-बुरे चित्र क़ुरान में भी प्राप्त हैं। मरुस्थल के लिए सर्वप्रिय और दुर्लभ जल-पूरित नहरें और सदाबहार उद्यानों की पुण्यकर्मी के लिये बड़ी चर्चा है। क़यामत (प्रलय) में सबके कार्यों का लेखा-जोखा होगा। उसमें किसी प्रकार की दया अथवा सिफ़ारिश काम न देगी।

शोषित-शोषक

एक बात बड़े मार्के की है। सूरः हूद की २७ वीं आयत मे उल्लेख है कि मक्का के धर्म और कुलाभिमानी मुश्रिक मुहम्मद साहब का उपहास करते और कहते कि तुम्हारे सहायक तो केवल वही लोग हैं जो हममें नीच हैं। इस कथन में एक सर्वकालीन सत्य की झलक है। संसार में जब-जब भी कोई क्रांति हुई अथवा सन्मार्ग और धर्म की स्थापना हुई है, तब-तब उस समय के मान्य धर्म और शक्ति के अधिकारी उस क्रान्तिदूत का विरोध और दमन करते रहे हैं और निम्न तथा शोषित वर्ग ही की सहायता से क्रान्ति सफल होती

रही है। आसुरी प्रवृत्ति से आच्छन्न, महान विद्वान और पराक्रमी ब्राह्मण-श्रेष्ठ रावण के विरुद्ध त्रस्त मुनियों तथा हेय वन्य जीवों द्वारा राम की सहायता, कैथेलिक साम्राज्यवाद से साधनहीन निहिलिस्टों और प्रोटेस्टेण्टों का मोर्चा, संस्कृताभिमानी उन्मत्त पण्डितों द्वारा तुलसी के नागरी ग्रन्थ मानस के परिहास को झेलकर आज उसी तुलसी-रामायण का अखिल भारत में साम्राज्य-भोग; और कल की बात है कि भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में किसान, मज़दूर आदि शोषितों के बल द्वारा ही हमारे राष्ट्रनायकों को अपने संकल्प में प्रधान सहायता प्राप्ति भी इसी की पुष्टि करते हैं। भारत की केवल पार्थिव बेड़ियाँ ही नहीं टूटीं वरन् इधर कई सदियों से चले आ रहे धनी-निर्धन, ऊँच-नीच स्पृश्य-अस्पृश्य तथा धर्म, पन्थ अथवा जातियों के नाम पर बँटे 'जीवस्य जीवाहार' में रत भारतीयों की आध्यात्मिक उन्नति का द्वार भी खुल रहा है।

अन्त में

इस समय विस्तार-भय से अधिक नहीं लिख रहे हैं। क़ुरान के एक निर्देश की ओर संकेत ज़रूरी है। "तुम्हारा किया तुम्हारे काम आवेगा, हमारा किया हमारे काम। एक का काम दूसरे की सहायता नहीं कर सकता।" इसलिए चाहे मुसलमानों के शिया, सुन्नी, क़ादियानी आदि विभिन्न फ़िर्क़ों में, और चाहे मुसलमान एवं अन्य धर्मावलंबियों के बीच, जो भी परस्पर व्यवहार भूतकाल में रहा हो, उसमें बीते हुए इतिहास को सामने रखकर वैर-प्रीति न करना चाहिए। बीते हुए लोग आज नहीं हैं। उनके कर्म और कर्मफल भी उन्हीं के साथ गये। अब क़ुरान तथा सभी धर्म-ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षा के अनुसार सद्भावना, सह-अस्तित्व और सर्व-कल्याण का मार्ग ही अपनाना सबको उपयुक्त है।

नन्दकुमार अवस्थी

क़ुरान शरीफ़

१ सूरे फ़ातिहा ५

यह सूरत (अध्याय) मक्के में उतरी; इसमें ७ आयतें १ रुकू है

'बि'-स्मिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम। अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आल-मीन्। (१) अर्रह्मा निर्रहीम् (२) मालिकि यौमिद्दीन। (३) इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्तईन। (४) इहदिन्-स्सिरा तल्मुस्तक़ीम। (५) सिरा तल्लज़ीन अन् अम्त अलैहिम। (६) ग़ैरि ल्मग़ज़ूबि अलैहिम् व लज़्ज़्वाल्लीन। (७) [रुकूअ १]

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

हर तरह की तारीफ़ खुदा ही को है, जो सब संसार का पालनहार है। (१) निहायत दयावान मेहरबान है। (२) न्याय के दिन (क़यामत, महाप्रलय) का मालिक। (३) ऐ खुदा! हम तेरी ही पूजा करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं। (४) हमको सीधी राह दिखला। (५) उन लोगों की राह जिन पर तूने कृपा की (६) न कि उनकी जिन पर तू गुस्सा हुआ और न भटके हुओं की। (७) [रुकू १ आयात ७]

पहला पारा (अलिफ़ लाम मीम)-२ सूरे बक़र ८७

सूरे बक़र मदीने में उतरी; इसमें २८६ आयतें और ४० रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान मेहरबान है। अलिफ़ लाम मीम† (१) यह वह पुस्तक है, जिसमें (कलामे खुदा होने में) कुछ भी संदेह नहीं, विश्वास (ईमान) लानेवालों को राह बताती है। (२)

---

† अलिफ़ लाम मीम, इनका क्या अर्थ है? इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं। इसका वास्तविक ज्ञान केवल ईश्वर ही को है। इस प्रकार के जितने अक्षर क़ुरान में हैं, उनको हूरूफ़ मुक़त्तआत कहा जाता है।

जो अनदेखे पर ईमान लाते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है, उसमें से खुदा की राह में भी ख़र्च करते हैं। (३) और ऐ मोहम्मद ! जो किताब (क़ुरान) तुम पर उतरी और जो तुमसे पहले (इंजील, तौरेत वग़ैरा उतरीं, उनको जो मानते × और क़यामत (प्रलय)§ पर भी विश्वास करते हैं। (४) यही लोग अपने परवरदिगार की सीधी राह पर हैं और यही मनमाने फल पायेंगे। (५) जिन लोगों ने इन्कार किया तुम उनको डराओ, या न डराओ, वह न मानेंगे ‡। (६) उनके दिलों पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर पर्दा है और क़यामत में उनके लिए बड़ी सज़ा है (७) [रुकू १ आयात ७]

लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान लाये, हालाँकि वह ईमान नहीं लाये। † (८) (वे) अल्लाह को और उन लोगों को जो ईमान ला चुके हैं, धोखा देते हैं, मगर नहीं जानते कि वह अपने आपको धोखा देते हैं। (९) उनके दिलों

× पिछली आसमानी किताबों (तौरेत, इंजील वग़ैरा) में आगे आनेवाली जिस आसमानी किताब का ज़िक्र है, वह अल्लाह की देन क़ुरान ही है। इसलिए उसमें लिखी हुई व पिछली किताबों में भी दी हुई बातों पर निस्सन्देह यक़ीन रखना व उनके दिखाये रास्ते पर चलना परहेज़गार (संयमी) का फ़र्ज़ है।

§ क़यामत (महाप्रलय) वह दिन होगा, जब संसार उलट-पलट और नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। जब किसी की बनावटी हुकूमत न रहेगी। सिर्फ़ सच्चा हाकिम खुदा ही न्याय-सिंहासन पर विराजता होगा और उसी की आज्ञा मानी जायगी।

‡ कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अच्छी बात सुनना ही नहीं चाहते, ऐसे लोग ईमान नहीं ला सकते।

† यहाँ से उन लोगों का हाल है, जो मुँह से तो अपने को मुसलमान कहते थे, पर दिल से काफ़िर थे। ये लोग इधर की बात उधर लगाते और झगड़ा खड़ा करते। जब उनको समझाया जाता, तो कहते कि हम दोनों दलों में मेल कराना चाहते हैं।

में इन्कारी का रोग था, अब अल्लाह ने उनका मरज़ बढ़ा दिया और उनको झूठ बोलने की सज़ा में दुखदाई दंड मिलना है।(१०) और जब उनसे कहा जाता है देश में फ़साद मत फैलाओ, तो कहते हैं हम तो मेल-जोल करानेवाले हैं। (११) और यही लोग फ़सादी हैं; परन्तु समझते नहीं हैं। (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह लोग ईमान लाये हैं, तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं, क्या हम भी ईमान ले आयें, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आये हैं ? सुनो ! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं ।(१३) और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान ला चुके हैं, तो कहते हैं, हम तो ईमान ला चुके हैं और जब एकांत में अपने शैतानों से मिलते तो कहते हैं—हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ़ (मुसलमानों से) मज़ाक करते हैं (१४) अल्लाह उनसे हँसी करता है और उनको ढील देता है। वे इस सरकशी में भटकते रहेंगे। (१५) यही हैं वह लोग जिन्होंने हिदायत (शिक्षा) के बदले भटकना मोल लिया, सो न तो इनका व्यापार (सांसारिक) ही लाभकारी हुआ, न सच्चे मार्ग पर ही क़ायम रहे। (१६) इनकी कहावत उन आदमियों§ की-सी है, जिन्होंने आग जलाई, फिर जब उनके आस-पास की चीज़ जगमगा उठी, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी (आँखें) छीन ली और उनको अँधेरे में छोड़ दिया। अब उनको कुछ नहीं सूझता। (१७) बहरे, गूँगे, अंधे की तरह वह सच्चे मार्ग पर नहीं आ सकते। (१८) उनकी यह मिसाल वैसी है जैसे कि आकाश से जल बरसे, उसमें अँधेरा, गरज और बिजली हो और उस वक़्त कोई मरने के डर से कड़क के मारे अँगुलियाँ कानों में ठूस लेता हो× अल्लाह इन्कार करने

§ कुछ लोग ऐसे थे जो पहले तो मुसलमान हो गये थे; लेकिन बाद में मुनाफ़िक़ बन गये। इन लोगों ने पहले ईमान की रोशनी देखी, फिर उससे हटकर मुनाफ़िक़त के अँधेरे में चले गये।

‡ सत्य को सुनने, कहने व देखने में असमर्थ।

× मेंह का अर्थ यहाँ इस्लाम है। मुसलमान तो खुदा का हर हुक्म मानते परन्तु मुनाफ़िक़ उन हुक्मों को न मानते जिनमें किसी तरह की कठिनाई-

वालों को घेरे हुए है। (१६) क़रीब है कि बिजली उनकी निगाहों को झपका दे, जब उनके आगे बिजली चमकी, तो उसमें कुछ चले और जब उन पर अँधेरा छा गया, तो खड़े रह गये, अगर अल्लाह चाहे तो उनके सुनने और देखने की शक्तियाँ छीन ले। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ की क़ूवत रखनेवाला है। (२०) [रुकू २ आयात १३]

लोगों! अपने पालनकर्त्ता को पूजा करो। जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं पैदा किया, ताज्जुब नहीं तुम (भी) परहेज़गार बन जाओ।(२१) जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन का फ़र्श बनाया और आसमान की छत। आसमान से पानी बरसाकर उससे तुम्हारे खाने के फल पैदा किये। पस, किसी को अल्लाह के बराबर मत बनाओ और तुम तो जानते हो।(२२) और वह जो हमने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर (क़ुरान) उतारी है, अगर तुमको उसमें शक हो, तो तुम उसके मानिन्द (उस शक्ल की) एक सूरत (अध्याय) बना लाओ और सच्चे हो, तो अपने हिमायतियों को बुलाओ।(२३) पस, (दोज़ख़ की) आग से डरो, जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और वह इन्कार करनेवालों (काफ़िरों) के लिए तैयार है।(२४) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, उनको, खुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए (बहिश्त के) बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब उनको उनमें का कोई मेवा खानेको दिया जायगा, तो कहेंगे, यह तो हमको पहले ही मिल चुका है और उनको एक ही प्रकार के मेवे मिला करेंगे और वहाँ उनके लिए बीवियाँ पाक-साफ़ होंगी और वह उनमें सदैव रहेंगे।(२५) अल्लाह किसी मिसाल के बयान करने में नहीं झेंपता, (चाहे वह मिसाल) मच्छर की हो या उससे भी बढ़कर तुच्छ हो†। सो जो लोग ईमान ला चुके हैं, वह तो विश्वास रखते हैं कि

होती। 'मीठा-मीठा हप कड़वा-कड़वा थू' वाली बात थी। दूसरे शब्दों में बिजली की चमक में चलते और जब उसकी कड़क सुनते तो न चलते।

† क़ुरान में कहीं-कहीं मक्खी और मकड़ी की भी मिसाल दी गई है। इसको सुनकर काफ़िर कहते थे कि खुदा को इन छोटी-छोटी चीज़ों की

यह उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से ठीक है और जो इन्कारी हैं, वह कहते हैं कि इस मिसाल के बयान करने में ख़ुदा को कौन-सी ग़रज़ थी। ऐसी ही मिसाल से ख़ुदा बहुतेरों को भटकाता और ऐसी ही मिसाल से बहुतेरों को नसीहत देता है; लेकिन पापियों को ही भटकाता है। (२६) जो पक्का किये पीछे ख़ुदा का अहद तोड़ देते और जिन सम्बन्धों को जोड़े रखने को ख़ुदा ने कहा है, उनको काटते और देश में फ़साद फैलाते हैं, यही लाग नुक़सान उठायेंगे।(२७) लोगों ! क्योंकर तुम ख़ुदा का इन्कार कर सकते हो और तुम बेजान थे, तो उसने तुममें जान डाली, फिर (वही) तुमको मारता (वही) तुमको जिलायेगा, फिर उसकी तरफ़ लौटाये जाओगे।(२८) वही है, जिसने तुम्हारे लिए धरती की चीज़ें पैदा कीं फिर आकाश की तरफ़ ध्यान दिया; तो सात आकाश हमवार बना दिये और वह हर चीज़ से जानकार है।(२९)[रुकू३ आ. ९]

जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने फ़रिश्तों से कहा—"मैं ज़मीन में नायब बनाना चाहता हूँ" (तो फ़रिश्ते) बोले—क्या तू ज़मीन में ऐसे को (नायब) बनाता है, जो उसमें फ़साद फैलाये और ख़ून बहाये ? हम स्तुति-वन्दना के साथ तेरी बड़ाई बयान करते हैं। बनाना है, तो नायब हमें बना। (ख़ुदा ने) कहा —मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।(३०) और आदम को सब (चीज़ों के) नाम बता दिये; फिर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो, तो हमको इन चीज़ों के नाम बताओ। (३१) (फ़रिश्ते) बोले—तू पाक है, जो तूने हमको बता दिया है, उसके सिवा हमको कुछ मालूम नहीं। सचमुच तू ही जाननेवाला मसलहत पहचाननेवाला है।(३२) (तब ख़ुदा ने) हुक्म दिया कि ऐ आदम ! तुम फ़रिश्तों को इनके नाम बता दो; फिर जब आदम ने फ़रिश्तों को उन (चीज़ों) के नाम बता दिये, तो ख़ुदा ने फ़रिश्तों से कहा—क्यों ! हमने तुमसे नहीं कहा था कि आकाश की और धरती की

मिसाल न देना थी। ख़ुदा की ज़ात तो बड़ी है। इसका जवाब दिया गया है कि जब ख़ुदा ने इन छोटी चीज़ों को पैदा करने में शर्म न की तो उनकी मिसाल देते क्यों शर्माये।

सब छिपी चीज़ें हमें मालूम हैं और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम हमसे छिपाते थे (वह) हमको (सब) मालूम है। (३३) और जब मैंने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे झुको, तो शैतान को छोड़कर (सारे फ़रिश्ते) झुक पड़े। उसने न माना और शेख़ी में आ गया और हुक्मउदूली कर बैठा। (३४) और मैंने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी स्त्री बहिश्त में बसो और उसमें जहाँ कहीं से तुम्हारी जो तबियत चाहे बेखटके खाओ, मगर इस पेड़ के पास मत फटकना। (ऐसा करोगे) तो अपराधी हो जाओगे। (३५) पस, शैतान ने उनको बहकाया† और उनको निकलवाकर छोड़ा। मैंने हुक्म दिया कि तुम उतर जाओ, तुम एक के दुश्मन एक और ज़मीन में तुम्हारे लिये एक वक़्त तक ठिकाना और (जीवन काटने का) साज़ व सामान है। (३६) फिर आदम ने अपने पालनकर्त्ता से कुछ बातें सीख लीं और ख़ुदा ने उसकी तौबा मान ली। बेशक वह बड़ा ही क्षमा करनेवाला मेहरबान है। (३७) जब हुक्म दिया कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ, और हमारी तरफ़ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत पहुँचेगी तो जो हमारी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो डर होगा और न वह रन्जीदा होंगे। (३८) जो लोग मुन्किर (नास्तिक) होंगे और हमारी आयतों को झुठलायेंगे वह दोज़ख़ी होंगे, वह सदैव दोज़ख़ में रहेंगे। (३९) [रुकू ४ आयात १०]

ऐ बनी इस्राईल‡ (ऐ याक़ूब की संतान!) मेरे अहसानों को याद

---

† इब्लीस एक नेक 'जिन' था। अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्तों ने फ़सादी फ़रिश्तों को जब मारकर और डराकर जंगलों और पहाड़ों में भगा दिया, तो इब्लीस की प्रार्थना पर आकाश पर फ़रिश्तों ने उसे अपने साथ रख लिया। आकाश पर पहुँचकर इब्लीस ने बड़ी कठिन उपासना से अल्लाह को खुश करके खुद ज़मीन का मालिक बनना चाहा। लेकिन जब ज़मीन हज़रत आदम के सुपुर्द होने लगी तो इब्लीस ने ख़ुदा का हुक्म न माना और आदम का दुश्मन बन गया और तबसे उसने (शैतान ने) हमेशा इन्सान से दुश्मनी की।

‡ 'बनी इस्राईल' हज़रत याक़ूब के बारह बेटे व उनकी औलाद को कहते हैं। यह किसी समय मिस्र के बादशाहों (फ़िरऔनों) के कुशासन में पड़

करो जो हम तुम पर कर चुके हैं और तुम उस प्रतिज्ञा को पूरा करो जो मुझसे की हैं मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा जो मैंने तुमसे की है, मुझसे डरते रहो।(४०) और क़ुरान जो हमने उतारी है उस पर ईमान लाओ (और वह) उस किताब (तौरात) की तसदीक़ करता है जो तुम्हारे पास है। और (सबसे) पहले इसके इन्कारी न बनो और मेरी आयतों के बदले में थोड़ी क़ीमत (यानी दुनियावी लाभ) प्राप्त मत करो और हम ही से डरते रहो।(४१) सच को झूठ के साथ मत मिलाओ, जान-बूझकर सत्य को मत छिपाओ। (४२) नमाज़ पढ़ा करो और ज़क़ात† दिया करो और जो लोग (नमाज़ में) झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो।(४३) क्या तुम लोगों से भलाई करने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालाँकि तुम किताब (तौरात) पढ़ते रहते हो? क्या तुम इतना नहीं समझते? (४४) सब्र और नमाज़ का सहारा पकड़ो। निस्सन्देह नमाज़ कठिन काम है, मगर उन पर नहीं जो मुझसे डरते हैं। (४५) जो यह ख़याल रखते हैं कि वह अपने पालनकर्त्ता से मिलनेवाले और उसकी तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं।(४६) [रुकू५आ०-७]

ऐ याक़ूब के बेटों! मेरे उन एहसानों को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और इस बात को भी याद करो कि मैंने तुमको संसार के लोगों पर प्रधानता दी थी। (४७) उस दिन से डरो जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम न आयेगा, न उसकी तरफ़ से (किसी की) सिफ़ारिश क़बूल होगी, न उससे कुछ बदले में लिया जायगा और न लोगों को कुछ (कहीं से) मदद पहुँचेगी।(४८) (उस समय को याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन§ के लोगों से छुड़वाया

गये थे, तब हज़रत मूसा ने फ़िरऔनों को नष्ट करके बनी इस्राईल को अधिकारी बनाया। इन्हीं के वंशज यहूदी हैं। हज़रत मूसा पर नाज़िल तौरात इनका आकाशी धर्म-ग्रंथ है।

† चालीसवाँ हिस्सा आमदनी का जो ख़ुदा की राह पर मुसलमान लोग सालाना देते हैं।

§ यह मूसा के वक़्त में मिश्र के बादशाहों का ख़िताब था।

जो तुम पर ज़ुल्म करते थे। वे तुम्हारे बेटों को हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियों (यानी बहू-बेटियों) को (अपनी सेवा के लिए) जीवित रहने देते, इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की बड़ी आज़माइश थी। (४९) (वह वक़्त भी याद करो) जब मैंने तुम्हारी वजह से नदी को फाड़ दिया। फिर तुमको बचाया और फ़िरऔन के लोगों को तुम्हारे देखते डुबो दिया। (५०) और (वह वक़्त भी याद करो जब मैंने मूसा से (तौरात देने के लिए) चालीस रातों (यानी एक चिल्ला) की प्रतिज्ञा की, फिर तुमने उनके पीछे (पूजन के लिए) बछड़ा बना लिया और तुम ज़ुल्म कर रहे थे। (५१) फिर इसके बाद भी मैंने तुमको क्षमा किया। शायद तुम एहसान मानो। (५२) और (वह समय भी याद करो) जब मैंने मूसा को किताब (तौरात) और क़ानून फ़ैसल (यानी शरीयत) दी ताकि तुम हिदायत पाओ। (५३) (वह समय भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछड़े की पूजा करने से अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तो (अब) अपने सृष्टिकर्ता के सामने तौबा करो और अपने आपको मार डालो। तुम्हारे पैदा करनेवाले के सामने तुम्हारे लिए यही उत्तम है। फिर ख़ुदा ने तुम्हारी तौबा क़बूल करली। बेशक वह बड़ा तौबा क़बूल करने-वाला मेहरबान है। (५४) (वह समय याद करो) जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा! जब तक हम ख़ुदा को सामने न देख लें, हम तो किसी तरह तुम्हारा विश्वास करनेवाले नहीं। इस पर तुमको बिजली ने आ दबोचा और तुम देखते रहे। (५५) फिर तुम्हारे मरने के बाद मैंने तुमको जिला दिया कि शायद तुम शुक्र अदा करो। (५६) मैंने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर मन† और सलवा‡ भी उतारा और हमने जो तुमको पवित्र भोजन दिये हैं खाओ और इन लोगों ने मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ा लेकिन अपना ही खोते रहे। (५७) और (वह समय याद करो, जब मैंने तुमको आज्ञा दी कि इस गाँव में जाओ और उसमें जहाँ चाहो निश्चिंत होकर खाओ। दरवाज़े में माथा नवाते हुए दाख़िल होना और मुँह से 'हित्तातुन' हमारी तौबा है, कहते जाना तो हम तुम्हारे अपराध

† मीठी चीज़ें जो रात में पत्तों पर जम जाती हैं।

‡ बटेर-जैसी चिड़ियों का मांस।

क्षमा करेंगे और जो हमारी आज्ञा भलीभाँति पालन करेंगे उनको ऊपर से सवाब देंगे।(५८) तो जो लोग अन्यायी थे दुआएँ जो उनको बताई गई थीं उनको बदलकर दूसरी बोलने लगे तो हमने उन शरीरों पर उनकी नाफ़र्मानी की सज़ाएँ आस्मान से उतारीं। ५६)[रुकू ६ आ० १३]

(वह घटना भी याद करो जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो मैंने कहा कि ऐ मूसा ! अपनी लाठी पत्थर पर मारो, लाठी मारने पर पत्थर से बाहर चश्मे (सोते) फूट निकले। सब लोगों ने अपना घाट मालूम कर लिया और हुक्म हुआ कि अल्लाह की (दी हुई) रोज़ी खाओ पियो और देश में फ़साद न फैलाते फिरो। (६०) (वह समय भी याद करो) जब तुमने कहा कि ऐ मूसा ! हमसे तो एक खाने पर नहीं रहा जाता तो आप हमारे लिए अपने पालनकर्त्ता से दुआ कीजिए कि ज़मीन से जो चीज़ें उगती हैं यानी तरकारी, ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़ (मन-सलवा के बजाय) हमारे लिए पैदा करे। (मूसा ने) कहा कि जो चीज़ उत्तम है क्या तुम उसके बदले में ऐसी चीज़ लेना चाहते हो जो घटिया है। (अच्छा तो) किसी शहर में उतर पड़ो कि जो माँगते हो (वहाँ) तुमको मिलेगा और उन पर ज़िल्लत और ग़रीबी डाल दी गई और वे ख़ुदा के ग़ज़ब में आ गये, इसलिए कि वह अल्लाह के हुक्मों से इनकार करते और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डाला करते थे। इसलिए कि वे हुक्म के न मानने वाले सरकश थे। (६१) [रुकू ७ आयात २]

निस्सन्देह मुसलमान† यहूदी‡ ईसाई§ और साइबी❋ इनमें से जो लोग अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान लाये और अच्छे काम करते

---

† क़ुरान के माननेवाले मुसलमान कहलाते हैं।

‡ तौरात के माननेवाले यहूदी कहलाते हैं।

§ इंजील के माननेवाले ईसाई कहलाते हैं।

❋ साइबी वह लोग थे जो हज़रत इब्राहीम को भी मानते थे और सितारों को भी पूजते थे। वे ज़बूर भी पढ़ते थे और काबे की तरफ़ नमाज़ भी पढ़ते थे। सबकी अच्छी बातें मानते थे।

रहे तो इनको उनका फल उनके पालनकर्ता के यहाँ मिलेगा और उन पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (६२) ऐ याक़ूब के बेटों! (वह समय याद करो) जब मैंने तुमसे (तौरात की तामील का) इक़रार लिया और तूर (पहाड़) उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया (और फ़र्माया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुमको दी है उसको मज़बूती से पकड़े रहो और जो उसमें (लिखा) है (उसको) याद रखो ताकि तुम परहेज़गार (संयमी) बन जाओ। (६३) फिर उसके बाद तुम पलट गये, तो अगर तुम पर ख़ुदा की कृपा और उसकी दया न होती तो तुम घाटे में आ गये होते। (६४)† उन लोगों को जो तुमको जान चुके हो तुममें से जिन्होंने हफ़्ते के दिन (शनिश्चर) में ज़्यादती की तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ (ताकि जहाँ जाओ) दुतकारे जाओ। (६५) पस मैंने इस घटना को उन लोगों के लिए जो इस वक़्त मौजूद थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आनेवाले थे (उनके लिए) डर और परहेज़गारों के लिए शिक्षा बनाई। (६६) (वह समय याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, अल्लाह तुमसे फ़र्माता है कि एक गाय हलाल करो। वह कहने लगे, क्या तुम हमसे हँसी करते हो? (मूसा ने) कहा, ख़ुदा मुझको अपनी पनाह में रखे कि मैं ऐसा नादान न बनूँ ‡ (६७) वह बोले

---

† यहूदियों को शनिश्चर के दिन मछली का शिकार खेलने की इजाज़त न थी। उन्होंने शुक्रवार के दिन नदी के किनारे गढ़े खोदे ताकि सनीचर को उसमें मछलियाँ आ जायें और वह इतवार को उनको पकड़कर कहें कि यह शिकार तो शुक्रवार का है।

‡ मूसा के समय एक बड़ा धनवान आदमी था। उसके कोई सन्तान न थी। उसके भतीजे ने उसे माल धन के लोभ से इस तरह मार डाला कि कोई जान न सके। कुछ लोग हज़रत मूसा के पास गये कि क्या करें जिससे क़ातिल का पता चल जाय। मूसा ने कहा, बैल काटो। इस पर उन लोगों ने कहा, हम तो क़ातिल को जानना चाहते हैं और तुम हमसे कहते हो बैल काटो। यह क्या मज़ाक है। गाय या बैल काटने के बाद, मांस का एक

अपने परवरदिगार से हमारे लिए दरख़्वास्त करो कि हमको भलीभाँति समझा दे कि वह कैसी हो। (मूसा ने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है कि वह गाय न बूढ़ी हो और न बछिया, दोनों में बीच की रास। पस तुमको जो हुक्म दिया गया है उसको पूरा करो।(६८) वह बोले अपने पालन-कर्त्ता से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमको अच्छी तरह समझा दे कि उसका रंग कैसा हो। (मूसा ने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है कि उस गाय का रंग ख़ूब गहरा ज़र्द हो कि देखनेवालों को भली लगे। (६९) वह बोले कि अपने परवरदिगार से हमारे लिए पूछो कि हम को अच्छी तरह समझा दे कि वह (और) क्या (गुण रखती) हो, हमको तो (इसरंग की बहुतेरी) गायें एक ही तरह की दिखाई देती हैं और (इस बार)ख़ुदा ने चाहा तो हम ज़रूर (उसका) ठीक पता लगा लेंगे। (७०) (मूसा ने) कहा ख़ुदा फ़र्माता है वह न तो कमेरी हो कि ज़मीन जोतती हो और न खेतों को पानी देती हो, सही सालिम उसमें किसीतरह का दाग़(धब्बा) न हो। वह बोले (हाँ) अब तुम ठीक (पता) लाये। ग़रज़ उन्होंने गाय हलाल की और उनसे उम्मीद न थी कि करेंगे। (७१)[रुकू८आयात१०]

(और ऐ याक़ूब के बेटों !) जब तुमने एक शख़्स को मार डाला और (उसके बारे में) झगड़ने लगे और जो तुम छिपाते थे, अल्लाह को उसका भेद खोलना मंज़ूर था। (७२) पस हमने कहा कि गाय का कोई टुकड़ा मुर्दे को छुआ दो, इसी तरह (क़यामत में) अल्लाह मुर्दों को जिलायेगा। वह तुमको अपनी (क़ुदरत का) चमत्कार दिखाता है ताकि तुम समझो। (७३) फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये कि गोया वह पत्थर हैं बल्कि उनसे भी कठोर। और पत्थरों में बाज़ ऐसे भी हैं कि उनसे नहरें फूट निकलती हैं और बाज़ पत्थर ऐसे हैं जो फट जाते हैं और उनसे पानी झरता है और बाज़ पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। (७४) (मुसलमानों !)क्या

टुकड़ा मरे हुए आदमी को मारा गया। वह उठ बैठा और उसने अपने क़ातिल का पता बताया। इससे यह भी पता चल गया कि ख़ुदा मरे हुओं को फिर ज़िन्दा कर सकता है।

तुमको आशा है कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे ? और उनका हाल यह है कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी हो चुके हैं जो ख़ुदा का कलाम सुनते थे फिर उसके समझे पीछे देखभाल कर उसको कुछ का कुछ कर देते थे। (७५) जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ला चुके हैं। जब अकेले में एक दूसरे के पास होते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ (तौरात) में ख़ुदा ने तुम पर खोला है क्या तुम मुसलमानों को उसकी ख़बर दिये देते हो कि तुम्हारे पालनकर्त्ता के सामने उसी बात की सनद पकड़कर तुमसे झगड़ें, तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते। (७६) (परन्तु) क्या इन मनुष्यों को यह बात मालूम नहीं कि जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, अल्लाह जानता है। (७७) बाज़ उनमें अनपढ़ हैं जो बुदबुदाने के सिवाय किताब को नहीं समझते और वह फ़क़त ख़याली तुक्के चलाया करते हैं। (७८) पस शोक है उन लोगों पर जो अपने हाथ से तो किताब लिखें फिर कहें कि यह ख़ुदा के यहाँ से (उतरी) है ताकि उसके ज़रिए से थोड़े से दाम (यानी सांसारिक लाभ) हासिल करें। अफ़सोस है उन पर कि उन्होंने अपने हाथों लिखा और अफ़सोस है उन पर कि वह ऐसी कमाई करते हैं। (७९) वे कहते हैं कि गिनती के चन्द रोज़ के सिवाय (दोज़ख़ की) आग हमको छुएगी नहीं†। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो, क्या तुमने अल्लाह से कोई प्रतिज्ञा ले ली है और अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं करेगा या अनसमझे अल्लाह पर झूठ बोलते हो। (८०) सच्ची बात तो यह है कि जिसने बुराई पल्ले बांधी अपने पाप के फेर में आ गया, तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं कि वह सदैव जहन्नुम ही में रहेंगे। (८१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, ऐसे ही लोग जन्नती हैं कि वह हमेशा जन्नत ही में रहेंगे। (८२) [रुकू ९ आयात ११]

(वह समय याद करो) जब हमने याक़ूब के बेटों से पक्की प्रतिज्ञा

---

† यहूदी कहते थे कि हम अल्लाह के प्यारे हैं। हम चाहे जितने पाप करें सात दिन से आगे नरक में नहीं रह सकते।

ली कि ख़ुदा के सिवा किसी की पूजा नहीं करेंगे और माता पिता के साथ सलूक करते रहेंगे और रिश्तेदारों और अनाथों और दीन-दुखियों के साथ (भी) और लोगों से अच्छी तरह मुलायमत से बात करेंगे और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहेंगे। फिर तुममें से थोड़े आदमियों के सिवा बाक़ी सब पलट गये और तुम लोग भी पलट जाने वाले हो। (८३) (वह समय याद करो) जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली कि परस्पर ख़ूँरेज़ी न करना और न अपने शहरों से अपने लोगों को देश-निकाला करना, फिर तुमने तुम्हारे बुज़ुर्गों ने प्रतिज्ञा की और तुम भी प्रतिज्ञा करते हो।(८४) फिर वही तुम हो कि अपनों को मारते और अपने में से भी कुछ लोगों के मुक़ाबिले में व्यर्थ और ज़बरदस्ती एक दूसरे के सहायक बनकर उनको उनके शहरों से देश-निकाला देते हो और वही लोग अगर क़ैद होकर तुम्हारे पास आवें, तो तुम क़ीमत देकर फिर उनको छुड़ा लेते हो।†हालाँकि उनका निकालदेना ही तुमको मुनासिब न था। तो क्या किताब की कुछ बातोंको मानते हो और कुछ को नहीं मानते ? तो जो लोग तुममें से ऐसा करें, इसके सिवा उनका और क्या फर्ज़ हो सकता है कि दुनिया की ज़िन्दगी में निन्दा, तौहीन और क़यामत के दिन बड़ी ही कठिन सज़ा की तरफ़ लौटा दिये जायँ और जो कुछ भी तुम लोग करते हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है।(८५) यही हैं जिन्होंने प्रलय के बदले संसार की ज़िन्दगी मोल ली। सो

---

† यह ज़िक्र इस तौर पर है। यहूदियों में 'बनी कुरैज़ा' और 'बनीनज़ैर' दो वंश थे, जिनमें शत्रुता चलती थी। उसी प्रकार मुशरिकों में 'औस' और 'ख़ज़रज' दो कुटुम्ब थे, जो आपस में वैर रखते थे। एक दूसरे के धर्म के विपरीत होते हुए भी 'बनी कुरैज़ा' औस के साथ मिलकर और 'बनी नुज़ैर' ख़ज़रज की सहायता से एक दूसरे से लड़ते और देश से निकाल देते व उनकी जायदाद ज़ब्त कर लेते। एक ओर तो सधर्मी को ग़ैरों की मदद से नष्ट करते, दूसरी ओर अपनी धर्मपुस्तक तौरात के हुक्म के अनुसार क़ैदी की शकल में अपने-अपने विरोधी को धन के बदले क़ैद से छुड़ा भी लेते। क्या कहा जाय ? वह तौरात के ख़िलाफ़ करते थे या माफ़िक़ या दोनों ?

न तो (क़यामत के) दिन उनकी सज़ा ही हल्की की जायगी और न उनको मदद ही पहुँचेगी। (८६) [रुकू १० आयात ४]

निस्सन्देह मैंने मूसा को किताब (तौरात) दी और उनके बाद एक के बाद एक रसूल (पैग़म्बर) भेजे और मरियम के बेटे ईसा को (भी) हमने खुले करामात दिये और पाक रूह (यानी जिब्रील)से उनकी मदद की। तो जब-जब तुम्हारे पास कोई रसूल (ईश्वरदूत)तुम्हारी इच्छाओं के ख़िलाफ़ कोई हिदायत लेकर आया;तुमने शेखी दिखलाई। फिर बाज़ को तुमने झुठलाया और बाज़ को मार डालने लगे(८७) कहते हैं कि हमारे दिल पर कवच पड़ा है बल्कि इनको इन्कार करने के कारण ख़ुदा ने इनको फटकार दिया है। पस,कभी ही ईमान लाते हैं।(८८) और जब ख़ुदा की तरफ़ से इनके पास किताब (क़ुरान) आई, जो उनकी पिछली किताब (तौरात) की तसदीक़ करती है और इससे पहले जिसका नाम लेकर काफ़िरों के मुक़ाबिले में अपनी जय की दुआएँ माँगा करते थे,तो जब वह चीज़ जिसको जाने-पहचाने हुए थे, आ मौजूद हुई,तो उससे इनकार करने लगे। इन इनकारियों पर ख़ुदा की फटकार। (८९) क्या ही बुरी चीज़ जिसके बदले इन लोगों ने अपनी जानों को ख़रीद लिया। ख़ुदा ने अपने बन्दों में से जिस पर चाहा अपनी कृपा से क़ुरान भेजा‡। सरकशी (इसलिए) ख़ुदा की उतारी हुई किताब से इनकार करने लगे। इसलिए कोप पर कोप में पड़े और इनकारियों के लिए ज़िल्लत (अपमान) की सज़ा है। (९०) और जब इनसे कहा जाता है कि क़ुरान जो ख़ुदा ने उतारी है उसे मानो, तो कहते हैं कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर पहले उतरी है और उसके अतिरिक्त दूसरी किताब को नहीं मानते। हालाँकि यह क़ुरान सच्चा है और जो किताब उनके पास है उसकी तसदीक़ भी करता है।

‡ काफ़िर कहते थे कि ख़ुदा को रसूल ही भेजना था तो मुहम्मद ही को इस कार्य के लिए क्यों चुना। क्या उसको और कोई नहीं मिल सकता था, जो इनको रसूल बना दिया। इसका जवाब दिया गया है कि ख़ुदा जिसको जो दर्जा दे, उसकी मरज़ी है।

ऐ पैग़म्बर ! इनसे यह तो पूछो कि भला अगर तुम ईमानवाले होते तो पहले अल्लाह के पैग़म्बरों को क्यों मारडाला करते थे ?(६१) और तुम्हारे पास मूसा खुले निशान लेकर आया, इस पर भी तुमने (जब वे तौरात लेने तूर पहाड़ पर गये उनके पीछे बछड़े को(पूजने के लिए) ले बैठे और (ऐसा करने से) तुम (अपनी ही)हानि कर रहे थे।(६२) (वह समय याद करो) जब तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली और तूर पहाड़ उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और हुक्म दिया कि यह किताब (तौरात) जो हमने तुमको दी है, इसको मज़बूती से पकड़े रहो, सुनो और पल्ले बाँधो। उत्तर में उन लोगों ने कहा कि हमने सुना तो सही, लेकिन मानते नहीं और उनको इनकारी के कारण बछड़ा उनके दिल में समाया हुआ था।(ऐ पैग़म्बर!इन लोगों से) कहो कि अगर तुम ईमान वाले हो, तो तुम्हारा ईमान तुमको बुरी बात सिखला रहा है।(६३) ऐ पैग़म्बर!)कहो कि अगर ख़ुदा के यहाँ आक़बत का घर ख़ासकर तुम्हारे ही लिए है, दूसरे लोगों के लिए नहीं और अगर तुम सच्चे हो तो मौत को माँगो‡।(६४) और वह अपने पिछले कुकर्मों के कारण मौत की प्रार्थना कभी नहीं कर सकते और ख़ुदा अन्यायियों को ख़ूब जानता है (६५)और तू उन्हें और सब आदमियों से संसारी जीवन के लिए ज्यादा लालची पायेगा और मुशरिकीन § में से भी हरएक हज़ार वर्ष का जीवन चाहता है और इतना जीना कुछ उसे सज़ा से न बचावेगा। ख़ुदा देखता है जो कुछ वह करते हैं। (६६) [रुकू ११ आयात १०]

‡ यहूदी कहते थे कि हमसे बढ़कर कोई ख़ुदा को प्यारा नहीं है। हम मरते ही जन्नत में जायेंगे। इसके जवाब में कहा गया है कि तुम सच्चे हो तो मरने की प्रार्थना कर देखो। परन्तु यहूदी तो हज़ार वर्ष का जीवन चाहते थे और समझते थे कि जितने दिन हम जियेंगे, उतना ही हमारे लिए अच्छा होगा।

§ ख़ुदा में, उसकी ज़ात में, उसकी सिफ़तों में, उसकी इबादत में दूसरे को शरीक करनेवाले मुशरिक कहलाते हैं—(द्वैतवादी)।

(ऐ पैग़म्बर ! उन लोगों से) कहो जो शख़्स जिब्रील फ़रिश्ते का दुश्मन हो, कि यह (क़ुरान) उसी ने ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल में डाला है, उन (किताबों) की भी तसदीक़ करता है जो इससे पहले से मौजूद हैं और ईमानवालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (९७) जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाईल (फ़रिश्ते) का तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है। (९८) (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम्हारे पास सुलझी आयतें भेजी हैं और हुक्म न माननेवालों के सिवाय और कोई उनसे इनकार न करेगा। (९९) जब कभी कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो इनमें का कोई न कोई फ़रीक़ उस अहद को फेंक देता है, बल्कि इनमें के अक्सर ईमान नहीं रखते।(१००) और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से रसूल (मुहम्मद) आये (और वह) उस किताब (तौरात) की जो इन (यहूदियों) के पास है, तसदीक़ भी करते हैं तो (इन) किताबवालों में से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब (तौरात) को (जिसमें इन रसूल की पेशीनगोई भी है) पीठ पीछे फेंका कि गोया वह कुछ जानते न थे। (१०१) और उन (ढकोसलों) के पीछे लग गये जिनको सुलेमान के राज्यकाल में शैतान पढ़ा करते थे हालाँकि सुलेमान तो काफ़िर न था बल्कि वे काफ़िर थे कि वह लोगों को जादू सिखाया करते थे, (और वह) जो बाबुल (शहर) में हारूत और मारूत फ़रिश्तों पर उतरा था। और वह(दोनो) किसी को (कुछ) न सिखाते थे जब तक उससे न कह देते थे कि हम तो जाँचते हैं कि तू काफ़िर न हो। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते जिनके कारण से स्त्री-पुरुष में जुदाई पड़ जाय। हालाँकि बग़ैर हुक्म ख़ुदा वह अपनी इन बातों से किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। ग़रज़ यह लोग ऐसी बातें सीखते जिनसे इन्हें नुक़सान है, फ़ायदा नहीं। गो जान चुके थे कि जो शख़्स इन बातों का ख़रीदार हुआ वह आख़िर में अभागा है और निस्सन्देह बुरा है जिसके बदले इन्होंने अपनी जानों को बेचा। हा शोक ! इनको अगर समझ होती।(१०२) और अगर यह ईमान

लाते और परहेज़गार बनते तो खुदा के पास से अच्छा फल मिलता अगर इनको समझ होती। (१०३) [रुकू १२ आयात ७]

ऐ मुसलमानों! (पैग़म्बर के साथ) राइना ‡ कहकर खिताब (सम्बोधन) न किया करो बल्कि (उन्ज़ुर्ना) कहा करो और सुनते रहा करो। मुन्किरों के लिए दुखदाई सज़ा है। (१०४) किताबवालों और मुशरिकीन में से जो लोग इन्कारी हैं इस बात से खुश नहीं हैं कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम पर भलाई उतारी जाय और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए खासकर लेता है और अल्लाह बड़ा दयावान है। (१०५) (ऐ पैग़म्बर!) हम कोई आयत मन्सूख कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसीही पहुँचा देते हैं। क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है? (१०६) क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन का राज्य उसी अल्लाह का है और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई दोस्त मददगार नहीं है? (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस तरह पहले मूसा से सवालात किये गये थे, तुम भी अपने रसूल से सवालात करो और जो ईमान के बदले इन्कार करे तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) अक्सर किताब के माननेवाले सचाई ज़ाहिर होने के बावजूद अपनी दिली ईर्ष्या की वजह से चाहते हैं तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुमको काफ़िर बना दें, तो क्षमा करो, दर गुज़र करो, यहाँ तक कि खुदा अपनी आज्ञा जारी करे। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१०९) नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते

‡ 'राइना' के अर्थ हैं 'हमारी ओर ध्यान दें'। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि व आलिही व सल्लम के दरबार में यहूदी आकर बैठते और हुज़ूर का कोई शब्द समझ में न आता तो 'राइना' के स्थान पर 'राईना' का शब्द शरारत से इस्तेमाल करते। 'राईना' के माने हैं 'हमारा ग्वाला'। इसलिए मुसलमान भी यहूदियों की इस शरारत में भटक न जायँ, उन्हें हिदायत की गई कि वे 'उन्ज़ुर्ना' कहा करें। उसके माने हैं 'दुबारा कथन करें'। इस प्रकार 'राइना' और 'राईना' की भूल से बच जायें।

रहो और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको ख़ुदा के यहाँ पाओगे। बेशक अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है। (११०) (यहूदी) व (नसारा) कहते हैं कि यहूद और नसरानी के सिवाय बहिश्त में कोई नहीं जाने पायेगा। यह उनकी (अपनी) ख़याली बातें हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। (१११) बल्कि सच्ची बात तो यह है कि जिसने ख़ुदा के आगे माथा टेका और अच्छे काम किये तो उसके लिए उसका फल उसके पालनकर्त्ता से मिलेगा और ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (११२) [रुकू १३ आयात ६]

यहूद कहते हैं ईसाइयों का मज़हब कुछ नहीं और ईसाई कहते हैं यहूद का मज़हब कुछ नहीं, हालाँकि वह (दोनो) किताब [तौरात व इंजील) के पढ़नेवाले हैं। इसी तरह इन्हीं जैसी बातें वह मुशरिकीन अरब भी कहा करते हैं जो नहीं जानते। तो जिस बात में यह लोग झगड़ रहे हैं क़यामत के दिन अल्लाह इनमें उसका फ़ैसला कर देगा। (११३) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की मसजिदों में ख़ुदा का नाम लिए जाने को मना करे और मसजिदों के उजाड़ने में कोशिश करे? यह लोग ख़ुद इस योग्य नहीं कि मसजिदों में आने पावें मगर डरते (हुए आते हैं)। इनके लिए दुनिया में बदनामी और प्रलय (क़यामत) में बड़ी सज़ा है।(११४) अल्लाह ही का पूर्व और पश्चिम है तो जहाँ कहीं मुँह कर लो, उधर ही अल्लाह का सामना है। बेशक अल्लाह गुंजाइशवाला है। (११५) कहते हैं कि ख़ुदा औलाद रखता है हालाँकि वह पाक है बल्कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है उसी का है और सब उसके आधीन है। (११६) वह आसमान और ज़मीन का बनानेवाला है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिए फ़र्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है। (११७) जो नहीं जानते वे कहते हैं कि ख़ुदा हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह जो लोग इनसे पहले हो गये हैं इन्हीं-जैसी बातें वह भी कहा करते थे

इन सबके दिल एक ही तरह के हैं । जो लोग यक़ीन रखते हैं उनको तो हम निशानियाँ साफ़ तौर पर दिखा चुके ।(११८) ऐ पैग़म्बर ! हमने तुमको सच्ची बात देकर मंगल समाचार देनेवाला और डरानेवाला (बनाकर) भेजा है और तुमसे नरकवासियों की बाबत कुछ पूछताछ नहीं होगी ।(११९) ऐ पैग़म्बर ! न तो यहूदी ही तुमसे कभी रज़ामंद होंगे और न ईसाई ही, जब तक कि तुम उन्हीं के मज़हब की पैरवी न करो । ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से कहो कि अल्लाह की हिदायत (इस्लाम) ही हिदायत है और ऐ पैग़म्बर ! अगर तुम इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म (यानी क़ुरान) आ चुका है, उनकी ख़्वाहिशों पर चलो तो तुमको ख़ुदा के कोप से बचानेवाला न कोई दोस्त है और न कोई मददगार । (१२०) जिन लोगों को हमने क़ुरान दिया है वह उसको पढ़ते रहते हैं । जिन्हें उसके पढ़ने का हक़ है वही उस पर ईमान लाते हैं और जो इससे इन्कार रखते हैं तो वही लोग भटक जाते हैं ।(१२१) [रुकू १४ आ० ९]

ऐ याक़ूब के बेटों ! हमारे उन अहसानों को याद करो, जो हमने तुम पर किये हैं और यह कि हमने तुमको सब संसार के लोगों पर प्रधानता दी । (१२२) और उस दिन (की सज़ा) से डरो कि कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आयेगा और न उसकी तरफ़ से कोई बदला क़बूल किया जायगा और न सिफ़ारिश उसको फ़ायदा देगी और न लोगों को मदद पहुँचेगी । (१२३) (ऐ पैग़म्बर !) याक़ूब के बेटों को वह समय याद दिलाओ, जब इब्राहीम की उसके पालनकर्ता ने चन्द बातों को आज़माया था । उन्होंने उनको पूरा कर दिखाया, (तो ख़ुदा ने सन्तुष्ट होकर) कहा था कि हमने तुमको लोगों का इमाम(यानी पेशवा) बनाया । इब्राहीम ने अर्ज़ किया था कि मेरी संतान में से भी (किसी को इमाम बना) । ख़ुदा ने कहा 'हाँ' । मगर हमारे इक़रार में वह दाख़िल नहीं जो सचाई पर न होंगे ।(१२४) ऐ पैग़म्बर याक़ूब के बेटों को वह समय भी याद दिलाओ, जब हमने काबे के घर को लोगों के जमा होने और शान्ति की जगह क़ायम किया । और कहा (लोगों को हुक्म भेजा) कि इब्राहीम की जगह को ही नमाज़

की जगह बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माईल से कहा कि हमारे घर की परिक्रमा करने वालों और मुजाविरों (पण्डों) और रुकू§ (और) सिजदा करने (माथा नवाने) वालों के लिए पाक साफ़ रखो। (१२५) (ऐ पैग़म्बर! इनको वह समय भी याद दिलाओ) जब इब्राहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे पालनकर्त्ता इसको शान्ति का नगर बना और इसके रहने वालों में से जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये हैं, उनको फल फलाहार खाने को दे। (अल्लाह ने) फ़र्माया कि जो इन्कारी (मुन्किर) होगा उसको भी चन्दरोज़ के लिए चीज़ों से फ़ायदा उठाने देंगे। फिर उसको मजबूर करके नरक की सज़ा में ले जाकर दाखिल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है। १२६) (ऐ पैग़म्बर! याक़ूब के बेटों को वह समय भी याद दिलाओ जब) इब्राहीम और इस्माईल (दोनो) काबे के घर की नीवें (बुनियादें) उठा रहे थे (और दुआएँ माँगते जाते थे) कि ऐ हमारे पालने-वाले! हमसे (दुआ) क़बूल कर। बेशक तूही सुनने और जाननेवाला है। (१२७) और ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमको अपना आज्ञाकारी बना और हमारी जात में एक गिरोह (पैदा कर) जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमको हमारी पूजा की विधि बता और हमारे अपराध क्षमा कर। बेशक तूही बड़ा क्षमा करने वाला मेहरबान है।(१२८) ऐ हमारे पालनेवाले! इनमे इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेज कि इनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाये और इनको किताब (आसमानी) और शिक्षा दे और इनको संभाले। बेशक तू ही शक्तिशाली व ज्ञानवान है। (१२९) [रुकू १५ आ० ८]

और कौन है जो इब्राहीम के तरीक़ों से मुँह फेरे। मगर वही जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो (वह मुंह फेर लेगा)। बेशक हमने इब्राहीम को दुनिया में चुन लिया था और क़यामत में (भी) वह भलों में होंगे।(१३०) जब उनसे पालनकर्त्ता ने कहा कि फ़र्माबर्दारी करो, (तो जवाब में) प्रार्थना की कि मैं सब संसार के पालनेवाले का

§ घुटनों पर हाथ लगाकर झुके हुए खड़े होने को 'रुकू' कहते हैं। यह हालत नमाज़ में होती है।

(फ़र्मांबर्दार) हुआ। (१३१) और इसकी (बावत) इब्राहीम अपने बेटों को वसीयत कर गये और याक़ूब (ने कहा) ऐ बेटों! अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाया है। तुम (अंततक) मुसलमान ही मरना। (१३२) (ऐ यहूद!) क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब के सामने मौत आ खड़ी हुई? उस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे पीछे किसकी पूजा करोगे? उन्होंने जवाब दिया कि आपके पूजित और आपके बड़ों (यानी) इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक़ के पूजित एक ख़ुदा की पूजा करेंगे और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३३) (ऐ यहूद!) यह लोग हो चुके, उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको, और तुमसे उनके काम की पूछ-ताछ नहीं होगा। (१३४) (यहूद और ईसाई मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो सच्चे रास्ते पर आओ (ऐ पैग़म्बर! तुम इन लोगों से) कहो नहीं) बल्कि हम इब्राहीम के तरीक़े पर हैं, जो एक (ख़ुदा)के हो रहे थे और मुशरिकीन में से न थे। (१३५) (मुसलमानों! तुम यहूद-ईसाई को) जवाब दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और क़ुरान जो हम पर उतरा और जोकि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब की संतान पर उतरे और मूसा और ईसा को जो (किताब) मिली, (उस पर) और जो दूसरे) पैग़म्बरों को उनके पालनेवाले से मिली, (उस पर) हम इन पैग़म्बरों में से किसी एक में भी (किसी तरह की) जुदाई नहीं समझते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३६) ता अगर तुम्हारी तरह यह लोग भी ईमान ले आवें, जिस तरह तुम ईमान लाये तो बस सच्चे रास्ते पर आ गये और मुँह फेर लें (तो समझो) बस वह हठ (ज़िद) पर है, तो इनकी निस्बत ख़ुदा तुम्हारे लिए काफ़ी होगा और वह सुनता और जानता है। (१३७) (मुसलमानों! इन लोगों से कहो कि) हम तो अल्लाह के रंग में रंग गये। और अल्लाह (के रंग) से और किसका रंग अच्छा होगा? और हम तो उसी की पूजा करते हैं। (१३८) ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से कहो कि क्या तुम अल्लाह (के बारे) में हमसे झगड़ते हो?

हालाँकि वही हमारा पालनहार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है। और हमारे काम हमारे लिए और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए और हम सिर्फ़ उसी को मानते हैं।(१३९) या तुम कहते हो कि इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की संतान (यह लोग) यहूद थे या ईसाई थे (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि तुम बड़े जाननेवाले हो या ख़ुदा? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसके पास ख़ुदा की तरफ़ से गवाही हो और वह उसको छिपाये। और जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं (१४०) यह लोग थे कि हो गुज़रे। उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुमको और जो कुछ वह कर गुज़रे तुमसे उसकी पूछताछ नहीं होगी।(१४१)[रुकू १६ आ. १२]

—:):०:(:—

दूसरा पारा (सयक़ूल)— सूरे बक़र

मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहले) थे(यानी बैतुल मुक़द्दस) उससे इनके (काबा के घर की तरफ़ को) मुड़ जाने का क्या कारण हुआ?(पैग़म्बर! तुम यह) जवाब दो कि पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही का है। जिसको चाहता है सीधी राह चलाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुमको बीच की उम्मत(गिरोह जो किसी पैग़म्बर के आधीन हो)बनाया है। ताकि लोगों के मुक़ाबिले में तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुक़ाबिले में पैग़म्बर गवाह बनें और ऐ पैग़म्बर! जिस क़िब्ले पर तुम थे (यानी बैतुल मुक़द्दस) हमने उसको इसी मतलब से ठहराया था ताकि हमको मालूम हो जावे कि कौन-कौन पैग़म्बर के आधीन रहेगा और कौन उलटा फिरेगा, और यह बात अगरचे भारी है लेकिन उन पर नहीं जिनको अल्लाह ने हिदायत दी। और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारा विश्वास लाना(ईमान) मेटेगा। ख़ुदा तो लोगों पर बड़ी ही कृपा रखनेवाला दयालु है।(१४३) तुम्हारे मुँह का आसमान

में फिरना हम देख रहे हैं, तो जो क़िब्ला तुम चाहते हो हम तुमको उसी की तरफ़ फेर देंगे। पूजनीय मसजिद (काबा) की तरफ़ को अपना मुँह फेर लिया करो। और जहाँ कहीं हुआ करो, उसी की तरफ़ को अपना मुँह कर लिया करो और (ऐ पैग़म्बर !) जिन लोगों को किताब दी गई है, उनको मालूम है कि यह क़िब्ला बदलना ठीक उनके परवरदिगार (की ओर से) है और जो कर रहे हैं, ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं।(१४४) और (ऐ पैग़म्बर) जिन लोगों को किताब दी गई है, अगर तुम सब निशानियाँ उनके पास ले आये, तो भी वह तुम्हारे क़िब्ले की मदद न करेंगे और न तुम्हीं उनके क़िब्ले की मदद करोगे, और उनमें का कोई भी दूसरे के क़िब्ले को नहीं मानता। और तुमको जो समझ हो चुकी है, अगर उसके पीछे भी तुम इनकी इच्छाओं पर चले, तो ऐसी दशा में बेशक तुम भी अन्यायियों में गिने जाओगे। (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं इन (मोहम्मद) को भी पहचानते हैं, और उनमें से कुछ लोग जानबूझकर सच को छिपाते हैं।(१४६) सचमुच यह क़िब्ला तुम्हारे परवरदिगार की ओर से है। तो कहीं सन्देह करनेवालों में से न हो जाना। (१४७) [रुकू १७ आयात ६]

हरएक के लिए दिशा है जिधर को (नमाज़ में) वह अपना मुँह करता है, (तो दिशा-भेद की परवा न करके) भलाइयों की तरफ़ लपको। तुम कहीं भी हो, अल्लाह तुम सबको खींच बुलायेगा। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है।(१४८) (ऐ पैग़म्बर !) तुम कहीं से भी निकलो, अपना मुँह इज्ज़तवाली मसजिद (काबा) की तरफ़ कर लिया करो। यह तुम्हारे पालनकर्ता द्वारा निश्चत है। अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं है।(१४९) (ऐ पैग़म्बर!) तुम कहीं से भी निकलो अपना मुंह इज्ज़तवाली मसजिद की तरफ़ कर लिया करो और जहाँ कहीं हुआ करो उसी की तरफ़ अपना मुँह करो; ताकि ग़ैर को तुमसे झगड़ने की जगह न रहे। मगर उनमें से जो अन्यायी हैं, तुम उनसे मत डरो और हमारा डर रखो। ग़रज़ यह है कि मैं अपनी

मेहरबानी तुम पर पूरी करूं। शायद तुम सीधी राह लग जाओ।(१५०)
जैसा हमने तुम्हारे बीच तुम्हीं में का एक रसूल भेजा, वह हमारी
आयतें तुमको पढ़कर सुनाता और तुम्हारा सुधार करता और तुमको
किताब और समझ (की बातें) सिखाता और तुमको ऐसी-ऐसी बातें
बताता, जो पहले से तुम जानते न थे। (१५१) तो तुम मेरी याद में
लगे रहो कि मैं तुम्हें याद करूँगा और मेरा एहसान मानते रहो,
नाशुक्री न करो। (१५२) [रुकू १८ आयात ५]

ऐ ईमानदारों! संतोष और नमाज़ से मदद लो। बेशक अल्लाह
संतोषियों का साथी है।(१५३) और जो लोग अल्लाह की राह पर मारे
जायँ, उनको मरा हुआ न कहना। (वह मरे नहीं)बल्कि ज़िन्दा हैं; मगर
तुम नहीं समझते।(१५४) और बेशक हम थोड़े डर से और भूख से
और माल और जान पैदावार के नुक़सान से तुम्हारी जाँच करेंगे और
ऐ पैग़म्बर! संतोषियों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (१५५) यह लोग
जब इन पर मुसीबत आ पड़ती है,तो बोल उठते हैं कि हम तो अल्लाह
के ही हैं और हम उसी की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं। (१५६) यही
लोग हैं, जिन पर परवरदिगार की मेहरबानी और इनायत है और वही
सच्चे मार्ग पर हैं।(१५७) (पहाड़)सफ़ा‡ और (पहाड़)मर्वह ‡ ख़ुदा
की निशानियों में से हैं। तो जो व्यक्ति काबे का हज्ज या उमरा (तीर्थ
मक्के से तीन कोस पर है) करे उस पर इन दोनो के बीच फेरे करने में
कुछ गुनाह नहीं और जो ख़ुशदिली से नेक काम करे,तो ख़ुदा किये को
माननेवाला और जानकार है।(१५८) वह जो हमने खुली हुई आज्ञाओं

‡ सफ़ा और मर्वह दो पहाड़ों के नाम हैं। एक समय ईश्वर की आज्ञा से हज़रत इब्राहीम एक बार अपनी बीबी हज़रत हाजरा और दुधमुँहे बच्चे इस्माईल को छोड़कर चले गये। बच्चे को प्यासा देख हज़रत हाजरा इन्हीं पहाड़ों पर पानी की तलाश में दौड़ती थीं। ईश्वर की कृपा से एक चश्मा निकल आया, जो 'ज़मज़म' के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हीं पर्वतों पर मुसलमान आज भी फेरे देते हैं। उन्हें यह विश्वास है कि संतोषी के दुःख को ईश्वर सदैव सुनता है।

और उपदेशों की बातें उतारीं और किताब (तौरात) में हमने साफ़-साफ़ समझा दिया। इसके बाद भी जो उनको छिपाये तो यही लोग हैं जिनको खुदा लानत देता है और लानत देनेवाले (भी) उनको लानत देते हैं। (१५९) मगर जिन्होंने तौबा की और (अपनी हालत को) सम्भाल लिया और (जो छिपाया था साफ़-साफ़) बयान कर दिया तो यही लोग हैं, जिनकी तौबा मैं मानता हूँ और मैं क्षमा करनेवाला मेहरबान हूँ। (१६०) जो लोग इन्कार करते रहे और इन्कारी की ही हालत में मर गये यही हैं जिन पर खुदा की और फ़रिश्तों की और आदमियों की सब की धिक्कार है। (१६१) वह हमेशा इसी में रहेंगे। इनकी न तो सज़ा ही हल्की की जावेगी और न मुहलत ही मिलगी। (१६२) तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, इसके सिवा कोई पूजित नहीं। वह बड़ा दया करनेवाला कृपालु है (१६३) [रुकू १९ आयात ११]

बेशक आसमान और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के आने-जाने में और जहाज़ों में जो लोगों के फ़ायदे की चीज़ें समुद्र में लेकर चलते हैं और मेह में जिसको अल्लाह आकाश से बरसाता है, फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मरे (उजड़े) पीछे फिर ज़िन्दा करता (लहलहाता) है और हर क़िस्म के जानवरों में जो खुदा ने ज़मीन की सतह पर फैला रखे हैं और हवाओं के फेरने में, और बादल में जो (खुदा के हुक्म से) आकाश और धरती के बीच घिरे रहते हैं, उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं (खुदा की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं। (१६४) लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के सिवा (और को भी) शरीक (पूजित) ठहराते हैं। जैसी मुहब्बत खुदा से रखनी चाहिये वैसी मुहब्बत उनसे रखते हैं। जो ईमानवाले हैं, उनको सबसे बढ़कर खुदा की मुहब्बत होती है। जो (यह) बात ज़ालिमों को सज़ा के देखने पर सूझ पड़ेगी। बेशक अब वह सूझ पड़ती है कि हर तरह की शक्ति अल्लाह को ही है और यह कि अल्लाह की सज़ा भी सख्त है। (१६५) उस वक़्त गुरू, चेले-चाटियों से दस्तबरदार हो जायगे और सज़ा देख लेंगे और उनके सम्बन्ध टूट-टाट जायँगे। (१६६) चेले कह उठेंगे

कि अफ़सोस हमको फिर लौटकर दुनिया में जाना मिले; तो जैसे यह (गुरू) हमसे दस्तबरदार हो गये, उसी तरह हम भी उनसे(किनारा कर जायें)। यों अल्लाह उनके काम(उनके सामने)लायेगा कि उनको हसरत दिखाई देगी और वे नरक से निकल न सकेंगे। (१६) [रुकू२०आ.४]

लोगों! ज़मीन में जो चीज़ें हलाल (भोग्य) और शुद्ध हैं,उनमें से खाओ और शैतान की पैरवी न करो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१६८) वह तो तुम्हें बदी और बेशर्मी बतायेगा। और यह चाहेगा कि बे समझे बूझे तुम खुदा के बारे में झूठे जंजाल गढ़ो (१६६) जब इनसे कहा जाता है कि जो ख़ुदा ने उतारा है, उस पर चलो तो जवाब देते हैं--नहीं जी,हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया। भला अगर उनके बड़े कुछ भी नहीं समझते थे और न सच्चे मार्ग पर चलते थे, (तो भी ये उन्हीं की पैरवी किये चले जायँगे)। (१७०) और जो लोग काफ़िर हैं उनकी मिसाल उस शख्स-जैसी है,जो एक चीज़ (मूर्ति)के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है और वह सुनती ही नहीं। तो उसको बुलाना-पुकारना बेसूद है। बहरे गूँगे अन्धे की तरह उनको भी समझ नहीं।(१७१) ऐ ईमानवालो! मैंने जो तुमको रोज़ी और पाक चीज़ें दे रखी हैं, खाओ और अगर तुम अल्लाह की बन्दगी का दम भरते हो, तो उसका एहसान मानो।(१७२) उसने तो बस मरा हुआ (जानवर और खून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जिसको ख़ुदा के सिवाय किसी और के लिए भेंट किया जाय, तुम पर हराम किया है। जो भूख से बेचैन हो परन्तु अवज्ञा करनेवाला और हद से बढ़ जानेवाला न हो, तो उस पर पाप नहीं। बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।(१७३) जो लोग उन हुक्मों को जो ख़ुदा ने अपनी किताब (तौरात) में उतारे, छुपाते हैं और उसके बदले थोड़ा सा बदला (लाभ) हासिल करते हैं,वह लोग और कुछ नहीं मगर अपने पेटों में अंगारे भरते हैं और क़यामत के दिन ख़ुदा इनसे बात भी तो नहीं करेगा और न इनको पाक करेगा और उनके लिए कठोर दण्ड है।(१७४) यही लोग हैं जिन्होंने सच्ची राह के बदले भटकना मोल लिया है और क्षमा के

बदले सज़ा। पस, (नरक की) आग में उनको ठहरना है।(१७५) यह इसलिए कि किताब (तौरात) को वास्तव में खुदा ही ने उतारा और जिन लोगों ने उस किताब में भेद डाला, वह ज़िद में भटक गये हैं। (१७६) [रुकू २१ आयात ६]

भलाई यही नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व या पश्चिम को तरफ़ कर लो; बल्कि भलाई तो यह है कि अल्लाह और क़यामत और फ़रिश्ते और (आकाशी) किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाये और माल अल्लाह की राह पर सम्बंधियों और अनाथों और दुखिया लोगों (मुहताजों), मुसाफ़िरों और माँगनेवालों को दे और (ग़ुलामी वग़ैरह की क़ैद से लोगों की) गर्दनों (के छुड़ाने) में दे और नमाज़ पढ़ता और ज़कात देता रहे और जब (किसी बात का) इक़रार कर ले, तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करे और तंगी में और तकलीफ़ और हलचल के वक़्त दृढ़ रहे यही लोग हैं जो सच्चे और यही परहेज़गार (संयमी) हैं।(१७७) ऐ ईमान वालों! जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको (जान के) बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आज़ाद के बदले आज़ाद और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, औरत के बदले औरत। फिर जिस (हत्यारे) को (बध किये हुए की हत्या के बदले में) उसके भाई द्वारा कोई अंश (लेकर) क्षमा कर दिया जाय, तो नियमित रूप से हत्यारे को क़त्ल किये प्राणी के वारिसों को ख़ून का बदला अदा कर देना चाहिए।§ यह (हुक्म ख़ून-बहा) तुम्हारे पालनेवाले की तरफ़ से तुम्हारे हक़ में आसानी और मेहरबानी है। फिर इसके बाद जो ज़ियादती करे, तो उसके लिए दुखदाई सज़ा है। (१७८) और बुद्धिमानों! बदला चाहने(लेने) में तुम्हारी ज़िन्दगी है ताकि तुम (ख़ून बहाने से) बचे रहो।(१७९) किताबवालों तुमको हुक्म दिया जाता है कि जब तुममें से किसी के सामने मौत आ पहुँचे (और) वह

§ जीव हत्या के दो दण्ड हैं—(१) या तो हत्यारे को भी मार डाला जाय या (२) उससे कुछ रुपया ले लिया जाय और उसकी जान न ली जाय; परन्तु रुपया उसी वक़्त लिया जा सकता है जब मरे प्राणी के वारिस उसको खुशी-खुशी स्वीकार करें।

कुछ माल छोड़नेवाला हो तो माता पिता और सम्बन्धियों के लिए वाजिबी तौर पर वसीयत करे। जो (ख़ुदा से) डरते हैं, उन पर (उनके अपनों का यह एक) हक़ है।(१८०) फिर जो वसीयत के सुने पीछे उसे कुछ का कुछ कर दें तो उसका पाप उन्हीं लोगों पर है, जो वसीयत को बदलें। बेशक अल्लाह सुनता जानता है। (१८१) और जिसको वसीयत करनेवाले की तरफ़ से (किसी ख़ास आदमी की) तरफ़दारी या (किसी की) हक़तलफ़ी का सन्देह हुआ हो और वह वारिसों में मेल करा दे, तो (ऐसी सूरत में वसीयत के बदलने का) उस पर कुछ पाप नहीं। बेशक अल्लाह क्षमा करने वाला मेहरबान है।(१८२) रुकू २२ आ० ६]

ईमानवालों! जिस तरह तुमसे पहले किताबवालों पर रोज़ह रखना फ़र्ज़ (कर्त्तव्य) था, तुम पर भी फ़र्ज़ किया गया, ताकि तुम पापों से बचो।(१८३) वह भी गिनती के चन्द रोज़ हैं। इस पर भी जो शख़्स तुममें से बीमार हो या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर दे और जिनको भोजन देने की शक्ति है उन पर एक रोज़े का बदला एक दीन को भोजन देना है और जो शख़्स अपनी ख़ुशी से नेक काम करना चाहे, तो यह उनके हक़ में ज्यादा भलाई है और समझो तो रोज़ा रखना तुम्हारे हक़ में भलाई है।(१८४) रमज़ान (रोज़ों) का महीना जिसमें ख़ुदा की तरफ़ से क़ुरान उतरा है और क़ुरान लोगों को राह दिखानेवाला है और हिदायत और तमीज़ के खुले स्पष्ट हुक्म मौजूद हैं, तो तुममें से जो शख़्स इस महीने में मौजूद हो, तो चाहिए कि इस महीने के रोज़े रखे और जो बीमार हो या यात्रा में हो † तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ कड़ाई नहीं करना चाहता। इसलिए कि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर लो और इसलिए कि अल्लाह ने जो तुमको सच्ची राह दिखा दी है औ इसलिए कि तुम

† व्रत (रोज़ा) रखना अनिवार्य है। जो अपने घर पर न हो या बीमार हो, उसको चाहिए कि रमज़ान के बाद (जितने रोज़े उसने छोड़ दिये हैं) उतने ही रोज़े रखे।

(उसका) एहसान मानो ।(१८५) (ऐ पैग़म्बर !) जब हमारे बन्दे तुमसे हमारे बारे में पूछें तो(उनको समझा दो कि) हम उनके पास हैं। जब कभी हमें पुकारता है, तो हम (प्रत्येक) पुकारनेवाले की टेर को क़बूल कर लेते हैं तो उनको चाहिए कि हमारा हुक्म मानें और हम पर ईमान लावें; ताकि वह सीधे राह पर चलें।(१८६) (मुसलमानों !) रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना तुम्हारे लिए जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक† हैं और तुम उनकी पोशाक हो। अल्लाह ने देखा तुम (चोरी-चोरी) उनके पास जाने से अपना (दीनी) नुक़सान करते थे, तो उसने तुम्हारा अपराध (क़सूर) क्षमा कर दिया और तुम्हारे अपराध से दर-गुज़र की । पस,अब (रोज़ों में रात के वक़्त) उनके साथ हमबिस्तर हो और जो (नतीजा) ख़ुदा ने तुम्हारे लिए लिख रखा है (यानी औलाद) उसकी इच्छा करो और खाओ पियो जब तक कि (रात की) काली धारी से सुबह का सफ़ेद धारी तुमको साफ़ दिखाई देने लगे। फिर रात तक रोज़ह पूरा करो और तुम मसजिद में एकान्त बैठे हो, तो उनसे प्रसंग मत करना—यह अल्लाह की (बाँधी हुई) हदें हैं—तो उनके पास भी न फटकना। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्मों को लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वह बचें। (१८७) और आपस में नाहक़ एक दूसरे का माल बरबाद मत करो और न माल को हाकिमों के पास (रिश्वत का) ज़रिया ढूँढ़ो; ताकि लोगों के माल में से कुछ जान-बूझकर नाहक़ हज़म न कर जाओ। (१८८) [रुकू २३ आयात ६]

(ऐ पैग़म्बर !) लोग तुमसे चन्द्रमा के बारे में पूछते हैं, तो कहो कि चन्द्रमा से लोगों के हज्ज के समय मालूम होते हैं और यह कुछ नेकी नहीं है कि घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ़ से आओ; बल्कि नेकी तो उसकी है जो परहेज़गारी करें और घरों में उनके दरवाज़ों

† स्त्री और पुरुष एक दूसरे की बात ढके रहते हैं। या इस प्रकार एक दूसरे से मिलते हैं जैसे कपड़ा बदन के साथ मिलता है।

से आओ† और अल्लाह से डरते रहा ताकि तुम अपनी मुराद को पहुँचो।(१८९) (मुसलमानों!) जो लोग तुमसे लड़ें तुम भी अल्लाह के रास्ते म उनसे लड़ो और ज्यादती न करना। अल्लाह ज्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता।(१९०) (जो लोग तुमसे लड़ते हैं) उनको जहाँ पाओ क़त्ल करो और जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है (यानी मक्का से) तुम भी उनको (वहाँ से) निकालो और फ़साद का (क़ायम रहना) खून बहाने से भी बढ़कर है और जब तक कि फ़िर अदबवाली मसजिद के पास तुमसे न लड़ें तुम भी उस जगह उनसे न लड़ो; लेकिन अगर वह लोग तुमसे लड़ें, तो तुम भी उनको क़त्ल करो। ऐसे काफ़िरों की यही सज़ा है। (१९१) फिर अगर मान जायें तो अल्लाह क्षमा करनेवाला मेहरबान है।(१९२) यहाँ तक उनसे लड़ो कि फ़साद बाक़ी न रहे और एक खुदा का हुक्म चले। फिर अगर (फ़साद) छोड़ दें, तो उन पर किसी तरह की ज्यादती नहीं करनी चाहिए। क्योंकि ज्यादती (तो) ज़ालिमों के सिवाय किसी पर (जायज़) नहीं (१९३) अदब‡ (इज्ज़त) वाले महीनों का बदला अदबवाले महीने और अदब की चीज़ों म भी बदला,§ तो जो तुम पर ज्यादती करे, तो जैसी ज्यादती उसने तुम पर की वैसी ही ज्यादती तुम भी उस पर करो। और ज्यादती करने में अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह उन्हीं का साथी है जो(उससे) डरते हैं।(१९४) खुदा की राह में खर्च करो। अपने हाथों अपने तईं हत्या में मत डालो और एहसान करो, एहसान करनेवालों को (अल्लाह) दोस्त (प्रेम) रखता है। (१९५) अल्लाह के लिए हज्ज और उमरह को पूरा करो।

---

† हज के समय बीच मे ज़रूरत पड़ने पर लोग घर के पिछले दरवाज़े से जाकर फिर वापस आ जाते थे। मानो घर गये ही नहीं। इस पाखंड से बचने के लिए संकेत है।

‡ ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम, रजब, ये चार अदब वाले महीने हैं।

§ यदि फ़सादी पवित्र मास या पवित्र वस्तुओं की परवाह न करके फ़साद करें तो तुम भी उनकी परवाह न करो।

और अगर (राह में कहीं) घिर(फँस जाओ तो क़ुर्बानी (करदो) जैसी कुछ हो सके और जब तक क़ुर्बानी अपने ठिकाने न लग जाय अपना सिर न मुड़ाओ। और जो तुममें बीमार हो व सिर की तरफ़ से उसे दुख हो तो बाल उतरवा देने का बदला रोज़े या ख़ैरात या क़ुर्बानी। फिर जब तुम्हारी ख़ातिरजमा (यानी उज़्र रफ़ा) हो जावे तो जो कोई उमरे की हज्ज से मिलाकर फ़ायदा उठाना चाहे तो (उसको) क़ुर्बानी (करनी होगी) जैसी कुछ हो सके। और जिसको क़ुर्बानी सुलभ न हो तो तीन रोज़े हज्ज के दिनों में (रख ले) और जब वापस आओ तो सात रोज़े रखो। यह पूरे दस हुए। यह (हुक्म उसके लिए है जिसका घरबार मक्के में न हो)। अल्लाह से डरो और जाने रहो कि अल्लाह की सज़ा सख़्त है। (१६६) [रुकू २४ आयात ८]

हज्ज के कई महीने मालूम हैं† तो जो शख़्स इन महीनों में हज्ज की ठान ले तो (अहराम§ बाँधने से आख़िर तक) हज्ज (के दिनों) में विषय भोग की कोई बात न करे और न पाप की, न झगड़े की। और भलाई का कोई-सा काम करो, वह ख़ुदा को मालूम हो जायगा। और (हज्ज पर जाने से पहले) सफ़रख़र्च इकट्ठा कर लो। उत्तम (पर्याप्त) राह ख़र्च संयम है और बुद्धिमानों! मुझसे डरते रहो। (१६७) (हज्ज के समय) तुम अपने पालनेवाले की मेहरबानी खोजो तो कुछ पाप नहीं। फिर जब अरफ़ात (पहाड़) से लौटो, तो (मुक़ाम) मुज़दल्फ़ा में ठहरकर ख़ुदा की याद करो और उसकी याद करो उस तरीक़े पर जैसा तुमको बताया। और इससे पहले तुम भटके हुओं में से थे। (१६८) फिर जिस जगह से लोग चलें तुम भी वहीं से चलो और अल्लाह से माफ़ी चाहो। अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (१६६) फिर जब हज्ज के कामों को कर चुको तो जिस तरह तुम अपने बाप-दादों की चर्चा में लग जाते थे उसी तरह बल्कि उससे भी बढ़कर ख़ुदा की याद में लग

† शव्वाल, ज़ीक़ाद और दस दिन ज़िलहिज्ज के।

§ अहराम—वह कपड़ा जो हज्ज के दिनों में पहनते हैं। जब तक तीर्थ-यात्रा का कार्य समाप्त नहीं होता तब तक इसे पहने रहते हैं।

जाओ। फिर लोगों में कुछ ऐसे हैं जो दुआयें माँगते हैं कि ऐ हमारे पालनेवाले! हमको (जो देना हो) दुनिया में दे और क़यामत में उनको कुछ हिस्सा नहीं रहता। (२००) और लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो दुआएँ माँगते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमें दुनिया में भी बढ़ती दे और प्रलय में भी बढ़ती दे और हमको नरक की सज़ा से बचा। (२०१) यही हैं जिनको उनके किये का हिस्सा (यानी पुण्य मिलना) है और अल्लाह तो जल्द (सबका) हिसाब करनेवाला है। (२०२) और गिनती के इन चन्द दिनों में ख़ुदा की याद करते रहो। फिर जो शख़्स जल्दी करे और दो दिन में (चल बसे) उस पर (भी) कुछ पाप नहीं और जो देर तक ठहरा रहे उस पर (भी) कुछ पाप नहीं। यह (रिआयत) उनके लिए है जो परहेज़गारी करें। ख़ुदा से डरते रहो और जाने रहो कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे। (२०३) और (ऐ पैग़म्बर!) कोई आदमी ऐसा है जिसकी बातें तुमको दुनिया की ज़िन्दगी में भली मालूम होती हैं और वह अपनी दिली ख़्वाहिशों पर ख़ुदा को गवाह ठहराता है। (ईश्वर को साक्षी देता है कि जो मन में है वही ज़बान पर है (हालाँकि वह ज़्यादा झगड़ालू है। (२०४) और जब लौटकर जावें तो मुल्क में दौड़ता फिरता है कि उसमें विद्रोह फैलावे और खेती-बारी को और जानों को बरबाद करे। (अल्लाह उसे नहीं चाहता) अल्लाह फ़साद नहीं चाहता। (२०५) जब उससे कहा जाय कि ख़ुदा से डर तो शेख़ी उसको पाप पर आमादा करती है। ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (२०६) लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो ख़ुदा की ख़ुशी के लिए अपनी जान दे देते हैं और अल्लाह बन्दों पर बड़ी ही दया रखता है। (२०७) ऐ ईमानवालो! इस्लाम में पूरे-पूरे आ जाओ और शैतान के पैर पर पैर न रखो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२०८) फिर जब कि तुम्हारे पास साफ़ हुक्म पहुँच चुके और इस पर भी बिचल जाओ तो जान रखो कि अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (२०९) क्या यह लोग इसी की बाट देखते हैं कि अल्लाह

फ़रिश्तों के साथ बादलों का छाता लगाये, उनके सामने आवे और जो कुछ होना है हो चुके और सब काम अल्लाह ही के हवाले हैं। (२१०) [रुकू २५ आयात १४]

(ऐ पैग़म्बर !) याक़ूब के बेटों से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली हुई निशानियाँ दीं और जब कोई शख्स ख़ुदा की उस नियामत को बदल डाले, तो ख़ुदा की मार बड़ी सख्त है। (२११) जो लोग इन्कारी हैं, दुनिया की ज़िन्दगी उनको भली दिखाई गई है और ईमानवालों के साथ हँसी करते हैं; हालाँकि जो लोग परहेज़गार हैं उनके दर्जे क़यामत के दिन उनसे बढ़-चढ़कर होंगे अल्लाह जिसे चाहे बे हिसाब रोज़ी दे।(२१२) (शुरू में सब) † लोग एक ही दीन रखते थे; फिर अल्लाह ने पैग़म्बर भेजे जो ख़ुशख़बरी देते और इन्कारियों को डराते और उनकी मार्फ़त सच्ची किताबें भेजीं ताकि जिन बातों में लोग भेद डाल रहे हैं उन बातों का (वह किताब) फ़ैसला कर दे और जिन लोगों को किताब दी गई थी फिर वही अपने पास खुला हुक्म लाये। पीछे आपस की ज़िद से उनमें भेद डालने लगे तो वह सच्चा रास्ता जिसमें लोग भेद डाल रहे थे ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से ईमानवालों को दिखला दिया, और अल्लाह जिसको चाहे सच्ची राह दिखलाये। (२१३) क्या तुम मुसलमानों ! ऐसा ख़्याल करते हो कि बिहिश्त में जाओगे ? और अभी तक तुमको उन लोगों जैसी हालत नहीं पेश आई, जो तुमसे पहलों की हो चुकी है कि उनको सख्तियाँ और तकलीफ़ें पहुँचीं और फटकारे गये यहाँ तक कि पैग़म्बर और ईमानवाले जो उनमें साथ थे चिल्ला उठे कि ख़ुदा की मदद का कोई वक़्त भी है। जानो ख़ुदा की मदद क़रीब है।(२१४) (ऐ पैग़म्बर!) तुमसे पूछते हैं कि क्या चीज़‡ ख़र्च करें ? तो समझा दो जो माल ख़र्च करो (वह तुम्हारे) माता-पिता का और नज़दीक के

† हज़रत आदम और उनकी संतान।

‡ किस प्रकार का धन ख़र्च करें ? इसका उत्तर यह दिया गया है कि जो चाहो ख़र्च करो पर उन लोगों पर जिनका वर्णन इस आयत में किया गया है।

रिश्तेदारों का और अनाथों (यतीमों) और दीन-दुखियों (मुहताजों) का और बटोहियों (मुसाफ़िरों) का हक़ है और तुम कोई भी भलाई करोगे, अल्लाह उसको जानता है। (२१५) तुम पर जिहाद (लड़ाई) का हुक्म हुआ है और वह तुमको बुरा लगा है। शायद एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (२१६) [रुकू २६ आयात ६]

(ऐ पैग़म्बर! मुसलमान तुमसे) अदबवाले महीनों† में लड़ाई करने की बाबत पूछते हैं तो उनको समझा दो कि अदबवाले महीनों (पवित्र मासों) में लड़ना बड़ा पाप है। मगर अल्लाह की राह से रोकना और ख़ुदा को न मानना और अदबवाली मसजिद में न जाने देना और उस मसजिद से निकाल देना, अल्लाह के नज़दीक मार डालने से बढ़कर है। और वे तो सदा तुमसे लड़ते ही रहेंगे यहाँ तक कि इनका वश चले, तो तुमको तुम्हारे दीन से फिरा दें। जो तुममें अपने दीन से फिरेगा और इन्कारी की दशा में मर जावेगा,तो ऐसे लोगों का किया-कराया दुनिया और क़यामत में बेकार! और यह दोज़ख़ी हैं और हमेशा दोज़ख़ में ही रहेंगे।(२१७) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अल्लाह की राह में देश त्याग किया और जेहाद भी किये, यही हैं जो ख़ुदा की कृपा की आशा लगाये हैं और अल्लाह क्षमा करनेवाला दयावान है।(२१८) (ऐ पैग़म्बर!)तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं, तो कह दो कि इन दोनों में बड़ा पाप है और लोगों के लिए फ़ायदे भी हैं, मगर इनके फ़ायदे से इसका पाप बढ़कर है। और तुमसे पूछते हैं (ख़ुदा की राह में) क्या ख़र्च करें, तो समझा दो कि जितना ज्यादा हो। इसी तरह अल्लाह हुक्म तुम लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है

†अरब में चार महीनों में लड़ाई को बहुत बुरा समझते थे। उनके नाम यह हैं (१) ज़ीक़ाद (२) ज़िलहिज्ज (३) मुहर्रम (४) रजब। काफ़िर इन महीनों में भी लड़ाई छोड़ देते थे। मुसलमान उन दिनों में लड़ते डरते थे। इस पर उनको हुक्म दिया गया कि तुमसे ये लोग लड़ें, तो तुम भी उन महीनों में भी खोलकर लड़ो।

(और) शायद तुम ध्यान दो।(२१९) और (ऐ पैग़म्बर! यह लोग) तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं, तो समझा दो कि उनकी भलाई ही भलाई है और अगर उनसे मिल-जुलकर रहो तो वह तुम्हारे भाई हैं, और अल्लाह बिगाड़नेवालों को सँभालनेवालों से (अलग) पहचानता है। और अगर ख़ुदा चाहता तो तुमको कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है।(२२०) शिर्कवाली औरतें जब तक ईमान न लावें उनसे निकाह न करो। मुसलमान लौंडी शिर्कवाली बीवी § से भली है, अगर तुमको पसन्द भी हो। शिर्कवाले मर्द से निकाह न करो, जब तक ईमान न लावे। और शिर्कवाला तुमको कैसा ही भला लगे, उससे मुसलमान ग़ुलाम भला, और वे लोग (शिर्कवाले) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं। अल्लाह अपनी मेहरबानी से बिहिश्त और बख़शीश की तरफ़ बुलाता है और अपनी आज्ञाएँ लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वह होशियार रहें। (२२१) [रुकू २७ आयात ५]

(ऐ पैग़म्बर! लोग) तुमसे हैज़ (मासिक धर्म) के बारे में पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है। (हैज़) के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो लें उनके पास न जाओ। फिर जब नहा धो लें, तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है, उनके पास जाओ। बेशक अल्लाह तौबह करनेवालों को दोस्त रखता है और सफ़ाई रखनेवालों को दोस्त रखता है।(२२२) तुम्हारी बीवियाँ (गोया) तुम्हारी खेतियाँ हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आइन्दा का भी बन्दोबस्त रखो, और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाज़िर होना है। (ऐ पैग़म्बर!) ईमानवालों ख़ुशख़बरी सुना दो। (२२३) और सलूक करने और परहेज़गारी रखने और लोगों में मिलाप कराने में ख़ुदा की क़सम† मत खाओ। अल्लाह सुनता और जानता है। (२२४)

---

§ शिर्कवाली—ख़ुदा की ज़ात में और गुण में दूसरे को शरीक करने वाली, दूसरों को पूजनेवाली।

† यानी यह क़सम न खाओ कि मैं ऐसे-ऐसे आदमी के साथ कोई नेकी

तुम्हारी फ़िज़ूल* क़समों पर ख़ुदा तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा जो तुम्हारे दिली इरादे हों और अल्लाह बख़्शनेवाला (और) बरदाश्त करनेवाला है।(२२५) जो लोग अपनी बीवियों के पास जाने की क़सम खा बैठें, उनको चार महीने की मुहलत है; फिर (इस मुद्दत में) अगर मिल जावें, तो अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है, (२२६) और अगर तलाक़ की ठान लें तो अल्लाह सुनता जानता है। (२२७) और जिन औरतों को तलाक़ दी गई हो वह अपने आप को तीन दफ़े कपड़ों के आने तक (निकाह से) रोके रखें और अगर अल्लाह और क़यामत का यक़ीन रखती हैं, तो जो कुछ भी (बच्चे की क़िस्म से) ख़ुदा ने उनके पेट में पैदा कर रखा है, उसका छिपाना उनको जायज़ नहीं और उनके पति उनको अच्छी तरह रखना चाहें तो वह इस बीच में उनको वापस लेने के ज्यादा हक़दार हैं। और जैसे (मर्दों का हक़) औरतों पर वैसे ही दस्तूर के मुताबिक़ औरतों का (हक़ मर्दों पर)। हाँ, पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता है और अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमतवाला है। (२२८) [रुकू २८ आयात ७]

तलाक़ दो दफ़े (करके दी जाय) फिर दस्तूर के मुताबिक़ रहना या अच्छे बर्ताव के साथ रुख़सत कर देना और जो तुम उनको दे चुके हो उसमें से तुमको कुछ भी वापस लेना जायज़ नहीं। मगर यह कि मियाँ-बीवी को डर हो कि ख़ुदा ने जो हदें ठहरा दी हैं, उन पर क़ायम नहीं रह सकेंगे; फिर अगर तुम लोगों को इस बात का डर हो कि मियाँ-बीबी अल्लाह की हदों पर क़ायम नहीं रह सकें और औरत§ (अपना पीछा छुड़ाने के एवज़) कुछ दे निकले तो इसमें दोनों पर कुछ

न करूँगा। या इन-इन दो लोगों में मिलाप न कराऊँगा।

* जो अपने आप मुँह से निकल जाय जैसे कुछ लोग बात बे बात कहते हैं 'वल्लाह'। कुछ लोग कहते हैं कि यह वह क़सम है जो मनुष्य क्रोध में लाता है। ऐसी क़सम को तोड़ने में कुछ पाप नहीं।

§ मर्द औरत को तलाक़ दे सकता है और औरत मर्द से खुला ले सकती है। यानी एक दूसरे से न निभे तो अलग हो सकते हैं।

पाप नहीं, यह अल्लाह की बाँधी हुई हद्दें हैं तो इनसे आगे मत बढ़ो और जो अल्लाह की बाँधी हुई हद्दों से आगे बढ़ जायँ, तो यही लोग ज़ालिम हैं।(२२९) अब अगर औरत को (तीसरी बार) तलाक़† दे दी तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले, उसके लिए हलाल नहीं (हो सकती) हाँ, अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके) उसको तलाक़ दे दे, तो दोनों (मियाँ-बीवी) पर कुछ पाप नहीं कि फिर दूसरे से (परस्पर) प्रेम कर लें, बशर्ते कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बाँधी हुई हद्दों पर क़ायम रह सकेंगे। और यह अल्लाह की हद्दें हैं जिनको उन लोगों के लिए बयान फ़र्माता है जो समझते हैं। (२३०) और जब तुमने औरत को (दो बार) तलाक़ दे दी और उनकी मुद्दत पूरी होने को आई तो दस्तूर के मुताबिक़ उनको रखो या उनको (तलाक़ तीसरी) (देकर) रुख़सत कर दो और संतान के लिए उनको (अपनी स्त्री बना के) न रखना कि (बाद को उन पर) ज़्यादती करने लगो और जो ऐसा करेगा, तो अपना ही खोयेगा और अल्लाह के हुक्मों को कुछ हँसी-खेल न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो और यह कि उसने तुम पर किताब और अक़्ल की बातें उतारीं जिससे वह

---

† तलाक़ का यह दस्तूर है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक़ देता है तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक़ देता है और एक महीने के बाद दूसरी तलाक़ भी इस-तरह से देता है। यहाँ तक तो मियाँ बीवी में सुलहनामा हो सकता है। इसके एक महीने बाद तीसरी तलाक़ दी जाती है। इस तलाक़ देने के बाद फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जा सकता। यह औरत ३ माह १० दिन बाद निकाह (ब्याह) कर सकती है। दूसरे पति के साथ निकाह हो जाने पर अगर दूसरा पति तलाक़ दे दे तो सिर्फ़ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग कर चुकी हो (हमबिस्तर हो चुकी हो) अपने पूर्व पति के साथ फिर निकाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय-भोग न कर ले (यानी हमबिस्तर न हो ले) कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं कर सकती।

तुमको समझाता है और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सबको जानता है। (२३१) [रुकू २६ आयात ३]

और जब औरतों को तीन बार तलाक़ दे दो और वह अपनी इद्दत की मुद्दत† पूरी कर लें और जायज़ तौर पर आपस में (किसी से) उनकी मर्ज़ी मिल जाय, तो उनको (दूसरे) शौहरों के साथ निकाह कर लेने से न रोको। यह नसीहत उसको की जाती है, जो तुममें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है। यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीज़गी और बड़ी सफ़ाई की बात है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (२३२) जो शख़्स (बीवी को तलाक़ दिये पीछे अपनी औलाद को पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे, तो उसकी ख़ातिर माताएँ अपनी औलाद को) पूरे दो बरस दूध पिलाएँ और जिसका वह बच्चा है (यानी बाप) उस पर दस्तूर के मुताबिक़ माताओं को खाना-कपड़ा देना लाज़िम है। किसी को तकलीफ़ न दी जाय, मगर वहीं तक जहाँ तक उसकी सामर्थ्य हो। माता को उसके बच्चे की वजह से नुक़सान न पहुँचाया जाय और न उसको जिसका बच्चा है (यानी बाप को) उसके बच्चे की वजह से किसी तरह का नुक़सान पहुँचाया जाय और (दूध पिलाने का खाना-ख़ुराक जैसा असल बाप पर) वैसा (उसके) वारिस पर, फिर अगर (वक़्त से पहले माता-पिता) दोनो अपनी मर्ज़ी से और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें तो उन पर कुछ पाप नहीं। और अगर तुम अपनी औलाद को (किसी धाय से) दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ पाप नहीं, बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ (उनको) देना किया था उनके हवाले करो। और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३३) और तुममें जो लोग मर

†इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिस मियाद के अन्दर औरत तलाक़ देने के बाद या उसका शौहर मर जाने के बाद निकाह नहीं कर सकती।

इद्दत की मुद्दत चार महीने दस दिन है। वास्तव में यह है कि इस बीच स्त्री तीन बार मासिक धर्म से पवित्र हो जाय।

जायँ और बीवियाँ छोड़ मरें तो (औरतों को चाहिए कि) चार महीने दस दिन अपने तईं रोके रहें ❀,फिर जब अपनी (इद्दत की) मुद्दत पूरी कर लें तो जायज़ तौर पर जो कुछ अपने हक़ में करें उसका तुम (मरे के वारिसों) पर कुछ पाप नहीं, और तुम लोग जो कुछ करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (२३४) और अगर तुम किसी बात की आड़ में औरतों को निकाह का संदेशा भेजो या अपने दिलों में छिपाये रखो तो इसमें (भी) तुम पर कुछ पाप नहीं। अल्लाह को मालूम है कि तुम इसका विचार करोगे, मगर इनसे निकाह का ठहराव तो चुपके से भी न करना †, हाँ जायज़ तौर पर बात कह दो। और जब तक मियाद मुक़र्रर (यानी इद्दत) समाप्त न हो जाय निकाह के बन्धन की बात पक्की न कर बैठना। और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह जानता है, तो उससे डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह बख़्शनेवाला और सहनशील है। (२३५) [रुकू ३० आयात ४]

अगर तुमने औरतों के साथ हमबिस्तरी न की हो और उनका मिहर§ न ठहराया हो इससे पहले उनको तलाक़ दे दो तो उसमें तुम पर कोई पाप नहीं। हाँ ऐसी औरतों के साथ कुछ सलूक करो। सामर्थ वाले और बेसामर्थवाले अपनी हैसियत के लायक़ उनको ख़र्च दें जैसा ख़र्च का दस्तूर है और भले आदमियों पर लाज़िम है। (२३६) और अगर हमबिस्तर होने से पहले और मिहर ठहराने के बाद औरतों को तलाक़ दे दो तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिए, मगर यह कि स्त्रियाँ छोड़ बैठें या (मर्द) जिसके हाथ में निकाह का क़रार (क़ायम रखना) है वह (अपना हक़) छोड़ दे,

❀ यानी इतने दिन ब्याह-निकाह न करें।

† यानी इद्दत भर उनके निकाह की बात न करो और न यह जी में ठानो कि मैं इनके साथ ब्याह करूँगा।

§ मिहर उस क़रार को कहते हैं जो निकाह के समय शौहर औरत के साथ जायदाद व नक़द रुपया देने का करता है।

(यानी पूरा मिहर देने पर राज़ी हो) और अपना हक़ छोड़ दे तो यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और अपने बीच इस श्रेष्ठ विचार को मत भूलो। जो करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३७) (मुसलमानों!) नमाज़ों की और बीच की नमाज़ का पूरा ध्यान रखो और अल्लाह के आगे अदब से खड़े हुआ करो।(२३८) फिर अगर तुमको डर हो तो पैदल या सवार (जैसी हालत हो) नमाज़ पढ़ लो। फिर जब तुम निश्चिंत हो जाओ तो जिस तरह अल्लाह ने तुमको (पैग़म्बर की मार्फ़त नमाज़ का तरीक़ा) सिखाया, जो तुम पहले नहीं जानते थे, उसी तरीक़े से अल्लाह को याद करो।(२३९) जो लोग तुममें से मर जायँ और बीवियाँ छोड़ मरें तो अपनी बीवियों के हक़ में एक बरस तक के बर्ताव (भोजन आदि का प्रबन्ध) और (घर से) न निकालने की वसीयत कर मरें। फिर अगर औरतें (ख़ुद ही घर से) निकल खड़ी हों तो जायज़ बातों में से जो कुछ अपने हक़ में करें उनका तुम पर कुछ पाप नहीं। और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (२४०) जिन औरतों को तलाक़ दी जाय उनके साथ (मिहर के अलावा भी) दस्तूर के मुताबिक़ (जोड़े वग़ैरह से कुछ) सलूक करना परहेज़गारों को मुनासिब है। (२४१) इसी तरह अल्लाह तुम लोगों के लिए अपने हुक्मों को खोल-खोलकर बयान फ़र्माता है ताकि तुम समझो। (२४२) [रुकू ३१ आ.७]

(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नहीं की, जो अपने घरों से मौत के डर के मारे निकल खड़े हुए और वह हज़ारों ही थे फिर ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया कि मर जाओ फिर उनको जिलाकर उठाया! बेशक अल्लाह तो लोगों पर कृपालु है। लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) नहीं होते।(२४३) ख़ुदा की राह में लड़ो और जाने रहो कि अल्लाह सुनता और जानता है। (२४४) कोई है जो ख़ुदा को ख़ुश दिल से क़र्ज़* दे कि उसके क़र्ज़ को उसके लिए कई गुना बढ़ा देगा। अल्लाह ही ग़रीब और अमीर बनाता है और उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौटकर जाना है। (२४५) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुमने इसराईल के

* यानी जिहाद के लिए जो धन या साधन हैं उनका प्रबन्ध करे।

बेटों के सरदारों पर नज़र नहीं की कि एक समय उन्होंने मूसा के बाद अपने पैग़म्बर (अशमूयील) से दरख़्वास्त की थी कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर करो कि हम (उसके सहारे से) अल्लाह की राह में जेहाद करें। (पैग़म्बर ने) कहा अगर तुम पर जेहाद फ़र्ज़ किया जाय, तो तुमसे कुछ दूर नहीं(संभव है) कि तुम न लड़ो। बोले कि हम अपने घरों और बाल-बच्चों से तो निकाले जा चुके तो हमारे लिए अब कौन-सा उज़्र है कि ख़ुदा की राह में न लड़ें। फिर जब उन पर जेहाद फ़र्ज़ किया गया, तो उनमें से चन्द गिने हुओं के सिवाय बाक़ी सब फिर बैठे। अल्लाह तो अपराधियों को ख़ूब जानता है। (२४६) उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तालूत ‡ को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया है। (उस पर) कहने लगे कि उसको हम पर कैसे हुकूमत मिल सकती है। हालाँकि इससे तो हुकूमत के हम ही ज़्यादा हक़दार हैं कि उसको तो माल से भी कुछ ऐसी अमीरी नसीब नहीं। (पैग़म्बर ने) कहा कि अल्लाह ने तुम पर उसी को पसन्द फ़र्माया है कि इल्म और जिस्म में उसको बढ़ती दी है और अल्लाह अपना मुल्क जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुंजाइशवाला जानकार है। (२४७) उन पैग़म्बर ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की यह निशानी है कि यहाँ† सन्दूक़ जिसमें तुम्हारे पालनेवाले की तसल्ली(यानी तौरात) है और मूसा और हारून जो छोड़ मरे हैं, उनमें की बची-खुची चीज़ें हैं, तुम्हारे पास आ जायँगी, फ़रिश्ते उनको उठा लायेंगे। अगर ईमान रखते

‡ हज़रत मूसा के बाद कुछ समय बनी इसराईल का काम बना रहा। फिर उनके पापों के कारण उन पर एक काफ़िर बादशाह ने अपना अधिकार जमा लिया। इसने उनको अनेक कष्ट दिये तो इन्होंने अपने नबी हज़रत शैमऊल से प्रार्थना की कि हमारे लिए कोई बादशाह ठहरा दीजिये जिसके आधीन हम जालूत से युद्ध कर सकें। हज़रत शैमऊल ने कहा ख़ुदा ने तालूत को तुम्हारा बादशाह नियत किया है।

† बरकत का सन्दूक़ तालूत के अधिकार में आ जाना उनकी बादशाहत का ईश्वरीय प्रमाण है।

हो तो यही एक बात तुम्हारेलिए निशानी है ।(२४८) [रुकू ३२ आ.६]

फिर जब तालूत फ़ौज सहित चला तो कहा कि (रास्ते में एक नहर पड़ेगी) अल्लाह उस नहर से तुम्हारी जाँच करनेवाला है, तोजो (अघाकर) उसका पानी पी लेगा, वह हमारा नहीं और जो उसको नहीं पियेगा, वह हमारा है; मगर (हाँ) अपने हाथ से कोई एक चिल्लू भर ले। उन लोगों में से गिने हुए चन्द के सिवाय सभी ने तो उस (नहर) में से अघाकर पी लिया । फिर जब तालूत और ईमानवाले जो उसके साथ थे नहर के पार हो गये, तो (जिन लोगों ने तालूत का हुक्म न माना था) कहने लगे कि हममें तो जालूत और उसके लश्कर से मुक़ाबिला करने की आज ताक़त नहीं है । (उस पर) वह लोग जिनको यक़ीन था कि उनको ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है, बोल उठे—अक्सर अल्लाह के हुक्म से थोड़ी सेना ने बड़ी सेना पर जीत पाई है। अल्लाह संतोषियों का साथी है । (२४९) जब जालूत और उसकी फ़ौजों के मुक़ाबिले में आये तो दुआ की कि ऐ हमारे पालनेवाले! हमको पूरा संतोष दे और हमारे पाँव जमाये रख और काफ़िरों की जमात पर हमको जीत दे ।(२५०) उसमें फिर उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और जालूत को दाऊद ने क़त्ल किया और उनको ख़ुदा ने राज्य दिया और अक़्ल दी और जो चाहा उनको सिखा दिया । अगर अल्लाह किन्हीं के ज़रिये से किन्हीं को न हटाता रहे तो मुल्क उलट-पुलट जाय । लेकिन अल्लाह संसार के लोगों पर दयालु है।(२५१) (ऐ पैग़म्बर।) यह अल्लाह की आयतें जो मैं तुमको सचाई से पढ़-पढ़कर सुनाता हूँ और बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो । (२५२)

———

तीसरा पारा (सूरे बक़र)

तिलकरुसुल (यह पैग़म्बर)

इन पैग़म्बरों में से हमने किसी पर किसी को प्रधानता दी । इनमें से कोई तो ऐसे हैं जिनके साथ अल्लाह ने बातचीत की और किसी के

दर्जे ऊँचे किये। मरियम के बेटे ईसा को हमने खुले-खुले चमत्कार दिये और पाक रूह (जिब्रील) ने उनका समर्थन किया और अगर ख़ुदा चाहता तो जो लोग उनके बाद हुए उनके पास खुले हुए निशान आये पीछे एक दूसरे से न लड़ते; लेकिन लोगों ने एक दूसरे में भेद डाला। तो इनमें से कोई वह थे जो ईमान लाये और कोई वह थे जो काफ़िर (इन्कारी) हुए और अगर ख़ुदा चाहता (यह लोग) आपस में न लड़ते; मगर अल्लाह जो चाहता है करता है। (२५३) [रुकू ३३ आयात ५]

ऐ ईमानवालों! उस दिन (प्रलय) के आने से पहले हमारे दिये हुए में से ख़र्च कर दो जिसमें क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख़्त) न होगा, न यारी होगी और न सिफ़ारिश होगी और जो इन्कारी हैं, वह लोग अन्यायी हैं। (२५४) अल्लाह है उसके सिवा कोई पूजा के क़ाबिल नहीं। (जगत् का) साक्षात् सँभालनेवाला, न उसको झपकी आती है और न नींद। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है, कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उसके सामने सिफ़ारिश करे। जो कुछ लोगों के सामने और पीछे है उसको (सब) मालूम है और लोग उसकी मालूमात में से किसी पर क़ाबू नहीं हो सकते; सिवाय उसके कि जितनी वह चाहे। उसका राज्य आकाश और ज़मीन में है और इन दोनों की रक्षा उस पर भारी नहीं और वह महान् और सर्वोपरि है। (२५५) दीन में ज़बरदस्ती नहीं, भूल और सुधार ज़ाहिर हो चुकी है कि जो झूठी इबादत को न माने और अल्लाह पर ईमान लावे, तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ रखी है, जो टूटनेवाली नहीं और अल्लाह सुनता-जानता है। (२५६) अल्लाह ईमानवालों का मददगार है कि उनको अँधेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और जो लोग काफ़िर हैं, उनके साथी शैतान हैं कि उनको रोशनी से निकालकर अँधेरे में ढकेलते हैं। वही लोग नरकवासी हैं। वह हमेशा दोज़ख़ ही में रहेंगे। (२५७) [रुकू ३४ आयात ४]

(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने उस शख़्स को नहीं देखा कि जो सिर्फ़ इस वजह से कि ख़ुदा ने उसको राज्य दे रखा था इब्राहीम से उनके

परवरदिगार के बारे में जिरह करने लगा।† जब इब्राहीम ने (उससे) कहा कि मेरा पालनेवाला तो वह है जो जिलाता और मारता है, (इस पर) वह कहने लगा कि मैं भी जिलाता और मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह तो सूर्य को पूर्व से निकालता है, आप उसको पश्चिम से निकालें, इस पर वह काफ़िर चुप रह गया। और अल्लाह अन्यायियों को शिक्षा नहीं देता। (२५८) या जैसे वह शख़्स § जो एक उजड़ी बस्ती से होकर गुज़रा, उसे देखकर ताज्जुब से कहने लगा कि अल्लाह इस बस्ती को इसके उजड़े पीछे कैसे आबाद करेगा? इस पर अल्लाह ने उनको सौ वर्ष तक मुर्दा रखा फिर उनको जिला उठाया (और) पूछा (तुम इस हालत में) कितनी मुद्दत रहे? उसने कहा एक दिन रहा हूँ या एक दिन से भी कम। फ़र्माया (नहीं) बल्कि तुम सौ वर्ष (इसी हालत में) रहे। अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देखो कि कोई बुसी तक नहीं और अपने गधे की तरफ़ (भी) नज़र करो (जिस पर तुम सवार थे) और तुम्हारे (इतने दिनों मुर्दा रखने और फिर जिला उठाने से) मक़सद यह है कि हम तुम लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत का) एक नमूना बनावें और (गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र करो कि हम कैसे उनको (जोड़-ज़ोड़कर) उनका (ढाँचा बना) खड़ा करते, फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं, फिर जब उन पर शक्ति (अल्लाह की शक्ति का यह

† यह कथा बाइबिल के बादशाह नमरूद की है। वह स्वयं अपने को पूज्य बताता था। इब्राहीम ने उसकी पूजा न की और कहा कि मैं तो उस एक की पूजा करता हूँ जो मारता और जिलाता है यानी ख़ुदा की। नमरूद उनकी बात का तत्व न समझा और तुरन्त दो अपराधियों को बुलवाकर एक को छोड़ दिया और दूसरे को मरवा डाला। इस पर इब्राहीम ने सूर्य को उदय और उसके अस्त करने की बात कही। नमरूद अब कुछ न बोल सका।

§ यह बात हज़रत उज़ैर की है। पहले उनकी समझ में न आता था कि ख़ुदा मरनेवालों को कैसे जिला सकता है। जब वह स्वयं मरकर फिर जी उठे तो उनको विश्वास हुआ।

चमत्कार) ज़ाहिर हुआ तो बोल उठे कि अब मैं यक़ीन करता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ाबू रहता है।(२५६) और जब इब्राहीम ने (खुदा से) निवेदन किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको दिखा कि तू मुर्दों को कैसे जिलाता है। खुदा ने फ़र्माया क्या तुमको इसका यक़ीन नहीं। अर्ज़ किया, क्यों नहीं। मगर मैं अपने दिल की तसल्ली चाहता हूँ। फ़र्माया तो (अच्छा) चार पक्षी लो और उनको अपने पास मँगाओ फिर एक-एक पहाड़ी पर उनका एक एक टुकड़ा रख दो, फिर उनको बुलाओ तो वह (आप से आप) तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और जाने रहो अल्लाह जबरदस्त हिकमतवाला है। (२६०) [रुकू३५आ.३]

जो लोग अपने माल खुदा की राह में ख़र्च करते हैं उनकी(ख़ैरात की) मिसाल उस दाने-जैसी है, जिससे सात बालें उगती हैं, हर बाल में सौ दाने, और अल्लाह बढ़ती देता है जिसको चाहता है, और अल्लाह (बड़ी) गुंजाइशवाला जानकार है। (२६१) जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च किये पीछे (किसी तरह का) एहसान नहीं जताते और न तकलीफ़ देते हैं उनको उनका सवाब उनके पालनकर्त्ता के यहाँ मिलेगा, और न तो उन पर भय होगा और न वह उदास होंगे। (२६२) भली बात बोलना और क्षमा करना उस पुण्य से बहुत बढ़कर है जिसके पीछे दुःख हो और अल्लाह निडर और ज़ब्त करनेवाला है। (२६३) ईमानवालों! अपनी ख़ैरात को एहसान जताने और नुक़सान देने से उस शख़्स की तरह अकारथ मत करो जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करता है और अल्लाह और क़यामत पर यक़ीन नहीं रखता, तो उसकी (ख़ैरात की) मिसाल चट्टान-जैसी है कि उस पर मिट्टी (पड़ी) है, फिर उस पर ज़ोर का मेह बरसा और उसको सपाट कर गया, उनको अपनी कमाई कुछ हाथ नहीं ‡ लगती। और

‡ लोगों को दिखाने के लिए दान-पुण्य करने से कुछ लाभ न होगा। चट्टान पर थोड़ी-सी मिट्टी के नीचे बीज बोने से नहीं उगता। इसी तरह दिखावे की नेकी बेकार है।

अल्लाह काफ़िरों को नसीहत नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग ख़ुदा की ख़ुशी के लिए और अपनी नीयत साबित रखकर अपने माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल एक बाग़-जैसी है जो ऊँचे पर है, उस पर ज़ोर का मेह पड़े, तो दूना फल लाये और अगर उस पर ज़ोर का मेह न पड़ा, तो (उसकी) हलकी फ़ुआर (भी काफ़ी है), और तुम लोग जो कुछ भी करते हो, अल्लाह देख रहा है।‡(२६५) भला तुममें से कोई भी इस बात को पसन्द करेगा कि खजूरों और अंगूरों का अपना एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों, हर तरह के फल उसको वहाँ हासिल हों और वह बुड्ढा हो जावे और उसके (छोटे-छोटे) कमज़ोर बच्चे हों; अब उस बाग़ पर एक हवा का बवंडर चले, जिसमें आग (भरी) हो, जो उस बाग़ को जला दे। इसी तरह अल्लाह(अपने) हुक्मों को खोल-खोलकर तुम लोगों से बयान करता है, ताकि तुम सोच सको।❀ (२६६) [रुकू ३६ आयात ६]

ऐ ईमानवालों !(ख़ुदा की राह में)अच्छी चीज़ों में से जो तुमने आप कमाई की हों और हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की हों,ख़र्च करो और ख़राब चीज़ के देने का इरादा भी न करना। तुम भी उसकी न लो और अल्लाह बेपरवाह (व) अच्छाइयों का घर है (२६७) शैतान तुमको तंगी से डराता और बेशर्मी की तरफ़ लगाता है और अल्लाह अपनी तरफ़ से क्षमा और कृपा का तुमको वचन देता है और अल्लाह गुन्जाइशवाला और जानकार है। (२६८) जिसको चाहता समझ देता है और जिसको समझ दी गई, बेशक उसने बड़ी दौलत पाई और शिक्षा भी वही मानते हैं जो समझदार हैं।(२६९) जो ख़र्च भी

‡ ऊँची जगह जो बाग़ होता है वहाँ बहुत पानी बह जाता है और कम पानी भी पेड़ों के काम आता है। इसी प्रकार सच्चे दिल से जो दान किया जाता है वह थोड़ा हो या बहुत, लाभदायक होता है।

❀ कोई भी यह नहीं चाहता कि उसकी कमाई बर्बाद हो,पर जो लोग दिखाने के लिए अच्छे काम करते हैं वह मानो ऐसा बाग़ लगाते हैं जिसका फल न वह स्वयं खायेंगे, न उनके बच्चों को मिलेगा।

तुम (ख़ुदा की राह में) उठाओ या (उसके नाम की) कोई मन्नत * मानो, वह सब अल्लाह को मालूम है और जो ईश्वर के अलावा किसी की मन्नत मानकर ईश्वर का हक़ मारते हैं, उनका कोई सहायक न होगा। (२७०) अगर ख़ैरात सबके सामने दो, तो वह भी अच्छा† और अगर इसको छिपाओ और ज़रूरतवालों को दो, तो यह तुम्हारे हक़ में और भी अच्छा है और ऐसा देना तुम्हारे पापों का कफ़्फ़ारा§ होगा और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उससे ख़बरदार है। (२७१) (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों को सीधे मार्ग पर लाना तुम्हारे क़ाबू का नहीं, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है और तुम लोग माल में से जो कुछ भी ख़र्च करोगे, सो अपने लिए और तुम तो ख़ुदा ही को ख़ुश करने के लिए ख़र्च करते हो और माल में से जो कुछ भी (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायगा और तुम्हारा हक़ न मारा जायगा। (२७२) उन दीनों को देना चाहिए, जो अल्लाह की राह में घिरे (ध्यान में) बैठे हैं—मुल्क में किसी तरफ़ को जा नहीं सकते। (जो शख़्स इनके हाल से) बेख़बर है, इनके न माँगने से इनको मालदार समझता है; लेकिन तू इनकी सूरत से इनको साफ़ पहचान लेगा कि वह लिपटकर लोगों से नहीं माँगते, ꙮ जो कुछ तुम लोग माल में से (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, अल्लाह उसको जानता है। (२७३) [रुकू ३७ आयात ७]

* मन्नत—काम पूरा होने के लिए दान पुण्य करने की मन में मानता मानना या संकल्प लेना।

† दान देना हर प्रकार अच्छा है चाहे छिपाकर दिया जाय चाहे सबके सामने दिया जाय। परन्तु गुप्त दान अधिक सुन्दर है क्योंकि इस प्रकार जिसकी सहायता की जाती है उसे दूसरे लोगों के आगे लज्जित नहीं होना पड़ता।

§ कफ़्फ़ारा—पापों का नाश करनेवाला (प्रायश्चित्त)

ꙮ कुछ लोग रसूल से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये उनके घर के पास बैठे रहते थे। ये किसी से कुछ माँगते न थे, पर धनवान् भी नहीं थे। इसलिए उनकी सहायता का आदेश दिया गया है।

जो लोग रात और दिन छिपे और ज़ाहिर अपने माल (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, तो उनको पालनकर्त्ता के यहाँ से बदला मिलेगा और इनको न डर होगा और न वह उदास होंगे।(२७४) जो लोग व्याज खाते हैं (क़यामत के दिन) खड़े नहीं हो सकेंगे, मगर उस शख़्स का-सा खड़ा होना जिसको शैतान ने (अपनी) चपेट से पागल कर दिया हो, यह उनके इस कहने की सज़ा है कि जैसा बेचने का मामला वैसा ही व्याज का मामला है। हालाँकि बेचने को तो अल्लाह ने हलाल या पाक किया है और (व्याज) सूद को हराम (नापाक), तो जिसके पास उनके परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत पहुँची और उसने व्याज खाना छोड़ दिया। जो (सूद) पहले (ले चुका है) वह उसका हुआ और उसका मामला खुदा के हवाले, और जो फिर वही काम करेगा तो ऐसे पापी लोग नरकी हैं और वह हमेशा नरक ही में रहेंगे।(२७५) अल्लाह व्याज को मिटाता और ख़ैरात बढ़ाता है। जितने किये को न माननेवाले (नाशुक्रा) हैं और कहना नहीं मानते, खुदा उनसे राज़ी नहीं।(२७६) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे, उनका बदला उनके पालनकर्त्ता के यहाँ से मिलेगा। और उन पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (२७७) ऐ ईमानवालों ! अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो, और जो सूद बाक़ी है छोड़ बैठो।(२७८) और अगर (ऐसा) न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिए होशियार हो रहो और अगर तौबह करते हो तो अपनी असल रक़म तुमको मिलेगी और तुम (किसी का) नुक़सान न करो और न कोई तुम्हारा नुक़सान करेगा।† (२७९) और अगर (कोई) तंगदस्त तुम्हारा क़र्ज़दार हो तो अच्छी हालत तक की मुहलत दो और अगर हो सके तो तुम्हारे हक़ में यह अधिक अच्छा है कि उसका (असल क़र्ज़ भी) छोड़ दो। (२८०)

† जिन मुसलमानों ने रुपया व्याज पर दे रखा था, उनसे कहा गया कि तुम मूलधन ले लो और व्याज छोड़ दो और अगर व्याज पर अड़ोगे, तो तुमको खुदा और रसूल के विरोध का सामना करना पड़ेगा।

और उस दिन से डरो जब कि तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाये जाओगे। फिर हर शख्स को उसके किये का पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और लोगों पर अन्याय न होगा। (२८१) [रुकू ३८ आयात ८]

ऐ ईमानवालों! जब तुम एक मियाद मुक़र्रर तक उधार का लेन-देन करो तो उसको लिख लिया करो और (अगर तुमको लिखना न आता हो तो) तुम्हारे बीच में कोई लिखनेवाला इंसाफ़ से लिख दे§ और जिससे लिखवाओ तो उस लिखनेवाले को चाहिए कि लिखने से इन्कार न करे, जिस तरह खुदा ने उसको सिखाया है (उसी तरह) उसको भी चाहिए कि (बेउज्र) लिख दे। और जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ निकलेगा (वह दस्तावेज़ का) मतलब बोलता जाय, और अल्लाह से डरे, वही उसके काम का सँभालनेवाला है, और हक़ में से किसी क़िस्म की काट-छाँट न करे। जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ आयद होगा अगर वह नासमझ हो या कमज़ोर हो या खुद मतलब खुलासा न कर सकता हो तो उसका मुख्तार इंसाफ़ के साथ दस्तावेज़ का मतलब बोलता जाय और अपने लोगों में से जिन लोगों पर तुम्हारा विश्वास हो (ऐसे) दो मर्दों को गवाह कर लिया करो। फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतों को कि उनमें से कोई एक भूल जायगी तो एक दूसरे को याद दिलायेगी और जब गवाह बुलाये जायँ तो इन्कार न करें और मामला मियादी छोटा हो या बड़ा उसके लिखने में सुस्ती न करो, खुदा के नज़दीक बहुत ही मुन्सिफ़ाना है। और गवाही के लिए भी यही तरीक़ा बहुत ही ठीक है और ज्यादातर सोचने के लायक़ है कि तुम शक और शुबहा न करो। अगर सौदा नक़द दाम से हो जिसको तुम हाथों-हाथ आपस में लिया-दिया करते हो तो उसके न लिखने में तुम पर कुछ पाप नहीं। और जबकि ख़रीद-फ़रोख्त करो तो गवाह कर लिया करो और लिखनेवाले को किसी तरह का नुक़सान न पहुँचाया

§ उधार का लेन-देन हो तो भूलचूक न होने के लिए दो हुक्म हैं; (१) उसको लिख लेना और (२) गवाही एक मर्द और दो औरतों की या दो मर्दों की लेना।

जाय और न गवाह को। और ऐसा करो तो यह तुम्हारा पाप है, और अल्लाह से डरो और अल्लाह तुमको सिखाता है, और अल्लाह सब कुछ जानता है। (२८२) अगर सफ़र में हो और तुमको कोई लिखने-वाला न मिले तो गिरवीं पर क़ब्ज़ा रखो। पस अगर तुममें से एक का एक विश्वास करे तो जिस पर विश्वास किया गया है (यानी क़र्ज़ लेनेवाला) उसको चाहिए क़र्ज़ देनेवाले की अमानत यानी क़र्ज़ को (पूरा-पूरा) अदा कर दे और ख़ुदा से जो उसके काम का बनानेवाला है डरे। और गवाही को न छिपाओ, और जो उसको छिपायेगा तो वह दिल का खोटा है और जो कुछ भी तुम लोग करते हो, अल्लाह को सब मालूम है। (२८३) [रुकू ३९ आयात २]

जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और जो तुम्हारे दिल में है अगर उनको ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा, फिर जिसको चाहे बख़्शे और जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह हर चीज़ पर(अधिकार)क़ाबू रखता है। (२८४) रसूल (मोहम्मद) उस किताब को मानते हैं जो उनके परवरदिगार की तरफ़ से उन पर उतरी है, और पैग़म्बर के साथ और मुसलमान भी सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाये। हम ख़ुदा के पैग़म्बरों में से किसी एक को जुदा नहीं समझते और बोल उठे हमने सुना और विश्वास किया। ऐ परवरदिगार ! तेरी बख़्शीश चाहिए और तेरी ही तरफ़(पास) लौटकर जाना है। (२८५) अल्लाह किसी शख़्स पर उसकी शक्ति से ज़्यादा बोझ नहीं डालता। जिसने अच्छे काम किये उसका बदला उसी के लिए है; जिसने बुरे काम किये उनकी(सज़ा भी) उसी के लिए है। ऐ हमारे परवरदिगार ! अगर हम अनजान में भूल जायँ या चूक जायँ तो हमको न पकड़, और ऐ हमारे परवरदिगार ! जो लोग हमसे पहले हो गये हैं, उन पर तूने बोझ (परीक्षा) डाला था वैसा बोझ हम पर न डाल और ऐ हमारे पालनकर्त्ता! इतना बोझ जिसको उठाने की हममें ताक़त नहीं है, उसे हमसे न उठवा, और हमारे अपराधों पर ध्यान

न दे और हमारे गुनाहों को माफ़ कर और हम पर रहम कर। तू ही हमारा मालिक है। हमें काफ़िरों के विरुद्ध मदद दे।(२८६) [रुकू ४० आ. ३]

---

३ सूरे आल इमरान ८९

मदीना में उतरी और इसमें २०० आयतें, २० रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मेहरबान(है)। अलिफ़, लाम, मीम (१) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं। ज़िन्दा(अविनाशी व जगत् का) सँभालनेवाला है।(२) उसी ने तुम पर यह किताब वाजिब उतारी, जो उन (आसमानी किताबों) की तसदीक़ करती है, जो उससे पहले (उतर चुकी) हैं और उसी ने पहले लोगों को नसीहत के लिए तौरात और इञ्जील उतारी, उसी ने (और चीज़ों को भी) उतारा (जिससे सच-झूठ का) भेद (ज़ाहिर होता है)। (३) जो लोग ख़ुदा की आयतों को सुनकर इन्कारी हैं, बेशक उनको सख्त सज़ा मिलेगी, और अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेनेवाला है। (४) अल्लाह से कोई चीज़ ज़मीन में और आसमान में छिपी नहीं।(५) वही है जो मा के पेट में जैसी चाहता है, तुम लोगों की सूरत बनाता है। उसके सिवाय कोई इबादत के क़ाबिल नहीं। वह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (६) (ऐ पैग़म्बर!) वही है जिसने तुम पर यह किताब उतारी जिसमें से बाज़ आयतें पक्की§ हैं कि वह असल किताब है और दूसरी संदेह में डालनेवाली (कई अर्थ देनेवाली)। तो जिन लोगों के दिलों में टेढ़ापन है वह तो क़ुरान की उन्हीं शकवाली आयतों के पीछे पड़े रहते हैं, ताकि विरोध पैदा करें और उनके असल मतलब की खोज लगावें, हालाँकि अल्लाह के सिवाय उनका असली मतलब किसी को

---

§ क़ुरान में दो तरह की आयतें हैं—एक मुहकम, दूसरी मुतशाबिह। मुहकम (पक्की) वह वाक्य हैं जिनका अर्थ स्पष्ट है और इसलिए उनका

मालूम नहीं और जो लोग इल्म में बड़ी पैठ रखते हैं, वह तो इतना ही कहकर रह जाते हैं कि इस पर हमारा ईमान है। सब हमारे परवरदिगार की तरफ़ से हैं और वही समझते हैं जिनको सूझ है। (७) हमारे परवरदिगार ! हमको सीधी राह पर लाये पीछे हमारे दिलों को डावाँडोल न कर और अपनी सरकार से हमको रहमत कर दे, कोई शक नहीं तू बड़ा देनेवाला है। (८) ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! तू एक दिन बेशक लोगों को इकट्ठा करेगा। बेशक अल्लाह वादाखिलाफ़ी नहीं किया करता। (९) [रुकू १ आयात ९]

जो लोग काफ़िर हैं, अल्लाह के यहाँ न तो उनके माल ही कुछ काम आयेंगे और न उनकी औलाद ही और यही नरक के ईंधन हैं। (१०) (इनकी भी) फ़िरऔनवालों और उनसे पहले लोगों जैसी गति होनी है कि उन्होंने आयतों को झूठा किया, तो अल्लाह ने उनको उनके गुनाहों के बदले धर पकड़ा, और अल्लाह की मार बड़ी सख्त है (११) (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग इन्कारी हैं, उनसे कह दो कि कोई दिन आता है (जल्दी ही) कि तुम हार जाओगे और नरक की तरफ़ हँकाये जाओगे। वह बुरा सामान है। (१२) उन दो गिरोहों में तुम्हारे लिए (खुदाई-क़ुदरत) की निशानी (प्रमाण) हो चुकी है, जो एक-दूसरे से (बदर के युद्ध में) लड़ गये। एक गिरोह (मुसलमानों का) तो खुदा की राह पर लड़ता था और दूसरा (गिरोह) काफ़िरों का था, जिनको आँखों देखते मुसलमानों का गिरोह अपने से दूना दिखलाई दे रहा था और अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है बल देता है*। इसमें संदेह

समझना सरल है। मुतशाबिह वे हैं जिनको कई पहलुओं से समझ सकते हैं या वे अक्षर हैं जिनका तात्पर्य कोई नहीं जानता, जैसे अलिफ़, लाम, मीम।

मुसलमान मुहकम आयतों पर अमल करते हैं और मुतशाबिह पर यक़ीन रखते हैं। उनके मतलब के पीछे नहीं पड़ते।

* इन आयतों में बदर के युद्ध की ओर संकेत किया गया है। इसमें मुसलमानों की संख्या केवल ३१३ थी; परन्तु वे काफ़िरों को अपने से दूने दिखाई पड़ते थे। इस लड़ाई में विजय मुसलमानों को प्राप्त हुई थी।

नहीं कि जो लोग सूझ रखते हैं, उनके लिए इसमें नसीहत है। (१३) लोगों की चाही हुई चीज़ों (मसलन) बीवियों और बेटियों और सोने-चाँदी के बड़े-बड़े ढेरों और अच्छे-अच्छे घोड़ों और चौपायों और खेती के साथ दिलबस्तगी भली मालूम होती है (हालाँकि) यह (तो) दुनिया की ज़िन्दगी के (क्षणिक) सामान हैं और अच्छा ठिकाना तो उसी अल्लाह के यहाँ है। (१४) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मैं तुमको इनसे बहुत अच्छी चीज़ बताऊँ, वह यह कि जिन लोगों ने परहेज़गारी अख़्तियार की उनके लिए उनके परवरदिगार के यहाँ बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (और वह) उसमें हमेशा रहेंगे। और (बाग़ों के अलावा) पाक-साफ़ बीवियाँ हैं और ख़ुदा की ख़ुशी (मिलती) है† और अल्लाह बन्दों को देख रहा है। (१५) वह लोग जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! हम ईमान लाये हैं, तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमको नरक की सज़ा से बचा।(१६) जो सब्र करते हैं और सच बोलनेवाले और हुक्म माननेवाले और (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करनेवाले और आख़िर रात के वक़्तों में माफ़ी चाहते हैं। (१७) अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि उसके (एक ख़ुदा के) सिवाय कोई भी पूजित नहीं। और फ़रिश्ते और इल्मवाले भी गवाही देते हैं कि वही इन्साफ़ का सँभालनेवाला है। उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। (वह) जबरदस्त हिकमतवाला है। (१८) दीन (धर्म) तो ख़ुदा के नजदीक यही इस्लाम है, और किताबवालों ने तो मालूम होने के बाद आपस की ज़िद से भेद डाला, और जो शख़्स ख़ुदा की आयतों से इन्कारी हुआ, तो अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती।(१९) (पस ऐ पैग़म्बर ! अगर इस पर भी तुमसे हुज्जत करें, तो कह दो कि मैंने और मेरे चाहनेवालों ने ख़ुदा के आगे अपना सिर झुका दिया। (ऐ पैग़म्बर !) किताबवाले और (अरब के) जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम मानते हो (या नहीं)। अगर इस्लाम मानें, तो बेशक वे सच्चे रास्ते पर आ गये और

---

† ख़ुदा की ख़ुशी हर चीज़ से ज़्यादा अच्छी है।

अगर मुँह मोड़ें, तो तेरा ज़िम्मा § पहुँचा देना है और बस। अल्लाह बन्दों को खूब देख रहा है। (२०) [रुकू २ आयात ११]

जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं और बेमतलब पैग़म्बरों को क़त्ल करते और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते, जो इन्साफ़ करने को कहते हैं तो ऐसे लोगों को दर्दनाक सज़ा की खुश-खबरी सुना दो। (२१) यही हैं जिनका सब किया-कराया दुनिया और क़यामत (दोनों) में अकारथ और न कोई उनका मददगार है। (२२) (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन पर निगाह नहीं डाली, जिनको किताब में से एक हिस्सा मिला था। उनको अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (वह किताब) उनका झगड़ा चुका दे। इस पर भी उनमें का एक गिरोह भूल से फिर बैठा है ! ‡ (२३) यह इसलिए है कि उनका दावा है कि हमको नरक की अग्नि छुएगी नहीं और छुएगी भी तो बस गिनती के थोड़े ही दिन, और जो झूठी बात यह करते रहे हैं, उसी ने इनको इनके दीन में धोखा दे रखा है। (२४) उस दिन (प्रलय के दिन) जिसमें कुछ भी शक नहीं, कैसी गत बनेगी जबकि हम उनको जमा करेंगे और हर शख्स को जैसा उसने (दुनिया में) किया है, पूरा-पूरा भर दिया जायगा और लोगों पर ज़ुल्म नहीं होगा।(२५) (ऐ पैग़म्बर !) तू कह कि खुदा मुल्क का मालिक है। जिसको चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले। और तू जिसको चाहे इज्ज़त दे और जिसे चाहे बर्बादी दे। खूबी तेरे ही हाथ में है। बेशक तू हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है।(२६) तू ही रात को दिन में शामिल कर दे और तू ही दिन को रात में शामिल करदे और तू बेजान से जानदार और जानदार से बेजान कर दे और जिसको चाहे बेहिसाब रोज़ी दे।(२७) मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों

§ नबी का काम यही है कि जो आदेश या ज्ञान ईश्वर की ओर से उसको मिले उसे दूसरों को समझाये। मानना न मानना सुननेवालों का काम है।

‡ आकाशी ग्रंथ तौरात के अर्थों का स्वार्थी विद्वान अनर्थ करने लगे थे। इस प्रकार अपने मान्य धर्मग्रंथ से भी विमुख थे।

को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं। मगर किसी तरह पर उनसे बचना चाहो (मसलहतन) तो जायज़ है और अल्लाह तुमको अपने तेज से डराता है और (अन्त में) अल्लाह की ही तरफ़ जाना है।(२८) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कह दो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उसे छिपाओ या उसे ज़ाहिर करो; वह अल्लाह को मालूम है और जो कुछ आसमान में और जो कुछ ज़मीन में है, सब जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (२९) जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने पावेगा और इच्छा करेगा कि मुझमें और उसमें (कुकर्म के फल में) बड़ी दूरी होती और अल्लाह तुमको अपने से डराता है और अल्लाह बन्दों पर बड़ी मेहरबानी रखता है। (३०) [रुकू ३ आयात १०]

(ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि अगर तुम अल्लाह को रखते हो, तो मेरे साथी हो कि अल्लाह तुमको दोस्त रखे और तुमको तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (३१) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि अल्लाह और पैग़म्बर का हुक्म पूरा करो। फिर अगर न मानें, तो अल्लाह हुक्म न माननेवालों को पसन्द नहीं करता।(३२) अल्लाह ने दुनिया जहान के लोगों पर आदम और नूह और इब्राहीम के वंश और इमरान ‡ के ख़ानदान को (श्रेष्ठ) चुन लिया है। (३३) इनमें एक-एक की औलाद है और अल्लाह सुनता जानता है।(३४) एक समय था कि इमरान की बीवी ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरे पेट में जो (बच्चा) है उसको मैं आज़ाद करके तेरी भेंट करती हूँ, तू मेरी तरफ़ से क़बूल कर, (तू) सुनता जानता है। (३५) फिर जब उन्होंने बेटी जनी और अल्लाह को ख़ूब मालूम था कि उन्होंने किस रुतबे की (बेटी) जनी है, तो कहने लगी कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मैंने तो यह

‡ इमरान हज़रत मरियम के पिता थे। हज़रत मूसा के बाप का नाम भी इमरान था। यहाँ दोनों ही अर्थ निकलते हैं।

लड़की जनी है और लड़का लड़की की तरह नहीं होता और मैंने इसका नाम मरियम रखा है और मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान से अलग रखकर तेरी शरण (धर्म-मार्ग में) देती हूँ। (३६) उनके पालनकर्त्ता ने मरियम को ख़ुशी से क़बूल फ़र्मा लिया और उसको ख़ूब अच्छा उठाया और ज़करिया को उनका रक्षक बनाया। जब-जब ज़करिया मरियम के स्थान पर जाते, तो मरियम के पास खाने की चीज़ मौजूद पाते। (एक दिन ज़करिया ने) पूछा कि ऐ मरियम! यह तुम्हारे पास खाना कहाँ से आता है? (मरियम ने) कहा यह ख़ुदा के यहाँ से आता है, अल्लाह जिसको चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।(३७) उसी दम ज़करिया ने अपने पालनकर्त्ता से दुआ की (और) कहा कि ऐ परवरदिगार! अपने यहाँ से मुझको(भी) नेक औलाद दे कि तू (सबकी) दुआएँ सुनता है। (३८) अभी ज़करिया कोठे में खड़े दुआ ही माँग रहे थे कि उनको फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि ख़ुदा तुमको (एक पुत्र) यहिया (के पैदा होने) की ख़ुशख़बरी देता है और वह ख़ुदा के हुक्म से मसीह की तसदीक़ करेंगे और पेशवा होंगे और औरतों की संगत से रुके रहेंगे और नेक (बन्दों) में से वे पैग़म्बर होंगे। (३९) (ज़करिया ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे कैसे लड़का पैदा हो सकता है और मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है, और मेरी बीवी बाँझ है।§ (अल्लाह ने) फ़र्माया कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, करता है। (४०) (ज़करिया ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे (इत्मीनान के) लिए कोई निशानी दे। फ़र्माया जो निशानी तुम माँगते हो, यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात‡न कर सकोगे। सिर्फ़ इशारा करोगे और सुबह

§ हज़रत ज़करिया की उम्र १०० वर्ष की थी और उनकी बीवी ९८ वर्ष की थीं, जब यहिया (पुत्र) का जन्म हुआ। यह सब जानते हैं कि इस अवस्था में आदमी लड़का या लड़की की आशा नहीं रखता।

‡ जब यहिया मा के पेट में आये, तो ज़करिया की ज़बान फूल गई और तीन दिन वह किसी से बातचीत न कर सके।

और शाम अपने परवरदिगारकी माला फेरते रहो।(४१) [रुकू ४ आ. ११]

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरियम ! तुमको अल्लाह ने पसन्द किया और तुमको पाक-साफ़ रखा और तुमको दुनिया जहान की औरतों पर चुना ।(४२) ऐ मरियम ! अपने परवरदिगार के हुक्म को मानती रहो, और सिर झुकाया करो और रुकूअ करनेवालों (नमाज़ में झुकनेवालों) के साथ रुकूअ में झुकती रहो ।(४३)) (ऐ पैग़म्बर !) यह छिपी हुई ख़बरें हैं जो हम तुमको संदेशे के द्वारा पहुँचाते हैं। न तो तुम उनके पास उस वक़्त थे, जब वह लोग अपने क़लम (नदी में) डाल† रहे थे कि कौन मरियम का पालनेवाला होगा ? और तुम उनके पास मौजूद न थे, जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे (कि जिसका क़लम चढ़ाव की तरफ़ बहे, वही मरियम का संरक्षक होगा) ।(४४) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरियम ! ख़ुदा तुमको अपने उस हुक्म की ख़ुशख़बरी देता है। (तुम्हारे पुत्र होगा) उसका नाम होगा ईसा मसीह मरियम का बेटा—लोक और परलोक (दोनों) में इज़्ज़तवाला और (ख़ुदा के) नज़दीकी बन्दों में से होगा। (४५) झूले में और बड़ी उम्र का होकर (भी एक समान) लोगों के साथ बातचीत करेगा और नेक बन्दों में से होगा ।(४६) वह कहने लगी कि ऐ परवरदिगार ! मेरे कैसे लड़का हो सकता है, हालाँकि मुझको तो किसी मर्द ने छुआ तक नहीं । (अल्लाह ने) फ़र्माया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे फ़र्मा देता है कि हो (कुन) और वह हो जाता है*। (४७) और ख़ुदा ईसा को आसमान की किताब और अक़्ल

---

† मरियम को कौन पाले, इस बात का निर्णय यूँ हुआ कि दावेदारों ने अपने-अपने क़लम बहते पानी में डाले। ज़करिया की क़लम उलटी बही और वही संरक्षक बने।

* मरियम का किसी के साथ ब्याह नहीं हुआ और वह मर्दों से दूर भी रही, फिर भी उसके लड़का हुआ, जिसका नाम ईसामसीह था। जब फ़रिश्तों ने इस घटना की भविष्यवाणी मरियम को पहले ही की तो उसका आश्चर्य

की बातें और तौरात और इञ्जील सिखा देगा ।(४८) और इसराईल के वंश की तरफ़ (जायगा), पैग़म्बर होगा (और कहेगा) मैं तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम्हारे पास निशानियाँ लेकर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी की शक्ल बनाकर फ़िर उसमें फूँक मार दूँ और ख़ुदा के हुक्म से उड़ने लगे और ख़ुदा ही के हुक्म से जन्म के अन्धों और कोढ़ियों को भला चंगा और मुर्दों को ज़िन्दा करता हूँ और जो कुछ तुम खाकर आओ वह और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखा है, तुमको बता दूँ । अगर तुममें ईमान है तो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए निशानी है ।† (४६) तौरात जो मेरे समय में मौजूद है मैं उसकी तसदीक़ करता हूँ और एक ग़रज़ यह भी है कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम (नाजायज़) हैं ‡ तुम्हारे लिए हलाल (जायज़) कर दूँ और मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (कुछ) चमत्कार लेकर तुम्हारे पास आया हूँ । तुम ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ।(५०) बेशक अल्लाह मेरा परवरदिगार और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की पूजा करो, यही सीधी राह है । (५१) जब ईसा ने यहूद (यहूदी लोगों) की इन्कारी देखी तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करे । हवारी§ बोले कि हम अल्लाह के तरफ़दार हैं । हम अल्लाह पर ईमान लाये और तू गवाह हो कि हम माननेवाले हैं ।(५२) ऐ हमारे परवरदिगार! (इञ्जील) जो तूने उतारी है, हम उस पर ईमान लाये और हमने पैग़म्बर का साथ दिया । तू हमको गवाहों में लिख रख।(५३) यहूद ने

में पड़ जाना स्वाभाविक ही था ।

† मुर्दों को जिलाना, बीमारों को अच्छा करना, और अंधों को आँख-वाला बनाना, यह सब ईसा के चमत्कारों में से थे ।

‡ यहूदियों पर चर्बी गाय की और बकरी की हराम थी यानी अपने धर्मानुसार वह इन वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर सकते थे ।

§ हवारी वह लोग कहलाते हैं जो हज़रत ईसा के पैरोकार थे ।

(ईसा से) दाँव किया। अल्लाह ने उनसे (यहूद से) दाँव किया और अल्लाह दाँव करनेवालों में अच्छा दाँववाला है।(५४) [रुकू ५ आ. १३]

अल्लाह ने कहा ऐ ईसा! दुनिया में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके हम तुमको अपनी तरफ़ उठा लेंगे और काफ़िरों (नास्तिकों) से तुमको पाक करेंगे, और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है उनको क़यामत के दिन तक काफ़िरों पर ज़बरदस्त रखेंगे, फिर तुम (सबको) हमारी तरफ़ लौटकर आना है। तो जिन बातों में तुम झगड़ रहे थे हम उनमें तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देंगे।(५५) तो जिन्होंने (तुम्हारी पैग़म्बरी से) इन्कार किया, उनको तो दुनिया और आख़िरत (दोनों) में बड़ी सख़्त मार देंगे। कोई उनका साथी न होगा।(५६) यह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये तो ख़ुदा उनको पूरा बदला देगा और अल्लाह अधर्मियों को पसंद नहीं करता। (५७) (ऐ पैग़म्बर !) यह जो हम तुमको पढ़ पढ़कर सुना रहे हैं(वह ख़ुदा की) आयतें और नपे-तुले ज़िक्र हैं। (५८) अल्लाह के यहाँ ईसा की मिसाल आदम की जैसी (कि ख़ुदा ने) मिट्टी से आदम को बनाकर उसको‡ हुक्म दिया कि हो और वह हो गया। (५९) (ऐ) पैग़म्बर !) सच तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से है तो कहा तुम भी शक करनेवालों में से न हो जाना। (६०) फिर जब तुमको सचाई मालूम हो चुकी, उसके बाद भी तुमसे उनके बारे में कोई बहस करने लगे, तो कहो कि आओ हम अपने बेटों को बुलावें और तुम अपने बेटों को (बुलाओ) और हम अपनी औरतों को बुलायें और तुम भी अपनी औरतों को (बुलाओ) और हम अपने तई और तुम

‡ ईसा के बिना बाप के जन्म लेने से उनका ख़ुदा का बेटा होना नहीं सिद्ध होता। देखो ईसा के एक केवल बाप ही न थे; परन्तु उनकी माता अवश्य थीं; लेकिन आदम के तो मा-बाप दोनो ही न थे। ईसाई आदम को ख़ुदा का बेटा नहीं कहते, तो ईसा को ऐसा क्यों कहते हैं? ख़ुदा ने जैसे आदम को बिना मा-बाप के पैदा किया है, वैसे ही ईसा को भी बनाया है।

अपने तईं (भी शरीक) करो, फिर हम सब मिलकर ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ाएँ और झूठों पर ख़ुदा की लानत करें।† (६१) (ऐ पैग़म्बर !) यही बयान सच्चा है और अल्लाह के सिवाय कोई दुआ के क़ाबिल नहीं। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है।(६२) इस पर अगर फिर जावें, तो अल्लाह झगड़ालुओं से ख़ूब वाक़िफ़ है। (६३) [रुकू ६ आयात ६]

कहो कि ऐ किताबवालों ! आओ ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एकसाँ है कि ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहरावें और अल्लाह के सिवाय हममें से कोई किसी को मालिक न समझे। फिर अगर मुँह मोड़ें तो कह दो कि तुम इस बात के गवाह रहो कि हम तो मानते हैं। (६४) ऐ किताबवालों ! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। तौरात और इञ्जील तो उनके बाद उतरीं। क्या तुम नहीं समझते ? (६५) तुम लोगोंने ऐसी बातों में झगड़ा किया जिनकी बाबत तुमको ख़बर न थी। मगर जिसकी बाबत तुमको इल्म नहीं, उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो, और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (६६) इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी; बल्कि हमारे एक आज्ञाकारी सेवक थे और मुशरिकों (ख़ुदा का शरीक बनानेवालों) में से न थे।§ (६७) इब्राहीम के हक़दार वह लोग थे, जिन्होंने उनकी पैरवी की (एक ईश्वर को माना) (ऐ पैग़म्बर !) और जो लोग ईमान लाये हैं और अल्लाह तो ईमान लानेवालों का दोस्त है।(६८) किताबवालों

† ईसाइयों का विश्वास है कि ईसा ईश्वर-पुत्र हैं। इसी का खण्डन है। बिना पिता के ईसा का जन्म एक ईश्वरी चमत्कार है।

§ हज़रत इब्राहीम को सब अरबवाले अपना पेशवा मानते थे। यहूदी कहते थे—वह यहूदी थे। इसी तरह मुशरिक उनको अपने धर्मवाला जानते थे। ईसाई उनको ईसाई। लेकिन मुहम्मद साहब कहते थे कि न तो वह यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक। वह तो एक ख़ुदा के माननेवाले थे। इस पर ईसाई और यहूदी मुहम्मद साहब से झगड़ते थे।

में से एक गिरोह यह चाहता है कि किसी तरह तुमको भटका दे; हालाँकि अपने ही तईं भटकते हैं और नहीं समझते। (६९) (ऐ किताबवालों!) अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो हालाँकि तुम क़ायल हो। (७०) ऐ किताबवालों! क्यों सच में झूठ को मिलाते हो और सच को छिपाते हो, हालाँकि तुम जानते हो (७१) [रुकू ७ आयात ८]

किताबवालों में से एक गिरोह समझाता है—मुसलमानों पर जो किताब उतरी है, उस पर ईमान (पहले तो) लाओ और बाद में उससे इन्कार कर दिया करो। शायद यह (मुसलमान) भी भटक जायँ। (७२) जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे, उसके सिवाय दूसरे का एतबार न करो। कि उपदेश तो वही है, जो अल्लाह उपदेश देता है, जैसा तुमको दिया गया है वैसा ही किसी और को दिया जाय या दूसरे लोग ख़ुदा के यहाँ तुमसे झगड़ें (तो) कहो कि बड़ाई तो अल्लाह ही के हाथ में है; जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुन्जाइशवाला (और सब कुछ) जानता है। (७३) जिसको चाहे अपनी कृपा के लिए ख़ासकर ले और अल्लाह की दया बड़ी है, (७४) और किताबवालों में से कुछ ऐसे हैं कि अगर उनके पास नक़द रुपये का ढेर अमानत रखवा दो तो तुम्हारे हवाले करें और उनमें से कुछ ऐसे हैं कि एक अशर्फ़ी उनके पास अमानत रखवा दो, तो वह तुमको वापिस न दें; जब तक हर वक़्त (तक़ाज़े के लिए) उन पर खड़े न रहो। यह इससे कि वह कहते हैं कि जाहिलों के हक़ (मार लेने की हमसे पूछ-ताछ नहीं है, † और जान-बूझकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। (७५) क्यों नहीं जो शख़्स अपना इक़रार पूरा करे और * बचे, तो अल्लाह बचनेवालों को दोस्त रखता है। (७६) जो लोग ख़ुदा से किये गये इक़रार और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत (लाभ)

† यहूदी कहते थे कि मूर्खों का या अन्य धर्म के माननेवालों का धन जिस प्रकार मिले, लूट लो। ख़ुदा के यहाँ इसकी कोई पूछ-ताछ न होगी।

* बुरे कामों से।

के लिए त्याग देते हैं यही लोग हैं जिनका क़यामत में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन ख़ुदा इनसे बात भी नहीं करेगा और न इनकी तरफ़ देखेगा और न इनको पाक करेगा और इनके लिए कड़ी सज़ा है।(७७) इन्हीं में एक पन्थ है जो किताब पढ़ते वक़्त अपनी ज़बान को मरोड़ते (ऐसा जोड़-तोड़ मिलाते हैं) ताकि तुम समझो कि वह किताब का अंश है हालाँकि वह किताब का हिस्सा नहीं और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ से है, हालाँकि वह अल्लाह के यहाँ से नहीं और जान-बूझकर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं । (७८) किसी मनुष्य को मुनासिब नहीं कि ख़ुदा उसको किताब और अक़्ल और पैग़म्बरी दे—और वह लोगों से कहने लगे कि ख़ुदा को छोड़कर मेरे माननेवाले बनो§ बल्कि ख़ुदा को मानकर चलो, जैसे कि तुम लोग किताब पढ़ाते रहे हो और जैसे कि तुम पढ़ते रहे हो ।(७९) वह तुमसे नहीं कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा मानो—तुम तो इस्लाम मान चुके हो और वह इसके बाद क्या तुम्हें इन्कार करने को कहेगा। (८०) [रुकू ८ आयात ७]

जबकि अल्लाह ने पैग़म्बरों से वादा किया कि हमने जो तुमको किताब और बुद्धि दी है फिर कोई (और) पैग़म्बर तुम्हारे पास आयेगा (और) जो तुम्हारे पास किताबें हैं उनकी तसदीक़ करेगा, तो देखो ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना। फ़र्माया क्या तुमने इक़रार कर लिया? और इन बातों पर मेरा ज़िम्मा लिया ? सब पैग़म्बर वाले हम से इक़रार करते हैं। फ़र्माया अच्छा तो गवाह रहो और गवाहों में मैं भी तुम्हारे साथ हूँ।(८१) तो इस पीछे जो कोई फिर जावे तो वही लोग हुक्म टालनेवाले हैं। (८२) क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवाय किसी और दीन की तलाश में हैं हालाँकि जो (लोग) आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुशी से या लाचारी

---

§ यहूदी कहते थे कि ईसा ने अपने को ख़ुदा का बेटा बताया है, इसलिए हम उनको बुरा समझते हैं। इसका जवाब दिया गया है कि वह तो रसूल थे। वह ऐसी ग़लत बात कैसे कह सकते थे ?

से उसकी तरफ़ सबको लौटकर जाना है।(८३) कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और जो किताब हम पर उतरी है उस पर और जो किताब इब्राहीम इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद पर उतरी उन पर और मूसा और ईसा और पैग़म्बरों को जो किताबें उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से मिलीं हम उनमें से किसी को जुदा नहीं करते और हम उसी को मानते हैं।(८४) और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करे तो ख़ुदा के यहाँ उसका वह दीन क़बूल नहीं और वह क़यामत में नुक़सान पानेवालों में से होगा। (८५) ख़ुदा ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो ईमान लाये पीछे इन्कार करने लगे और वह इक़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर सच्चा है और उनके पास खुले सबूत भी आ चुके और अल्लाह अन्यायियों को हिदायत नहीं दिया करता। (८६) ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि इन पर ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और लोगों की सबकी लानत (८७) कि उसी में हमेशा रहेंगे, न तो इनकी सज़ा ही हल्की की जायगी और न उनको मुहलत ही दी जायगी। (८८) अगर जिन लोगों ने पीछे तौबा की और सुधार कर लिया, तो अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (८९) जो लोग ईमान लाये पीछे फिर बैठे, उनकी इन्कारी बढ़ती गई तो ऐसों की तौबा किसी तरह क़बूल नहीं होगी और यही लोग भटके हुए हैं। (९०) वह जो लोग काफ़िर (इन्कारी) हुए और इन्कारी ही की हालत में मर गये, उनमें का कोई शख़्स ज़मीन के बराबर भी सोना बदले में देना चाहे तो हरगिज़ क़बूल नहीं किया जायगा। यही लोग हैं जिनको दुखदाई सज़ा होगी और उनका कोई भी मददगार नहीं होगा। (९१) [रुकू ९ आयात ११]

—:o:—

चौथा पारा (लन्तना)

जब तक तुम अपनी प्यारी चीज़ों में से दान न करो, भलाई हासिल न करोगे।(९२) जो तुम दान करते (हो) अल्लाह को मालूम है।(९३)

जो चीज़ याक़ूब ने अपने ऊपर हराम* कर ली थी उसको छोड़कर तौरात के उतरने से पहले खाने की सब चीज़ें याक़ूब के बेटों के लिए हलाल थीं। कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और उसको पढ़ो। (९४) फिर इसके बाद भी जो कोई अल्लाह पर झूठ लगाये तो ऐसे ही लोग अन्यायी हैं। (९५) कहो कि अल्लाह ने सच फ़र्माया सो इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो एक (ख़ुदा) के हो रहे थे और मुशरिकों में से न थे। (९६) लोगों के लिए जो पहला घर ठहराया गया वह यही है जो मक्के में है। बढ़तीवाला और दुनिया जहान के लोगों के लिए (सबक़) हिदायत है। (९७) इसमें बहुत-सी खुली हुई निशानियाँ हैं। इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस घर में आ दाख़िल हुआ, चैन में आ गया। और लोगों पर कर्त्तव्य है कि ख़ुदा के लिए काबे के घर की हज्ज करें जिसको उस तक पहुँचने की शक्ति हो और जो नाशुक्री करे तो अल्लाह लोगों की परवा नहीं रखता। (९८) कहो कि ऐ किताबवालों! ख़ुदा के कलाम से क्यों इन्कार करते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देखता है। (९९) कहो कि ऐ किताबवालों! जान-बूझकर अल्लाह के रास्ते में नुक़्स निकाल-निकालकर ईमान लानेवाले को उससे क्यों रोकते हो? और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं। (१००) मुसलमानों! अगर तुम किताबवालों के किसी फ़िर्क़े का भी कहा मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान लाये पीछे तुमको फिर काफ़िर बना छोड़ेंगे। † (१०१) तुम कैसे इन्कार करने लगोगे

* यहूदी कहते थे कि ऐ मुहम्मद! तुम इब्राहीम के धर्म पर चलने का दावा करते हो, तो वह चीज़ें क्यों खाते हो जो याक़ूब नहीं खाते थे, जैसे ऊँट का मांस। इसका जवाब दिया गया है कि तौरात उतरने से पूर्व सब चीज़ें इब्राहीम की संतान के लिए हलाल थीं यानी उनको किसी चीज़ का खाना मना न था। याक़ूब भी हर चीज़ खा सकते थे, पर वह एक बीमारी के कारण ऊँट का गोश्त न खाते थे। तौरात में कहीं नहीं लिखा है कि ऊँट का मांस खाना मना है।

† किताबवाले मुसलमानों को बहकाने के लिए अपनी तरफ़ से जोड़-

हालाँकि अल्लाह की आयतें तुमको पढ़-पढ़कर सुनाई जाती हैं और उसके रसूल तुममें मौजूद हैं। और जो शख़्स अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहे, तो वह सीधे रास्ते लग गया।(१०२) [रुकू १० आ. ११]

ऐ ईमानवालों! अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है और इस्लाम पर ही मरना। (१०३) और तुम सब मज़बूती से अल्लाह की रस्सी पकड़े रहो और आपस में फूट न डालो और अल्लाह का वह एहसान याद करो जब तुम आपस में (मक्के मदीनेवाले) दुश्मन थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा की और तुम उसकी कृपा से (एक दूसरे के) भाई हो गये, और तुम आग के गढ़े (नरक) के किनारे थे फिर उसने तुमको उससे बचा लिया। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्म तुमसे खोल-खोलकर बयान करता है ताकि तुम सच्चे मार्ग पर आ जाओ।(१०४) तुममें से एक ऐसा गिरोह भी होना चाहिए जो नेक कामों की तरफ़ बुलाये और अच्छे काम को कहे और बुरे कामों से मना करे और ऐसे ही लोग अपनी मुराद को पहुँचेंगे। (१०५) और उन जैसे न बनो जो बिछुड़ गये और अपने पास खुले-खुले हुक्म आये पीछे आपस में भेद डालने लगे और यही हैं जिनको (आख़िरत में) बड़ी सज़ा होगी। (१०६) जिस दिन (कुछ के) मुँह सफ़ेद और (कुछ के) काले होंगे, तो जिनके मुँह काले होंगे (उनसे कहा जायगा) कि तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर हो गये थे, तो अपनी इन्कार की सज़ा में अज़ाब भोगो।(१०७) और जिनके मुँह सफ़ेद (होंगे, वह) अल्लाह की कृपा में होंगे, वह उसी में हमेशा रहेंगे। (१०८) यह सचमुच अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं और अल्लाह दुनिया जहान के लोगों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता।(१०९) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और (सब) कामों की पहुँच ख़ुदा ही तक है। (११०) [रुकू ११ आयात ८]

तुम सब उम्मतों (गिरोहों)से जो लोगों में पैदा हुई हैं भले हो कि

जोड़कर बातें बनाते थे और कहते थे, ये बातें तौरात में लिखी हैं।

भली बात का हुक्म करते और बुरी बात से मना करते और अल्लाह पर ईमान रखते हो, और अगर किताबवाले (यहूदी) ईमान ले आते तो उनके हक़ में भला था। उनमें से थोड़े ईमान लाये और उनमें अक्सर फिरे हुए हैं !(१११) दुःख देने के सिवाय वह हरगिज़ तुमको किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे तो उनको तुमसे पीठ फेरते ही बन पड़ेगी, फिर उनको कहीं से मदद नहीं मिलेगी।(११२) जहाँ देखो ग़ज़ब उन पर सवार है मगर अल्लाह के ज़रिए से और लोगों के ज़रिए से और ख़ुदा के ग़ज़ब (कोप) में गिरफ़्तार और मुहताजी उनके पीछे पड़ी है। यह इसकी सज़ा है कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार रखते थे, और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डालते थे और यह सजा न मानने और हद से बढ़ जाने के कारण थी। (११३) किताबवाले सब एक से नहीं हैं, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो रातों को खड़े रहकर ख़ुदा की आयतें पढ़ते और सिजदा करते (सिर झुकाते) हैं। (११४) अल्लाह और क़यामत पर ईमान रखते और अच्छे (काम) को कहते और बुरे से मना करते और अच्छे कामों में दौड़ पड़ते हैं और यही भले लोगों में हैं। (११५) भलाई किसी तरह की भी करें ऐसा कदापि न होगा कि उनकी उस नेकी की क़दर न की जावे और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब जानकार है। (११६) जो लोग काफ़िर हैं उनके माल और उनकी सन्तान अल्लाह के यहाँ हरगिज़ उनके कुछ भी काम न आयेगी और यही लोग नारकी हैं और यह हमेशा दोज़ख़ ही में रहेंगे। (११७) दुनिया की इस ज़िन्दगी में जो कुछ भी यह लोग ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा जैसी है जिसमें पाला (कड़ी सर्दी) हो, वह उन लोगों के खेत को जा लगे और बर्बाद करे जो अपने ही लिए ज़ुल्म करते थे और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने ऊपर आप ही ज़ुल्म किया करते थे। (११८) ऐ ईमानवालों ! अपने लोग छोड़कर किसी (विरोधी) को अपना भेदी मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारी ख़राबी में कुछ उठा नहीं रखना चाहते हैं कि तुमको तकलीफ़ पहुँचे। दुश्मनी

तो इनकी बातों से ज़ाहिर हो ही चुकी है और जो इनके दिलों में है वह (उससे भी) बढ़कर है। हमने तुमको पते की बातें बता दी हैं अगर तुमको बुद्धि हो। (११६) सुनो जो तुम कुछ ऐसे लोग हो § कि तुम उनसे दोस्ती रखते हो और वह तुमसे मुहब्बत नहीं रखते और तुम ख़ुदा की सब किताबों को मानते हो, और जब तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ले आये हैं और जब अकेले होते हैं तो मारे गुस्से के तुम पर अपनी उँगलियाँ काटते हैं, कहो कि अपने गुस्से में (जल) मरो। जो दिलों में है अल्लाह को सब मालूम है। (१२०) अगर तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो उनको बुरा लगता है, अगर तुमको कोई नुक़सान पहुँचे तो उससे ख़ुश होते हैं। और अगर तुम संतोष करो और (पापों से) बचे रहो तो उनके (फ़रेब दग़ा) से म्लातुहरकुछ भी बिगड़ने का नहीं, क्योंकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं ।।अलह के वश में है। (१२१) [रुकू १२ आयात ११]

एक वक़्त वह भी था कि तुम सुबह अपने घर से चले, मुसलमानों को लड़ाई के मौक़ों पर बैठाने लगे और अल्लाह सुनता जानता है। (१२२) उसी वक़्त का वाक़या है कि तुममें से दो ‡ गिरोहों ने साहस तोड़ देना चाहा मगर अल्लाह उनके ऊपर था और मुसलमानों को चाहिए अल्लाह पर भरोसा रखें। (१२३) जिस वक़्त बदर (के

---

§ मुसलमान उन लोगों को भी अपना मित्र जानते थे जो वास्तव में उनके शत्रु थे पर प्रगट में अपने को मुसलमान कहते थे। ऐसे लोग उल्टी राय देते थे। और यदि मुसलमानों को किसी प्रकार का कष्ट होता था तो बहुत प्रसन्न होते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाह-बिन-उबैया था। उसने ऊहद की लड़ाई में पहले तो ग़लत राय दी फिर लड़ाई के मैदान से अपने साथियों को लेकर चला गया और दूसरों को भी भागने को उत्साहित किया।

‡ इनके नाम थे ओस और ख़िज़रज का क़बीला। यह दोनो क़बीले ऊहद के युद्ध में बड़ी वीरता से लड़े; लेकिन उनको बहकाने का भरसक प्रयत्न भी मुनाफ़िक़ों की ओर से हुआ था और इनकी हिम्मत भी थोड़ी देर के लिए टूट गई थी।

युद्ध में) अल्लाह तुम्हारी मदद कर ही चुका था और तुम्हारी कुछ भी हक़ीक़त न थी तो अल्लाह से डरो, ताज्जुब नहीं तुम एहसान भी मानो। (१२४) जबकि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजकर तुम्हारी मदद करे। (१२५) बल्कि अगर तुम मज़बूत बने रहो और बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आयें तो तुम्हारा परवरदिगार पाँच हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। (१२६) यह मदद तो ख़ुदा ने सिर्फ़ तुम्हारे ख़ुश करने को की और इसलिए कि तुम्हारे दिल इससे सब्र पावें वर्ना सहायता तो अल्लाह ही की तरफ़ से है जो बड़ा हिकमतवाला‡ है। (१२७) (यह मदद) इसलिए थी कि काफ़िरों को कम करे या ज़लील करे ताकि असफल वापिस चले जावें। (१२८) तुम्हारा तो कुछ भी अधिकार नहीं चाहे ख़ुदा उन पर दया करे या उनकी ज्यादतियों पर नज़र करके उनको सज़ा दे।(१२९) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, जिसको चाहे क्षमा करे जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।(१३०)[रुकू १३ आ.९]

ऐ ईमानवालों! दुगना चौगुना ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। अजब नहीं तुम मनमाना फल पाओ।(१३१) और नरक से डरते रहो जो काफ़िरों के लिए तैयार है। (१३२) और अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानो, अजब नहीं तुम पर दया की जाय। (१३३) और अपने पालनकर्त्ता की बख़्शीश और जन्नत की तरफ़ लपको जिसका फैलाव ज़मीन और आसमान जैसा है, उन परहेज़गारों के लिए तैयार है। (१३४) जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती में (दोनो हालतों में धर्म पर) ख़र्च करते और क्रोध को रोकते और लोगों को क्षमा करते हैं, और भलाई करनेवालों को अल्लाह चाहता है। (१३५) और

‡ बदर के युद्ध में आकाश से कई हज़ार फ़रिश्ते मुसलमानों की सहायता के लिए उतरे थे। यहाँ कहा गया है कि ख़ुदा ही की सहायता से विजय होती है। फ़रिश्तों का उतरना कुछ आवश्यक नहीं है।

वे लोग जब कोई खुला पाप कर बैठते या अपना नुक़सान कर लेते हैं तो ख़ुदा को याद करके अपने पापों की माफ़ी माँगने लगते हैं और ख़ुदा के सिवाय अपराधों को माफ़ करनेवाला कौन है और जो जान-बूझकर उस पर ज़िद नहीं करते। (१३६) यही लोग हैं जिनका बदला उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से बख़्शीश है और बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और (नेक) काम करने वालों के लिए भी अच्छे फल हैं। (१३७) तुमसे पहले भी घटनाएँ हो गुज़री हैं तो मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि जिन लोगों ने झुठलाया उनको कैसा नतीजा मिला। (१३८) यह लोगों का समझाना है लेकिन हिदायत और नसीहत तो उससे वही लोग पकड़ते हैं जिनके दिल में डर है।† (१३९) हिम्मत न हारो और घबराओ नहीं, अगर तुम ईमानवाले हो तो तुम्हारी ही जीत होगी। (१४०) अगर तुमको अड़ंगा लगा तो उनको भी इसी तरह का अड़ंगा लग चुका है और यह संयोग है जो मेरी हिदायत से लोगों को दिन के फेर आया करते हैं, और वह इसलिए कि ख़ुदा ईमानदारों को मालूम करे और तुममें से कुछ को शहीद बनाये और ख़ुदा अन्याय को नहीं चाहता। (१४१) यह मंज़ूर था कि अल्लाह मुसलमानों को शुद्ध कर दे और काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। (१४२) क्या तुम इस ख़याल में हो कि जन्नत में जा दाख़िल होंगे हालाँकि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जाँचा जो तुममें से जिहाद करनेवाले हैं और न उन लोगों को जाँचा जो (लड़ाई में) साबित क़दम रहते हैं। (१४३) और तुम तो मौत के आने से पहले मरने‡ की दुआएँ किया करते थे सो अब तो तुमने उसको अपनी आँखों देख लिया। (१४४) [रुकू १४ आ. १४]

† दुनिया में सैकड़ों घटनाएँ ऐसी हुई हैं जिनसे आदमी बहुत कुछ सीख सकता है। पर उनसे लाभ उठाने के लिए ख़ुदा का डर होना भी ज़रूरी है।

‡ मुसलमान शहादत की तमन्ना (इच्छा) रखते थे। जब ऊहद में बहुत-से मुसलमान मारे गये तो उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया कि शहादत के क्या मानी हैं।

मुहम्मद तो और कुछ नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं और बस इनसे पहले भी रसूल हो गुज़रे हैं, अगर मर जावें या मारे जावें तो क्या तुम अपने पैर से फिर लौटा जाओगे। और जो अपने उल्टे पैरों (कुफ़्र की ओर) लौट जायगा वह ख़ुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा और जो लोग शुक्र करते हैं उनको ख़ुदा जल्दी कल्याण देगा। (१४५) और कोई शख़्स बेहुक्म ख़ुदा मर नहीं सकता, ज़िन्दगी लिखी हुई है और जो शख़्स दुनिया में बदला चाहता है हम उसका बदला यहीं दे देते हैं और जो क़यामत में बदला चाहता है मैं उसको वहीं दूँगा और जो लोग शुक्र करते हैं मैं उनको जल्दी बदला दूँगा। (१४६) और बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत ख़ुदा को माननेवाले (दुश्मनों से) लड़े, तो जो तकलीफ़ उनको अल्लाह के रास्ते में पहुँची उसकी वजह से न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न थके और न दबे और अल्लाह जमे रहनेवालों को दोस्त रखता है।(१४७) और सिवाय इसके उनके मुँह से एक बात भी तो नहीं निकली कि दुआएँ माँगने लगे कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमारे पाप क्षमा कर और हमारे कामों में जो हमसे ज्यादा ज़ुल्म हो गये हैं, उनको माफ़ कर और हमारे पाँव जमाये रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको जीत दे। (१४८) तो अल्लाह ने उनको दुनिया में बदला दिया। क़यामत में भी अच्छा बदला दिया और अल्लाह भलाई करनेवालों को चाहता है। (१४९) [रुकू १५ आयात ५]

ऐ ईमानवालो! ‡ अगर काफ़िरों के कहे में आ जाओगे तो वह

† ऊहद की लड़ाई में मुहम्मद साहब घायल होकर एक गढ़े में गिर पड़े थे और यह ख़बर उड़ गई थी कि उनका स्वर्गवास हो गया। इसलिए कुछ मुसलमान मैदान छोड़कर चले गये थे। इस पर कहा गया है कि मुसलमान तो ख़ुदा के लिए लड़ते हैं। नबी की मृत्यु भी हो जाय तो उनको अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

‡ ऊहद की लड़ाई से काफ़िरों की हिम्मत बढ़ गई। वह मुसलमानों से कहने लगे कि अब तुम फिर से हमारे दीन में आ जाओ, इसी में भलाई है।

तुमको उल्टे पैरों लौटाकर ले जायँगे फिर तुम ही उल्टे घाटे में आ जाओगे।(१५०) बल्कि तुम्हारा मददगार अल्लाह है और उसकी मदद सबसे बड़ी है। (१५१) हम जल्दी तुम्हारे डर काफ़िरों के दिलों में डालेंगे क्योंकि उन्होंने उन चीज़ों को ख़ुदा का शरीक बनाया है जिनकी ख़ुदा ने कोई-सी सनद भी नहीं भेजी और उन लोगों का ठिकाना नरक है और ज़ालिमों का बुरा ठिकाना है। (१५२) और जिस वक़्त तुम ख़ुदा के हुक्म से काफ़िरों को तलवार से मार रहे थे (उस वक़्त) ख़ुदा ने तुमको अपना वादा सच्चा कर दिखाया, यहाँ तक कि तुमको तुम्हारी ख़ातिरी के लिए जीत दिखा दी। इसके बाद तुम डरपोक हो गये और तुमने हुक्म के बारे में आपस में झगड़ा किया और नाफ़र्मानी (बेहुक्मी) की। कुछ तो तुममें से दुनिया के पीछे पड़ गये और कुछ क़यामत की फ़िक्र में लगे। फिर तो ख़ुदा ने तुमको दुश्मनों से फेर दिया। ख़ुदा को तुम्हारी जाँच मंज़ूर थी और ख़ुदा ने तुमसे दर-गुज़र की और ईमानदारों पर ख़ुदा की कृपा है। (१५३) जब तुम§ भागे चले जाते थे और बावजूदे कि पैग़म्बर तुम्हारे पीछे तुमको बुला रहे थे तुम मुड़कर किसी की तरफ़ नहीं देखते थे। रंज के बदले ख़ुदा ने तुमको रंज पहुँचाया ताकि जब कभी तुमसे कोई मतलब जाता रहे या तुम पर कोई मुसीबत आन पड़े तो तुम उसका रंज मत करो और तुम कुछ भी करो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (१५४) फिर तंगी के बाद ख़ुदा ने तुम पर आराम के लिए औंघ उतारी कि तुममें से कुछ को नींद ने आ घेरा और कुछ जिनको अपनी जानों की पड़ी थी अल्लाह के सामने बेफ़ायदा जाहिलियत जैसे बुरे ख़याल बाँध रहे थे। कहते थे कि हमारे वश की क्या बात है—कह दो कि सब काम ख़ुदा ही

---

§ यह भी ऊहद की लड़ाई का हाल है। मुहम्मद साहब ने कुछ लोगों को एक जगह तैनात कर दिया था और कहा था कि तुम लोग यहाँ से न हटना। उन लोगों ने जब मुसलमानों की खुली विजय देखी और काफ़िरों को भागते देखा तो अपनी जगह छोड़कर काफ़िरो के पीछे दौड़ पड़े। पीछे से ख़ालिदी बिन-वलीद ने हमला कर दिया और लड़ाई का रंग बदल गया।

के अख़्तियार में है। इनके दिलों में और बातें भी छिपी हुई हैं जिनको तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि हमारा कुछ भी वश चलता होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते। कह दो कि तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके भाग्य में मारा जाना लिखा था निकलकर अपने पछड़ने§ की जगह आ मौजूद होते। ख़ुदा को मंज़ूर था कि तुम्हारी दिली मंशाओं को जाँचे औरतुम्हारे दिली ख़्यालात को साफ़ करे और अल्लाह तो सबके जी की बात जानता है। (१५५) जिस दिन दो जमातें‡ भिड़ गईं तुम में से लोग भाग खड़े हुए तो सिर्फ़ उनके कुछ पापों की वजह से शैतान ने उनके पाँव उखाड़ दिये और ख़ुदा ने उनको माफ़ किया। अल्लाह माफ़करनेवाला सहनेवाला है।(१५६) [रुकू१६ आ.७]

ऐ मुसलमानों! उन लोगों जैसे न बनो जो काफ़िर हैं और अपने भाई-बन्धुओं से जो परदेश निकले हों या जिहाद करने गये हों उनसे कहा करते हैं कि अगर हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते। ख़ुदा ने उन लोगों के ऐसे ख़्यालात इसलिए कर दिये हैं कि उनके दिलों में दुख रहे और अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ भी तुम कर रहे अल्लाह उसको देख रहा है। (१५७) और ख़ुदा की राह में अगर तुम मारे जाओ या मर जाओ तो ख़ुदा की माफ़ी और कृपा उससे बढ़कर है जो तुम संसार में जमा कर लेते हो। (१५८) तुम मर गये या मारे गये तो अल्लाह ही की तरफ़ इकट्ठे होगे। (१५९) अल्लाह की बड़ी ही मेहरबानी हुई कि तुम† इनको मुलायम दिल मिले हो और अगर तुम मिज़ाज के अक्खड़ कड़े दिल

§ यानी यदि भाग्य में मरना ही लिखा होता तो जहाँ भी होते वहीं से चलकर अपने मरने के स्थान पर आ जाते।

‡ ऊहद की लड़ाई में कुछ मुसलमान भाग खड़े हुए थे। लड़ाई के मैदान से भागना बड़ा पाप है पर ख़ुदा ने उनके इस पाप को भी क्षमा कर दिया।

† 'तुम' से यहाँ मुहम्मद साहब मुराद हैं। वह दिल के नर्म और ज़बान के मीठे थे। यदि क्रोधी और कड़े स्वभाव के होते तो मुसलमान क्या करते? नबी होने की हैसियत से तो उनका हुक्म मानना ही पड़ता, परन्तु वे भागे-भागे अवश्य फिरते।

के होते तो यह लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। तो तुम इनके क़सूर माफ़ करो और इनके गुनाहों की माफ़ी चाहो और मामलों में इनकी सलाह ले लिया करो, फिर तुम्हारे दिल में एक बात ठन जाय तो भरोसा ख़ुदा ही पर रखना। जो लोग भरोसा रखते हैं ख़ुदा उनको चाहता है। (१६०) अगर ख़ुदा तुम्हारी मदद पर है तो फिर कोई भी तुमको जीतनेवाला नहीं और अगर वह तुमको छोड़ बैठे तो उसके पीछे कौन है जो तुम्हारी मदद को खड़ा हो और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही का भरोसा रखें।(१६१) पैग़म्बर को मुनासिब नहीं कि कुछ भी ख़यानत करे और जो कोई खयानत का अपराधी होगा वह क़यामत के दिन उसको लाकर हाज़िर करेगा, फिर जिसने जैसा किया है उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा। (१६२) भला जो शख़्स अल्लाह की मर्ज़ी का हो वह उस शख़्स-जैसा कैसे हो सकता है जो ख़ुदा के ग़ुस्से में आ गया हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो और वह बुरा ठिकाना है। (१६३) अल्लाह के यहाँ लोगों के दर्जे हैं और वह लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको देख रहा है। (१६४) अल्लाह ने ईमानवालों पर दया की कि उनमें उन्हीं में का एक पैग़म्बर भेजा जो उनको ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाता है और उनको सुधारता है और किताब और काम की बात उनको सिखाता है और पहले तो यह लोग ज़ाहिरा भटके हुओं में से थे। (१६५) क्या जब तुम पर आफ़त आ पड़ी हालाँकि तुम इससे दूनी† आफ़त डाल चुके हो, तुम कहने लगे कि कहाँ से (आफ़त) आई। कहो कि तुम्हारे काम का यह नतीजा है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१६६) जिस दिन दो जमातें भिड़ गईं

† बद्र की लड़ाई में मुसलमानों ने काफ़िरों को सख़्त जानी और माली नुक़सान पहुँचाया था। ऊहद की लड़ाई में जब मुसलमानों को सिर्फ़ उसका आधा ही नुक़सान हुआ फिर भी कहने लगे—हाय अफ़सोस ! यह कैसे हुआ ! इस पर ये आयतें उतरीं।

और तुमको रञ्ज पहुँचा तो ख़ुदा का हुक्म यों ही था और यह भी ग़रज़ थी कि ख़ुदा ईमानवालों को मालूम करे। (१६७) और मुनाफ़िक़ों (आगे कुछ पीछे कुछ कहनेवालों) को मालूम करे। और मुनाफ़िक़ों से कहा गया, आओ अल्लाह के रास्ते में लड़ो या न लड़ो, तो कहने लगे कि अगर हम लड़ाई समझते तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। यह उस रोज़ ईमान की बनिस्बत इनकारी के नज़दीक थे। मुँह से ऐसी बात कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं और जिसको छिपाते हैं अल्लाह ख़ूब जानता है। (१६८) जो बैठे रहे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहने लगे कि हमारा कहा मानते§ तो मारे न जाते, कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को हटा देना। (१६९) जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गये हैं उनको मरा हुआ ख़याल न करना बल्कि अपने परवरदिगार के पास जीते हैं, इनको रोज़ी मिलती है। (१७०) जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से इनको दे रखा है उससे ख़ुश हैं, और जो लोग इनके बाद अभी इनमें आकर शामिल नहीं हुए वह खुशियाँ मनाते हैं, क्योंकि इन पर न डर और न यह उदासीन हैं। (१७१) अल्लाह के पदार्थों के और दया की खुशियाँ मना रहे हैं और इसकी कि अल्लाह ईमानवालों के फल को अकारथ नहीं होने देता। (१७२) [रुकू १७ आयात १६]

जिन लोगों ने चोट खाई पीछे ख़ुदा और पैग़म्बर का हुक्म माना ख़ासकर ऐसे भलाई करनेवाले और परहेज़गारों के लिए बड़ा फल है। (१७३) वह लोग जिनको लोगों ने ख़बर दी कि लोगों ने तुम्हारे लिए बड़ी भीड़ जमा की है उनसे डरते रहना तो इससे उनका इतमीनान और अधिक हो गया और बोल उठे कि हमको अल्लाह काफ़ी है और वह अच्छा काम सँभालनेवाला है।*(१७४) ग़रज़ यह लोग अल्लाह की

§ कुछ लोगों ने अपने मुसलमान रिश्तेदारों को ऊहद की लड़ाई में भाग लेने से रोका था। जब वे शहीद हो गये तो अपनी बड़ाई जताने लगे कि हमने तो पहले ही रोका था। इसके जवाब में ये आयतें उतरीं।

*ऊहद की लड़ाई के बाद कुरैश मुसलमानों को भयभीत रखने के विचार

चीज़ों और करम से लदे हुए वापस आये और उनको कुछ बुराई नहीं हुई और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलते रहे और अल्लाह की मेहरबानी बड़ी है। (१७५) यह शैतान है जो अपने दोस्तों का भय दिखलाता है तो तुम उनसे न डरना और अगर ईमान रखते हो तो मेरा ही डर रखना (१७६) जो लोग इन्कार में दौड़े फिरते हैं तुम इन लोगों की वजह से उदास न होना, यह लोग खुदा का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, खुदा चाहता है कि क़यामत में इनको कुछ भाग न दे और इनको बड़ी सज़ा होनी है। (१७७) जिन लोगों ने ईमान देकर इन्कार मोल लिया खुदा को तो हरगिज़ किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे बल्कि इन्हीं को कड़ी सज़ा होगी। (१७८) जो लोग इन्कार कर रहे हैं, इस ख़याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं, यह कुछ इनके हक़ में भला है। हम तो इनको सिर्फ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि और गुनाह समेट लें और इनको ज़िल्लत की मार है। (१७९) अल्लाह ऐसा नहीं है कि जिस हाल में तुम हो अच्छे-बुरे की जाँच बग़ैर इसी हाल पर ईमानवालों को रहने दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुमको ग़ैब की बातें बतादे। हाँ अल्लाह अपने पैग़म्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता है, तो अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और बचते रहोगे तो तुमको बड़ा फल मिलेगा। (१८०) और जिन लोगों को खुदा ने अपनी कृपा से दिया है और वह उसमें कंजूसी करते हैं वह इसको अपने हक़ में भला न समझें बल्कि वह उनके हक़ में ख़राबी है। जिस (माल) की कंजूसी करते हैं, क़यामत के दिन के क़रीब उसकी तौक़ (हँसली) बनाकर उनके गले में पहनाई जायगी और आसमान व ज़मीन का वारिस अल्लाह ही है और जो कर रहे हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (१८१) [रुकू १८ आ. ९]

जो लोग अल्लाह को मुहताज§ और अपने को मालदार बताते हैं

से दुआरा उन पर चढ़ाई करने की झूठी ख़बर भेजते थे। इसको सुनकर मुसलमान डरते न थे बल्कि कहते थे, हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है।

§ जब खुदा की राह में क़र्ज़ देने का हुक्म आया तो यहूदी कहने लगे कि

उनकी बकवाद अल्लाह ने सुनी। यह लोग जो नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते चले आये हैं उसके साथ हम इनकी इस बकवाद को भी लिखे रखते हैं और इनका जवाब हमारी तरफ़ से यह होगा कि दोज़ख़ की सज़ा भोगा करो। (१८२) यह उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुमने पहले से अपने हाथों भेजा है और अल्लाह तो अपने बन्दों पर किसी तरह का जुल्म नहीं करता। (१८३) यह जो कहते हैं कि अल्लाह ने हमसे कह रखा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमको ऐसी भेंट न दिखावे कि उसको आग चट कर जाय तब तक हम उस पर ईमान न लावें। कहो कि मुझसे पहले पैग़म्बर तुम्हारे पास खुली-खुली निशानियाँ लाये जिसको तुम माँगते हो, तो अगर तुम सच्चे हो तो फिर तुमने उनको किसलिए क़त्ल किया। (१८४) इस पर भी अगर वह तुमको झुठलावें तो तुमसे पहले पैग़म्बर खुले चमत्कार लाये और छोटी † कितावें (सहीफ़े) और रोशन (खुली) कितावें भी लाये, फिर भी लोगों ने उनको झुठलाया। (१८५) हर किसी को मरना है और पूरा-पूरा बदला तुमको क़यामत ही के दिन दिया जायगा, तो जो शख़्स नरक से दूर हटा दिया गया और उसको बैकुण्ठ में जगह दी गई तो उसने मनमाना फल पाया और दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोखे की पूँजी है। (१८६) तुम्हारे मालों और तुम्हारी जानों में ज़रूर तुम्हारी परीक्षा की जायेगी और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है उनसे और मुशरिकीन से तुम बहुत-सी नुक़सान की बातें ज़रूर सुनोगे और अगर संतोष किये रहो और परहेज़गारी करो तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं। (१८७) और जब ख़ुदा ने किताब वालों से इक़रार लिया कि लोगों से इसका मतलब साफ़-साफ़ बयान कर देना और इसको छिपाना नहीं, मगर उन्होंने उसको अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोड़े-से दाम हासिल किये सो

ख़ुदा मुहताज है, इसलिए क़र्ज़ माँगता है।

† धार्मिक छोटे छोटे ग्रंथ सहीफ़े कहलाते हैं। यह भी आसमानी (दैवी) कितावें हैं।

बुरा है जो यह लोग ले रहे हैं। (१८८) और जो लोग अपने किये से ख़ुश होते और जो किया नहीं उस पर अपनी तारीफ़ चाहते हैं ऐसे लोगों की निस्बत हरगिज़ ख़याल न करना कि यह लोग सज़ा से बचे रहेंगे बल्कि उनके लिये दुखदाई सज़ा है। (१८९) आसमान व ज़मीन का अख़्तियार अल्लाह ही को है और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१९०) [रुकू १९ आयात ९]

आसमान और ज़मीन की बनावट और रात और दिन के बदलने में बुद्धिमानों के लिये निशानियाँ हैं।(१९१) जो खड़े और बैठे और पड़े ख़ुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की बनावट में ध्यान देते हैं, हमारे परवरदिगार ! तूने इसको बेफ़ायदा नहीं बनाया। तेरी ज़ात पाक है। हमको दोज़ख़ की सज़ा से बचा।(१९२) ऐ हमारे परवरदिगार ! जिसको तूने दोज़ख़ में डाला उसको तूने नीच बनाया और सज़ावारों का कोई भी मददगार नहीं होगा। (१९३) ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने एक§ मनादी करनेवाले (मुहम्मद) को सुना कि ईमान की मनादी कर रहे थे कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आये। पस ऐ हमारे परवरदिगार ! हमको हमारे क़सूर क्षमा कर और हमसे हमारे गुनाह दूर कर और नेक बन्दों के साथ हमको मौत दे।(१९४) ऐ हमारे परवरदिगार ! तूने जैसी प्रतिज्ञा अपने पैग़म्बरों के द्वारा हमसे की है, दे, और क़यामत के दिन हमको बदनाम न कर। तू वादाख़िलाफ़ी तो किया ही नहीं करता। (१९५) फिर उनके पालनकर्त्ता ने उनकी दुआ मान ली कि हम तुममें से किसी मेहनतवाले की मेहनत को बेकार नहीं जाने देते। मर्द हो या औरत तुम सब एक ज़ात हो, तो जिन लोगों ने हमारे लिए देश छोड़े और अपने घरों से निकाले गये और मेरी राह में सताये गये और लड़े और मारे गये, हम उनके अपराधों को उनसे ज़रूर मिटा देंगे। उनको ऐसे

§ यहूदी विद्वान अपनी ओर से बातें बनाते और बेपढ़े लोगों से कहते कि ये बातें तौरात में लिखी हैं और जी में ख़ुश होते कि उनका झूठ किसी पर नहीं खुल सकता।

बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। यह अल्लाह के यहाँ से फल मिलता है और अच्छा फल तो अल्लाह ही के यहाँ है। (१९६) शहरों में काफ़िरों का चलना-फिरना तुमको धोखे में न डाले, (१९७) थोड़ा-सा फ़ायदा है फिर इनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (१९८) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उनमें हमेशा रहेंगे और जो अल्लाह के यहाँ है सो भलाई करनेवालों के लिए भला है। (१९९) किताबवालों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो ख़ुदा पर ईमान रखते हैं और जो किताब तुम पर उतरी है और जो उन पर उतरी है उनको मानते हैं। अल्लाह के आगे झुके रहते हैं। अल्लाह की आयतों के बदले थोड़े दाम नहीं लेते, यह वह लोग हैं जिनके बदले परवरदिगार के यहाँ से मिलेंगे। ऐ ईमानवालों! ठहरे रहो और सामना करने में‡ पक्के रहो और लगे§ रहो और अल्लाह से डरो ताकि तुम मनमाने फल पाओ। (२००) [रुकू २० आयात १०]

——:०:——

४ सूरे निसा ९२

(स्त्रियों का अध्याय)

यह मदीना में उतरी, इसमें १७७ आयतें और २४ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। ऐ लोगों! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुमको * एक शख़्स से पैदा किया और उससे उसकी बीवी को पैदा किया और उन दो से बहुत मर्द और औरत फैला दिये और जिस ख़ुदा का लगाव दे-देकर तुम

‡ यानी काफ़िरों से तुमसे युद्ध हो तो उनका सामना डटकर करो और मोर्चे पर जमे रहो।

§ ईमान पर दृढ़ रहो। इसका फल तुमको बहुत अच्छा मिलेगा।

* यानी सबसे पहले हज़रत आदम को पैदा किया फिर उनकी बीबी

अपने कितने काम निकाल लेते हो उसका और सम्बन्धियों का लिहाज़ रखो, अल्लाह तुम्हारा रखवाला है। (१) अनाथों‡ के माल उनको दे दो और अच्छे माल के बदले हराम का माल मत लो और उनके माल अपने मालों में मिलाकर खा-पी मत डालो। यह बड़ा पाप है। (२) अगर तुमको इस बात का डर हो कि बेसहारा लड़कियों में इन्साफ़ क़ायम न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दे दो और तीन-तीन चार-चार औरतों से निकाह कर लो लेकिन अगर तुमको इस बात का शक हो कि बराबरी न कर सकोगे तो एक ही बीवी करना। या जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो उस पर संतोष करना। यह तदबीर मुनासिब है। (३) औरतों को उनके मिहर ख़ुशदिली से दे डालो फिर अगर ख़ुशदिली के साथ उसमें से कुछ तुमको छोड़ दें तो उसको रचता-पचता खाओ। (४) माल जिसको ख़ुदा ने तुम्हारे लिए सहारा बनाया है मूर्खों के हवाले न करो। जो उसमें से उनके खाने-पहनने में ख़र्च करो उनको नर्मी से समझा दो।(५) बेसहारा को सुधारते रहो। जब तक निकाह(ब्याह) के लायक़ हों उस वक़्त अगर उनमें होशियारी देखो तो उनके माल उनके हवाले कर दो और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के शक से जल्दी-जल्दी उनका माल खा डालो और जो सामर्थ्य वाला हो उसे बचा रहना चाहिए और जो ज़रूरत वाला हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खा ले। और जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उसके गवाह कर लो, वर्ना हिसाब लेने को अल्लाह काफ़ी है। (६) मा, बाप और रिश्तेदारों की छोड़ी हुई जायदाद में थोड़ा व बहुत

(हव्वा) को बनाया और फिर इन्हीं से आदमी की नसल चली। जितने हैं, सब आदम की संतान हैं, इसलिए जात-पाँत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता और न कोई ऊँच या नीच है। सब जन्म से एक समान हैं।

‡ जिस लड़के का बाप मर जाय उसके वारिसों को चाहिए कि उसका माल न लें। जब वह जवान हो जाय तो उसको उसके बाप का छोड़ा माल ज़रूर वापस कर दें।

मर्दों का हिस्सा है, मा बाप और सम्बन्धियों के छोड़े हुए में* स्त्रियों का भी भाग है (और यह) भाग (हमारा) ठहराया हुआ (है)। (७) जब बाँट के वक़्त सम्बन्धी, अनाथ बच्चे और ग़रीब आ मौजूद हों तो उसमें से उनको भी कुछ दे दिया करो और उनको नर्मी से समझा दो। (८) उन लोगों को डरना चाहिए कि अगर अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ जाते तो उन पर उनको दया आती। तो चाहिए कि अल्लाह से डरें और सीधी तरह बात करें। (९) जो लोग व्यर्थ अनाथों के माल तितर-बितर करते हैं वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं और अब दोज़ख़ में पड़ेंगे। (१०) [रुकू १ आयात १०]

तुम्हारी संतान में अल्लाह तुमसे कहे रखता है कि लड़के को दो लड़कियों के बराबर हिस्सा मिलेगा, फिर अगर लड़कियाँ दो से ज़्यादा हों तो छोड़ी हुई जायदाद में उनका (हिस्सा) दो तिहाई और अगर अकेली हों तो उसको आधा और मरे हुए के माता-पिता में दोनो में हरएक को छोड़ी हुई जायदाद का छठवाँ भाग उस सूरत में कि मरे की संतान हो और अगर उसके संतान न हों और उसके वारिस मा-बाप हों तो उसकी माता का एक तिहाई भाग, लेकिन मरे के भाई हों तो माता का छठवाँ भाग मरे की वसीयत और क़र्ज़ के बाद मिलेगा। तुम अपने बाप और बेटों को नहीं जान सकते कि मुनाफ़ा पहुँचने के इत्मीनान से उनमें कौन-सा तुमसे अधिक नज़दीक है। भागों का क़रारदाद (ठहरौनी अल्लाह का ठहराया हुआ है, अल्लाह निस्संदेह जानकार है। (११) जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ मरें अगर उनकी संतान नहीं तो उनके तर्के† में तुम्हारा आधा; अगर उनकी संतान है तो उनके तर्के में तुम्हारा चौथियाई उनकी वसीयत और क़र्ज़ के बाद, और तुम कुछ छोड़ मरो और तुम्हारे कुछ औलाद न हो तो बीवियों को चौथियाई; और अगर तुम्हारे संतान हो तो तुम्हारे तर्के में से बीवियों का आठवाँ तुम्हारी

* अरब में इस्लाम से पहले लड़कियों को अपने मा-बाप की जायदाद में से कुछ न मिलता था।

† मरे की छोड़ी हुई जायदाद।

वसीयत और क़र्ज़ के बाद दिया जायगा और अगर किसी मर्द या औरत की मिल्कियत और उसके बाप-बेटा न हो और उसके भाई या बहन हो तो उनमें से हरएक का छठवाँ और अगर एक से ज्यादा हों तो एक तिहाई में सब शरीक मरे की वसीयत और क़र्ज़ के बाद, बशर्ते कि मरे हुए ने औरों का नुक़सान न किया हो। अल्लाह का हुक्म है और अल्लाह जानता है और बरदाश्त करता है। (१२) यह अल्लाह की हदें हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेगा उसको अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे और यह बड़ी कामयाबी है। (१३) जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माना करे और अल्लाह की हदों से चढ़ चले उसको नरक में दाख़िल करेगा, उसमें हमेशा रहेगा और उसको ज़िल्लत की मार दी जायगी। (१४) [रुकू २ आयात ४]

और तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी की अपराधिन हों तो उन पर अपने लोगों में से चार की गवाही लो, अगर गवाह तसदीक़ करें तो उनको घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि मौत उनका काम तमाम कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाले।(१५) और जो दो शख़्स तुम लोगों में से बदकारी के अपराधी हों तो उनको मारो-पीटो, फिर अगर तौबा करें और अपनी दशा को सुधार लें तो उनका ख़याल छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान है। (१६) अल्लाह तौबा क़बूल करता है उन्हीं लोगों की जो नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठें फिर जल्दी से तौबा कर लें तो अल्लाह भी ऐसों की तौबा क़बूल कर लेता है और अल्लाह हिकमतवाला सब जानता है। (१७) उन लोगों की तौबा नहीं जो बुरे काम करते रहे यहाँ तक कि उनमें से जब किसी के सामने मौत आ खड़ी हो तो कहने लगे कि अब मैंने तौबा की, और उनकी भी तौबा कुछ नहीं जो काफ़िर ही मर जाते हैं। यही हैं जिनके लिए हमने कड़ी सजा तैयार कर रखी है। (१८) ऐ ईमानवालों! तुमको जायज नहीं कि औरतों को मीरास (बपौती) समझकर जबरदस्ती उन पर क़ब्ज़ा कर लो। जो कुछ

तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ छीन लेने की नीयत से उनको क़ैद न रखो (कि दूसरे से निकाह न करने पावें) या उनसे कोई खुली हुई बदकारी ज़ाहिर हो। और बीवियों के साथ नेक सलूक से रहो-सहो, और तुमको बीवी नापसन्द हो तो ताज्जुब नहीं कि तुमको एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत खैर बरकत दे। (१९) अगर तुम्हारा इरादा एक बीवी को बदलकर उसकी जगह दूसरी बीवी करने का हो तो गो तुमने पहली बीवी को बहुत सा माल दे दिया हो तो भी उसमें से कुछ भी न लेना। क्या किसी क़िस्म की तोहमत लगाकर ज़ाहिरा बेजा बात करके अपना दिया हुआ लेते हो ? (२०) दिया हुआ कैसे ले लोगे हालाँकि तुम एक दूसरे के साथ सुहबत (संगत) कर चुके हो और बीवियाँ तुमसे पक्का वादा ले चुकी हैं।†(२१) जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना मगर जो हो चुका सो हो चुका। यह बड़ी शर्म और ग़ज़ब की बात थी और बहुत ही बुरा दस्तूर था।(२२) [रुकू३आ.८]

तुम्हारी मातायें, बेटियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी बुआयें और तुम्हारी मौसियाँ और भाञ्जियाँ, भतीजियाँ और तुम्हारी माताएँ जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं। जिन स्त्रियों के साथ तुम संगत (सुहबत) कर चुके हो उनकी पूर्वपति से पैदा हुई लड़कियाँ जो तुम्हारी गोदों में परवरिश पाती हैं। लेकिन अगर इन बीवियों के साथ तुमने संगत न की हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे बेटों की स्त्रियाँ (बहुएँ) और दो बहनों का एक साथ रखना§ भी तुम पर हराम है। मगर जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला मेहरबान है।(२३)

—o—

† निकाह के बाद अगर मर्द तलाक़ देना चाहे तो दो बातें हो सकती हैं—या तो उसने उस औरत के साथ संगत की होगी या न की होगी। यदि वह कर चुका है तो उसको पूरा मेहर देना होगा वरना आधा।

§ दो सगी बहनें एकही पुरुष की पत्नियाँ एकही समय में नहीं हो सकतीं।

पाँचवाँ पारा (वल्मुहसनात)

सूरे निसा

ऐसी औरतें जिनका ख़ाविंद ज़िन्दा है उनको लेना भी हराम है, मगर जो क़ैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिए तुमको ख़ुदा का हुक्म है। और इनके सिवाय दूसरी सब औरतें हलाल हैं जिनको तुम माल (मिहर) देकर क़ैद (निकाह) में लाना चाहो न कि मस्ती निकालने को। फिर जिन औरतों से तुमने मज़ा उठाया हो तो उनसे जो मिहर ठहरा था उनके हवाले करो, ठहराये पीछे आपस में राज़ी होकर जो और ठहरा लो तो तुम पर इसमें कुछ नहीं। अल्लाह जानकार हिकमतवाला है। (२४) और तुममें से जिसको मुसलमान बीवियों से निकाह करने की ताक़त (मिहर आदि के कारण) न हो तो ख़ैर बाँदियाँ ही सही जो तुम मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ जायें, बशर्ते कि ईमान रखती हों और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है। तुम आपस में एक हो पस बाँदीवालों की इजाज़त से उनके साथ निकाह कर लो और दस्तूर के बमूजिब उनके मिहर उनके हवाले कर दो मगर शर्त यह है कि क़ैद (निकाह) में लाई जायँ, बाज़ारी औरतों-जैसा सम्बन्ध न हो और न छिपकर प्रेम रखती हों। अगर क़ैद (निकाह) में आये पीछे कोई काम करें तो जो सज़ा बीवी को उसकी आधी लौंडी को। लौंडी से निकाह करने की इजाज़त उसी को है जिसको तुम में से पाप (में फँस जाने) का डर है और अगर (उसके बिना) संतुष्ट रहो तो तुम्हारे हक़ में भला है और अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (२५) [रुकू ४ आयात ३]

अल्लाह चाहता है कि जो तुमसे पहले हो गुज़रे हैं उनके तरीक़े तुमसे खोल-खोलकर बयान करे और तुमको उन्हीं तरीक़ों पर चलाये और तुमको क्षमा करे और हिकमतवाला अल्लाह जानता है। (२६) अल्लाह चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और जो लोग विषय वासनाओं के पीछे पड़े हैं उनका मतलब यह है कि तुम सच्ची राह से बहुत

दूर हट जाओ।(२७) अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ हलका करे क्योंकि मनुष्य कमज़ोर पैदा किया गया है।(२८) ऐ ईमानवालों! एक दूसरे का माल व्यर्थ मत खाओ लेकिन आपस में रज़ामन्दी से तिजारत करो और आपस में मार-काट मत करो। अल्लाह तुम पर मेहरबान है। (२९) और जो ज़ोर-ज़ुल्म से ऐसा करेगा हम उसको आग में झोंक देंगे और यह अल्लाह के लिए साधारण है। (३०) जिनसे तुमको मना किया जाता है अगर तुम उनमें से बड़े-बड़ पापोंसे बचते रहोगे तो हम तुम्हारे (छोटे) अपराध उतार देंगे और तुमको प्रतिष्ठा के स्थान में जगह देंगे।(३१) ख़ुदा ने जो तुममें से एक को दूसरे पर बढ़ती दे रखी है उसकी कुछ हवस मत करो। मर्दों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और औरतों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और अल्लाह से उसकी दया माँगते रहो। अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (३२) और मा-बाप और रिश्तेदार जो (तर्का) छोड़कर मरे तो हमने हरएक के (उस माल के) हक़दार ठहरा दिये हैं और जिन लोगों के साथ तुम्हारा वादा† है तो उनका भाग उनको दो। हर चीज़ अल्लाह के सामने है।(३३) [रुकू ५ आ। ८]

मर्द औरतों के सिरमौर हैं। कारण यह कि अल्लाह ने एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिए भी कि वे अपने माल में से भी (उन पर) ख़र्च करते हैं। तो जो भली हैं कहा मानती हैं, ईश्वर की कृपा से पीठ पीछे रक्षा रखती हैं। और तुमको जिन बीवियों की बुरी आदत से खटका हो उनको समझा दो, फिर उनके साथ सोना छोड़ दो और उन्हें मारो, फिर अगर तुम्हारी बात मानने लगें तो उन पर (इस पर न मानें) तोहमत न लगाओ, क्योंकि अल्लाह सर्वोपरि है। (३४) और अगर तुमको मियाँ-बीवी में खटपट का सन्देह हो तो मर्द की तरफ़ से एक पंच और एक पंच स्त्री की तरफ़ से ठहराओ। अगर पंचों का

† वादे का अर्थ है दीनी भाई मानना। ऐसे लोगों के लिए तर्का (उत्तराधिकार) नहीं है। हाँ यदि मरने से पहले अपनी जायदाद को कोई अपने दीनी भाई को देना चाहे तो दे सकता है।

इरादा होगा तो अल्लाह दोनों में मिलाप करा देगा, अल्लाह ख़बरदार है।(३५) अल्लाह ही की पूजा करो और उसके साथ किसी को मत मिलाओ और मा-बाप रिश्तेदार और अनाथों और मुहताजों और क़रीबी पड़ोसियों और परदेसी पड़ोसियों और पास के बैठनेवालों और मुसाफ़िरों और जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों इन सबके साथ भलाई करते रहो, और अल्लाह उन लोगों से ख़ुश नहीं होता जो इतरायें, बड़ाई मारते फिरें। (३६) वे जो कंजूसी करें और लोगों को भी कंजूसी करने की सलाह दें और अल्लाह ने जो अपनी कृपा से उनको दिया है उसको छिपायें, और हमने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत की सज़ा तैयार कर रखी है। (३७) वे जो लोगों के दिखाने को माल ख़र्च करते हैं और अल्लाह और क़यामत पर ईमान नहीं रखते और शैतान जिसका साथी हो तो वह बुरा साथी है।(३८) और अगर अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाते और जो कुछ ख़ुदा ने उनको दे रखा था उसको ख़र्च करते तो उनका क्या बिगड़ता और अल्लाह तो इनसे जानकार ही है।(३९) अल्लाह रत्ती भर ज़ुल्म नहीं करता बल्कि भलाई हो उसको बढ़ाता है और अपने पास से बड़ा बदला दे देता है।(४०) क्या हाल होगा जब हम हर गिरोह के गवाह को बुलायेंगे और हम तुझे (ऐ मुहम्मद !) इन पर गवाह तलब करेंगे। (४१) जिन लोगों ने इनकार किया और पैग़म्बर का हुक्म न माना उस दिन इच्छा करेंगे कि कोई उन पर (किये पर) मिट्टी फेर दे और ख़ुदा से कोई बात भी नहीं छिपा सकेंगे। (४२) [रुकू ६ आयात ६]

ऐ ईमानवालों! जब तुम नशे† में हो नमाज़ न पढ़ा करो। जब तक न समझो कि क्या कहते हो और नहाने की ज़रूरत हो तो भी नमाज़ के पास न जाना यहाँ तक कि स्नान न कर लो। हाँ रास्ते चले जा रहे हो और अगर तुम बीमार हो या मुसाफ़िर या तुममें से कोई पाख़ाने से आवे या स्त्रियों से प्रसंग करके आया हो और तुमको पानी न मिल

† यह हुक्म उस वक़्त का है, जब शराब पीना मना न था। अब शराब मना है।

सके तो पाक मिट्टी लेकर मुँह और हाथ पर मल लो। अल्लाह माफ़ करनेवाला बख्शनेवाला है। (४३) क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नहीं की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया था, वह अब राह से भटके हुए हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह छोड़ दो। (४४) और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है। और अल्लाह काफ़ी दोस्त और काफ़ी मददगार है। (४५) यहूद में कुछ ऐसे भी हैं जो बातों को (उनके) ठिकाने से फेरते‡ (माने बदलते) हैं और कहते हैं हमने सुना और न माना और सुन कि तेरी कोई न सुने और ज़बान मरोड़-मरोड़ कर दीन में ताने की राह से राइना§ कहते हैं। अगर वह कहते हमने सुना और माना और तू सुन और हम पर नज़र कर तो उनके लिए भला होता और मुनासिब था लेकिन खुदा ने उनकी इनकारी के सबब उन पर लानत की है। पस उनमें से थोड़े ईमान लाते हैं। (४६) किताबवालों! जो हमने उतारा है और वह उस किताब की जो तुम्हारे पास है तसदीक़ करता है, उस पर ईमान ले आओ, इससे पहले कि मुँह बिगाड़कर हम उलटे उनको पीछे की ओर लगावें* या जिस तरह हमने शनीचरवालों† को फटकार दिया था उसी तरह उनको भी फटकार दें और जो खुदा को मंज़ूर है वह तो होकर रहेगा। (४७) खुदा के शरीक ठहरानेवाले को खुदा माफ़ नहीं करता, इसके नीचे जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने खुदा का शरीक ठहराया (किसी और को पूजा) उसने बड़ा पाप बाँधा है। (४८) क्या तुमने उन लोगों (यानी यहूद) पर नज़र नहीं की जो आप बड़े पाक बनते हैं बल्कि अल्लाह जिसको चाहता पाक बनाता है और ज़ुल्म तो किसी पर

‡ जो कुछ तौरात में है उसको छिपाते हैं और शब्दों को उलट-पलट कर कुछ का कुछ अर्थ कर देते हैं। इसी को तहरीफ़ कहते हैं।

§ 'राइना' सफ़ा ३५ पर † नोट देखो।

* यानी इसके पहले कि खुदा का कोप आये और तुम्हारे रूप बदल जायें जैसे शनिवार के दिन मछली पकड़नेवालों की शक्लें बदल गई थीं।

† पृष्ठ २८ पर यही निशान देखें।

रत्ती के बराबर भी न होगा। (४९) देखो यह लोग अल्लाह पर कैसे झूठ बाँध रहे हैं और यही खुला क़सूर काफ़ी है।(५०) [रुकू ७ आ.८]

क्या तुमने इन लोगों पर नज़र नहीं की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया, और वह शैतान को मानते हैं और काफ़िरों की बाबत कहते हैं कि मुसलमानों से तो यही लोग ज्यादा सीधे रास्ते पर हैं।(५१) ऐ पैग़म्बर! यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने फटकार दिया है और जिसको अल्लाह फटकारे उसका कोई मददगार न होगा। (५२) आया इनके पास राज्य का कोई भाग है फिर वे लोगों को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) खुदा ने जो लोगों को अपनी मेहरबानी से चीजें दी हैं उस पर जलते हैं, सो इब्राहीम के वंश को हमने किताब (क़ुरान) और इल्म और इनको बड़ा भारी राज्य दिया। (५४) फिर लोगों में से कोई तो उस पर ईमान लाये और किसी ने मुँह मोड़ा और दहकता हुआ दोज़ख काफ़ी है (५५) जिन लोगों ने हमारी आयतों से इनकार किया हम उनको आग में झोंकेंगे। जब उनकी खालें जल जावेंगी उनको दूसरी खाल बदल देंगे ताकि दण्ड भोगें। अल्लाह ज़बर-दस्त बड़ा हिकमतवाला है। (५६) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हम उनको ऐसे बाग़ों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे। उनमें उनके लिये बीवियाँ साफ़ सुथरी होंगी और हम उनको घनी छाहों में ले जाकर रखेंगे। (५७) अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानत उनके हवाले कर दिया करो और जब लोगों के आपस के झगड़े चुकाओ इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो, अल्लाह तुमको अच्छी शिक्षा देता है अल्लाह सुनता देखता है।(५८) ऐ ईमानवालों! अल्लाह की और पैग़म्बर की और जो तुममें से हुकूमतवाले हैं उनकी आज्ञा मानो फिर अगर किसी बात में तुम्हारा झगड़ा हो तो खुदा और पैग़म्बर की तरफ़ ले जाओ, अगर तुम अल्लाह पर और क़यामत पर ईमान रखते हो तो यह भला है और परिणाम भी अच्छा है।(५९)[रुकू ८ आ. ९]

क्या तुमने उनकी तरफ़ नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह जो

तुम पर उतरा और तुझसे पहले उतरा मानते हैं और चाहते हैं कि झगड़ा शैतान† के पास ले जावें हालाँकि उनको हुक्म दिया जा चुका है कि उसकी बात न मानें और शैतान चाहता है कि उनको भटका कर बड़ी दूर ले जावे। (६०) और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी तरफ़ और पैग़म्बर की तरफ़ आओ तो तुम इन्कारियों को देखते हो कि वह तेरी तरफ़ आने से रुकते हैं। (६१) तो कैसी शर्म की बात है कि जब इन्हीं कर्मों के कारण इन पर कोई विपत्ति पड़ती है तो तुम्हारे पास अल्लाह की सौगन्ध खाते हुए आते हैं कि हमारी ग़रज़ तो भलाई और मेल मिलाप§ की थी। (६२) यह ऐसे हैं कि जो इनके दिल में है खुदा को मालूम है तो इनके पीछे न पड़ो और इनको समझा दो और इनके दिल पर असर करने वाली बातें कहो। (६३) और जो पैग़म्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा मतलब यही रहा है कि अल्लाह के हुक्म से उसका कहा माना जावे और जब इन लोगों ने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया था, अगर तेरे पास आते और खुदा से माफ़ी माँगते और पैग़म्बर उनकी माफ़ी चाहते तो अल्लाह को बड़ा ही माफ़ी देनेवाला और मेहरबान पाते। (६४) सो तुम्हारे परवरदिगार की क़सम कि जब तक वह लोग

† मुनाफ़िक़ जानते थे कि मुहम्मद साहब न्याय के समय किसी का पक्ष नहीं ले सकते, इसलिये अपने झगड़ों को यहूदी विद्वानों के पास ले जाते थे जो घूस खाते थे।

§ एक मुनाफ़िक़ और यहूदी में झगड़ा हुआ। दोनो मुहम्मद साहब के पास आये। मुहम्मद साहब ने यहूदी के पक्ष में अपना निर्णय दिया। मुनाफ़िक़ हज़रत उमर के पास इस विचार से गया कि वह मुझको मुसलमान समझकर मेरी-जैसी कहेंगे। उमर इस समय मदीने में जज थे। जब यहूदी ने उनको बताया कि मुहम्मद साहब उसके पक्ष में फ़ैसला कर चुके हैं तो उमर ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर डाला। उसके वारिस मुहम्मद साहब के पास आये कि हम समझौते के लिए उमर के पास गये थे; आपके फैसले की अपील के लिये नहीं। उसी सम्बन्ध में यह आयत उतरी।

अपने आपसी झगड़ों में तुमको जज न जानें और फिर तेरे न्याय से उदास न होकर मान लें तब तक ईमानवाले न होंगे।(६५) अगर हम इनको हुक्म देते कि आप अपने को क़त्ल करो या घरबार छोड़ जाओ तो इनमें से थोड़े आदमियों के सिवाय इसको न मानते और जो कुछ इनको समझाया जाता है अगर उसका पालन करते तो उनके हक़ में भला होता और इस कारण दीन में मज़बूती से जमे रहते। (६६) इस सूरत में हम इनको ज़रूर अपनी तरफ़ से बड़ा बदला देते, (६७) और इनको सीधे मार्ग पर ज़रूर लगा देते। (६८) जो अल्लाह और रसूल का कहना माने तो ऐसे ही लोग उनके साथ होंगे, जिन पर अल्लाह ने एहसान किये यानी नबी और सच्चे लोग और शहीद और भले सेवक, और यह लोग अच्छे साथी हैं। (६९) यह अल्लाह की मेहरबानी है और अल्लाह का ही जानना काफ़ी है। (७०) [रुकू ९ आयात ११]

ऐ ईमानवालो! अपनी होशियारी रखो और अलग-अलग गिरोह बाँधकर निकलो या इकट्ठे निकलो।(७१) तुममें कोई ऐसा है जो कि ज़रूर पीछे हट रहेगा, फिर अगर तुम पर कष्ट आन पड़े तो कहेगा कि खुदा ने मुझ पर एहसान किया कि मैं इनके साथ मौजूद न था। (७२) और जो खुदा से तुम्हें मेहरबानी मिली तो इस तरह कहने लगेगा गोया खुदा में और तुममें दोस्ती न थी। क्या अच्छा होता जो मैं भी इनके साथ होता तो बड़ी अभिलाषा पूरी करता।(७३) सो जो लोग जन्नत के बदले संसार का जीवन बेचते हैं उनको चाहिए कि खुदा की राह में लड़ें और जो खुदा की राह में लड़ें और फिर मारे जायँ या जीत जायँ तो हम उनको बड़ा अच्छा नतीजा देंगे।(७४) तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में और उन बेबस मनुष्यों, स्त्रियों और बालकों के लिए दुश्मनों से नहीं लड़ते जो दुआएँ माँग रहे हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! इस बस्ती से निकाल जहाँ के रहनेवाले हम पर ज़ुल्म कर रहे हैं, और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा साथी बना और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा मददगार बना।(७५) जो ईमान रखते हैं

वह तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वह शैतान की राह में लड़ते हैं, सो तुम शैतान के तरफ़दारों से लड़ो, शैतान की तदबीरें निर्बल हैं। (७६) [रुकू १० आयात ६]

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा कि जिनको हुक्म दिया गया कि अपने हाथों को रोके रहो और नमाज़ पढ़ते रहो; ज़कात दिया करो, फिर जब इन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो एक फ़रीक़ उनमें से लोगों से डरने लगा जैसे कोई खुदा से डरता है, बल्कि उससे भी बढ़कर, और शिकायत करने लगा कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने हम पर जिहाद (धर्मयुद्ध) क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमको थोड़े दिनों की मुहलत और क्यों न दी। तो कहो कि दुनिया के लाभ थोड़े हैं और जो शख्स डर रखे उसके लिए स्वर्ग भला है और तुम लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा।(७७) तुम कहीं भी हो मौत तुमको आकर ले लेगी अगर्चे पक्के गुम्मदों में हो। और इनको कुछ फ़ायदा पहुँच जाता है तो कहने लगते हैं कि यह खुदा की तरफ़ से है और अगर इनको कुछ नुक़सान पहुँच जाता है तो कहने लगते हैं कि यह तुम्हारी तरफ़ से है। सो ऐ पैग़म्बर! तुम इनसे कह दो कि सब अल्लाह की तरफ़ से है तो,इन लोगों का क्या हाल है कि बात नहीं समझते।(७८) तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो अल्लाह की तरफ़ से है और तुमको कोई नुक़सान पहुँचे तो तेरी रूह की तरफ़ से है, और हमने तुम लोगों की तरफ़ पैग़ाम पहुँचानेवाला भेजा है और खुदा की गवाही काफ़ी है।(७६) जिसने पैग़म्बर का हुक्म माना उसने अल्लाह ही का हुक्म माना और जो फिर बैठा तो हमने तुमको कुछ इन लोगों का निगहबान नहीं भेजा।(८०) और यह (लोग) कह देते हैं कि हम मानते हैं लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इनमें से कुछ लोग रातों को कहे के ख़िलाफ़ सलाह करते हैं और जैसी-जैसी सलाहें रातों को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है तो इनकी कुछ परवाह न करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काम सम्भालनेवाला काफ़ी है।(८१) तो क्या यह लोग क़ुरान में विचार नहीं करते और अगर खुदा के सिवाय (किसी और

के पास से) आया होता तो ज़रूर उसमें बहुत-से भेद पाते।(८२) और जब इनके पास अमन (शान्ति) या डर की कोई खबर आती है तो उसको (सब पर) ज़ाहिर कर देते हैं और अगर उस ख़बर को पैग़म्बर तक और अपने अख्तियार वालों तक पहुँचाते तो जो लोग इनमें से उसको खोद (भेद) निकालनेवाले हैं उसको मालूम कर लेते और अगर तुम पर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत न होती तो कुछ लोगों के सिवाय (सब) शैतान के पीछे चल दिये होते।(८३) तो तुम अल्लाह की राह में लड़ो, अपने सिवा तुम पर किसी और की ज़िम्मेदारी नहीं (हाँ) ईमानवालों को उभारो ताज्जुब नहीं कि अल्लाह काफ़िरों के ज़ोर को रोक दे और अल्लाह का जोर ज्यादा ताक़तवर और उसकी सज़ा अधिक कड़ी है।(८४) और जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उसमें से उसको भी हिस्सा मिलेगा और जो बुरी सिफ़ारिश करे उसमें वह भी शामिल होगा और अल्लाह हर चीज़ पर शक्ति रखनेवाला है। (८५) और तुमको किसी पर सलाम किया जाय तो तुम उससे बढ़कर सलाम कर दिया करो या वैसा ही जवाब दो, अल्लाह हर चीज़ का बदला देने वाला है।(८६) अल्लाह के सिवाय कोई पूजा के क़ाबिल नहीं, इसमें शक नहीं कि क़यामत के दिन वह तुमको जरूर इकट्ठा करेगा और अल्लाह से बढ़कर किसकी बात सच्ची है।(८७) [रुकू ११ आ. ११]

सो तुम्हारा क्या हाल है कि काफ़िरों के बारे में तुम दो पक्ष (फ़रीक़) हो रहे हो हालाँकि अल्लाह ने उनके कामों के सबब उनको पलट दिया है, क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको ख़ुदा ने भटका दिया उसको सीधे रास्ते में ले आओ और जिसको अल्लाह भटकावे सम्भव नहीं कि तुममें से कोई उसके लिए रास्ता निकाल सके।(८८) इनकी तबियत यह है कि जिस तरह खुद काफ़िर हो गये हैं उसी तरह तुम भी इनकार करने लगो ताकि तुम एक ही तरह के हो जाओ। तो जब तक ख़ुदा के रास्ते में देश-त्याग (हिजरत) न कर आवें इनमें से मित्र न बनाना। फिर अगर मुख मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो, उनमें से मित्र और सहायक न बनाना। (८९) मगर जो

लोग ऐसी क़ौम से जा मिले हैं कि तुममें और उनमें (सुलह की) प्रतिज्ञा है (या) तुम्हारे साथ लड़ने से या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से तंगदिल होकर तुम्हारे पास आवें तो उनसे मिलने में हर्ज नहीं, और अगर खुदा चाहता तो इनको तुम पर जीत देता तो यह तुमसे लड़ते। पस यदि तुमसे किनारा खींच जावें और तुमसे न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ मेल करें तो ऐसे लोगों पर तुम्हारे लिए अल्लाह ने कोई राह नहीं दी (कि उन्हें लूटो या मारो)।(९०) कुछ और लोग तुम ऐसे भी पाओगे जो तुमसे शान्ति में रहना चाहते हैं और अपनी क़ौम से भी शान्ति में रहना चाहते हैं लेकिन जब कोई उनको लड़ाई को ले जावे उस समय में उलट जाते हैं, सो अगर तुमसे किनारा खींचे न रहें और न सुलह करें और न अपने हाथ रोकें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और यही लोग हैं जिन पर हमने तुमको खुला अधिकार दे दिया है। (९१) [रुकू १२ आयात ४]

किसी ईमानवाले को जायज़ नहीं कि ईमानवाले को मार डाले मगर भूल से, और जो ईमानवाले को भूल से मार डाले तो एक ईमानवाला ग़ुलाम छोड़ दे और क़त्ल हुए के वारिसों को खून की क़ीमत दे मगर यह कि उसके वारिस माफ़ कर दें। फिर अगर क़त्ल किया हुआ उन आदमियों में का हो जो तुम मुसलमानों के दुश्मन हैं, और वह खुद मुसलमान हो तो एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना होगा (खून की क़ीमत न देनी होगी)। और अगर उन लोगों में का हो जिनमें और तुममें वादा है तो क़त्ल हुए के वारिसों को खून की क़ीमत पहुँचावे और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करे और जिस हत्यारे को क़ीमत देने की ताक़त न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े रखे कि तौबा का यह तरीक़ा अल्लाह का ठहराया हुआ है और अल्लाह जानकार और काम सम्भालनेवाला है। (९२) जो मुसलमान को जान-बूझकर मार डाले तो उसकी सज़ा दोज़ख है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर ईश्वर का ग़ुस्सा होगा और उस पर खुदा की फटकार पड़ेगी और अल्लाह ने उसके लिए बड़ी सज़ा तैयार कर रखी है।(९३) ऐ ईमानवालो! जब तुम खुदा की राह (जेहाद) में बाहर निकलो तो अच्छी तरह खोज कर लिया करो और

जो शख़्स तुमसे सलाम करे उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं§ क्या तुम दुनिया की ज़िन्दगी के लिए सामान की तलाश में हो? ख़ुदा के यहाँ बहुत-सी चीज़ें हैं, पहले तुम भी तो ऐसे ही थे। (यानी माल बचाने के लिये तुमने कलमा पढ़ लिया था) फिर अल्लाह ने तुम पर अपनी मेहरबानी की तो अच्छी तरह जाँच कर लिया करो अल्लाह तुम्हारे कामों से जानकार है। (९४) जिन मुसलमानों को उज़्र नहीं और वह बैठ रहे, यह लोग उन लोगों के बराबर नहीं जो अपने माल और जान से ख़ुदा की राह में जिहाद कर रहे हैं। अल्लाह ने माल और जान से जिहाद करनेवालों को बैठ रहनेवालों पर बड़ी बड़ाई दी और ख़ुदा ने सबको ख़ूबी का वादा दिया और अल्लाह ने बड़े सवाब की वजह से जिहाद करनेवालों को बैठ रहनेवालों पर बड़ी प्रधानता दी है। (९५) ख़ुदा के यहाँ दर्जे हैं और उसकी क्षमा और कृपा है और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (९६) [रुकू १३ आयात ५]

जो लोग अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहे हैं फ़रिश्ते उनकी जान निकालने के बाद उनसे पूछते हैं कि तुम क्या करते रहे, तो वह जवाब देते हैं कि हम तो वहाँ बेबस थे, (इस पर फ़रिश्ते उनसे) कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन गुंजायश नहीं रखती थी कि तुम उसमें देश त्याग करके चले जाते। ग़रज़ यह वह लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (९७) अगर जो पुरुष और स्त्रियाँ और बालक इस क़दर बेबस हैं कि उनसे कोई बहाना करते नहीं बन पड़ता और न उनको कोई रास्ता सूझ पड़ता है, (९८) तो उम्मीद है की अल्लाह ऐसे लोगों को माफ़ी दे और अल्लाह माफ़ करनेवाला बख़्शनेवाला है। (९९) और जो शख़्स ख़ुदा की राह में

§ मुहम्मद साहब ने एक सेना एक देश की ओर भेजी थी। इस देश में एक मुसलमान भी था। वह अपना माल-मता लेकर देशवालों से अलग खड़ा हो गया। मुसलमान समझे इसने जान बचाने के लिए यह चाल चली है इसलिये उसको मार डाला और उसका माल लूट लिया। इस पर यह आयत उतरी।

अपना देश त्याग करेगा तो ज़मीन में उसको ज़्यादा जगह और संपन्नता मिलेगी और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ यात्रा करके निकले फिर उसकी मौत आ जाये तो अल्लाह के ज़िम्मे उसका फल सिद्ध हो चुका और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (१००) [रुकू १४ आयात ४]

जब तुम कहीं को जाओ तुमको डर हो कि काफ़िर तुम से छेड़ छाड़ करने लगें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ में से घटा दिया करो बेशक काफ़िर तो तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।(१०१) जब तुम मुसलमानों के साथी हो और उनको नमाज़ पढ़ाने लगो तो मुसलमानों की एक जमात तुम्हारे साथ खड़ी हो और अपने हथियार लिये रहें। फिर जब सिजदा कर चुकें तो पीछे हट जायँ और दूसरी जमात जो नमाज़ में शरीक नहीं हुई आकर तुम्हारे साथ नमाज़ में शरीक हो और होशियार और अपने हथियार लिये रहें। काफ़िरों की यह इच्छा है कि तुम अपने-अपने हथियारों और साज़ और सामान से बेख़बर हो जाओ तो एक बारगी तुम पर टूट पड़ें। अगर तुम लोगों को मेह की वजह से कुछ तकलीफ़ पहुँचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार रखने में तुम पर कोई गुनाह नहीं। अपना बचाव रखो, अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत की सज़ा तैयार कर रखी है। (१०२) फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह की यादगारी में लगे रहो। फिर जब तुम संतुष्ट हो जाओ तो नमाज़ पढ़ो क्योंकि मुसलमान पर नियत समय में नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है। (१०३) लोगों का पीछा करने में हिम्मत न हारो, अगर तुमको तकलीफ़ पहुँचती है उनको भी तकलीफ़ पहुँचती है और तुमको खुदा से वह आशायें हैं जो उनको नहीं और अल्लाह जानकार और काम सँभालनेवाला है।(१०४) [रुकू १५ आ.४]

हमने सच्ची किताब तुम पर उतारी है कि जैसा तुमको खुदा ने बतला दिया है उसके बमूजिब लोगों के आपसी झगड़े चुका दिया करो और दग़ाबाज़ों के तरफ़दार मत बनो।(१०५) और अल्लाह से माफ़ी चाहो कि बख़्शनेवाला मेहरबान है।(१०६) और जो लोग अपने जी में दग़ा रखते हैं उनकी तरफ़ से मत झगड़ा करो क्योंकि दग़ाबाज़ कसूरवार हैं,

ख़ुदा को पसन्द नहीं हैं। (१०७) लोगों से बातें छिपाते हैं और ख़ुदा से नहीं छिपा सकते। हालाँकि जब रातों को उन बातों की सलाहें बाँधते हैं जिससे ख़ुदा राज़ी नहीं तो ख़ुदा उनके साथ होता है और जो कुछ करते हैं ख़ुदा के क़ाबू में है।(१०८) सुनो तुमने दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी तरफ़ होकर झगड़ा कर लिया तो क़यामत के दिन उनकी तरफ़ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा। (१०९) और जो कोई बुरा काम करे या आप अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह से माफ़ी माँगे तो अल्लाह को बख़्शनेवाला मेहरबान पावेगा। (११०) जो शख़्स कोई बुराई करता है तो वह अपने ही हक़ में ख़राबी करता है और अल्लाह जानकार है।(१११) और जो शख़्स किसी क़सूर व गुनाह का करनेवाला हो फिर वह अपने क़सूर को किसी बेक़सूर पर थोप दे तो उसने अपने ऊपर खुला गुनाह डाला।(११२)[रुकू१६ आ.८]

अगर तुम पर अल्लाह की मेहरबानी और उनकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह तुमको बहका देने का इरादा कर ही चुका था और यह लोग बस अपने ही लिए गुमराह कर रहे हैं और तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि अल्लाह ने तुम पर किताब (क़ुरान) उतारी और समझ और तुमको ऐसी बातें सिखा दी हैं जो तुमको मालूम न थीं और तुम पर अल्लाह की बड़ी मेहरबानी है।(११३) इन लोगों की अक्सर कानाफूसियों में† ख़ैर नहीं मगर जो ख़ैरात में या अच्छे काम में या लोगों में मेल-मिलाप की सलाह दे और जो ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिए ऐसे काम करेगा तो हम उसका बड़ा बदला देंगे। (११४) और जो शख़्स सीधी राह के ज़ाहिर हुए पीछे पैग़म्बर से दूर रहे और ईमानवालों के रास्ते के सिवाय किसी और राह पर चले तो जो (राह) उसने पकड़ी है हम उसको उसी रास्ते चलाये जायेंगे और उसको

† मुनाफ़िक़ लोग मुहम्मद साहब से कान में बात करते थे ताकि दूसरे लोग यह समझें कि ये नबी के बड़े मित्र हैं। ये लोग अधिकतर दूसरे मुसलमानों की बुराई करते थे। इस पर यह आयत उतरी कि इन लोगों की सलाह अच्छी नहीं होती बल्कि दग़ा से भरी होती है।

नरक में दाख़िल करेंगे और वह बुरी जगह है।(११५)[रुकू १७ आ. ३]

यह गुनाह तो अल्लाह माफ़ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जाये और इससे कम जिसको चाहे माफ़ करे और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह दूर भटक गया। (११६) ख़ुदा के सिवाय तो सब औरतों† ही को पुकारते हैं। और उसके सिवाय सरकश शैतान को पुकारते हैं, जिसको ख़ुदा ने फटकार दिया (११७) और वह कहने लगा कि मैं तेरे बन्दों से एक मुक़र्रर हिस्सा ज़रूर लिया करूँगा।(११८) और उनको ज़रूर ही बहकाऊँगा और उनको उम्मीदें ज़रूर दिलाऊँगा और उनको सिखाऊँगा कि जानवरों के कान ज़रूर चीरा करें और उनको समझाऊँगा कि ख़ुदा की बनाई हुई सूरतों को बदला करें और जो शख़्स ख़ुदा के सिवाय शैतान को दोस्त बनाये तो वह ज़ाहिरा नुक़सान में आ गया। (११९) उनको वचन देता और उनको आशाएँ बँधवाता है और शैतान उनसे जो प्रतिज्ञा करता है निरा धोखा है।(१२०) ऐसों का ठिकाना नरक है और वहाँ से कहीं भागने न पायेंगे।(१२१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह की दृढ़ प्रतिज्ञा है और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन है।(१२२) न तुम्हारी बिनती पर है और न किताबवालों की बिनती पर, जो शख़्स बुरा काम करेगा उसकी सज़ा पावेगा और ख़ुदा के सिवाय उसको कोई साथी और मददगार न मिलेगा। (१२३) जो शख़्स कोई नेक काम करे मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और ज़रा भी उनका हक़ न मारा जायगा। (१२४) और उस शख़्स से जिसका दीन बढ़कर है, जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका

† मूर्तियाँ स्त्रियों के रूप की होती हैं। अरब के मूर्ति पूजनेवाले उनको अपने-अपने क़बीले की देवी कहते थे। और कुछ लोग कहते हैं औरतों का अर्थ यहाँ फ़रिश्तों से है, जिनको काफ़िर ख़ुदा की बेटियाँ समझते थे।

दिया और वह भलाई करनेवाला भी है और इब्राहीम के मज़हब पर चलता है, जो एक ही के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त ठहराया है ।(१२५) और जो कुछ आसमानों में है अल्लाह ही का है, जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है, और सब चीज़ें अल्लाह ही के क़ाबू में हैं। (१२६) [रुकू १८ आयात ११]

तुमसे (अनाथ) स्त्रियों के साथ (निकाह करने का) हुक्म माँगते हैं तो समझा दो अल्लाह तुमको उनके बारे में आज्ञा देता है † और क़ुरान में जो तुमको सुनाया जा चुका है सो उन अनाथ औरतों के सम्बन्ध में है जिनको तुम (उनका) हक़ जो उनके लिये ठहरा दिया गया है नहीं देते और उनके साथ निकाह करने की तरफ़ इच्छा करते हो और भी बेबस बच्चों के बारे में(भी वही हुक्म देता है) और यतीमों के हक़ में इन्साफ़ का ख़्याल रखो और जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है ।(१२७) अगर किसी औरत को अपने पति की तरफ़ से ज़्यादती या दिल फिर जाने का सन्देह हो तो दोनो पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में मेल कर लें और मेल अच्छा है और कंजूसी तो सभी की तबियत में होती है और अगर भलाई करो और बचे रहो तो ख़ुदा तुम्हारे कामों से ख़बरदार है ।(१२८) और तुम बहुतेरा चाहो लेकिन यह तो तुमसे हो नहीं सकेगा कि बीवियों में एकसा बर्ताव कर सको तो बिल्कुल (एक ही तरफ़) मत झुक पड़ो कि दूसरी को छोड़ बैठो और अगर मेल कर लो और बचे रहो तो अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है ।(१२९) और अगर दोनो जुदा हो जायँ तो अल्लाह अपने ख़ज़ाने से दोनों को पूरा कर देगा और अल्लाह हिकमतवाला गुंजाइशवाला है ।(१३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिली थी उनसे और तुमसे हमने कह रखा है कि अल्लाह से डरते रहो और अगर नहीं मानोगे तो जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में

† अनाथ स्त्रियों के साथ ब्याह किया जा सकता है पर उनका हक़ उनको अवश्य देना चाहिये यानी कपड़ा।

है अल्लाह ही का है, और अल्लाह बेपरवाह है और सब ख़ूबियोंवाला है।(१३१) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है। अल्लाह ही काम सँभालनेवाला काफ़ी है। (१३२) अगर वह चाहे तुमको मेट दे और दूसरों को ला बसाये और अल्लाह ऐसा करने पर शक्तिशाली है। (१३३) जिसको बदला दुनिया में दरकार हो तो अल्लाह के पास दुनिया और क़यामत के फल हैं और अल्लाह सुनता देखता है। (१३४) [रुकू १६ आयात ८]

ऐ ईमानवालों ! मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो और अगर्चे तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता और सम्बन्धियों के ख़िलाफ़ ही हो ख़ुदा लगती गवाही दो, अगर कोई मालदार या मुहताज है तो अल्लाह बढ़कर उनकी रक्षा करनेवाला है। तो तुम ख़्वाहिश के अधीन न हो जाओ कि न्याय से मुँह फेरने लगो§ और अगर दबी ज़बान से गवाही दोगे या छुपा जाओगे तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बर रखता है।(१३५) ऐ ईमानवालों ! अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उन किताबों पर जो पहले उतारीं ईमान लाओ और जो कोई अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसका किताबों और पैग़म्बरों का और आख़िरी दिन का इन्कारी हुआ, वह दूर भटक गया।(१३६) जो लोग ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर इन्कार में बढ़ते गये तो ख़ुदा न तो उनको माफ़ करेगा और न उनको राह (रास्ते) ही दिखायेगा। (१३७) मुनाफ़िक़ों (ज़ाहिर कुछ भीतरी कुछ)को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनको दुखदाई सज़ा होनी है।(१३८) वे जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्या काफ़िरों के यहाँ इज़्ज़त चाहते हैं,सो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह ही की है।(१३९) तुम पर अल्लाह किताब में यह उतार चुका है कि जब तुम सुनलो कि अल्लाह की आयतों से इन्कार किया जा रहा है

§ यानी धनवानों के डर से और निर्धनों की दुर्दशा पर तरस खा कर अथवा रिश्तेदारों के प्रेम में फँसकर सच बात को न छिपाओ।

और उनकी हँसी उड़ाई जाती है तो ऐसे लोगों के साथ मत बैठो, यहाँ तक कि किसी दूसरे की बात में लग जावें वर्ना, इस सूरत में तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। अल्लाह मुनाफ़िक़ों ‡ और काफ़िरों सबको दोज़ख़ में जमा करेगा। (१४०) वह इन्कारी तुम्हें तकते हैं तो अगर अल्लाह से तुम्हारी फ़तेह हो गई तो कहने लगते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे अगर काफ़िरों को नसीब हुई तो कहने लगते हैं कि क्या हम तुम पर नहीं जीत गये थे और तुमको मुसलमानों से नहीं बचाया था। अल्लाह तुममें क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा और ख़ुदा काफ़िरों को मुसलमानों पर हरगिज़ जीत न देगा।(१४१) [रुकू २० आ.७]

काफ़िर ख़ुदा को धोखा देते हैं हालाँकि ख़ुदा उन्हीं को धोखा दे रहा है और जब नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो अलसाये हुए खड़े होते लोगों को दिखाते हैं और अल्लाह को याद नहीं करते, मगर कुछ यों ही इनकार और ईमान के बीच में पड़े भूल रहे हैं।(१४२) न इनकी तरफ़ और न उनकी तरफ़ और जिसको अल्लाह भटकाये तो उसके लिए कोई राह न पावेगा।(१४३) ईमानवालों! ईमानवालों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम ख़ुदा का ज़ाहिरा अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो ?(१४४) कुछ सन्देह नहीं कि काफ़िर नरक के सबसे नीचे दर्जे में होंगे और तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे।(१४५) मगर जिन लोगों ने तौबा की और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने दीन को ख़ुदा के वास्ते मुक़र्रर कर लिया, तो यह लोग मुसलमानों के साथ होंगे और अल्लाह मुसलमानों को बड़े फल देगा।(१४६) अगर तुम लोग शुक्रगुज़ारी करो और ईमान रखो तो ख़ुदा को तुम्हें सज़ा देने से क्या फ़ायदा होगा और ख़ुदा क़दरदान जाननेवाला है। (१४७)

———o———

‡ ज़ाहिरा कुछ और भीतरी कुछ रखनेवाले।

छठवाँ पारा (लायुहिब्बुल्लाह)

सूरे निसा

अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुँह फोड़कर बुरा कहे मगर जिस पर ज़ुल्म हुआ हो और (वह मुँह फोड़कर ज़ालिम को बुरा कह बैठे तो लाचार है) और अल्लाह सुनता-जानता है। (१४८) भलाई खुल्लमखुल्ला करो या छिपाकर करो या बुराई माफ़ करो तो अल्लाह ताक़तवर माफ़ करनेवाला है। (१४६) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों से फिरे हुए हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बरों में जुदाई डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते हैं किसी को नहीं। और चाहते हैं कि इन्कार और ईमान के बीच में कोई राह निकालें। (१५०) तो ऐसे लोग बेशक काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हमने ज़िल्लत की सज़ा तैयार कर रखी है। (१५१) और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उनमें से किसी एक को दूसरे से जुदा नहीं समझा तो ऐसे ही लोग हैं जिनको अल्लाह उनके फल देगा और अल्लाह बख़्शनेवाला है, मेहरबान है। (१५२) [रुकू २१ आयात ११]

किताबवाले तुम से माँगते हैं कि तुम उन पर कोई किताब आसमान से उतारो तो (इनके पूर्वज) मूसा से इससे भी बड़ी चीज़ माँग चुके हैं, (यानी उन्होंने) माँगा कि अल्लाह को सामने कर दिखलाओ। फिर उनको उनकी नटखटी के कारण से बिजली ने आ दबोचा, उनके बाद भी अगर्चे उनके पास निशानियाँ आ चुकी थीं तो भी बछड़े को ले बैठे, फिर हमने वह भी माफ़ किया। और मूसा को हमने खुली हुई शक्ति दी।(१५३) और उनसे सच्ची प्रतिज्ञा लेने के लिए हमने तूर (पहाड़)को उन पर ला लटकाया और हमने उनको आज्ञा दी कि दरवाज़े में सिर झुकाते हुए दाख़िल होना और हमने उनको कहा था कि हफ़्ते के दिन ज्यादती न करना और हमने पक्का वचन कर लिया।(१५४)

पस उनके वचन तोड़ने और अल्लाह की आयतों से इन्कारी होने और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करने के कारण और उनके इस कहने के कारण से कि हमारे दिलों पर पर्दा है, पर्दा नहीं बल्कि उनकी इन्कारी की वजह से (ख़ुदा ने) उन पर मुहर कर दी है। पस चन्द गिने हुए के सिवाय ईमान नहीं लाते।(१५५) और उनकी इन्कारी की वजह से और मरियम के सम्बन्ध में बड़े लफंट बकने की वजह से (१५६) और उनके इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा मसीह को जो रसूल थे क़त्ल कर डाला, और न तो उन्होंने उनको क़त्ल किया और न उनको सूली पर चढ़ाया मगर उनको ऐसा ही मालूम हुआ और वे लोग इस बारे में मतभेद डालते हैं, तो इस मामले में शक में पड़े हैं। इनको इसकी ख़बर तो है नहीं मगर सिर्फ़ अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं और यक़ीनन ईसा को लोगों ने क़त्ल नहीं किया।(१५७) बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है।(१५८) जितने किताबवाले हैं ज़रूर उनके मरने से पहले सबके सब उस पर ईमान लावेंगे और क़यामत के दिन ईसा उनका गवाह होगा। (१५६) अन्त को यहूदियों की शरारत की वजह से हमने पाक चीज़ें जो उनके लिए हलाल थीं उन पर हराम कर दी हैं और इस वजह से कि अक्सर ख़ुदा की राह से रोकते थे।(१६०) और इस वजह से कि बार-बार उनको ब्याज लेने की मनाई कर दी गई थी इस पर भी ब्याज लेते थे और इस कारण से कि लोगों के माल नाहक़ बर्बाद करते थे और इनमें जो लोग नहीं मानते उनके लिए हमने दुखदाई सज़ा तैयार कर रखी है। (१६१) लेकिन उन (किताबवालों) में से जो विद्या में माहिर और ईमानवाले हैं और जो तुम पर उतरी है और जो तुमसे पहले उतरी हैं मानते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और क़यामत का विश्वास रखते हैं। हम उन्हीं को बड़ा फल देंगे। (१६२) [रुकू २२ आयात १०]

हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसा पैग़ाम भेजा है जैसा हमने नूह और दूसरे

पैग़म्बरों की तरफ़ और जो उनके बाद हुए भेजा था और हमने इब्राहीम और इस्माईल, इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की सन्तान, ईसा, अयूब, यूनिस, हारूँ और सुलेमान की तरफ़ ख़ुदाई सन्देश भेजा था और हमने दाऊद को ज़बूर (किताब) दी थी। (१६३) और कितने पैग़म्बर हैं जिनका हाल हम पहले तुमसे बयान कर चुके हैं और कितने पैग़म्बर हैं जिनका हाल हमने तुमसे बयान नहीं किया और अल्लाह ने मूसा से बातें की थीं। (१६४) और कितने पैग़म्बर ख़ुशख़बरी देनेवाले और डरानेवाले आ चुके हैं ताकि पैग़म्बरों के पीछे ख़ुदा पर तोहमत देने का मौक़ा न रहे, ख़ुदा जीतनेवाला और हिकमतवाला है। (१६५) लेकिन जो कुछ ख़ुदा ने तुम्हारी तरफ़ उतारा है अल्लाह गवाही देता है कि समझकर उसको उतारा है और फ़रिश्ते गवाही देते हैं और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (१६६) जो लोग इन्कारी हुए और ख़ुदा की राह से रुके और वह बड़ी दूर भटक गये। (१६७) जो लोग काफ़िर हुए और ज़ुल्म करते रहे उनको ख़ुदा न तो बख़्शे गा और न उनको राह ही दिखलायेगा। (१६८) बल्कि नरक की राह जिसमें हमेशा रहेंगे और अल्लाह के नज़दीक यह सहल है। (१६९) ऐ लोगों! पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ठीक बात लेकर आये हैं। पस ईमान लाओ, तुम्हारा भला होगा, और अगर न मानोगे तो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह हिकमतवाला जानकार है। (१७०) किताबवालों! अपने दीन में हद से बढ़ न जाओ और ख़ुदा की बाबत सच बात निकालो। मरियम के बेटे ईसामसीह बस अल्लाह के पैग़म्बर हैं और ख़ुदा का हुक्म जो उसने मरियम की तरफ़ कहला भेजा था और आत्मा ख़ास अल्लाह की तरफ़ से आई, पस अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और तीन (ख़ुदा)* न कहो। मान जाओ; तुम्हारा भला होगा। अल्लाह एक है, व इस लायक़ नहीं कि उसके कोई सन्तान†

* ईसाई ख़ुदा, ईसा और मरियम, तीनों को ख़ुदा बताते थे।

† ख़ुदा को आदमी जैसा न समझो। उसके लिये बेटी-बेटा रखना शोभा

हो उसी का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है और अल्लाह काम का सम्भालनेवाला काफ़ी है। (१७१) [रुकू २३ आयात ६]

मसीह को ख़ुदा का बंदा होने में कदापि लज्जा नहीं और न फ़रिश्तों को जो नज़दीक हैं, और जो ख़ुदा का बंदा होने से लज्जा करे और घमण्ड करे तो ख़ुदा जल्द इन सबको खींच बुलायेगा। (१७२) फिर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये ख़ुदा उनको पूरा बदला देगा और अपनी रहमत से ज्यादा भी देगा और जो लोग शर्म रखते और घमण्ड करते हैं ख़ुदा उनको कड़ी सज़ा देगा। (१७३) और ख़ुदा के अलावा उनको न कोई साथी मिलेगा और न मददगार। (१७४) ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ़ से हुज्जत§ आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाती हुई रोशनी (क़ुरान) उतार दी (१७५) सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये उन्होंने उसी का सहारा पकड़ा तो अल्लाह उनको जल्द अपनी कृपा और दया में ले लेगा, और उनको अपनी तरफ़ की सीधी राह दिखला देगा। (१७६) तुमसे हुक्म माँगते हैं कह दो कि अल्लाह क़लाला (जिसके संतान व बाप-दादा न हों उसे क़लाला कहते हैं) के बारे में तुमको हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जावे जिसके संतान न हो और उसके बहन हो तो बहन को उसके तर्के का आधा और अगर बहनों के संतान न हो तो उसका वारिस वही भाई फिर अगर बहनें दो हों तो उनको इसके तर्के में दो तिहाई और अगर भाई-बहन (मिले जुले) हों तो औरतों के हिस्से के बराबर एक मर्द का हिस्सा होगा। तुम लोगों के भटकने के ख़याल से अल्लाह तुमसे खोल-खोल कर बयान करता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (१७७) [रुकू २४ आ. ६]



नहीं देता। इसलिये हज़रत ईसा ईश्वर-पुत्र नहीं, पैग़म्बर थे।

§ खुली हुई दलील या निशानी ऐसी निशानी जिससे सत्य और असत्य में भेद किया जा सके।

५ सूरे मायदा ११२

यह मदीना में उतरी, इसमें १२० आयतें और १६ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। ऐ ईमानवालों ! क़रार पूरा करो। (१) मुसलमानों ! अल्लाह के नाम की चीज़ें हलाल न समझो और न* अदबवाला महीना और चढ़ाये के जानवर जो मक्के को जायँ और न उनको जिनके गलों में पट्टे § बाँध दिये गये हों, न उनको जो इज्ज़तवाले घर को अपने परवरदिगार की रहमत और खुशी ढूँढ़ने जाते हों और जब अहराम † से निकलो तो शिकार करो। कुछ लोगों ने तुमको इज्ज़तवाली मसजिद से रोका था। यह दुश्मनी तुमको ज़्यादती करने का कारण न हो और नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे के मददगार हो। और गुनाह और ज़्यादती में एक दूसरे के मददगार न बनो और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह की सज़ा सख़्त है। (२) मरा हुआ, लोहू और सुअर का मांस और जो खुदा के सिवाय किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो और जो गला घुटने से मर गया और जो चोट से मरा हो और जो ऊपर से गिरकर मरा हो और सींगों से मारा हुआ हो, यह सब चीज़ें तुम पर हराम कर दी गईं और जिसको दाँतवालों ने खाया हो मगर जिसको हलाल कर लो और जो पत्थरों (काबे के आस-पास

---

* अदब वाले महीनों में लड़ाई न करो।

§ एक काफ़िर कुछ ऊँट चुरा ले गया था। मुसलमानों ने देखा कि वह उनके गले में पट्टे डाले हुए काबे की ओर क़ुर्बानी के विचार से लिए जा रहा है। उन्होंने उन ऊँटों को उस दग़ाबाज़ से छीन लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी।

† अहराम—मुसलमान हज्ज (यात्रा) के प्रारम्भ से समाप्ति तक एक कपड़ा पहनते हैं, उसे अहराम कहते हैं। उसके उतार देने के बाद शिकार करना न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।

वाले पत्थर) पर ज़िबह (क़त्ल) किया गया हो, हराम है। पाँसे डालकर बाँटना हराम है, यह पाप का काम है। काफ़िर तुम्हारे दीन की तरफ़ से नाउम्मीद हुए तो उनसे न डरो और हमही से डरो। आज हम तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिये पूरा कर चुके और हमने तुम पर अपना एहसान पूरा कर दिया और हमने तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को पसंद किया फिर जो भूख से व्याकुल हो (और) गुनाह की तरफ़ उसकी चाह न हो तो अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (वह ऊपर हराम की हुई चीज़ें खा सकता है)(३) तुमसे पूछते हैं कि कौन कौन सी चीज़ें उनके लिए हलाल की गई हैं, सो तुम उनको समझा दो कि साफ़ चीज़ें तुम्हारे लिए हलाल हैं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए सिखला रखे हों, उनके शिकार किये हुए जानवर हलाल हैं, जैसा तुमको ख़ुदा ने सिखला रखा है वैसा ही तुमने उनको सिखला दिया है, तो जो तुम्हारे लिए पकड़ रखें तो उसको खा लो, मगर शिकारी जानवर के छोड़ते वक़्त ख़ुदा का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि ख़ुदा दम भर में हिसाब लेगा। (४) आज पाक चीज़ें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गईं और किताबवालों का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है, और मुसलमान ब्याहता बीवियाँ और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है उनमें की ब्याहता बीवियाँ (तुम्हारे लिए) हलाल हैं बशर्ते कि उनके मिहर उनके हवाले करो, और तुम्हारा इरादा क़ैद (निकाह) में लाने का हो न कि मस्ती निकालने का और न चोरी-छिपे आशनाई करने का और जो ईमान को न माने तो उसका किया अकारथ होगा। क़यामत में वह नुक़सान उठानेवालों में होगा। (५) [रुकू १ आयात ५]

मुसलमानों! जब नमाज़ के लिए तैयार हो तो अपने मुँह हाथ कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिर को मल लिया करो, पैरों को गुरवा तक धो लिया करो और अगर नापाक हो तो नहा लिया करो, और अगर बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई

पाख़ाने से आया हो या तुमने स्त्रियों से सुहबत की हो और तुम को पानी न मिल सके तो साफ़ मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम यानी अपने मुँह और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी तरह की कड़ाई करना नहीं चाहता बल्कि तुमको साफ़ सुथरा रखना चाहता है, और यह कि तुम पर अपना एहसान पूरा करे ताकि तुम शुक्र करो। (६) और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो और उसका अहद जो तुम पर ठहराया गया है जब तुमने कहा कि हमने सुना और माना और ख़ुदा से डरते रहो क्योंकि अल्लाह दिलों की बातें जानता है।(७) मुसलमानों! ख़ुदा के वास्ते इंसाफ़ के साथ गवाही देने को तैयार रहो और लोगों की दुश्मनी से इंसाफ़ न छोड़ो इंसाफ़ परहेज़गारी से ज्यादह नज़दीक है और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(८) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, अल्लाह से उनकी अहद है कि उनके लिये बख़शीश और बड़ा बदला है।(९) और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह दोज़ख़ी हैं। (१०) ऐ मुसलमानों! अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो कि जब कुछ लोगों ने (कुरेश जाति ने) तुम पर हाथ फेंकने का इरादा किया था तो ख़ुदा ने तुमसे उनके हाथों को रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें। (११) [रुकू २ आयात ६]

अल्लाह इसराईल के बेटों से वचन ले चुका है और हमने उन्हीं में के बारह सरदार उठाये और अल्लाह ने कहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं अगर तुम नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और हमारे पैग़म्बरों को मानो और उनकी मदद करो और ख़ुशदिली से ख़ुदा को क़र्ज़ देते रहो तो हम ज़रूर तुम्हारे गुनाह तुम से दूर कर देंगे और ज़रूर तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, इसके बाद जो तुममें से फिरेगा तो बेशक वह सीधी राह में भटक गया।(१२) पस उन्हीं लोगों को उनकी अहद तोड़ने के कारण से हमने उनको फटकार

दिया और उनके दिलों को कड़ा कर दिया कि वह बातों को उनके ठिकानों से बदलते हैं और उनको जो शिक्षा दी गई थी उसमें भाग लेना भूल गये और उनमें से चन्द लोगों के सिवाय उन सबकी दग़ा की खबर तुमको होती ही रहती है, तो उन लोगों के गुनाह माफ़ करो और दर-गुज़र करो क्योंकि अल्लाह नेकीवालों को चाहता है। (१३) और जो लोग अपने को ईसाई कहते हैं, हमने उनसे वचन लिया था, तो जो कुछ उनको शिक्षा दी गई थी उससे फ़ायदा उठाना भूल गये। फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा क़यामत के दिन तक के लिये लगा दी और आखिरकार खुदा उनको बदला देगा जो कुछ करते थे। (१४) ऐ किताबवालों! तुम्हारे पास हमारा पैग़म्बर आ चुका है और किताब में से जो कुछ तुम छिपाते रहे हो वह उसमें से बहुत कुछ तुमसे साफ़-साफ़ बयान करता है और बहुतेरी बातों से जान-बूझकर बराता है। अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे पास रोशनी और क़ुरान आ चुका है। (१५) जो खुदा की मरज़ी पर चलते हैं उनको अल्लाह क़ुरान के ज़रिये ठीक राहें दिखलाता है और अपनी कृपा से उनको अँधेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और उनको सीधी राह दिखलाता है। (१६) जो लोग मरियम के बेटे मसीह को खुदा का बेटा कहते हैं, वही काफ़िर हैं। ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से कहो कि अगर अल्लाह मरियम के बेटे मसीह को और उनकी माता को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको मार डालना चाहे तो ऐसा कौन है जो उसकी इच्छा को रोके ? और आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमान और ज़मीन के बीच में है अल्लाह ही का है। जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (१७) और यहूदी व ईसाई दावा करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं। कहो वह तुम्हारे गुनाहों के बदले में तुमको सज़ा ही क्यों दिया करता है बल्कि खुदा ने जो पैदा किये हैं उन्हीं में इन्सान तुम भी हो। खुदा जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे सज़ा दे और आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमान व ज़मीन के बीच में है सब अल्लाह

ही के अख़्तियार में है और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। (१८) ऐ किताबवालों पैग़म्बरों की कमी† पड़े पीछे हमारा पैग़म्बर तुम्हारे पास आया है ताकि तुम न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और डरानेवाला नहीं आया। पस ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और डरानेवाला आ चुका और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है।(१९) [रुकू ३ आ.८]

जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयों! अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो। उसने तुममें पैग़म्बर बनाये और तुमको बादशाह बनाया। और तुमको वह पदार्थ दिये हैं जो दुनिया जहान के लोगों में से किसी को नहीं दिये।(२०) भाइयों! पाक ज़मीन जो ख़ुदा ने तुम्हारे भाग्य में लिख दी है उसमें दाख़िल हो और पीठ न फेरना‡ नहीं तो उलटे घाटे में आ जाओगे। (२१) वह कहने लगे कि ऐ मूसा! उस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त लोग हैं और जब तक वह वहाँ से न निकले हम उसमें पैर न रखेंगे। हाँ उसमें से निकल जावें तो हम ज़रूर दाख़िल होंगे।(२२) डर मानने वालों में से दो आदमी (यूशा और क़ालिब) थे कि उन पर ख़ुदा ने कृपा की। वह बोल उठे उन पर (चढ़ाई करके बैतुल मुक़द्दस के) दरवाज़े में घुस पड़ो और जब दरवाज़े में घुस पड़ो तो बेशक तुम्हारी जीत है और अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो।(२३) वह बोले ऐ मूसा! जब तक उसमें दुश्मन हैं, हम उसमें न जावेंगे। हाँ तुम और तुम्हारे ख़ुदा जाओ और उनसे लड़ो, हम यहीं बैठे हैं।(२४) मूसा ने कहा (कि) ऐ मेरे परवरदिगार! अपनी जान और अपने भाई के सिवाय कोई मेरे बस का नहीं। तू हममें और इन बेहुक्म लोगों में भेद डाल दे। (२५) ख़ुदा ने कहा (कि) वह मुल्क चालीस वर्ष तक इनको न मिलेगा। जंगल में भटकते फिरेंगे तू बेहुक्म लोगों पर अफ़सोस न कर।(२६) [रुकू ४ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को आदम के दो बेटे (हाबील और

---

† मुहम्मद साहब के छः सौ वर्ष पहले से कोई नबी नहीं आया था।

‡ जब काफ़िर से लड़ना पड़े तब न भागना।

काबील) के सच्चे हालात पढ़कर सुनाओ कि जब दोनों ने भेंट†चढ़ाई उनमें से एक (यानी हाबील) की क़बूल हुई और दूसरे (यानी काबील) की क़बूल न हुई। तो काबील कहने लगा मैं तुझको ज़रूर मार डालूँगा उसने जवाब दिया अल्लाह तो सिर्फ़ परहेज़गारों को क़बूल करता है। (२७) अगर मेरे मार डालने के इरादे से तू मुझ पर अपना हाथ चलायेगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए तुझ पर अपना हाथ न चलाऊँगा क्योंकि मैं अल्लाह संसार के पालनेवाले से डरता हूँ। (२८) मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरा और अपना पाप समेट ले और नरकवासियों में हो जावे और ज़ालिमों की यही सज़ा है।(२६) इस पर भी उसके दिल ने उसको अपने भाई के मार डालने पर आमादा किया और आख़िरकार उसको मार डाला और घाटे में आ गया।(३०) इसके पीछे अल्लाह ने एक कौवा भेजा। वह ज़मीन को खोदने लगा ताकि उसको (काबील को) दिखाये कि वह अपने भाई की बदनामी को क्योंकर छिपाये। (चुनाँचे वह कौवे को ज़मीन खोदते देखकर) बोल उठा, हाय ! मैं इस कौवे के बराबर भी बुद्धिमान नहीं हुआ कि भाई की लाश को छिपाता। यह सोचकर वह पछताया !(३१) इस वजह से हमने इसराईल के बेटों को हुक्म दिया कि जो कोई किसी जान के बिना बदले या मुल्की फ़साद के बग़ैर किसी को मार डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को मार डाला और जिसने मरते को बचा लिया तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया और उन (इसराईल के बेटों) के पास हमारे रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आ भी चुके हैं। फिर इसके बाद इनमें से बहुतेरे मुल्क में ज़्यादतियाँ करते फिरते हैं। (३२) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से लड़ते और फ़साद की ग़रज़ से मुल्क में दौड़े फिरते हैं, उनकी सज़ा तो यही है कि मार डाले जायँ या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पाँव उल्टे काट दिये जायँ (यानी सीधा हाथ काटा जाय तो बायाँ पैर काटा जावे या बायाँ हाथ तो

† कहते हैं यह भेंट इसलिए चढ़ाई गई थी कि जिसकी भेंट स्वीकार हो उसके साथ एक सुन्दरी का ब्याह हो।

सीधा पैर) या उनको देश निकाला दिया जाय। यह तो दुनिया में उनकी बदनामी हुई और क़यामत में बड़ी सज़ा है। (३३) मगर जो लोग तुम्हारे क़ाबू में आने से पहले तौबा कर लें तो जाने रहो कि अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (३४) [रुकू ५ आ. ८]

ऐ मुसलमानों ! अल्लाह से डरो और उस तक (पहुँचने) के ज़रिये तलाश करते रहो और उसकी राह में जान लड़ा दो, शायद तुम्हारा भला हो। (३५) जिन लोगों ने इन्कार किया अगर उसके पास वह सब हो जो ज़मीन में है और उतना ही उसके साथ और भी हो ताकि क़यामत के रोज़ सज़ा के बदले में उसको दे निकलें, उनसे क़बूल नहीं किया जायगा और उनके लिए कड़ी सज़ा है। (३६) वे चाहेंगे कि आग से निकल भागें मगर वह वहाँ से नहीं निकलने पायेंगे और उनके लिए हमेशा की सज़ा है। (३७) अगर मर्द चोरी करे तो या औरत चोरी करे तो उनकी करतूत के बदले में दोनो के हाथ काट डालो। सज़ा खुदा से है और अल्लाह ज़बरदस्त जानकार है। (३८) अपने अपराध के पीछे तौबा कर ले और अपने को सम्भाल ले तो अल्लाह उसकी तौबा क़बूल कर लेता है क्योंकि अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (३९) क्या तुझको मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन में अल्लाह ही की हुक़ूमत है, जिसको चाहे सज़ा दे और जिसको चाहे क्षमा करे, अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (४०) (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग इन्कारी की तरफ़ दौड़ते हैं और चन्द ऐसे हैं जो अपने मुँह से तो कह देते हैं कि ईमान लाये और उनके दिल ईमान नहीं लाये और इनके कारण तू उदास न हो। और बाज़ यहूदी हैं जो झूठी बातों को ढूँढ़ते फिरते हैं और दूसरे लोगों के वास्ते जो तुम्हारे पास नहीं आये बातों को ठिकाने कर देते हैं। (और लोगों से) कहते हैं कि अगर तुमको यही (हुक्म) दिया जाय तो उसको मानना और अगर तुमको यह हुक्म न मिले तो मानने से बचना और जिनको अल्लाह विपत्ति में फँसा हुआ रखना चाहे तो उसके लिए खुदा पर तुम्हारा कुछ भी बस नहीं चल सकता। यह वह लोग हैं कि खुदा भी इनके दिलों को पाक करना

नहीं चाहता। इन लोगों की दुनिया में बदनामी है और क़यामत में इनके लिए बड़ी सख्त सज़ा है।(४१) झूठी बातों को ढूंढ़ते फिरते हैं, हराम का खाते हैं, तो यह तुम्हारे पास आवें तो तुम इनमें फ़ैसला करो या इनसे अलाहिदा हो, और अगर तुम इनसे अलग रहोगे तो वे तुमको किसी तरह का भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर फ़ैसला करो तो इनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करना, क्योंकि अल्लाह इन्साफ़ करनेवालों को मित्र रखता है। (४२) और यह लोग क्यों तुम्हारे पास झगड़े तै करने को लाते हैं जब कि खुद इनके पास तौरात है, उसमें खुदा की आज्ञा है, फिर इसके बाद वह उससे फिर जाते हैं और वे अपनी किताब पर भी ईमान नहीं रखते।(४३) [रुकू ६ आयात ६]

हमने तौरात उतारी जिसमें इल्म और रोशनी है। हुक्म मानने वाले पैग़म्बर उसी के मुताबिक़ यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियों के पुजारी और क़ाबिल (लोग) भी उसी के मुताबिक़ यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियों के पुजारी और क़ाबिल भी उसी के मुताबिक़ हुक्म देते थे क्योंकि वह सब अल्लाह की किताब के रक्षक और गवाह ठहराये गये थे। पस ऐ यहूदियों! तुम आदमियों से न डरो और हमारा ही डर मानो, हमारी आयतों के बदले में नाचीज़ फ़ायदे मत लो, और जो खुदा की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दें तो यही लोग काफ़िर हैं।(४४) और हमने तौरात में यहूद को तहरीरी हुक्म दियाथा कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और सब जख्मों का बदला इसी तरह बराबर है, फिर जो बदला क्षमा कर दे तो वह उसका कफ्फ़ारा होगा और जो खुदा की उतारी हुई के मुताबिक़ हुक्म न दे तो वही लोग बेइन्साफ़ हैं। (४५) बाद को इन्हीं के पैरों पर हमने मरियम के बेटे ईसा को चलाया। वह तौरात की जो उनके पहले से थी तसदीक़ करते थे और उनको हमने इन्जील दी जिसमें (समझ और रोशनी है) और तौरात जो उसके पहले से थी उसकी तसदीक़ भी करती है और परहेज़गारों के लिए नसीहत है। (४६)

और इन्जील वालों को चाहिए कि जो ख़ुदा ने उसमें (हुक्म) उतारे हैं उसी के मुताबिक़ हुकम दिया करें और जो ख़ुदा के उतारे हुए के मुताबिक़ हुकम न दे तो यही लोग बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं। (४७) और हमने तुम्हारी तरफ़ सच्ची किताब उतारी कि जो किताबें इसके पहले से हैं और उनकी हिफ़ाजत करती हैं, तो जो कुछ ख़ुदा ने उतारा है तुम उसी के मुताबिक़ इन लोगों में हुक्म दो और जो कुछ बात सच्ची तुमको पहुँची है उसे छोड़कर इनकी ख्वाहिशों की पैरवी मत करो। हमने तुममें से हरएक के लिए एक शरीयत (नीति) और तरीक़ा दिया और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही दीन पर कर देता। लेकिन यह चाहा गया है कि जो हुक्म दिये हैं उनमें तुमको आज़माया, सो तुम नेक कामों की तरफ़ चलो। तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ लौटकर जाना है। तो जिन-जिन बातों में तुम लोग भेद करते रहे हो वह तुमको बता देगा। (४८) (ऐ पैग़म्बर !) जो किताब ख़ुदा ने उतारी है उसीके मुताबिक़ इन लोगों को हुक्म दो और उनकी इच्छाओं की पैरवी न करो, और इन (यहूदियों) से डरते रहो कि जो ख़ुदा ने तुम्हारी तरफ़ उतारी है उसके किसी हुक्म से यह लोग कहीं तुमको भटका न दें, फिर अगर न मानें तो जाने रहो कि ख़ुदा ने इनके बाज़ गुनाहों के कारण इनको सज़ा पहुँचाना चाही है और लोगों में बहुत-से बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं (४९) क्या मूर्खता की आज्ञा चाहते हैं और जो लोग यक़ीन करने-वाले हैं उनके लिए अल्लाह से बेहतर आज्ञा देने वाला कौन हो सकता है। (५०) [रुकू ७ आयात ७]

मुसलमानों ! यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ। यह एक दूसरे के मित्र हैं और तुममें से कोई इनको दोस्त बनायेगा तो बेशक वह इन्हीं में का है, क्योंकि ख़ुदा ज़ालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया; करता। (५१) तो जिन लोगों के दिलों में (फूट का) रोग है तुम उनको देखोगे कि यहूदियों में कहते फिरते हैं कि हमको तो इस बात का डर लग रहा है कि हम पर आफ़त न आ जावे। सो

कोई दिन जाता है कि अल्लाह जीत या कोई हुक्म अपनी तरफ़ से भेजेगा तो उस पर जो अपने दिलों में छिपाये थे हैरान होंगे। (५२) और मुसलमान कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं जो बड़े ज़ोर से अल्लाह की क़सम खाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। इनका सब किया अकारथ हुआ और नुक़सान में आ गये।(५३) मुसलमानों! तुममें से कोई अपने दीन से फिर जाय तो खुदा ऐसे लोग (ला) मौजूद करेगा जिनको वह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे, मुसलमानों के साथ नरम काफ़िरों के साथ कड़े होंगे। अल्लाह की राह में अपनी जानें लड़ावेंगे और किसी की मलामत का डर नहीं रखेंगे। यह खुदा की दया है जिसको चाहे दे, और अल्लाह बहुत जानने वाला है।(५४) बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैग़म्बर और मुसलमान जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और झुके रहते हैं।(५५) और जो अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बर और मुसलमानों का दोस्त होकर रहेगा तो अल्लाहवालों ही की जय है। (५६) [रुकू ८ आयात ६]

मुसलमानों! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल बना रखा है यानी जिनको तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है, और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ और अगर तुम यक़ीन रखते हो तो खुदा से डरते रहो। (५७) और जब तुम नमाज़ के लिए (बाँग देकर) बुलाते हो तो यह लोग नमाज़ को हँसी और खेल बनाते हैं, यह इसलिये कि यह लोग नासमझ हैं। (५८) कहो कि ऐ किताब-वालों (यहूद)! क्या तुम हमसे इसीलिए दुश्मनी रखते हो कि हम अल्लाह पर और जो हमारी तरफ़ उतरी है उस पर और जो पहले उतर चुकी हैं उस पर ईमान ले आये हैं और यह कि तुममें के अक्सर बेहुक्म हैं? (५९) कहो कि मैं तुमको बताऊँ जो खुदा के नज़दीक बुरे बदले के लायक़ हैं, वह जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना कोप उतारा और किसी को बन्दर और सुअर बना दिया था, जो शैतान को पूजने लगे, तो यह लोग दर्जे में हमसे कहीं खराब ठहरे

और सीधी राह से बहुत भटक गये। (६०) जब तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाये हालाँकि इन्कारी ही को साथ लेकर आये थे और इन्कारी को साथ लिये चले गये और जो छिपाये हुए थे अल्लाह उसको ख़ूब जानता है।(६१) और तुम इनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह की बात और ज़ुल्म और हराम का माल खाने पर गिरे पड़ते हैं। क्या बुरे काम हैं जो वे करते हैं।(६२) इनके पुजारी और पंडित इनको झूठ बोलने और हराम का माल खाने से क्यों नहीं मना करते ? क्या बुरे काम हैं जो वह कर रहे हैं। (६३) और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा का हाथ † तंग है। इन्हीं के हाथ तंग हो जायँ और इनके कहने पर इनको लानत है। बल्कि ख़ुदा के दोनो हाथ फैले हुए हैं जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है, और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है ज़रूर उनमें से बहुतेरों की नटखटी और इन्कारी के ज़ियादा होने का सबब होगा और हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा क़यामत तक डाल दी है। जब-जब लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसको बुझा देता है और मुल्क में फ़साद फैलाते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता। (६४) अगर किताबवाले ईमान लाते और डरते तो हम इनसे इनके अपराध ज़रूर उतार देते और इनको पदार्थों के बाग़ों में भी ज़रूर दाख़िल करते। (६५) अगर यह तौरात और इञ्जील और उनको जो उन पर इनके परवरदिगार की तरफ़ से उतरी हैं क़ायम रखते तो ज़रूर उन पर ख़ुदा की नियामतें वर्षा के समान बरसतीं कि ऊपर से और पाँव के तले (ज़मीन पर गिरी) से खाते। इनमें से कुछ लोग सीधे हैं और इनमें

अक्सर तो बहुत ही बुरा कर रहे हैं (६६) [रुकू ९ आयात १०]

ऐ पैग़म्बर ! जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से उतरा है

---

† यहूदी जब धनवान होते तो ख़ुदा को फ़क़ीर कहते थे और जब फ़क़ीर हो जाते तो कहते ख़ुदा बड़ा कंजूस है, उसने अपनी दया का हाथ इसीलिये रोक लिया है। उस पर यह आयत उतरी कि ख़ुदा के दोनो हाथ खुले हैं। वह जब चाहे और जिसको जितना चाहे उतना दे, उसको कोई रोक नहीं सकता।

पहुँचा दो और अगर तुमने न किया तो तुमने ख़ुदा का पैग़ाम नहीं पहुँचाया और अल्लाह तुमको लोगों से बचायेगा क्योंकि अल्लाह उनको जो काफ़िर हैं रास्ता नहीं दिखायेगा।(६७) कहो कि ऐ किताबवालों जब तक तुम तौरात और इञ्जील और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर उतरी हैं उन्हें न मानो, तब तक तुम राह पर नहीं हो। और जो तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (क़ुरान) उतरी है उनमें से बहुतेरों की सरकशी और इन्कारी को ही बढ़ायेगा, ‡ सो तू काफ़िर पर अफ़सोस न कर।(६८) इसमें कुछ सन्देह नहीं जो मुसलमान हैं और यहूदी हैं और साबी और ईसाई हैं, जो कोई अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये और नेक काम करें तो ऐसे लोगों पर न भय होगा और न वह उदास रहेंगे। (६९) हम याक़ूब के बेटों से अहद करा चुके हैं और हमने इनकी तरफ़ बहुत पैग़म्बर भी भेजे, जब कभी कोई पैग़म्बर इनके पास ऐसा हुक्म लेकर आया जिनको उनके दिल नहीं चाहते थे तो बहुतों ने झुठलाया और बाज़ ने कितनों को क़त्ल किया। (७०) और समझे कोई विपत्ति नहीं आयेगी सो अंधे और बहरे हो गये, फिर ख़ुदा ने उनकी तौबा क़बूल कर ली फिर भी इनमें से बहुतेरे अन्धे और बहरे बने रहे, और जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह देख रहा है।(७१) जो लोग कहते हैं कि ख़ुदा तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफ़िर हो गये और मसीह समझाया करते थे कि ऐ याक़ूब के बेटों! अल्लाह की इबादत करो कि वह मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, और शक नहीं कि जिसने अल्लाह का साझी ठहराया स्वर्ग उस पर हराम हो चुका, और उसका ठिकाना नरक है और ज़ालिमों का कोई भी सहायक नहीं। (७२) जो लोग कहते हैं ख़ुदा तो इन्हीं तीन में का एक है बेशक काफ़िर हो गये, हालाँकि एक ख़ुदा के अलावा और कोई पूजित नहीं और जैसी-जैसी बातें यह लोग कहते हैं अगर उनसे बाज़ नहीं आयेंगे तो जो लोग इनमें से काफ़िर हैं इन पर कड़ी सज़ा होगी।(७३) वह क्यों नहीं ख़ुदा के आगे तौबा करके गुनाह माफ़ कराते हालाँकि अल्लाह माफ़ करने

‡ यानी क़ुरान को सुनकर काफ़िर और ज़िद पकड़ेंगे।

वाला मेहरबान है ।(७४) मरियम के बेटे मसीह तो सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं, इनसे पहले पैग़म्बर हो चुके हैं और इनकी माता सच्ची थीं । दोनों खाना खाते थे, देखो तो सही, हम दलीलें किस तरह खोल-खोलकर इन लोगों से बयान करते हैं, फिर देखो कि यह लोग किधर उलटे भटकते चले जा रहे हैं ।(७५) कहो क्या तुम ख़ुदा के सिवाय ऐसी चीज़ों की पूजा करते हो जो तुम्हें फ़ायदा नुक़सान नहीं पहुँचा सकतीं और अल्लाह सुनता और जानता है ।(७६) कहो कि ऐ किताबवालों ! अपने दीन में नाहक़ ज्यादती मत करो और न उन लोगों की ख़्वाहिश पर चलो जो पहले भटक चुके हैं और बहुतेरों को भटका चुके हैं और आप सीधी राह से भटक गये हैं, (७७) [रुकू १० आयात ११]

याक़ूब के बेटों में से जिन लोगों ने इन्कारी की उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की तरफ़ से फटकार पड़ी । यह इससे कि वे गुनहगार थे और हद से बढ़ गये थे ।(७८) जो बुरा काम कर बैठते थे उससे बाज़ न आते थे, अलबत्ता बुरे काम थे जो किया करते थे ।(७९) तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं । उन्होंने अपने लिए बुरी तैयारी भेजी है कि ख़ुदा उनसे नाराज़ हुआ और वह हमेशा सज़ा में रहेंगे ।(८०) और अगर अल्लाह पर और पैग़म्बर पर और जो किताब उन पर उतरी उस पर ईमान रखते होते तो काफ़िरों को मित्र न बनाते, लेकिन इनमें से बहुतेरे बेहुक्म हैं ।(८१) मुसलमानों के साथ दुश्मनी के बारे में यहूदियों को और मुशरिकीन को तुम सब लोगों में बड़ा सख़्त पाओगे और मुसलमानों के साथ दोस्ती के बारे में सब लोगों में उनको नज़दीक पायेगा जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं । यह इस सबब से है कि इनमें पादरी और पण्डित हैं और यह लोग घमण्ड नहीं करते । (८२)

——)※(——

सातवाँ पारा (इज़ासमिऊ)

और (जो कुछ) पैग़म्बर पर उतरा है (उसे) सुनते हैं तो तू उसकी आँखों को देखता है कि उनसे आँसू जारी हैं † इसलिए कि उन्होंने सच बात को पहचान लिया है। कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम तो ईमान ले आये। तू हमको गवाहों में लिख। (८३) और हमको क्या हुआ है कि हम अल्लाह को न मानें और सच्ची बात जो हमारे पास आई है उस पर विश्वास न करें। हमें उम्मीद है कि परवरदिगार की निगाह में हम अच्छे समझे जायँगे।(८४) तो इनकी इस बात के बदले में ख़ुदा ने इनको ऐसे बाग़ दिये जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। वे उनमें सदैव रहेंगे। भलाई करनेवालों का यही बदला है।(८५) और जिन लोगों ने न माना और हमारी आयतों को झुठलाया यही नरकवासी हैं। (८६) [रुकू ११, आयात ६]

मुसलमानों ! ख़ुदा ने जो साफ़ चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी हैं उनको हराम मत करो और हद से न बढ़ो क्योंकि अल्लाह हद से बढ़नेवालों को नहीं चाहता।(८७) ख़ुदा ने जो तुमको सुथरी हलाल चीज़ें दी हैं उनको खाओ जिस ख़ुदा पर तुम्हारा ईमान है उससे डरते रहो।(८८) तुम्हारी बेफ़ायदा क़समों पर ख़ुदा नहीं पकड़ेगा, हाँ पक्की क़सम खा लो तो ख़ुदा पकड़ेगा, तो इस पाप की शांति के लिए दस भूखों को मामूली भोजन खिला देना है जैसा अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े बनवा देना है या एक ग़ुलाम छोड़ देना है। फिर जिनको ताक़त न हो तो तीन दिन के रोज़े रखें। यह तुम्हारी क़समों की शांति(कफ़्फ़ारा) है जबकि तुम क़सम खा चुके हो और अपनी क़समों को रोके रहो। इस तरह अल्लाह अपना हुक्म तुमको सुनाता है शायद तुम एहसान मानो।(८९) मुसलमानों ! शराब और जुआ और बुत और पाँसे यह गन्दे शैतानी काम हैं। इनसे बचो, शायद इससे तुम्हारा भला हो।(९०) शैतान तो यही चाहता

---

† यह उन ईसाइयों का हाल है, जो सच्चे और दीनदार हैं और हक़ को छिपाना नहीं चाहते, जैसे हब्श का बादशाह नज्जाशी था।

है कि शराब और जुए के कारण तुम्हारे आपस में दुश्मनी और ईर्षा डलवा दे और तुमको ख़ुदा की याद से और नमाज़ से रोके, तो क्या तुम रुकना चाहते हो ?(९१) और अल्लाह का और पैग़म्बर का हुक्म मानो और बचते रहो, इस पर अगर तुम फिर बैठोगे तो जाने रहो कि हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ कह देना था। (९२) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो कुछ खा-पी चुके उसमें उन पर गुनाह नहीं रहा जबकि उन्होंने हराम चीज़ों से परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम करने लगे और अल्लाह अच्छे काम करनेवालों को चाहता है।(९३)[रुकू १२ आ. ७]

मुसलमानों ! एक ज़रा से शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुँच सकें (एहराम की हालत में) ख़ुदा ज़रूर तुम्हारी जाँच करेगा ताकि अल्लाह मालूम करे कि कौन अनदेखे से डरता है, फिर इससे बाद जो ज़्यादती करे तो उसको दुखदाई सज़ा है। (९४) मुसलमानों ! जबकि तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार मत मारो और जो कोई तुममें से जान-बूझकर शिकार मारेगा तो जैसे जानवर को मारा है उसके बदले में वैसा ही पशु जो तुममें के दो मुन्सिफ़ (न्यायी) ठहरा दें देना पड़ेगा और भेंटें काबे में भेजना या उसके बदले में भूखों को खिलाना या उसके बराबर रोज़े रखना ताकि अपने किये का फल भोगें। जो हो चुका उसे ख़ुदा ने माफ़ किया और करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेनेवाला है। (९५) दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीज़ तुम्हारे लिए हलाल की जाती है ताकि तुमको और मुसाफ़िरों को लाभ पहुँचे, और जंगल का शिकार जब तक एहराम में रहो तुम पर हराम है,और अल्लाह से डरते रहो जिसके पास जाना है।(९६) ख़ुदा ने काबे को जो कि ख़ास जगह है लोगों की रक्षा के लिए क़ायम किया है और पाक महीनों को और क़ुरबानी को और जो ज़ेवर वग़ैरह उनके गले में लटक रहे हैं ठहराया है। यह इसलिए कि तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह जानता है और यह कि अल्लाह हर चीज़ से जानकार

है।(६७) जाने रहो कि अल्लाह सज़ा देने में कठोर है और यह भी कि अल्लाह क्षमा करनेवाला रहीम है। (६८) पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ़ पहुँचा देना है और जो तुम लोग ज़ाहिर में करते और जो छिपा कर करते हो, अल्लाह सब कुछ जानता है। (६६) कहो कि पाक और नापाक बराबर नहीं हो सकतीं, अगर्चे नापाक की ज़्यादती तुम को अच्छी लगे तो हे बुद्धिमानों! ख़ुदा से डरते हो, शायद तुम्हारा भला हो। (१००) [रुकू १३ आयात ७]

मुसलमानों! ऐसी बातें न पूछा करो कि जो अगर तुम पर ज़ाहिर कर दी जायँ तो तुमको बुरी लगें और ऐसे वक़्त में जबकि क़ुरान उतर रहा है उन बातों की हक़ीक़त पूछोगे तो तुम पर ज़ाहिर भी कर दी जायगी। अल्लाह ने इन बातों को माफ़ किया और अल्लाह माफ़ करने वाला सहन करनेवाला है। (१०१) तुमसे पहले भी लोगों ने ऐसी ही बातें पूछी थीं फिर जानने पर उनसे (पैग़म्बरों से) इनकार करने लगे। (१०२) ख़ुदा ने न बाहीरा (कनकटी ऊँटनी) और न साइबा (ऊँटनी जो साँड की तरह छोड़ी जाती थी) और न वसीला (वह ऊँटनी जिसके पहलौटी के दो बच्चे मादा हों) और न हाम (ऊँट जिसकी नस्ल से कई बच्चे हो गये हों) इनके बारे में ख़ुदा ने कुछ नहीं † ठहराया, बल्कि काफ़िरों ने ख़ुदा पर लफंट बाँधा है और इनमें बहुतेरे बेसमझ हैं (१०३) जब इनसे कहा जाता है जो अल्लाह ने क़ुरान उतारा है उसकी ओर पैग़म्बर की तरफ़ चलो तो कहते हैं कि जिस पर हमने अपने बाप-दादों को पाया है, हमारे लिए काफ़ी है। भला अगर जो इनके बाप कुछ न जानते और सीधी राह पर न रहे हों तो भी (क्या उन्हीं की राह चलेंगे) ?(१०४) मुसलमानों! तुम अपनी जानों की ख़बर रखो। जब तुम सीधी राह पर हो तो कोई भी गुमराह तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। तुम सबको अल्लाह की तरफ़

† काफ़िर इन चीज़ों को ख़ुदा की ख़ुशी का सामान समझते थे। मुसलमानों को बताया गया कि ये बातें ये मनमानी करते हैं। ख़ुदा ने उनको ऐसा करने का हुक्म कभी नहीं दिया।

लौटकर जाना है तो जो कुछ करते रहे हो तुमको बतायेगा। (१०५) मुसलमानों! जब तुममें से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो तो वसीयत करते वक़्त तुममें के दो विश्वासी गवाह हों या अगर तुम कहीं का सफ़र करो और मौत आ जाय तो ग़ैर मज़हब ही के दो (गवाह) हों, अगर तुमको सन्देह हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो। फिर वह दोनो अल्लाह की क़समें खायँ कि हम माल(रिश्वत) के लालच से क़सम नहीं खाते अगर्चे वह शख़्स रिश्तेदार ही क्यों न हों और हम ख़ुदा की गवाही को नहीं छिपाते और अगर ऐसा करें तो हम बेशक गुनहगार हैं। (१०६) फिर अगर मालूम हो जाय कि वह दोनो सच को छिपा गये तो इनकी जगह दो उन लोगों में से खड़े हों जिन्होंने इनको झूठा ठहराया हो। उनमें से जो नज़दीकी हों फिर वह अल्लाह की क़समें खायँ कि पहले दो गवाहों की गवाही से हमारी गवाही ज्यादा सच्ची है और हमने ज्यादती नहीं की, ऐसा किया हो तो हम बेशक ज़ालिम हैं।(१०७) इस तरह की क़सम से यह बात सोचने के लायक़ है कि लोग जैसी की तैसी गवाही दें या डरें कि हमारी क़सम उनकी क़सम के बाद उल्टी पड़ेगी और अल्लाह से डरते रहो और सुनलो अल्लाह हुक्म न माननेवालों को राह नहीं बतलाता।(१०८)[रुकू१४आ.८]

जब कि अल्लाह पैग़म्बरों को इकट्ठा करके पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला, वह कहेंगे कि हमको कुछ मालूम नहीं, छिपी (ग़ैब की) बातें तो तू ही ख़ूब जानता है।(१०९) उस दिन अल्लाह कहेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! हमने तुझ पर और तुम्हारी माता पर जो-जो एहसान किये हैं याद करो, जबकि हमने पाक रूह से तुम्हारी सहायता की, गोद में और बड़े होकर भी तुम लोगों से बातचीत करते थे, और जबकि हमने तुमको किताब और बुद्धिमानी और तौरात और इन्जील सिखलाई और जबकि तुम हमारे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूंक मार देते तो वह हमारे हुक्म से पक्षी बन जाता और जबकि तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को हमारे हुक्म से चंगा कर देते और जबकि तुम हमारे हुक्म से मुर्दों को निकाल खड़ा करते

और जबकि हमने याक़ूब के बेटों (बनी इसराईल) को (तुम्हारे मार डालने से) रोका कि जिस वक़्त तुमने उनको निशानी दिखलाई तो उनमें से जो तुम्हारा इत्मीनान नहीं करते थे, कहने लगे कि यह तो सिर्फ़ खुला जादू है।(११०) और जब हमने हवारियों * के दिल में डाला कि हम पर और हमारे पैग़म्बर पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा हम ईमान लाये और तू इस बात का गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं (१११) जब हवारियों ने दरख्वास्त की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! क्या तुम्हारे पालनकर्त्ता से हो सकेगा कि हम पर आसमान से एक थाल उतारे। कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो ख़ुदा से डरो।(११२) वह बोले हम चाहते हैं कि उसमें से कुछ खायँ और हमारे दिलों में इत्मीनान हो जाय और हम मालूम कर लें कि तूने हमसे सच कहा और हम इसके गवाह हैं।(११३) ईसा मरियम के बेटे ने कहा कि ऐ अल्लाह हमारे परवरदिगार! हम पर आसमान से एक थाल उतार, थाल हमारे लिए यानी हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद † क़रार पाये और तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमको रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देनेवालों में से अच्छा है। (११४) अल्लाह ने कहा बेशक हम यह थाल तुम लोगों पर उतारेंगे। तो जो शख्स फिर भी तुममें से इनकार करता रहेगा तो हम उसको ऐसी सख्त सज़ा देंगे कि दुनिया जहान में किसी को भी ऐसी नहीं दी होगी। (११५) [रुकू १५ आ.७]

उस दिन अल्लाह पूछेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! क्या तुमने लोगों से यह बात कही थी कि ख़ुदा के अलावा मुझको और मेरी माता को दो ख़ुदा मानो? बोला कि तेरी ज़ात पाक है, मुझसे क्योंकर हो सकता है कि मैं ऐसी बात कहूँ जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नहीं। अगर मैं ऐसा कहता तो तुझे ज़रूर ही मालूम होता। तू मेरे दिल की बात जानता है और मैं तेरे दिल की बात नहीं जानता।

* हवारी—ईसा के साथी।

† कहा जाता है कि यह थाल इतवार के दिन उतरा था। ईसाई इसीलिये इस दिन बड़ी ख़ुशी मनाते हैं।

ग़ैब (छिपी) की बातें तो तू ही खूब जानता है। (११६) तूने जो मुझको आज्ञा दी थी, बस वही मैंने इनको कह सुनाया था कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है उसी की पूजा करो, और जब तक मैं इन लोगों में रहा मैं इनका निगहबान रहा फिर जब तूने मुझको उठा लिया तो तू ही इनका निगहबान हो गया और तू सब चीज़ों का साक्षी (गवाह) है। (११७) अगर तू इनको सज़ा दे तो यह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इनको माफ़ करे तो निस्सन्देह तू ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (११८) अल्लाह ने कहा कि यह वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सच्चाई काम आयेगी, उनके लिए बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा वह रहेंगे। अल्लाह उनसे खुश और वह अल्लाह से खुश, वही बड़ी कामयाबी है। (११९) आसमान और ज़मीन और जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, सब पर अल्लाह ही का अधिकार है और वह सब चीज़ों पर ताक़तवर है। (१२०) [रुकू १६ आयात ५]

——:०:——

६ सूरे अनआम ५५

यह मक्का में उतरी, इसमें १६५ आयतें और २० रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही को है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अँधेरा और उजेला बनाया। इस पर भी काफ़िर अपने परवरदिगार का शरीक ठहराते हैं। (१) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक (मियाद) ठहरा दी और एक मुक़र्रर वक़्त उसके पास है, फिर भी तुम सन्देह करते रहो। (२) और आसमानों में और ज़मीन में वही अल्लाह है जो कुछ तुम छिपाकर और जो ज़ाहिरा करते हो वह उसको मालूम है और जो कुछ तुम कमाते हो उसे मालूम है।(३) और तेरे परवरदिगार की निशानियों में से

कोई निशानी उनके पास नहीं पहुँचती। लेकिन वह उनसे मुँह फेरते हैं।(४) जब सच इनके पास आया उसको भी झुठला दिया, तो यह लोग जिस चीज़ (क़यामत) की हँसी उड़ा रहे हैं उसकी हक़ीक़त इनको आगे चलकर मालूम हो जायगी।(५) क्या इन लोगों ने नज़र नहीं की ? हमने इनसे पहले कितनी उम्मतों (गरोहों) का नाश कर दिया जिनकी हमने मुल्क में ऐसी जड़ बाँध दी थी कि तुम्हारी ऐसी जड़ नहीं बाँधी और हमने उन पर ख़ूब मेह बरसाया और उसके नीचे से नहरें जारी कर दीं। फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उनका नाश करा दिया और उनके पीछे और दूसरी उम्मतें (संगतें) निकाल खड़ी कीं। (६) अगर हम काग़ज़ पर किताब तुम पर उतारते और यह लोग उसको अपने हाथों से छू भी लेते, टटोलते, तो भी काफ़िर कहेंगे कि यह ज़ाहिरा जादू है। (७) कहते हैं कि इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरा और अगर फ़रिश्ते को भेजते तो झगड़ा ही चुक गया था, फिर उनको मुहलत न मिलती।(८) और अगर फ़रिश्ते को पैग़म्बर बनाते तो उसको भी आदमी (की सूरत में) ही बनाकर भेजते। और हम उन पर वही शक डालते, जो शक यह डाल रहे हैं। (९) और तुमसे पहले भी पैग़म्बर की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो जिन लोगों ने पैग़म्बरों से हँसी की, वह उल्टी उन्हीं पर पड़ी। (१०) [रुकू १ आयात १०]

कहो कि देश में चलो-फिरो, फिर देखो झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (११) पूछो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है किसका है ? कह दो कि अल्लाह का है, उसने ख़ुद ही लोगों पर मेहरबानी करने को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है, वह क़यामत के दिन तक जिसके आने में कोई भी शक नहीं, तुम लोगों को ज़रूर जमा करेगा। जो अपनी जानों का नुक़सान कर रहे हैं वही ईमान नहीं लाते। (१२) और उसी का है जो कुछ रात और दिन में बसता है और वह सुनता और जानता है। (१३) पूछो कि ख़ुदा जो आसमान और ज़मीन का पैदा करनेवाला है, क्या उसके सिवाय काम सम्भालने

वाला बनाऊँ और वह रोज़ी देता है और कोई उनको रोज़ी नहीं देता। कह दो मुझको तो यह हुक्म मिला है कि सबसे पहले मैं मुसलमान बनूँ और मुशरिकों (खुदा का साझी बनानेवालों) में न हूँ। (१४) कहो कि अगर मैं अपने परवरदिगार का हुक्म न मानूँ तो मुझको क़यामत के दिन की सख्त सज़ा से डर लगता है। (१५) उस दिन जिससे सज़ा टल गई तो उस पर खुदा ने मेहरबानी की और यह बड़ी कामयाबी है। (१६) अगर अल्लाह तुझको तकलीफें पहुँचाये तो उसके सिवा कोई उसको दूर करनेवाला नहीं और अगर तुझको भलाई पहुँचाये तो वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१७) और वह अपने बन्दों पर अधिकारी है और वही हिकमतवाला खबरदार है। (१८) पूछो कि गवाही किस चीज़ की बड़ी है? कह दो कि खुदा जो मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है और वह क़ुरान मेरी तरफ़ इसीलिये खुदाई पैग़ाम है कि इसके ज़रिये से तुमको और जिसे पहुँचे डराऊँ। क्या तुम पक्के बनकर इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूजित भी हैं? कहो कि मैं तो गवाही नहीं देता। तुम इन लोगों से कहो कि वह तो सिर्फ़ एक पूजित है और जिन चीज़ों को तुम खुदा का शरीक बनाते हो मैं उनको नहीं मानता। (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जैसा अपने बेटों को पहचानते हों वैसा ही इस (मोहम्मद) को भी पहचानते हैं। जिन्होंने अपनी जानों को जोखों में डाला वही ईमान नहीं लाते। (२०) [रुकू २ आ. १०]

जो शख्स खुदा पर झूठा लफंट बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है। ज़ालिमों को किसी तरह छुटकारा नहीं होगा। (२१) और (एक दिन होगा) जबकि हम इन सबको इकट्ठा करेंगे, फिर उन लोगों से जो शरीक ठहराते थे पूछेंगे कि कहाँ हैं तुम्हारे वह शरीक जिनका तुम दावा करते थे? (२२) फिर इनको कुछ उज्र न रहेगा। मगर यों कहेंगे कि हमको खुदा परवरदिगार की क़सम हम मुशरिक ही न थे। (२३) देखो किस तरह अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और इनकी झूठी बातें इनसे गई गुज़री

हो गईं। (२४) इनमें से ऐसे भी हैं कि तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं और उनके दिलों पर हमने पर्दे डाल दिये। इनके कानों में बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें और अगर यह सब करामात भी देख लें तो भी ईमान लानेवाले न हों, यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुमसे झगड़े हुए आते हैं तो काफ़िर बोल उठते हैं कि क़ुरान तो सिर्फ़ अगलों की कहानियाँ हैं। (२५) यह लोग क़ुरान से दूसरे को मना करते और उससे भागते हैं और अपनी जानों को ही मारते हैं और नहीं समझते। (२६) और जब आग (दोज़ख़) के सामने खड़े किये जायँगे तो उसकी कैफ़ियत देखकर कहेंगे कि अगर ख़ुदा की मेहरबानी से हम फिर दुनिया में भेजे जायँ तो अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाएँ और ईमानवालों में से हों। (२७) बल्कि जिसको पहले छिपाते थे उनके आगे आई और अगर (दुनिया में) वापस भेज दिये जायँ तो जिस चीज़ से इनको मना किया गया है उसको फिर दुबारा करेंगे और यह झूठे हैं। (२८) और कहते हैं कि जो हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है इसके अलावा और किसी तरह की ज़िन्दगी नहीं। और मेरे पीछे फिर जी उठनेवाले नहीं। (२९) अगर तू देखे जबकि वह लोग अपने परवरदिगार के सामने लाकर खड़े किये जायँगे तो पूछेगा क्या यह सच न था? कहेंगे अपने परवरदिगार की क़सम ज़रूर सच था। वह कहेगा कि अपने इन्कारी की सज़ा चखो। (३०) [रुकू ३ आयात १०]

जिन लोगों ने अल्लाह के सामने होने को झूठा जाना बेशक वह लोग घाटे में रहे, यहाँ तक कि जब एकदम क़यामत इन पर आ मौजूद होगी तो चिल्ला उठेंगे कि अफ़सोस! हमने दुनिया में गुनाह किया और अपने बोझ अपनी पीठ पर लादे होंगे। देखो तो बुरा है जिसको यह लोग लादे होंगे। (३१) दुनिया की ज़िन्दगी तो निरा खेल और तमाशा है और कुछ शक नहीं जो लोग परहेज़गार हैं उनके लिए आख़िरत† का घर कहीं अच्छा है। क्या तुम लोग नहीं

† दूसरी दुनिया जो क़यामत के बाद होगी।

समझते।(३२) हम इस बात को जानते हैं कि यह लोग जैसी-जैसी बातें कहते हैं, बेशक तुमको रंज होता है। पस यह तुमको नहीं झुठलाते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (३३) तुमसे पहले भी पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं। तो उन्होंने लोगों के झुठलाने पर और उनको नुक़सान पहुँचाने पर सब्र किया। यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आ पहुँची और कोई खुदा की बातों का बदलनेवाला नहीं और पैग़म्बरों की खबरें तुमको पहुँच चुकी हैं। (३४) और अगर इनकी सरकशी तुमको बुरी लगती है और तुमसे हो सके कि ज़मीन के अन्दर सुरंग लगाओ या आसमान में कोई सीढ़ी और कोई निशानी इनको लाकर दिखाओ, और अल्लाह को मंज़ूर होता तो इनको सीधे रास्ते पर राज़ी कर देता तो देखो तुम कहीं मूर्खों में न हो जाना।(३५) वही मानते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को खुदा जिला उठायेगा फिर उसी की तरफ़ जायँगे। (३६) कहते हैं कि इसके परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशान क्यों नहीं उतरा ? कहो कि अल्लाह निशान के उतारने में शक्तिमान है। मगर इनमें के अक्सर बेसमझ हैं।(३७) क्या कोई रेंगने वाला जानवर और दो परों से उड़नेवाला पक्षी ज़मीन में नहीं है कि तुम आदमियों की तरह अपनी जमातें रखता हो। कोई चीज़ नहीं जिसे हमने किताब में न लिखा हो। फिर अपने परवरदिगार के सामने जायँगे। (३८) जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं अन्धेरे में गूँगे और बहरे हैं, खुदा जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर लगा दे।(३९) पूछो कि भला देखो तो सही अगर खुदा की सज़ा तुम्हारे सामने आ मौजूद हो या क़यामत तुम्हारे सामने आ खड़ी हो तो क्या खुदा के सिवाय दूसरे को पुकारने लगोगे अगर तुम सच्चे हो। (४०) (दूसरे को तो नहीं) बल्कि उसी (एक खुदा) को पुकारोगे। तो जिसके लिए पुकारोगे अगर उसकी मर्ज़ी में आयेगा तो उसको दूर कर देगा और जिनको तुम शरीक बनाते हो भूल जाओगे। (४१) [रुकू ४ आयात ११]

तुमसे पहले बहुत उम्मतों (संगतों) की तरफ़ पैग़म्बर भेजे थे। फिर हमने उनको सख़्ती और कष्ट में डाला ताकि वह हमारे सामने गिड़गिड़ायें।(४२) तो जब उन पर हमारी सज़ा आई थो नहीं गिड़-गिड़ाये, मगर उनके दिल कठोर हो गये थे और जो काम करते थे शैतान ने उनको भला बतलाया था।(४३) फिर जो शिक्षा उनको दी गई थी उसे भूल गये, तो हर चीज़ के दरवाज़े उन पर खोल दिये, जब उनको पाकर प्रसन्न हुए, एकाएक हमने उनको धर पकड़ा और वह निराश होकर रह गये।(४४) ज़ालिम लोगों की जड़ कट गई और ख़ुदा की तारीफ़ हो जो सब संसार का मालिक है। (४५) पूछो कि भला देखो तो सही, अगर ख़ुदा तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो ख़ुदा के सिवाय और कोई पूजित है कि यह पदार्थ तुमको ला दे ? देखो तो क्योंकर हम दलीलें तरह-तरह पर बयान करते हैं, इस पर भी यह लोग मुँह फेर चले जाते हैं। (४६) तो कहो देखो तो सही अगर ख़ुदा की सज़ा एकाएक या जता-बताकर तुम पर आ उतरे तो गुनहगारों के सिवाय दूसरा कोई न मारा जायगा। (४७) पैग़म्बरों को हम सिर्फ़ इस ग़रज़ से भेजा करते हैं कि ख़ुशख़बरी सुनावें, और डरावें तो जो ईमान लाया उसने सुधार कर लिया, तो ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे।(४८) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हुक्म न मानने के सबब सज़ा होगी। (४९) कहो कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं और न मैं छिपी जानता हूँ और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मै तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी तरफ़ ख़ुदा का सन्देशा भेजा गया है। पूछो कि आया अन्धा और जिसको सूझ पड़ता है बराबर हो सकते हैं ?§ क्या तुम नहीं सोचते (५०) [रुकू ५ आयात ९]

---

§ यानी मैं जिन बातों को देखता हूँ उनको तुम नहीं जानते और इसी लिए मेरी बात नहीं मानते। मगर मैं तुम्हारी बात जानते-बूझते कैसे मान सकता हूँ ?

क़ुरान के द्वारा उन लोगों को डराओ जो इस बात का डर रखते हैं कि अपने परवरदिगार के सामने लाकर हाज़िर किये जायँगे, ख़ुदा के सिवाय न कोई उनका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला। शायद वे बचते रहें। (५१) जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार ही की तरफ़ मुँह करके उससे दुआएँ माँगते हैं उनको† मत निकालो। न तो उनकी जवाबदेही किसी तरह तुम्हारे ज़िम्मे है और न तुम्हारी जवाबदेही किसी तरह उनके ज़िम्मे है कि उनको धक्के देने लगो तो तुम ज़ालिमों में होगे। (५२) इसी तरह हमने एक को एक से जाँचा ताकि वह यों कहें कि क्या हममें इन्हीं पर अल्लाह ने कृपा की है, क्या अल्लाह को सच्चे माननेवाले मालूम नहीं हैं। (५३) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, वे जब तुम्हारे पास आया करें तो उनको सब्र दिलाया करो और कहो कि तुम अच्छे रहो, तुम्हारे परवरदिगार ने मेहरबानी करना अपने ऊपर ले लिया है कि जो कोई तुममें से बेवक़ूफ़ी के कारण कोई गुनाह कर बैठे फिर किये पीछे तौबा और सुधार कर ले तो वह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (५४) इसी तरह पर हम आयतों को खोल-खोलकर बयान करते हैं ताकि गुनहगारों की राह ज़ाहिर हो जाय। (५५) [रुकू ६ आयात ५]

कह दो कि मुझको इस बात की मनादी है कि मैं उनकी दुआ करूँ जिनको तुम ख़ुदा के सिवाय बुलाते हो। कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर तो चलता नहीं, ऐसा करूँ तो मैं इस सूरत में गुमराह हो चुका और उन लोगों में न रहा जो सीधे रास्ते पर हैं। (५६) तू कह कि मुझे अपने परवरदिगार की शहादत पहुँची और तुमने उसको झुठलाया। जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो वह मेरे पास तो नहीं है। अल्लाह के

† काफ़िरों में से कुछ सरदार मुहम्मद साहब के पास आकर कहने लगे कि हमारा जी आपकी बातें सुनने को चाहता है, मगर आपके पास तो ग़ुलामों की भीड़ लगी रहती है। हम उनके बराबर कैसे बैठ सकते हैं ? उनको जब हम आया करें, उठा दिया कीजिए। इस पर यह आयत उतरी कि उनको मत निकालो।

सिवाय और किसी का अधिकार नहीं, वह सच बात खोलता है और वह सब फ़ैसला करनेवालों से अच्छा है। (५७) कहो कि जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, अगर मेरे पास होता तो मेरे और तुम्हारे दर्मियान झगड़ा चुक गया होता और अल्लाह ज़ालिम लोगों से ख़ूब परिचित है। (५८) उसी के पास ग़ैब (छिपी हुई) की कुंजियाँ हैं जिनको उसके सिवाय कोई नहीं जानता और जो जंगल और नदी में है जानता है और कोई पत्ता तक नहीं हिलता जो उसे मालूम नहीं और ज़मीन के अंधेरे में एक दाना नाज न सूखा और न हरा जो उसकी खुली किताब में न हो। (५९) और वही है जो रात के वक़्त तुम्हारी रूहों को क़ब्ज़े में लेता है और जो कुछ तुमने दिन में किया था जानता है, फिर दिन के वक़्त तुमको उठा खड़ा करता है ताकि मियाद मुक़र्रर (ज़िन्दगी) पूरी हो। फिर उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो, वह तुमको बतलायेगा।(६०)[रुकू ७ आ.५]

वही अपने बन्दों पर हुक्मराँ है और तुम लोगों पर निगहबान भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी को काल आता है तो हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह निकालते हैं और वह कोताही नहीं करते। (६१) फिर ख़ुदा की तरफ़ जो उनका काम सँभालनेवाला सच्चा है वापिस बुलाये जाते हैं। सुन रखो कि उसी का हुक्म है और वह सबसे ज़्यादा जल्द हिसाब लेनेवाला है। (६२) पूछो कि तुमको जंगल और दरिया के अंधेरों से कौन बचाता है ? वही जिसे तुम गिड़गिड़ा कर चुपके पुकारते हो कि अगर ख़ुदा हमको इस आफ़त से बचा ले तो हम उसके (शुक्रगुज़ार) हों। (६३) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि इनसे और हर तरह की सख़्ती से ख़ुदा ही तुमको बचाता है, फिर भी तुम शरीक ठहराते हो।(६४) कहो कि वही इस पर क़ाबिज़ है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के तले से कोई सज़ा तुम्हारे लिए निकाल खड़ी करे या तुमको गिरोह-गिरोह करके भिड़ा मारे और तुममें से किसी को किसी की लड़ाई का मज़ा चखाये। देखो तो सही हम आयतों को किस-किस तरह फेर-फेरकर बयान करते हैं, शायद वे

समझें। (६५) और क़ुरान को तुम्हारी जाति ने झुठलाया हालाँकि वह सच्चा है, कहो कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं।(६६) हर बात का एक वक़्त मुक़र्रर है और तुमको मालूम हो जायगा। (६७) और जब ऐसे लोग तुम्हारी नज़र पड़ जायँ जो हमारी आयतों की हँसी उड़ा रहे हों तो उनसे हट जाओ, यहाँ तक कि हमारी आयतों के सिवाय (दूसरी) बातों में लग जायँ और अगर शैतान तुमको भुला देवे तो नसीहत के पीछे ज़ालिम लोगों के साथ न बैठना।(६८) परहेज़गारों पर ऐसे लोगों के हिसाब को किसी तरह की ज़िम्मेदारी नहीं लेकिन नसीहत करना। शायद वे डर अख़्तियार कर लें। (६९) जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगानी ने उनको धोखे में डाल रखा है, ऐसे लोगों को छोड़ दो और क़ुरान के ज़रिये से समझाते रहो, कहीं कोई शख़्स अपनी करतूत के बदले पकड़ा न जाय कि ख़ुदा के सिवाय न कोई उसका साथी होगा और न सिफ़ारशी। और बदला अगर वह सब भी दे तो भी उससे न लिया जाय। यही वह लोग हैं जो अपने काम के कारण पकड़े गये। इनको पीने के लिये उबलता हुआ पानी और दुखदाई सज़ा होगी, क्योंकि यह कुफ़्र (इनकार) किया करते थे। (७०) [रुकू ८ आ.१०]

पूछो क्या हम ख़ुदा को छोड़कर उनको अपनी मदद के लिये बुलावें जो न हमको नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान और जब अल्लाह हमको सीधा रास्ता दिखा चुका तो क्या हम उसके बाद भी उल्टे पैरों लौट जायँ ? जैसे किसी शख़्स को भूत बहकाकर ले जाय और जंगल में हैरान फिरें। उसके कुछ साथी हैं वह उसको सीधे रास्ते की ओर बुला रहे हैं कि हमारे पास आ।(ऐ पैग़म्बर ! इनसे कहो) कि अल्लाह का रास्ता ही सीधा रास्ता है और हमको हुक्म मिला है कि हम तमाम दुनिया के पालनेवाले के फ़र्माबर्दार होकर रहें। (७१) और नमाज़ पढ़ते और ख़ुदा से डरते रहो, और वही है जिसके सामने जमा होंगे। (७२) और वही है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और जिस दिन फ़र्मायेगा कि हो† वह हो जायगा। उसका कहा

† यानी क़यामत आ जायगी।

सच्चा है। और जिस दिन सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा उसी की हुकूमत होगी। और वह छिपी और खुली की जाननेवाला है और वही हिकमतवाला ख़बरदार है। (७३) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र§ से कहा क्या तुम बुतों को पूज्य मानते हो, मैं तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को ज़ाहिरा भटके हुओं में पाता हूँ। (७४) इसी तरह हम इब्राहीम को आसमान और ज़मीन का प्रबन्ध दिखलाने लगे ताकि यह यक़ीन करनेवालों में से हो जायँ। (७५) तो जब उन पर रात छा गई उनको एक तारा दीख पड़ा (तो) कहने लगे कि यही मेरा परवरदिगार है। फिर जब वह छिप गया तो बोले कि अस्त हो जाने वाली चीज़ों को तो मैं नहीं चाहता।(७६) फिर जब चन्द्रमा को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे यह मेरा परवरदिगार है। फिर जब अस्त हो गया तो बोले अगर मुझको मेरा परवरदिगार नहीं दिखलाई देगा तो बिलाशक मैं भूले हुए लोगों में हो जाऊँगा। (७७) फिर जब सूरज को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे मेरा यही परवरदिगार सबसे बड़ा है। फिर जब (वह) छिप गया तो बोले भाइयों! जिन चीज़ों को तुम ख़ुदा में शरीक मानते हो, मैं तो उनसे बे सम्बन्ध हूँ।(७८) मैंने तो एक ही का होकर अपना ध्यान उसी ओर कर लिया है जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया। मैं तो मुशरिकीन में से नहीं हूँ।(७९) उनके गिरोह के लोग उनसे झगड़ने लगे। कहा क्या तुम मुझसे ख़ुदा के एक होने के सम्बन्ध में झगड़ते हो हालाँकि वह तो मुझको सीधा रास्ता दिखा चुका है और जिनको तुम उसका शरीक मानते हो मैं तो उनसे कुछ डरता नहीं सिवाय इसके कि ईश्वर की इच्छा हो, मगर हाँ मेरे पालनेवाले की विद्या में सब चीज़ें समाई हुई हैं, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (८०) जिन चीज़ों को तुम शरीक करते हो मैं उनसे क्या डरने लगा जब कि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक

§ इब्राहीम के बाप का नाम क्या था? क़ुरान में आज़र बताया गया है और तौरात में तारख लिखा है। लोगों का विचार है कि उनके दो नाम थे।

ख़ुदाई बनाया जिनकी सनद ख़ुदा ने तुम्हारे लिये नहीं उतारी तो दोनों फ़रीक़ों में से कौन-सा अमन का ज़्यादा अधिकारी है, अगर अक़्ल रखते हो तो कहो। (८१) जो लोग ख़ुदा पर ईमान लाये और उन्होंने अपने ईमान में ज़ुल्म नहीं मिलाया, यही लोग हैं जो अमन चाहनेवाले हैं और यही लोग सीधे मार्ग पर हैं।(८२)[रुकू ९ आ. १२]

यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति के क़ायल-माक़ूल करने के लिये बताई है। हम जिनको चाहते हैं उनको दर्जा ऊँचा कर देते हैं। (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पालनेवाला हिकमत वाला (है) और सब कुछ जानता है। (८३) और हमने इब्राहीम को इसहाक़ और याक़ूब दिये, उन सबको हिदायत की और पहले नूह को भी हमने हिदायत की थी और उन्हीं के वंश में से दाऊद और सुलेमान और अयूब और यूसुफ और मूसा और हारूँ को हिदायत की थी, और हम नेकों को ऐसा ही बदला देते हैं। (८४) निदान ज़करिया, यहिया और ईसा और इलयास नेकों में हैं। (८५) इस्माईल, इलयास और यूनिस और लूत सभी को ख़ूब दुनिया जहान के लोगों पर बुलन्दी दी। (८६) इनके बड़ों और इनकी संतान और इनके भाईबन्दों में से बाज़ को हमने चुना और इनकी सीधी राह दिखला दी। (८७) यह अल्लाह की हिदायत है, अपने सेवकों में से जिसको चाहे इस तरह का उपदेश दे और अगर यह शरीक करते होते तो इनका किया-धरा इनसे बेकार हो जाता। (८८) यह वह लोग हैं जिनको हमने किताब दी और हक़ दिया और पैग़म्बरी भी दी तो (यह मक्का के काफ़िर) अगर इनको इज़्ज़त न करें तो हमने इन पर लोग मुक़र्रर कर दिये हैं ‡ जो इनके इन्कारी नहीं हैं। (८९) उन्हें अल्लाह ने हिदायत की तू उनकी हिदायत पर चल। कह दो क़ुरान पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, यह क़ुरान तो दुनिया जहान के लोगों के लिये उपदेश है। (९०)[रुकू १० आ.८]

उन्होंने जैसी इज़्ज़त अल्लाह की जाननी चाहिए थी वैसी उसकी

‡ जैसे मदीने के रहने वाले जो अन्सार कहलाते हैं।

इज्ज़त न जानी, कहने लगे कि ख़ुदा ने किसी आदमी पर कोई चीज़ नहीं उतारी। पूछो कि वह किताब किसने उतारी जिसे मूसा लेकर आये, लोगों के लिए रोशनी है और उपदेश है, तुमने उसके अलाहिदा अलाहिदा सफ़े बनाकर ज़ाहिर किया और बहुतेरे वरक़ तुम्हारे मतलब के खिलाफ़ हैं, उनको लोगों से छिपाते हो, और उसी किताब के ज़रिये से तुमको वे बातें बताई गई हैं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादे। कहो कि वह किताब अल्लाह ने उतारी थी, फिर इनको छोड़ दे कि अपनी फ़िक्रों में खेला करें। (९१) और यह किताब आसमानी है जिसको हमने उतारा है बरकतवाली है और जो किताबें इससे पहले की हैं उनकी तसदीक़ करती है। और ऐ पैग़म्बर! हमने इसको इस वजह से उतारा है कि तुम मक्कावालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं उनको डराओ और जो लोग क़यामत का यक़ीन रखते हैं वह तो इस पर ईमान ले आते हैं आर वह अपनी नमाज़ की ख़बर रखते हैं। (९२) उससे बढ़कर और ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ लफंट बाँधे या दावा करे कि मुझपर ख़ुदा का पैग़ाम आया है हालाँकि उसकी तरफ़ कुछ भी ख़ुदा का संदेशा न आया हो और जो कहे कि जैसे अल्लाह उतारता है वैसे ही मैं भी उतार सकता हूँ। चुनाँचे ज़ालिम जब मौत की बेहोशियों में पड़े होंगे और फ़रिश्ते हाथ फैलाकर कहेंगे अपनी जानें निकालो, अब तुमको ज़िल्लत के दंड की सज़ा दी जायगी, इसलिए कि तुम ख़ुदा पर व्यर्थ झूठ बोलते और उसकी आयतों से अकड़ा करते थे। (९३) और पहली बार जैसा हमने तुमको पैदा किया था वैसे ही अकेले तुम हमारे पास एक-एक करके आओगे और जो कुछ हमने तुमको दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और तुम्हारी सिफ़ारिश करने वालों को हम तुम्हारे साथ नहीं देखते जिनको तुम समझते थे कि वह तुममें शामिल हैं अब तुम्हारे आपस के मेल टूट गये और जो दावे तुम किया करते थे तुमसे गये-गुज़रे हो गये। (९४) [रुकू ११ आयात ४]

वह दाने और गुठली का फाड़नेवाला है और मुर्दा से जिन्दा और जिन्दा से मुर्दा निकालता है, यही तुम्हारा ख़ुदा है, फिर तुम कहाँ भटके चले जा रहे हो। (९५) उसी के किये से प्रातःकाल पौ फटती है और उसी ने आराम के लिये रात और हिसाब के लिये सूरज और चन्द्रमा बनाये हैं। यह उसी की अक़्ल के करतब हैं। (९६) वही है जिसने तुम लोगों के लिये तारे बनाये ताकि जंगल और नदी के अंधेरों में उनसे हिदायत पाओ। जो लोग समझदार हैं उनके लिए हमने निशानियाँ ख़ूब तफ़सीलवार बयान कर दी हैं। (९७) और वही है जिसने तुम सबको एक शरीर से पैदा किया, फिर कहीं तुमको ठहराव है और कहीं सुपुर्द रहना (पिता की कमर और माता का पेट) जो लोग समझते हैं उनके लिए हम निशानियाँ स्पष्ट बयान कर चुके हैं। (९८) और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे हर क़िस्म के अंकुर (कोंपा) निकाले, फिर कोंपों से हमने हरी-हरी टहनियाँ निकाल खड़ी कीं कि उनसे हम गुथे हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे में से जो गुच्छे झुके पड़ते हैं और अंगूर के बाग़ और जैतून अनार सूरत में मिलते-जुलते और (स्वाद में) मिलते-जुलते नहीं। (इनमें से हर चीज़) जब पकती है तो उसका फल और फल का पकना देखो। निस्सन्देह जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (९९) और मुशरिकों ने जिन्नों को ख़ुदा का शरीक बना खड़ा किया हालाँकि ख़ुदा ही ने जिन्नों को पैदा किया और वे जाने-बूझे ख़ुदा से बेटियों का होना ठहराते हैं। (ख़ुदा की बाबत) जैसी-जैसी बातें यह लोग बयान करते हैं, वह पाक है और इन बातों से बहुत दूर है। (१००) [रुकू १२ आयात ६]

वह आसमान और ज़मीन का बनानेवाला है। और उसकी संतान क्यों होने लगी? उसके कोई स्त्री नहीं, और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया है और वही हर चीज़ से जानकार है। (१०१) यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवाय और कोई दुआ के क़ाबिल नहीं और वही सब चीज़ों का पैदा करनेवाला है तो उसी की दुआ करो

और वही हर चीज़ का हिफ़ाज़त करनेवाला है।(१०२) आँखें उसको बतला नहीं सकतीं और वह आँखों को खूब जानता है और वह बड़ा बारीक़ देखनेवाला खबरदार है। (१०३) लोगों ! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सूझ की बातें तुम्हारे पास आ ही चुकी हैं, फिर जिसने देखा अपना भला किया और जा अन्धा रहा अपने लिए बुराई की, मैं तुम लोगों का रक्षक नहीं हूँ। (१०४) इसी तरह हम आयतों को बयान करते हैं ताकि उनको कहना पड़े कि तुमने पढ़ा है, और जो लोग समझ रखते हैं हम उनको क़ुरान अच्छी तरह समझा दें।(१०५) ऐ पैग़म्बर! (क़ुरान) जो तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ से पैग़ाम भेजा गया है, उसी पर चले जाओ, ख़ुदा के सिवाय कोई पूजित नहीं और मुशरिकीन से अलग रहो। (१०६) अगर ख़ुदा चाहता तो वे शरीक न ठहराते और हमने तुमको इन पर निगहबान नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो। (१०७) और ये लोग ख़ुदा के सिवाय जिनको पुकारते हैं उनको बुरा† न कहो कि यह लोग मूर्खता के कारण व्यर्थ ख़ुदा को बुरा कह बैठें, इसी तरह हमने हर जमात के काम उनको अच्छे कर दिखालाये‡ हैं। फिर इनको परवरदिगार की तरफ़ लौटकर जाना है, तो जैसे जैसे काम कर रहे थे, उनको (ख़ुदा) बतायेगा।(१०८) और (मक्के वाले) अल्लाह की सख्त क़सम खाकर कहते हैं कि अगर कोई निशानी उनके सामने आये तो वह ज़रूर ईमान ले आयेंगे। तुम समझा दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के ही पास हैं और तुम लोग क्या जानो यह लोग तो निशानी आने पर भी ईमान नहीं लायेंगे। (१०९) और हम उनके दिलों और उनकी आँखों को उलट देंगे जैसे क़ुरान पर पहली मर्तबा ईमान नहीं लाये थे और हम इनको छोड़ देंगे कि पड़े भटका करें। (११०) [रुकू १३ आयात १०]

——:०:——

† कुछ मुसलमान बुतों को काफ़िरों के सामने गाली देने लगे थे। ऐसा करने से उन्हें रोका गया है ताकि काफ़िर उलटकर ख़ुदा को बुरा न कहने लगें।

‡ हरएक अपनी बातों को अच्छा समझता है।

आठवाँ पारा (वलौ अन्नना)

और अगर हम इन पर फ़रिश्तों को भी उतारें; ख़ुद भी इनसे बातें करें और हर चीज़ उनके सामने जिलाकर खड़ी कर दें तब भी यह सब हरगिज़ ईमान न लावेंगे लेकिन इनमें के अक्सर नहीं समझते।
(१११) इस तरह हमने हर पैग़म्बर के लिये आदमी और जिन्नों में से शैतान पैदा किये और जो एक दूसरे को मुलम्मा-जैसी झूठी बात धोखा देने को सिखाते हैं सो (उनको) छोड़ दे और उनके झूठ को,
(११२) ताकि जो लोग क़यामत का ईमान नहीं रखते उनके दिल उनकी बातों की तरफ़ ध्यान दें और वह लोग उनकी बातों से रज़ामन्द हों और जो बुरे काम यह करते हैं उनकी सज़ा पायें। (११३) क्या मैं ख़ुदा के सिवाय कोई और पंच तलाश करू हालाँकि वह है जिसने तुम लोगों की तरफ़ किताब भेजी जिसमें तफ़सील है और वह लोग जिनको हमने किताब दी है इस बात को जानते हैं कि क़ुरान हक़ीक़त में परवरदिगार की तरफ़ से उतरी है,सो तू शक करनेवालों में न हो जाना।
(११४) और तेरे परवरदिगार की बात सच्ची और इंसाफ़ की है। कोई उसकी बात को बदल नहीं सकता और वह सुनता और सब कुछ जानता है। (११५) और बहुतेरे लोग दुनिया में ऐसे हैं कि अगर उनके कहे पर चलो तो तुमको ख़ुदा के रास्ते से भटका दें, यह तो सिर्फ़ अपने अटकल पर चलते और निरी अटकलें दौड़ाते हैं!
(११६) जो लोग ख़ुदा के रास्ते से भटके हुए हैं उन्हें तो परवरदिगार ख़ूब जानता है और जो सीधी राह पर हैं उनको (भी) ख़ूब जानता है। (११७) पस अगर तुम लोगों को उसके हुक्मों का विश्वास है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस चीज़ को खाओ।
(११८) क्या सबब है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो हालाँकि जो चीज़ें ख़ुदा ने तुम पर हराम कर दी हैं वह पूरी तरह तुमसे बयान कर दी हैं। वह चीज़ कि हराम तो है मगर भूख वग़ैरह की वजह से तुम उस पर मजबूर हो जाओ (तो वह भी हराम नहीं) और बहुत लोग तो बिना समझे अपनी इच्छाओं

के अनुसार बहकाते हैं। जो लोग हद से बाहर हो जाते हैं तुम्हारा परवरदिगार उनको ख़ूब जानता है। (११९) ज़ाहिरा और छिपे हुए गुनाह से अलग रहो, जो लोग गुनाह करते हैं उनको अपने काम का फल मिलेगा।(१२०) जिस पर ख़ुदा का नाम न लिया गया हो उनमें से मत खाओ और उसमें से खाना पाप है और शैतान अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं कि तुमसे झगड़ा करें और अगर तुमने उनका कहा मान लिया तो तुम मुशरिक हो जाओगे। (१२१) [रुकू १४ आयात ११]

एक शख़्श जो मुर्दा था हमने उसमें जान डाली† और उसको रोशनी दी। वह लोगों में उसको लिये फिरता है। क्या वह उस शख़्स जैसा हो जायगा जो अँधेरे में है, वहाँ से निकल नहीं सकता? इसी तरह काफ़िरों को जो कुछ भी कर रहे हैं भला दिखाई देता है।(१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े अपराधी पैदा किये ताकि वहाँ फ़साद करते रहें। और जो फ़साद वह करते हैं अपनी ही जानों के लिए करते हैं और नहीं समझते। (१२३) और जब उनके (मक्कावालों के) पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि जैसी ख़ुदा के पैग़म्बरों को दी गई है जब तक हमको न दी जाय हम तो ईमान लानेवाले नहीं हैं। ख़ुदा जिस पर अपना पैग़ाम भेजता है ख़ूब जानता है। जो लोग गुनहगार हैं उनको ज़िल्लत होगी और धोखा देने वालों को सख़्त सज़ा होगी।(१२४) जिसको ख़ुदा सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल को इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस शख़्स को भटकाना चाहता है उसके दिल को तंग कर देता है, गोया ज़ोर से आसमान पर ईमान से भागने के लिए चढ़ता है। जो लोग ईमान नहीं लाते उन पर उसी तरह अल्लाह की फटकार पड़ती है।(१२५) और यह तुम्हारे परवरदिगार की सीधी राह है। जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए हमने आयतें तफ़सील के साथ बयान की हैं। (१२६) उनके लिए तेरे पालनकर्त्ता के यहाँ अमन का घर है और जो अमल करते हैं

† अर्थात् ज्ञान दिया।

उसके बदले में वही उनकी खबर लेनेवाला होगा। (१२७) और जिस दिन ख़ुदा सबको जमा करेगा ऐ जिन्नों के गिरोह! आदम के बेटों में से तो तुमने अच्छी बड़ी जमात अपनी तरफ़ कर ली और आदम की औलाद में से जो शैतानों के दोस्त हैं कहेंगे कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हम एक दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे हैं और जो समय हमारे लिए मुक़र्रर किया था हम उस तक पहुँच गये। ख़ुदा कहेगा कि तुम्हारा ठिकाना आग (दोज़ख़) है, उसी में हमेशा रहोगे। आगे ख़ुदा की मर्ज़ी। बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिकमतवाला और जानकार है। (१२८) और इसी तरह हम कुछ ज़ालिमों को किन्हीं के ऊपर मुक़र्रर कर देंगे। यह उनकी कमाई का फल है। (१२९) [रुकू १५ आ. ८]

फिर हम जिन्नों और आदम के बेटे दोनों से मुख़ातिब होकर पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैग़म्बर नहीं आये कि तुमसे हमारा हुक्म बयान करें और उस रोज़ (क़यामत) के आने से तुमको डरायें? वह कहेंगे हम अपने ऊपर आप ही गवाही देते हैं और दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको धोखे में रखा और उन्होंने आप ही अपने ऊपर गवाही दी कि बेशक वे काफ़िर थे। (१३०) वह सब इस सबब से है कि तुम्हारा परवरदिगार बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक़ करने वाला नहीं और यहाँ के रहनेवाले बेखबर हों। (१३१) और जैसे-जैसे कर्म किये हैं उन्हीं के बमूजिब सबके दर्जे होंगे और जो कुछ कर रहे हैं तुम्हारा परवरदिगार उससे बेखबर नहीं। (१३२) और तेरा परवरदिगार बेपरवाह और रहमवाला है, चाहे तुझको ले जाय और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह पर क़ायम करे जैसा दूसरे लोगों की औलाद में से तुमको पैदा कर दिया। (१३३) जो तुमको वचन दिया (यानी सज़ा) सो आनेवाला है, और तुम रोक नहीं सकते। (१३४) कहो कि भाइयों! तुम अपनी जगह काम करो, मैं (अपनी जगह) काम करता हूँ। फिर आगे चलकर तुमको मालूम हो जायगा कि आख़िर में किसका काम अच्छा है। ज़ालिमों का भला न होगा। (१३५) ख़ुदा की पैदा की हुई खेती और चौपायों में अल्लाह

का भी एक हिस्सा ठहराते हैं तो अपने ख़्यालों के मुताबिक़ कहते हैं कि इतना तो ख़ुदा का और इतना हमारे शरीकों का (यानी उन पूजितों का जिनको ख़ुदा का शरीक मान रखा है) फिर जो (हिस्सा) इनके (माने हुए) शरीकों का होता है वह अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का है वह हमारे शरीकों को पहुँच जाता है। क्या बुरा इन्साफ़ करते हैं* ।(१३६) इसी तरह अक्सर मुशरिकों की निगाह में उनके शरीकों ने औलाद (यानी लड़कियों) को मार डालना पसंद किया, और उनके दीन में सन्देह डाल दिया और ख़ुदा चाहता तो यह लोग ऐसा काम न करते। सो (उनको) छोड़ दो, वे जानें और उनका झूठ जाने ।(१३७) और कहते हैं कि चौपाये और खेती हराम है कि उनको उस शख़्स के सिवाय जिसको हम अपने ख़्याल के मुताबिक़ चाहें नहीं खा सकते। और कुछ चौपाये ऐसे हैं कि उनको पीठ पर सवार होना व लादना मना है और कुछ चौपाये ऐसे हैं जिनको ज़िबह (काटने) के वक़्त उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, ख़ुदा पर झूठ† बाँधते हैं (कि उसने ऐसा कहा है)। वह इनको कड़ी सज़ा देगा। (१३८) (ये लोग) कहते हैं कि इन चौपायों के पेट से जो बच्चा जीता निकले वह हमारे मर्दों के लिए हलाल और हमारी औरतों पर हराम है और अगर मरा हुआ हो तो मर्द और औरत उसमें शरीक हैं। ख़ुदा इनको इन बातों की सज़ा देगा, वह हिकमतवाला ख़बरदार है। (१३९) बेशक वह लोग घाटे में हैं जिन्होंने बेवकूफ़ी और जिहालत से अपने बच्चों को मार डाला और अल्लाह ने जो रोज़ी उनको दी थी ख़ुदा पर झूठ बाँधकर उसको हराम कर लिया। वह लोग भटक गये और राह पर नहीं आये। (१४०) [रुकू १६ आयात ११]

* अरब के मुशरिक खेत के बीच में एक लकीर खींच देते थे। आधा ख़ुदा के नाम का और आधा बुतों के नाम का। अगर बुतों के नाम का खेत बुरा होता तो उसको ख़ुदा के नामवाले खेत से बदल लेते। ख़ुदा के नाम के खेत में ग़रीबों को देते और बुतों के खेत में से महन्तों को।

† कुछ जानवरों और अनाज के बारे में अपने मन से बात बनाते थे

वही है जिसने बाग़ पैदा किये और खजूर के दरख़्त और खेती जिनके कई तरह के फल होते हैं और जैतून और अनार एक दूसरे से मिलते-जुलते और नहीं भी मिलते-जुलते हैं। यह सब चीज़ें जब फलें इनके फल खाओ और उनके काटने के दिन हक़ अल्लाह का (यानी ज़कात) दे दिया करो और फ़िज़ूलख़र्ची मत करो क्योंकि फ़िज़ूलख़र्ची करनेवालों को ख़ुदा पसंद नहीं करता। (१४१) चारपायों में बोझ उठानेवाले (पैदा किये जैसे ऊँट) और (कोई) ज़मीन से लगे हुए (जो नहीं लादे जाते जैसे भेड़-बकरी) और ख़ुदा ने जो जो तुमको रोज़ी दी है उसमें से खाओ और शैतान के पिछलगू न हो क्योंकि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) आठ नर और मादा (यानी चार जोड़े) पैदा किये हैं, भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो, ऐ पैग़म्बर! पूछो कि ख़ुदा ने दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या जो इन दो मादों के बच्चों को (जो पेटों में हैं)? अगर तुम सच्चे हो तो मुझको सनद बतलाओ। (१४३) और ऊँटों से दो और गाय से दो* (ऐ पैग़म्बर!) पूछो दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या बच्चा जो मादीनों के पेट में है? तुमको इन चीज़ों के हराम कर देने का हुक्म दिया था, उस वक़्त तुम (क्या) मौजूद थे? तो उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो लोगों को रास्ते से भटकाने के लिये वे समझे-बूझे ख़ुदा पर झूठ बाँधे। ख़ुदा ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। (१४४) [रुकू १७ आयात ४]

कहो कि कोई खानेवाला कुछ खाय मेरी तरफ़ जो ख़ुदा का पैग़ाम आया है उसमें तो मैं कोई चीज़ हराम नहीं पाता, मगर यह कि वह चीज़ मुर्दार हो या बहता हुआ ख़ून या सुअर का मांस, यह चीज़ें नापाक हैं या उदूलहुक्मी का सबब हो या ख़ुदा के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर ज़िब्रह हो, उस पर भी जो शख़्स लाचार हो तो तेरा परवरदिगार माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (१४५) यहूदियों पर हमने

और कहते थे ये बातें ख़ुदा ने बताई हैं।

* यानी जिन चीज़ों को मुशरिक हराम बताते हैं वह हराम नहीं।

तमाम नाख़ून वाले जानवरों को हराम किया और हमने गाय और बकरियों में से चर्बी हराम की थी, वह (चर्बी) जो उनकी पीठ पर लगी हो या अँतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो। यह हमने उनको उनकी नटखटी की सज़ा दी थी और हम सच्चे हैं।(१४६) इस पर भी यह लोग तुमको झुठलावें तो कहो कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा रहीम है और अपराधी से उसकी सज़ा नहीं टलती।(१४७) मुशरिक कहेंगे कि अगर ख़ुदा चाहता तो हम और हमारे बाप-दादे मुशरिकीन होते और न हम किसी चीज़ को हराम करते। इसी तरह उनके अगलों ने झुठलाया है यहाँ तक कि हमारी सज़ा का मज़ा चक्खा। पूछो कि आया तुम्हारे पास कोई सनद भी है कि उसको हमारे लिए निकालो। निरे भ्रम पर चलते और निरी अटकलें ही दौड़ाते हो।(१४८) कहो अल्लाह की हुज्जत पूरी हुई, फिर अगर वह चाहता तो तुम सबको रास्ता दिखला देता। (१४६) कहो कि अपने गवाहों को हाज़िर करो जो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह ने (यह चीज़) इनको हराम की है। पस अगर गवाही भी दें तो तुम उनके साथ उन जैसी न कहना और न उन लोगों की दिली ख्वाहिशों पर चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो क़यामत का यक़ीन नहीं रखते और वह (दूसरे को) परवरदिगार के बराबर समझते हैं।(१५०) [रुकू १८ आ. ६]

कहो कि आओ मैं तुमको वह चीजें पढ़कर सुनाऊँ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम की हैं। यह कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शरीक मत ठहराओ और माता-पिता के साथ नेकी करते रहो और ग़रीबी के डर से अपने बच्चों को मार न डालो, हम तुमको रोज़ी देते हैं और उनको (भी)। और बेशर्मी की बातें जो ज़ाहिर हों और छिपी हुई हों उनमें से किसी के पास भी मत फटकना और जिस जान को अल्लाह ने हराम कर दिया है उसे मार न डालना। मगर हक़ पर। यह वह बातें हैं जिनका हुक्म ख़ुदा ने तुमको दिया है ताकि तुम समझो। (१५१) अनाथ के माल के पास मत जाना। सिवाय इसके कि उसकी भलाई हो और जब तक कि वह बालिग़ न हो जायँ। और न्याय के

साथ पूरी-पूरी नाप या तौल करो। हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त से बढ़कर बोझा नहीं डालते और जब कुछ कहो तो रिश्तेदार ही क्यों न हो न्याय की कहो और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो। यह वह बातें हैं जिनका तुमको ख़ुदा ने हुक्म दिया है; शायद तुम ध्यान दो।
(१५२) यही हमारा सीधा रास्ता है तो इसी पर चले जाओ और (दूसरे) रास्तों पर न पड़ना। यह तुमको ख़ुदा के रास्ते से तितर बितर करेंगे; यह (बातें) हैं जिनका ख़ुदा ने तुमको हुक्म दिया है, शायद तुम बचते रहो। (१५३) फिर हमने मूसा को किताब दी जिससे भलाई करनेवालों पर हमारी नियामत पूरी हुई और उसमें कुल बातों की आज्ञाओं का बयान मौजूद है और उपदेश और दया है (और यह किताब मूसा को इसलिए दी गई) शायद वह अपने पालनकर्त्ता से मिलने का विश्वास लायें। (१५४) [रुकू १९ आयात ४]

यह किताब हमने ही उतारी है बरकतवाली है तो इसी पर चलो और डरते रहो, शायद तुम पर रहम किया जाय। (१५५) (और ऐ मुशरिकीन अरब! हमने यह इसलिए उतारी) कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहले बस दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी और हम तो उसके पढ़ने-पढ़ाने से बिलकुल बेख़बर थे। (१५६) या यह उज़्र करने लगो कि अगर हम पर यह किताब उतरी होती तो हम ज़रूर इनको पढ़कर सच्ची राह पर होते। तो अब तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील और उपदेश और दया आ गई है। तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाए और उनसे अलाहिदगी अख़्तियार करे। और जो लोग हमारी आयतों से अलाहिदगी अख़्तियार करते हैं हम जल्द उनकी अलाहिदगी के बदले उनको बड़ी दुखदाई सज़ा देंगे।(१५७) यह लोग इसी बात की राह देख रहे हैं कि फ़रिश्ते इनके पास आयें या तुम्हारा पालनकर्त्ता इनके पास आये या तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार ज़ाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार ज़ाहिर होगा तो जो शख़्स उससे पहले ईमान नहीं लाया या अपने ईमान में

उसने कुछ भलाई न की थी अब उसका ईमान लाना उसको कुछ भी लाभकारी न होगा तो कहो कि राह देखो, हम भी राह देखते हैं। (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में भेद डाला और कई फ़िर्के बन गये तुमको उनसे कोई काम नहीं, उनका मामला ख़ुदा के हवाले है। फ़िर जो कुछ किया करते थे उनको बतायेगा। (१५९) जिसने नेकी की तो उसका दसगुना उसको मिलेगा और जिसने बदी की तो वह उसके बराबर सज़ा भुगतेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। (१६०) कहो मुझको तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह बता दी है कि वही इब्राहीम का ठीक दीन है कि वह एक ही के हो रहे थे और मुशरिकों में से न थे। (१६१) कहो कि मेरी नमाज़ और मेरी पूजा और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सब संसार का परवरदिगार है। (१६२) कोई उसका शरीक नहीं और मुझको ऐसे ही हुक्म मिला है और मैं उसके फ़र्माबरदारों में पहला हूँ। (१६३) पूछो कि क्या मैं ख़ुदा के सिवाय कोई और परवरदिगार तलाश करूँ, वह तमाम चीज़ों का परवरदिगार है। और हर शख़्स अपने कर्म का ज़िम्मेदार है और कोई शख़्श किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा। फिर तुमको अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ जाना है तो जिस बात में झगड़ते थे वह तुमको बतलायेगा। (१६४) और वही है जिसने ज़मीन में तुमको नायब बनाया है और तुममें से किसी के दर्जे किसी से ऊँचे किये ताकि जो पदार्थ तुमको दिये हैं उनमें तुम्हारी जाँच करे। तुम्हारा परवरदिगार जल्द सज़ा देनेवाला है और वह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (१६५)

[रुकू २० आयात ११]

—:o:—

७ सूरे आराफ़ ३९

यह सूरत मक्का में उतरी, इसमें २०६ आयतें, २४ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

अलिफ़-लाम-मीम-स्वाद। (१) यह किताब तेरी तरफ़ इसलिये

उतरी कि तेरा दिल तंग न हो (कोई शक न रहे) ताकि तू इसके ज़रिये से डरावे और ईमानवालों को शिक्षा मिले। (२) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है इसी पर चले जाओ और ख़ुदा के सिवाय और राह बतानेवाले के पीछे मत चलो, तुम कम ध्यान देते हो।(३) और कितनी बस्तियाँ हमने तबाह कीं और रात के वक़्त या दोपहर दिन को सोते वक़्त हमारी सज़ा उन पर पहुँची। (४) जब हमारी सज़ा उन पर उतरी तो और कुछ न बोल सके, यही कहा कि हम पापी थे। (५) तो जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गये थे हम उनसे ज़रूर पूछेंगे और पैग़म्बर से भी पूछेंगे। (६) फिर हम अपने इल्म से उनको सब हाल सुना देंगे और हम कहीं छिपे न थे। (७) और तौल उस दिन ठीक होगी, तो जिनकी तौल भारी हो सो वही लोग मुराद पावेंगे। (८) जिनके कामों का बोझ हल्का ठहरेगा उन्होंने अपनी जानें जोख़िम में डालीं कि हमारी आयतों पर ज़ुल्म करते थे। (९) हमने तुमको ज़मीन में स्थान दिया और उसी में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान इकट्ठे किये, तुम बहुत कम एहसान मानते हो।(१०) [रुकू १ आ.१०]

हमने ही तुमको पैदा किया और फिर तुम्हारी सूरत बनाई और फिर हमने फ़रिश्तों को आज्ञा दी कि आदम के आगे तो झुक गये मगर वह इबलीस झुकनेवालों में न हुआ। (११) पूछो कि तुमको किस चीज़ ने माथा नवाने से रोका। बोला मैं आदम से अच्छा हूँ, मुझको तूने आग से पैदा किया और उसको मिट्टी से पैदा किया। (१२) बोला तू यहाँ से उतर जा क्योंकि तुझे मुनासिब नहीं है कि घमण्ड करे, सो निकल तू नीचों में है। (१३) वह बोला कि जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायँगे उस दिन तक की मुझे मुहलत दे। (१४) कहा मुझको मुहलत दी गई। (१५) इस पर (शैतान) बोला जैसी तूने मेरी राह मारी है मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर आदमियों की घात में जा बैठूँगा। (१६) फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिनी और बाईं तरफ़ से आऊँगा और तू उनमें बहुतों को शुक्रगुज़ार नहीं पावेगा। (१७) फ़र्माया कि पापी निकाला हुआ

यहाँ से निकल। आदम के बेटों में से जो तेरी पैरवी करेगा, हम बिला शक तुम सबसे दोज़ख़ भर देंगे। (१८) और (हमने आदम से कहा कि) ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी स्त्री जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो खाओ, मगर इस दरख़्त के पास न फटकना, नहीं तो तुम पापी होगे।(१९) फिर शैतान ने मियाँ-बीवी दोनों को बहकाया ताकि उनकी याद करने की चीज़ें जो उनसे छिपी थीं उन्हें खोल दिखा दे और कहने लगा तुम्हारे परवरदिगार ने जो इस दरख़्त (के फल खाने) से तुमको मना किया है तो इसका कारण यही है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम दोनो फ़रिश्ते बन जाओ या अमर हो जाओ। (२०) और उसने क़सम खाई कि मैं तुम्हारी भलाई चाहने वाला हूँ। (२१) ग़रज़ धोखे से उनको प्रसंग के लिए आकर्षित कर लिया। तो ज्योंही उन्होंने दरख़्त चखा तो दोनो के पर्दे करने की चीजें उनको दिखाई देने लगीं और अपने ऊपर पत्ते ढाँकने लगे। उनके पालनकर्त्ता ने उनको पुकारा। क्या हमने तुमको इस वृक्ष की मनाही नहीं की थी और तुमसे नहीं कह दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२२) दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने अपने को आप तबाह किया और अगर तू हमको क्षमा नहीं करेगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो हम मिट जायँगे। (२३) कहा कि (तुम मियाँ बीवी और शैतान तीनों जन्नत से) नीचे उतर जाओ, तुममें एक का एक दुश्मन है और तुमको एक ख़ास वक़्त तक ज़मीन पर रहना होगा और एक वक़्त तक बर्तना होगा। (२४) फ़र्माया कि ज़मीन (ही में तुम सब) ज़िन्दगी व्यतीत करोगे और उसी में मरोगे और उसी में से निकाल खड़े किये जाओगे। (२५) [रुकू २ आ. १५]

ऐ आदम के बेटों ! हमने तुम्हारे लिए पोशाक उतारी है जो तुम्हारे पर्दे की चीज़ों को छिपाये और सुन्दरता और परहेज़गारी की पोशाक भली है। ये ख़ुदा की निशानियाँ हैं, शायद तुम ध्यान दो।(२६) ऐ आदम के बेटों ! शैतान तुमको भटका न दे जिस तरह कि उसने तुम्हारे माता-पिता (आदम और हव्वा) को जन्नत से निकलवाया कि उनसे

उनकी पोशाक उतरवा दी ताकि उनकी पर्दा करने की चीज़ें उन पर ज़ाहिर कर दे। वह और उसकी औलाद तुमको देखते हैं, जिधर से तुम उनको नहीं देखते। हमने शैतान को उन्हीं लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते।(२७) और जब किसी बुरे काम के गुनहगार होते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बड़ों को इसी पर (चलते) पाया और अल्लाह ने हमको इसकी आज्ञा दी है। (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि अल्लाह तो बुरे काम का हुक्म नहीं देता। तुम नासमझ लोग खुदा पर क्यों झूठ बोलते हो। (२८) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मेरे परवरदिगार ने इन्साफ़ का और हर मसजिद में सीधा मुँह रखने का हुक्म दिया है और खालिस उसी की सेवा ध्यान में रखकर उसको पुकारो। जिस तरह तुमको पहले (पैदा) किया था, (उसी तरह) तुम दुबारा भी पैदा होगे। (२९) उसी ने एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह को भटका दिया। इन लोगों ने ख़ुदा को छोड़कर शैतान को पकड़ा और समझते हैं कि वह सीधी राह पर है। (३०) ऐ आदम के बेटों ! हर एक नमाज़ के वक़्त (कपड़ों से) सजकर आया करो और खाओ और पीयो और फ़िज़ूलखर्चियाँ न करो क्योंकि ख़ुदा फ़िज़ूल खर्च करनेवालों को नहीं चाहता। (३१) [रुकू ३ आयात ६]

कहो अल्लाह ने जो आसायश और खाने की साफ़ चीज़ें अपने बंदों के लिए पैदा की हैं किसने हराम की हैं?‡ समझा दो कि दुनिया की ज़िन्दगी में जो चीज़ें ईमानवालों के लिए हैं क़यामत के दिन यह खासकर उन्हीं को दी जायँगी। इसी तरह हम समझदारों को आयतें तफ़सील के साथ बयान करते हैं। (३२) कहो कि सिर्फ़ बेशर्मी के कामों को मना किया है, उनमें जो खुले और जो छिपे हों और गुनाह और नाहक़ की ज्यादती और इस बात को कि तुम किसी को खुदा का शरीक क़रार दो जिसको उसने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि ख़ुदा पर लफंट लगाने लगो जो तुम्हें मालूम नहीं। (३३) हर क़ौम

‡ मक्केवालों की धारणा थी कि कुछ प्रकार के खान-पान मना हैं। ये ऐसी चीजें थीं जैसे ऊँटनी के पेट से निकला हुआ बच्चा।

की एक मियाद है, फिर जब उनकी मौत आवेगी तो न एक घड़ी घटेगी और न एक घड़ी बढ़ेगी। (३४) ऐ आदम के बेटों! जब कभी तुम्हीं में से पैग़म्बर तुम्हारे पास पहुँचे और हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनावे तो जो कोई डरेगा और (अपनी हालत का) सुधार करेगा तो उस पर न तो डर उतरेगा और न वह उदास होंगे। (३५) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायेंगे और उनसे अकड़ बैठेंगे, वही दोज़खी होंगे कि हमेशा दोज़ख में रहेंगे। (३६) उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जो खुदा पर झूठे जंजाल बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए। यही लोग हैं जिनको (तक़दीर के) लिखे हुए में से उनका भाग उनको पहुँचेगा, यहाँ तक कि जब हमारे फ़रिश्ते उनकी रूहें निकालने के लिए मौजूद होंगे तो पूछेंगे कि अब वह कहाँ हैं जिनको तुम खुदा के अलावा बुलाया करते थे? तो वह कहेंगे कि वह तो हमसे छिप गये और अपने ऊपर आप गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (३७) फ़र्माया कि जिन्न और इन्सान के गिरोहों में जो तुमसे पहले हो चुके हैं मिलकर आग (दोज़ख) में जा दाख़िल हो। जब एक गिरोह नरक में जायगा तो अपने साथियों पर लानत करेगा, यहाँ तक कि जब सबके सब नरक में जमा होंगे तो उनमें से पिछला गिरोह अपने से पहले गिरोह के हक़ में बुरी दुआ करेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार! इन्हीं लोगों ने हमको भटका दिया, तू इनको दोज़ख की दूनी सज़ा दे। कहेगा कि हरएक को दूनी सज़ा, मगर तुमको मालूम नहीं। (३८) और उनमें के पहले लोग पिछले लोगों से कहेंगे अब तो तुमको हम पर किसी तरह ज्यादती नहीं रही, तो अपने किये की सज़ा भुगतो। (३९) [रुकू अ४पा यात ८]

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिये आसमान के दरवाजे खोले जायँगे और न जन्नत में दाख़िल होने पायेंगे जब तक ऊँट सुई के नाके में से न निकले (अर्थात् कभी नहीं)। और अपराधियों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (४०) कि उनके लिये आग (दोज़ख) का बिछौना

होगा और उनके ऊपर से (आग का ही) ओढ़ना। और सरकश लोगों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (४१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, हम तो किसी शख़्स पर उसकी सामर्थ्य से ज्यादा बोझ नहीं डाला करते, यही लोग जन्नतवासी होंगे कि उसमें हमेशा रहेंगे। (४२) और जो कुछ उनके दिलों में कीना होगा हम निकाल देंगे†। उनके तले नहरें बह रही होंगी और बोल उठेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है जिसने हमको इसका रास्ता दिखलाया और अगर ख़ुदा हमको उपदेश न करता तो हम रास्ता न पाते। बेशक हमारे परवरदिगार के पैग़म्बर सचाई लेकर आये थे और इन लोगों से पुकार कर कह दिया जायगा कि यही जन्नत है जिसके वारिस तुम अपने कामों की बदौलत बना दिये गये हो।(४३) जन्नत के रहनेवाले लोग दोज़ख़ी को पुकारेंगे कि हमारे परवरदिगार ने जो हमसे अहद किया था हमने सच्चा पाया? वह कहेंगे हाँ,इतनेमें पुकारनेवाला उनमें पुकार उठेगा कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत।(४४) जो ख़ुदा के रास्ते से रोकते और उसमें नुक़्स ढूँढते और क़यामत से इन्कार रखते थे। (४५) जन्नत और दोज़ख़ के बीच में एक आड़ होगी यानी आराफ़, उसके सिरे पर कुछ लोग हैं जो हरएक को उनकी शक्लों से पहचानते हैं। स्वर्गवासियों को पुकार कर सलामालेक करेंगे। (आराफ़ वाले ख़ुद) स्वर्ग में नहीं गये मगर वह आशा कर रहे हैं। (४६) और जब उनकी नज़र नरकवासियों की तरफ़ जा पड़ी तो (उनकी ख़राबियाँ देखकर ख़ुदा से) दुआ माँगने लगेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको गुनहगार लोगों के साथ न कर। (४७) [रुकू ५ आयात ८]

आराफ़ वाले कुछ (दोज़ख़ी) लोगों को जिन्हें उनकी सूरतों से पहचानते होंगे पुकार कर कहेंगे कि तुम्हारा माल का जमा करना और घमण्ड करना क्या काम आया।(४८) क्या यही लोग हैं जिनकी बाबत तुम कसमें खाकर कहा करते थे कि अल्लाह इन पर अपना रहम

† मरने के बाद जब वह जन्नत में जायँगे तो भारी हृदय के साथ न जायँगे। वहाँ सुखों से उनका शोक और क्षोभ सब मिट जायगा।

नहीं करेगा। स्वर्ग में चले जाओ, तुम पर न डर होगा और न तुम उदास होगे।(४६) और दोज़ख़ी पुकार कर जन्नतवालों से कहेंगे कि हम पर थोड़ा-सा पानी डाल दो या तुमको जो ख़ुदा ने रोज़ी दी है उसमें से कुछ हमको दे डालो। वह कहेंगे कि ख़ुदा ने यह दोनों चीज़ें काफ़िरों पर हराम कर दी हैं (५०) कि जिन्होंने अपने दीन को हँसी और खेल बना रखा और दुनिया की ज़िन्दगी इनको धोखे में डाले हुए थी। तो आज हम इनको भुलावेंगे जैसे यह लोग अपना इस दिन क़ो मिलना भूले और हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।(५१) हमने इनको क़ुरान पहुँचा दिया, समझ-बूझकर उसमें हर तरह की तफ़सीली भी कर दी। ईमानवाले लोगों के हक़ में हिदायत और रहम है।(५२) क्या यह लोग (मक्केवाले) उसके वाक़ै होने की § राह देखते हैं। जब वह दिन आयेगा तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे, वह क़रार कर लेगें कि बेशक परवरदिगार के पैग़म्बर सच बात लेकर आये थे तो क्या हमारे कोई सिफ़ारशी हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें या हमको (दुनिया में) फिर लौटा दिया जाय, तो जैसे कर्म हम किया करते थे उनके ख़िलाफ़ काम करें। बेशक इन लोगोंने आप अपना नुक़सान किया और जो झूठी बातें उड़ाया करते थे वह भूल गये।(५३) [रुकू ६ आ. ६]

तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में ज़मीन और आसमान को पैदा किया फिर तख़्त पर जा विराजा। वही रात को दिन का पर्दा बनाता है। रात, दिन के पीछे चली आती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि वह सब ख़ुदा के फ़र्माबरदार हैं। सुन रखो कि हर चीज ख़ुदा ही की पैदा की हुई है और ख़ुदा ही का हुक्म है जो संसार का पालनेवाला और बढ़ती वाला है।(५४) अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके दुआ करते रहो। वह हद से बढ़नेवालों को नहीं पसन्द करता।(५५) और देश के सुधरे पीछे उसमें फ़साद मत फैलाओ और डर से और आशा से ख़ुदा को पुकारो। ख़ुदा की कृपा भले लोगों के क़रीब है।(५६) और वही है जो अपनी

§ ईश्वर के कोप या प्रलय की राह देखते हैं।

दया के आगे ख़ुशख़बरी देने को हवाएँ भेजा करता है, यहाँ तक कि वह पानी के भरे बादल उठा लाती है, तो हम किसी मुर्दा § बस्ती की तरफ़ उस बादल को हाँक देते हैं, फिर बादल से पानी बरसाते हैं, फिर पानी से हर तरह के फल निकलते हैं। इसी तरह हम(क़यामत के दिन) मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे। शायद तुम ध्यान दो। (५७) जो भूमि अच्छी है उसमें ईश्वर की आज्ञा से उसकी पैदावार अच्छी होती है और जो (ज़मीन) ख़राब है उसकी पैदावार ख़राब ही होती है। सी इ तरह हम दलीलें तरह-तरह से उन लोगों के लिए बयान करते हैं जो सच को मानते हैं। (५८) [रुकू ७ आयात ५]

बेशक हमने ही नूह (पैग़म्बर) को इनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उन्होंने समझाया कि भाइयों! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवाय कोई तुम्हारी दुआ के क़ाबिल नहीं, मुझको तुमसे बड़े दिन की सज़ा का डर है।(५६) उसकी जाति के सरदारों ने कहा कि हमारे नज़दीक तो तुम ज़ाहिरा भटके हुए हो।(६०) (नूह ने) कहा भाइयों! मैं बहँका नहीं बल्कि मैं तो दुनिया पालनेवाले का भेजा हुआ हूँ। (६१) तुमको अपने परवरदिगार का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत देता हूँ और मैं अल्लाह से ऐसी बातें जानता हूँ जिनको तुम नहीं जानते। (६२) क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो कि तुममें ही से एक शख़्स की मार्फ़त तुम्हारे पालनकर्त्ता की आज्ञा तुमको पहुँची ताकि वह तुमको (ख़ुदा की सज़ा से) डराये और तुम बचो और शायद तुम पर रहम किया जाय।(६३) जिन्होंने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और उन लोगों को जो उसके साथ थे किश्ती† में बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था (उनको) डुबो दिया। वह (अपना भला-बुरा न देख पाते थे) अन्धे थे।(६४) [रुकू ८ आयात ६]

---

§ ऐसी बस्ती जिसकी खेती सूख रही हो।

† नूह के समय में एक भयंकर बढ़िया आई थी। नूह को इसका समाचार पहले ही मिल गया था। इसलिए उन्होंने एक किश्ती बना रखी थी जो उसमें बैठे वे बचे, शेष डूब गये।

आद (एक क़ौम का नाम था)की तरफ़ उनके भाई हूद (पैग़म्बर) को भेजा। उन्होंने समझाया कि भाइयों! अल्लाह की इबादत करो। उसके अलावा तुम्हारा कोई पूजित नहीं। क्या तुम नहीं डरते ? (६५) उस जाति के सरदार जो इन्कारी थे कहने लगे कि हमको तू बेवकूफ़ मालूम होता है और हम तुझको झूठा समझते हैं।(६६) कहो भाइयों! मैं बेवकूफ़ नहीं बल्कि दुनिया के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ। (६७) तुमको अपने परवरदिगार का संदेश पहुँचाता हूँ। और मैं तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूँ। (६८) क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हीं में से एक शख़्स की मार्फ़त तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म तुमको पहुँचा ताकि तुमको डरावे और याद करो जब उसने तुमको नूह की क़ौम के बाद सरदार बनाया और शरीर का फैलाव तुमको ज्यादा दिया। तो अल्लाह के पदार्थों को याद करो, शायद तुम्हारा भला हो। (६९) उन लोगों ने पूछा क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम सिर्फ़ एक ख़ुदा की पूजा करने लगें, जिनको हमारे बड़े पूजते रहे उनको छोड़ बैठें ? पस अगर सच्चे हो तो जिसका हमको डर दिखाते हो उसे ले आओ।(७०) हूद ने जवाब दिया कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर सज़ा और ग़ुस्सा पड़ा। क्या तुम मुझसे कई नामों में झगड़ते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बड़ों ने गढ़ रखा है। अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी तो तुम सज़ा का इन्तज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार कर रहा हूँ।(७१) आख़िरकार हमने अपने रहम से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ थे बचा लिया; और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे और न मानते थे उनकी जड़ें काट डालीं। (७२) [रुकू ९ आयात ८]

समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा।(सालेह ने) कहा कि भाइयों! ख़ुदा ही की पूजा करो। उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं। तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास एक दलील साफ़ आ चुकी कि यह ख़ुदा की(भेजी हुई) ऊँटनी† तुम्हारे लिए एक चमत्कार है।

† हज़रत सालेह को उनकी जातिवालों ने झूठा समझा और कहा कि तुम

तो इसे छुटी फिरने दो कि ख़ुदा की ज़मीन में (से जहाँ चाहे) चरे और किसी तरह का नुक़सान पहुँचाने की नियत से इसको छूना भी नहीं वरना तुमको दुखदाई सज़ा होगी।(७३) याद करो जब उसने तुमको आद (क़ौम) के बाद सरदार बनाया और तुमको ज़मीन पर इस तरह से बसाया कि तुम मैदान में महल खड़े करते और पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो। अल्लाह के एहसानों को याद करो और देश में फ़साद मत फैलाते फिरो।(७४) सालेह की क़ौम में जो लोग अभिमानी सरदार थे, ग़रीब लोगों से जो उनमें से ईमान ले आये थे, पूछने लगे क्या तुमको ख़ूब मालूम है कि सालेह ख़ुदाका पैग़म्बर है। उन्होंने जवाब दिया जो उनको हुक्म देकर हमारी तरफ़ भेजा गया है हमारा तो उस पर यक़ीन है।(७५) जिनको बड़ा घमण्ड था कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान ले आये हो हम तो उसे नहीं मानते।(७६) फिर उन्होंने ऊँटनी को काट डाला और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की और कहा कि ऐ सालेह ! जिसका तुम हमको डर दिखलाते थे अगर तुम पैग़म्बर हो तो हम पर लाकर उतारो। (७७) पस उनको भूकम्प ने घेर लिया और अपने घरों में बैठे के बैठे रह गये ।(७८) सालेह उनसे यों कहता हुआ चला गया कि भाइयों ! मैं तो अपने परवरदिगार का पैग़ाम तुमको पहुँचा चुका और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम नहीं चाहते भला चाहनेवालों को। (७९) हमने (ख़ुदा ने) लूत को भेजा और अपनी क़ौम से (उसने) कहा दुनिया जहान में तुमसे पहले किसी ने ऐसी बेशर्मी नहीं की। (८०) क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर सोहबत के लिए मर्दों पर दौड़ते हो ? बल्कि तुम हद पर नहीं रहते हो।(८१) लूत की जाति का जवाब यही था कि वह कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। यह ऐसे लोग हैं जो पाक साफ़ बनना चाहते हैं। (८२) पस हमने लूत को और उनके घरवालों

सच्चे हो तो एक ऐसी ऊँटनी अभी इस पत्थर से निकालो। सालेह ने दुआ की तो जैसी ऊँटनी उन लोगों ने चाही थी वैसी ही पत्थर से निकल आई। आगे की आयतों में उसी का ज़िक्र है।

को बचाया। मगर उसकी बीवी रह गई। वह पीछे रहनेवालों में थी। (८३) हमने इन पर पत्थरों का मेंह बरसाया। तो देखना कि गुनहगारों का नतीजा कैसा हुआ। (८४) [रुकू १० आयात १२]

मदाइनवालों की तरफ़ उनका भाई शोएब (पैग़म्बर) भेजा गया। उसने कहा ऐ भाइयों! अल्लाह की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं। तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील ज़ाहिर हो चुकी है तो नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा (कम) न दो और दुरुस्ती के बाद ज़मीन में फ़साद न करो, यह तुम्हारे लिए भला है अगर तुम्हें यक़ीन हो।(८५) और हर राह पर डराने सौर रोकने को न बैठो और अल्लाह की राह में दोष मत ढूँढ़ो। और याद करो कि तुम थोड़े थे, फिर ख़ुदा ने तुम्हें बहुत किया और देखो कि फ़साद करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ! (८६) अगर तुममें से एक फ़रीक़ ने मेरी पैग़म्बरी को माना है और एक ने नहीं माना, चाहिए कि तुम सब्र करो जब तक अलाह लह मारे बीच फ़ैसला करे। वह सबसे बढ़कर फ़ैसला करने वाला है (८७)

——)❀(——

नवाँ पारा (क़ालल्मलउल्)

शोएब की क़ौम के घमण्डी सरदार बोले कि ऐ शोएब! या तो तुम हमारे दीन में लौट आओ, नहीं तो हम तुमको और जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने शहर से निकाल देंगे। शोएब ने कहा क्या हम उस हालत में भी लौट आवें जबकि हम उसके ख़िलाफ़ हैं? (८८) जबकि ख़ुदा ने तुम्हारे मज़हब से हमें अलाहिदा कर दिया फिर भी अगर उसमें लौट आवें तो हमने ख़ुदा पर झूठ बाँधा और हमारा काम नहीं कि उसमें आवें। लेकिन अगर हमारा ख़ुदा चाहे (तो हो सकता है)। हमारा परवरदिगार अपने इल्म से हर चीज़ को जानता है, अल्लाह पर हमने भरोसा किया। ऐ ख़ुदा! हममें और हमारी जाति में तू ठीक इन्साफ़ कर क्योंकि तू सबसे अच्छा मुन्सिफ़

है। (८६) शोएब की जाति के सरदार जो इन्कारी थे बोले कि अगर शोएब की राह पर चलोगे तो तुम बरबाद होगे। (६०) फिर उन्हें भूचाल ने (आ) घेरा, वे अपने घरों में बैठे रह गये।(६१) जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया गोया उन बस्तियों में कभी थे ही नहीं। जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया गोया वही बरबाद हुए। (६२) शोएब उनसे हट गया और कहा ऐ क़ौम! मैंने ख़ुदा का संदेशा तुम्हें पहुँचाया और तुम्हारा भला चाहा, फिर जिन लोगों ने न माना उन पर क्या अफ़सोस करूँ। (६३) [रुकू ११ आयात ६]

जिस बस्ती में हमने पैग़म्बर भेजा, वहाँ के रहनेवालों पर हमने सख़्ती भी की और आफ़त भी डाली ताकि यह लोग गिड़गिड़ायें। (६४) फिर हमने बुराई की जगह भलाई को बदला, यहाँ तक कि लोग ख़ूब बढ़े और कहने लगे कि इस तरह की सख़्तियाँ और आराम तो हमारे बड़ों को भी पहुँच चुका है, तो हमने उनको अचानक धर पकड़ा जब वे बेख़बर थे।(६५) और अगर बस्तियोंवाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम आसमान और ज़मीन की बढ़ती को उन पर खोल देते मगर उन लोगों ने झुठलाया तो उन कामों की सज़ा में जो वह करते थे हमने उनको पकड़ा।(६६) तो क्या बस्तियों के रहनेवाले इससे निडर हैं कि उन पर हमारी सज़ा रातोंरात पड़े और वह सोये हुए पड़े हों।(६७) या बस्तियों के रहनेवाले इससे निडर हैं कि हमारी सज़ा दिन दहाड़े उन पर पड़े जब कि वह खेल-कूद रहे हों।(६८) तो क्या अल्लाह के दाँव से निडर हो गये हैं। सो अल्लाह के दाँव से तो वही लोग निडर होते हैं जो बरबाद होनेवाले हैं। (६६) [रुकू १२ आ. ६]

जो लोग वहाँ के लोगों के जाने पीछे ज़मीन के मालिक होते हैं क्या इस बात की सूझ नहीं रखते कि अगर हम चाहें तो इनके गुनाहों के बदले इन पर आफ़त डालें और हम इनके दिलों पर मुहर कर दें। तो यह लोग नहीं सुनते।(१००) (ऐ पैग़म्बर!) यह चन्द बस्तियाँ हैं जिनके हालात हम तुमको सुनाते हैं। और इनके पैग़म्बर इन लोगों के पास करामात भी लेकर आये मगर यह लोग ऐसी तबियत के न थे कि

जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों उस पर ईमान ले आवें। काफ़िरों के दिलों पर ख़ुदा इसी तरह मुहर लगा दिया करता है।(१०१) हमने तो इनमें से बहुतेरों को वचन का पक्का न पाया और हमने इनमें से बहुतों को बेहुक्म पाया। (१०२) फिर उनके बाद हमने मूसा को करामात देकर फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो इन लोगों ने ज़्यादती की। देखना कि फ़सादियों का कैसा अंजाम हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िरऔन! मैं दुनिया के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ (१०४) कि सच के सिवाय ख़ुदा की बाबत दूसरी बात न कहूँ। मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे परवरदिगार से करामात लेकर आया हूँ। तू इसराईल के बेटों को मेरे साथ कर दे। (१०५) बोला कि अगर तू कोई करामात लेकर आया है सच्चा है तो वह लाकर दिखा।(१०६) इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी, तो क्या देखते हैं कि वह ज़ाहिरा एक अजगर हो गई।(१०७) और अपना हाथ निकाला तो लोगों को सफ़ेद दिखलाई देने§ लगा। (१०८) [रुकू १३ आ. ६]

फ़िरऔन के लोगों में से जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बड़ा होशियार जादूगर है। (१०९) चाहता है कि तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे, तो क्या राय देते हो ?(११०) सबने मिलकर कहा कि मूसा और उसके भाई हारूँ को इस वक़्त ढील दे और गाँवों में कुछ हलकारे भेजिये (१११) कि तमाम जानकार जादूगरों को आप के सामने लाकर हाज़िर करें। (११२) निदान जादूगर फ़िरऔन के पास हाज़िर हुए, कहने लगे कि अगर हम जीत जायँ तो हमको इनाम मिलना चाहिए।(११३) कहा—हाँ। और ज़रूर तुम मेरे पास रहा करोगे।(११४) जादूगरों ने कहा—ऐ मूसा! या तो तुम (अपना डण्डा लाकर डालो और या हम ही डालें। (११५) मूसा ने कहा तुम्हीं डालो। जब उन्होंने (अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) डाल दीं तो जादू

§ मूसा को दो चमत्कार मिले थे—(१) उनकी लाठी अजगर बन जाती थी, (२) उनका हाथ इतना चमकता था कि उसकी ओर आँख भर के देखा नहीं जाता था।

के ज़ोर से लोगों की नज़रबन्दी कर दी (कि चारों तरफ़ साँप ही साँप दिखलाई देने लगे) और उनको भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये।(११६) और हमने मूसा की तरफ़ खुदाई पैग़ाम भेजा कि तुम भी अपना असा (लाठी) डाल दो। (मूसा ने) असा (लाठी) डाल दी तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठ-मूठ बना खड़ा किया था उसको वह लीलने लगा। (११७) पस सच बात साबित हो गई और जो कुछ जादूगर ने किया था झूठा हो गया।(११८) पस फ़िरऔन और उसके लोग उस अखाड़े में हारे और ज़लील हो गये। (११९) जादूगर सिजदे (सिर नवाने) में गिर पड़े। (१२०) बोल उठे कि हम तो संसार के परवरदिगार पर ईमान लाये।(१२१) जो मूसा और हारूँ का पालनकर्त्ता है।(१२२) फ़िरऔन बोला अभी मैंने हुक्म ही नहीं दिया और तुम ईमान ले आये हो, न हो यह तुम्हारा फ़रेब है जो शहर में तुमने बाँधा है ताकि वहाँ के लोगों को इस शहर से निकाल दो, सो तुमको अब मालूम हो जाय।(१२३) तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव उल्टे (यानी दाहिना हाथ तो बायाँ पैर और बायाँ हाथ तो दाहिना पैर) कटवाऊँ फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा। (१२४) वह कहने लगे हमको तो अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटकर जाना है। (१२५) और तू हमसे इसलिए दुश्मनी करता है कि हमने अपने परवरदिगार के करामात जब हमारे पास पहुँचे मान लिये हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! हमें सब्र दे औरहमें मुसलमानही मान।(१२६)[रुकू१४आ.१८]

फ़िरऔन के लोगों में से सरदारों ने कहा कि क्या मूसा और उसकी जाति को रहने दोगे कि देश में फ़साद फैलाते फिरें और वह तुझको और तेरे बुतों को छोड़ दें। उसने कहा अब हम इनके बेटों को मारेंगे और उनकी औरतों को रखेंगे और हम उन पर (ग़ालिब) रहेंगे। (१२७)*मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह से मदद माँगो और

* फ़िरऔन के दरबारियों ने मूसा और उनके साथियों को मार डालने की राय दी थी। फ़िरऔन ने उनसे कहा—इनके मर्द मार डाले जायँ और औरतें लौंडियाँ बना ली जायँ ताकि दूसरे इस दुर्दशा से सबक लें।

सब्र करो। देश तो सब अल्लाह ही का है, अपने सेवकों में से जिसको चाहता है उसको वारिस बना देता है और डरनेवालों का अंजाम भला होगा। (१२८) और वह कहने लगे कि तुम्हारे आने से पहले हमको दुख मिला और तेरे आने के बाद भी। (मूसा ने) कहा कि क़रीब है कि परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को मार डाले और तुमको बादशाह करे। फिर देखें तुम कैसे काम करते हो। (१२९) [रुकू १५ आ. ३]

हमने फ़िरऔन के लोगों को अकालों और पैदावार की कमी में फँसाया ताकि वह लोग मान जावें। (१३०) फिर जब उनको कोई भलाई पहुँचती तो कहते यह हमारी ही वजह से है और अगर उन पर कोई आफ़त आती तो मूसा और उनके साथियों की क़िस्मत बुरी बताते। सुनो जी उनका अभाग्य ख़ुदा के यहाँ है लेकिन उनमें के बहुतेरे नहीं जानते। (१३१) फ़िरऔन के लोगों ने (मूसा से) कहा तुम कोई-सी निशानी हमारे सामने लाओ कि उसके ज़रिये से तुम हम पर अपना जादू चलाओ, तो हम तो तुम पर ईमान लानेवाले नहीं हैं। (१३२) फिर हमने उन पर तूफ़ान भेजा और टीड़ियाँ, जुएँ और मेंढक और ख़ून, यह सब जुदा थे। इस पर भी वह लोग अकड़े रहे और ये लोग गुनहगार थे। (१३३) और जब उन पर सज़ा पड़ी तो बोले ऐ मूसा ! तुमसे जो ख़ुदा ने वादा कर रखा है उसके सहारे पर अपने परवरदिगार से हमारे लिये पुकारो। अगर तुमने हम परसे सज़ा को टाल दिया तो हम ज़रूर तुम पर ईमान ले आवेंगे और इसराईल के बेटों को भी तुम्हारे साथ भेज देंगे।(१३४) फिर जब हमने एक ख़ास वक़्त के लिए जिस वक़्त उनको पहुँचना था सज़ा को उनसे उठा लिया तो वह फ़ौरन वादा-ख़िलाफ़ हो गये। फिर हमने उनसे बदला लिया (१३५) और नदी में डुबो दिया† क्योंकि वह हमारी आयतों

† मूसा से और फ़िरऔन से ४० वर्ष लड़ाई रही। मूसा कहते थे कि बनी इसराईल को उ॰ के साथ भेज दिया जाय लेकिन फ़िरऔन न मानता था। उनके शाप से फ़िरऔन के देश पर यह सब आफ़तें आईं। मूसा को पकड़ने के लिए फ़िरऔन ने उनका पीछा किया। मूसा तो नदी को पार कर

को झुठलाते और उनसे बेपरवाही करते थे ।(१३६) ज़मीन जिसमें हमने बढ़ती दी थी हमने उन लोगों को उसके पूर्व और पश्चिम का मालिक कर दिया जो (फ़िरऔन के यहाँ) कमज़ोर हो रहे थे और इसराईल की औलाद पर तेरे परवरदिगार का अच्छा वादा पूरा हो गया उनके सब्र के कारण से और जो फ़िरऔन और उसके क़बीले के लोगों ने बनाया था हमने बरबाद कर दिये । (१३७) हमने इसराईल के बेटों को समुद्र पार उतार दिया, तो वह ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपने बुतों को पूजते थे । (उनको देखकर इसराईल के बेटे मूसा से) कहने लगे कि ऐ मूसा ! जिस तरह इन लोगों के पास बुतें हैं, एक बुत हमारे लिए भी बना दो ।(मूसा ने) जवाब दिया कि तुम जाहिल लोग हो । (१३८) यह लोग जो हैं नाश होनेवाले हैं और जो काम यह लोग कर रहे हैं, झूठे हैं । (१३९) (मूसा ने यह भी) कहा क्या ख़ुदा के सिवाय कोई पूजित तुम्हारे लिए पहुँचा दूँ, हालाँकि उसी ने तुमको संसार के लोगों पर बढ़ती दी है ।(१४०) और ऐ इसराईल के बेटों ! वह वक़्त याद करो जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से बचाया था कि वह लोग तुमको बड़े दुख देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रखते और इसमें तुम्हारे परवरदिगार का बड़ा एहसान था । (१४१) [रुकू १६ आयात १२]

हमने मूसा से तीस रात का वादा किया और हमने दस रातें और मिलाईं । तब तेरे परवरदिगार की मुद्दत चालीस रात पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारूँ से कहा कि मेरी जाति में प्रतिनिधि (क़ायममुक़ाम) बने रहना और सम्भाल रखना और झगड़ालुओं की राह न चलना । (१४२) और जब मूसा हमारे वादे के बमूजिब (तूर पहाड़ पर) हाज़िर हुए§ और उनके परवरदिगार ने उनसे बातें कीं तो (मूसा ने) अर्ज़ किया कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तू मुझको दिखला कि मैं तेरी

गये लेकिन फ़िरऔन डूब गया ।

§ हज़रत मूसा ४० दिन तूर पहाड़ पर रहे । यह इसलिये कि तौरात का उतरना इसी बात पर निर्भर था ।

तरफ़ एक नज़र देखूँ। फ़र्माया तुम हमको हरगिज़ न देख सकोगे, मगर हाँ पहाड़ पर नज़र करो। पस अगर पहाड़ अपनी जगह ठहरा रहे, तो तू भी हमें देख सकेगा। फिर जब उसका पालनकर्ता (प्रकाश) पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा मूर्च्छा खाकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो बोल उठा कि तेरी ज़ात पाक है, मैं तेरे सामने तौबा करता हूँ और तुझ पर ईमान लानेवालों में पहला हूँ। (१४३) (ख़ुदा ने) फ़र्माया ऐ मूसा! हमने तुमको अपनी पैग़म्बरी और आपस की बातचीत से लोगों पर इज़्ज़त दी तो जो (सहीफ़ा-तौरात) हमने तुमको दिया है उसको लो और शुक्रगुज़ार रहो। (१४४) और हमने (तौरात की) तख़्तियों में मूसा के लिए हर तरह की शिक्षा और हर चीज़ का ब्यौरा लिख दिया था। तू इसको मज़बूती से पकड़े रह। अपनी जाति को हुक्म दो कि इस किताब की अच्छी-अच्छी बातों को पल्ले बाँधे रहो और (उनको यह भी समझाओ) मैं तुम लोगों को बेहुक्म लोगों का घर दिखाऊँगा। (१४५) जो लोग नाहक़ देश में अकड़ते फिरते हैं हम उनको अपनी निशानियों से फेर देंगे और (उनके दिलों को ऐसा सख़्त कर देंगे कि) अगर सब करामात भी देखें तो भी उन पर ईमान न लावें और अगर सीधा रास्ता देख पावें तो उसको अपना रास्ता न मानें और अगर गुमराही का रास्ता देख पावें तो उसको रास्ता बना लें। यह नुक़्स उनमें इससे पैदा हुए कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे बेपरवाही करते रहे।(१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और क़यामत के आने को नहीं माना उनका किया धरा सब अकार्थ; यह सज़ा उनको उन्हीं कामों की दी जायगी।(१४७)[रुकू १७ आ. ६]

मूसा के पीछे उनकी जाति ने अपने आभूषण को (गलाकर) उसका एक बछड़ा बना खड़ा किया। वह एक शरीर था जिसकी आवाज़ भी गाय की-सी थी (और उसकी पूजा करने लगे)। उन्होंने यह न देखा कि वह न उनसे बात करता है और न राह दिखा सकता है। उन्होंने उसको (देवता) मान लिया और वे बेइन्साफ़ी थे।(१४८)

जब पछताये और समझे कि हम बहके, तब बोले कि अगर हमारा परवरदिगार हम पर रहम न करे और हमारे गुनाह माफ़ न करेगा तो हम घाटे में आ जायँगे। (१४९) जब मूसा अपनी जाति की तरफ़ ग़ुस्सा और रंज में भरे हुए लौटे तो बोले कि मेरे पीछे मेरी ग़ैरहाजिरी में तुमने बुरी हरकत की। क्या तुमने अपने परवरदिगार के हुक्म की जल्दी की और मूसा ने तख़्तियों को (तौरात को) फेंक दिया और अपने भाई के सिर को पकड़कर उनको अपनी तरफ़ खींचने लगा। कहा ऐ मेरे सगे भाई ! लोगों ने मुझको नाचीज़ समझा और जल्द मुझको मारनेवाले थे तो दुश्मनों को मुझ पर हँसने (का मौक़ा) न दो और मुझको ज़ालिम लोगों के साथ मिलाइए। (१५०) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे और मेरे भाई का गुनाह क्षमा कर और हमको अपने रहम में ले और तू सब रहम करनेवालों से बड़ा है। (१५१) [रुकू १८ आयात ४]

जो लोग बछड़े को ले बैठे उन पर उनके परवरदिगार का ग़ुस्सा पड़ेगा और दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत और झूठ बाँधनेवालों को हम इसी प्रकार† सज़ा दिया करते हैं।(१५२) जिन्होंने बुरे काम किये फिर इसके बाद तौबा की और ईमान लाये तो तुम्हारा परवरदिगार तौबा के बाद माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (१५३) और जब मूसा का ग़ुस्सा जाता रहा तो उन्होंने तख़्तियों को उठा लिया और तख़्तियों में उन लोगों के लिए जो अपने परवरदिगार से डरते हैं हिदायत और दया है। (१५४) और मूसा ने हमारे वादे के वक़्त के लिये अपनी जाति में से ७० आदमी चुने। फिर जब उनको भूचाल ने आ घेरा तो मूसा ने कहा ऐ हमारे परवरदिगार ! अगर तू चाहता तो उन्हें और मुझे पहले

† इसराईल की सन्तानों ने कहा था कि मूसा अपने मन से एक पुस्तक गढ़ लाये हैं। हम तो तब इसे ख़ुदा की ओर से उतरी मानें जब मूसा और ख़ुदा से हमारे सामने बातें हों। मूसा ७० आदमियों को लेकर पहाड़ पर गये। वहाँ उन्होंने बातें सुनीं तो कहने लगे "हम ख़ुदा को देखें तो मानें।" इस पर एक बिजली ने उनको जलाकर राख कर दिया।

ही से मार डालता। क्या तू हमें चन्द मूर्खों के काम से मारे डालता है? यह सब तेरा आज़माना है; जिसे चाहे उसे विचलाये और जिसको चाहे राह दे। तू ही हमारा काम का सँभालनेवाला है। तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हम पर रहम कर, और तू तमाम बख़्शनेवालों से अच्छा है।(१५५) और इस दुनिया और क़यामत की बेहतरी हमारे नाम लिख दे, हम तेरी तरफ़ लग गये। (ख़ुदा ने) कहा कि हमारी सज़ा उसी पर आती है जिसे हम सज़ा दिया चाहते हैं और हमारी दया सब चीज़ों पर एक-सी है। तो हम उसको उन लोगों के नाम लिख लेंगे जो डरते और ज़कात देते और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।(१५६) जो पैग़म्बर बिना पढ़े (मोहम्मद) की पैरवी करते हैं जिनको अपने यहाँ तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं वह उनको अच्छे काम को हुक्म देता है और बुरे काम से मना करता है और पाक चीज़ों को उनके लिए हलाल ठहराता और नापाक चीज़ों को उन पर हराम करता है और उनके बोझ और तौक़ (क़ैदी के गले का बन्धन) उन पर से दूर करता है। तो जो लोग उन पर ईमान लाये और उनकी हिमायत की और उनको मदद दी और जो रोशनी (क़ुरान) इनके साथ भेजी गई है उसको मानने लगे, यही लोग कामयाब हैं। (१५७) [रुकू १९ आयात ६]

कहो कि लोगों! मैं तुम सबकी तरफ़ उस ख़ुदा का भेजा हुआ हूँ कि आसमान और ज़मीन का राज्य उसी का है, उसके सिवाय और कोई पूजित नहीं। वही जिलाता और मारता है। तो अल्लाह पर ईमान लाओ। और उसके रसूल और नबी बिना पढ़े (मोहम्मद) पर कि अल्लाह और उसकी किताबों पर ईमान रखते हैं और उन्हीं की पैरवी करो ताकि तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ। (१५८) और मूसा की जाति में से कुछ लोग ऐसे हैं जो सच्ची बात का उपदेश और सच ही के बमूजिब न्याय करते हैं।(१५९) और हमने याक़ूब के बेटों को बाँटकर एक-एक दादा की संतान के बारह क़बीले (गिरोह) बनाये और जब मूसा से उसकी जाति ने पानी माँगा तो हमने मूसा की तरफ़ वही (ख़ुदा का

पैग़ाम) भेजा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो। लाठी का मारना था कि पत्थर से बारह सोते (चश्मे) फूट निकले। हरएक क़बीले ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया और हमने याक़ूब के बेटों पर बादल की छाया की और उन पर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी रोज़ी है जो हमने तुमको दी है खाओ। और उन लोगों ने (उदूलहुक्मी की) हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया बल्कि अपना ही नुक़सान करते रहे (यानी उनका आना बन्द हुआ)। (१६०) और जब इसराईल‡ के बेटों को आज्ञा दी गई कि इस गाँव (उरीहा) में बसो और इसमें से जहाँ से तुम्हारा जी चाहे खाओ और हित्तुन (गुनाह से दूर हो) कहो, और दरवाज़े में सिजदा करते हुए दाख़िल हो, हम तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और नेकों को ज्यादा भी देंगे। (१६१) तो जो लोग उनमें से ज़ालिम थे वह दुआ जो उनको सिखाई गई थी बदलकर कुछ और कहने लगे तो हमने उनको नटखटी के बदले आसमान से उन पर सज़ा उतारी। (१६२) [रुकू २० आयात ५]

इसराईल के बेटों से उस गाँव का हाल पूछो जो नदी के किनारे था, जब वहाँ के लोग (सनीचर के दिन) ज्यादतियाँ करने लगे कि जब उनके सनीचर का दिन होता तो मछलियाँ उनके सामने आकर जमा होतीं और जब उनके सनीचर का दिन न होता तो न आतीं। यों हमने उन्हें जाँचा इसलिए कि यह लोग हुक्म न माननेवाले थे। (१६३) और जब इनमें से एक जमात ने कहा जिन लोगों को ख़ुदा हलाक़ (मार डाला) करता या उनको कठिन सज़ा में फँसाना चाहता है तुम क्यों उपदेश देते हो। उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे परवरदिगार के सामने पाप दूर करने के लिए, और शायद यह लोग रुक जायँ। (१६४) तो जब वह नसीहतें जो उनको की गई थीं भुला दिया तो जो लोग बुरे काम से मना करते थे उनको हमने बचा लिया और ज़ालिमों को उनकी बेहुमकी के बदले हमने सज़ा में फँसाया। (१६५) फिर जिस काम से

‡ इसराईल की संतान यानी याक़ूब के बारह बेटे। इन बेटों की संतान अलग-अलग एक-एक क़बीला है।

उनको मना किया जाता था जब उसमें हद से बढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फटकारे हुए बन्दर बन जाओ। (१६६) जब तुम्हारे परवरदिगार ने जता दिया था कि वह ज़रूर उन पर क़यामत के दिन तक ऐसे हाकिम मुक़र्रर रखेगा जो उनको बुरी तकलीफ़ें पहुँचाते रहेंगे। तुम्हारा परवरदिगार जल्द सज़ा देता है और वह बेशक माफ़ करनेवाला मेहरबान है।(१६७) हमने यहूद को गिरोह-गिरोह करके मुल्क में अलग अलग कर दिया है। उनमें से कुछ भले थे और कुछ भले नहीं थे और हमने उनको सुख और दुख से आज़माया। शायद वह फिरें।(१६८) फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ किताब के वारिस बने कि इस नाचीज़ दुनिया की चीज़ें लीं और कहते हैं कि यह गुनाह तो हमारा माफ़ हो जायगा और अगर इसी तरह की कोई सांसारिक वस्तु उनके सामने आ जावे तो उसे ले लेते हैं—क्या इन लोगों से वह अहद जो किताब (तौरात) में लिखी है नहीं हुई कि सच बात के सिवाय दूसरी बात ख़ुदा की तरफ़ न कहेंगे—जो कुछ उसमें है उन्होंने उसको पढ़ लिया और जो लोग परहेज़गार हैं क़यामत का घर उनके हक़ में कहीं अच्छा है (ऐ याक़ूब के बेटों !) क्या तुम नहीं समझते ?(१६९) और जो लोग किताब को मज़बूती से पकड़े हुए हैं और नमाज़ पढ़ते हैं तो हम ऐसे अच्छे काम करनेवालों के सवाब को ख़त्म नहीं होने देंगे।(१७०) और जब हमने उन पर पहाड़ को इस तरह जा लटकाया कि गोया वह सायबान था और वे समझे कि यह उन पर गिरेगा, तो हमने कहा जो किताब तुमको दी है उसे मज़बूती के साथ लिए रहना और जो कुछ उसमें है उसे याद रखना। शायद तुम परहेज़गार बनो।(१७१) [रुकू २१ आ. ६]

और याद करो वह समय जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम के बेटों से उनकी पीठों से उनकी सन्तान को निकाला था और उनके मुक़ाबले में ख़ुद उन्हीं को गवाह बनाया, क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ। सब बोले हाँ। यह गवाही हमने इसलिए ली कि क़यामत के दिन न कहने लगो कि हम बात से बेख़बर ही रहे।(१७२) या कहने लगो कि शिर्क (ख़ुदा का साझी ठहराना) तो हमारे बड़ों ही ने निकाला था

और हम उनके बाद उन्हीं की सन्तान थे तो (ऐ ख़ुदा !) क्या तू हमको उन लोगों के गुनाहों के जुर्म के बदले में हलाक किये देता है जिन्होंने भूल की ?(१७३) और इसी तरह आयतों को हम तफ़सील के साथ बयान करते हैं। शायद वह फिरें (१७४) और(ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़कर सुनाओ जिसको हमने अपनी (आयतें) करामातें दी थीं, फिर वह आयतों में से निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लगा और वह गुमराहों (भूले हुओं) में जा मिला ।(१७५) अगर हम चाहते तो उनकी बढ़ती से उनका दर्जा ऊँचा करते मगर उसने नीचे में गिरना चाहा और अपने दिल की ख़्वाहिशों के पीछे लग गया तो उसकी कहावत कुत्ते जैसी कहावत हो गई कि अगर उसको खदेर दोगे तो जीभ बाहर लटकाये रहे और अगर उसको (उसी की दशा पर) छोड़े रखो तो भी जीभ लटकाये रहे । यही कहावत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो यह क़िस्से बयान करो ताकि यह लोग सोचें।(१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनकी बुरी कहावत है और वह कुछ अपना ही बिड़ागते रहे हैं ।(१७७) जिनको ख़ुदा राह दिखाये वही राह पाते हैं और जिनको वह गुमराह करे वही लोग घाटे में हैं। (१७८) और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोज़ख़ ही के लिए पैदा किये हैं। उनके दिल तो हैं (मगर) उनसे समझने का काम नहीं लेते और उनके आँखें भी हैं (मगर) उनसे देखने का काम नहीं लेते और उनके कान भी हैं उनसे सुनने का काम नहीं लेते। सारांश यह कि यह लोग पशुओं की तरह हैं बल्कि उनसे भी गिरे हुए हैं यही बेख़बर हैं ।(१७९) और अल्लाह के (सब) नाम अच्छे हैं तो उसके नाम लेकर उसको (जिस नाम से चाहो) पुकारो और जो लोग उसके नामों में बुराई करते हैं उनको छोड़ दो, वह अपने किये का अन्जाम पावेंगे ।(१८०) और हमारी दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो सब बात की नसीहत और उसी के अनुसार इंसाफ़ भी करते हैं। (१८१) [रुकू २२ आयात १०]

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम उन्हें इस तरह

पर कि उनको ख़बर भी न हो धीरे-धीरे (दोज़ख़ की तरफ़) ले जायेंगे। (१८२) और हम उनको (संसार में) मोहलत देते हैं, हमारा दाँव वेशक पक्का है। (१८३) क्या इन लोगों ने ख़्याल नहीं किया कि इनके साहिब को (यानी मुहम्मद को) किसी तरह का जनून (पागलपन) तो नहीं है। यह तो खुल्लमखुल्ला (ख़ुदा की सज़ा से) डरानेवाला है। (१८४) क्या इन लोगों ने आसमान और ज़मीन के इन्तज़ाम और ख़ुदा की पैदा की हुई किसी चीज़ पर भी नज़र नहीं की और न इस बात पर कि आश्चर्य नहीं इनको मौत ने घेरा हो। तो अब इतना समझाये पीछे और कौन-सी बात है जिसको सुनकर ईमान ले आवेंगे। (१८५) जिसको ख़ुदा गुमराह करे तो फिर उसका कोई भी राह दिखानेवाला नहीं और ख़ुदा ही उनको छोड़े हुए है कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (१८६) (ऐ पैग़म्बर! लोग) तुमसे क़यामत के बारे में पूछते हैं कि कहीं उसका ठिकाना भी है। तुम जवाब दो कि उसका इल्म तो मेरे परवरदिगार को है। बस वही उनको उसके वक़्त पर लाकर दिखावेगा। वह एक बड़ी भारी घटना आसमान और ज़मीन में होगी। क़यामत अचानक तुम लोगों के सामने आवेगी। (ऐ पैग़म्बर !) यह लोग तुमसे (क़यामत का हाल) ऐसे पूछते हैं गोया तुम उसकी खोज में लगे रहे हो (तो इनसे) कहो कि इसकी मालूमात तो बस ख़ुदा ही को है लेकिन अक्सर आदमी नहीं समझते। (१८७) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो मेरा अपना जातीय नुक़सान फ़ायदा भी मेरे क़ाबू में नहीं, मगर जो ख़ुदा चाहे (होकर रहता है) और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो अपना बहुत-सा लाभ कर लेता और मुझको (किसी तरह का) दुख न होता, मैं तो उन लोगों को जो ईमान लाना चाहते हैं (दोज़ख़ का) डर और (जन्नत की) ख़ुश-ख़बरी सुनानेवाला हूँ। (१८८) [रुकू २३ आयात ७]

वही है जिसने तुमको एक शरीर से पैदा किया और उससे उनकी स्त्री को निकाला ताकि पुरुष स्त्री की तरफ़ ध्यान दे, तो जब पुरुष की स्त्री से सोहबत हुई तो स्त्री के एक हलका-सा गर्भ रह गया, फिर वह

उस गर्भ को लिए-लिए फ़िरती थी। फिर जब (गर्भ के कारण) ज्यादा बोझ हो गया तो मियाँ-बीवी दोनों मिलकर ख़ुदा से दुआ माँगने लगे कि (ऐ ख़ुदा !) अगर तू हमको पूरा बच्चा देगा तो हम तेरा बड़ा एहसान मानेंगे।(१८९) फिर जब उनको पूरा बच्चा दिया तो उस (सन्तान) में जो ख़ुदा ने उनको दी थी ख़ुदा के लिये शरीक ठहराया। सो ख़ुदा के बनावटी साभी से ख़ुदा की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है।(१९०) क्या वह ऐसे को (ख़ुदा का) शरीक बनाते हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वह ख़ुद पैदा किये हुए हैं।(१९१) वह न इनकी मदद करने की ताक़त रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं।(१९२) अगर तुम उनको सच्चे रास्ते की ओर बुलाओ तो तुम्हारी हिदायत पर न चल सकें, चाहे तुम उनको बुलाओ या चुप रहो (दोनो बातें तुम्हारे लिए बराबर हैं)। (१९३) (ऐ मुशरिकों ! तुम) ख़ुदा के सिवाय जिन लोगों को बुलाते हो (वह भी) तुम-जैसे सेवक हैं, अगर तुम सच्चे हो तो उन्हें उस हालत में पुकारो जब वह तुम्हें जवाब दे सकें।(१९४) क्या उनके ऐसे पाँव हैं जिनसे चलते हैं या उनके ऐसे हाथ हैं जिनसे पकड़ते हैं या उनकी ऐसी आँखें हैं जिनसे देखते हैं या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुनते हैं (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अपने (ठहराये हुए) शरीकों को बुला लो, फिर (सब मिलकर) मुझ पर अपना दाँव कर चलो और मुझको (ज़रा भी)मोहलत मत दो।(१९५) अल्लाह जिसने इस किताब को उतारा है वही मेरा काम सम्भालने वाला है और वही अच्छे बंदों की हिमायत करता है।(१९६) और उसके सिवाय जिनको तुम बुलाते हो न वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं न अपनी मदद कर सकते हैं।(१९७) अगर तुम उनको सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ तो (तुम्हारी एक) न सुनें और वह तुझको ऐसे दिखलाई देते हैं कि (गोया) वह तेरी तरफ़ देख रहे हैं हालाँकि वह देखते नहीं। (१९८) (ऐ पैग़म्बर !) माफ़ी को पकड़ो और (लोगों से) भले काम (करने) को कहो और मूर्खों से अलग रहो।(१९९) और अगर शैतान के गुदगुदाने से गुदगुदी तुम्हारे दिल में पैदा हो तो ख़ुदा से पनाह माँगो,वह सुनता और जानता है।(२००)

जो लोग परहेज़गार हैं जब कभी शैतान की तरफ़ का कोई ख़याल उनको छू भी जाता है तो जान जाते हैं और वह उसी दम देखने लगते हैं।(२०१) इनके भाई इनको गुमराही में घसीटते हैं, फिर कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम इन लोगों के पास कोई आयत नहीं लाते तो कहते हैं कि क्यों कोई आयत नहीं बनाई।(२०३) तुम कहो कि मैं तो जो कुछ मेरे परवरदिगार के यहाँ से मेरी तरफ़ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) आया है उसी पर चलता हूँ। यह हिदायत और रहम और सोच-समझ की बातें ईमानवालों के लिए तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हैं। और जब क़ुरान पढ़ा जाया करे तो उसको कान लगाकर सुनो और चुप रहो, शायद तुम पर कृपा की जाय। (२०४) और अपने दिल में गिड़गिड़ाकर और डरकर और धीमी आवाज़ से सुबह व शाम अपने परवरदिगार को याद करते रहो और भूले न रहो।(२०५) जो तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीकी हैं उसकी पूजा से मुँह नहीं फेरते और उसकी पवित्रता की माला फेरते हैं और उसी के आगे सिर नवाते हैं। (२०६) [रुकू २४ आयात १८] ★ सिजदा १

——:o:——

८ सूरे अन्फ़ाल ८८

मदीना में उतरी, इसमें ७५ आयतें, और १० रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला मेहरबान है। (ऐ पैग़म्बर! मुसलमान सिपाही) तुमसे लूट के माल† का हुक्म पूछते हैं, कह दो कि लूट का माल तो अल्लाह और पैग़म्बर का है, तुम लोग ख़ुदा से डरो और आपस में मेल करो। अगर तुम मुसलमान हो तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा मानो। (१) मुसलमान वही हैं कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल दहल जाते हैं और जब ख़ुदा की आयतें

† वह माल जो मुसलमानों को लड़े पीछे हाथ आये।

उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह उनके ईमान को ज़्यादा कर देती हैं और वह अपने परवरदिगार कर्ता पर भरोसा रखते हैं।(२) जो नमाज़ पढ़ते और हमने जो उनको रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं, (३) यही सच्चे मुसलमान हैं, इनके लिए इनके परवरदिगार के यहाँ दर्जे हैं और माफ़ी और इज़्ज़त की रोज़ी। (४) जैसे तुमको तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे घर से निकाला और मुसलमानों का एक गिरोह राज़ी न था (५) कि वह लोग ज़ाहिर हुए पीछे तुम्हारे साथ सच बात में झगड़ा करने लगे। गोया उनको मौत की तरफ़ ढकेला जाता है और वह मौत को आँखों देख रहे हैं। (६) जब ख़ुदा तुम मुसलमानों से प्रतिज्ञा करता था कि दो जमातों § में से (कोई सी) एक तुम्हारे हाथ आ जायगी और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा न लगे वह तुम्हारे हाथ आ जाय और अल्लाह की मर्ज़ी यह थी कि अपने हुक्म से हक़ को क़ायम करे और काफ़िरों की जड़ (बुनियाद) काट डाले। (७) ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दिखावे। चाहे काफ़िरों को भले ही बुरा लगे। (८) यह वह वक़्त था कि तुम अपने परवरदिगार के आगे बिनती करते थे तो उसने तुम्हारी सुन ली कि हम लगातार हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेंगे। (९) और यह फ़रिश्तों की सहायता जो ख़ुदा ने की सिर्फ़ ख़ुश करने को ताकि तुम्हारे दिल उसकी वजह से संतुष्ट हो जायँ वर्ना जीत तो अल्लाह की ही तरफ़ से है। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हाकिम है। (१०) [रुकू १ आयात १०]

यह वह समय था कि ख़ुदा अपनी तरफ़ से सब्र के लिए औंघ को तुम पर उतार रहा था और आसमान से तुम पर पानी बरसाया ताकि उसके ज़रिये से तुमको पाक करे और शैतानी गंदगी को तुमसे दूर कर दे और ताकि तुम्हारे दिलों का साहस बँधावे और

§ अबूजहल या अबूसुफ़ियान की जमात, जिनकी मक्के में धाक बैठी थी। उनमें से एक तुम्हारे साथ आ जायगा। चुनाँचे अबूसुफ़ियान बाद में मुसलमानों के साथ आ गये।

उसी के ज़रिये तुम्हारे पाँव जमाये रखे। (११) (ऐ पैग़म्बर !) यह वह वक़्त था कि तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं, तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफ़िरों के दिलों में डर डाल देंगे, बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े-टुकड़े कर डालो ।(१२) यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उनके पैग़म्बर का सामना किया और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है ।‡ (१३) यह तुम भुगत लो और जान लो कि काफ़िरों को दोज़ख़ की सज़ा है ।(१४) ऐ मुसलमानों ! जब काफ़िरों से तुम्हारे लश्कर की मुठभेड़ हो जाय तो उनको पीठ न दिखाना ।(१५) और जो शख़्स ऐसे मौके पर काफ़िरों को अपनी पीठ दिखायेगा वह ख़ुदा के कोप में आ गया और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह है,मगर यह कि हुनर करता हो लड़ाई का या फ़ौज में जा मिलता हो ।(१६) पस काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि उनको अल्लाह ने क़त्ल किया और जब तुमने तीर चलाये तो तुमने तीर नहीं चलाये बल्कि अल्लाह ने तीर चलाये और वह मुसलमानों पर एहसान किया चाहता था । बेशक अल्लाह सुनता और जानता है ।(१७) यह बात जान लो कि ख़ुदा को काफ़िरों की तदबीरों को नाक़िस कर देना मंज़ूर है ।(१८) तुम जो जीत माँगते थे, वह जीत तुम्हारे सामने आ गई और अगर बाज़ रहोगे तो यह तुम्हारे हक़ में भला होगा और अगर तुम फिरकर आओगे तो हम भी फिरकर आवेंगे, और तुम्हारा जत्था कितना ही बहुत हो कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आयेगा, और जानो कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है । (१९) [रुकू २ आयात ९]

मुसलमानों ! अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म मानो और

‡ यहाँ तक बद्र की लड़ाई का हाल था । इसमें फ़रिश्तों का मुसलमानों की मदद को आना और काफ़िरों को बरबाद कर देना और पानी बरसना सब कुछ बयान किया गया है ताकि मुसलमान ख़ुदा का हुक्म मानें और रसूल के कहने पर चलें ।

उससे सिर न उठाओ और तुम सुन ही रहे हो। (२०) और उन लोगों जैसे न बनो जिन्होंने कह दिया कि हमने सुना हालाँकि वह सुनते नहीं। (२१) अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों में निकृष्ट बहरे गूँगे हैं जो नहीं समझते। (२२) अगर अल्लाह इनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी ज़रूर देता लेकिन अगर ख़ुदा इनको सुनने की क़ाबिलियत दे तो भी यह लोग मुँह फेरकर उल्टे भागें। (२३) मुसलमानों! जब पैग़म्बर तुमको ऐसे दीन की तरफ़ बुलाते हैं जो तुममें नई रूह फूँकता है, तो तुम अल्लाह और पैग़म्बर का हुक्म मानो और जाने रहो कि आदमी और उसके दिल के दरमियान में ख़ुदा आ जाता है और यह कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे। (२४) और उस आफ़त से डरते रहो जो ख़ासकर उन्हीं लोगों पर नहीं आयेगी जिन्होंने तुममें से सिर उठाया है और जाने रहो कि अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है। (२५) और याद करो जब तुम ज़मीन में (मक्का में) थोड़े-से थे कमज़ोर समझे जाते थे, इस बात से डरते थे कि लोग तुमको ज़बरदस्ती पकड़कर न उड़ा ले जायँ, फिर ख़ुदा ने तुमको जगह दी और अपनी सहायता से तुम्हारी मदद की और अच्छी-अच्छी चीज़ें तुम्हें खाने को दीं इसलिए कि तुम शुक्र करो। (२६) मुसलमानों! अल्लाह और रसूल की धरोहर मत मारो; न आपस की धरोहर मारो, और तुम तो जानते हो। (२७) जाने रहो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी दौलत बखेड़े हैं और अल्लाह के यहाँ बड़ा अंजाम है। (२८) [रुकू ३ आ. ६]

मुसलमानों! अगर तुम ख़ुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़ैसला कर देगा और तुम्हारे पाप तुमसे दूर कर देगा और तुमको क्षमा करेगा और अल्लाह बड़ा रहीम है। (२९) जब काफ़िर तुम पर फ़रेब करते थे कि तुमको पकड़कर रखें या तुमको मार डालें या तुमको देश-निकाला कर दें और काफ़िर चाल करते थे और अल्लाह भी चाल करता था और ख़ुदा सब चाल चलनेवालों से अच्छी चाल चलनेवाला है। (३०) जब हमारी आयतें इन काफ़िरों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इसी तरह की बातें

कह लें, यह तो आगे के लोगों की कहानियाँ हैं। (३१) जब काफ़िर कहने लगे कि ऐ अल्लाह ! अगर तेरी तरफ़ से यही सच है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कड़ी सज़ा डाल।(३२) ख़ुदा ऐसा नहीं है कि तुम इनमें रहो और वह इनको सज़ा दे और अल्लाह ऐसा नहीं है कि लोग माफ़ी माँगें और वह इनको सज़ा दे।(३३) क्योंकर अल्लाह उन्हें सज़ा न देगा जबकि वह मसजिद हराम (यानी काबा के घर) से लोगों को रोकते हैं। हालाँकि वह उसके हक़दार नहीं, उसके हक़दार तो परहेज़गार हैं, लेकिन इनमें के बहुतेरे नहीं समझते।(३४) काबा के घर के पास सीटियाँ और तालियाँ बजाने के सिवाय उनकी नमाज़ ही क्या थी, तो (ऐ काफ़िर !) जैसा तुम इन्कार करते रहे हो उसके बदले सज़ा भुगतो।(३५) इसमें सन्देह नहीं कि यह काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि ख़ुदा के रास्ते से रोकें, सो (अभी और) माल ख़र्च करेंगे, फिर (वही माल) इनके हक़ में रंज का कारण होगा और आख़िर हार जायेंगे। काफ़िर दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जायँगे (३६) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाये, फिर उस ढेर को दोज़ख़ में झोंक दे। यही लोग हैं जो घाटे में रहे।(३७) [रुकू ४ आयात ६]

काफ़िरों से कहो कि अगर मान जायेंगे तो उनके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जायँगे और अगर फिर शरारत करेंगे तो अगले लोगों की चाल पड़ चुकी है, जैसा उनके साथ हुआ है इनके साथ भी होगा।(३८) काफ़िरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फ़साद न रहे और सब ख़ुदा ही का दीन हो जाय। पस अगर मान जावें तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसको देख रहा है।(३९) मगर सिर उठावें तो तुम समझते रहो कि अल्लाह तुम्हारा सहायक और अच्छा मददगार है। (४०)

——०——

दसवाँ पारा (वालमू)

और जान रखो कि जो चीज़ तुम लूटकर लाओ उसका पाँचवाँ भाग खुदा का और पैग़म्बर का और पैग़म्बर के सम्बन्धियों का, अनाथों का और ग़रीबों और मुसाफ़िरों का। अगर तुम खुदा का और उस (मदद ग़ैबी) का यक़ीन रखते हो जो हमने अपने सेवक पर फ़ैसले के दिन उतारी थी जिस दिन कि (मुसलमानों और काफ़िरों के) दो लश्कर एक दूसरे से गुथ गये थे और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है।(४१) यह वह वक़्त था कि तुम (मुसलमान मैदान जंग के) उस सिरे पर थे और काफ़िर दूसरे सिरे पर और काफ़िला (नदी के किनारे) तुमसे नीचे की तरफ़ को उतर गया था। अगर तुमने आपस में (लड़ाई का) ठहराव किया होता तो ज़रूर वादा खिलाफ़ी करनी पड़ती। लेकिन खुदा को जो कुछ करना मंज़ूर था उसको पूरा कर दिखलाया ताकि मर जाये तो सूझकर मरे और जो जीवे तो सूझकर जीवे और अल्लाह सुनता और जानता है। (४२) ऐ पैग़म्बर! उसी वक़्त की घटना वह भी है जबकि खुदा ने तुमको थोड़े काफ़िर दिखलाये और अगर उन्हें तुमको बहुत कर दिखाता तो तुम ज़रूर हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में भी ज़रूर आपस में झगड़ने लगते। मगर खुदा ने बचाया, बेशक वह दिली ख़यालों से जानकार है। (४३) और जब तुम एक दूसरे से लड़ मरे काफ़िरों को तुमने मुसलमानों की आँखों में थोड़ा कर दिखलाया और काफ़िरों की आँखों में तुमने मुसलमानों को बहुत कर दिखाया ताकि खुदा को जो कुछ करना मन्ज़ूर था पूरा कर दिखाये और आखिरकार सब कामों का सहारा अल्लाह ही पर जाकर ठहरता है।(४४) [रुकू ५ आयात ७]

मुसलमानों! जब किसी फ़ौज से तुम्हारी मुठभेड़ हो जाया करे तो जमे रहो और अल्लाह को खूब याद करो, शायद तुम मुराद पाओ।(४५) अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म मानो और आपस में झगड़ा न करो नहीं तो साहस तोड़ दोगे और तुम्हारी हवा उखड़

जायगी और ठहरे रहो और अल्लाह ठहरनेवालों का साथी है। (४६) उन (काफ़िरों) जैसे न बनो जो शेख़ी के मारे और लोगों को दिखाने के लिए अपने घरों से निकल खड़े हुए और ख़ुदा की राह से रोकते थे और जो कुछ भी यह लोग करते हैं अल्लाह के क़ाबू में है।(४७) जब शैतान ने उन (काफ़िरों) की हरकतें उनको अच्छी कर दिखलाईं और कहा आज लोगों में कोई ऐसा नहीं जो तुमको जीत सके और मैं तुम्हारा मददगार हूँ, फिर जब दोनों फ़ौजें आमने सामने आईं वह अपने उल्टे पाँव हटा और कहने लगा कि मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं, मैं वह चीज़ देख रहा हूँ जो तुमको नहीं सूझ पड़ती, मैं तो अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है।(४८)[रुकू ६ आ.४]

जब मुनाफ़िक़ों और जिन लोगों के दिलों में(इन्कारी की) बीमारी थी, कहते थे मुसलमान घमंडी हैं और जो ख़ुदा पर भरोसा रखेगा तो अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमतवाला है। (४६) और ऐ पैग़म्बर !) तुम देखोगे जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं उनके मुखों को गुन्धियों पर मारते जाते हैं और(कहते जाते हैं कि देखो) दोज़ख़ की सज़ा को भोगो।(५०) यह तुम्हारे उन (बुरे कामों का) बदला है जो तुमने अपने हाथों पहले से भेजे हैं और इसलिए कि ख़ुदा तो सेवकों पर किसी तरह का ज़ुल्म नहीं करता।(५१) जैसी गति फ़िरऔन की जाति और उनके अगलों की हुई उन्होंने ख़ुदा की आयतों से इन्कार किया तो ख़ुदा ने उनके गुनाहों के बदले उनको धर पकड़ा। अल्लाह ज़बरदस्त है, उसकी मार बड़ी सख़्त है। (५२) यह इसलिए कि ख़ुदा ने जो पदार्थ किसी क़ौम को दिये हों जब तक कि वह लोग आप ही न बदलें जो उनके जी में है, ख़ुदा (की आदत) नहीं कि उसमें कुछ हेर-फेर करे, और अल्लाह सुनता और जानता है।(५३) जैसी गति फ़िरऔन और उन लोगों की हुई जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके पापों के बदले मार डाला और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया और वह अन्यायी हैवान थे (वैसे ही गति इनकी होगी)।(५४) अल्लाह के नज़दीक सबसे ख़राब वह हैं जो इन्कार करते हैं फिर नहीं मानते।(५५) जिससे तुमने अहद की उस

अपनी अहद को हर बार तोड़ते हो और नहीं डरते। (५६) सो अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ तो उन पर ऐसा ज़ोर डालो कि जो लोग उनकी हिमायत पर हैं इनको भागते देखकर उनको भी भागना ही पड़े, शायद यह लोग सीख लें।(५७) और अगर तुमको किसी जाति की तरफ़ से दग़ा का शक हो तो बराबरी का ध्यान रखकर उन्हीं की(उस अहद की) तरफ़ फेंक मारो, अल्लाह दग़ाबाज़ों को नहीं चाहता।(५८)[रुकू ७ आ.१०]

काफ़िर यह न समझें कि(हमारे क़ाबू से) निकल गये। वह कदापि हरा नहीं सकते।(५६) (मुसलमानों! सिपाहियाना) ताक़त से और घोड़ों के बाँधे रखने से जहाँ तक तुमसे हो सके काफ़िरों के मुक़ाबिले के लिए साज व सामान इकट्ठा किये रहो कि ऐसा करने से अल्लाह के दुश्मनों पर और अपने दुश्मनों पर अपनी धाक बैठाये रखोगे और उनके सिवाय दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते, अल्लाह उनसे जानकार है और ख़ुदा की राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे, वह तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायगा। (६०) (ऐ पैग़म्बर!) अगर यह लोग सन्धि (सुलह) की तरफ़ झुकें तो तुम भी उसकी तरफ़ झुको और अल्लाह पर भरोसा रखो क्योंकि वही सुनता-जानता है।(६१) अगर उनका इरादा तुमसे दग़ा करने का होगा तो अल्लाह तुमको काफ़ी है, वही सबसे ताक़तवर है जिसने अपनी मदद का और मुसलमानों का तुमको ज़ोर दिया। (६२) और मुसलमानों के दिलों में आपस में मुहब्बत पैदा कर दी। अगर तुम ज़मीन पर के सारे ख़ज़ाने भी ख़र्च कर डालते तो भी उनके दिलों में मुहब्बत न पैदा कर सकते मगर अल्लाह ने उन लोगों में मुहब्बत पैदा कर दी, वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (६३) ऐ पैग़म्बर! अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको काफ़ी हैं। (६४) [रुकू ८ आयात ६]

ऐ पैग़म्बर! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि अगर तुम में से जमे रहनेवाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज़्यादा ताक़तवर बैठेंगे अगर तुम में से सौ होंगे तो हज़ार काफ़िरों पर ज़्यादा ताक़तवर बैठेंगे। क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझते ही नहीं। (६५) अब ख़ुदा ने

तुम पर से अपने हुक्म का (बोझ) हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमज़ोरी है तो अगर तुममें से जमे रहनेवाले सौ होंगे दो सौ पर ज़्यादा ताक़तवर रहेंगे और अगर तुममें से हज़ार होंगे ख़ुदा के हुक्म से वह दो हज़ार पर ज़्यादा ताक़तवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी भी है जो जमे रहते हैं। (६६) पैग़म्बर जब तक देश में अच्छी तरह मार-धार न लें उनके पास क़ैदियों का रहना उचित नहीं। तुम तो संसार के माल-असबाब चाहनेवाले हो और अल्लाह क़यामत की चीज़ें देना चाहता है और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है।(६७) अगर ख़ुदा के यहाँ से हुक्म तहरीरी पहले से न हो चुका होता तो जो कुछ† तुमने लिया है उसमें अवश्य तुमको बुरी ही सज़ा मिलती।(६८) तो जो कुछ तुमको लूट से हाथ लगा है उसको पाकर समझकर खाओ और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (६६) [रुकू ६ आयात ५]

ऐ पैग़म्बर! क़ैदी जो तुम मुसलमानों के क़ब्ज़े में हैं उनको समझा दो कि अगर अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे दिलों में नेकी है तो जो तुमसे छीना गया है उससे अच्छा तुमको देगा और तुम्हारे अपराध भी क्षमा करेगा, और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (७०) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर यह लोग तुम्हारे साथ दग़ा करना चाहेंगे जो पहले भी अल्लाह से दग़ा कर चुके हैं तो उसने इनको गिरफ़्तार करा दिया, और अल्लाह जानकार और हिकमतवाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अल्लाह के रास्ते में अपनी जान-माल से कोशिश की और जिन लोगों ने जगह दी और मदद की, यही लोग एक के वारिस एक; और जो लोग ईमान तो ले आये और देश त्याग नहीं किया तो तुम मुसलमानों को उनके वारिस होने से कुछ सम्बन्ध नहीं जब तक देश त्याग करके तुममें न आ मिलें; हाँ अगर

† बद्र की लड़ाई में बहुत-से काफ़िरों को मुसलमानों ने पकड़ लिया था। उनको फ़िदया (कुछ रुपया या माल) लेकर छोड़ दिया था। यहाँ (जो कुछ) का अर्थ है वही धन या माल जिसके बदले कैदियों को छोड़ दिया गया था।

दीन के बारे में तुमसे मदद चाहें तो तुमको उनकी मदद करनी लाज़िम है, मगर उस जाति के मुक़ाबिले में नहीं कि तुममें और उनमें अहद हो, और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (७२) और काफ़िर भी आपस में दोस्त हैं। अगर ऐसा न करोगे तो देश में (फ़साद) फैल जायगा और देश में बड़ा फ़साद होगा।(७३) और जो लोग ईमान लाये उन्होंने (मुहाजरीन) देश त्याग किया और अल्लाह के रास्ते में कोशिश की और जिन लोगों ने जगह दी (अन्सार) और मदद की, यही पक्के मुसलमान हैं, इनके लिए क्षमा और इज़्ज़त की रोज़ी है।(७४) और जो लोग बाद को ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और तुम मुसलमानों के साथ होकर जिहाद किया तो वह तुम्हीं में दाखिल हैं और रिश्तेदार अल्लाह के हुक्म के बमूजिब (ग़ैर आदमियों की निस्बत) ज़्यादा हक़दार हैं। अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (७५) [रुकू १० आयात ६]

—०—

९ सूरे तौबा* ११३

मदीना में उतरी, इसमें १२९ आयतें और १६ रुकू हैं

जिन मुशरिकों के साथ तुमने अहद कर रखा था अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ से उनको साफ़ जवाब‡ है।(१) तो (ऐ मुशरिकों! अमन से) चार महीने (ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम और रजब) मुल्क में चलो-फिरो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं

* इस सूरत के शुरू में खुदा ने बिस्मिल्लाह का कलाम नहीं भेजा, क्योंकि ये आयतें उस समय उतरी हैं जब मुशरिकों ने मुसलमानों के साथ किया हुआ समझौता तोड़ डाला था और इसलिए खुदा उनसे बहुत नाराज़ था।

‡ यानी मुशरिकों ने अपना अहद तोड़ा तो मुसलमान भी उस समझौते का पालन नहीं करेंगे। यह हुदैबिया की संधि की ओर इशारा है।

सकोगे, और अल्लाह काफ़िरों को ज़िल्लत देनेवाला है।(२) और बड़े हज्ज के दिन अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ से लोगों को सूचना दी जाती है कि अल्लाह और उसका पैग़म्बर मुशरिकों से अलग है। पस अगर तुम तौबा करो तो यह तुम्हारे लिये भला है और अगर फिरे रहो तो जान रखो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और काफ़िरों को दुखदाई सज़ा को ख़ुशख़बरी सुना दो। (३) हाँ मुशरिकों में से जिनके साथ तुमने अहद कर रखा था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ किसी तरह की कमी नहीं की और न तुम्हारे सामने किसी की मदद की, वह अलग हैं, तो उनके साथ जो अहद है, उसे उस समय तक जो उनके साथ ठहरी थी पूरा करो, क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो बचते हैं उन्हें वह चाहता है। (४) फिर जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो और उनको गिरफ़्तार करो। उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वह लोग तौबा करें और नमाज़ पढ़ें और ख़ैरात करें तो उनका रास्ता छोड़ दो। अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (५) (और ऐ पैग़म्बर!) मुशरिकों में से अगर कोई मनुष्य तुमसे शरण माँगे तो पनाह दो, यहाँ तक कि वह ख़ुदा का शब्द सुन ले। फिर उसको उसके सुख की जगह वापस पहुँचा दो, इस वजह से कि यह लोग जानकार नहीं। (६) [रुकू १ आयात ६]

अल्लाह और उसके पैग़म्बर के समीप मुशरिकों का अहद क्योंकर क़ायम रह सकता है जबकि उन्होंने उसको तोड़कर रख दिया है। मगर जिन लोगों के साथ तुमने मसजिद हराम के क़रीब वादा (हुदैबिया की सुलह) किया था, तो जब तक वह लोग तुममें सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो; क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो बचते हैं पसन्द करता है।(७) क्योंकर अहद रह सकता है। अगर तुमसे जीत जावें तो तुम्हारे हक़ में रिश्तेदारी और अहद की रिआयत न करेंगे— अपने मुँह की बात से राज़ी करते हैं और उनके दिल नहीं मानते, और उनमें बहुत बेहुक्म हैं।(८) यह लोग ख़ुदा की आयतों के बदले में

थोड़ा-सा लाभ पाकर ख़ुदा के रास्ते से रोकने लगते हैं। यह लोग जो कर रहे हैं बुरे काम हैं। (९) किसी मुसलमान के बारे में न तो रिश्तेदारी का ख़्याल रखते हैं और न वादे का, और यही लोग ज्यादती पर हैं। (१०) फिर अगर वह लोग तौबा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं, और जो लोग समझदार हैं उनके लिए हम अपनी आयतों को खोल बयान करते हैं।(११) और अगर यह लोग अहद किये पीछे अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तानाज़नी (आक्षेप) करें तो तुम कुफ़्र (इन्कारी) के अगुओं से लड़ो, उनकी क़समें कुछ नहीं, शायद यह लोग मान जावें। (१२) तुम इन लोगों से क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला और पैग़म्बर के निकाल देने का इरादा किया और तुमसे (छेड़खानी भी) अव्वल इन्होंने ही शुरू की, तुम इन लोगों से डरते हो। पस अगर तुम ईमान रखते हो तो तुमको अल्लाह से ज्यादा डरना चाहिए।(१३) इन लोगों से लड़ो, ख़ुदा तुम्हारे ही हाथों इनको सज़ा देगा और इनको बदनाम करेगा और इन पर तुमको जीत देगा और मुसलमानों के दिलों का ग़ुस्सा ठण्डा करेगा।(१४) और इनके दिलों में जो ग़ुस्सा है उसको भी दूर करेगा और अल्लाह जिसकी चाहे तौबा क़बूल कर ले, और अल्लाह जानकार हिकमतवाला है। (१५) क्या तुमने ऐसा समझ रखा है कि छूट जाओगे और अभी अल्लाह ने उन लोगों को देखा तक नहीं जो तुममें से कोशिश करते हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बर और मुसलमानों को छोड़कर किसी को अपना दोस्त नहीं बनाते। और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (१६) [रुकू २ आयात १०]

मुशरिकों को कोई अधिकार नहीं कि अल्लाह की मसजिद आबाद रखें और अपने ऊपर कुफ़्र (इन्कारी) को मानते जायँ। यही लोग हैं जिनका किया-धरा सब बेकार हुआ और यही लोग हमेशा दोज़ख़ में रहनेवाले हैं।(१७) अल्लाह की मसजिद को वही आबाद रखता है जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाता है और नमाज़ पढ़ता और ज़कात देता रहा और जिसने ख़ुदा के सिवाय किसी का डर न माना,

तो ऐसे लोगों की निस्बत उम्मीद की जा सकती है कि ये शिक्षा पानेवालों में होंगे।(१८) क्या तुम लोगों ने हाजियों* के पानी पिलाने और इज्ज़तवाली मसजिद आबाद रखने को उस शख्स (के कामों) जैसा समझ लिया है जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाता और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है। अल्लाह के नज़दीक तो यह (लोग एक दूसरे के) बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता। (१९) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अपने जान व माल से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किये, अल्लाह के यहाँ दर्जे में कहीं बढ़कर हैं और यही हैं जो कामयाब हैं।(२०) इनका परवरदिगार इनको अपनी कृपा और रज़ामन्दी और ऐसे बाग़ों का मंगल समाचार देता है जिनमें इनको हमेशा का आराम मिलेगा।(२१) उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे, अल्लाह के यहाँ बड़ा बदला है।(२२) मुसलमानों! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में इन्कारी को भला समझें तो उनको मित्र मत बनाओ, और जो तुममें से ऐसे बाप-भाइयों के साथ मित्रता रखेगा तो यही लोग बेइन्साफ़ हैं।(२३) (ऐ पैग़म्बर ! मुसलमानों को)समझा दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी स्त्रियाँ और तुम्हारे कुटुम्बी और माल जो तुमने कमाये हैं और व्यापार जिसके मंदा हो जाने का तुमको संदेह हो और मकानात जिनको तुम्हारा दिल चाहता है अल्लाह और उसके पैग़म्बर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने से तुमको ज्यादा प्यारे हों, तो सब्र करो, यहाँ तक जो कुछ खुदा को करना है वह लाकर मौजूद करे, और अल्लाह उन लोगों को जो सिर उठावें उपदेश नहीं दिया करता।(२४) [रुकू३आ.८]

अल्लाह बहुत-से मौक़ों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और(खास कर) हुनैन (की लड़ाई) के दिन जब कि तुम्हारी ज्यादती ने तुमको घमंडी† कर दिया था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आती और

* हज्ज यात्रा करनेवालों।

† मक्का की विजय के बाद मुसलमानों की संख्या बढ़ गई थी। जब उनको

ज़मीन ज़्यादा होने पर भी तुम पर तंगी करने लगी। फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले।(२५) फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और मुसलमानों पर अपना सब्र उतारा और ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई† नहीं पड़ती थीं और काफ़िरों को बड़ी सख़्त मार दी और काफ़िरों की यही सज़ा है।(२६) फिर उसके बाद ख़ुदा जिसको चाहे तौबा देगा, और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।(२७) मुसलमानों! मुशरिक तो गन्दे हैं, तो इस वर्ष के बाद इज़्ज़तवाली मसजिद के पास भी न फटकने पायें, और अगर तुमको ग़रीबी का खटका हो तो ख़ुदा चाहेगा तो तुमको अपनी दया से मालदार कर देगा। ख़ुदा जानकार हिकमतवाला है। (२८) किताबवाले जो न ख़ुदा को मानते हैं और न क़यामत को और न अल्लाह और उसके पैग़म्बर की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं इनसे लड़ो यहाँ तक कि ज़लील होकर (अपने) हाथों से जज़ियाॐ दें। (२९) [रुकू ४ आयात ५]

यहूद कहते हैं कि उज़ेर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। यह उनके मुँह का कहना है, उन्हीं काफ़िरों जैसी बातें बनाने लगे जो इनसे पहले हैं। ख़ुदा इनको ग़ारत करे, किधर को भटके चले जा रहे हैं।(३०) इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर

हवाज़िन जाति के चढ़ाई करने के इरादे का पता लगा तो कहने लगे कि उनको मार भगाना क्या मुशकिल है। 'हम लगभग १६००० हैं और हमारे शत्रु केवल ४ या ५ हज़ार। ख़ुदा को उनका घमंड बुरा लगा। हवाज़िन ने उन पर ऐसा कड़ा धावा किया कि ७० सैनिकों को छोड़कर सब भाग खड़े हुए। अहंकार का यह परिणाम हुआ। बाद में ख़ुदा की मदद से जीत हुई।

† फ़रिश्तों की सेना ने हुनैन के युद्ध में मुसलमानों की सहायता की, तब उनको विजय प्राप्त हुई। इस लड़ाई में जितना लूट का माल मुसलमानों के हाथ लगा उतना किसी और लड़ाई में नहीं लगा।

* जज़िया उस कर को कहते हैं जो मुसलमान-शासक अपने ख़िलाफ़ मज़हबवालों से लिया करते थे।

अपने विद्वानों, अपने यतियों और मरियम के बेटे मसीह को ख़ुदा बना खड़ा किया, हालाँकि इनको यही हुक्म दिया गया था कि एक ही ख़ुदा की पूजा करते रहना; उसके सिवाय कोई पूजित नहीं, वह उनकी शिर्क से पाक है। (३१) चाहते हैं कि ख़ुदा की रोशनी को मुँह से बुझा दें और ख़ुदा को मंज़ूर है कि हर तरह पर अपनी रोशनी को पूरा करे, काफ़िरों को भले ही बुरा लगे।(३२) वही है जिसने अपने पैग़म्बर को उपदेश और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको सम्पूर्ण दीनों पर जीत दे। मुशरिकों को भले ही बुरा लगे।(३३) मुसलमानों! अक्सर विद्वान और यती लोगों के माल बेकार खाते और ख़ुदा के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते रहते हैं और उसको ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते तो उनको दुखदाई सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो।(३४) जबकि उस (सोने चाँदी) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायगा, फिर उससे उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें दागी जायँगी और कहा जायगा यह है जो तुमने अपने लिए इकट्ठा किया था, लो अपने जमा किये का मज़ा चखो।(३५) जिस दिन ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन पैदा किये हैं, ख़ुदा के यहाँ महीनों की गिनती अल्लाह की किताब में १२ महीने हैं, जिनमें से चार अदब के हैं। सीधा दीन तो यह है। तो मुसलमानों! इन चार महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म न करना (लड़ना नहीं) और तुम मुसलमान सब मुशरिकों से लड़ो जैसे वह तुम सब से लड़ते हैं। जाने रहो कि अल्लाह परहेज़गारों का साथी है।(३६) महीनों का हटा देना भी एक ज्यादा इन्कारी है, जिसके कारण से काफ़िर भटकते रहते हैं। एक वर्ष एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और उसी को दूसरे वर्ष हराम ठहराते हैं। अल्लाह ने जो हराम किये हैं उस गिनती के मुताबिक़ करके अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल कर लें। इनके बुरे आचरण इनको भले दिखाई देते हैं और अल्लाह काफ़िरों को उपदेश नहीं दिया करता।(३७) [रुकू ५ आ.८]

मुसलमानों! तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता

है कि जिहाद के लिये निकलो तो तुम ज़मीन पर ढेर हो जाते हो, क्या क़यामत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी पर सब्र कर बैठे हो ? क़यामत के मुक़ाबले में ज़िन्दगी के फ़ायदे बिल्कुल नाचीज़ हैं। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुमको वही दुखदाई मार देगा और तुम्हारे बदले दूसरे लोग लाकर मौजूद करेगा, और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (३६) अगर तुम पैग़म्बर की मदद न करोगे तो उसी ने अपने पैग़म्बर की मदद उस वक़्त भी की थीजब काफ़िरों ने उनको (मक्का से) निकाल बाहर किया था, जब वह दोनो (अबूबकर और मोहम्मद) सौर की गुफ़ा में छिपे थे। उस वक़्त पैग़म्बर अपने साथी को समझा रहे थे कि मत डरो, अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने पैग़म्बर पर अपना सब्र उतारा और उनको ऐसी फ़ौजों से मदद दी जिनको तुम लोग न देख सके और काफ़िरों की बात नीची रही, और अल्लाह ही की बात ऊँची है और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (४०) हल्के और बोझिल (हथियारबन्द हो या बेहथियार) तो पैग़म्बर के बुलाने पर निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से ख़ुदा की राह में जिहाद करो। अगर तुम जानते हो तो यह तुम्हारे हक़ में भला है। (४१) अगर प्रत्यक्ष फ़ायदा होता और सफ़र भी मामूली दर्जे का होता तो तुम्हारे साथ चलते, लेकिन इनको सफ़र दूर मालूम हुआ और ख़ुदा की क़सम खा-खाकर कहेंगे कि अगर हमसे बन पड़ता तो हम ज़रूर तुम लोगों के साथ निकल खड़े होते। यह लोग आप अपनी जानों को जोखों में डाल रहे हैं, और अल्लाह को मालूम है कि यह लोग झूठे हैं। (४२) [रुकू ६ आयात ५]

ऐ मोहम्मद ! ख़ुदा तुझे माफ़ करे तूने क्यों उनको इस लड़ाई में न जाने का हुक्म दिया, इससे पहले कि तुझे उज़्र में सच्चे और झूठे मालूम हों ?(४३) जो लोग ख़ुदा का और क़यामत का विश्वास रखते हैं वह तो तुझसे इस बात की मोहलत नहीं माँगते कि अपनी जान व माल से जिहाद में शरीक न हों। और अल्लाह परहेज़गारों को ख़ूब जानता है। (४४) तुमसे छुट्टी के चाहनेवाले वही लोग हैं जो

अल्लाह और क़यामत का विश्वास नहीं रखते। उनके दिल शक में पड़े हैं तो वह अपने शक में हैरान हैं। (४५) और अगर यह लोग निकलने का इरादा रखते तो उसके लिए कुछ तैयारी करते, मगर अल्लाह को इनका जगह से हिलनाही नापसन्द हुआ, तो उसने इनको अहदी बना दिया और कह दिया कि जहाँ और बैठे हैं तुम भी उनके साथ बैठे रहो। (४६) अगर यह लोग तुममें निकलते तो तुममें और ज्यादा खराबियाँ ही डालते और तुममें फ़साद फैलाने की ग़रज़ से तुम्हारे दरमियान दौड़े-ड़ौड़े फिरते, और तुममें उनके भेदी मौजूद हैं और अल्लाह ज़ालिमों को जानता है †(४७) उन्होंने पहले भी फ़साद डलवाना चाहा और तुम्हारे लिए तदबीरों की उलट-पलट करते ही रहे यहाँ तक कि सच्ची प्रतिज्ञा आ पहुँची और खुदा की आज्ञा पूरी हुई और उनको नागवार हुआ।(४८) इनमें वह है जो कहता है कि मुझको छुट्टी दे और मुझको विपत्ति में न डाल। सुनो जो यह लोग विपत्ति में तो पड़े ही हैं और दोज़ख़ काफ़िरों को घेरे हुए है। (४९) अगर तुमको कोई भलाई पहुँचे तो उनको बुरा लगता है और अगर तुमको कोई आफ़त पहुँचे तो कहने लगते हैं कि हमने पहले से ही अपना काम करा लिया था और प्रसन्नता से वापिस चले जाते हैं। (५०) कहो कि जो कुछ खुदा ने हमारे लिए लिख दिया है वही हमको पहुँचेगा, वही हमारा काम का सँभालनेवाला है और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।(५१) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में ‡ एक का तो इन्तजार करते रहो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के मुन्तजिर हैं कि ख़ुदा तुम पर अपने यहाँ से कोई सज़ा उतारे या हमारे हाथों से (तुम्हें मरवा

† यह हाल है उन लोगों का जो दावा मुसलमान होने का करते थे मगर दिल से मुसलमानों का बुरा चाहते थे। जब इनसे कहा जाता था कि लड़ाई के लिए तैयार हो तो एक न एक बात बना देते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाह-बिन-उबैया था।

‡ विजय या शहादत (धर्म में शरीर त्याग के बाद स्वर्ग)।

डाले), तो तुम मुन्तज़िर रहो हम तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (५२) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि तुम ख़ुशदिली से ख़र्च करो या बेदिली से, ख़ुदा तुमसे क़ुबूल नहीं करेगा क्योंकि तुम हुक्म न मानने वाले हो। (५३) और उनका दिया इसलिए क़ुबूल नहीं होता कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म नहीं माना और नमाज़ को अलसाये हुए पढ़ते हैं और बुरे दिल से ख़र्च करते हैं। (५४) तू इनके माल और औलाद से ताज्जुब न कर। ख़ुदा दुनिया की ज़िन्दगी में इनको माल और औलाद की वजह से सज़ा देना चाहता है, और वह काफ़िर ही मरेंगे।(५५) अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वह तुममें हैं, हालाँकि वह तुममें नहीं हैं। बल्कि वह डरपोक हैं। (५६) ग़ार (खोह) या घुस बैठने की जगह अगर कहीं बचाव पावें तो रस्सी तुड़ा-तुड़ाकर उसकी तरफ़ दौड़ पड़े।(५७) इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि ख़ैरात में तुम पर तोहमत लगाते हैं, फिर अगर इनको उसमें से दिया जाय तो ख़ुश रहते हैं, और अगर इनको उसमें से न दिया जाय तो वह फ़ौरन ही बिगड़ बैठते हैं। (५८) जो ख़ुदा ने और उसके पैग़म्बर ने इनको दिया था अगर यह उसको ख़ुशी से ले लेते और कहते कि हमको अल्लाह काफ़ी है, आगे को अपने काम में अल्लाह और उसका पैग़म्बर हमको देगा। हम तो अल्लाह ही से लौ लगाये बैठे हैं। (५९)[रुकू ७ आयात १७]

ख़ैरात का माल फ़क़ीरों का हक़ है और ग़रीबों का और उन काम करनेवालों का जो ख़ैरात पर हैं और उन लोगों के लिये जिनके दिल इस्लाम की तरफ़ लगाना मंज़ूर है। ग़ुलामों को छुटाने और क़र्ज़दारों में और जिहाद में और मुसाफ़िरों में ज़कात (ख़ैरात) के माल का ख़र्च ठहराया गया है, और अल्लाह जाननेवाला हिकमत वाला है।(६०) उनमें से कुछ ऐसे हैं जो पैग़म्बर को नुक़सान देते और कहते हैं कि यह शख़्स कान का बड़ा कच्चा है† (ऐ पैग़म्बर ! इन

† कुछ मुनाफ़िक़ कहते थे कि मुहम्मद साहब से जो कोई हमारे बारे में कुछ कह देता है वह उसको सच्च मान लेते हैं और जब हम आकर क़सम

लोगों से) कहो वह तुम्हारे लिये भलाई का सुनानेवाला है, वह अल्लाह का यक़ीन करता है और मुसलमानों का भी यक़ीन रखता है। और जो लोग तुममें से ईमान लाये हैं उनके लिये रहम है और जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर को नुक़सान देते हैं उनको कड़ी सज़ा होनी है।(६१) तुम्हारे सामने खुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें हालाँकि अल्लाह और उसका पैग़म्बर ज्यादा हक़ रखते हैं कि यह लोग सच्चे मुसलमान हैं तो अल्लाह पैग़म्बर को राज़ी कर।(६२) क्या इन्होंने अभी तक उतनी बात नहीं समझी कि जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करता है, उसके लिए दोज़ख़ की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह बड़ा अपमान है।(६३) मुनाफ़िक़ डरते हैं कि खुदा की तरफ़ से मुसलमानों पर ऐसी सूरत उतरे कि जो कुछ इनके दिलों में है मुसलमानों को बता दें। कहो कि हँसे जाओ जिस बात से तुम डर रहे हो, खुदा वही बात * निकालेगा। (६४) अगर तुम इन लोगों से पूछो तो वह ज़रूर यही उत्तर देंगे कि हम तो इसी प्रकार बातें-चीतें और हँसी-मज़ाक कर रहे थे। कहो कि तुमको हँसी करनी थी तो खुदा के ही साथ और उसी की आयतों और उसी के पैग़म्बर के साथ ? (६५) बातें न बनाओ, सच तो यह है कि तुम ईमान लाये पीछे काफ़िर हो गये अगर हम तुममें से एक गिरोह के क़सूर माफ़ भी कर दें तो भी दूसरों को ज़रूर सज़ा देंगे। (६६) [रुकू ८ आयात ७]

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सबकी एक चाल है। बुरे काम की सलाह दें और भले कामों से मना करें और अपनी मुट्ठियाँ खैरात से बन्द रखते हैं। इन लोगों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी इन्हें भुला दिया। कुछ सन्देह नहीं कि मुनाफ़िक़ सरकश हैं।(६७)

खा लेते हैं तो हमको सच्चा समझने लगते है। इसका जवाब दिया गया है कि वह तुम्हारी बातों को भली भाँति जानते हैं, लेकिन तुम पर दया करते हैं।

* यानी तुम्हारा झूठ खुल जायगा।

मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों के हक़ में ख़ुदा ने नरक की आग का क़रार कर लिया है कि यह लोग हमेशा उसमें रहेंगे। यही उनको काफ़ी है और ख़ुदा ने इनको फटकार दिया है और इनके लिए हमेशा के लिए सज़ा है।(६८) जैसी मिसाल तुम से पहलों की थी वह तुमसे बहुत ज्यादा ज़ोरावर थे और माल और औलाद भी ज्यादा रखते थे। तो वह अपने हिस्से के फ़ायदे उठा चुके सो तुमने भी अपने हिस्से के फ़ायदे उठाये, जैसे तुमसे पहलों ने अपने हिस्से के फ़ायदे उठाये थे। और जैसी बातें वह लोग किया करते थे, तुम भी वैसी ही बातें करने लगे। इन्हीं लोगों का दुनिया और क़यामत में करा-धरा बेकार हुआ और यही नुक़सान में रहे। (६९) क्या इनको उन लोगों की ख़बर नहीं मिली जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। नूह की क़ौम और आद और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मदियन के लोग और उल्टी हुई बस्तियों के रहनेवाले कि इनके पैग़म्बर इनके पास खुले हुए चमत्कार लेकर आये। सो ख़ुदा ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया मगर यह लोग आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।(७०) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें आपस में दोस्त हैं। नेक काम करने का उपदेश देते और बुरे काम से रोकते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और अल्लाह और उसके पैग़म्बर के हुक्म पर चलते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ज़रूर रहम करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (७१) ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों से अल्लाह ने बाग़ों का वादा कर लिया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे और सदा रहनेवाली जन्नत में अच्छे मकान हैं और ख़ुदा की बड़ी ख़ुशी, और यही बड़ी कामयाबी है। (७२) [रुकू ९ आयात ६]

ऐ पैग़म्बर! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो और उनका ठिकाना नरक है, और वही बुरी जगह है।(७३) अल्लाह की सौगन्धें खाते हैं कि हमने नहीं कहा § हालाँकि ज़रूर

§ तबूक की लड़ाई से पहले एक मुनाफ़िक़ जिलास-बिन-स्वैद ने गधे पर

उन्होंने कुफ़्र (इन्कारी) के शब्द कहे, और मुसलमान हुए पीछे काफ़िर हो गये और गुस्ताख़ियाँ करनी चाहीं जिन पर उनकी ताक़त नहीं हुई। और यह लोग किस पर बिगड़े ? इसी पर न कि अपनी कृपा से अल्लाह ने और उसके पैग़म्बर ने इनको मालदार कर दिया। सो यह लोग अगर अब भी तौबा करें तो इनके हक़ में अच्छा होगा और अगर न मानें तो अल्लाह इनको दुनिया दोज़ख़ में दुखदाई सज़ा देगा और ज़मीन पर न कोई इनका सहायक होगा और न मददगार। (७४) इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने ख़ुदा के साथ अहद किया था कि अगर वह अपने रहम से हमको (माल, धन) देगा तो हम ज़रूर (ख़ैरात) किया करेंगे और ज़रूर भले काम करनेवाले रहेंगे।(७५) फिर जब ख़ुदा ने अपनी कृपा से उनको (माल) दिया तो उसमें कंजूसी करने लगे और (उदूल हुक्मी) मुँह मोड़ करके फिर बैठे।(७६) तो फल यह हुआ कि ख़ुदा ने उनके दिलों में भेद डाल दिया, इसलिए कि उन्होंने ख़ुदा से प्रतिज्ञा की थी उसको पूरा नहीं किया और झूठ बोले।(७७) क्या उन्होंने इतना भी न समझा कि अल्लाह इनके भेदों को और कनफ़ुसियों को जानता है और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों से भी ख़ूब जानकार है।(७८) यही तो हैं कि मुसलमानों में जो लोग ख़ुशदिली से पुण्य करते हैं उन पर (पाखंडी होने का) दोष लगाते हैं और जो लोग अपनी मेहनत के सिवाय ज्यादा ताक़त नहीं रखते उन पर दोष लगाते हैं। इसलिए उन पर हँसते हैं। सो अल्लाह इन मुनाफ़िक़ों पर हँसता है§ और इनके लिए दुखदाई

चढ़कर कहा था कि अगर मुहम्मद की लाई हुई बात सच हो तो मैं उससे भी बुरा हूँ जिस पर सवार हूँ। इन आयतों में उसी का बयान है।

§ मुहम्मद साहब ने ख़ैरात करने का हुक्म दिया तो जिस मुसलमान से जितना हो सका ले आया। अब्दुर्रहमान चार हज़ार दरहम लाये और आसिम केवल ४ सेर जौ। मुनाफ़िक़ कहने लगे अब्दुर्रहमान अपनी अमीरी जताता है और आसिम को देखो लोहू लगा के शहीदों में नाम करने चले हैं। इस पर ये आयतें उतरीं।

सज़ा है।(७६) (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनके हक़ में माफ़ी की दुआ करो या उनके हक़ में न करो, अगर तुम सत्तर दफ़े भी इनके लिए माफ़ी माँगो तो भी खुदा हरगिज़ इनको क्षमा नहीं करेगा। यह इनके इस कर्म की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ इन्कार किया और अल्लाह बाग़ी लोगों को नसीहत नहीं दिया करता। (८०) [रुकू १० आयात ८]

जो (मुनाफ़िक़ अपनी ज़िद्द से) पीछे छोड़ दिये गये, वह खुदा के पैग़म्बर के ख़िलाफ़ अपने (घरों में) बैठ रहने से बहुत खुश हुए और खुदा की राह में अपनी जान और माल से जिहाद करना उनको नागवार हुआ और समझने लगे कि गर्मी में (घर से) न निकलना। (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि नरक की आग की गर्मी बहुत कठिन है। हा शोक ! इनको इतनी समझ होती।(८१) तो यह लोग थोड़ा हँसेंगे और बहुत रोवेंगे और यही उनकी कमाई का परिणाम है।(८२) तो (ऐ पैग़म्बर !) अगर ख़ुदा तुमको इन मुनाफ़िक़ों के किसी गरोह की तरफ़ लौटाकर ले जाय और निकलने का तुमसे हुक्म चाहे तो तुम कह देना कि तुम न तो कभी मेरे साथ निकलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुम पहली बार (घरों में बैठने से राज़ी हुए) अब भी पिछड़ों के साथ (घरों में बैठे रहो।) (८३) (ऐ पैग़म्बर !) अगर इनमें से कोई मर जाय तो तुम कदापि उस पर नमाज़ न पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना। उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ कुफ़्र (इन्कार) किया और वह अन्यायी की दशा में ही मर गये। (८४) और इनके माल और इनकी औलाद पर तू ताज्जुब न कर। खुदा माल और औलाद के कारण से इनको संसार में सज़ा देना चाहता है और जब इनकी जान निकले तो काफ़िर ही मरेंगे। (८५) और (ऐ पैग़म्बर !) जब कोई सूरत उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके पैग़म्बर के साथ जिहाद करो तो इनमें से सामर्थ्यवाले तुमसे हुक्म माँगने लगते हैं और कहते हैं कि हमको छोड़ जाओ कि बैठनेवालों के साथ हम भी (घरों में) बैठे रहें। (८६) इनको औरतों के साथ जो पीछे रहा करती हैं

(पीछे बैठ) रहना पसंद आया और इनके दिलों पर मुहर कर दी गई है। यह लोग नहीं समझते हैं।(८७) लेकिन पैग़म्बर ने और जो उनके साथ ईमान लाये हैं अपनी जान और माल से (ख़ुदा की राह में) जिहाद की। यही लोग हैं जिनके लिए (दुनिया और दूसरी दुनिया की सब) ख़ूबियाँ हैं और यही मुराद पानेवाले हैं। (८८) इनके लिए अल्लाह ने (जन्नत के) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे। यही बड़ी सफलता है। (८९) [रुकू ११ आयात ९]

ऐ पैग़म्बर! देहातियों में से बहाना करनेवाले उज़्र करते आये ताकि उनको हुक्म दिया जाय। जिन लोगों ने अल्लाह और उसके पैग़म्बर से झूठ बोला था वह बैठे रहे। इनमें से जिन्होंने इन्कार किया उनको शीघ्र ही कड़ी सज़ा मिलेगी। (९०) (ऐ पैग़म्बर!) कमजोरों पर कुछ गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न उन लोगों पर जिनकी ख़र्च की ताक़त नहीं बशर्ते कि अल्लाह और उनके पैग़म्बर की ख़ैरख़्वाही में लगे रहें। भलाई करनेवालों पर कोई दोष नहीं, अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (९१) उन पर गुनाह नहीं है जो तुम्हारे पास आते हैं कि सवारी दे और तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं है जिस पर सवार कर दूँ। यह सुनकर (वह लोग) लौट गये और ख़र्च की ताक़त न होने के कारण उनकी आँखों से आँसू जारी§ थे। (९२) जुर्म तो उन्हीं पर है जो मालदार होने पर भी रुख़सत चाहते हैं और औरतों के साथ जो पीछे बैठी रहा करती हैं रहना पसन्द करते हैं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर की है, वह नहीं समझते। (९३)

———:o:———

§ यह लोग बुक़ाईन कहलाते हैं। सात आदमी मुहम्मद साहब के पास धर्मयुद्ध में शरीक होने के लिए आये थे। परन्तु इनके पास सवारी नहीं थी। जब इनको सवारी का प्रबन्ध न हुआ तो ये लोग अपनी बेबसी पर रो दिये। ऐसे ग़रीबों के लिए जिहाद में भाग लेना ज़रूरी नहीं।

ग्यारहवाँ पारा (यातज़िरून)

(मुसलमानों !) जब तुम मुनाफ़िक़ों के पास वापस जाओगे तो तुम्हारे सामने उज़्र पेश करेंगे (तो ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कह देना कि बातें न बनाओ, हम किसी तरह तुम्हारा यक़ीन करनेवाले नहीं। अल्लाह तुम्हारे हालात हमको बता चुका है और अभी तो अल्लाह और उनके पैग़म्बर जो तुम्हारे कर्मों को देखेंगे फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाये जाओगे जो मौजूदा और छिपे को जानता है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो तुमको बतायेगा। (९४) जब तुम लौटकर उनके पास जाओगे तो यह लोग ज़रूर तुम्हारे आगे ख़ुदा की क़समें खायेंगे ताकि तुम इनको माफ़ करो। सो इनको जाने दो क्योंकि यह लोग नापाक हैं और इनका ठिकाना नरक है। यह उनकी कमाई का फल है। (९५) यह तुम्हारे सामने क़समें खायेंगे ताकि तुम इनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम इनसे राज़ी हो जाओ तो अल्लाह इन बेहुक्म नाफ़र्मान लोगों से राज़ी न होगा। (९६) गाँव के लोग कुफ़्र (इन्कार) और भेद में बड़े कठोर हैं। ख़ुदा ने जो अपने पैग़म्बर पर किताब उतारी है उसके हुक्मों को समझने के योग्य नहीं और अल्लाह जाननेवाला और हिकमत वाला है। (९७) देहातियों में से कुछ लोग हैं कि उनको जो ख़र्च करना पड़ता है उसको चट्टी (दण्ड) समझते और तुम मुसलमानों के हक़ में ज़माने के फेरों के मुन्तज़िर† हैं। इन्हीं पर (ज़माने के) बुरे फेर का असर पड़े। अल्लाह सुनता और जानता है।(९८) और देहातियों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह का और क़यामत का यक़ीन रखते और जो कुछ (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते हैं उसमें ख़ुदा के पास का और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। तो सुन रखो वह उनके लिए नज़दीक है। अल्लाह ज़रूर उनको अपने रहम में ले लेगा। अल्लाह माफ़ करनेवाला मेहरबान है। (९९) [रुकू १२ आयात १०]

† यानी चाहते हैं कि तुम पर कोई बड़ी आपत्ति पड़े और तुम्हारी शान घटे।

मुहाजरीन (देशत्यागियों) और मदद करनेवालों में से जो लोग (मुसलमानी मत क़बूल करने में) सबसे पहले अगुआ हुए और वह लोग जो सच्चे दिल से ईमान में दाखिल हुए खुदा उनसे खुश और वह (खुदा से) खुश हुए और खुदा ने उनके लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (१००) तुम्हारे आस-पास के बाज़ देहातियों में से (बाज़) मुनाफ़िक़ (कपटी) हैं और खुद मदीने में रहनेवालों में से जो भेद पर अड़े बैठे हैं (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनको नहीं जानते। हम इनको जानते हैं सो हम इनको दोहरी मार देंगे, फिर बड़ी सज़ा की ओर लौटाये जायेंगे। (१०१) (कुछ) और लोग हैं जिन्होंने अपने अपराध को मान लिया है (और उन्होंने) कुछ काम भले और कुछ बुरे मिले-जुले किये थे, आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे क्योंकि अल्लाह क्षमा करनेवाला मेहरबान है।(१०२) (ऐ पैग़म्बर !) यह लोग अपने माल की ज़कात दें तो) इनके माल की ज़कात ले लिया करो क्योंकि ज़कात के क़बूल करने से तुम इनको पवित्र करते हो, और उनको शुभ आशीर्वाद दो क्योंकि तुम्हारी दुआ इनके लिए संतोष है, और अल्लाह सुनता जानता है।(१०३) क्या इन लोगों को इसकी ख़बर नहीं कि अल्लाह अपने सेवकों की तौबा क़बूल करता और वही ख़ैरात लेता है और अल्लाह ही बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है। (१०४) और (ऐ पैग़म्बर ! इनको) समझा दो कि तुम (अपनी जगह) काम करते रहो। सो अभी तो अल्लाह, पैग़म्बर और मुसलमान तुम्हारे कामों को देखेंगे और ज़रूर (मरे पीछे) तुम उसकी तरफ़, जो ज़ाहिर और छिपे को जानता है, लौटाये जाओगे। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो (वह बतावेगा)। (१०५) (कुछ) और लोग हैं जो खुदा के हुक्म के मुन्तज़िर (राह देखनेवाले) हैं। वह या तो उनको सज़ा देवे या उनकी तौबा क़बूल करे, और अल्लाह जाननेवाला और हिकमतवाला है।(१०६) जिन्होंने इस मतलब से एक मसजिद§ बना

§ कुछ मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों में फूट डालने के विचार से एक मसजिद

खड़ी की कि नुक़सान पहुँचायें और कुफ़्र (इन्कार) करें और मुसलमानों में फूट डालें और उन लोगों को शरण दें जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ पहले लड़ चुके हैं और (पूछा जायगा) तो सौगन्धें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के सिवाय और किसी तरह की इच्छा नहीं की और अल्लाह गवाही देता है कि ये झूठे हैं।(१०७) सो (ऐ पैग़म्बर!) तुम उसमें कभी खड़े भी न होना। हाँ वह मसजिद जिसकी नींव पहले दिन से परहेज़गारी पर रखी गई है, वह इस योग्य है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पवित्र रहने को पसंद करते हैं, और अल्लाह पवित्रता से रहनेवालों को पसंद करता है।(१०८) भला जो आदमी ख़ुदा के डर से और उसकी ख़ुशी पर अपनी इमारत की नींव रखे वह उत्तम है या वह जो गिरनेवाली खाई के किनारे अपनी नींव रखे, फिर वह उसको नरक की आग में ले गिरे? और ईश्वर ज़ालिम लोगों को उपदेश नहीं दिया करता।(१०९) यह इमारत जो इन लोगों ने बनाई है इसके कारण से इन लोगों के दिलों में हमेशा शक और शुबहा रहेगा, यहाँ तक कि इनके दिलों के टुकड़े-टुकड़े हो जावें। अल्लाह जीतनेवाला और बड़ा हिकमतवाला है। (११०) [रुकू १३ आयात ११]

अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल ख़रीद लिये हैं कि उनके बदले उनको जन्नत देगा ताकि अल्लाह की राह में लड़ें और मारें, और मरें, यह ख़ुदा की पक्की प्रतिज्ञा है जिसका पूरा करना उसने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है।(और यह अहद) तौरात, इंजील और क़ुरान में है, और ख़ुदा से बढ़कर अपने अहद का पूरा और कौन हो सकता है। तो अपने सौदे का जो तुमने ख़ुदा के साथ किया है आनन्द मनाओ और यही बड़ी कामयाबी है।(१११) तौबा करनेवाले, दुआ करनेवाले, तारीफ़ करनेवाले, सफ़र करनेवाले, रुकू करनेवाले, सिजदा (बन्दना) करनेवाले, अच्छे काम की सलाह देनेवाले, बुरे काम से मना करनेवाले और अल्लाह ने जो हदें (मर्यादा) बाँध,

मसजिद क़ुबा के सामने ही बनवाई थी। इन आयतों में उसी का बयान है!

दी हैं उनको निगाह में रखनेवाले यही मोमिन हैं, और (ऐ पैग़म्बर! ऐसे) मुसलमानों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (११२) जब पैग़म्बर और मुसलमानों को मालूम हो गया कि मुशरिकीन दोज़ख़ी होंगे तो उनको यह भला नहीं मालूम देता कि उनके लिए माफ़ी चाहें, गो वह रिश्तेदार (सम्बन्धी ही क्यों न हों)। (११३) इब्राहीम ने अपने बाप के लिए माफ़ी की प्रार्थना की थी सो एक वादे से जो इब्राहीम ने अपने बाप से कर लिया था। फिर जब उनको मालूम हो गया कि यह ख़ुदा का दुश्मन है तो बाप से सम्बन्ध छोड़ दिया। इब्राहीम बड़े कोमल दिल और सहनशील थे! (११४) और अल्लाह की शान से बाहर है कि एक जाति को शिक्षा दिये पीछे राह से उन्हें भटकाये, जब तक उसको वह चीजें न बतलावे जिनसे वह बचते रहें। अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (११५) और आसमान और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है। वही जिलाता और मारता है, और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई सहायक और मददगार नहीं। (११६) ख़ुदा ने पैग़म्बर पर कृपा की और देशत्यागी और मदद करनेवालों पर जिन्होंने तंगी के ज़माने में पैग़म्बर का साथ दिया, जबकि इनमें से बाज़ के दिल डगमगा चले थे, फिर उसी ने इन पर अपनी कृपा की। इसमें शक नहीं कि ख़ुदा इन सब पर अत्यन्त दया रखता है। (११७) उन तीनों‡ पर जो पीछे रखे गये थे, यहाँ तक कि जब ज़मीन चौड़ी होने पर भी तंगी करने लगी और वह अपनी जान से भी तंग आ गये और समझ लिया कि ख़ुदा के सिवाय और कहीं पनाह नहीं। फिर ख़ुदा ने उनकी तौबा क़बूल कर ली, ताकि तौबा किये रहें, बेशक अल्लाह बड़ा ही तौबा क़बूल करनेवाला मेहरबान है। (११८) [रुकू १४ आ.८]

‡ तीन मुसलमान तबूक की लड़ाई में भाग नहीं ले सके थे। उन पर कुछ ऐसी आपत्ति पड़ी कि वे अपनी मृत्यु को अपने जीवन की अपेक्षा अधिक अच्छा समझने लगे। अन्त में उन्होंने क्षमा चाही। उनके नाम यह हैं (१) मुरारा-बिन-रबी, (२) काब बिन-मालिक और (३) हिलाल-बिन-उमैया।

मुसलमानों! ख़ुदा से डरो, सच बोलनेवालों के साथ रहो।(११६) मदीनावाले और उनके आस-पास के देहातियों को मुनासिब न था कि ख़ुदा के पैग़म्बर से पीछे रह जावें और न यह कि पैग़म्बर की जान की परवाह न करके अपनी जानों की चिन्ता में पड़ जावें। यह इसलिए उनको ख़ुदा की राह में प्यास और मेहनत और भूख की तकलीफ़ पहुँचती हो और जिन स्थानों में काफ़िरों को इनका चलना नागवार होता है वहाँ चलते हैं और दुश्मनों से जो कुछ मिल जाता है तो हर काम के बदले इनका कर्म अच्छा लिखा जाता है। अल्लाह सच्चे दिलवालों के अन्जाम को बेकार नहीं होने देता।(१२०) थोड़ा या बहुत जो कुछ ख़र्च करते हैं और जो मैदान उनको तै करने पड़ते हैं यह सब इनके नाम लिख जाता है ताकि अल्लाह इनको इनके कर्मों का अच्छे से अच्छा बदला देवे।(१२१) और मुनासिब नहीं कि मुसलमान सब के सब निकल खड़े हों, ऐसा क्यों न किया कि उनकी हर एक जमात में से कुछ लोग निकलते कि दीन की समझ पैदा करते और जब अपनी जाति में वापस जाते तो उनको डराते ताकि वह लोग बचें। (१२२) [रुकू १५ आयात ४]

मुसलमानों ! अपने आस-पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे सख़्ती मालूम करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो बचते हैं।(१२३) जिस वक़्त कोई सूरत उतारी जाती है तो मुनाफ़िक़ों में से लोग पूछने लगते हैं कि भला इसने तुममें से किसका ईमान बढ़ा दिया? सो वह जो ईमानवाले हैं उसने उनका तो ईमान बढ़ाया और वह ख़ुशियाँ मनाते हैं (१२४) और जिनके दिलों में (कपट का) रोग है तो इससे उनकी अपवित्रता और हुई (नापाकी ज़्यादा बढ़ी) और यह लोग काफ़िर ही मरेंगे। (१२५) क्या नहीं देखते कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार विपत्ति (आफ़त) में पड़ते रहते हैं, इस पर भी न तो तौबा ही करते हैं और न हिदायत ही मानते हैं। (१२६) जब कोई सूरत उतारी जाती है, तो उनमें से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं और कहते हैं कि

तुमको कोई देखता है या नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने इनके दिलों को फेर दिया, इसलिए वह बिल्कुल नहीं समझते। (१२७) तुम्हारे पास तुम्हीं में के एक पैग़म्बर आये हैं। तुम्हारा दुख इनको कठिन मालूम होता है। वह तुम्हारी भलाई चाहता है और ईमानवालों पर प्रेम रखनेवाला और मेहरबान है। (१२८) इस पर भी यह लोग सिर उठायें तो कह दो कि मुझको तो अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं है, उसी पर भरोसा रखता हूँ और अर्श जो बड़ा है उसका भी वही मालिक है। (१२९) [रुकू १६ आयात ७]

—०—

१० सूरे यूनिस ५१

मक्का में उतरी, इसमें १०९ आयतें, और ११ रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है! अलिफ़, लाम, रा। यह ऐसी किताब की आयतें हैं जिसमें हिकमत की बातें हैं। (१) क्या मक्कावलों को इस बात का ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं में के एक आदमी की तरफ़ इस बात का पैग़ाम भेजा कि लोगों को डराओ और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुनाओ कि उनके परवरदिगार के पास उनका बड़ा आदर है। काफ़िर कहने लगे हो न हो वह तो ज़ाहिरा जादूगर है। (२) तुम्हारा परवरदिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में आसमान और ज़मीन को बनाया, फिर अर्श पर जा बिराजा। हरएक काम का प्रबन्ध कर रहा है, कोई सिफ़ारिशी नहीं मगर उसकी आज्ञा हुए पीछे यही अल्लाह जो तुम्हारा पालनकर्त्ता है तो उसी की पूजा करो, क्या तुम विचार नहीं करते। (३) उसी की तरफ़ (तुम

† मुनाफ़िक़ों को हर समय भय बना रहता था कि कोई मुसलमान उन को ताड़ न जाय, इसलिए जब कोई आयत उनके विषय में उतरती थी तो वह एक दूसरे को देखने लगते और तुरन्त भाग खड़े होते।

सबको) लौटकर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है। उसी ने अव्वल मर्तबा दुनिया को पैदा किया है फिर उनको दुबारा ज़िन्दा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, न्याय के साथ उनको बदला दे। काफ़िरों के लिए उनके कुफ़्र की सज़ा में पीने का खौलता पानी और दुखदाई सज़ा होगी। (४) वही जिसने सूरज को चमकीला बनाया और चाँद को रौशन और उनकी मंज़िलें ठहराई ताकि तुम लोग वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। यह सब ख़ुदा ने मसलहत (विचार) से बनाया है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए पते बयान करता है। (५) जो लोग डर मानते हैं उनके लिए रात और दिन के आने-जाने में और जो कुछ ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन में पैदा किया है, निशानियाँ हैं। (६) जिन लोगों को हमसे मिलने की उम्मीद नहीं और दुनिया की ज़िन्दगी से खुश हैं और विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग हमारी निशानियों से अचेत हैं, (७) यही लोग हैं जिनकी करतूत के बदले उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा। (८) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, उनके ईमान की बुद्धि से उनको उनका परवरदिगार राह दिखा देगा कि आराम के बाग़ों में रहेंगे और उनके नीचे नहरें बहती होंगी। (९) उनमें पुकार उठेंगे ऐ ख़ुदा! तेरी ज़ात पाक है और उनमें उनकी दुआएँ ख़ैर की सलाम होंगी। उनकी आख़िरी प्रार्थना होगी "अल्हम्द लिल्लाह रब्बुल आल-मीन" यानी हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा के लायक़ है, जो दुनिया जहान का परवरदिगार है। (१०) [रुकू १ आयात १०]

जिस तरह लोग फ़ायदों के लिए जल्दी किया करते हैं अगर ख़ुदा भी उनको जल्दी से नुक़सान पहुँचा दिया करता तो उनको मौत आ चुकी होती और हम उन लोगों को, जिन्हें हमारे पास आने की आशा नहीं, छोड़े रखते हैं कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (११) जब मनुष्य को कष्ट पहुँचता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारता है। फिर जब हम उसकी तकलीफ़ को उससे दूर कर

देते हैं तो ऐसे चल देता है कि गोया उसे तकलीफ़ के लिए जो उसको पहुँच रही थी हमको पुकारा ही न था। जो लोग हद से क़दम बाहर रखते हैं उनको उनके काम इसी तरह अच्छे कर दिखाये गये हैं।(१२) और तुमसे पहले कितनी उम्मतें हुईं। जब उन्होंने नटखटी पर कमर बाँधी हमने उनको मार डाला। उनके पैग़म्बर उनके पास खुली करामात लेकर आये और उनको ईमान लाना नसीब न हुआ। पापियों को हम इस तरह दण्ड दिया करते हैं।(१३) फिर उनके पीछे हमने ज़मीन में तुम लोगों को नायब बनाया ताकि देखें तुम कैसे काम करते हो।(१४) जब हमारे खुले-खुले हुक्म इन लोगों को पढ़कर सुनाये जाते हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं वह पूछते हैं कि इसके सिवाय और कोई क़ुरान लाओ या इसी को बदल लाओ। कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी तरफ़ से उसको बदलूँ। मेरी तरफ़ जो ख़ुदाई पैग़ाम आता है मैं तो उसी पर चलता हूँ। अगर मैं अपने परवरदिगार की अवज्ञा करूँ तो मुझे बड़े दिन की सज़ा का डर लगता है।(१५) कहो अगर ख़ुदा चाहता तो मैं न तुमको पढ़कर सुनाता और न ख़ुदा तुमको इससे आगाह करता। इससे पहले मैं मुद्दतों तुममें रह चुका हूँ, क्या तुम नहीं समझते†।(१६) तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो ख़ुदा पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये। गुनहगारों का भला नहीं होता।(१७) और ख़ुदा के सिवाय ऐसी चीज़ों को पूजते हैं जो उनको नुक़सान या फ़ायदा नहीं पहुँचा सकतीं और कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारशी हैं। कहो क्यों तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जिसे वह न आसमान में पाता है और न ज़मीन में और वह इस शिर्क से पाक और अधिक ऊँचा है।(१८) लोग एक ही तरीक़े पर थे।

† यानी मैं ४० वर्ष से तुम लोगों के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मैंने इससे पहले कोई दावा नबी होने का नहीं किया। अब कर रहा हूँ। तो जान लो कि जो कुछ कह रहा हूँ अपनी तरफ़ से नहीं कह रहा हूँ, बल्कि ख़ुदा ही के हुक्म से कह रहा हूँ।

भेद तो उनमें पीछे हुआ और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से अहद पहले से न हुई होती तो जिन चीज़ों में यह भेद डाल रहे हैं उनके दरमियान उनका फ़ैसला कर दिया गया होता।(१९) मक्केवाले कहते हैं इसको उसके परवरदिगार की तरफ़ से कोई करामात क्यों नहीं दी गई ? कहो कि ग़ैब की ख़बर तो बस ख़ुदा को ही है, तो तुम इन्तज़ार करो। मैं तुम्हारे साथ इन्तज़ार करनेवालों में हूँ।(२०)[रुकू २ आ.१०]

जब लोगों को तकलीफ़ पहुँचने के बाद हम मेहरबानी का स्वाद चखा देते हैं तो बस हमारी आयतों में बहाना लगाते हैं। कहो अल्लाह की युक्ति ज़्यादा चलती है। (वह फ़रमाता है) हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी करतूतें लिखते हैं। (२१) वही है जो तुम लोगों को जंगल और नदी में फिराता, यहाँ तक कि कोई वक़्त तुम किश्तियों में होते हो और वह लोगों को अनुकूल हवा की सहायता चलाता है और लोग उनसे ख़ुश होते हैं। किश्ती को तूफ़ानी हवा आवे और लहरें हर तरफ़ से उन पर आने लगें और वह समझे कि अब हम घिर गये तो ख़ालिस दिल से ख़ुदा ही को मानकर उससे दुआएँ माँगने लगते हैं कि अगर तू हमको इस कष्ट से बचावे तो हम ज़रूर शुक्र अदा करें। (२२) फिर जब उसने बचा दिया तो वह बेकार की नटखटी करने लगते हैं। लोगों ! तुम्हारी नटखटी तुम्हारी ही जानों पर पड़ेगी। यह दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ायदे हैं, आख़िरकार तुम्हें हमारी ही तरफ़ लौटकर आना है, तो जो कुछ भी तुम करते रहे हम तुमको बता देंगे।(२३) दुनिया की ज़िन्दगी की तो मिसाल उस पानी-जैसी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया, फिर ज़मीन की पैदावार जिसको आदमी और चौपाये खाते हैं पानी के साथ मिल गई, यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार कर लिया और ख़ुशनुमा हुई और खेतवालों ने समझा कि वह उन पैदावार पर क़ाबू पा गये और रात के वक़्त या दिन के वक़्त हमारा हुक्म उस पर आया। फिर हमने उसका ऐसा कटा हुआ ढेर कर दिया कि गोया कल उसका निशान न था। जो लोग सोचते-समझते हैं उनके लिए आयतें बयान करते हैं। (२४)

अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है।(२५) जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और कुछ बढ़कर भी और उनके मुँहों पर स्याही न छाई होगी और न बदनामी। यही स्वर्गवासी हैं कि वह स्वर्ग में हमेशा रहेंगे। (२६) और जिन लोगों ने बुरे काम किये तो बुराई का बदला वैसे ही (बुराई) और उन पर बदनामी छा रही होगी। अल्लाह से कोई उनको बचानेवाला नहीं गोया अँधेरी रात के टुकड़े उनके मुँह पर अड़ा दिये हैं, यही दोज़खी हैं कि वह नरक में हमेशा रहेंगे।(२७) और जिसदिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर मुशरिकीन को हुक्म देंगे कि तुम और जिनको तुमने शरीक बनाया था वह ज़रा अपनी जगह ठहरें। फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि हमारी पूजा तो तुम कुछ करते ही नहीं थे।(२८) हमारे और तुम्हारे बीच बस ख़ुदा ही साक्षी है, हमको तो तुम्हारी पूजा की बिल्कुल ख़बर ही नहीं थी।(२९) वहीं हर शख्स अपने काम को जो उसने किये हैं जाँच लेगा और सब लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह की ओर लौटाये जायँगे और जो झूठ लफंट लगाते रहे हैं वह सब उनसे गये-गुज़रे हो जायँगे।(३०) [रुकू३आ.१०]

(ऐ पैग़म्बर! लोगों से इतना तो) पूछो कि तुमको आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या कान और आँखों का कौन मालिक है, और कौन मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और कौन ज़िन्दा से मुर्दा (करता है) और कौन इन्तज़ाम चला रहा है, तो तुरन्त ही बोल उठेंगे कि अल्लाह! तो कहो कि फिर तुम उससे क्यों नहीं डरते ? (३१) फिर वही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा परवरदिगार है, तो सचाई के खुल जाने के बाद दूसरी राह चलना गुमराही नहीं तो और क्या है ? सो तुम लोग किधर को फिरे चले जा रहे हो ? (३२) इसी तरह पर तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म बेहुक्म लोगों पर सच्चा हुआ कि यह किसी तरह ईमान नहीं लावेंगे। (३३) पूछो कि तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा भी है कि जहान को अव्वल पैदा करे फिर उनको दुबारा

पैदा करे। कहो अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार पैदा करता है और उनको दुबारा पैदा करेगा, तो अब तुम किधर को उलटे चले जा रहे हो।(३४) (पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके? कहो अल्लाह ही सच्ची राह दिखलाता है तो क्या जो सच्ची राह दिखावे उसका हक़ नहीं कि उसी की पैरवी की जाय या जो ऐसा है कि जब तक दूसरा उसको राह न दिखलाये वह ख़ुद भी राह नहीं पा सकता। तो तुमको क्या हो गया है, (जाने) कैसा न्याय करते हो। (३५) और इन लोगों में से अक्सर अटकल पर चलते हैं सो अन्दाज़ी तुक्के हक़ या सचाई के सामने काम नहीं आते। जैसा-जैसा यह कर रहे हैं, ख़ुदा अच्छी तरह जानता है।(३६) यह किताब (क़ुरान) इस क़िस्म की नहीं कि ख़ुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ़ से बना लावे। बल्कि जो (किताबें) इसके पहले की हैं उनकी तसदीक़ है और उन्हीं की तफ़सील है। इसमें संदेह नहीं कि यह ख़ुदा ही की उतारी हुई है।(३७) क्या वह कहते हैं कि इसे ख़ुद (मुहम्मद) पैग़म्बर ने बना लिया है ? (तू कह दे कि) यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और ख़ुदा के सिवाय जिसे चाहो बुला लो।(३८) और उस चीज़ को झुठलाने लगे जिसके समझने की (इन्हें ताक़त नहीं)। अभी तक इनका इसके तसदीक़ का मौक़ा ही पेश नहीं आया। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो इनसे पहले थे। तो (ऐ पैग़म्बर !) देखो जालिमों को कैसा फल मिला।(३९) और इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि जो क़ुरान पर ईमान ले आवेंगे और कोई-कोई नहीं लावेंगे और तुम्हारा (पैग़म्बर का) परवरदिगार फ़सादियों को ख़ूब जानता है।(४०) [रुकू ४ आ.१०]

और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुमको झुठलावें तो कह दो कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको। तुम मेरे काम के ज़िम्मेदार नहीं और न मैं तुम्हारे काम का ज़िम्मेदार हूँ।(४१) और (पैग़म्बर !) इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं। क्या इससे तुमने समझ लिया कि यह लोग ईमान लावेंगे, तो क्या तुम बहरों को सुना

सकोगे जो अक़्ल भी नहीं रखते हैं। (४२) और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ़† ताकते हैं, तो क्या तुम अन्धों को रास्ता दिखा दोगे जो इनको सूझ पड़ता हो।(४३) अल्लाह तो ज़रा भी लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग (ख़ुद) अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं।(४४) और जिस दिन लोगों को जमा करेगा तो गोया (दुनिया में सारे दिन भी नहीं बल्कि) घड़ी भर (संसार में) रहे होंगे। आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे। जिन लोगों ने ख़ुदा की मुलाक़ात को झुठलाया वह बड़े घाटे में आ गये और उनको रास्ता ही न सूझा। (४५) जैसे-जैसे वादे हम इनको करते हैं चाहे इनमें से बाज़ को तुम्हें दिखावेंगे या तुमको उठा लेवेंगे। इनको तो लौटकर हमारी तरफ़ आना है। जो कुछ यह कर रहे हैं ख़ुदा देख रहा है।(४६) और हर उम्मत (गिरोह) का एक पैग़म्बर है तो जब वह (उनका पैग़म्बर) अपने गिरोह में आता है तो उसके गिरोह में न्याय के साथ फ़ैसला होता है और लोगों पर ज़ुल्म नहीं होता। (४७) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा (क़यामत) कब पूरा होगा ?(४८) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि मेरा अपना फ़ायदा व नुक़सान भी मेरे हाथ में नहीं। मगर जो ख़ुदा चाहता है वही होता है। उसके इल्म में हर उम्मत का एक वक़्त मुक़र्रर है। जब उनकी मौत आ जाती है तो घड़ी भर भी पीछे नहीं हट सकती और न आगे बढ़ सकती है। (४९) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि भला देखो तो सही अगर ख़ुदा की सज़ा रातो-रात तुम पर आ उतरे या दिन-दहाड़े (आ जाय) तो पापी लोग इससे पहले क्या कर लेंगे।(५०) सो क्या जब आ पड़ेगी तभी उसका विश्वास करोगे ? क्या अब ईमान लाये ? और तुम तो इसके लिए जल्दी मचा रहे थे।(५१) फिर (क़यामत के दिन) बेहुक्म लोगों को हुक्म होगा कि अब हमेशा की सज़ा चखो, तुमको सज़ा दी जा रही है, (यही) तुम्हारी कमाई का

† अन्धों को आवाज़ सुनाई जा सकती है। बहरों को इशारे से कोई बात समझाई जा सकती है। लेकिन जो अन्धा और बहरा हो, यानी किसी तरह की समझने की शक्ति ही न रखता हो, उसको समझाना बेकार है।

बदला है।(५२) तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम उनसे कहते हो क्या यह सच है ? कहो कि परवरदिगार की सौगन्ध सच है और तुम भाग कर ख़ुदा को हरा न सकोगे। (५३) [रुकू ५ आयात १३]

जिस-जिसने दुनिया में अवज्ञा की है वे अपने छुटकारे के लिए अगर तमाम खज़ाने ज़मीन के जो उनके क़ब्ज़े में हों दे निकलें लेकिन सज़ा को देख उनको शर्म खानी पड़ेगी और लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायगा और उन पर ज़ुल्म न होगा। (५४) याद रखो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है। याद रखो कि अल्लाह का अहद सच्चा है, मगर ज़्यादातर आदमी यक़ीन नहीं करते। (५५) वही जिलाता और मारता है और उसकी तरफ़ तुमको लौटकर जाना है। (५६) तुम्हारे पास (नसीहत) आ चुकी और दिली रोग की दवा और ईमानवालों के लिए हिदायत †और रहमत आ चुकी है। (५७) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि यह (क़ुरान) अल्लाह की मेहरबानी और इनायत है और लोगों को चाहिए कि ख़ुदा की मेहरबानी और इनायत यानी क़ुरान को पाकर ख़ुश हों कि जिन दुनियावी फ़ायदों के पीछे पड़े हैं, यह उनसे कहीं बढ़कर है।(५८) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि भला देखो तो सही, ख़ुदा ने तुम पर रोज़ी उतारी, अब तुम उसमें से हराम और हलाल ठहराने लगे। (इन लोगों से पूछो) ख़ुदा ने तुम्हें क्या ऐसी आज्ञा दी है या उस (ख़ुदा) पर झूठी तोहमत लगाते हो। (५९) जो लोग ख़ुदा पर झूठ बाँधते हैं वह क़यामत के दिन क्या समझेंगे। अल्लाह लोगों पर कृपा रखता है पर बहुतेरे शुक्रगुज़ार नहीं होते। (६०) [रुकू ६ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर !) तुम किसी दशा में हो और जो कोई-सी क़ुरान की आयत भी पढ़कर सुनाओ और तुम कोई भी कर्म करते हो, जब तुम उसमें लगे रहते हो हम तुमको देखते रहते हैं और तुम्हारे परवरदिगार

† यानी क़ुरान में अच्छी-अच्छी नसीहतें हैं और सच्ची-सच्ची ईमान की बातें। इनसे दिलों के रोग (असत्य) मिट जाते हैं।

से ज़रा भी कुछ छिपा नहीं रह सकता, न ज़मीन में और न आसमान में और ज़र्रे से छोटी चीज़ हो या बड़ी, रोशन किताब में लिखी हुई है। (६१) याद रखो कि ख़ुदा जिनको चाहता है उनको न डर होगा और न वे उदास होंगे। (६२) यह लोग जो ईमान लाये और डरते रहे इनको यहाँ दुनिया की ज़िन्दगी में भी ख़ुशख़बरी है।(६३) क़यामत में भी ख़ुदा की बातों में भेद नहीं आता है, यह बड़ी कामयाबी है। (६४) (ऐ पैग़म्बर !) इनकी बातों से तुम उदास न हो क्योंकि तमाम ज़ोर अल्लाह का है वह सुनता-जानता है। (६५) यह रखो कि जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और जो लोग ख़ुदा के सिवाय शरीकों को पुकारते हैं (कुछ मालूम नहीं कि) किस पर चलते हैं। वह सिर्फ़ वहम पर चलते हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (६६) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को ताकि तुम उसकी रोशनी में देखो भालो। रात-दिन के बनाने में उन लोगों को जो सुनते हैं, निशानियाँ हैं।(६७) कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना रखा है। वह पाक है, इच्छारहित है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है,उसी का है। तुम्हारे पास इसकी कोई दलील तो है नहीं, तो क्या बेजाने-बूझे ख़ुदा पर झूठ बोलते हो ? (६८) (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से कह दो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठी तोहमत बाँधते हैं उनको मुराद नहीं मिलती। (६९) दुनिया के फ़ायदे हैं फिर उनको हमारी तरफ़ लौटकर आना है, तब उनके कुफ़्र की सजा में हम उनको सख़्त सज़ा देंगे। (७०) [रुकू ७ आयात १०]

(ऐ पैग़म्बर !)इन लोगों को नूह का हाल पढ़कर सुनाओ कि जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि भाइयों! अगर मेरा रहना और ख़ुदा की आयतें पढ़कर समझाना तुम पर असह्य गुज़रता है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है, पस तुम और तुम्हारे शरीक अपनी बात ठहरा लो, फिर तुम्हारी बात तुम पर छिपी न रहे, फिर (जो कुछ तुमको करना है) मेरे साथ कर चुको और मुझे मोहलत न दो। (७१) फिर अगर तुम मुँह मोड़ बैठे तो मैंने तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगी, मेरी मज़दूरी तो

बस ख़ुदा ही पर है और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं उसकी फ़र्माबरदारी में रहूँ। (७२) फिर लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने नूह को और जो लोग उनके साथ किश्तियों में थे, उनको बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन सबको डुबोकर दूसरे लोगों को अधिकारी बनाया, तो जो लोग डराये गये हैं उनका कैसा परिणाम हुआ। (७३) फिर नूह के बाद हमने पैग़म्बर को उनकी जाति की तरफ़ भेजा, तो वह पैग़म्बर उनके पास चमत्कार लेकर आये। इस पर भी जिस चीज़ को पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान न लाये। इसी तरह हम बेहुक्म लोगों के दिलों पर मुहर कर दिया करते हैं। (७४) फिर इसके बाद हमने मूसा और हारूँ को अपने निशान देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा, तो वे अकड़ बैठे और यह लोग कुछ अपराधी थे।(७५) तो जब इनके पास हमारी तरफ़ से सच बात पहुँची, तो वह कहने लगे कि यह तो ज़रूर खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा कि जब सच बात तुम्हारे पास आई तो क्या तुम उसकी बाबत कहते हो क्या यह जादू है? और जादूगरों का भला नहीं होता। (७७) वह कहने लगे क्या तुम इस मतलब से हमारे पास आये हो कि जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया उससे हमको फिरा दो और देश में तुम दोनों की सरदारी हो और हम तो तुम पर ईमान लानेवाले नहीं हैं।(७८) और फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि हरएक जानकार जादूगर को हमारे सामने लाकर हाज़िर करो। (७९) फिर जब जादूगर आ मौजूद हुए तो उनसे मूसा ने कहा कि जो तुमको (जादू) डालना मंजूर है डालो। (८०) तो जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम लाये हो जादू है, अल्लाह इसको झूठ करेगा, क्योंकि अल्लाह फ़सादियों को काम नहीं बनाने देता।(८१) और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच करता है, चाहे गुनहगारों को बुरा ही क्यों न लगे। (८२) [रुकू ८ आयात १२]

इन तमाम बातों पर मूसा ही के कुटुम्ब के सिर्फ़ थोड़े-से ईमान लाये और सो भी फ़िरऔन और उसके सरदारों से डरते-डरते कि कहीं कोई विपत्ति उनके ऊपर न डाले। फ़िरऔन देश में बहुत बढ़ा-चढ़ा

था और वह ज्यादती किया करता था।(८३) और मूसा ने समझाया कि भाइयों! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो। (८४) इस पर उन्होंने जवाब दिया कि हमको ख़ुदा ही का भरोसा है। ऐ हमारे परवरदिगार! इस पर इस ज़ालिम क़ौम का ज़ोर न आज़मा।(८५) अपनी कृपा से हमको काफ़िर क़ौम से बचा।(८६) हमने मूसा और उसके भाई की तरफ़ हुक्म भेजा कि मिस्र में अपने लोगों के घर बना लो और अपने घरों को मसजिदें क़रार दो और नमाज़ पढ़ो और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दो।(८७) मूसा ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवरदिगार! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को संसार के जीवन में आदर, सत्कार और धन दे रखा है और (ऐ हमारे परवरदिगार!) यह इसलिए दिये हैं कि वह तेरे रास्ते से भटकावें, तो ऐ हमारे परवरदिगार! इनके माल मेट दे और इनके दिलों को कठोर कर दे कि यह लोग दुखदाई सज़ा के देखे बिना ईमान लावें। (८८) फ़र्माया तुम दोनों अपनी राह पर रहो और मूर्खों के रास्ते मत चलना। (८९) हमने इसराईल की औलाद को पार उतार दिया। फिर फ़िरऔन और उसके लश्करियों ने नटखटी और शरारत की राह से उनका पीछा किया। यहाँ तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तब कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि जिस पर इसराईल के बेटे ईमान लाये हैं। उसके सिवाय कोई पूजित नहीं और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।(९०) इसका जवाब मिला कि अब (तू) यों बोला। पहले बराबर उदूल-हुक्मी करता रहा और तू फ़सादियों में था।(९१) तो आज तेरे शरीर को हम बचादेंगे कि जो लोग तेरे बाद आनेवाले हैं तू उनके लिए शिक्षा हो और बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।(९२)[रुकू ९ आ. १०]

हमने इसराईल की औलाद को एक सच्चे ठिकाने से जा बैठाया और उनको उम्दा-उम्दा पदार्थ दिये और उनमें भेद नहीं पड़ा। जब तक इल्म न आया यह लोग जिन-जिन बातों में भेद डालते रहते हैं, तुम्हारा पालनकर्त्ता क़यामत के दिन उन भेदों का फ़ैसला कर देगा।(९३) (तो ऐ पैग़म्बर! यह क़ुरान) जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा है

अगर इसकी बाबत तुमको किसी क़िस्म का सन्देह हो तो तुमसे पहले जो लोग किताब को पढ़ते हैं उनसे पूछ देखो, कुछ सन्देह नहीं कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सच्ची किताब उतरी है, तो कदापि सन्देह करनेवालों में न होना। (९४) और न उन लोगों में होना जिन्होंने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया, तो तुम भी नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे। (९५) (ऐ पैग़म्बर !) जिन पर परवरदिगार की बात ठीक आई वे ईमान न लावेंगे। (९६) वह तो जब तक दुखदाई सज़ा को न देख लेंगे किसी तरह ईमान लानेवाले नहीं हैं चाहे पूरा चमत्कार उनके सामने आ मौजूद हो। (९७) और यूनुस जाति के सिवाय और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान ले आती और उनको ईमान लाना फ़ायदा देता। तो जब ईमान ले आये तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में उसे बदनामी की सज़ा को माफ़ कर दिया और उनको एक वक़्त तक रहने दिया।(९८) और ऐ पैग़म्बर! तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो जितने आदमी ज़मीन की सतह में हैं सबके सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों को मजबूर कर सकते हो कि वह ईमान ले आवें।(९९) किसी शख़्स के हक़ में नहीं है कि बिना हुक्म ख़ुदा के ईमान ले आवे। गन्दगी† उन्हीं लोगों पर डालता है जो बुद्धि को काम में नहीं लाते। (१००) निशानियाँ और भय उनका कोई उपकारी नहीं। (१०१) तो क्या वैसे ही गर्दिश के मुन्तज़िर हैं जैसी पहले लोगों पर आ चुकी है। (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से कह दो कि तुम भी इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करनेवालों में हूँ। (१०२) फिर हम अपने पैग़म्बर को बचा लेते हैं और इसी तरह उन लोगों को जो ईमान लाये हमने अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लिया है कि ईमानवालों को बचा लिया करें। (१०३) [रुकू १० आयात ११]

ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से कहो कि अगर मेरे दीन के सम्बन्ध में सन्देह हो तो ख़ुदा के सिवाय तुम जिनकी पूजा करते हो, मैं तो उनकी पूजा नहीं करता बल्कि मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ जो कि

† गन्दगी से मतलब है कुफ़्र और शिर्क या अपवित्र विचार।

तुमको मार डालता है और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान वालों में रहूँ। (१०४) यह कि दीन की तरफ़ अपना मुँह किये सीधी राह चला जाऊँ और मुशरिकों में हरगिज़ न होऊँगा। (१०५) और ख़ुदा के सिवाय किसी कोन पुकारना कि वह तुमको न तो लाभ ही पहुँचा सकता है और न तुमको नुक़सान ही पहुँचा सकता है, अगर तुमने ऐसा किया तो उसी वक़्त तुम भी ज़ालिमों में होगे। (१०६) अगर खुदा तुमको कोई कष्ट पहुँचावे तो उसके सिवाय कोई उसका दूर करनेवाला नहीं और अगर किसी क़िस्म का फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो कोई उसकी कृपा को रोकनेवाला नहीं। अपने दासों में से जिसे चाहे लाभ पहुँचावे और वह क्षमा करनेवाला मेहरबान है। (१०७) कह दो कि लोगों! सच बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आ चुकी। फिर सच्ची राह पकड़ो तो अपने ही लिए और जो भटका सो भटककर अपना ही खोता है और मैं तुम्हारा मुख़्तार नहीं। (१०८) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी तरफ़ जो हुक्म भेजा जाता है उसी पर चले जाओ और जब तक अल्लाह न्याय न करे ठहरे रहो और वही मुन्सिफ़ों में भला है। (१०९) [रुकू ११ आयात ६]

——o——

११ सूरे हूद ५२

मक्का में उतरी, इसमें १२३ आयतें और १० रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

अलिफ़-लाम-रा। यह किताब (क़ुरान) पुख़्ताकार ख़बरदार की तरफ़ से है जिसकी आयतें ख़ुलासा के साथ बयान की गई हैं। (१) ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ। (२) यह कि अपने परवरदिगार से माफ़ी माँगो और उसी के सामने तौबा करो, तो वह तुमको एक वक़्त

मुक़र्रर तक अच्छी तरह बसाये रखेगा और जिसने ज्यादा किया है वह उसको ज्यादा देगा अगर मुँह मोड़ो तो मुझको तुम्हारी बाबत बड़े दिन की सज़ा का खटका है। (३) तुमको अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है और वह हर चीज़ पर शक्ति रखता है।(४) (ऐ पैग़म्बर !) सुनो कि यह अपने सीनों को दुहरा किये डालते हैं ताकि ख़ुदा से छिपे रहें। जब वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं, ख़ुदा उनकी ख़ुफ़िया और ज़ाहिरा बातों से ख़बरदार है। वह दिलों के भेद जानता है। (५)

———:o:———

बारहवाँ पारा (वमामिन दाब्बतिन)

जितने ज़मीन में चलते-फिरते हैं उनकी रोज़ी अल्लाह ही के ज़िम्मे है और वही उनके ठिकाने को और उनकी सौंपे जाने की जगह को जानता है। सब कुछ खुली किताब में है। (६) वही है जिसने आसमान और ज़मीन को ६ दिन में बनाया और उसका तख़्त (किब्रियाई) पानी पर था ताकि तुम लोगों को जाँचे कि तुममें किसके कर्म अच्छे हैं। और अगर तुम कहो कि मेरे पीछे तुम उठाकर खड़े किये जाओगे तो जो लोग इन्कारी हैं ज़रूर कहेंगे कि यह तो ज़ाहिर जादू है। (७) और अगर हम सज़ा को इनसे गिनती के चन्द रोज़ तक रोके रहें तो अवश्य कहने लगेंगे कि कौन-सी चीज़ सज़ा को रोक रही है। सुनो जी, जिस दिन सज़ा इन पर उतरेगी इनसे किसी के टाले टलनेवाली नहीं और जिसकी यह लोग हँसी उड़ा रहे थे, वह इनको घेर लेगी। (८) [रुकू १ आयात ८]

अगर हम मनुष्य को अपनी मेहरबानी का स्वाद दें, फिर उसको उससे छीन लें, तो वह नाउम्मीद और नाशुक्र होता है।(९) अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुँची हो और उसके बाद उसको चखावें तो कहने लगता है कि मुझसे सब सख़्तियाँ दूर हो गईं क्योंकि वह

बहुत ही खुश हो जानेवाला शेख़ीख़ोरा है। (१०) मगर जो लोग मज़बूत रहते हैं और नेक काम करते हैं यही हैं जिनके लिए बख़्शीश और बड़ा अंजाम है। (११) तो क्या जो हुक्म तुम पर भेजा जाता है, तुम उसमें से थोड़ा सा छोड़ देना चाहते हो इस कारण कि तंग होकर वे कहते हैं कि इस शख़्स पर ख़ज़ाना † क्यों नहीं उतरा या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया ? सो तुम डरानेवाले हो और हर चीज़ ख़ुदा ही के क़ाबू में है। (१२) (ऐ पैग़म्बर !) क्या (काफ़िर) कहते हैं कि इसने क़ुरान को अपने दिल से बना लिया है, तो इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और ख़ुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। (१३) पस अगर काफ़िर तुम्हारा कहना न कर सकें तो जाने रहो कि (क़ुरान) ख़ुदा ही के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवाय किसी की दुआ नहीं करनी चाहिए, तो क्या अब तुम हुक्म मानते हो ? (१४) जिनका मतलब दुनिया की ज़िन्दगी और दुनिया की रौनक़ चाहना है, हम उनके काम का बदला दुनिया में उनको पूरा-पूरा भर देते हैं। वह दुनिया में घाटे में नहीं रहते। (१५) यही वह लोग हैं, जिनके लिए क़यामत में दोज़ख़ के सिवाय और कुछ नहीं और जो काम दुनिया में इन लोगों ने किये, गये गुज़र हुए और इनका किया-धरा बेकार हुआ। (१६) तो क्या जो लोग अपने परवरदिगार के खुले रास्ते पर हों और उनके साथ उन्हीं में का एक गवाह हो और क़ुरान से पहले मूसा की किताब हो जो राह दिखानेवाली और मेहरबानी है, वह लोग इसको मानते हैं और फ़िर्क़ों में से जो इस (क़ुरान) से इन्कारी हों उनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ है, तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम क़ुरान की तरफ़ से शक में न

† इन्कारी कहते थे कि मुहम्मद रसूल हैं तो इनके पास अधिक धन होना चाहिए या इनके साथ एक फ़रिश्ता निरंतर चलना चाहिए जो इनके रसूल होने का साक्षी हो। इन बातों से मुहम्मद साहब को बड़ा दुःख होता था। इन आयतों में यह बताया गया है कि नबी के लिए इस आडम्बर की आवश्यकता नहीं।

रहना। इसमें कुछ संदेह नहीं कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सच्चा है। लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१७) जो ख़ुदा पर झूठ लफंट लगाये उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है। यही लोग अपने परवरदिगार के सामने पेश किये जावेंगे और गवाह गवाही देंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था। सुनो, ज़ालिमों पर ख़ुदा ही की मार है।(१८) जो ख़ुदा के रास्ते से रोकते और उसमें कजी (टेढ़ापन) चाहते हैं और यही हैं जो क़यामत से इन्कारी हैं। (१९) यह लोग न दुनिया ही में ख़ुदा को हरा सकेंगे और न ख़ुदा के सिवाय इनककोई हिमायती खड़ा होगा। इनको दोहरी सज़ा होगी, क्योंकि न सुन सकते थे न इनको सूझ पड़ता था। (२०) यही लोग हैं जिन्होंने आप अपना नुक़सान कर लिया और झूठ जो बाँधा था गुम हो गया।(२१) ज़रूर यही लोग क़यामत में सबसे ज्यादा घाटे में होंगे।(२२) जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये और अपने परवरदिगार के आगे बिनती करते रहे, यही जन्नत में रहनेवाले हैं कि यह जनत में हमेशा रहेंगे। (२३) दो फ़िर्क़ों की मिसाल अन्धे और बहरे और आँखोंवाले और सुननेवाले जैसी है। क्या दोनो की मिसाल एकसा हो सकती है? क्या तुम ध्यान नहीं करते‡ ? (२४)[रुकू२आ.१६]

और हम ही ने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको साफ़-साफ़ डर सुनाने आया हूँ।(२५) ख़ुदा के सिवाय पूजा न किया करो। मुझको तुम्हारी बाबत एक रोज़ कड़ी सज़ा का डर है। (२६) इस पर उनकी जाति के सरदार जो नहीं मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे आदमी दिखाई देते हो और हमारे नज़दीक सिर्फ़ वही लोग तुम्हारे सहायक हो गये हैं जो हमसे नीच हैं और हम तो तुम लोगों में अपने से कोई विशेषता नहीं पाते बल्कि हम

‡ इन्कारी अन्धों की तरह हैं कि ख़ुदा की निशानियाँ नहीं देखते और बहरोंकी तरह हैं कि रसूल की बातें नहीं सुनते और मुसलमान आँख और कानवाले हैं कि ख़ुदा की निशानियों को देखते हैं और रसूल की बातों पर कान धरते हैं।

तुमको झूठा समझते हैं।(२७) नूह ने कहा भाइयों! भला देखो तो सही, अगर मैं अपने परवरदिगार के खुले रास्ते पर हूँ, और उसने मुझको अपनी सरकार से न्यामत दी है फिर वह रास्ता तुमको दिखाई नहीं देता तो क्या हम उसको तुम्हारे गले मढ़ रहे हैं और तुम उसको नापसन्द कर रहे हो।(२८) भाइयों! मैं इसके बदले में तुमसे रुपयों का चाहने वाला नहीं हूँ। मेरी मज़दूरी तो अल्लाह ही पर है और मैं लोगों को जो ईमान ला चुके हैं निकालनेवाला नहीं हूँ, क्योंकि इनको भी अपने परवरदिगार के यहाँ जाना है मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग मूर्ख † हो।(२६) भाइयों! अगर मैं इनको निकाल दूँ तो ख़ुदा के सामने कौन मेरी मदद को खड़ा हो जायगा, क्या तुम नहीं समझते।(३०) मैं तुमसे दावा नहीं करता कि मेरे पास ख़ुदाई ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ और जो लोग तुम्हारी नज़रों में तुच्छ हैं मैं उनके सम्बन्ध में यह भी नहीं कह सकता कि ख़ुदा उन पर रहम नहीं करेगा। इनके दिल की बातको अल्लाह ही ख़ूब जानता है, अगर ऐसा कहूँ तो मैं ज़ालिमों में हूँगा।(३१) वह बोले नूह! तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया, अगर तू सच्चा है तो जिससे हमको डराता है उसको हम पर ले आ।(३२) (नूह ने कहा) कि ख़ुदा को मंज़ूर होगा तो वही सज़ा को भी तुम पर लायेगा और तुम हटा न सकोगे।(३३) और जो मैं तुम्हारे लिए नसीहत चाहूँ अगर ख़ुदा ही को तुम्हारा वह करना मंज़ूर नहीं है तो मेरी शिक्षा तुम्हारे काम नहीं आ सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और उसीकी तरफ़ तुमको लौटकर जाना है।(३४) (ऐ पैग़म्बर! जिस तरह नूह की क़ौम ने नूह को झुठलाया था) क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर एतराज़ करते और कहते हैं कि क़ुरान को इसने ख़ुद बना लिया है, (तुम उनको जवाब दो

---

† इन्कारियों ने ईमान लानेवालों को नीच कहा क्योंकि वे धंधे करके अपना पालन-पोषण करते थे। इन आयतों में बताया गया है कि किसी प्रकार का पेशा या धंधा करने से आदमी नीच नहीं हो जाता बल्कि जो लोग उसे नीच समझते हैं वही मूर्ख हैं।

कि अगर क़ुरान मैंने ख़ुद बना लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो गुनाह तुम करते हो मेरा कुछ ज़िम्मा नहीं ।(३५) [रुकू ३ आ० ११]

और नूह की तरफ़ ख़ुदाई पैग़ाम आया कि तुम्हारी जाति में जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके सिवाय अब हरगिज़ कोई ईमान नहीं लावेगा और जैसे-जैसे बदकारियाँ यह लोग करते रहे हैं तुम इसका रंज न करो ।(३६) हमारे सामने और हमारे इशारे के बमूजिब एक नाव बनाओ और अवज्ञाकारियों (उदूलहुक्मी) के सम्बन्ध में हमसे कुछ न कहो, क्योंकि यह लोग ज़रूर डूबेंगे । (३७) चुनाँचे नूह ने नाव बनानी शुरू की और जब कभी उनकी जाति के इज़्ज़तदार लोग उनके पास से होकर गुज़रते तो उनसे हँसी करते । नूह ने जवाब दिया कि अगर तुम हम पर हँसते हो तुम पर हम हँसेंगे । (३८) थोड़े दिनों बाद तुमको मालूम हो जायगा कि किस पर सज़ा उतरती है, जो उसकी बदनामी करे और हमेशा की सज़ा उसके सिर पड़े ।(३९) यहाँ तक कि हमारा हुक्म जब आ पहुँचा और (अल्लाह की नाराज़गी से) तनूर ने जोश मारा तो हमने हुक्म दिया कि हर क़िस्म में से दो-दो के जोड़े और जिसकी बाबत पहला हुक्म हो चुका है उसको छोड़कर अपने घरवाले और जो ईमान ला चुके हैं उनको किश्ती में बैठा लो । (४०) और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लाये थे और उसने कहा सवार हो उसमें और किश्ती का बहना और ठहरना अल्लाह के नाम से है और अल्लाह बख़शनेवाला मेहरबान है । (४१) किश्ती इनको ऐसी लहरों में जो पहाड़ के समान थीं ले गई, और नूह का बेटा अलग था तो नूह ने उसे पुकारा कि बेटा ! हमारे साथ बैठ ले और काफ़िरों के साथ मत रह । (४२) वह बोला मैं अभी किसी पहाड़ के सहारे जा लगता हूँ, वह मुझको पानी से बचा लेगा । नूह ने कहा कि आज के दिन अल्लाह के ग़ुस्से से बचानेवाला कोई नहीं । मगर ख़ुदा ही जिस पर अपनी मेहरबानी करे और दोनों के दरमियान एक लहर आ गई और दूसरों के साथ नूह का बेटा भी डूब गया । (४३) हुक्म हुआ कि ऐ ज़मीन ! अपना पानी सोख ले और

ऐ आसमान! थम जा और पानी उतर गया और काम तमाम कर दिया गया और किश्ती जूदी (पहाड़) § पर ठहर गई और हुक्म हुआ कि ज़ालिम लोग दूर रहो। (४४) और नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और विनती की कि परवरदिगार! मेरा बेटा मेरे लोगों में है और तूने जो अहद किया था सच्चा है और तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है।(४५) ख़ुदा ने फ़र्माया कि नूह! तुम्हारा बेटा तुम्हारे लोगों में नहीं था, क्योंकि इसके कर्म बुरे थे। जो तू नहीं जानता वह बात न पूछ। मैं तुमको समझाये देता हूँ कि मूर्खों में न हो।(४६) कह ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तेरी ही पनाह माँगता हूँ कि जो मैं नहीं जानता था उसकी बाबत तुझसे पूछा और अगर तू मेरा क़सूर नहीं माफ़ करेगा तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा। (४७) हुक्म दिया गया है कि ऐ नूह! हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ किश्ती से उतरो। तुम पर और उन लोगों पर जो तेरे साथवालों से पैदा हुए हैं बरकतें हैं, और बाज़ फ़िरक़ों को फ़ायदा देंगे, फिर उनको हमारी तरफ़ से दुख की मार पहुँचेगी।(४८) यह ग़ैब की ख़बरें हैं, (ऐ मोहम्मद!) हम तेरी तरफ़ ख़ुदाई पैग़ाम भेजते हैं, इससे पहले तू और तेरी जाति के लोग इन बातों को जानते थे, तो तू संतोष कर, परहेज़गारों का परिणाम भला है। (४९) [रुकू ४ आयात १४]

और आद की तरफ़ हमने उन्हीं के भाई हूद को भेजा। उन्होंने समझाया कि भाइयों! ख़ुदा ही की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई दूसरा माननेवाला नहीं। तुम सब झूठ कहते हो।(५०) भाइयों इसके बदले मैं तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया, तो क्या तुम नहीं समझते।(५१) भाइयों! अपने परवरदिगार से माँगो, फिर उसके सामने तौबा करो कि वह तुम पर ख़ूब बरसते हुए बादल भेजेगा और दिन पर दिन तुम्हारे बल (ज़ोर) को बढ़ावेगा और नटखटी करके उससे मुँह न मोड़ो। (५२) वह कहने लगे ऐ हूद ? तू हमारे पास कोई दलील

§ यह एक पहाड़ का नाम है जो शाम देश में है।

लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितों को न छोड़ेंगे और हम तुम पर ईमान न लावेंगे।(५३) हम तो यही समझते हैं कि तुझ पर हमारे दुआवालों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने जवाब दिया कि मैं ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि ख़ुदा के सिवाय जो तुम शरीक बनाते हो, मैं तो उनसे दुखित हूँ। (५४) तो तुम सब मिलकर मेरे साथ अपनी बदी करो और मुझको मोहलत न दो।(५५) मैंने अपने और तुम्हारे अल्लाह पर भरोसा किया। जितने जानदार हैं, सभी की चोटी उसके हाथ में है। मेरा परवरदिगार सीधी राह पर है।(५६) इस पर भी अगर तुम लोग फिरे रहो तो जो हुक्म मेरे ज़रिये से भेजा गया था, वह मैं तुमको पहुँचा चुका और मेरा परवरदिगार तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को तुम्हारी जगह लाकर मौजूद करेगा और मेरा परवरदिगार हर चीज़ का रक्षक है।(५७) और जब हमारा हुक्म आया तो हमने अपनी मेहरबानी से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचा लिया और उनको सख़्त सज़ा से बचा लिया।(५८) यह आद हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार के हुक्मों से इन्कार किया और उसके पैग़म्बर की आज्ञा न मानी। हर बेरहम दुश्मनों के हुक्म पर चलते रहे। (५९) इस दुनिया में लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी देखा, आद ने अपने परवरदिगार का इन्कार किया। देखो आद जो हूद की जाति के लोग थे फटकारे गये। (६०) [रुकू ५ आयात ११]

समुद्र की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा तो उन्होंने कहा कि भाइयों! ख़ुदा ही को पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं। उसने तुमको ज़मीन से बना खड़ा किया और तुमको उसमें बसाया और उससे माफ़ी माँगो और उसी के सामने तौबा करो। मेरा परवरदिगार पास है और दुआ क़बूल करनेवाला है। (६१) वह कहने लगे ऐ सालेह! इससे पहले तो हम लोगों में तुमसे उम्मीद की जाती थी कि तुम हर तरह हमारा साथ दोगे सो क्या तुम हमको उनकी पूजा से मना करते हो जिनको हमारे बाप-दादा पूजते चले आये

हैं। और जिसकी तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हमको उसकी बाबत सन्देह है।(६२) जवाब दिया कि भाइयों, देखो तो सही अगर मुझे अपने परवरदिगार से सूझ मिल गई है और उसने मुझपर अपनी मेहरबानी की है और अगर मैं उसकी बेहुक्मी करने लगूँ तो ऐसा कौन है जो ख़ुदा के मुक़ाबिले में मेरी मदद को खड़ा हो। तो तुम मेरा नुक़सान ही कर रहे हो। (६३) और भाइयों, यह ख़ुदा की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है, तुम इसको छुट्टा रहने दो कि ख़ुदा की ज़मीन में से खाती फिरे और इसको किसी तरह का नुक़सान न पहुँचाना,वरना फ़ौरन ही तुमको सज़ा मिलेगी।(६४) तो लोगों ने उसको मार डाला तो सालेह ने कहा तीन दिन अपने घरों में बस लो, यह क़ौल झूठा नहीं होगा।(६५) तो जब हमारा हुक्म आया तो हमने सालेह को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे अपनी मेहरबानी से उस दिन की बदनामी से बचा लिया। तुम्हारा परवरदिगार वही ज़बरदस्त जीतनेवाला है।(६६) जिन लोगों ने ज़्यादती की थी उनको कड़क ने पकड़ लिया, वे अपने घरों में बैठे रह गये।(६७) गोया उनमें बसे ही न थे। देखो, समूद ने अपने परवरदिगार की बेहुक्मी की, देखो समूद दुतकारे गये।(६८) और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आये उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने सलाम का जवाब दिया। फिर इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछेड़ा ले आया (६९) [रुकू ६ आयात ६]

फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं उठते तो उनसे बुरा ख़याल हुआ और जी ही जी में उनसे डरे† । वह बोले डर मत हम तो फ़रिश्ते हैं, लूत की जाति की तरफ़ भेजे गये। (७०) इब्राहीम की बीबी भी खड़ी थी। वह हँसी, फिर हमने उसको

† इब्राहीम ने जब देखा कि उनके घर आनेवाले उनके खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ाते तो उनको डर लगा कि ये आनेवाले हमको कोई हानि पहुँचाना चाहते हैं, इसीलिये हमारे नमक से बच रहे हैं। उस समय लोग जिसको अपना शत्रु समझते थे उसका खाना नहीं खाते थे।

इसहाक़ और इसहाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी, (७१) वह कहने लगी हाय मेरी कमबख़्ती, क्या मेरे औलाद होगी ? मैं तो बुढ़िया हूँ और यह मेरे पति भी बूढ़े हैं। हमारे यहाँ संतान का होना ताज्जुब की बात है। (७२) फ़रिश्ते बोले क्या तू ख़ुदा की क़ुदरत से ताज्जुब करती है। ऐ बैत के† रहनेवाले ! तुम पर ख़ुदा की मेहरबानी और उसकी बरकतें हैं। वह सराहनीय बड़ाइयोंवाला है।(७३) फिर जब इब्राहीम से डर दूर हुआ और उनको ख़ुशख़बरी मिली लूत की जाति के सम्बन्ध में हमसे झगड़ने लगे। (७४) इब्राहीम बड़े नरम-दिल रुजू करने वाले थे।(७५) इब्राहीम, इस ख़्याल को छोड़दो। तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुँचा है और उन लोगों पर ऐसी सज़ा आनेवाली है जो टल नहीं सकती।(७६) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने की वजह से तंगदिल हुए और कहने लगे यह तो बड़ी मुसीबत का दिन है। (७७) लूत की जाति के लोग दौड़े-दौड़े लूत के पास आये और यह लोग पहले से ही बुरे काम किया करते थे। लूत कहने लगे कि भाइयों! यह मेरी बेटियाँ हैं, यह तुम्हारे लिए ज्यादा पवित्र हैं। तो ख़ुदा से डरो और मेरे मेहमानों में मेरी बदनामी न करो। क्या तुममें कोई भला आदमी नहीं ?(७८) उन्होंने जवाब दिया कि तुमको तो मालूम है कि हमको तो तुम्हारी बेटियों से कोई ताल्लुक नहीं। हमारे इरादे से तुम भली भाँति जानकार हो।(७९) (लूत) बोले आज मुझको तुम्हारे मुक़ाबिले की ताक़त होती या मैं किसी ज़ोरावर सहारे का आसरा पकड़ पाता। (८०) (फ़रिश्ते) बोले कि ऐ लूत ! हम तुम्हारे परवरदिगार के भेजे हुए हैं ! यह लोग हरगिज़ तुम तक नहीं पहुँच पायेंगे। तो तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात से निकल भागो और तुममें से कोई मुड़कर न देखो। मगर तुम्हारी बीवी देखे कि जो (सज़ा) इन लोगों पर उतरनेवाली है, वह उस पर भी ज़रूर उतरेगी। इनके वादे का समय सुबह है। क्या सुबह क़रीब नहीं। (८१) फिर जब हमारा

† यानी इब्राहीम की घरवाली (पत्नी)।

हुक्म आया तो (ऐ पैग़म्बर !) हमने बस्ती लौट दी और उस पर जमे हुए खंजड़ के पत्थर बरसाये, (८२) जिन पर तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ निशान किया हुआ था और यह जालिमों से दूर नहीं। (८३) [रुकू ७ आ. १४]

मदियन† की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने कहा भाइयों ! ख़ुदा ही की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं, और नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको ख़ुशहाल देखता हूँ और मुझको तुम्हारी निस्बत सज़ा के दिन का खटका है जो आ घेरेगी। (८४) भाइयों ! नाप और तौल इन्साफ़ के साथ पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीजें कम न दिया करो और देश में फ़साद मत मचाते फिरो। (८५) अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह का दिया जो कुछ बच रहे वही तुम्हारे लिए अच्छा है। मैं तुम्हारी हिफ़ाजत करनेवाला तो नहीं हूँ। (८६) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब ! क्या तुम्हारे समाज ने तुमको यह सिखाया है कि जिनको हमारे बाप-दादा पूजते आये हैं हम उनको छोड़ बैठें या अपने माल में जिस तरह चाहें खर्च न करें, हाँ तुम ही तो सहनशील और भले निकले हो। (८७) (शुऐब) बोले भाइयों ! भला देखो तो सही अगर मुझको अपने परवरदिगार की तरफ़ से सूझ हुई और वह मुझको अपने से अच्छी रोज़ी देता है मैं नहीं चाहता कि जिससे तुमको मना करता हूँ वही काम पीछे से आप करूँ। मैं तो जहाँ तक हो सके सुधार चाहता हूँ और मेरा कामयाब होना तो बस ख़ुदा ही से है। मैंने तो उसी पर भरोसा किया और उसी की तरफ़ ध्यान देता हूँ। (८८) भाइयों ! मेरी जिद में आकर कहीं ऐसा जुर्म न कर बैठना कि जैसी मुसीबत नूह व हूद की जाति व सालेह की जाति पर आई थी वैसी ही मुसीबत तुम पर भी आवे और लूत की जाति भी तुमसे दूर नहीं। (८९) अपने परवरदिगार से माफ़ी माँगो। फिर उसी के सामने तौबा करो मेरा परवरदिगार मेहरबान और चाहने वाला है। (९०) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब ! जो बातें तुम कहते हो

† हज़रत इब्राहीम के बेटे का नाम मदियन था। फिर उनकी सन्तान का यही नाम पड़ गया।

उनमें से बहुत सी तो हम नहीं समझते। इसके सिवाय हम तुमको अपने में कमज़ोर पाते हैं और अगर तुम्हारे कुटुम्ब के लोग नहीं होते तो हम तुम पर संगसार (पथराव) करते और तू हम पर सरदार नहीं। (९१) शुऐब ने जवाब दिया कि भाइयों! अल्लाह से बढ़कर तुम पर मेरे कुटुम्ब का दबाव है और तुमने ख़ुदा को अपनी पीठ पीछे डाल दिया। जो कुछ तुम करते हो मेरा परवरदिगार उसको जानता है।(९२) भाइयों! तुम अपनी जगह काम करो, मैं अपनी जगह काम करता हूँ। आगे तुमको मालूम हो जावेगा कि किस पर सज़ा उतरती है जो उसको बदनाम कर दे और कौन झूठा है। राह देखते रहो और मैं भी तुम्हारे साथ राह देखता हूँ। (९३) जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने अपनी मेहरबानी से शुऐब को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये थे बचा लिया और जो लोग बेहुक्मी करते थे उनको चिंघाड़ ने आ पकड़ा तो अपने घरों में मरे रह गये।(९४) गोया उनमें बसे ही न थे। सुन रखो कि जैसे समूद ख़ुदा के यहाँ से दुतकारे गये, मदिअनवाले भी दुतकारे गये। (९५) [रुकू ८ आ. १२]

हमने मूसा को फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ अपनी निशानियों और ज़ाहिरा दलील के साथ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा,(९६) तो लोग फ़िरऔन के कहने पर चले और फ़िरऔन की बात कुछ राह की न थी।(९७) क़यामत के दिन फ़िरऔन अपनी जाति के आगे-आगे होगा और उनको दोज़ख में ले जा दाख़िल करेगा और बुरा घाट है जिस पर उतरे हैं।(९८) इस (दुनिया) में लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी बुरा ईमान है जो दिया गया।(९९) (ऐ पैग़म्बर!) यह बस्तियों की ख़बरें हैं जो हम तुमसे बायन करते हैं, इनमें से (कोई तो इस वक़्त) क़ायम हैं और कोई उजड़ गई हैं।(१००) हमने इन लोगों पर ज़ुल्म किया तो (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम्हारे पालनकर्त्ता की आज्ञा आई तो ख़ुदा के सिवाय जिन पूजितों (देवी देवता) को वह लोग पुकारा करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आये बल्कि उनके नाश के कारण हुए। (१०१) और (ऐ

पैग़म्बर !) जब जब बस्तियों के लोग ज़ुल्म करने लगते हैं और तुम्हारा परवरदिगार उनको पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही है, बेशक उसकी पकड़ सख़्त दुखदाई है। (१०२) इनमें उस आदमी के लिऐ जो क़यामत की सज़ा से डरे एक निशानी है। क़यामत का दिन वह दिन होगा जब आदमी जमा किये जावेंगे और वह दिन देखनेका है। (१०३) और हमने उसमें एक ठहराये हुए समय तक देर की है। (१०४) जब वह दिन आवेगा तो ख़ुदा के हुक्म के बिना कोई शख़्स बात नहीं कर सकेगा। फिर कोई अभागे कोई भाग्यवान होंगे। (१०५) तो जो अभागे हैं वह नरक में होंगे, वहाँ उनको चिल्लाना और चीख़ना होगा। (१०६) जब तक आकाश व ज़मीन है हमेशा उसी में रहेंगे मगर (ऐ पैग़म्बर !) जिसको तुम्हारा परवरदिगार चाहे। तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, कर डालता है। (१०७) और जो लोग भाग्यवान हैं वह जन्नत में होंगे। जब तक आसमान और ज़मीन है बराबर उसी में रहेंगे। मगर जिसको ख़ुदा चाहे ख़ूब देता है। (१०८) तो (ऐ पैग़म्बर !) यह (मुशरिकीन) जिसकी पूजा करते हैं उसके सम्बन्ध में तुम किसी तरह के शक में मत पड़ना। जैसी पूजा पहले उनके बाप दादा पूजते आये हैं वैसी ही पूजा यह लोग भी करते हैं और हम इनका हिस्सा बिन कम-बढ़ किये पूरा-पूरा पहुँचा देंगे। (१०९) [रुकू ९ आ. १४]

हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी तो लोग उसमें भेद डालने लगे और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम्हारा परवरदिगार एक बात पहले से न कह चुका होता तो लोगों में फ़ैसला कर दिया गया होता। (११०) यह लोग क़ुरान की तरफ़ से ऐसे शक में पड़े हुए हैं जिसने इनको दुखी कर रखा है। जब वक़्त आवेगा तुम्हारा परवरदिगार इनको इनके कर्मों का बदला ज़रूर देगा क्योंकि जैसे जैसे कर्म यह लोग कर रहे हैं उसको (सब) ख़बर है। (१११) तो (ऐ पैग़म्बर !) अपने साथियों सहित जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की जैसा हुक्म हुआ है सीधे चले जाओ और हद से न बढ़ो और जो कुछ तुम कर रहे हो ख़ुदा देख रहा है। (११२) (मुसलमानों !) जिन लोगों ने बेहुक्मी की, उनकी ओर मत झुकना और नहीं तो (दोज़ख़ की) आग तुम्हारे लगेगी। और ख़ुदा के

सिवाय तुम्हारा सहायक कोई नहीं है, (बेहुक्मी की तरफ़ झुकने की सूरत में उसकी तरफ़ से भी) तुमको सहायता नहीं मिलेगी। (११३ (ऐ पैग़म्बर !) दिन के दोनों सिरे (यानी सुबह-शाम) और रात के पहले नमाज़ पढ़ा करो, क्योंकि भलाइयाँ गुनाहों को दूर कर देती हैं जो लोग ख़ुदा का ज़िक्र करनेवाले हैं उनके हक़ में यह याद दिलाना है ।(११४) (ऐ पैग़म्बर !) ठहरे रहो क्योंकि अल्लाह अच्छे कामों के बदले को बेकार नहीं होने देता ।(११५) तो जो जमातें (गिरोह) तुमसे पहले हो चुकी हैं उनमें (संसार की इतनी) ख़ैरख़्वाही करनेवाले क्यों न हुए कि (लोगों को) देश में विद्रोह मचाने से मना करते, मगर थोड़े जिनको हमने बचा लिया और जो ज़ालिम थे वही राह चले जिसमें ऐश पाया और यह लोग पापी थे। (११६) और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को नाहक़ मार डाले और वहाँ के लोग भले हों ।(११७) अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो लोगों का एक ही मत कर देता लेकिन लोग हमेशा भेद डालते रहेंगे ।(११८) मगर जिस पर तुम्हारा परवरदिगार मेहरबानी करे और इसीलिए तो इनको पैदा किया है और तुम्हारे परवरदिगार का कहा हुआ पूरा हो कि हम जिन्नों और आदमियों सबसे दोज़ख़ भर देंगे ।(११९) (ऐ पैग़म्बर !) दूसरे पैग़म्बरों के जितने क़िस्से हम तुमसे बयान करते हैं उनके द्वारा हम तुम्हारे दिल को साहस बँधाते हैं और इनमें सच बात तुम्हारे पास पहुँची और ईमानवालों के लिए नसीहत और हिदायत है ।(१२०) (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग ईमान नहीं लाते उनसे कह दो कि तुम अपनी जगह काम करो, हम भी काम करते हैं ।(१२१) तुम भी राह देखो और हम भी राह देखते हैं ।(१२२) आसमान और ज़मीन की छिपी बातें अल्लाह ही के पास हैं और हर एक काम आख़िरकार उसी पर जाकर सहारा लेता है तो (ऐ पैग़म्बर !) उसी की पूजा करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार उससे बेख़बर नहीं ।(१२३) [रुकू १० आ. १४]

—— :o: ——

१२ सूरे यूसुफ़ ५३

मक्का में उतरी, इसमें १११ आयतें, और १२ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-रा। यह (सूरत†) खुली किताब (यानी क़ुरान) की आयतें हैं। (१) हमने इस क़ुरान को अरबी भाषा में उतारा है, ताकि तुम समझ सको। (२) (ऐ पैग़म्बर!) हम तुम्हारी तरफ़ उसी ख़ुदाई पैग़ाम के ज़रिये से यह सूरत भेजकर तुमको एक अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं और तुम इससे पहले बेख़बर थे। (३) एक समय था कि यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप! मैंने ११ सितारों और सूरज और चाँद को देखा है कि यह सब मुझको सिजदा(सिर झुकाना)कर रहे हैं। (४) याक़ूब ने कहा बेटा! कहीं अपने स्वप्न को अपने भाइयों से न कह बैठना कि वह तुझको (किसी न किसी) आफ़त में फँसाने की तदबीर करने लगें। शैतान आदमी का खुला दुश्मन है। (५) जैसा तूने स्वप्न में देखा है वैसा ही (होगा कि) तेरा परवरदिगार तुझको (मेरे साथ में) क़बूल करेगा। तुझको (स्वप्न की) बातों की कल बैठाना सिखायेगा और जिस तरह ख़ुदा ने अपनी न्यामत पहले तेरे दादा इसहाक़ और इब्राहीम पर पूरी की थी, उसी तरह तुझ पर और याक़ूब की औलाद पर पूरी करेगा। तेरा परवरदिगार जानकार और हिकमतवाला है। (६) [रुकू १ आयात ६]

(ऐ पैग़म्बर! यहूद) जो दर्याफ़्त करते हैं उनके लिए यूसुफ़ और उनके भाइयों में निशानियाँ हैं। (७) जब यूसुफ़ के भाइयों ने (आपस में) कहा कि बावजूदे कि (हक़ीक़ी) भाइयों की बड़ी जमात है तो भी यूसुफ़ और उसका भाई‡ हमारे वालिद को हमसे बहुत ज्यादा

---

† कुछ यहूदियों ने मक्का के बड़े लोगों से कहा था कि मुहम्मद साहब से पूछो कि याक़ूब की संतान शाम देश से मिस्र क्योंकर आई? इसी प्रश्न के उत्तर में यह सूरत उतरी।

‡ यूसुफ़ के एक सगे भाई थे और ग्यारह सौतेले।

प्यारे हैं, हमारा वालिद ज़ाहिरा ग़लती में है। (८) (तो या तो) यूसुफ़ को मार डालो या उसको किसी जगह फेंक आओ तो वालिद का रुख़ तुम्हारी ही तरफ़ रहेगा और उसके बाद तुम लोगों के (सब) काम ठीक हो जायेंगे। (९) उनमें से एक कहनेवाला बोल उठा कि यूसुफ़ को जान से न मारो। हाँ तुमको मारना है तो उसको अन्धे कुएँ में डाल दो कि कोई राह चलता क़ाफ़िला उसको निकाल लेगा। (१०) (तब सबने मिलकर याक़ूब से) कहा कि ऐ वालिद ! इसकी क्या वजह है कि आप यूसुफ़ के सम्बन्ध में हमारा यक़ीन नहीं करते, हालाँकि हम तो उसके (हितैषी) हैं। (११) उसको कल हमारे साथ भेज दीजिए (कि जंगल के फल वग़ैरह) खा आये और खेले और हम उसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं। (१२) (याक़ूब ने) कहा कि तुम्हारा इसको ले जाना तो मुझ पर सख़्त गुज़रता है और मैं इस बात से भी डरता हूँ कि (ऐसा न हो) कहीं तुम इससे बेख़बर हो जाओ और इसको भेड़िया खा जावे। (१३) वह कहने लगे कि अगर इसको भेड़िया खा जाय और हम इतने सब हैं तो इस सूरत में हम निकम्मे ठहरे। (१४) आख़िरकार जब यह लोग (याक़ूब के हुक्म से) यूसुफ़ को अपने साथ ले गये और सबने इस बात पर एका कर लिया कि इसको किसी अन्धे कुएँ में डाल दें तो जैसा ठहरा था वैसा ही किया और (उसी वक़्त) हमने यूसुफ़ की तरफ़ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) भेजा कि तुम (एक दिन) इनको इनके इस बुरे व्यवहार से जतलाओगे और वह तुमको नहीं जानेंगे †। (१५) ग़रज़ यह लोग (यूसुफ़ को) कुएँ में गिरा थोड़ी रात गये रोते (पीटते) बाप के पास आये। (१६) कहने लगे ऐ वालिदजान ! हम तो जाकर कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ़ को हमने असबाब के पास छोड़ दिया। इतने में भेड़िया उसे खा गया। और अगर्चे हम सच भी कहते हों तो भी आपको हमारी बात का यक़ीन न आवेगा। (१७) यूसुफ़ के कुर्ते पर झूठ-मूठ का ख़ून (भी

† यूसुफ़ जब कुएँ में गिराये गये तो यह वही आई और जब उनके भाई मिस्र में अनाज लेने आये तो सच सिद्ध हुई।

लगा) लाये। याक़ूब ने (उनका बयान सुनकर और ख़ून से सना क़ुर्ता देखकर) कहा (कि यूसुफ़ को भेड़िये ने तो नहीं खाया) बल्कि तुमने अपने (मुँह उजागर करने के) लिए अपने दिल से एक बात बना ली है। ख़ैर सब्र अच्छा है और जो तुम कहते हो ख़ुदा ही मदद करे।(१८) फिर एक क़ाफ़िला आ गया, उन्होंने अपने भिश्ती को भेजा। ज्योंही उसने अपना डोल लटकाया (यूसुफ़ उसमें आ बैठे) वह पुकार उठा अहा! यह तो लड़का है। क़ाफ़िलेवालों ने यूसुफ़ को माल तिजारत क़रार देकर छिपा रखा और (इस हाल को छिपाने की) जो तदबीरें (यह लोग) कर रहे थे, अल्लाह को ख़ूब मालूम थीं।(१९) (इतने में तो भाइयों को यूसुफ़ की खबर लगी और उन्होंने उसको अपना ग़ुलाम बनाकर बेचा)। क़ाफ़िलेवालों ने कम दामों (यानी) चंद दिरहम के बदले में उसको मोल ले लिया और वह यूसुफ़ की इच्छा न रखते थे। (२०) [रुकू २ आयात १४]

(आख़िरकार) मिस्र के लोगों में मिस्र के शासक ने जिसने यूसुफ़ को मोल लिया उसने अपनी औरत (ज़ुलैख़ा) से कहा इसको अच्छी तरह रखो, ताज्जुब नहीं यह हमको फ़ायदा पहुँचाये या इसको हम बेटा ही बना लें और यों हमने यूसुफ़ को देश में जगह दी और ग़रज़ यह थी कि हम उनकी बातों की कल बैठाना सिखायें और अल्लाह अपने इरादे पर ताक़तवर है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (२१) जब यूसुफ़ अपनी जवानी को पहुँचा, हमने हुक्म और इल्म दिया। हम भलाई करनेवालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (२२) (ज़ुलेख़ा ने) जिसके घर में यूसुफ़ थे, उनसे बदकारी का इरादा किया और दरवाजे बन्द कर दिये और कहा जल्द आओ। (यूसुफ़) ने कहा अल्लाह बचावे। वह (तुम्हारा ख़ाविंद) मेरा मालिक है, उसने मुझको अच्छी तरह रखा है (मैं उसकी अमानत में ख़यानत नहीं कर सकता), क्योंकि ज़ालिम लोग भलाई नहीं पाते।(२३) वह तो यूसुफ़ के साथ बुरी इच्छा कर ही चुकी थी, अगर यूसुफ़ को अपने परवरदिगार की तरफ़ की दलील कि वह मेरा स्वामी है उस वक़्त न

सूझ गई होती, तो वह भी उसके साथ बुरी इच्छा कर बैठे होते। इसी प्रकार (हमने) यूसुफ़ को मज़बूत रखा ताकि बदकारी और बेशर्मी उनसे दूर रखें। कुछ शक नहीं कि वह हमारे चुने सेवकों में से था। (२४) और दोनो दरवाज़े की ओर भागे और औरत ने पीछे से यूसुफ़ का कुर्ता फाड़§ लिया और औरत का पति दरवाज़े के पास मिल गया। (वह शौहर से पेशबन्दी के तौर पर) बोली कि जो शख्स तेरी बीबी के साथ बदकारी की इच्छा करे बस उसकी यही सज़ा है कि क़ैद कर दिया जाय या कड़ी सज़ा दी जाय। (२५) यूसुफ़ ने कहा कि वह (औरत खुद) मुझसे मेरी चाहनेवाली हुई थी और उसके कुटुम्ब वालों में से गवाह ने यह बात बताई कि यूसुफ़ का कुर्ता (देखा जाय) अगर आगे से फटा है तो औरत सच्ची और यूसुफ़ झूठा (२६) और अगर इसका कुर्ता पीछे से फटा है तो औरत झूठी और यूसुफ़ सच्चा। (२७) तो जब यूसुफ़ के कुर्ते को पीछे से फटा हुआ देखा तो उसने कहा कि यह तुम औरतों के चरित्र हैं, कुछ सन्देह नहीं कि तुम स्त्रियों के बड़े चरित्र हैं। (२८) यूसुफ़ इसको जाने दो और (औरत) तू अपने गुनाह की माफ़ी माँग, क्योंकि सरासर तेरा ही क़सूर था। (२९) [रुकू ३ आ. ६]

शहर में औरतों ने चर्चा किया कि अज़ीज़* की स्त्री अपने ग़ुलाम से नाजायज़ मतलब हासिल करना चाहती है। ग़ुलाम का इश्क़ उसके दिल में जगह पकड़ गया है। हमारे नज़दीक तो वह ज़ाहिरा ग़लती में है। (३०) तो जब (मिस्र के अज़ीज़) की औरत ने इनके ताने सुने, उनको बुलवा भेजा और उनके लिए एक महफ़िल की तैयारी की और (फल तराश-तराशकर खाने के लिए) एक-एक छुरी उनमें से हरएक के हवाले की और (ठीक वक़्त पर यूसुफ़ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ (और ज़रा अपनी शक्ल तो दिखाओ)। फिर जब औरतों

§ यानी यूसुफ़ जब भागे और ज़ुलैखा ने उनको दौड़कर पकड़ना चाहा तो यूसुफ़ का कुरता उसके हाथ में आकर फट गया।

* "अज़ीज़" पहले मिस्र के वज़ीर का खिताब था। बाद को यह खिताब बादशाह का हो गया था।

ने यूसुफ़ को देखा तो उन पर यूसुफ़ की ऐसी शान बैठी कि उन्होंने अपने हाथ काट लिये और कहने लगीं अल्लाह की क़सम यह आदमी तो नहीं, हो न हो यह एक बड़ा फ़रिश्ता† है।(३१) (अज़ीज़ मिस्र की औरत) बोली बस यही तो है जिसके सम्बन्ध में तुमने मुझको मलामत की कि मैंने अपना नाजायज़ मतलब इससे हासिल करना चाहा था। मगर उसने बचाया और जिसको मैं इससे कह रही हूँ अगर उसको नहीं करेगा तो ज़रूर क़ैद किया जावेगा और ज़रूर ज़लील होगा।(३२) (यह सुनकर) यूसुफ़ ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! जिसकी तरफ़ (यह औरतें) मुझको बुला रही हैं क़ैद रहना मुझको उससे कहीं ज्यादा पसंद है। अगर इनके चरित्रों को तूने मुझसे दूर नहीं किया तो मैं इनसे मिल जाऊँगा और मूर्खों में हो जाऊँगा।(३३) तो यूसुफ़ के परवरदिगार ने उनकी सुन ली और उनसे औरतों के चरित्रों को दूर कर दिया; ख़ुदा सुनता-जानता है। (३४) फिर जब लोगों ने यूसुफ़ की निष्कलंक निशानियाँ देख लीं, उसके बाद (भी ज़ुलेख़ा की दिलजोई और यूसुफ़ को उसकी नजर से दूर रखने के लिए उनको यही (मुनासिब) मालूम हुआ कि एक वक़्त तक उसको क़ैद रखें। (३५) [रुकू ४ आयात ६]

यूसुफ़ के साथ दो आदमी जेलख़ाने में दाख़िल हुए (उन्होंने ख़्वाब देखे कि यूसुफ़ को बुज़ुर्ग समझकर स्वप्नफल पूछने के मतलब से) एक ने कहा कि मैं देखता हूँ कि शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूँ कि अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ और परिन्दे उनमें से खा-खा जाते हैं। (यूसुफ़) हमको (हमारे) इस (स्वप्न) का स्वप्नफल बताओ क्योंकि तुम हमको भले इन्सान दिखाई देते हो। (३६) (यूसुफ़ ने) जवाब दिया कि जो खाना तुमको अब मिलनेवाला है वह तुम तक आने नहीं पावेगा कि उसके स्वप्न की ताबीर (स्वप्न का फल) बता दूँगा*, यह उन बातों में से जो मुझको

† यानी यह मनुष्य नहीं वरन् स्वर्गीय नवयुवक जान पड़ता है।

* यानी बहुत जल्दी।

मेरे परवरदिगार ने सिखलाई हैं। मैं (शुरू से) उन लोगों का मज़हब छोड़े बैठा हूँ जो ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते और क़यामत से इन्कार करनेवाले हैं। (३७) मैं अपने बाप-दादों इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब के दीन पर चल रहा हूँ। हमारा काम नहीं कि ख़ुदा के साथ किसी चीज़ को शरीक बनावें। यह (यक़ीन) ख़ुदा की एक मेहरबानी है (जो उसने) हम पर और लोगों पर की हैं मगर अक्सर लोग शुक्र (कृतज्ञता) नहीं करते। (३८) जेलख़ाने के दोस्तों ! जुदे-जुदे पूजित अच्छे या एक ख़ुदा ज़बरदस्त ? (३९) तुम लोग ख़ुदा के सिवाय निरे नामों ही को पूजा करते हो, जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादों ने गढ़ रखे हैं। ख़ुदा ने तो इनकी कोई सनद नहीं दी। हुकूमत तो एक अल्लाह ही की है (और) उसने आज्ञा दी है कि केवल उसी की दुआ करो, यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) ऐ जेलख़ाने के दोस्तों ! तुममें से एक तो अपने मालिक को शराब पिलायेगा और दूसरा फाँसी पर लटकाया जायगा और पक्षी उसका सिर खायेंगे। जिस बात को तुम पूछते थे फ़ैसला हो चुका है। (४१) और जिस इन्सान की बाबत यूसुफ़ ने समझाया था कि इन दोनों में से एक की रिहाई हो जायगी, उससे कहा अपने मालिक के पास मेरी भी चर्चा करना (कि मैं बेकार क़ैद हूँ)। सो शैतान ने उसको अपने मालिक से चर्चा करना भुला दिया, तो (यूसुफ़) कई वर्ष क़ैदख़ाने में रहे। (४२) [रुकू ५ आयात ७]

(इस बीच में) बादशाह ने बयान किया कि मैं सात मोटी गायें देखता हूँ उनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालें हैं और दूसरी (सात) सूखी। ऐ दरबार के लोगों ! अगर तुमको स्वप्न की ताबीर (स्वप्न का फल) देना आता हो तो मुझसे इस स्वप्न के बारे में अपनी राय ज़ाहिर करो। (४३) उन्होंने कहा कि यह तो कुछ उड़ते ख़यालात हैं और (ऐसे) ख़यालात की ताबीर हमको नहीं आती। (४४) वह शख़्स जो (यूसुफ़ के उन) दो (साथियों) में से छुटकारा पा गया था और उसको एक अर्से के बाद (यूसुफ़ का

क़िस्सा याद आया, बोल उठा कि मुझको (क़ैदख़ाने तक) जाने की आज्ञा हो तो (मैं यूसुफ़ से पूछकर) इसको ताबीर तुमको बताऊँ।(४५) (उसको हुक्म हुआ) और उसने यूसुफ़ से जाकर कहा कि ऐ यूसुफ़! बड़ा सच्चा स्वप्न-फल बतानेवाले हो। भला इस बारे में तो तुम अपनी राय हमसे ज़ाहिर करो कि सात मोटी गायों को सात दुबली (गायें) खाती हैं और सात हरी बालें और दूसरी (सात बालें) सूखी। इसका जवाब दो तो मैं लोगों के पास लौट जाऊँ, ताकि (इस ताबीर का हाल) उनको मालूम हो।(४६) (यूसुफ़ ने) कहा (स्वप्न का फल यह है कि) तुम लोग सात वर्ष तक बराबर काश्तकारी करते रहोगे, तो जो (फ़स्ल) काटो उसको उसी की बालों ही में रहने देना (ताकि ग़ल्ला गले-सड़े नहीं) मगर हाँ किसी क़दर जो तुम्हारे खाने के काम में आये।(४७) फिर इसके बाद सात वर्ष बड़े सख़्त अकाल के आयेंगे जो कुछ तुमने पहले से इन (वर्षों) के लिए इकट्ठा कर रखा होगा खा जायेंगे, मगर हाँ थोड़ा जो कुछ तुम (बीज के लिए) बचा रखोगे (उतना ही लोगों से बच जायगा)।(४८) फिर उसके बाद एक ऐसा साल आयेगा जिसमें लोगों के लिए मेह गिरेगा और (खेती के सिवाय) उस वर्ष अंगूर भी ख़ूब फलेंगे, (लोग शराब के लिए उसके रस भी) निचोड़ेंगे। (सारांश यह कि साक़ी § ने यह सब स्वप्नफल जाकर बादशाह से कहा)। (४९) [रुकू ६ आयात ७]

बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को हमारे सामने लाओ। तो जब चोबदार यूसुफ़ के पास (यह हुक्म लेकर) पहुँचा तो उन्होंने कहा तुम अपनी सरकार के पास लौट जाओ और उनसे पूछो कि उन औरतों का भी हाल मालूम है जिन्होंने (मुझको देखकर) अपने हाथ काट लिए थे (आया वह मेरे पीछे पड़ी थीं या मैं उनके पीछे पड़ा था)? इनके चरित्रों को मेरा परवरदिगार जानता है।(५०) चुनाँचे बादशाह

§ साक़ी का अर्थ है पिलानेवाला। यह व्यक्ति चूँकि पानी आदि पिलाया करता था इसीलिए इस नाम से याद किया गया।

ने इन औरतों को बुलवाकर उनसे) पूछा कि जिस वक़्त तुमने यूसुफ़ से अपना मतलब (नाजायज़) हासिल करना चाहा था (उस वक़्त) तुमको क्या मामला पेश आया ? उन्होंने अर्ज़ किया "हाशा लिल्लाह" हमने तो यूसुफ़ में किसी तरह की बुराई नहीं पाई। (इस पर)अज़ीज़ की बीवी बोल उठी कि अब सब बात ज़ाहिर हो गई। मैंने यूसुफ़ से अपना (नाजायज़) मतलब हासिल करना चाहा था और यूसुफ़ सच्चों में है।(५१) यह (माजरा) चोबदार ने यूसुफ़ से बयान किया। यूसुफ़ ने कहा मैंने कभी की दबी-दबाई बात इसलिए उखाड़ी कि मिस्र के अज़ीज़ को मालूम हो जाय कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी (अमानत में) ख़यानत नहीं की और यह भी मालूम रहे कि ख़यानत करनेवालों की तदबीरों को ख़ुदा चलने नहीं देता।(५२)

———o———

तेरहवाँ पारा (वमा उबर्रिउ)

मैं यूसुफ़ अपनी बाबत नहीं कहता कि मैं पाक-साफ़ हूँ क्योंकि इन्द्रियाँ तो बुराई के लिए उभारती ही रहती हैं मगर यह कि मेरा परवरदिगार अपनी मेहरबानी करे। कुछ शक नहीं कि मेरा परवरदिगार माफ़ करनेवाला रहीम है।(५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को हमारे सामने लाओ कि हम उसको अपनी नौकरी के लिए रखेंगे। जब यूसुफ़ से बातचीत की तो कहा आज तूने विश्वासपात्र होकर हमारे पास जगह पाई।(५४) यूसुफ़ ने अर्ज़ किया मुझको मुल्की ख़जाने पर मुक़र्रर कर दीजिए, मैं अत्यन्त निगहबान और होशियार हूँ। (५५) यों हमने यूसुफ़ को देश में स्थान दिया कि उसमें जहाँ चाहें रहें। हम जिस पर चाहते हैं अपनी मेहरबानी करते हैं और अच्छे काम करने वालों के अंजाम बेकार नहीं होने देते। (५६) और जो लोग ईमान लाये और परहेज़गारी करते रहे, आख़िरी अंजाम भला है। (५७)
[रुकू ७ आयात ८]

यूसुफ़ के भाई आये और यूसुफ़ के पास गये, तो यूसुफ़ ने उनको

पहचान लिया और उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहचाना।(५८) जब यूसुफ़ ने भाइयों का सामान उनके लिए तैयार कर दिया तो कहा अपने सौतेले भाई बिनयामीन को लेते आना, क्या तुम नहीं देखते कि हम नाप (तौल) पूरी देते हैं और हम सबसे अच्छे मेज़मान हैं।(५९) फिर अगर तुम उसको हमारे पास न लाये तो तुमको हमारे यहाँ अनाज नहीं मिलेगा और तुम हमारे पास न आना।(६०) उन्होंने कहा कि हम जाते ही उसके वालिद से उसके सम्बन्ध में विनती करेंगे और अवश्य हमको करना है।(६१) यूसुफ़ ने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि इन लोगों की पूँजी उन्हीं की बोरियों में रख दो ताकि जब लोग अपने बाल-बच्चों की तरफ़ लौटकर जायें तो अपनी पूँजी को पहचानें, ताज्जुब नहीं यह लोग फिर भी आवें।(६२) तो जब अपने वालिद के पास लौटकर गये तो निवेदन किया कि ऐ बाप! हमें अनाज की मनाही कर दी गई है, सो आप हमारे भाई को भी हमारे साथ भेज दीजिए कि हम अनाज लावें और हम उसकी हिफ़ाज़त के जिम्मेदार हैं। (६३) कहा कि मैं इस पर तुम्हारा क्या यक़ीन करूँ मगर वैसा ही यक़ीन जैसा मैंने पहले इसके भाई पर किया था। सो ख़ुदा सबसे अच्छी हिफ़ाज़त करनेवाला है और वह सब मेहरबानों से ज्यादा मेहरबान है। (६४) जब इन लोगों ने अपना सामान खोला तो देखा कि इनकी पूँजी भी इनको लौटा दी गई है। फिर बाप की तरफ़ आये (और) कहने लगे कि ऐ पिता! हमें और क्या चाहिए, यह हमारी पूँजी फिर हमको लौटा दी गई है (अब हमको आज्ञा दो कि बिनयामीन को साथ लेकर जावें), अपने घर के लिए रसद लावें और हम अपने भाई बिनयामीन की हिफ़ाज़त करेंगे और एक बार ऊँट भर अनाज और लावेंगे, यह अनाज (गल्ला) थोड़ा है।(६५) (बाप ने) कहा जब तक तुम ख़ुदा की क़सम खाकर मुझको पूरा अहद न दोगे कि तुम इसको ज़रूर मेरे पास फिर लाओगे, मगर यह कि तुम आप ही घिर जाओ तो मजबूरी है। ऐसा अहद किये बिना तो मैं इसको तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेजूँगा। तो जब उन्होंने बाप को अपना पक्का वचन दे दिया तो (बाप ने) कहा

कि अहद जो हम कर रहे हैं, अल्लाह उसका साक्षी है। (६६) और (बाप ने उनको चलते वक़्त यह भी) तालीम की, लड़कों! (देखो) एक दरवाज़े से दाख़िल न होना (कि कहीं बुरी नज़र न लग जाय) बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना और मैं ख़ुदा की किसी चीज़ से नहीं बचा सकता। हुक्म तो अल्लाह ही का है, मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है और भरोसा करनेवालों को चाहिये कि उसी पर भरोसा करें। (६७) और जब यह लोग (उसी तरह पर) जैसे उनके बाप ने उनसे कह दिया था (मिस्र में) दाख़िल हुए तो यह होशियारी ख़ुदा के सामने इनकी कुछ भी काम नहीं आ सकती थी। वह तो याक़ूब की एक दिली इच्छा थी जिसको उन्होंने पूरा किया और इसमें संदेह नहीं कि याक़ूब हमारे सिखाये से ख़बरदार था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६८) [रुकू ८ आयात ११]

जब यूसुफ़ के पास गये तो यूसुफ़ ने अपने भाई को अपने पास बैठा लिया। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ़) हूँ, सो जो (बुरा बर्ताव वह लोग तुम्हारे साथ) करते रहे हैं, उसका कुछ रंज मत करो। (६९) फिर जब (यूसुफ़ ने) भाइयों को उनका सामान साथ पहुँचा दिया तो अपने भाई की बोरी में पानी पीने को कटोरा रखवा दिया। फिर एक पुकारनेवाले ने पुकारा कि क़ाफ़िलेवालों! हो न हो तुम्हीं चोर हो। (७०) यह लोग पुकारनेवालों की तरफ़ घिरकर पूछने लगे कि (क्यों जी) तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है? (७१) उन्होंने कहा शाही पैमाना (माप) हमको नहीं मिलता और जो शख़्स उसे लाकर हाज़िर करे उसको एक बोझ ऊँट इनाम मिलेगा और मैं उसका ज़ामिन हूँ। (७२) (यह सुनकर यह लोग) कहने लगे देश में शरारत करने की इच्छा से नहीं आये और न हम कभी चोर थे। (७३) (कटोरे के ढूँढ़नेवाले) बोले कि अगर तुम झूठे निकले तो फिर चोर की क्या सज़ा? (७४) वह कहने लगे कि चोर §

§ इब्राहीमी न्याय-शास्त्र के अनुसार चोर को एक वर्ष तक मालवाले मनुष्य की ग़ुलामी (दासता) करनी पड़ती थी। मिस्र में चोर को मार-पीट

की यह सज़ा कि जिसकी चोरी में कटोरा निकले, वही आप उसके बदले में जावे (यानी कटोरे के बदले बादशाह का ग़ुलाम)। हम तो ज़ालिमों को इसी तरह की सज़ा दिया करते हैं। (७५) आख़िरकार यूसुफ़ ने अपने भाई का बोरा से पहले दूसरे भाइयों की बोरियों की तलाशी लिवाना शुरू की, फिर अपने भाई के बोरे से कटोरा निकलवाया। यों हमने यूसुफ़ के फ़ायदे के लिए मकर किया। बादशाह मिस्र के क़ानून की रूह से वह अपने भाई को नहीं रोक सकते थे, मगर यह कि अगर ख़ुदा को मंज़ूर होता (कोई दूसरा रास्ता निकलता)। हम जिसको चाहते हैं उसके दर्जे ऊँचे कर देते हैं, एक ख़बरवाले से एक ख़बरदार बढ़कर है।(७६) (जब बिनयामीन के बोरे से कटोरा निकला तो भाई) कहने लगे कि अगर इसने चोरी की हो, तो (ताज्जुब की) बात नहीं, (इससे) पहले इसका भाई (यूसुफ़ †) भी चोरी कर चुका है, तो यूसुफ़ ने (इसका जवाब देना चाहा मगर) उसको अपने दिल में रखा! इस पर उसको ज़ाहिर न होने दिया और कहा कि तुम बड़े नीच हो और जो कहते हो ख़ुदा ही इसको ख़ूब जानता है। (७७) कहने लगे ऐ अज़ीज़! इसके वालिद बहुत बूढ़े हैं सो आप (मेहरबानी करके) इसकी जगह हममें से किसी को रख लीजिए, हमको तो आप बड़े एहसान करनेवाले मालूम होते हैं। (७८) (यूसुफ़ ने कहा) अल्लाह बचावे कि हम उस शख़्स को छोड़कर जिसके पास हमने अपनी चीज़ पाई है, किसी दूसरे शख़्स को पकड़ रखें। ऐसा करें तो हम बेइन्साफ़ ठहरें। (७९) [रुकू ९ आयात ११]

तो जब यूसुफ़ से नाउम्मीद हो गये तो अकेले सलाह करने

कर उससे दूना भरना मांगते थे। यूसुफ़ ने अपने भाई को अपने पास रोक रखने के लिए उपाय किया था।

† यूसुफ़ के भाइयों ने यूसुफ़ पर झूठ लफंट लगाया है। और कुछ कहते हैं कि यूसुफ़ अपने घर से छिपाकर ग़रीबों को अन्न या भोजन दे आते थे, इसलिए उनके भाइयों ने उन पर चोरी का दोष लगाया है।

बैठे। जो सबमें बड़ा था बोला कि क्या तुमको मालूम नहीं कि वालिद साहब ने ख़ुदा की क़सम लेकर तुमसे पक्का वादा लिया है और पहले यूसुफ़ के हक़ में तुमसे एक गुनाह हो चुका है! तो जब तक मुझको वालिद हुक्म न दें या (जब तक) ख़ुदा मेरे लिए कोई सूरत न निकाले मैं तो उस जगह से टलनेवाला नहीं। ख़ुदा ही सबसे बढ़कर तजवीज़ करने वाला है। (८०) तो तुम पिता की सेवा में लौट जाओ और दुआ करो कि वालिद! आपके लड़के ने चोरी की। हमने वही बात कही हैं जो हमको मालूम हुई है और (वह जो हमने बिनयामीन की रक्षा का ज़िम्मा लिया था तो कुछ) हमको ग़ैब की ख़बर नहीं थी (८१) आप उस बस्ती से पूछ लीजिए जहाँ हम थे और उस क़ाफ़िले से जिसमें हम आये हैं, और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (८२) जब याक़ूब से वह बातें कही गईं तो वह बोले कि (बिनयामीन ने तो चोरी नहीं की) बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है। तो (ख़ैर) और अब सब्र अच्छा है। मुझको तो उम्मीद है कि अल्लाह मेरे सब लड़कों को मेरे पास लायेगा क्योंकि वह जानकार हिकमतवाला है। (८३) याक़ूब बेटों से अलग जा बैठे और कहने लगे 'हाय यूसुफ़' और शोक के मारे उनकी दोनों आँखें सफ़ेद हो गई थीं और वह जी में घुटा करते थे। (८४) (बाप का यह हाल देखकर) बेटे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम तुम तो सदा यूसुफ़ ही की यादगारी में लगे रहोगे, यहाँ तक कि बीमार हो जाओगे। या मर ही जाओगे। (८५) (याक़ूब ने) कहा (मैं तुमसे तो कुछ नहीं कहता) जो परेशानी और रंज मुझको है उसकी फ़रियाद ख़ुदा ही से करता हूँ और ख़ुदा ही की तरफ़ से मुझको वह बातें मालूम हैं जो तुमको मालूम नहीं। (८६) लड़कों! (एक बार फिर मिस्र) जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और ख़ुदा की कृपा से नाउम्मेद न हो क्योंकि ख़ुदा की कृपा से वही लोग निराश हुआ करते हैं जो काफ़िर हैं। (८७) तो जब यूसुफ़ तक पहुँचे तो गिड़गिड़ाने लगे कि अज़ीज़! हम पर और हमारे बाल बच्चों पर सख़्ती पड़ रही है, और हम कुछ थोड़ी-सी पूँजी लेकर आये हैं, हमको पूरा गल्ला (अनाज) दिलवा दीजिए और हमको

अपनी ख़ैरात दीजिए क्योंकि अल्लाह (ख़ैरात) करनेवालों को अच्छा (बदला) देता है।(८८) (अब तो यूसुफ़ से भी) न रहा गया और कहने लगे कि तुमको कुछ याद भी है, जिस वक़्त तुम मूर्खता पर थे, तो तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था।(८९) (इसके कहने से भाइयों को आगाही हुई और) कहने लगे क्या सच तुम्हीं यूसुफ़ हो? यूसुफ़ ने कहा मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा ही भाई है। हम पर अल्लाह ने कृपा की। जो कोई परहेज़गार हो और साबित (ठहरा) रहे, तो अल्लाह नेकी करनेवालों के अंजाम को बेकार नहीं होने देता।(९०) बोले ख़ुदा की क़सम कुछ सन्देह नहीं कि तुमको अल्लाह ने हमसे ज्यादा पसंद रखा और हम ही गुनहगार थे।(९१) यूसुफ़ ने कहा अब तुम पर कोई गुनाह नहीं। ख़ुदा तुम्हारे गुनाह माफ़ करे और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (९२) (तुम्हारे कहने से मालूम हुआ कि पिता की आँखें जाती रही हैं तो) मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसको पिता के मुँह पर डाल दो कि वह देखने लगेंगे और अपने पूरे कटुम्ब को मेरे पास ले आओ। (९३) [रुकू १० आयात १४]

क़ाफ़िला (व्यापारियों का झुंड) मिस्र से चला ही था कि उनके बाप ने कहा कि मुझको बेकार बकवादी* न बनाओ (तो एक बात कहूँ कि) मुझको तो यूसुफ़ जैसी गन्ध आ रही है। (९४) (तो जो बेटे याक़ूब के पास ठहरे थे) वह कहने लगे कि ख़ुदा कि क़सम, तुम तो अपनी पुरानी ग़लती में हो।(९५) फिर जब (यूसुफ़ को ज़िन्दगी मिलने की) ख़ुशख़बरी देनेवाला (याक़ूब के पास) आया (यूसुफ़ का कुर्ता याक़ूब के मुँह पर डाल दिया, उनको तुरंत ही दिखलाई देने लगा। अब याक़ूब ने बेटों से कहा कि क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि मैं अल्लाह (की तरफ़) से वह (बातें) जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।(९६) यह बोले वालिद! ख़ुदा से हमारे गुनाह माफ़ करवा दे, हमही गुनहगार थे।(९७) याक़ूब ने कहा मैं अपने

* यानी यदि तुम मेरी बात को बकवाद न समझो तो मैं कहूँ।

परवरदिगार से तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कराऊँगा वही बख़्शनेवाला मेहरबान है ।(६८) फिर जब यह लोग आख़िरी बार यूसुफ़ के पास गये तो यूसुफ़ ने अपने मा-बाप को सलाम करके उन्हें अपने पास जगह दी और सबकी तरफ़ सम्बोधन करके कहा कि शहर मिस्र में दाख़िल हों और ख़ुदा ने चाहा तो सब उनके आगे आराम के साथ रहोगे ।(६६) मिस्र के क़ायदे के बमूजिब यूसुफ़ ने अपने माता-पिता को तख़्त पर ऊँचा बैठाया और सब दस्तूर के बमूजब यूसुफ़ की ताज़ीम के लिए उनके आगे सिजदे में गिर पड़े, साष्टांग दण्डवत की और यूसुफ़ ने अपना स्वप्न याद करके अपने पिता से निवेदन किया कि हे पिता ! वह जो मैंने पहले स्वप्न देखा था, यह उस स्वप्न का फल† है । मेरे पालनकर्त्ता ने आज उस स्वप्न को सच कर दिखलाया और उसके सिवाय उसने मुझपर एहसान किये हैं कि मुझको क़ैद से निकाला और तुमको गाँव से ले आया, और यद्यपि मुझमें और मेरे भाइयों में शैतान ने फ़साद डलवा दिया था बाहर से तुम सबको मुझसे ला मिलाया । बेशक मेरे परवरदिगार को जो मंजूर होता है वह उसकी तदबीर ख़ूब जानता है, क्योंकि वह जानकार और हिकमतवाला है ।(१०० (यूसुफ़ की तबियत दुनिया से तृप्त हो गई और ख़ुदा से मिलने का शौक़ हुआ तो उन्होंने दुआ की) ऐ मेरे परवरदिगार ! तूने मुझको हुकूमत दी और मुझको (स्वप्न की) बातों का स्वप्नफल कहना भी सिखलाया । आसमान और ज़मीन के पैदा करनेवाले ! दुनिया और क़यामत (दोनों) में तू ही मेरा काम सँभालनेवाला है, मुझको नेकबख़्तों में मौत दे । (१०१) (ऐ पैग़म्बर !) यह चन्द ग़ैब की बातें हैं जिनको हम (वही के ज़रिये से) तुम्हें भेजते हैं और तू उनके पास न था जिस वक़्त (यूसुफ़ के भाइयों ने अपना पक्का इरादा कर लिया था (कि यूसुफ़ को कुएँ में डाल दें) और वह (उनके मारने की) तदबीरें कर रहे थे ।(१०२) बहुत लोग यक़ीन लानेवाले नहीं अगर्चे तू कितना ही

† यूसुफ़ ने ११ सितारों और चाँद-सूरज को स्वप्न में सिजदा करते देखा था । वह यही ग्यारह भाई और उनके मा-बाप थे ।

चाहे(१०३) और तू उनसे उस पर कुछ भलाई नहीं माँगता। यह क़ुरान और तो नहीं परन्तु सब संसार को शिक्षा है।(१०४)[रुकू ११आ.११]

आसमान और ज़मीन में कितनी निशानियाँ हैं जिन पर से होकर लोग गुज़रते हैं और उन पर ध्यान नहीं देते। (१०५) और अक्सर लोगों का हाल यह है कि ख़ुदा को मानते हैं और शिर्क भी करते हैं।(१०६) तो क्या इससे निडर हो गये हैं कि इन पर क़यामत आ जाये और इनको ख़बर भी न हो।(१०७) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो मेरा तरीक़ा तो यह है कि (सबको) ख़ुदा की तरफ़ समझ-बूझ कर बुलाता हूँ। मैं और जो लोग मेरे† हैं और अल्लाह पाक है, मैं मुशरिकों में नहीं हूँ।(१०८) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहले भी बस्तियों ही के रहनेवाले आदमी ही (पैग़म्बर बनाकर) भेजे थे कि हमने उन पर ख़ुदाई पैग़ाम भेजा था, तो क्या (यह लोग) देश में चले-फिरे नहीं कि देख लेते कि जो लोग इनसे पहले हो गुज़रे हैं उनका कैसा फल हुआ और परहेज़गारों के लिए परलोक-वास अच्छा है। तो क्या तुम नहीं समझते। (१०९) यहाँ तक कि पैग़म्बर नाउम्मीद हो गये और ख़्याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तो हमारी मदद उनके पास आ पहुँची; तो जिसको हमने चाहा बचा लिया और अपराधी लोगों से तो हमारी सज़ा टल ही नहीं सकती। (११०) बेशक बुद्धिमानों के लिए इन लोगों के हालात से नसीहत है। यह (क़ुरान) कोई बनाई हुई बात तो नहीं है बलिक जो (आसमानी किताबें) इससे पहले हैं उनकी तसदीक़ है और इसमें उन लोगों के लिए जो ईमानवाले हैं हर चीज़ का ब्योरेवार बयान और नसीहत और हुक्म है (१११) [रुकू १२ आयात ७]

——):o:(——

† यानी मैं और मेरे अनुयायी अल्लाह ही की तरफ़ बुलाते हैं।

१३ सूरे राद ९६

मक्का में उतरी, इसमें ४३ आयतें और ६ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-मीम-रा। (ऐ पैग़म्बर!) यह किताब क़ुरान की आयतें हैं और तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से जो कुछ तुम पर उतरा है यह सच है, लेकिन बहुत लोग नहीं मानते। (१) अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बिना किसी सहारे के ऊँचा बना खड़ा किया (जैसा कि) तुम देख रहे हो, फिर तख़्त पर जा विराजा और चाँद-सूरज को काममें लगाया कि हर एक वक़्त-मुक़र्रर तक चला जा रहा है। वही सब संसार का प्रबन्धकर्त्ता है (अपनी क़ुदरत की) निशानियाँ तफ़सील के साथ बयान फ़र्माता है ताकि तुम लोगों को अपने परवरदिगार से मिलने का यक़ीन हो।(२) वह है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और नदी बना दीं और उसमें हर तरह के फलों की दो-दो क़िस्में पैदा कीं। रात को दिन से ढाँपता है, इन बातों में उन लोगों के लिए जो ध्यान करते हैं निशानियाँ हैं। (३) और ज़मीन में पास-पास कई खेत हैं और अंगूर के बाग़ और खेती और खजूर में पेड़, जड़ मिली और बिन मिली, हालाँकि सबको एक ही पानी दिया जाता है और फलों में हम एक को एक पर ख़ूबी देते हैं। उसमें निशानियाँ हैं, उनको जो समझते हैं। (४) और अगर तू ताज्जुब की बात चाहे तो उनका कहना ताज्जुब है कि जब हम मिट्टी हो जायँगे तो क्या हम नये बनेंगे। यही लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार से इन्कार किया और यही लोग हैं जिनकी गर्दनों में (क़यामत के दिन) तौक़‡ होंगे। यही नरकवासी हैं और हमेशा नरक ही में रहेंगे।(५) (और ऐ पैग़म्बर!) भलाई से पहले यह लोग तुमसे बुराई की जल्दी मचा रहे हैं, हालाँकि इनसे पहले कहावतें चली आती हैं और (ऐ पैग़म्बर! इसमें) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों से

‡ तौक़ जो क़ैदियों के गले में डाला जाता था।

उनकी नटखटियों के होने पर भी माफ़ करनेवाला है और तुम्हारे परवरदिगार की मार भी बड़ी सख़्त है। (६) काफ़िर कहते हैं कि इस पर इसके परवरदिगार की ओर से निशानी † क्यों नहीं उतरी? (ऐ पैग़म्बर!) तुम तो सिर्फ़ डरानेवाले हो और हरएक जाति का एक राह बतानेवाला है। (७) [रुकू १ आयात ७]

हर मादा जो बच्चा (पेट में) लिये हुए है उसको अल्लाह ही जानता है और पेट का घटना-बढ़ना (उसी को मालूम रहता है), और उसके यहाँ हरएक चीज़ का अन्दाज़ा है। (८) खुले और छिपे का जाननेवाला सबसे ऊँचा है।(९) तुम लोगों में जो कोई बात चुपके से कहे और जो शख़्स पुकारकर कहे और जो रात के वक़्त छिपा हो और दिन में गलियों में फिरता हो, उसके नज़दीक बराबर है। (१०) उस (सेवक) के आगे और पीछे पहरेवाले हैं जो उसको अल्लाह की आज्ञा से बचाते हैं। ख़ुदा किसी जाति की हालत नहीं बदलता जब तक वह अपने दिल के ख़्याल न बदले और जब ख़ुदा किसी जाति पर कोई आफ़त डालनी चाहे, तो वह टल नहीं सकती और ख़ुदा के सिवाय उन लोगों का कोई मददगार नहीं। (११) और वही है डराने और आशा दिलाने के लिए (बिजली की चमक) तुम लोगों को दिखाता और बोझिल बादलों को उभारता है। (१२) गरज (कड़क) उसकी तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बतलाती है और फ़रिश्ते उसके डर के मारे और बिजलियाँ भेजते हैं। फिर जिस पर चाहता है उस पर डालता है और यह ख़ुदा की बात में झगड़ते हैं हालाँकि उसके दाँव सख़्त हैं। (१३) उसी को सच्चा पुकारना है और जो लोग इसके सिवाय पुकारते हैं, वह उनकी कुछ नहीं सुनते। मगर जैसे एक शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैला दे ताकि पानी उसके मुँह में आ जावे हालाँकि-

† काफ़िर कहते थे कि जैसे हज़रत ईसा मरे हुए लोगों को जिला देते थे वैसे ही मोहम्मद साहब क्यों नहीं करते या हज़रत मूसा की तरह आश्चर्यजनक लाठी ही ख़ुदा से माँग लें तो हम उनको रसूल समझें।

वह उस तक कभी नहीं पहुँचेगा। और जितनी काफ़िरों की पुकार है
सब गुमराही है। (१४) और जिस क़दर आसमान व ज़मीन में
है, बस और बेबस अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हुए हैं और
(इसी तरह) सुबह और शाम उनके साये भी सिजदा करते
हैं। (१५) ★ [सिजदा २] (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) पूछो कि
आसमान और ज़मीन पालनेवाला कौन ? कहो कि अल्लाह। कहो
क्या तुमने ख़ुदा के सिवाय काम के सँभालनेवाले बना रखे हैं जो
अपने ज़ाती नुक़सान फ़ायदों के मालिक नहीं ? कहो भला कहीं अन्धा
और आँखोंवाला बराबर है या कहीं अँधेरा और उजाला बराबर है ?
या कहीं इन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक ठहरा रखे हैं कि उसी-कैसी
सृष्टि उन्होंने भी पैदा कर रखी और अब उनको संसार के सम्बन्ध
में सन्देह हो गया है ? (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि अल्लाह ही
हर चीज़ का पैदा करनेवाला है और वह अकेला ज़बरदस्त है। (१६)
(उसी ने) आसमान से पानी बरसाया, फिर अपने अन्दाज़े से
नाले बह निकले। फिर फूला हुआ झाग जो ऊपर आ गया था
उसको रेले ने ऊपर उठा लिया और जो ज़ेवर व दूसरे सामान के लिए
(धातुओं को) आग में तपाते हैं उसमें उसी तरह का झाग होता है। यों
अल्लाह सच और झूठ की मिसाल बतलाता है (कि पानी सच की
जगह है और झाग झूठ की जगह है) सो झाग तो ख़राब जाता है
और (पानी) जो लोगों के काम आता है वह ज़मीन में ठहरा रहता
है। अल्लाह इस तरह मिसालें बयान फ़र्माता है। (१७) जिन लोगों
ने अपने परवरदिगार का कहा माना उनको भलाई है और जिन्होंने
उसकी आज्ञा न मानी तो जो कुछ ज़मीन पर है अगर सब उनके पास
हो और उसके साथ उतना ही और यह लोग अपने छुड़वाई के बदले
में उसको दे डालें, तब भी छुटकारा कहाँ ? यही लोग हैं जिनसे बुरी
तरह हिसाब लिया जायगा और इनका आख़िरी ठिकाना दोज़ख़ है,
और वह बुरी जगह है। (१८) [रुकू २ आयात ११]

भला जो शख़्स इस बात को समझता है कि जो तुम्हारे परवरदिगार

की तरफ़ से तुम पर उतरा है, सच है उस आदमी की तरह नहीं है जो अंधा हो। वही लोग समझते हैं जिनको समझ है।(१६) वे जो अल्लाह के अहद को पूरा करते हैं और अहद को नहीं तोड़ते, (२०) ख़ुदा ने जिनको जोड़े रखने† का हुक्म दिया है वह उनको जोड़े रखते हैं, और अपने परवरदिगार से डरते और (क़यामत के दिन) बुरी तरह हिसाब लिये जाने का खटका रखते हैं। (२१) जिन्होंने अपने परवरदिगार के लिए तकलीफ़ पर सब्र किया और नमाज़ें पढ़ीं और हमारे दिये में से चुपके और ज़ाहिर (ख़ुदा की राह में) ख़र्च किया और बुराई के मुक़ाबले में भलाई की, यही लोग हैं जिनको दुनिया का फल अच्छा है।(२२) हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें वह जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीवियों और उनकी औलाद जो भला काम करनेवाले होंगे (सब उनके साथ जायेंगे) (और जन्नत के) हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आते हैं। (२३) (सलामालेक करेंगे और कहेंगे कि दुनिया में) जो तुम सब्र करते रहे हो सो तुमको ख़ूब अच्छा अंजाम मिला है। (२४) जो लोग ख़ुदा के साथ पक्का क़ौल व क़रार किये पीछे उसे तोड़ते और जिनके जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है उनको तोड़ते और देश में फ़साद फैलाते हैं, यही लोग हैं जिनके लिये फटकार है और उनका अंजाम बुरा है। (२५) अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसकी चाहता है) कम कर देता है, और वे काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी से ख़ुश हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी क़यामत के सामने बिल्कुल नाचीज़ है। (२६) [रुकू३ आ.८]

जो लोग इनकारी हैं कहते हैं कि इस पर इसके परवरदिगार की तरफ़ से कोई करामात क्यों नहीं उतरी? तुम इनसे कहो अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह (भटकाया) करता है और जो रुजू होता है उसको अपनी तरफ़ का रास्ता दिखाता है।(२७) जो लोग ईमान लाये और उनके दिलों को ख़ुदा की याद से चैन होता है, सुन रखो कि

---

† ख़ुदा ने नाता तोड़ने का हुक्म नहीं दिया। जो लोग अपने नाते-रिश्ते वालों को छोड़ देते हैं या उनसे बुराई करते हैं, वह पापी हैं।

ख़ुदा की याद से दिलों को चैन हुआ करता है।(२८) जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये उनके लिए (क़यामत में) ख़ुशहाली है और जन्नत उनका अच्छा ठिकाना है।(२९) (ऐ पैग़म्बर ! जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) इसी तरह हमने तुमको भी एक उम्मत (गिरोह) में भेजा है जिनसे पहले और उम्मतें (संगतें) गुज़र चुकी हैं, ताकि जो (ख़ुदाई पैग़ाम) उसी के ज़रिये से तुम पर उतरा है, यह उनको पढ़कर सुना दो। और यह लोग इन्कारी हैं तो कहो कि वही मेरा परवर्दिगार है, उसके सिवाय किसी की दुआ नहीं करनी चाहिए। मैं उसी का भरोसा रखता हूँ और उसकी तरफ़ चित्त लगाता हूँ।(३०) और अगर कोई क़ुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उस (की बरकत) से ज़मीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता, बल्कि सब काम अल्लाह के हैं तो क्या ईमानवालों को इस पर सब्र नहीं होता कि अगर ख़ुदा चाहे तो सब लोगों को राह पर लावे। और जो लोग मुन्किर हैं इनको इनकी करतूत की सज़ा में तकलीफ़ पहुँचाता रहेगा या इनकी बस्ती के आस-पास उतरेगी यहाँ तक कि ख़ुदा का क़ौल पूरा हो। ख़ुदा वादा-ख़िलाफ़ी नहीं करता। (३१) [रुकू ४ आयात ५]

(ऐ पैग़म्बर !) तुमसे पहले भी पैग़म्बरों को हँसी उड़ाई जाचुकी है सो हमने इन्कारियों को ढील दी है फिर उनको धर पकड़ा तो हमारी सज़ा कैसी (सख़्त) थी।(३२) तो क्या जो हरएक शख़्स के काम की ख़बर रखता है और यह लोग अल्लाह के लिए (दूसरे) शरीक ठहराते हैं (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) कहो कि तुम इनके नाम तो लो क्या तुम ख़ुदा को (ऐसे शरीकों की) ख़बर देते हो जिनको वह ज़मीन में नहीं जानता या ऊपर बातें बनाते हो। बात यह है, मुन्किरों को अपनी चालाकियाँ भली मालूम होती हैं और राह से रुके हुए हैं और जिसको ख़ुदा गुमराह करे तो कोई उसको राह दिखानेवाला नहीं।(३३) इन लोगों के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में सज़ा है और क़यामत की सज़ा बहुत सख़्त है और ख़ुदा से कोई उनको बचानेवाला नहीं।(३४) परहेज़गारों के लिए जिस बाग़ (जन्नत) का वादा किया जा रहा है,

उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल सदाबहार हैं और छाँह भी। यह उन लोगों के लिए फल हैं जो परहेज़गारी करते रहे और इन्कारियों का अंजाम दोज़ख है। (३५) जिनको हमने किताब दी है वह जो तुम पर उतारी है उससे खुश होते हैं और दूसरे फ़िर्क़े उसकी चन्द बातों से इन्कार रखते हैं। तुम (इनसे कहो कि मुझको तो यही हुक्म मिला है कि मैं खुदा ही की दुआ करूँ और किसी को इसका शरीक न बनाऊँ, (तुमको) उसी की तरफ़ बुलाता हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना है। (३६) और ऐसा ही हमने इसको अरबी हुक्म में उतारा है और अगर इसके बाद भी जबकि तुमको इल्म हो चुका है तुमने इनकी इच्छाओं की पैरवी की तो खुदा के सामने न कोई तुम्हारा हिमायती होगा और न कोई बचानेवाला। (३७) [रुकू ५ आयात ६]

तुमसे पहले भी हमने पैग़म्बर भेजे और हमने उनको बीबियाँ †भी दीं और औलाद भी और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि खुदा की आज्ञा के बिना कोई करामात दिखलावे। हर वादा लिखा हुआ है। (३८) खुदा जिसको चाहे मिटा देता है और (जिसको चाहता है) क़ायम रखता है और उसके पास असल किताब है। (३९) जैसे-जैसे वादे इनको हम करते हैं चाहे बाज़ वादे हम (तुम्हारी जिन्दगी में) तुमको पूरे कर दिखावें और चाहे तुमको दुनिया से उठा लेवें। हर हाल में पहुँचा देना तुम्हारा काम है और हिसाब लेना हमारा। (४०) क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को सब तरफ़ से दबाते§ चले आते हैं और अल्लाह हुक्म देता है कोई उसके हुक्म को टाल नहीं सकता और वह बड़ी जल्दी हिसाब लेनेवाला है। (४१) जो लोग इन (मक्का के काफ़िरों) के पहले हो गुज़रे हैं उन्होंने भी मकर किये सो सब मकर तो अल्लाह ही के हाथ में हैं। जो शख्स जो कुछ कर रहा

† कुछ यहूदी कहते थे कि नबी तो वह है जो बाल-बच्चों के झगड़े से दूर रहे और मुहम्मद साहब ऐसे नहीं हैं, इसलिए कैसे नबी हैं! इस पर यह आयतें उतरीं।

§ याने इस्लाम फैलता जाता है और इन्कार का क्षेत्र कम होता जाता है।

है ख़ुदा को मालूम है और इन्कारियों को जल्द मालूम हो जायगा कि पिछला घर किसका है ।(४२) और काफ़िर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो (इनसे) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह और जिनके पास किताब है गवाह हैं ।(४३) [रुकू ६ आयात ६]

—o—

१४ सूरे इब्राहीम ७२

मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें और ७ रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-रा। यह किताब हमने तुम पर इस मतलब से उतारी है कि लोगों को उनके परवरदिगार के हुक्म से अन्धेरों से निकालकर उजाले की ओर उसके रास्ते पर जो ज़बरदस्त और तारीफ़ के लायक़ है लायें।(१) अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और इन्कारवालों को एक सख़्त सज़ा से अफ़सोस है।(२) जो लोग क़यामत के सामने दुनिया का जीवन पसंद करते और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकते और उसमें ऐब ढूँढ़ते हैं, यही लोग बड़ी भूल पर हैं।(३) जब कभी हमने कोई पैग़म्बर भेजा तो उसी की ज़बान में‡ (बातचीत करता हुआ) भेजा ताकि वह उनको समझा सके। इस पर भी ख़ुदा जिसको चाहता है फिर भटकाता है और जिनको चाहता है राह देता है और वह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (४) हमने ही मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा था कि अपनी जाति को (कुफ़्र के) अन्धेरों से निकालकर (ईमान के) उजाले में लाओ और उसको ख़ुदा के दीन की याद दिलाओ क्योंकि उनमें जो सच माननेवाले अटल हैं उनके लिए निशानियाँ हैं। (५)

‡ काफ़िर चाहते थे कि क़ुरान अरबी के बदले किसी और भाषा मे होता तो हम कुछ उस पर ध्यान भी देते। अरबी तो मुहम्मद की बोली है। शायद अपने जी से बना लिया हो।

और उन्हीं वक़्तों का ज़िक्र यह भी है कि मूसा ने अपनी जाति से कहा कि (भाइयों !) अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो। जबकि उसने तुमको फ़िरऔन के लोगों से बचाया, वह तुमको बुरी सजा देते और तुम्हारे बेटों को ढूँढ़ ढूँढ़कर हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे, और इसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी मदद थी।(६) [रुकू १ आयात ६]

जब तुम्हारे परवरदिगार ने जता दिया था कि अगर हक़ मानोगे तो हम तुमको और ज्यादा न्यामत देंगे और अगर तुमने नाशुक्री की तो हमारी मार सख़्त है।(७) और मूसा ने कहा कि अगर तुम और जितने लोग ज़मीन की सतह पर हैं वह सब ख़ुदा से इनकारी हो जाओ तो ख़ुदा बेपरवाह और तारीफ़ के योग्य है।(८) क्या तुमको उनके हालात नहीं पहुँचे जो तुमसे पहले नूह की, आद की और समूद की जाति में हो गुज़रे हैं ? जो उनके बाद हुए उनकी ख़बर ख़ुदा ही को है। उनके पैग़म्बर करामात ले-लेकर उनके पास आये तो उन्होंने अपने हाथों को उन्हीं के मुखों पर उलट दिया (यानी उनको नहीं माना) और बोले जो हुक्म लेकर तुम भेजे गये हो हम उसको नहीं मानते और जिस राह की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हम उसी की बाबत धोखे में हैं।(९) उनके पैग़म्बरों ने कहा क्या ख़ुदा में शक है जो आसमान और ज़मीन का बनानेवाला है ? वह तुमको इसीलिए बुलाता है कि तुम्हारे अपराध क्षमा करे और एक क़ौल तक जो हो चुका है तुमको (दुनिया में) रहने दे। वह कहने लगे कि तुम भी तो हमारी तरह के आदमी हो। तुम चाहते हो कि जिन (पूजितों को) हमारे बड़े पूजते आये हैं उनसे हमको रोक दो, तो हमको कोई ज़ाहिरा करामात ला दिखाओ।(१०) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि हम तुम्हारी ही तरह के आदमी हैं मगर ख़ुदा अपने बंदों में से जिस पर चाहता मेहरबानी करता है और हमारी सामर्थ्य नहीं कि हम कोई करामात लाकर तुमको दिखावें। अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा रखना चाहिए।(११) हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न रखें?

हमारे तरीक़े उसी ने हमको बताये और जैसा-जैसा दुख तुम हमको दे रहे हो हम उन पर संतोष करेंगे और भरोसा करनेवालों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा करें। (१२) [रुकू २ आयात ६]

काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे या तुम फिर हमारे मज़हब में आ जाओ। इस पर पैग़म्बरों के परवरदिगार ने उनकी तरफ़ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) भेजा कि हम (इन) सर्कश लोगों को ज़रूर बरबाद करेंगे (१३) और उनके पीछे ज़रूर तुमको उसी ज़मीन पर बसायेंगे। यह बदला उस शख़्स का है जो हमारे सामने खड़े होने से डरे और हमारी सज़ा से डरे।(१४) पैग़म्बरों ने चाहा कि (उनका और काफ़िरों का झगड़ा) फ़ैसल हो जावे और हर हेकड़ ज़िद्दी बे-मुराद रह गया। (१५) इसके बाद उसको दोज़ख़ है और उसको पीप का पानी पिलाया जायगा।(१६) उसको घूँट-घूँट पियेगा और उसको लीलना कठिन होगा और मौत उसको हर तरफ़ से आती (हुई दिखाई देगी) और वह नहीं मरेगा और उसके पीछे दुखदाई सज़ा है।(१७) जो लोग अपने परवरदिगार को नहीं मानते उनकी मिसाल ऐसी है कि उनके काम गोया राख (का ढेर) हैं कि आँधी के दिन उसको हवा ले उड़े। जो यह लोग कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके साथ नहीं आवेगा, यही आख़िरी दर्जे की नाकामयाबी है।(१८) क्या तूने इस बात पर नज़र नहीं की कि ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन को जैसे चाहिए बनाया। अगर चाहे तो तुमको मिटा दे और नई सृष्टि को लाकर बसाये।(१९) और यह ख़ुदा पर कुछ कठिन नहीं।(२०) और सब लोग ख़ुदा के आगे निकल खड़े होंगे तो कमज़ोर सर्कशों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पीछे थे सो क्या तुम ख़ुदा की सज़ा में से कुछ हम पर से हटा सकते हो? वह बोले अगर ख़ुदा हमको राह पर लाता तो हम भी तुमको राह पर लाते। (अब तो) बेसब्री करें तो हमारे लिए बराबर है, हमको किसी तरह छुटकारा नहीं। (२१) [रुकू ३ आयात ९]

जब फ़ैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा कि ख़ुदा ने तुमसे सच्चा वादा किया था और जो वादा मैंने तुमसे किया था झूठ था और तुम

पर मेरी कुछ जबरदस्ती न थी। बात तो इतनी ही थी कि मैंने तुमको (अपनी तरफ़) बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब मुझे दोष न दो बल्कि अपने को दोष दो। न तो मैं तुम्हारी पुकार को पहुँच सकता हूँ और न तुम मेरी पुकार पर पहुँच सकते हो। मैं तो मानता ही नहीं कि तुम मुझको पहले शरीक (ख़ुदा) बनाते थे। इसमें शक नहीं कि जो लोग जाहिल हैं उनको कड़ी सज़ा है।(२२) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये (जन्नत के) बाग़ों में दाख़िल किये जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। अपने परवरदिगार के हुक्म से उनमें हमेशा रहेंगे। वहाँ उनको दुआ सलाम होगी।(२३) क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने अच्छी बात की कैसी मिसाल दी है कि गोया एक पाक पेड़ है, उसकी जड़ मज़बूत है और उसकी शाखायें आसमान में हैं।(२४) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक़्त अपने फल देता है और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण बतलाता है ताकि वह सोचें।(२५) और गन्दी बात की मिसाल गन्दे पेड़ जैसी है जो ज़मीन के ऊपर से उखड़ गया उसके कुछ ठहराव नहीं।(२६) जो लोग ईमान लाये हैं उनको मज़बूत बात से अल्लाह दुनिया में मज़बूत और क़यामत में मज़बूत करता है और अल्लाह अन्यायियों को बिचला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है। (२७) [रुकू ४ आयात ६]

(ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अच्छे पदार्थों के बदले में (नाशुक्री) की और अपनी जाति को मौत के घर में ले जा उतारा†(२८) कि उसमें दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है।(२९) इन लोगों ने अल्लाह के सामने दूसरे पूजित खड़े किये हैं ताकि उसकी राह से बिचलायें। (ऐ पैग़म्बर लोगों से) कहो कि (ख़ैर चन्द रोज़ दुनिया में) रह-बस लो, फिर तो तुमको दोज़ख़ की तरफ़ जाना ही है (३०) (ऐ पैग़म्बर !) हमारे सेवक जो ईमान लाये हैं उनसे कहो नमाज पढ़ा करें और इससे पहले

† मक्का के नेता जिन्होंने अपनी जाति को अनेक बुराइयों में डाला।

(क़यामत का) दिन आवे जबकि न सौदा है न दोस्ती। हमारी दी हुई रोज़ी में से चुपके और ज़ाहिरा खर्च करते रहें। (३१) अल्लाह वही है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी बरसाया। फिर पानी के ज़रिये से फल निकाले कि वह तुम लोगों की रोज़ी है। किश्तियों को तुम्हारे अधिकार में किया ताकि उसके हुक्म से नदी में चलें और नदियों को भी तुम्हारे अधिकार में कर दिया।(३२) और सूरज व चाँद को जो चक्कर खाते हैं एक दस्तूर पर तुम्हारे काम में लगाया और रात-दिन को तुम्हारे अधिकार में कर दिया। (३३) तुमको हर चीज़ में से कुछ माँगा दिया और अगर खुदा के एहसान को गिनना चाहो तो पूरा-पूरा गिन न सकोगे। मनुष्य बड़ा बेइन्साफ़ और बड़ा नाशुक्रा है। (३४) [रुकू ५ आयात ७]

जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे परवरदिगार! इस शहर (मक्का) को अमन की जगह बना और मुझको और मेरी सन्तान को बुतपरस्ती से बचा।(३५) परवरदिगार! इन बुतों ने बहुतेरे लोगों को भटकाया है सो जिसने मेरी राह पकड़ी वह मेरा है,जिसने मेरा कहना न माना सो तू माफ़ करनेवाला है।(३६) ऐ हमारे परवरदिगार! मैंने तेरे प्रतिष्ठित घर के पास (इस) उजाड़ भूमि में जहाँ खेती नहीं अपनी कुछ औलाद बसाई हैं ताकि यह लोग नमाज़ पढ़ें, तो ऐसा कर कि लोगों के दिल इनकी तरफ़ को लगें और फलों से इनको रोज़ी दे ताकि यह शुक्र करें‡।(३७) ऐ हमारे परवरदिगार! जो हम छिपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तुझको मालूम है और ज़मीन और आसमान में तुझ से कोई चीज़ छिपी नहीं।(३८) खुदा का शुक्र है जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ (दो बेटे) दिये। मेरा परवरदिगार पुकार को सुनता है।(३९) ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको और मेरी सन्तान को ताक़त दे कि मैं नमाज़ पढ़ता रहूँ और ऐ मेरे परवरदिगार!

‡ इन आयतों में हज़रत इस्माईल और उनकी मा बीबी हाजिरा की कहानी की ओर संकेत किया गया है। इन लोगों को हज़रत इब्राहीम ने अपनी दूसरी बीबी सारा के कहने से एक जंगल में डाल दिया था।

मेरी दुआ क़बूल कर।(४०) ऐ हमारे परवरदिगार! जिस दिन (काम का) हिसाब होने लगे, मुझको और मेरी मा और वालिद को और ईमानवालों को माफ़ करना।(४१) [रुकू ६ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर!) ऐसा न समझना कि ख़ुदा (इन) ज़ालिमों के काम से बेख़बर है और ख़ुदा इनको उस दिन तक की फ़ुर्सत देता है जबकि आँख फटी की फटी रह जायेंगी, (४२) अपने सिर को उठाये दौड़ते फिरेंगे, निगाह उनकी तरफ़ न करेंगे और उनके दिल उड़ जायेंगे।(४३) (ऐ पैग़म्बर!) लोगों को उस दिन से डरा जबकि उन पर सज़ा उतरेगी तो अन्यायी कहेंगे कि हमारे परवरदिगार! हमको थोड़ी-सी मुद्दत की मुहलत और दे, तो हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े होंगे और पैग़म्बरों के पीछे हो जायँगे। क्या तुम पहले सौगंध नहीं खाया करते थे कि तुमको किसी तरह की घटती न होगी।(४४) जिन लोगो ने आप अपने ऊपर ज़ुल्म किये, उन्हीं के घरों में तुम भी रहे और तुम जान चुके थे कि हमने उनके साथ कैसा बर्ताव किया और हमने तुम्हारे लिए मिसालें भी बतला दी थीं।(४५) यह अपना मक्कर कर चुके और उनकी चालें ख़ुदा की नज़र में थीं और उनकी चालें ऐसी न थीं कि पहाड़ों को जगह से टाल दें।(४६) सो ऐसा ख्याल न करना कि ख़ुदा जो अपने पैग़म्बरों से अहद कर चुका है उसके विरुद्ध करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेनेवाला है।(व नज़मा क़ुब७)बदलक !सदू तरह की जमीन कर दी जायगी और आसमान और (सब) लोग खु कद ज़बास्दर के सामने निकल खड़े होंगे।(४८) और ऐ पैग़म्बर! तुम उसी दिन गुनहगारों को जन्जीरों में जकड़े हुए देखोगे।(४९) गन्धक के उनके कुर्ते होंगे और उनके मुँहों को आग ढाँके लेती होगी।(५०) इस ग़रज़ से कि ख़ुदा हर शख़्स को उनके किए का बदला दे अल्लाह जल्द हिसाब लेनेवाला है।(५१) यह (क़ुरान) लोगों के लिए पयाम है और ग़रज़ यह है कि इसके ज़रिये से लोगों को डराया जाय और मालूम हो जाय कि ख़ुदा एक है और जो लोग बुद्धि रखते हैं नसीहत से पकड़ें।(५२) [रुकू ७ आयात ११]

चौदहवाँ पारा (रुबमा)

१५ सूरे हिज्र ५४

मक्का में उतरी, इसमें ६६ आयतें, और ६ रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-रा। यह किताब और खुले क़ुरान की आयतें हैं। (१) काफ़िर बहुतेरी इच्छायें करेंगे कि ईमानदार होते,(२) तो (ऐ पैग़म्बर!) इनको रहने दो कि खायें और फ़ायदे उठायें और आशाओं पर भूले रहें, फिर पीछे मालूम हो जायगा।(३) हमने कोई बस्ती नहीं उजाड़ी मगर उसकी उम्र पहले से तय थी। (४) कोई जमात (गिरोह) न अपनी उम्र से आगे बढ़ सकती है और न पीछे रह सकती है।।(५) मक्का के (काफ़िर कहते हैं) कि ऐ शख्स ! तुझ पर क़ुरान उतरा है, तू पागल है।(६) अगर तू सच्चा है तो फ़रिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता?(७) सो हम फ़रिश्तों को नहीं उतारा करते, मगर फ़ैसले के लिए और फिर उनको अवकाश भी न मिलेगा।(८) हमी ने यह शिक्षा क़ुरान उतारी है और हमी उसके निगहबान भी हैं।(९) और हमने तुमसे पहले भी अगले लोगों के गिरोहों में पैग़म्बर भेजे थे। (१०) जब-जब उनके पास पैग़म्बर आये, उनकी हँसी उड़ाई। (११) इसी तरह हमने अपराधियों के दिलों में ठट्टेबाजी डाली है।(१२) यह क़ुरान पर ईमान नहीं लावेंगे और यह रस्म पहले से चली आई है। (१३) अगर हम इन लोगों के लिए आसमान का एक दरवाज़ा खोल दें और यह लोग सबदिन चढ़ते रहें।(१४) तो भी यही कहेंगे हां न हो हमारी नज़र बाँध दी गई है और हम पर किसी ने जादू कर दिया है। (१५) [रुकू १ आयात १५]

हमने आसमान में बुर्ज बनाये और देखनेवालों के लिए उसको तारों से सजाया। (१६) और हर निकाले हुए शैतान से हमने उसकी रक्षा की। (१७) मगर चोरी-छिपा कोई बात सुन भागे तो दहकता हुआ

अंगारों का एक तारा उसको खदेरने को उसके पीछे होता है ।(१८) और हमने ज़मीन को फैलाया और हमने उसमें पहाड़ गाड़ दिये और हमने इससे हरएक चीज़ मुनासिब पैदा की ।(१६) हमने ज़मीन में तुम लोगों के खाने के सामान इकट्ठा किये और इनको जिनको तुम रोज़ी नहीं देते ।(२०) और जितनी चीज़ें हैं हमारे यहाँ सबके खज़ाने हैं मगर हम एक अटकल मालूम करके उनको भेजते रहते हैं।(२१) हमने हवाओं को जो बादलों को पानी से बोझदार करती हैं चलाया । फिर हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने वह तुम लोगों को पिलाया और तुम लोगों ने उसको जमा करके नहीं रखा ।(२२) और हम ही जिलाते और हम ही मारते हैं और हम ही वारिस होंगे ।(२३) और हम तुम्हारे अगलों और पिछलों को जानते हैं ।(२४) ऐ पैग़म्बर ! तुम्हारा परवरदिगार इनको जमा करेगा । वह हिकमतवाला जानकार है । (२५) [रुकूअ २ आयात १०]

हमने सड़े हुए गारे से जो सूखकर खनखनाने लगता है आदमी को पैदा किया ।(२६) और हम जिन्नों को पहले लू की आग से पैदा कर चुके थे ।(२७) और (ऐ पैग़म्बर !) उस वक़्त को याद करो जबकि तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खनखनाने लगता है एक आदमी को पैदा करनेवाला हूँ ।(२८) तो जब मैं उसको पूरा बना चुकूँ और उसमें रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सिजदा (दंडवत) करना ।(२६) चुनाँचे तमाम फ़रिश्ते सबके सब सिजदा करने लगे।(३०) मगर इबलीस ने सिजदा करनेवालों में शामिल होने से इन्कार किया ।(३१) इस पर खुदा ने कहा ऐ इबलीस ! तुझको क्या हुआ कि तू सिजदा करनेवालों में शामिल नहीं हुआ ?(३२) वह बोला कि मैं ऐसे शख्स को सिजदा न करूँगा जिसको तूने सड़े हुए गारे से पैदा किया जो खनखनाने लगता है ।(३३) (खुदा ने) कहा पस (जन्नत से) निकल, तू फटकारा हुआ है ।(३४) क़यामत के दिन तक तुझ पर फटकार होगी ।(३५) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! तू मुझको उस दिन तक की मोहलत दे

जबकि मुर्दे उठा खड़े किये जावेंगे। (३६) (ख़ुदा ने) कहा कि तुझको मुहलत दी गई (३७) क़यामत के वक़्त के दिन तक।(३८) शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार! जैसी तूने मेरी राह मारी, मैं भी दुनिया में इन सबको बहारें दिखाऊँगा और इन सबको राह से बहकाऊँगा, (३९) सिवाय उनके जो तेरे चुने बन्दे हैं।(४०) ख़ुदा ने कहा कि यही हम तक सीधी राह है। (४१) जो हमारे सेवक हैं उन पर तेरा किसी तरह का ज़ोर न होगा। मगर उन पर † जो गुमराहों में से तेरे पीछे हो जायें (४२) ऐसे तमाम लोगों के लिए दोज़ख़ का वादा है।(४३) उसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए दोज़ख़ी लोगों की टोलियाँ अलग-अलग होंगी (४४) [रुकू ३ आयात १६]

परहेज़गार (जन्नत के) बाग़ों और चश्मों में होंगे।(४५) सलामती के साथ इतमीनान में इन बाग़ों में आओ।(४६) उनके दिलों में जो रंजिश है उसको निकाल दो, एक दूसरे के आमने-सामने तख़्तों पर भाई होकर बैठो§(४७) इनको वहाँ जन्नत में किसी तरह का दुख न होगा और न यह वहाँ से निकाले जावेंगे।(४८) हमारे सेवकों को चेता दो कि मैं माफ़ करनेवाला दयालु हूँ।(४९) हमारी मार दुख की मार है।(५०) इनको इब्राहीम के मेहमान का हाल सुनाओ।(५१) जब इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। इब्राहीम ने कहा हम तुमसे डरते हैं।(५२) वह बोले आप डर न कीजिए, हम आपको एक योग्य पुत्र की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं।(५३) इब्राहीम ने कहा क्या तुम मुझे ख़ुशख़बरी देते हो जबकि मुझे बुढ़ापा आ चुका है, तो अब काहे की ख़ुशख़बरी सुनाते हो ?(५४) वह कहने लगे हम आपको सच्ची ख़ुशख़बरी का समाचार सुनाते हैं, सो आप नाउम्मीद न हों।(५५) (इब्राहीम

---

† आदमी दो तरह के हैं (१) ख़ुदा की राह चलनेवाले (२) शैतान की राह चलनेवाले। यह दूसरे ही दोज़ख़ी (नरकवासी) हैं।

§ जन्नती एक दूसरे के साथ सच्चा प्रेम रखेंगे। उनमें कुछ भेद-भाव झगड़ा न रह जायगा।

ने) कहा कि राह भूलों के सिवाय ऐसा कौन है जो अपने परवरदिगार की मेहरबानी से नाउम्मीद हो।(५६) (इब्राहीम ने) कहा ऐ ख़ुदा के भेजे हुए फ़रिश्तों! फिर अब तुमको क्या काम है?(५७) उन्होंने जवाब दिया कि हम एक क़सूरवार क़बीले की तरफ़ भेजे गये हैं।(५८) मगर लूत का कुटुम्ब हम बचा लेंगे।(५६) मगर उनकी स्त्री † अवश्य रह जायगी। (६०) [रुकू ४ आयात १६]

फिर जब (ख़ुदा के) भेजे फ़रिश्ते लूत की जाति के पास आये,(६१) (तो लूत ने) कहा तुम लोग अजनबी-से हो।(६२) वह कहने लगे नहीं बल्कि जिसमें तुम्हारी जाति को सन्देह था उसी को लेकर आये हैं।(६३) और हम सच आज्ञा लेकर तुम्हारे पास आये हैं और हम सच कहते हैं।(६४) तो कुछ रात रहे तुम अपने लोगों को लेकर निकल जाओ और तुम इनके पीछे रहना और तुममें से कोई मुड़कर न देखे और जहाँ कोई हुक्म दिया गया है उसी तरफ़ को चले जाना।(६५) हमने लूत के दिल में यह बात जमा दी थी सुबह होते होते उनकी जड़ काट दी जावेगी।(६६) और शहर के लोग ख़ुशियाँ मनाते हुए आये।(६७) (लूत ने उनसे) कहा कि यह मेरे मेहरबान हैं, सो मुझको बदनाम मत कर।(६८) और ख़ुदा से डरो और मेरा अपमान मत करो।(६६) वह बोले क्या हमने तुमको दुनिया-जहान के लोगों की हिमायत से नहीं रोका था।(७०) लूत ने कहा अगर तुमको करना है तो यह मेरी बेटियाँ हैं, इनसे निकाह कर लो।(७१) (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी जान की क़सम वह अपनी मस्ती में बेहोश हैं।(७२) ग़रज़ सूरज के निकलते निकलते उनको एक बड़े ज़ोर की आवाज़ ने घेर लिया।(७३) ख़ैर हमने उस बस्ती को उलट-पलट दिया और उन पर कंकड़-पत्थर बरसाये।(७४) इसमें उन लोगों के लिए जो ताड़ जाते हैं निशानियाँ हैं।(७५) और वह ‡ बस्ती अभी तक सीधी राह पर है।(७६) बेशक इसमें

† लूत की स्त्री ईमानदार न थी। वह और लोगों के साथ नष्ट हो गई।
‡ मक्के से शाम जाते हुए दिखाई देती है।

ईमान लानेवालों के लिए निशानी हैं।(७७) और वन* के रहनेवाले निश्चय सरकश थे, (७८) तो उनसे हमने बदला लिया। और दोनों शहर रास्ते पर हैं।(७९) [रुकू ५ आयात १९]

हिज्र के रहनेवालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया।(८०) हमने उनको निशानियाँ दीं, फिर भी वह उनसे मुख मोड़े रहे।(८१) शान्ति से पहाड़ों को काट-काट घर बनाते थे।(८२) तो उनको सुबह होते-होते बड़े ज़ोर की आवाज़ ने घेर लिया।(८३) और जो उपाय करते थे उनके कुछ भी काम न आये।(८४) हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ आसमान व ज़मीन में है विचार ही से बनाया है और क़यामत ज़रूर-ज़रूर आनेवाली है सो अच्छी तरह किनारा पकड़ा।(८५) तुम्हारा परवरदिगार पैदा करनेवाला जानकार है।(८६) और हमने तुझको सात आयतें§ (सूरे फ़ातिहा) और बड़े दर्जे का क़ुरान दिया।(८७) लोगों को जो चीज़ें बरतने को दी हैं तुम इन पर अपनी नज़र न दौड़ाओ। और इन पर अफ़सोस न करना और अपनी बाँहों को ईमानवालों के वास्ते झुका।(८८) और कह दो कि मैं तो खुले तौर पर डरानेवाला हूँ(८९) जैसे हमने इन पर पहुँचाया है (९०) जिन्होंने बाँटकर क़ुरान के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (९१) तेरे परवरदिगार की क़सम है कि हम इन सबसे पूछेंगे।(९२) पस तुमको जो आज्ञा हुई है उसे खोलकर‡ सुना दो (९३) और मुशरिकीन की बिल्कुल परवा न करो।(९४) हम तेरी तरफ़ से ठट्ठा करनेवालों को काफ़ी हैं।(९५) जो ख़ुदा के साथ दूसरे पूजित ठहराते हैं इनको

* एक वन था। उसके पास एक नगर था। हज़रत शुऐब उस बस्ती के नबी थे।

§ यानी सूरे फ़ातिहा जिसे नमाज़ में पढ़ते हैं।

‡ ३ वर्ष तक मुहम्मद साहब लोगों को चुपके चुपके और छुपा-छुपा के इस्लाम का मत स्वीकार करने का उपदेश देते रहे। इसके उपरान्त यह आयत उतरी। इस समय से आपने निर्भीकतापूर्वक खुल्लमखुल्ला इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया।

आगे चलकर मालूम हो जायगा।(९६) और हम जानते हैं कि तेरा जी उनकी बातों से रुकता है।(९७) सो तू अपने परवरदिगार के गुणों को याद कर और सिजदा करनेवालों में से हो।(९८) और जब तक तुझको विश्वास पहुँचे तब तक तू अपने परवरदिगार की पूजा कर।(९९) [रुकू ६ आयात २०]

——:०:——

१६ सूरे नहल ७०

मक्का में उतरी, इसमें १२८ आयतें और १६ रुकू हैं

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। ख़ुदा का हुक्म आये तो उसके लिए जल्दी मत मचाओ। इनके शिर्क से ख़ुदा की जात-पाँत और ऊँची है (१) वही अपने हुक्म से फ़रिश्तों को अपना पैग़ाम देकर अपने सेवकों में से जिसकी तरफ़ चाहता है भेजता है। इस बात से चेता दो कि हमारे सिवाय कोई पूजित नहीं, सो हमसे डरते रहो।(२) उसी ने विचार से आसमान और ज़मीन को बनाया। तो यह लोग जो शरीक बनाते हैं, वह उससे ऊँचा है।(३) उसीने मनुष्य को एक बूँद (वीर्य) से पैदा किया। इस पर वह एकदम से खुल्लमखुल्ला झगड़ने लगा† (४) और उसी ने चारपायों को पैदा किया जिनमें तुम लोगों के जाड़ों के कपड़े (शीतकाल के वस्त्र) और कई फ़ायदे हैं और उनमें से तुम किसी-किसी को खा लेते हो।(५) और जब शाम के वक़्त घर वापस लाते हो और जब सुबह को चराने ले जाते हो, तो इस कारण से तुम्हारी शोभा भी है।(६) और जिन

† कहते हैं कि एक इन्कारी एक दिन पुरानी हड्डियाँ लाया और हाथ से उनको मलकर महीन करके आटे की तरह बना लिया और फिर उसको मुँह से फूँक दिया। वह राख हवा में उड़ गई, इस पर उसने कहा कि अब इसे कौन जिलायेगा। इस आयत में इसी की तरफ़ इशारा है और यह बताया गया है कि जो ख़ुदा एक बूँद से आदमी को पैदा करता है, वह उसको मरे पीछे फिर उठा सकता है।

शहरों तक तुम जान तोड़कर भी नहीं पहुँच सकते चारपाये वहाँ तक तुम्हारे बोझ उठा ले जाते हैं। तुम्हारा परवरदिगार बड़ा रहमदिल और मेहरबान है।(७) उसने घोड़ों, ख़च्चरों और गधों को तुम्हारी शोभा और सवारी के लिए बनाया, और वही उन चीज़ों का पैदा करता है जिनको तुम नहीं जानते।(८) और (दीन के रास्ते दो प्रकार के हैं, एक) सीधा रास्ता ख़ुदा तक है और दूसरा टेढ़ा। और ख़ुदा चाहता तो तुम सबको सीधा रास्ता दिखा देता। (६) [रुकू १ आ.६]

वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया। जिसमें से कुछ तुम्हारे पीने का है और उससे पेड़ परवरिश पाते हैं। जिनमें तुम अपने मवेशियों को चराते हो।(१०) उसी पानी से ख़ुदा तुम्हारे लिए खेती और जैतून, खजूर और अंगूर और हर तरह के फल पैदा करता है, जो लोग ध्यान करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है।(११) और उसी ने रात और दिन और सूरज और चाँद और सितारों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और सितारे और तारे उसी के आज्ञाकारी हैं। जो लोग बुद्धि रखते हैं, उनके लिए इन चीज़ों में निशानियाँ हैं (१२) जो चीज़ें तुम्हारे लिए ज़मीन पर जुदे-जुदे रंग की पैदा कर रखी हैं इनमें उन लोगों को जो सोच-विचार को काम में लाते हैं, निशानियाँ हैं।(१३) वही जिसने नदी को आधीन कर दिया ताकि तुम उसमें से (मछलियाँ निकालकर उनका) ताज़ा मांस खाओ और उसमें से जब-कब (मोती वग़ैरह) निकालो, जिनको तुम लोग पहनते हो और तू किश्तियों को देखता है कि फाड़ती हुई नदी में चलती हैं ताकि तुम लोग ख़ुदा की रहमत ढूढ़ो और शुक्र अदा करो।(१४) पहाड़ ज़मीन पर गाड़े ताकि ज़मीन तुम्हें लेकर किसी और तरफ़ न झुकने पावे और नदियाँ और रास्ते बनाये, शायद तुम राह पाओ।(१५) और पते बतायें और लोग तारों से राह मालूम करते हैं।(१६) तो क्या जो पैदा करे उसके बराबर हो गया। (जो कुछ भी) पैदा नहीं कर सकता, फिर क्या तुम लोग नहीं समझते।(१७) और अगर ख़ुदा के पदार्थों को गिनना चाहे तो उनकी

पूरी तादाद न गिन सकोगे ख़ुदा बड़ा क्षमावान और दयालु है।(१८) और कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो अल्लाह जानता है।(१९) और ख़ुदा के सिवाय जिनको पुकारते हैं, वह कोई चीज़ पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह ख़ुद बनाये जाते हैं।(२०) मुर्दे हैं जिनमें जान नहीं और ख़बर नहीं रखते, (क़यामत में) सब उठाये जावेंगे।(२१) [रुकू २ आयात १२]

लोगों! तुम्हारा एक ख़ुदा है, सो जो लोग पिछली जिन्दगी का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वह घमण्डी हैं। (२२) वह लोग जो कुछ छिपाकर करते और जो ज़ाहिर करते हैं अल्लाह जानता है। वह घमण्डियों को पसन्द नहीं करता। (२३) और जब इनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या उतारा है, तो यह उत्तर देते हैं कि अगलों की कहानियाँ।(२४) फल यह कि क़यामत के दिन अपने पूरे बोझ और जिन लोगों को बिनसमझे-बूझे भटकाते हैं उनके भी बोझ (उन्हीं को) उठाने पड़ेंगे। देखो तो बुरा बोझ यह लोग अपने ऊपर लादे चले जाते हैं।(२५) [रुकू ३ आ.४]

इनसे पहले लोग धोखा दे चुके हैं। तो ख़ुदा ने उनकी इमारत की जड़-बुनियाद से ख़बर ली। तो उसकी छत उन्हीं पर उनके ऊपर से गिर पड़ी और जिधर से उनको ख़बर भी न थी, सज़ा ने उनको आ घेरा (२६) फिर क़यामत के दिन ख़ुदा इनको बदनाम करेगा और पूछेगा कि हमारे शरीक जिनके बारे में तुम लड़ा करते थे, कहाँ हैं ? जिन लोगों को समझ दी गई थी वह बोल उठेंगे कि आज के दिन बदनामी और ख़राबी काफ़िरों पर है।(२७) जिस वक़्त फ़रिश्तों ने इनकी रूहें निकाली थीं, यह लोग आप अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे थे। तब बिनती करते हुए आ गिरेंगे और कहेंगे कि हम तो किसी क़िस्म की बुराई नहीं किया करते थे। जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उससे ख़ूब जानकार है।(२८) दोज़ख़ के दरवाज़े से (दोज़ख़ में) जा दाख़िल हो, उसी में सदा रहो। घमण्ड करनेवालों का बुरा ठिकाना है।(२९) और जो लोग परहेज़गार हैं उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार

ने क्या उतारा ? तो जवाब देते हैं कि अच्छा जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरी ठिकाना कहीं अच्छा है और परहेज़गारों का घर अच्छा है।(३०) यानी (उनको) हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिनमें जो दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जिस चीज़ का उनका जी चाहेगा वहाँ उनके लिए मौजूद होगी। परहेज़गारों को अल्लाह ऐसा ही बदला देता है।(३१) जिनकी जानें फ़रिश्ते पाक होने की हालत में निकालते हैं। फ़रिश्ते सलामअलेक करते और कहते हैं कि जैसे कर्म तुम करते रहे हो उनके बदले जन्नत में जा दाख़िल हो।(३२) काफ़िर क्या इसी बात की राह देखते हैं कि फ़रिश्ते उनके पास आवेंगे या अल्लाह उनके पास हुक्म भेजेगा। ऐसा ही उनके अगलों ने किया और ख़ुदा ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने ऊपर आप ज़ुल्म करते हैं। (३३) फिर उन कर्मों के बुरे फल उनको मिले और उनकी ठट्ठेबाज़ी ने उन्हें घेर लिया।(३४) [रुकू ४ आयात ६]

मुशरिकीन कहते हैं कि अगर ख़ुदा चाहता तो हम और हमारे बड़े उसके सिवाय और चीज़ की इबादत न करते और न हम उसके बिना किसी चीज़ को हराम§ ठहराते और ऐसा ही इनके अगलों ने कहा था। पैग़म्बरों पर सिर्फ़ खुला सन्देशा पहुँचा देना है।(३५) हमने हर एक गिरोह में एक पैग़म्बर भेजा है कि ख़ुदा की पूजा करो और शैतान से बचते रहो, सो उनमें से बाज़ पर गुमराही साबित हुई। ज़मीन पर चलो-फिरो और देखो कि झुठलानेवालों को कैसा फल मिला।(३६) अगर तू इन लोगों को सीधे रास्ते पर लाने को ललचाये (सो ख़ुदा जिसको बिचलाना चाहता है) उसको राह नहीं दिया रता और कोई ऐसे लोगों का मददगार नहीं होता।(३७) वह ख़ुदा की बड़ी सख़्त क़समें खाते हैं कि जो मर जाता है उसको ख़ुदा

§ मुशरिक ऊँटों के बच्चों को बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और न उन पर सवार होते थे और न सामान लादते और न उनका गोश्त खाते थे और कहते थे कि ख़ुदा इस बात को न चाहता तो हम न करते।

(दुबारा) नहीं उठाता। (ऐ पैग़म्बर ! उनसे कहो कि) ज़रूर (उठा खड़ा करेगा)। वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (३८) वह इसलिए उठायेगा कि जिन चीज़ों पर यह झगड़ते थे ख़ुदा उन पर ज़ाहिर कर दे और काफ़िर जान लें कि वह झूठे थे।(३९) जब हम किसी चीज को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में इतना ही होता है कि हम उसको फ़र्मा देते हैं कि 'हो' और वह हो जाता है।(४०) [रुकू ५ आयात ६]

जिन पर बेइंसाफ़ी हुई और बेइंसाफ़ होने पर उन्होंने ख़ुदा के लिए देश छोड़ा। हम उनको ज़रूर संसार में ठिकाना देंगे और क़यामत का नतीजा कहीं बढ़कर है, अगर उनको मालूम होता।(४१) यह लोग जिन्होंने सब्र किया और अपने परवरदिगार पर भरोसा किया।(४२) हमने तुमसे पहले आदमी पैग़म्बर बनाकर भेजे थे और उनकी तरफ़ वह (ख़ुदाई संदेसा) भेज दिया करते थे। सो अगर तुमको ख़ुद मालूम नहीं तो याद रखनेवालों से पूछ देखो।(४३) हमने तुम पर यह क़ुरान उतारा है ताकि जो आज्ञाएँ लोगों के लिये उनकी तरह भेजी गई हैं तुम उनको अच्छी तरह समझा दो और शायद वह सोचें।(४४) तो जो लोग बुराई की तदबीर करते हैं क्या उनको इस बात का बिलकुल डर नहीं कि ख़ुदा उनको ज़मीन में धँसा दे या जिधर से उनको ख़बर भी न हो सज़ा उन पर आ गिरे। (४५) या उनके चलते फिरते ख़ुदा उनको पकड़ ले जिसे वह हरा नहीं सकते। (४६) या उनको खटका हुए पीछे धर पकड़े। सो इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा मेहरबान है। (४७) क्या उन लोगों ने ख़ुदा की मख़लूक़ात(सृष्टि)में से ऐसी चीज़ों की तरफ़ नहीं देखा कि उसके साये दाहिनी तरफ़ और बाईं तरफ़ को अल्लाह के आगे सिर झुकाये हुए हैं और वह विनय को प्रगट कर रहे हैं।(४८) जितनी चीजें आसमानों में और जितने जानदार ज़मीन में हैं, सब अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हैं और फ़रिश्ते (ख़ुदा की आज्ञा से) सिजदा किये हुए हैं और घमण्ड नहीं करते।(४९) अपने परवरदिगार से जो उनके ऊपर है डरते

रहते हैं और जो हुक्म उनको दिया जाता है उसकी तामील करते हैं।(५०) [रुकू ६ आयात १०] ★ सिजदा ३

ख़ुदा ने आज्ञा दी है कि दो पूजित न ठहराओ, बस वही (ख़ुदा) एक पूजित है, उससे डरो।(५१) और उसी का है जो कुछ आसमान ज़मीन में है और उसी का हमेशा न्याय है, सो क्या तुम ख़ुदा के सिवाय (दूसरी) चीज़ों से डरते हो? (५२) और जितने पदार्थ तुमको मिले हैं ख़ुदा ही की तरफ़ से हैं। फिर जब तुमको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी के आगे बिलबिलाते हो। (५३) फिर जब वह तकलीफ़ को तुम पर से दूर कर देता है तो तुम में से एक फ़िर्क़ा अपने परवरदिगार का शरीक ठहराता है। (५४) ताकि जो (न्यामतें) हमने उनको दी थीं उनकी नाशुक्री करें। सो फ़ायदा उठा लो फिर आख़िरकार (क़यामत में) तो तुमको मालूम हो जायगा।(५५) और हमने जो इनको रोज़ी दी है उससे यह लोग जिन्हें नहीं जानते हिस्सा ठहराते हैं†। सो ख़ुदा की क़सम तुम जैसे झूठ बाँधते हो तुमसे ज़रूर पूछा जायगा।(५६) ख़ुदा के लिए फ़रिश्तों को बेटियाँ ठहराते हैं और वह पाक है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं यानी बेटे※।(५७) और जब इनमें से किसी को बेटी के पैदा होने की ख़ुशख़बरी दी जाती है तो (मारे रंज) के उसका मुँह काला पड़ जाता है और (ज़हर की) घूँट पीकर रह जाता है। (५८) लोगों से बेटी की शर्म के मारे जिसके पैदा होने की उसको ख़ुशख़बरी दी गई है वह सोचता है कि इस बदनामी को सहकर§ (जीता) रहने दे या उसको मिट्टी में गाड़ दे।

---

† काफ़िर खेती और ऊँट और दुम्बे के बच्चों में एक भाग ख़ुदा का ठहराते और एक भाग बुतों का रखते।

※ मुशरिक फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटियाँ बताते थे। इतना नहीं समझते थे कि ख़ुदा को संतान की आवश्यकता होती तो उसको बेटा रखना अधिक उचित था।

§ अरब में बेटी का किसी घर में जन्म लेना बहुत बुरा समझा जाता था। बेटीवाला यही चाहता था कि उसको दफ़न कर दे।

देखो तो इन लोगों की (क्या) बुरी राय है।(५६) उनकी बुरी बातें हैं जो क़यामत का यक़ीन नहीं करते और अल्लाह की कहावत सबसे ऊपर है और वही ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (६०) [रुकू ७ आ. १०]

अगर ख़ुदा सेवकों को उनके अन्याय की सज़ा में पकड़े तो ज़मीन की सतह पर किसी जानदार को बाक़ी न छोड़ेगा, मगर एक वक़्त मुक़र्रर (मौत) तक इनको अवकाश (मुहलत) देता है। फिर जब इनको मौत आवेगी तो न एक घड़ी पीछे रह सकते और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं।(६१) जिन चीज़ों को आप नहीं पसंद करते हैं और अपनी ज़बान से झूठ बोलते हैं कि उनके लिये भलाई है उनके लिये दोज़ख़ (की आग) है बल्कि दोज़ख़ी अगुआ हैं।(६२) ख़ुदा की क़सम है तुमसे पहले हमने बहुत उम्मतों (गिरोहों) की तरफ़ पैग़म्बर भेजे। तो शैतान ने उनके बुरे काम उनको अच्छे कर दिखाये। सो वही (शैतान) इस ज़माने में इनका मित्र है और इनको कड़ी सज़ा है। (६३) हमने तुम पर किताब इसीलिए उतारी है कि जिन बातों में (यह लोग आपस में) भेद डाल रहे हैं, वह इनको अच्छी तरह समझा दे। इसके सिवाय (यह क़ुरान) ईमानवालों के लिए शिक्षा और रहमत है।(६४) अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे जिलाया। जो लोग सुनते हैं उनके लिए निशानी है। (६५) [रुकू ८ आ. ५]

और तुम्हारे लिए चौपायों मे भी सोचने की जगह है कि उनकेपेट में जो है उससे गोबर और ख़ून में से हम तुमको ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जो पीनेवालों को भला लगता है।(६६) और खजूर और अंगूर के फलों में से तुम शराब§ और अच्छी रोज़ी बनाते हो। जो लोग बुद्धि रखते हैं उनके लिए इन चीज़ों में निशानी है। (६७) (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाल दी कि पहाड़ में और पेड़ों में और लोग जो ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बना लेते हैं उनमें छत्ते

§ शराब पीना इस आयत के उतरने के समय मना न था। बाद को मना हुआ है।

बनाये।(६८) फिर हर तरह के फूलों को चूसे और अपने परवरदिगार के आसान तरीक़ों पर चले। मक्खियों के पेट से पीने की एक चीज़ (शहद) निकलती है, उसकी रंगतें कई तरह की होती हैं। उससे लोगों के रोग जाते रहते हैं। विचार करनेवालों के लिए इसमें पता है।(६९) और ख़ुदा ने ही तुमको पैदा किया। फिर वही तुमको मारता है और तुममें से कोई निकम्मी उम्र (बुढ़ापा) को पहुँचते हैं कि जानने पीछे कुछ न जान सकें। (बुड्ढा) बेअक़्ल हो जाय। अल्लाह जाननेवाला क़ुदरतवाला है।(७०) [रुकू ९ आ. ५]

ख़ुदा ही ने तुममें से किसी को किसी पर रोज़ी में बढ़ती दी, तो जिनको ज्यादा रोज़ी दी गई है (वह) अपनी रोज़ी लौटाकर अपने ग़ुलाम को नहीं देते कि रोज़ी में इनका हिस्सा बराबर है तो क्या यह लोग ख़ुदा के पदार्थों के इन्कारी हैं।(७१) तुम्हीं में से ख़ुदा ने तुम्हारे लिए बीबियों को पैदा किया और तुम्हारी स्त्रियों से तुम्हारे लिए बेटों और पोतों को पैदा किया। तुमको अच्छी चीज़ें खाने को दीं, तो क्या झूठे (पूजितों के पदार्थ देने) का विश्वास करते हैं और अल्लाह की कृपा को नहीं मानते ?(७२) और ख़ुदा के सिवाय उनकी इबादत करते हैं जो आसमान और जमीन से इनको भोजन देने का कुछ भी अधिकार नहीं रखते हैं।(७३) तो ख़ुदा के लिए उदाहरण मत बनाओ। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।(७४) एक उदाहरण ख़ुदा बयान करता है कि एक ग़ुलाम है, (जो) दूसरे की जायदाद पर किसी बात का अधिकार नहीं रखता और एक शख़्स है जिसको हमने अच्छे भोजन दे रखे हैं तो वह उसमें से छिपे और खुले-ख़ज़ाने ख़र्च करता है, क्या यह (दोनों) बराबर हो सकते हैं ? सब तारीफ़ अल्लाह को है मगर इनमें बहुतेरे नहीं समझते। (७५) ख़ुदा (एक दूसरी) मिसाल देता है कि दो आदमी हैं, उनमें का एक गूंगा (और ग़ुलाम भी) है कि ख़ुद कुछ नहीं कर सकता है और वह अपने मालिक को बोझ भी है कि जहाँ कहीं उसको भेजे उससे कुछ भी ठीक नहीं बनता। क्या ऐसा ग़ुलाम और वह शख़्स बराबर हो सकते

हैं जो (लोगों को) बराबरी की हद पर क़ायम रहने को कहता और ख़ुद भी सीधे रास्ते पर है। (७६) [रुकू १० आयात ६]

आसमान और ज़मीन की छिपी बातें अल्लाह ही को (मालूम) हैं और क़यामत का वाक़ै होना तो ऐसा है कि जैसा कि आँख का झपकना बल्कि वह (इससे भी) क़रीब है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है।(७७) अल्लाह ही ने तुमको तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला। तुम कुछ भी नहीं जानते थे और तुमको कान, आँख और दिल दिये ताकि तुम शुक्र करो ।(७८) क्या लोगों ने पत्तियों को नहीं देखा जो आसमान के बीच में उड़ते हैं। उनको ख़ुदा ही रोके रहता है। जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इसमें निशानियाँ हैं ।(७९) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए डेरे बनाये कि तुम अपने कूच के वक़्त और अपने ठहरने के वक़्त उनको हल्का पाते हो, और चारपायों की ऊन और उनके रुआँ और उनके बालों से बहुत-से सामान और काम की चीज़ें बनाईं, एक वक़्त ख़ास तक (इनसे फ़ायदा उठाओ) ।(८०) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों की छाया बनाई और पहाड़ों में तुम्हारे लिए ग़ार (छिप बैठने की जगह) बनाई और तुम्हारे लिए कुर्ते बनाये जो तुम्हें (गर्मी-सर्दी) से बचायें और (कुछ लोहे के) कुर्ते (बख़्तर) बनाये जो तुमको तुम्हारी (दूसरे की) चोट से बचावे। यों (ख़ुदा) अपने एह-सान तुम लोगों पर पूरे करता है, शायद तुम उसको मानो। (८१) फिर अगर मुँह मोड़ें तो तुम्हारे ज़िम्मे खुले तौर सुना देता है।(८२) ख़ुदा के एहसान को पहचानते हैं फिर (जान-बूझकर) उनसे मुकरते हैं, और उनमें से अक्सर कृतघ्न (नाशुक्र) हैं ।(८३) [रुकू ११ आ. ७]

जब हम हरएक गिरोह से गवाह (बनाकर) उठा खड़ा करेंगे फिर (काफ़िरों को) बात करने का हुक्म नहीं दिया जायगा और न उनसे तौबा के लिए कहा जायगा।(८४) जिन लोगों ने गुस्ताख़ियाँ की हैं जब सज़ा को देख लेंगे तो इनसे सज़ा ही हल्की की जायगी

और न उनको मुहलत दी जायगी। (८५) और जो लोग ख़ुदा के शरीक बनते रहे जब वह अपने शरीकों को देखेंगे तब बोल उठेंगे कि हमारे परवरदिगार यही हैं, वह हमारे शरीक जिनको हम तेरे सिवाय पुकारा करते थे, तो वह शरीक (उनकी) बात (उलटी) उन्हीं की तरफ़ फेंक मारेंगे कि तुम निरे झूठे हो। (८६) और वह लोग उस दिन ख़ुदा के आगे सिर झुका देंगे और जो झूठ बाँधते थे वे उनको भूल जावेंगे। (८७) जो लोग इन्कारी हुए और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोकते हैं उनके फ़साद के जवाब में हम उनके हक़ में सज़ा पर सज़ा बढ़ाते जावेंगे। (८८) जब हम हरएक गिरोह में उन्हीं में का एक गवाह (पैग़म्बर) उनके सामने खड़ा करेंगे और (ऐ पैग़म्बर!) तुमको इनके सामने गवाह बनाकर लावेंगे और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम पर किताब उतारी है (जिसमें) हर चीज़ का बयान, राह की सूझ, हिदायत और दया है और ख़ुशख़बरी ईमानवालों के लिए है। (८९) [रुकू १२ आयात ६]

अल्लाह इन्साफ़ करने और भलाई करने और सम्बन्धियों को (माली सहारा) देने की आज्ञा देता है और बेशर्मी के कामों और बुरे कामों और ज़ुल्म करने से मना करता है, तुम लोगों को शिक्षा देता है, शायद तुम ख़याल रखो (९०) और जब तुम लोग आपस में प्रतिज्ञा कर लो तो अल्लाह की क़सम को पूरा करो और क़समों को उनके पक्के किये पीछे न तोड़ो हालाँकि तुम अल्लाह को अपना ज़ामिन ठहरा चुके हो। जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे जानकार है।(९१) उस औरत-जैसे मत बनो जिसने अपना सूत काते पीछे टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ डाला। आपस के झगड़े के सबब अपनी क़सम को मत तोड़ने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ताक़तवर है। ख़ुदा (इस भेद) से तुम लोगों की जाँच करता है और जिन चीज़ों में तुम भेद डालते हो क़यामत के दिन ख़ुदा तुम पर ज़ाहिर करेगा (९२) ख़ुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही गिरोह बना देता, मगर वह जिसको चाहता है गुमराह करता और जिसको चाहता है सुझाता है और

जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूछ होगी†। (९३) अपनी क़समों को अपने आपस के फ़साद का सबब न बनाओ (कि लोगोंके) पैर जमे पीछे उखड़ जायँ और ख़ुदा के रास्ते से रोकने के बदले में तुमको सजा चखनी पड़े और तुमको बड़ी सज़ा हो।(९४) और अल्लाह की क़सम के बदले थोड़े फ़ायदे मत लो। जो ख़ुदा के यहाँ है वही तुम्हारे हक़ मेंहुत अच्छा है बशर्ते कि तुम समझो।(९५) जो तुम्हारे पास है निपट जायगा और जो अल्लाह के पास है बाक़ी रहेगा और जिन लोगों ने सब्र किया उनके अच्छे काम का बदला भला देंगे। (९६) जो शख़्स अच्छे काम करेगा मर्द हो या औरत और वह ईमान भी रखता हो तो हम उसकी अच्छी ज़िन्दगी जिला देंगे और उनके अच्छे कामों का बदला जो करते थे देंगे।(९७) तो (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम क़ुरान पढ़ने लगो फटकारे हुए शैतान से ख़ुदा की पनाह माँग लिया करो। (९८) जो लोग ईमान रखते हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा करते हैं उन पर शैतान का कुछ क़ाबू नहीं चलता। (९९) उसका बस तो उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसके साथ मेलजोल रखते और जो ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं। (१००) [रुकू १३ आ.११]

(ऐ पैग़म्बर!) जब हम एक आयत को बदलकर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं और जो हुक्म उतारता है उसको वही ख़ूब जानता है, तो (काफ़िर तुमसे) कहने लगते हैं कि तू तो अपने दिल से बनाया करता है बल्कि इनमें से- अक्सर नहीं समझते*। (१०१) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि सच तो यह है कि इस (क़ुरान को) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से पाक रूह जिब्रील लेकर आये हैं ताकि जो लोग ईमान ला चुके हैं ख़ुदा उनको अचल रखे और ईमानवालों के हक़ में राह की सूझ और ख़ुशख़बरी है।(१०२) (ऐ पैग़म्बर!) हमको ख़ूब मालूम है कि काफ़िर (क़ुरान की बाबत) यह शक करते हैं कि हो न

---

† यानी काफ़िरों को धोखे से न मारो क्योंकि इससे कुफ़्र नहीं मिटता और इससे अपने ऊपर बवाल पड़ता है।

* यानी काफ़िर यह नहीं समझते कि पहला हुक्म क्यों बदला।

हो इस शख़्स को (अमुक ‡) आदमी सिखलाया करता है, सो जिस शख़्स की तरफ़ निस्बत करते हैं उसकी बोली अजमी (अन्य देशीय भाषा) है, (क़ुरान) सब अरबी भाषा है। (१०३) और जो लोग ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते ख़ुदा उन्हें सच्चा रास्ता नहीं दिखलाता और उनको दुखदाई सज़ा है। (१०४) दिल से झूठ बनाना तो उन्हीं लोगों का काम है जिनको ख़ुदा की आयतों का विश्वास नहीं और यही लोग झूठे हैं। (१०५) जो शख़्स ईमान लाये पीछे ख़ुदा की इन्कारी पर मजबूर किया जाय मगर उसका दिल ईमान की तरफ़ से संतुष्ट हो लेकिन जो कोई ईमान लाये पीछे ख़ुदाके साथ इन्कार करे और इन्कार भी करे तो जी खोलकर, ऐसे लोगों पर ख़ुदा का कोप और उनके लिए बड़ी सज़ा है।(१०६) यह इस वजह से कि उन्होंने संसार के जीवन को क़यामत पर पसन्द किया और इस वजह से कि अल्लाह इन्कारियों को हिदायत नहीं दिया करता।(१०७) यही वह लोग हैं जिनके दिलों पर और जिनके कानों पर और जिनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और यही ग़ाफ़िल हैं। (१०८) ज़रूर क़यामत में यही लोग घाटे में रहेंगे।(१०९) फिर जिन लोगों ने आफ़त आये पीछे घरबार छोड़े फिर (ख़ुदा की) राह में जिहाद किये और डटे रहे, तुम्हारा परवरदिगार माफ़ करनेवाला रहीम है।(११०) [रुकू १४ आयात १०]

जबकि वह दिन आवेगा हर आदमी अपनी जाति के लिए झगड़ने के लिए मौजूद होगा। हर शख़्स को उसके काम का पूरा-पूरा बदला दिया जावेगा और लोगों पर ज़ुल्म न होगा।(१११) ख़ुदा ने एक गाँव की मिसाल बयान की है कि वहाँ के लोग अमन व इतमीनान से थे, हर तरफ़ से उनकी रोज़ी उनके पास बेखटके चली आती थी। फिर उन्होंने ख़ुदा के एहसानों की नाशुक्री की; तो उनके कामों के बदले में

‡ एक आदमी का एक ग़ुलाम रूमी नसरानी मक्के में था। वह पैग़म्बरों का हाल सुनाने के लिए मुहम्मद साहब के पास आकर बैठा करता था। काफ़िर कहने लगे यही आदमी मुहम्मद को सिखाता है कि यह कहो और वह कहो।

अल्लाह ने उनको भूख और डर का उनका ओढ़ना और बिछौना बना दिया। (११२) और उन्हीं में का एक पैग़म्बर उनके पास आया तो उन्होंने उसको झुठलाया, उस पर (ईश्वरी) सज़ा से उनको पकड़ा और वे क़सूरवार थे।(११३) तो ख़ुदा ने जो तुमको हलाल और पाक रोज़ी दी है उसको खाओ और अगर अल्लाह ही की पूजा करो और उसका शुक्र करो।(११४) उसने तुम पर मुर्दा को और ख़ून को और सुअर के मांस को और उसको जो अल्लाह के सिवाय किसी और के लिए नामज़द किया जाय हराम किया, फिर जो शख़्स (भूख से) बेबस हो न ज़ोर से और न ज्यादती से तो अल्लाह क्षमा करनेवाला दयालु है। (११५) झूठ मूठ जो कुछ तुम्हारी ज़बान पर आवे न बक दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम। ख़ुदा पर झूठ बाँधते हो और झूठ बाँधनेवालों का भला नहीं होता। (११६) थोड़े-से फ़ायदे हैं और उनको दुखदाई सज़ा है।(११७) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने यहूदियों पर वह चीजें जो पहले तुमसे बयान फ़र्मा चुके हैं हराम कर दी थीं। हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह ख़ुद अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया करते थे। (११८) फिर जो लोग बेवक़ूफ़ी से गुनाह करते थे फिर उसके बाद तौबा की और सुधार किया तो तुम्हारा परवरदिगार माफ़ करनेवाला रहीम है। (११९) [रुकू १५ आयात ६]

बेशक इब्राहीम (लोगों के) अगुआ हो गये हैं। ख़ुदा के आज्ञाकारी सेवक जो एक ख़ुदा के होकर रहे थे और शिर्कवालों में से न थे।(१२०) ख़ुदा ने उनको चुन लिया था और उनको सीधा रास्ता दिखला दिया था और हमने उनको दुनिया में भलाई दी। (१२१) और क़यामत में भी वह भले लोगों में होंगे।(१२२) फिर (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम्हारी तरफ़ हुक्म भेजा कि इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो एक के होकर रहे थे और शिर्कवालों में से न थे। (१२३) हफ़्ते की ताज़ीम तो बस उन्हीं पर लाज़िम की गई थी जिन्होंने उसमें भेद डाले और जिन जिन बातों में यह लोग आपस में भेद डालते रहे हैं क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार उन बातों

का फ़ैसला कर देगा। (१२४) (ऐ पैग़म्बर !) समझ की बातों और नसीहतों से अपने परवरदिगार की राह की तरफ़ बुलाओ और उनकी तरफ़ अच्छी तरह विचार करके जो कोई ख़ुदा के रास्ते से भटका उसे और जिसने सीधी राह पकड़ी उसे तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है। (१२५) अगर सख़्ती भी करो तो वैसी ही सख़्ती करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो और अगर सब्र करो तो हर हालत में सब्र करनेवालों के लिए सब्र अच्छा है †। (१२६) और सब्र करो और ख़ुदा की मदद से संतोष कर सकोगे और इन पर पछतावा न कर और उनके फ़रेब से रंज मत कर। (१२७) अल्लाह परहेज़गारों और भले काम करनेवालों का साथी है। (१२८) [रुकू १६ आयात ६]

——):o:(——

पन्द्रहवाँ पारा (सुभानल्लज़ी)

१७ सूरे बनी इसराईल ५०

मक्का में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। वह पाक है जो अपने बन्दे को रातों-रात मसजिद हराम(यानी काबे के घर) से मसजिद अक्सा (यानी बैतुल मुक़द्दस) तक ले गया जिसके आस-पास हमने ख़ूबियाँ दे रखी हैं (और इसे ले जाने से मतलब यह था) कि हम उनको अपनी क़ुदरत के कुछ नमूने दिखलावें। वह सुनता और जानता है।(१) और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उसकी इसराईल की सन्तान के लिए हुक्म ठहराया (और उनसे कह दिया) कि हमारे सिवाय किसी को अपना काम सँभालनेवाला न बना (२) ऐ उन लोगों की सन्तान ! जिनको हमने नूह के साथ (किश्ती में)

† पहले बताया गया कि झगड़ा न बढ़ने दो। फिर बताया गया कि बुराई का बदला लो तो हद से न बढ़ो, बल्कि अगर बदला न लो तो और भी अच्छा है।

सवार कर लिया था वह हमारे शुक्रगुज़ार सेवक थे।(३) हमने इसराईल के बेटों से किताब में साफ़ कह दिया था कि तुम ज़रूर देश में दो दफ़े फ़साद करोगे और बड़ी ज्यादती करोगे।(४) फिर जब पहला वादा आया तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे सेवक उठा खड़े किये जो बड़े लड़नेवाले थे और वह शहरों के अन्दर फैल गये और वादा होना ही था। (५) फिर हमने दुश्मनों पर तुम्हारे दिन फेरे और माल से और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुमको बड़े जत्थे वाला बना दिया।(६) अगर तुम भलाई करो या बुराई, अपनी ही जानों के लिए है। फिर जब दूसरे (फ़साद) का समय आया तो फिर हमने अपने दूसरे बन्दों को उठाकर खड़ा किया कि तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें और जिस तरह पहली दफ़ा मसजिद में घुसे थे उसी तरह इसमें घुसें और जिस चीज़ पर क़ाबू पावें तोड़-फोड़ उसका सत्यानास करें।(७) ताज्जुब नहीं तुम्हारा परवरदिगार तुम पर कृपा करे और अगर तुम फिर पहली-सी शरारतें करोगे तो हम भी सज़ा में लौटेंगे और हमने काफ़िरों के लिए दोज़ख का जेलखाना तैयार कर रखा है।(८) यह क़ुरान वह राह दिखाती है जो बहुत सीधी है। ईमान वालों को और जो नेक काम करते हैं इस बात की खुशखबरी देती है। और जो भला काम करते हैं उनको बड़ा फल मिलेगा।(९) जो लोग क़यामत का यक़ीन नही रखते उनके लिए हमने सख्त सज़ा तैयार की है।(१०) [रुकू १ आयात १०]

आदमी जिस तरह भलाई माँगता है उसी तरह बुराई माँगने लगता है और आदमी बड़ा जल्दबाज़ है।(११) हमने रात और दिन को दो नमूने बनाये, फिर रात के नमूने को मिटा दिया। दिन का निशान देखने को बना दिया ताकि तुम अपने परवरदिगार से रोज़ी ढूँढ़ो और वर्षों की गिनती और हिसाब को जानो और हमने सब बातें खूब ब्योरे के साथ बयान कर दी हैं।(१२) और हर आदमी का भाग्य उसकी गर्दन से लगा दिया है और क़यामत के दिन हम (उसके) कारनामों का लेखा निकालकर उसके सामने पेश करेंगे, उसको अपने सामने खुला हुआ देख लेगा।(१३) (और हम उससे कहेंगे कि वह)

अपना लेखा पढ़ ले, आज अपना हिसाब लेने के लिए तू आप ही काफ़ी है।(१४) जो आदमी सीधी राह चला तो वह अपने ही लिए सीधी राह चलता है और जो भटका तो उसके भटकने के अपराध की सज़ा भी उसी को भुगतनी पड़ेगी और कोई दूसरे के बोझ को अपने ऊपर न लेगा और जब तक हम पैग़म्बर को भेज न लें (किसी को उसके अपराध की) सज़ा नहीं दिया करते।(१५) हमको जब किसी गाँव को मार डालना मंज़ूर होता है, हम उसके ख़ुशहाल लोगों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें बेहुक्मी करते हैं तब उन पर यह सज़ा साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को मारकर तबाह कर देते हैं।(१६) और नूह के बाद हमने कितनी बस्तियों को मार डाला और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा परवरदिगार अपने सेवकों का अपराध जानने और देखने को काफ़ी है।(१७) जो शख़्स दुनिया का चाहने वाला हो तो हम जिसे देना चाहते हैं उसी में उसको उसी वक़्त दे देते हैं†। फिर हमने उसके लिए दोज़ख़ ठहरा रखा है, जिसमें वे बुरी तरह से फटकारे हुए दाख़िल होंगे। (१८) और जो शख़्स आख़िरत का चाहनेवाला है और उसके लिए जैसी कोशिश करनी चाहिए वैसी उसके लिए कोशिश करता है और वह ईमान भी रखता है तो यही है जिनकी मेहनत कामयाब होगी। (१९) (ऐ पैग़म्बर) वह दुनिया के चाहनेवाले और यह आख़िरत के चाहनेवाले सबको हम तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शीश से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शीश बन्द नहीं।(२०) देखो हमने एक को एक से कैसा बढ़ाया और क़यामत में बड़े दर्जे हैं और बड़ी बढ़ती है। (२१) (ऐ पैग़म्बर) ख़ुदा के साथ किसी दूसरे की इबादत (उपासना) नहीं करना। नहीं तो तुम दुर्दशा पाकर बैठे रह जाओगे। (२२) [रुकू २ आयात १२]

तुम्हारे परवरदिगार ने हुक्म दे दिया है कि उसके सिवाय किसी की

† कुछ लोग इसी जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं और उस जीवन को सफल बनाने की चेष्टा नहीं करते जो आगे चलकर मरे पीछे होगा। ऐसे लोग अपना ही बुरा करते हैं।

इबादत न करना और माता-पिता के साथ अच्छा सलूक करो। अगर माता-पिता में से एक या दोनों तेरे सामने बुड्ढे हो जावें तो उनके आगे हूँ भी मत करना और न उनको झिड़कना और उनके साथ अदब के साथ बोलना. (२३) प्रेम से दीनता के साथ उनके सामने सिर झुकाये रखना और दुआ करते रहना कि ऐ मेरे परवरदिगार! जिस तरह उन्होंने मुझे छोटे से पाला है, इसी तरह तू भी इन पर (अपनी) कृपा कर। (२४) तुम्हारे दिल की बात को तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है, अगर तुम नेक हो तो वह तौबा करनेवालों के क़सूर माफ़ करनेवाला है। (२५) रिश्तेदार, ग़रीब और यात्री को उसका हक़ पहुँचाते रहो और बेजा मत उड़ाओ। (२६) बेजा उड़ाने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार का बड़ा ही नाशुक्रा है। (२७) अगर मुझे अपने परवरदिगार से रोज़ी की तलाश में उम्मेदवार होकर इनसे मुँह फेरना पड़े† तो नर्मी से इनको समझा दो। (२८) अपना हाथ न तो इतना सिकोड़ो कि (मानो) गर्दन में बँधा है न बिल्कुल उसको फैला ही दो कि तू फटकारा हुआ हारकर बैठ रहे। (२९) (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा परवरदिगार जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है कम कर देता है। वह अपने सेवकों को जानता-देखता है। (३०) [रुकू ३ आयात ८]

ग़रीबी से अपनी औलाद को मार मत डालो। उनको और तुमको हम रोज़ी देते हैं। औलाद का जान से मारना बड़ा भारी पाप है। (३१) व्यभिचार के पास न फटकना, क्योंकि वह बेशर्मी है और बुरा चलन है। (३२) किसी की जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है बेकार क़त्ल न करना मगर हक़ पर और जो शख़्स ज़ुल्म से मारा जाय तो हमने उसके वारिस को अधिकार दे दिया है, तो उसको चाहिए कि ख़ून में ज़्यादती न करे। क्योंकि उसकी मदद होती

---

† यानी कोई ऐसा समय आये जिसमें तुमको कमाने की चिन्ता हो और तुम उनको कुछ दे न सको, तो उनको भली-भाँति समझा दो कि तुम उस समय कोई उनकी सहायता नहीं कर सकते।

है।(३३) जब तक अनाथ जवानी को न पहुँचे उसके माल के पास मत जाओ, मगर जिस तरह बेहतर हो और वादे का पूरा करो, क्योंकि वादे की पूछ होगी।(३४) और जब तौल करो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और तौल कर देना हो तो डंडी सीधी रखकर तौला करो। यह अच्छा है और इसका आख़ीर भी अच्छा है।(३५) (ऐ ध्यान देनेवालों!) जिस बात का तुमको ज्ञान नहीं उसके (अटकलपच्चू) पीछे न हो क्योंकि कान और आँख और दिल इन सबसे पूछ-ताछ होनी है।(३६) ज़मीन में अकड़कर न चल क्योंकि न तो तू ज़मीन को फाड़ सकता है और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकता है। (३७) (ऐ पैग़म्बर!) इन बातों की बुराई ख़ुदा को नापसन्द है। (३८) (ऐ पैग़म्बर!) यह बातें उन बुद्धि की बातों में से हैं जिनको तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म किया है। ख़ुदा के साथ और किसी की इबादत न करना, नहीं तो तू फटकारा हुआ क़सूरवार होकर दोज़ख़ में डाल दिया जायगा।(३९) (ऐ शिर्कवालों!) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुमको बेटों के लिए चुन लिया और आप बेटियाँ ले बैठा (यानी फ़रिश्ते)? (यह तो) तुम बड़ी बात कहते हो। (४०) [रुकू ४ आ. १०]

हमने इस क़ुरान में तरह तरह से समझाया ताकि यह लोग समझें, मगर इससे इनकी घृणा ही बढ़ती जाती है।(४१) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर ख़ुदा के साथ जैसा (यह लोग) कहते हैं कोई और पूजित होते तो इस सूरत में वे (दूसरे पूजित) तख़्त के साहब (ख़ुदा) की तरफ़ राह निकालते†।(४२) जैसी बातें यह लोग कहते हैं इनसे वह पाक और बहुत ऊँचा है। (४३) आसमान और ज़मीन और जो आसमान और ज़मीन में है उसका नाम लेता है और जितनी चीज़ें हैं सब उसकी तारीफ़ के साथ उसका नाम लेती हैं, मगर तुम लोग उनके पढ़ने को नहीं समझते। वह बरदाश्त करनेवाला और बड़ा माफ़ करनेवाला है।(४४) (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम क़ुरान पढ़ते

† यानी यदि दो या इससे अधिक पूजित होते तो आपस में एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते।

हो तो हम तुममें और उन लोगों में जिनको क़यामत का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं। (४५) उनके दिलों पर आड़ रखते हैं ताकि क़ुरान को समझ न सकें और उनके कानों में (एक तरह का) बोझ डालते हैं ताकि सुन न सकें। और जब क़ुरान में अकेले ख़ुदा की चर्चा करते हैं तो काफ़िर नफ़रत करके उल्टे भाग खड़े होते हैं। (४६) जब यह लोग तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो जिस नियत से सुनते हैं हमको ख़ूब मालूम है और जब यह सलाह करते हैं तब कहते हैं कि तुम तो एक आदमी के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है। (४७) (ऐ पैग़म्बर !) देखो तुम्हारी निस्बत कैसी-कैसी बातें बकते हैं तो यह लोग भटक गये और अब राह नहीं पा सकते। (४८) और कहते हैं जब हम हड्डियाँ और टुकड़े-टुकड़े हो गये तो क्या हमको नये सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जायगा?(४६) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि तुम पत्थर या लोहा (५०) या और चीज़ बन जाओ या कोई चीज़ जो तुम्हारी समझ में बड़ी हो। उस पर पूछेंगे कि हमको दुबारा कौन ज़िन्दा कर सकेगा ? कहो कि वही (ख़ुदा) जिसने तुमको पहली बार पैदा किया था। इस पर यह लोग तुम्हारे आगे सिर मटकाने लगेंगे और पूछेंगे कि भला क़यामत कब आवेगी?(तुम इनसे) कहो आश्चर्य नहीं कि क़रीब ही आ लगी हो। (५१) जब ख़ुदा तुमको बुलायेगा तो तुम उसकी तारीफ़ करते फिर चले आओगे और ख़्याल करोगे कि बस थोड़े ही दिन तुम रहे। (५२) [रुकू ५ आ. १२]

हमारे माननेवालों को समझा दो कि ऐसी कहें जो भली हो क्योंकि शैतान लोगों में झगड़ा डलवाता है और शैतान आदमी का खुला बैरी है।(५३) लोगों ! तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे हाल से ख़ूब जानकार है, चाहे तुम पर दया करे और चाहे तुमको सज़ा दे, और हमने तुमको लोगों का ठेकेदार बनाकर तो नहीं भेजा। (५४) और जो आसमान और ज़मीन में है तुम्हारा परवरदिगार उससे ख़ूब जानकार है और हमने किन्हीं पैग़म्बरों पर किन्हीं को बढ़ती दी और हमी ने दाऊद को ज़बूर दी। (५५) (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कहो कि ख़ुदा के सिवाय

जिनको तुम ख़ुद समझते हो पुकारो, सो न तो तुम्हारी तकलीफ़ ही दूर कर सकेंगे और न उसको बदल सकेंगे।(५६) यह जिनको शिर्कवाले बुलाते हैं वह अपने परवरदिगार की तरफ़ ज़रिया ढूँढ़ते हैं कि कौन बंदा ज्यादा नज़दीक है और उसकी मेहरबानी की उम्मीद रखते हैं और उसकी मार से डरते हैं। बेशक तेरे परवरदिगार की मार डर की चीज़ है।(५७) कोई(अवज्ञाकारियों की)बस्ती नहीं जिसे क़यामत से पहले हम बरबाद न कर देंगे या उसको सख़्त सज़ा न देंगे। यह बात किताब में लिखी जा चुकी है। (५८) और हमने चमत्कारों का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले लोगों ने झुठलाया। चुनाँचे हमने समूद को उँटनी (का खुला हुआ) चमत्कार दिया था, फिर भी लोगों ने उसे सताया और हम चमत्कार सिर्फ़ डराने की ग़रज़ से भेजा करते हैं।(५६) जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे परवरदिगार ने लोगों को हर तरफ़ से रोक रखा है और जो हमने तुमको दिखावा दिखाया सो लोगों के जाँचने को दिखाया और दरख़्त जिस पर क़ुरान में लानत की गई है बावजूदे हम इन लोगों को डराते हैं लेकिन हमारा डराना इनकी सरकशी को बढ़ाता है। (६०) [रुकू ६ आयात ८]

तब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सिजदा करो (झुको) तो सभी ने सिजदा किया मगर इबलीस झगड़ने लगा कि क्या मैं ऐसे आदमी को सिजदा करूँ (झुकूँ) जिसे तूने मिट्टी से बनाया?(६१) कहने लगा कि भला देख तो यही वह आदमी है जिसको तूने मुझ पर बढ़ती दी है, अगर तू मुझको क़यामत तक की मुहलत दे तो मैं सिवाय थोड़े लोगों के इसकी सब संतान की जड़ काटता रहूँगा।(६२) ख़ुदा ने कहा चल दूर हो, जो आदमी इनमें से तेरी पैरवी करेगा सो तुम सब को दोज़ख़ की सज़ा पूरा बदला होगी।(६३) इनमें से जिसे अपनी बातों से बहका सके बहका ले और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला और उनके साथ माल और संतान में साझा लगा और इनसे वादे कर और शैतान तो इन लोगों से जितने वादे करता है सब धोखे के होते हैं।(६४) हमारे सेवकों पर तेरा किसी

तरह का क़ाबू न होगा और तुम्हारा परवरदिगार काम का सँभालने वाला है।(६५) तुम्हारा परवरदिगार वह है जो तुम्हारे लिए नदी में नाव (किश्ती) को चलाता है ताकि तुम उसकी कृपा ढूँढ़ो। खुदा तुम पर मेहरबान है।(६६) जब नदी में तुम पर दुख पहुँचता है तो जिनको तुम उसके सिवाय पुकारा करते थे भूल जाते हो। मगर जब वह तुमको खुश्की की तरफ़ निकाल लाता है तो तुम फिर मुँह मोड़ते हो और आदमी बड़ा ही नाशुक्रा है।(६७) सो क्या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि वह तुमको जंगल की तरफ़ धँसा दे या तुम पर पत्थर बरसावे और उस वक़्त तुम अपना मददगार न पाओ।(६८) या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि खुदा फिर तुमको लौटाकर दुबारा उसी नदी में ले जावे और तुम पर हवा का झोंका भेजे और तुम्हारी नाशुक्रियों की सज़ा में तुमको डुबो दे। फिर तुम अपने लिए हम पर दावा करनेवाला न पाओ। (६९) बेशक हमने आदमी की औलाद को इज़्ज़त दी और खुश्की और दरिया में उनको सवारी दी है और अच्छी चीज़ों में उन्हें रोज़ी दी और जितने आदमी हमने पैदा किये हैं उनमें बहुतेरों पर उनको बढ़ती दी।(७०) [रुकू ७ आ. १०]

बड़ी बढ़ती तो उस दिन की है जब हम हर एक गिरोह को उनके पेशवाओं समेत बुलायेंगे। तो जिनका कारनामों का लेखा उनके हाथ में दिया जायगा वह अपने लेखे को पढ़ने लगेंगे और उन पर एक रत्ती बराबर भी अन्याय न होगा (७१) जो इसमें अन्धा† रहा वह क़यामत में भी अन्धा होगा और राह से बहुत दूर भटका हुआ होगा।(७२) और (ऐ पैग़म्बर!) जो हमने हुकम (क़ुरान) तुम्हारी तरफ़ भेजा है लोग तो तुमको इससे बिचलाने में लगे थे ताकि इसके सिवाय तुम झूठ हमारी तरफ़ ख्याल करो और यह लोग तुमको दोस्त बना लेते हैं।(७३) अगर हम तुझे मज़बूत न रखते तो तू भी थोड़ा इनकी तरफ़ को झुकने लगा था।(७४) ऐसा होता तो हम तुमको जीते और मरते दुहरी (सज़ा का मज़ा) चखाते, फिर तुमको हमारे मुक़ाबले में

† यानी जो खुदा को इस जीवन में नहीं पहचानता और उसके प्यारों की आज्ञा का पालन नहीं करता वह दूसरी दुनिया में बड़े घाटे में रहेगा।

कोई मददगार न मिलता।(७५) यह लोग तो तुमको मक्के की ज़मीन से घबराहट पैदा करा रहे थे ताकि तुमको यहाँ से निकाल बाहर करें और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे यह लोग भी चन्द रोज़ से (ज्यादा) न रहने पाते।(७६) तुमसे पहले जितने पैग़म्बर हमने भेजे हैं उनका यही दस्तूर रहा है (जो) दस्तूर (हमारे ठहराये हुए हैं। उन) में तब्दीली होती हुई न पाओगे।(७७) [रुकू ८ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर!) सूरज के ढलने से रात के अँधेरे तक नमाज़ें पढ़ा करो और क़ुरान सुबह पढ़ना चाहिए। निस्सन्देह क़ुरान का सुबह पढ़ना (खुदा के) सामने होना है (७८) और रात के एक हिस्से में क़ुरान (नमाज़ तहज्जुद) पढ़ा करो और यह फ़र्ज़ से ज्यादा बात तेरे लिए है, शायद तुम्हारा परवरदिगार तुमको तारीफ़ के मुक़ाम में पहुँचाये।(७९) दुआ माँगा करो कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको अच्छी जगह पहुँचा और मुझको सच्चा मार्ग दिखला और अपने पास से मुझको हुकूमत की मदद दे।(८०) (ऐ पैग़म्बर! लोगों से) कह दो कि (दीन) सच्चा आया और (दीन) झूठ मिट गया, और बेशक झूठ तो मिटनेवाला ही था। (८१) हम क़ुरान में ऐसी-ऐसी बातें उतारते हैं जो ईमानवालों के लिए इलाज और मेहरबानी हैं और जल्दी करनेवालों को तो इससे नुक़सान ही और होता है (८२) जब हम मनुष्य को आराम देते हैं तो (उल्टा हमसे) मुँह फेरता और पहलू खाली करता है और जब उसको तकलीफ़ पहुँचती है तो उम्मेद तोड़ बैठता है। (८३) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि हरएक अपने तौर पर काम करता है, फिर जो ठीक सीधे रास्ते पर है, तुम्हारा परवरदिगार उसको खूब जानता है।(८४) [रुकू ९ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर!) रूह की बाबत तुमसे पूछते हैं तो कह दो रूह मेरे परवरदिगार ही की तरफ़ से है और तुम लोगों को थोड़ा ही इल्म दिया गया है।(८५) (ऐ पैग़म्बर!) अगर हम चाहें तो जो (क़ुरान) हमने तुम्हारी तरफ़ हुक्म भेजा है उसको उठा* ले जावें, फिर तुमको

* यानी क़ुरान को हम भुला देना चाहें तो ऐसा भुला दें कि किसी को

उसके लिए हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार न मिलेगा।(८६) मगर तुम्हारे परवरदिगार ही की मेहरबानी से तुम पर उसकी बड़ी ही परवरिश है।(८७) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर सब आदमी और जिन्न ऐसा क़ुरान बनाने को जमा हों तो भी ऐसा न बना सकेंगे, अगर्चे उनमें एक दूसरे की बड़ी मदद करे।(८८) बावजूद कि हमने इस क़ुरान में लोगों के लिए सभी मिसालें बयान की हैं मगर बहुतेरे लोग नाशुक्रा ही रहे।(८६) (ऐ पैग़म्बर ! मक्का के काफ़िर तुमसे) कहते हैं कि हम तो उस वक़्त तक तुम पर ईमान लाने वाले नहीं जब तक हमारे लिए ज़मीन से कोई चश्मा वहाँ न निकालो।(६०) या खजूरों और अंगूरों का तुम्हारा कोई बाग़ हो और उसके बीचोबीच तुम नहरें जारी कर दिखाओ।(६१) या जैसा तुम कहा करते थे कि आसमान के टुकड़े-टुकड़े हम पर जा गिरावे या ख़ुदा फ़रिश्तों को लाकर सामने खड़ा करे।(६२) या कोई तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आसमान में चढ़ जाओ और जब तक तुम हमको लेखा न उतारो जिसे हम आप पढ़ लें तब तक हम तुम्हारे चढ़ने का विश्वास करने वाले नहीं। कहा कि अल्लाह पाक है, मैं तो एक भेजा हुआ आदमी हूँ।(६३) [रुकू १० आयात ६]

जब लोगों के पास (ख़ुदा की तरफ़) से शिक्षा आ चुकी तो उनको ईमान लाने से इसके सिवाय और कोई रोकने वाली नहीं हुई, मगर यही कहने लगे क्या ख़ुदा ने आदमी (पैग़म्बर बना के) भेजा है।(६४) (ऐ पैग़म्बर !) तू लोगों से कह कि ज़मीन में अगर फ़रिश्ते होते और यक़ीन से चलते फिरते तो हम आसमान से फ़रिश्तों ही को पैग़म्बर (बनाकर) उनके पास भेजते।(६५) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि हमारे और तुम्हारे बीच में अल्लाह ही काफ़ी है, वह अपने सेवकों से जानकार है और उन्हें देख रहा है। (६६) और जिनको ख़ुदा शिक्षा दे वही सच्ची राह पर है और जिसे भटकाये तो ऐसे गुम-राहों के लिए तुम ख़ुदा के सिवाय कोई मददगार नहीं पाओगे और

इसका एक शब्द भी याद न रह जाय।

क़यामत के दिन हम उन लोगों को उनके मुँह के बल अन्धे और गूँगे और बहरे करके उठावेंगे। उनका ठिकाना नरक है, जब दोज़ख़ की आग बुझने को होगी हम उनके लिए और ज्यादा भड़कावेंगे।(६७) यह उनकी सज़ा है कि उन्होंने हमारी आयतों से इन्कार किया और कहा कि जब हम हड्डियाँ और टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे तो क्या हम दुबारा जन्म लेंगे। (६८) क्या इन लोगों ने इस बात पर नज़र नहीं की कि ख़ुदा जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया है इस बात पर भी क़ाबिज़ है कि इन जैसे (आदमी दुबारा) पैदा करे और उनके लिए (दुबारा पैदा करने को) एक अवधि (मियाद) नियत कर रखी है जिसमें किसी तरह का शक नहीं, इस पर बेइन्साफ़ लोग इन्कारी ही करते हैं।(६६) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो अगर मेरे परवरदिगार के रहम के ख़ज़ाने तुम्हारे अधिकार में होते तो ख़र्च हो जाने के डर से तुम उन्हें बन्द ही रखते और मनुष्य बड़ा ही तंग-दिल है। (१००) [रुकू ११ आयात ७]

हमने मूसा को खुली हुई निशानियाँ दीं तो (ऐ पैग़म्बर !) इसराईल के बेटों से पूछ कि जब मूसा इसराईल की संतान के पास आये तब फ़िरऔन ने उनसे कहा कि मूसा ! मेरी अटकल में तुम पर किसी ने जादू कर दिया है।(१०१) (मूसा ने) जवाब दिया कि तू जान चुका है कि आसमान और ज़मीन तेरे परवरदिगार की ही यह निशानियाँ हैं और ऐ फ़िरऔन, मेरे ख़्याल में तेरी आफ़त आई है।(१०२) फिर फ़िरऔन ने इसराईल की संतान को तंग करके देश से निकाल देना चाहा तो हमने उसको और उसके साथियों को सबको डुबो दिया।(१०३) फ़िरऔन के पीछे हमने याक़ूब के बेटों से कहा कि देश में बसना, फिर जब क़यामत का वादा आवेगा तो हम तुमको समेट कर जमा करेंगे।(१०४) और (ऐ पैग़म्बर!) सचाई के साथ हमने क़ुरान को उतारा और सचाई के साथ वह उतरा और हमने तो तुमको बस ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला भेजा है।(१०५) क़ुरान को हमने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा कि तुम अवकाश के साथ उसे लोगों को पढ़ कर सुनाओ और हमने उसे धीरे-धीरे उतारा है।(१०६) (ऐ पैग़म्बर

इन लोगों से) कहो कि तुम क़ुरान को मानो या न मानो, जिन लोगों को क़ुरान से पहले इल्म दिया गया है जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोड़ियों के बल सिजदे में गिरते हैं। (१०७) कहने लगते हैं कि हमारा परवरदिगार पवित्र है और उसका वादा पूरा होना ही था।(१०८) ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं, रोते और क़ुरान के कारण से उनकी विनम्रता ज्यादा होती जाती है।(१०९) (ऐ पैग़म्बर। तुम इन लोगों से) कहो कि तुम (ख़ुदा को) अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (दयालु) कहकर पुकारो, जिस (नाम) से भी पुकारो तो उसके सब नाम अच्छे हैं और (ऐ पैग़म्बर !) तू अपनी नमाज़ जोर से न पढ़ और न धीमी आवाज़ से बल्कि इनके बीच की राह पकड़। (११०) और कहो कि हर तरह से ख़ुदा की सराहना है जो न तो संतान रखता है और न उसके राज्य में कोई (उसका) साझी है। वह निर्बल नहीं कि उसको किसी की सहायता की आवश्यकता हो। उसकी बड़ाइयाँ समय-समय पर करते रहा करो। (१११) [रुकू १२ आयात ११]

---

१८ सूरे कहफ़ ६९

मक्का में उतरी, इसमें ११० आयतें और १२ रुकू हैं

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को है जिसने अपने सेवक पर क़ुरान उतार और उसमें कोई ऐब नहीं रखा। (१) बिल्कुल सीधी बात है ताकि ख़ुदा की तरफ़ से कठोर सज़ा से डराये और जो ईमानवाले हैं और अच्छे काम करते हैं उनको इस बात की ख़ुशख़बरी दे कि उनको अच्छा नतीजा जन्नत है (२) जिसमें वह हमेशा रहेंगे।(३) उन लोगों को ख़ुदा की सज़ा से डरा जो कहते हैं कि ख़ुदा संतान रखता है (४) न तो उन्हीं को इस बात की कुछ खोज है और न इनके बड़ों को। क्या बुरी बात है जो उनके मुँह से निकलती है। जो कहते हैं निरी झूठ है।(५) इस बात को न मानें तो शायद तुम शोक

के मारे इनके पीछे अपनी जान दे डालोगे। (६) जो ज़मीन पर है
हमने उसको ज़मीन की शोभा बनाया है ताकि इनमें लोगों को जाँचे
कि कौन अच्छे कर्म करता है।(७) और हम सब चीज़ों को जो ज़मीन
पर हैं चटियल मैदान बना देंगे। (८) क्या तुम लोग ऐसा ख़्याल
करते हो कि गुफ़ा और खोह के रहनेवाले हमारी निशानियों में से
अजीब थे।(९) जब चन्द जवान गुफ़ा में जा बैठे और प्रार्थना की कि
ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर अपनी तरफ़ से कृपा कर और हमारे काम
को पूरा कर।(१०) फिर कई वर्ष के लिए हमने गुफ़ा में उनके कान
थपक दिये।(११) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम देख लें कि दो
गरोहों में से किसको ठहरने की अवधि याद है।(१२) [रुकू १ आ.१२]

हम उनका हाल ठीक-ठीक तुमसे कहते हैं कि वह थोड़े जवान
थे जो अपने परवरदिगार पर ईमान लाये और हम उनको ज़्यादा ही
शिक्षा देते रहे।(१३) और हमने उनके दिलों पर गिरह लगा दी कि
जब उठ खड़े हुए और बोल उठे कि हमारा परवरदिगार आसमान और
ज़मीन का परवरदिगार है—हम तो उसके सिवाय किसी पूजित को न
पुकारेंगे। (अगर हम ऐसा करें) तो हमने बड़ी ही अनुचित बात
कही (१४) यह हमारी जाति है जिन्होंने अल्लाह के सिवाय कई
पूजित समझ रखे हैं, इनकी कोई खुली सनद क्यों नहीं पेश करते। तो
जिसने ख़ुदा पर झूठ बाँधा उससे बढ़कर कौन अपराधी है।(१५) जब
तुमने अपनी जाति के लोगों से और ख़ुदा के सिवाय जिनकी यह लोग
पूजा करते हैं उनसे किनारा खींच लिया तो गुफ़ा में चल बैठो, तुम्हारा
परवरदिगार अपनी दया तुम पर फैला देगा और तुम्हारे काम में
सुभीते करेगा।(१६) जब सूरज निकले तो तू देखेगा कि वह उनकी
गुफ़ा से दाहिनी ओर को बचता हुआ रहता है और जब डूबता है तो
उनसे बाईं ओर को कतरा जाता है, और वह गुफ़ा के अन्दर बड़ी चौड़ी
जगह में हैं। यह ख़ुदा की निशानियों में से है। जिसको ख़ुदा राह दे
वही सच्चे रास्ते पर है और जिसको वह गुमराह करे तो फिर तुम कोई
उसको राह पर लानेवाला न पाओगे (१७) [रुकू २ आयात ५]

तू उनको समझे कि जागते हैं हालाँकि वह सो रहे हैं और हम दाहिनी तरफ़ को और बाईं तरफ़ को उनकी करवटें बदलते रहते हैं और उनका कुत्ता चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाये है, अगर तू उन लोगों को झाँककर देखे तो उनसे डरेगा और उल्टे पैर भाग खड़ा होगा।(१८) और इसी तरह हमने उनको जगा दिया था ताकि अपने आपस में बातें करें। उनमें से एक बोल उठा भला तुम कितनी देर ठहरे होगे। वह बोले कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम, फिर बोले कि जितनी मुद्दत तुम खोह में रहे तुम्हारा परवरदिगार ही अच्छी तरह जानता है। तू अपने में से एक को अपना यह रुपया देकर शहर की तरफ़ भेज ताकि वह देखे कि किसके यहाँ अच्छा भोजन है, तो उसमें से खाना तुम्हारे पास ले आये और चुपके से लेकर चला आये और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे।(१९) अगर लोग तुम्हारी ख़बर पा जावेंगे तो तुम पर संगसार (पत्थरों की वर्षा) करेंगे या तुमको उल्टा फिर अपने दीन में कर लेवेंगे और ऐसा हुआ तो फिर तुमको कभी जन्नत नहीं होगी।(२०) इसी तरह हमने उन्हें सूचित कर दिया था कि जान लें कि ख़ुदा का वादा सच्चा है और क़यामत में कुछ भी शक नहीं। अब ख़बर पाये पीछे लोग उनके सम्बन्ध में आपस में झगड़ने लगे, तो किसी-किसी ने कहा उन (कहफ़वालों) पर एक इमारत बनाओ और उनके हाल को उनका परवरदिगार ही अच्छी तरह जानता है। उनके बारे में जिनकी राय ज़बरदस्त रही उन्होंने कहा हम उनके मकान पर एक मसजिद बनावेंगे।(२१) कोई कोई कहते हैं (कहफ़वाले तीन थे, चौथा उनका कुत्ता और कोई कहते हैं कि पाँच थे और छठवाँ उनका कुत्ता)। छिपी बातों में अटकल चलाते हैं और कहते हैं कि सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता। (ऐ पैग़म्बर। इन लोगों से) कहो कि इस गिनती को तो मेरा परवरदिगार ही जानता है, इनको बहुत थोड़े जानते हैं। तो (ऐ पैग़म्बर !) कहफ़वालों के बारे में झगड़ा मत करो मगर सरसरी तौर का झगड़ा और कहफ़वालों के सम्बन्ध में इनमें से किसी से पूछ-ताछ मत करो।(२२) [रुकू ३ आयात ५]

किसी काम की बाबत न कहा करो कि मैं इसको कल करूँगा मगर यह कहो कि खुदा चाहे तो इस काम को कल कर दूँगा।(२३) अगर कभी भूल जाया करो तो अपने परवरदिगार को याद करो और कह दो शायद मेरा परवरदिगार इससे ज्यादा सीधी राह मुझको बतावे।(२४) और (कहफ़वाले) अपनी गुफ़ा† में ३०० वर्ष रहे और ६ साल और (२५) (ऐ पैग़म्बर ! इस पर भी लोग इस मुद्दत को न मानें तो उनसे) कहो कि जितनी मुद्दत (कहफ़वाले गुफ़ा में) रहे अल्लाह खूब जानता है। आसमान और जमीन की (अदृष्ट) की विद्या उसी को है, क्या ही देखनेवाला और क्याही सुननेवाला है। उसके सिवाय लोगों का कोई काम सँभालनेवाला नहीं और न वह अपनी आज्ञा में किसी को शरीक करता है।(२६) और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारे परवरदिगार की किताब से जो तुम पर हुक्म उतरा है उसको पढ़ो, कोई उसकी बातो को बदल नहीं सकता और उसके सिवाय तुम कहीं शरण न पाओगे।(२७) और जो लोग सुबह और शाम अपने परवरदिगार की याद करते हैं और उसी की रज़ामंदी चाहते हैं, तू उनके साथ मिला रह और तेरी नजर उन पर से हटने न पावे। क्या दुनिया की ज़िन्दगी के साज-सामान ढूँढता है ? और ऐसे शख्स का कहा न मान जिसके दिल को हमने अपनी याद से भुला दिया है और वह अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा है और उसकी दुनियादारी हद से बढ़ गई है।(२८) और (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि यह क़ुरान तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सच है, पस जो चाहे माने और जो चाहे न माने। इन्कारियों के लिए तो हमने ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उनको चारो तरफ़ से घेर लेंगी और प्रार्थना करेंगे तो (जिसी) पानी से उनकी फ़रियादरसी

† कहफ़वालों का हाल इतिहास में लिखा है। इनकार करनेवालों ने उनके विषय में मुहम्मद साहब से पूछा। आपने इस आशा पर कि वही (आयत) उतरेगी कह दिया कल बताऊँगा परन्तु आयत १८ दिन न आई। यह इसलिए कि आप जान लें कि हर बात का अधिकार खुदा को है और आगे से यों कहा करें कि यदि खुदा ने चाहा तो ऐसी-ऐसी बातें मैं इस समय करूँगा।

(विनय की पहुँच) की जायगी। (वह इस तरह गरम होगा) जैसे पिघला हुआ ताँबा (और) वह मुँहों को भूँज डालेगा। (क्या ही) बुरा पानी है और क्या बुरा आराम है। (२६) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये। जो शख्स नेक काम करे हम उसके बदले को बेकार नहीं होने दिया करते। (३०) यही लोग हैं जिनके रहने के लिए (जन्नत) बाग़ हैं। इन लोगों के (मकानों के) नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ सोने के कंगन पहनाये जायँगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहनेंगे (और) वहाँ तख्तों पर तकिये लगाये बैठेंगे।(क्या ही) अच्छा बदला है और क्या खूब आराम है।(३१) [रुकू ४आ.६]

(ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से उन दो आदमियों की मिसाल बयान करो जिनमें से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ दिये थे और हमने उनके आस-पास खजूर के पेड़ लगा रखे थे और हमने दोनो बाग़ों के बीच-बीच में खेती लगा रखी थी।(३२) दोनो बाग़ अपने फल लाये और फल (लाने) में किसी तरह की कमी नहीं की और दोनो के बीच हमने नहर जारी की।(३३) तो बाग़ों के मालिक के पास एक दिन जिस दिन तरह-तरह की पैदावार मौजूद थी यह आदमी अपने (किसी) दोस्त से बातें करते-करते बोल उठा कि मैं तुझसे माल में और आदमियों में ज्यादा हूँ।(३४) यह बातें करता हुआ वह अपने बाग़ में गया और (घमण्ड और नाशुक्री से) अपने पर आप ही बुरा कर रहा था। कहने लगा कि मैं नहीं समझता कि (वह बाग़) कभी मिट जावे।(३५) मैं नहीं समझता कि क़यामत आनेवाली है और अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया जाऊँगा तो जहाँ लौटकर जाऊँगा इससे बढ़कर वहाँ पाऊँगा। (३६) उसका दोस्त जो उससे बातें करता जाता था, बोल उठा कि क्या तू उसका इन्कार करनेवाला है जिसने तुझको मिट्टी से फिर पैदा किया, फिर तुझको पूरा आदमी बनाया।(३७) लेकिन मैं तो (यह यक़ीन रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा परवरदिगार है और मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता।(३८) जब तू अपने बाग़ में आया तो तूने

क्यों नहीं कहा कि यह (सब) ख़ुदा के चाहे से हुआ (वर्ना मुझमें तो) ख़ुदा की मदद के बिना कुछ भी बल नहीं। अगर माल और संतान के विचार से तू मुझको अपने से कम समझता है, (३९) तो ताज्जुब नहीं मेरा परवरदिगार तेरे बाग़ से बढ़कर मुझको दे और तेरे बाग़ पर आसमान से कोई बला उतरे कि वह सुबह को साफ़ मैदान होकर रह जाय।(४०) या उसका पानी बहुत नीचे उतर जाय और तू उसको किसी तरह ढूँढ़कर न ला सके।(४१) उसकी पैदावार फेर में आ गई तो वह उस लागत पर जो बाग़ में लगाई थी अपने दोनों हाथ मलता रह गया और वह अपनी टट्टियों पर गिर पड़ा था और कहता जाता था कि क्या अच्छा होता अगर अपने परवरदिगार के साथ किसी को साझी न ठहराता।(४२) उसका कोई ऐसा जत्था न हुआ कि ख़ुदा के सिवाय उसकी मदद करता और न वह बदला ले सका। (४३) इसी से सब सच्चे अधिकार ख़ुदा को हैं, वही बढ़कर और अच्छा बदला देनेवाला है। (४४) [रुकू ५ आयात १३]

(ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से बयान करो कि दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल पानी-जैसी है जिसको हमने आसमान से बरसाया तो ज़मीन की पैदावार पानी के साथ मिल गई फिर चूर-चूर होकर रह गई जिसे हवाएँ उड़ाये-उड़ाये फिरती हैं और अल्लाह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है।(४५) (ऐ पैग़म्बर !) माल और औलाद दुनिया की ज़िन्दगी की शोभा हैं और अच्छे काम जिनका असर देर तक बाक़ी रहे तुम्हारे पालनकर्त्ता के नज़दीक सवाब के विचार से बढ़कर हैं और उम्मीद से भी बढ़कर हैं।(४६) लोगों ! उस दिन की चिन्ता से बेखटके न हो, जिस दिन हम पहाड़ों को हिलावेंगे और (ऐ पैग़म्बर !) तुम ज़मीन को देख लोगे कि खुला मैदान पड़ा है और हम लोगों को घेर बुलावेंगे और उनमें से किसी को नहीं छोड़ेंगे।(४७) पाँति की पाँति तुम्हारे परवरदिगार के सामने पेश किये जायँगे। जैसा हमने तुमको पहली बार पैदा किया वैसे ही तुम हमारे सामने आये मगर तुम यह ख़याल करते रहे कि हम तुम्हारे लिए कोई समय ही नहीं ठहरावेंगे।(४८)

और (लोगों की कारगुज़ारियों) का रजिस्टर रखा जायगा तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम गुनहगारों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य, यह कैसा रजिस्टर है और जो कुछ इन लोगों ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो, (वह सब कर्मलेखे में लिखा हुआ) मौजूद पावेंगे और तुम्हारा परवरदिगार किसी पर बेइन्साफ़ी नहीं करेगा। (४६) [रुकू ६ आयात ५]

जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सिर झुकाओ तो इबलीस (जो जिन्नों की जाति में से था) के सिवाय सभी ने सिर झुकाया। अपने परवरदिगार के हुक्म से निकल भागा तो (लोगों !) क्या मुझे छोड़कर इबलीस को और उसके कुटुम्ब को दोस्त बनाते हो हालाँकि वह तुम्हारे (पुराने) दुश्मन हैं और ज़ालिमों का फल बुरा हुआ ! (५०) हमने आसमान और ज़मीन के पैदा करते समय बल्कि ख़ुद शैतान के पैदा करते समय भी शैतानों को नहीं बुलाया और हम ऐसे न थे कि राह भुलानेवालों को (अपना) मददगार बनाते। (५१) और (लोगों ! उस दिन की फ़िक्र से बेखटके न हो) जिस दिन ख़ुदा हुक्म देगा कि जिनको तुम हमारा शरीक समझा करते थे उनको बुलाओ या उनको बुलावेंगे मगर वह इनको जवाब ही न देंगे और हम इनके बीच में आड़ कर देंगे। (५२) मार डालनेवाले और अपराधी लोग दोज़ख़ की आग को देखेंगे और समझ जावेंगे कि वह उसमें गिरनेवाले हैं और उनको उससे कोई भागने की राह नहीं मिलेगी। (५३) [रुकू ७ आयात ४]

हमने इस क़ुरान में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान की हैं मगर आदमी ज्यादा झगड़ालू है। (५४) जब लोगों के पास हिदायत आ चुकी तो (अब) ईमान लाने और अपने परवरदिगार से क्षमा माँगने से इनको उसके सिवाय और कौन काम रोकनेवाला हो सकता था कि अगले लोगों जैसा चलन इनको भी पेश आये या (हमारी) सज़ा इनके सामने आ मौजूद हो। (५५) हम पैग़म्बर को सिर्फ़ इसलिए भेजा करते हैं कि ख़ुशख़बरी सुनावें और [illegible] और

जो लोग इन्कार करनेवाले हैं, झूठी बातों की सनद पकड़कर झगड़े किया करते हैं ताकि झगड़े से सबको डिगावें और इन लोगों ने हमारी आयतों को और (हमारी सज़ा) को जिसमें इनको डराया जाता है हँसी बना रखा है।(५६) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो ख़ुदा की आयतों से समझाये जाने पर फिर उसकी तरफ़ से मुँह फेरे और अपने पहले कामों को भूल जावे। हमही ने इनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं ताकि (सच बात) समझ न सकें और इनके कानों में (एक तरह का) बोझ (पैदा कर दिया है)। और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम इनको सच्ची राह की तरफ़ बुलाओ तो यह कभी राह पर आनेवाले नहीं।(५७) और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा माफ़ी करनेवाला मेहरबान है। अगर इनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फ़ौरन ही इन पर सज़ा उतार देता, लेकिन इनके लिए एक मियाद है जिससे इधर कहीं शरण नहीं पा सकते।(५८) (आद और समूद की) यह बस्तियाँ (जिनको तुम देखते हो) इन्होंने भी जब नटखटी की हमने उनको मिटा दिया और इनके मार डालने की भी हमने एक मियाद नियत कर रखी है। (५९) [रुकू ८ आयात ६]

(ऐ पैग़म्बर!) जब मूसा‡ (खिज्र की मुलाक़ात के इरादे से चले तो उन्होंने) अपने नौकर (यूशा) से कहा कि जब तक मैं दोनो नदियों के मिलने की जगह पर न पहुँच लूँ बराबर चलूँगा या मैं कारनून तक चलाही जाऊँगा।(६०) फिर जब यह दोनो उन दो नदियों के मिलने की जगह पर पहुँचे तो दोनो अपनी मछली भुनी हुई भूल गये, तो मछली ने नदी में सुरंग की तरह का अपना रास्ता बना लिया।(६१) फिर जब आगे बढ़ गये तो मूसा ने अपने नौकर से कहा कि

‡ एक दिन हज़रत मूसा से किसी ने पूछा, "तुमसे भी अधिक ज्ञान किसी को है?" मूसा ने कहा, "हम नहीं जानते।" यदि उन्होंने यों कहा होता कि हम ऐसे अल्लाह के बहुतेरे बन्दे हैं, तो बहुत उचित होता। इसलिए उन पर वही (आयत) आई कि एक सेवक हमारा है जो नदी के संगम पर रहता है, उससे मिलो। वह तुमसे अधिक ज्ञान रखता है।

हमारा जलपान तो हमको दो। हमारे इस सफ़र से तो हमको बड़ी थकावट हुई।(६२) (नौकर ने) कहा आपने यह भी देखा कि जब उस पत्थर के पास ठहरे तो मैं मछली भूल गया और शैतान ही ने मुझको भुला दिया कि मैं (आप से) उसका ज़िक्र करता और मछली ने अजीब तौर पर नदी में (जाने का) अपना रास्ता कर लिया।(६३) (मूसा ने) कहा कि वही है जिसकी हम तलाश में थे फिर दोनो अपने (पैरों के) निशानों के खोज लगाते-लगाते उलटे पाँव फिरे।(६४) तो उन्होंने हमारे माननेवालों में से एक सेवक (यानी ख़िज्र) को पाया जिस पर हमने अपनी मेहरबानी की और अपनी तरफ़ उसको एक इल्म सिखाया था।(६५) मूसा ने ख़िज्र से कहा कि क्या मैं तेरे साथ इस शर्त पर रहूँ कि जो इल्म तुझको सिखाया गया है तू कुछ-कुछ मुझको भी सिखा दे।(६६) (ख़िज्र ने) कहा तू मेरे साथ न ठहर सकेगा।(६७) और जो चीज़ तुम्हारी जानकारी के घेरे से बाहर है उस पर तू कैसे सब्र कर सकता है? (६८) (मूसा ने) कहा कि जो ख़ुदा ने चाहा तू मुझको संतोष करनेवाला पावेगा और मैं तेरी किसी आज्ञा को न टालूँगा।(६९) (ख़िज्र ने) कहा अगर तुझको मेरे साथ रहना है तो जब तक मैं तुझसे किसी बात की चर्चा न करूँ तू मुझसे कोई सवाल न कर।(७०) [रुकू ९ आयात ११]

फिर (मूसा और ख़िज्र) दोनो यहाँ तक चले कि जब दोनो नाव में सवार हुए तो ख़िज्र ने (एक तख़्ता तोड़कर) नाव को फाड़ दिया। (मूसा ने) कहा कि तूने क्या किश्ती को इसलिए फाड़ा कि नाव के लोगों को (दरिया में) डुबो दे। तूने एक अजीब बात की। (७१) (ख़िज्र ने) कहा क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ न ठहर सकेगा।(७२) (मूसा ने) कहा कि तू मेरी भूल चूक न पकड़ और मेरे काम के सबब से मुझ पर सख़्ती मत डाल।(७३) फिर दोनो और बढ़े यहाँ तक कि (रास्ते में) एक लड़के से मिले तो ख़िज्र ने उसको मार डाला। (मूसा ने) कहा क्या बिना किसी जान के बदले तूने एक बेक़सूर मनुष्य को मार डाला, तूने बड़ा बेजा काम किया।(७४)।

सोलहवाँ पारा (क़ाल अलम अक़ुल)

सूरे कहफ़ (जारी)

(ख़िज़्र ने) कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मेरे साथ तुम सब्र नहीं कर सकोगे। (७५) (मूसा ने) कहा कि इसके बाद अगर मैं तुमसे कुछ भी पूछूँ तो मुझको अपने साथ न रखना। फिर मैं तुमसे कुछ उज्र न करूँगा। (७६) फिर आगे बढ़े यहाँ तक कि गाँववालों के पास पहुँचे और वहाँ के लोगों से खाने को माँगा उन्होंने उनको खाना देना मंज़ूर न किया। इतने में इन्होंने गाँव में एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी। (ख़िज़्र ने) उसको खड़ा कर दिया। (इस पर मूसा ने) कहा अगर तुम चाहते तो (इन लोगों से) दीवार के खड़े कर देने की मज़दूरी ले सकते थे। (७७) ख़िज़्र ने कहा अब मुझमें और तुझमें जुदाई पड़ गई, जिस पर तू संतोष न कर सका। मैं तुझको उसकी हक़ीक़त बताये देता हूँ। (७८) नाव तो ग़रीबों की थी। वह नदी में चलाकर पेट पालते थे। मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूँ क्योंकि इनके सामने की तरफ़ एक बादशाह था जो हरएक किश्ती को ज़ब्त कर लिया करता था। (७९) और वह जो लड़का था उसके माता पिता ईमानवाले थे, हमको यह डर हुआ कि यह लड़का सरकशी और इन्कार से उनके सिरों पर बला न डाले। (८०) इसलिए हमने यह इरादा किया (उसको मार दिया) और उनका परवरदिगार उसके बदले में उसका पाक और उससे अच्छे ख़्यालवाला बेटा देगा। (८१) रही दीवार सो शहर के अनाथ लड़कों की थी, उसके नीचे उन्हीं लड़कों का ख़ज़ाना गड़ा हुआ था और उनका पिता अच्छा आदमी था। पस तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि दोनो लड़के अपनी जवानी को पहुँचकर अपना ख़ज़ाना निकाल लें। तुम्हारे परवरदिगार की यह कृपा थी और मैंने जो कुछ किया

सो अपने अख़्तियार से नहीं किया (बल्कि ख़ुदा की आज्ञा से)। वह उसका भेद है जिस पर तुम संतोष न कर सके। (८२) [रुकू१० आ.१२]

ऐ (पैग़म्बर!) लोग तुमसे ज़ुलक़रनैन (सिकन्दर) का हाल पूछते हैं। तुम कहो कि मैं तुमको उसका थोड़ा-सा हाल पढ़कर सुनाता हूँ।(८३) हमने उसको तमाम ज़मीन पर सामर्थ्यवान किया और हमने उसको हर तरह के साज-सामान दिये।(८४) वह एक सामान के पीछे पड़ा (यात्रा की तैयारी की)।(८५) यहाँ तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पर पहुँचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली काली कीचड़ के कुण्ड में डूब रहा है और देखा कि उस (कुण्ड) के क़रीब एक जाति बसी है। हमने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन! चाहो (इनको) सज़ा दो या इनको भला बनाओ।(८६) (ज़ुलक़रनैन ने कहा) जो सरकशी करेगा उसको तो हम सज़ा देंगे, वह अपने परवरदिगार के सामने लौटकर जायगा और वह भी उसे बुरी मार देगा।(८७) और जो ईमान लाये और अच्छे काम करे (उसके) बदले में उसको भलाई मिलेगी और हम उससे नर्मी से पेश आयेंगे।(८८) उसने सफ़र का सामान किया।(८९) यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलने की जगह पहुँचा तो उसको ऐसा मालूम हुआ कि सूरज कुछ लोगों पर निकलता है जिनके लिए हमने सूरज के इधर कोई आड़ नहीं रखी।(९०) ऐसा ही (था) और ज़ुलक़रनैन के पास जो कुछ था हमको उससे पूरी जानकारी थी।(९१) फिर वह एक सामान के पीछे पड़ा।(९२) यहाँ तक कि जब चलते-चलते एक पहाड़ की घाटी के बीच में पहुँचा तो किनारों के इधर एक क़ौम को पाया जो (भाषा) बात को नहीं समझते थे। (९३) उन लोगों ने (अपनी बोली) में कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन! (इस घाटी के उधर से) याजूज और माजूज* मुल्क में (आकर) फ़साद करते हैं तो हम आपके लिए (चन्दा) जमा कर दें यदि आप हमारे और उनके

* याजूज और माजूज दो जातियों के नाम हैं। यह घाट पार करके लूटमार किया करते थे।

बीच कोई रोक बना दें। (६४) (ज़ुलक़रनैन ने) कहा कि मेरे परवरदिगार ने जो मुझे सामर्थ्य दी है काफ़ी है (चन्दे की आवश्यकता नहीं) बल से मेरी सहायता करो, मैं तुममें और उसमें एक दीवार खींच दूँगा।(६५) लोहे की सिलें हमको ला दो। (वे लाये) यहाँ तक कि जब ज़ुलक़रनैन ने दोनों किनारों के बीच को पाटकर बराबर कर दिया तो हुक्म दिया कि अब इसको धौंको, यहाँ तक कि जब (लोहे की) दीवार को (लाल) अंगारा कर दिया तो कहा कि अब हम को ताँबा ला दो कि उसको पिघलाकर इस दीवार पर डाल दें।(६६) (ग़रज़ इस तदबीर से ऐसी ऊँची और मज़बूत दीवार तैयार होगई कि याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सूराख़ कर सकते थे।(६७) (ज़ुलकरनैन ने) कहा कि यह मेरे परवरदिगार की कृपा है। लेकिन जब मेरे परवरदिगार का वादा आवेगा तो इस दीवार† को गिरा देगा और मेरे परवरदिगार का वादा सच्चा है।(६८) और हम उस दिन किसी को किसी में मौज करने के लिए छोड़ देंगे और नरसिंहा फूँका जावेगा, फिर हम सब लोगों को जमा करेंगे।(६६) और उसी दिन काफ़िरों के सामने नरक पेश करेंगे। (१००)° जिनकी आँखें हमारी यादगारी से पर्दे में थीं और वह सुन न सकते थे §। (१०१) [रुकू ११ आयात १६]

क्या क़ाफ़िर इस ख़्याल में हैं कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों को काम का सँभालनेवाला बनावें। हमने काफ़िरों की मेहमानी के लिए नरक तैयार कर रखा है। (१०२) कहो तो बताऊँ कि किसके काम अकारथ हैं।(१०३) वह लोग जिनकी दुनिया की ज़िन्दगी में कोशिश गई-गुज़री हुई और वह इसी ख़्याल में हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं।(१०४) यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार की आयतों को और उसके सामने हाज़िर होने को न माना तो इनके

† यह लोहे की दीवार भी क़यामत के क़रीब गिर पड़ेगी।

§ यानी जो लोग हमारे बताये मार्ग पर न चलते थे और बतानेवाले की बात न सुनते थे।

काम अकारथ हो गये तो क़यामत के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे।(१०५) यह नरक उनका बदला है कि उन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई।(१०६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग़ हैं, (१०७) जिनमें वह हमेशा रहेंगे, यहाँ से उठना नहीं चाहेंगे।(१०८) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) लिए समुद्र स्याही हो, वह लिखते-लिखते निबट जाय चाहे वैसा समुद्र और भी मदद को किया जाय।(१०९)★ [सिजदा ४] (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि मैं तुम्हीं जैसा आदमी हूँ, मेरे पास यह वही (इश्वरीय संदेश) आया है कि तुम्हारा पूजित (केवल एक ख़ुदा ही है) तो जिसको अपने परवरदिगार के मिलने की चाह होवे उसे भले काम करना चाहिए और किसी को अपने परवरदिगार की पूजा में शामिल न करना चाहिए।(११०) [रुकू १२ आ. ९]

———:०:———

१९ सूरे मरियम ४४

मक्का में उतरी, इसमें ९८ आयतें, और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद।(१) (ऐ पैग़म्बर!) यह उस मेहरबानी का ज़िक्र है जो तुम्हारे परवरदिगार ने अपने सेवक ज़करिया पर की थी।(२) कि जब उन्होंने अपने परवरदिगार को दबी आवाज़ से पुकारा।(३) बोले कि ऐ परवरदिगार! मेरी हड्डियाँ सुस्त पड़ गई हैं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा है। और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझसे माँगकर ख़ाली नहीं रहा†।(४) अपने (मरे) पीछे मुझको भाईबन्दों से डर है और मेरी बीबी बाँझ है, पस अपनी तरफ़ से मुझको एक वारिस (यानी बेटा) दे।(५) जो मेरा वारिस हो और

† यानी तूने मेरी हर प्रार्थना स्वीकार की है।

याक़ूब की संतान का वारिस हो और ऐ मेरे परवरदिगार ! उसे मनमाना बना ।(६) (ख़ुदा ने कहा) ज़करिया ! हम तुमको एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसका नाम यहिया होगा । (और इससे) पहले हमने इस नाम का कोई (आदमी पैदा) नहीं किया ।(७) (ज़करिया ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मेरी बीबी बाँझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा हो गया हूँ ? (८) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवरदिगार कहता है कि तुमको इसमें बेटा देना हमारे लिए आसान है और पहले तुम्हीं को हमने पैदा किया, हालाँकि तुम कुछ भी न थे ।(९) ज़करिया ने निवेदन किया कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे कोई निशानी बता । कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात (दिन) लोगों से बात नहीं कर सकोगे ।(१०) (फिर ज़करिया) कोठे से निकलकर लोगों के सामने आया तो इशारे से उनको समझा दिया कि सुबह और शाम (ख़ुदा की) पूजा में लगे रहो ।(११) ग़रज़ यहिया पैदा हुआ । हमने उसको हुक्म दिया ऐ यहिया ! किताब को ख़ूब मज़बूती से लिये रहना (पालन करना) । और अभी वह लड़के ही थे कि हमने अपनी कृपा से उनको पैग़म्बरी दी ।(१२) और दया और शुद्ध स्वभाव दिया और वह परहेज़गार था ।(१३) और अपने मा-बाप की सेवा करता था और ज़बरदस्त बेहुक्म न था ।(१४) और सलाम है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन दुबारा ज़िन्दा होगा ।(१५) [रुकू १ आयात १५]

(ऐ पैग़म्बर !) क़ुरान में मरियम का ज़िक्र करो कि जब वह अपने लोगों से जुदा होकर पूरब की तरफ़ जा बैठी ।(१६) और लोगों की तरफ़ से पर्दा कर लिया तो हमने अपनी रूह (यानी आत्मा) को उनकी तरफ़ भेजा, फिर हमारी आत्मा पूरा मनुष्य बनकर उनके सामने आई ।(१७) मरियम कहने लगी अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं ख़ुदा की शरण चाहती हूँ ! (१८) बोले कि मैं तेरे परवरदिगार का भेजा हुआ (फ़रिश्ता) हूँ, इसलिए (आया हूँ) कि तुमको एक पाक लड़का दे जाऊँ (१९) वह बोली कि मेरे यहाँ कैसे लड़का हो सकता

है जबकि मुझे किसी मर्द ने नहीं छुआ और मैं कभी बदकार नहीं रही।(२०) (शुद्धात्मा ने) कहा ऐसा ही तुम्हारा परवरदिगार कहता है कि यह मामला मुझ पर आसान है और लोगों के लिए हम उसको एक निशानी और दया अपनी तरफ़ से किया चाहते हैं और यह काम पहले (सृष्टि के आदि) से ठहर चुका है। (२१) इस पर मरियम के गर्भ रह गया और वह फिर गर्भ लेकर कहीं अलग दूर के मकान में जा बैठी।(२२) फिर उसको एक खजूर के पेड़ की जड़ के पास जनने का दर्द उठा। (मरियम ने कहा) अगर मैं इससे पहले मर चुकी होती और भूली-बिसरी हो गई होती। (२३) फिर उसका उसके नीचे से आवाज़ आई कि उदास न हो, तेरे परवरदिगार ने तेरे नीचे एक चश्मा बहा दिया है।(२४) और खजूर की डालों को अपनी तरफ़ हिलाओ, उससे तेरे लिए पक्के खजूर गिरेंगे।(२५) फिर खाओ और (चश्मे का पानी) पियो और (बेटे को देखकर) आँखें ठण्डी करो। फिर कोई आदमी दिखलाई पड़े और वह तुमसे पूछे तो (इशारे से) कह देना कि मैंने दयालु (रहमान) का रोज़ा रखा है। सो मैं आज किसी आदमी से न बोलूंगी।(२६) फिर मरियम लड़के को गोद में लिये अपनी जाति के लोगों के पास आई। वह (देखकर) कहने लगे कि ऐ मरियम ! यह तूफ़ान कहाँ से लाई ?(२७) हारूँ की बहिन ! न तो तेरा बाप ही बदकार था और न तेरी माता ही बदचलन थी।(२८) तो मरियम ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया (कि जो कुछ पूछना है उससे पूछ लो)। वह कहने लगे कि हम गोद के बच्चे से कैसे बात करें।(२६) इस पर बच्चा बोला कि मैं अल्लाह का सेवक हूँ, उसने मुझको किताब (इंजील) दी और मुझको पैग़म्बर बनाया।(३०) और कहीं भी रहूँ मुझको बरकत दी और मुझको आज्ञा दी कि जब तक ज़िन्दा रहूँ नमाज़ पढ़ूँ और ज़कात दूँ।(३१) और मुझको अपनी मा का सेवक बनाया और मुझको ज़ालिम और अभागा नहीं बनाया।(३२) और मुझ पर सलाम है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूँगा और जिस दिन (दुबारा)

ज़िन्दा उठ खड़ा हूँगा !(३३) यह ईसा मरियम का बेटा है, सच्ची-सच्ची बातें जिसमें लोग झगड़ा करते हैं ।(३४) ख़ुदा ऐसा नहीं कि बेटा बनावे, वह पाक है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो इतना कह देता है कि 'हो' और वह हो जाता है ।(३५) अल्लाह मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की पूजा करो, वही सीधी राह है (३६) फिर आपस में फूट न डालने लगो, सो उन लोगों के हाल पर अफ़सोस है जो इन्कार करते हैं कि बड़े दिन (क़यामत में) फिर हाज़िर होना पड़ेगा। (३७) जिस दिन यह लोग हमारे सामने आवेंगे, क्या कुछ सुनेंगे,क्या कुछ देखेंगे लेकिन ज़ालिम आज के दिन खुली गुमराही (भटकने) में पड़े हैं ! (३८) और इन लोगों को पछतावे के दिन से डराओ जब काम का फ़ैसला कर दिया जावेगा और यह लोग भूल रहे हैं और ईमान नहीं लाते। (३९) हम ज़मीन के वारिस होंगे और उन लोगों के भी जो तमाम ज़मीन पर हैं, और हमारी तरफ़ सबको लौटकर आना होगा ।(४०) [रुकू २ आयात २५]

और क़ुरान में इब्राहीम का ज़िक्र (बयान) करो कि वह बड़े ही सच्चे पैग़म्बर थे ।(४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप ! आप क्यों इन (बुतों) की पूजा करते हैं जो न सुनते और न देखते और न कुछ काम आपके आ सकते हैं ।(४२) ऐ बाप! मुझको (ख़ुदा की तरफ़ से) ऐसी मालूमात मिली है जो तुझको नहीं मिली। सो तू मेरे पीछे हो, तुझको सीधी राह दिखाऊँगा ।(४३) ऐ बाप! शैतान को न पूज क्योंकि शैतान ख़ुदा से फिरा हुआ है ।(४४) ऐ बाप ! मुझको इस बात से डर है कि ख़ुदा से कोई सज़ा न आ लगे और तू शैतान का साथी हो जावे।(४५) (इब्राहीम के बाप ने) कहा कि ऐ इब्राहीम ! क्या तू मेरे पूजितों से फिरा हुआ है ? अगर तू नहीं मानेगा तो मैं तुझको संगसार (पथराव) कर दूँगा और अपनी ख़ैर चाहता है तो मेरे सामने से दूर हो ।(४६) (इब्राहीम ने) कहा (अच्छा तो मेरा) सलाम जुदाई है, मैं अपने परवरदिगार से तेरे लिए क्षमा माँगूगा। वह मुझ पर मेहरबान है। (४७) मैं तुम (बुतपरस्तों) को और (इन बुतों) से जिनको तुम ख़ुदा के सिवाय पुकारा करते

हो अलग होता हूँ और अपने परवरदिगार को पुकारूँगा, उम्मेद है कि मैं अपने परवरदिगार से दुआ माँगकर अभागा नहीं बनूँगा।(४८) तो जब इब्राहीम उन (मूर्तिपूजकों) से और उन मूर्तियों से जिनको वह खुदा के सिवाय पूजते थे अलग हो गये, हमने उनको इसहाक़ और याक़ूब† दिये और सबको हमने पैग़म्बर बनाया।(४६) और अपनी कृपा से उनको (सब कुछ) दिया और उनके लिए सच्चे और बड़े शब्द कहे। (५०) [रुकू ३ आयात १०]

और किताब में मूसा का ज़िक्र (बयान) करो कि वह चुना हुआ और पैग़म्बर था (५१) और हमने उसको तूर (पहाड़) की दाहिनी तरफ़ से पुकारा और भेद कहने के लिए उसको पास बुलाया।(५२) और अपनी मेहरबानी से उसके भाई हारूँ को पैग़म्बर बनाकर बख़्श दिया।(५३) और क़ुरान में इस्माईल का ज़िक्र कर कि वह वादे का सच्चा और पैग़म्बर था।(५४) और अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता और ख़ुदा को पसंद था।(५५) और किताब में इद्रीस का ज़िक्र (बयान) कर कि वह सच्चा पैग़म्बर था।(५६) और हमने उसको उठाकर बड़ी ऊँची जगह दाख़िल किया। (५७) यह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की और आदम की औलाद हैं और उन लोगों की औलाद हैं जिनको हमने नूह के साथ (नाव में) सवार कर लिया था और इब्राहीम और इसराईल की औलाद हैं और उन लोगों की औलाद में से हैं जिनको हमने सच्ची राह दिखलाई और चुन लिया। जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती थीं तो सिजदे में गिर पड़ते थे और रोते जाते थे।(५८) ★ [सिजदा ५] फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ (पैदा) हुए जिन्होंने नमाज़ें छोड़ दीं और बुरी ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गये, सो उनकी गुमराही उनके आगे आवेगी।(५६) मगर जिन्होंने तौबा की और ईमान लाये और नेक काम किये तो ऐसे लोग बाग़ों में दाख़िल होंगे और उन पर जुल्म न

† इब्राहीम के बेटे और पोते। यहाँ इस्माईल का नाम नहीं लिया वह इब्राहीम के साथ नहीं रहे।

होगा।(६०) यानी बिना देखे बाग़ जिनका ख़ुदा ने अपने दासों से वादा कर रखा है। उसका वादा आनेवाला है।(६१) वहाँ कोई बेहूदा बात उनके कान में न पड़ेगी सिवाय सलाम‡ के, और वहाँ उनको खाना सुबह-शाम मिला करेगा।(६२) यही वह स्वर्ग है जिसे अपने दासों में से जो परहेज़गार होगा उसे उसका वारिस बनायेंगे।(६३) और (ऐ पैग़म्बर!) हम§ (फ़रिश्ते) तुम्हारे पालनकर्त्ता के बिना हुक्म दुनिया में नहीं आ सकते। जो कुछ हमारे आगे होनेवाला है और जो कुछ हमसे पहले हो चुका है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है सब उसी के हुक्म से है और तेरा परवरदिगार भूलनेवाला नहीं।(६४) आसमान-ज़मीन का पालनेवाला और उन चीज़ों का जो आसमान-ज़मीन के बीच में हैं, तो उसी की पूजा में लगे रहो और उसकी पूजा को बरदाश्त करो, भला तुम्हारी जान में जैसा कोई और भी है।(६५) [रुकू ४ आयात १५]

और आदमी पूछा करता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या (दुबारा) ज़िन्दा हो जाऊँगा।(६६) क्या आदमी याद नहीं करता कि हमने पहले इसको पैदा किया था और वह कुछ भी न था।(६७) तो (ऐ पैग़म्बर!) तेरे परवरदिगार की क़सम हम उन्हें शैतानों के साथ इकट्ठा करेंगे और नरक के गिर्द घुटनों के बल बिठलायेंगे।(६८) फिर हर फ़िर्क़े में से उन लोगों को अलग करेंगे जो ख़ुदा से अकड़े फिरते थे।(६९) फिर जो लोग नरक में जाने के लायक़ हैं हम उनको ख़ूब जानते हैं।(७०) और तुममें से कोई नहीं जो नरक में होकर न गुज़रे, यह वादा तेरे परवरदिगार पर लाज़िम हो चुका है।(७१)

---

‡ यह जन्नत का बयान है। सलाम से यहाँ अच्छी और पाक बातों से प्रयोजन है।

§ यह जवाब उस सवाल का है जो मुहम्मद साहब ने जिब्रील से पूछा था। एक बार वह कई दिन के बाद आये तो नबी ने रोज़ न आने की वजह पूछी। जिब्रील ने कहा, "मैं ख़ुदा के हुक्म से आता हूँ। अपनी ओर से नहीं आता।"

फिर हम परहेज़गारों को बचा लेंगे और बेहुक्मों को उसी में पड़ा छोड़ देंगे। (७२) और जब हमारी खुली आयतें लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफ़िर मुसलमानों से पूछने लगते हैं कि हम दोनो फ़रीक़ों में से दर्जा (रुतबा) किसका अच्छा है और मजलिस किसकी अच्छी ? (७३) और हम इनसे पहले बहुत-सी जमातों को जो सामान और दिखावे में अच्छी थीं मिटा चुके हैं।(७४) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि जो शख्स गुमराही में है खुदा उसको लम्बा खींचे† यहाँ तक कि जब उस चीज़ को देख लें जिसका उनसे वादा किया जाता है यानी सज़ा या क़यामत, तो उस वक़्त इनको मालूम हो जायगा कि अब किसका रुतबा बुरा और (किसका जत्था) कमज़ोर है। (७५) और जो लोग सीधी राह पर हैं अल्लाह उनको ज्यादा शिक्षा देता है और अच्छे काम का जिनका असर बाक़ी रहे अच्छा बदला मिलता है और उनका लौट आना भी अच्छा है।(७६) भला तुमने उस शख्स को देखा जिसने हमारी आयतों से इनकार किया और कहने लगा (क़यामत होगी) तो वहाँ भी मुझको माल और संतान मिलेगी‡।(७७) क्या उसको ग़ैब की खबर लग गई है या इसने खुदा से वादा कर लिया है।(७८) हरगिज़ नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं इसके हक़ में सज़ा बढ़ाते चले जायँगे। (७९) और यह जो (माल और औलाद) उसके पास है (आख़िरकार) हम उससे ले लेवेंगे और यह अकेला हमारे सामने आवेगा। (८०) और मुशरिकों ने जो खुदा के सिवाय पूजित बना रखे हैं ताकि वे इनके

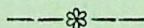
---

† यानी ढील दिये जाता है।

‡ एक काफ़िर मालदार ने एक मुसलमान की मज़दूरी न दी और कहा, "तू अपना धर्म छोड़ दे तो मज़दूरी दूँगा।" मुसलमान बोला, "तू मरकर फिर जिये तो भी मैं अपना ईमान न बदलूँ।" इस पर पहला बोला, "मैं फिर जिऊँगा तो यही माल और औलाद पाऊँगा।" इसपर कहा है कि वहाँ ईमान काम आयेगा, माल नहीं।

मददगार हों। (८१) कभी नहीं, यह पूजित इनकी पूजा का इन्कार करेंगे और उल्टे इनके वैरी हो जायँगे। (८२) [रुकू ५ आयात १७]

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा है कि वह उनको उकसाते रहते हैं। (८३) तो तुम इन (काफ़िरों) पर (सज़ा उतरने की) जल्दी न करो, हम उनके लिए दिन गिन रहे हैं। (८४) जिस दिन हम परहेज़गारों को खुदा के सामने मेहमानों की तरह जमा करेंगे। (८५) और पापियों को प्यासे नरक की ओर हाँकेंगे। (८६) वहाँ सिफ़ारिश का अधिकार होगा हाँ जिसने ख़ुदा से वादा लिया है। (८७) और कोई-कोई कहते हैं कि ख़ुदा बेटा रखता है। (८८) (ऐ पैग़म्बर!) इनसे कहो कि तुम ऐसी कड़ी बात कहते हो (८९) जिससे आसमान फट पड़े और ज़मीन फट जावे और पहाड़ काँप कर गिर पड़े। (९०) इसलिए कि ख़ुदा के लिए बेटा साबित करते हैं। (९१) और इसलिए कि ख़ुदा के लायक़ नहीं कि बेटा बनावे। (९२) आसमान और ज़मीन में कोई नहीं है जो ख़ुदा के आगे दास होकर न आवे। (९३) ख़ुदा ने इनको घेर लिया है और इनको गिन रखा है। (९४) और यह सब क़यामत के दिन अकेले उसके सामने आवेंगे। (९५) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिए ख़ुदा दोस्त पैदा करेगा। (९६) तो हमने इस (क़ुरान) को तुम्हारी ज़बान में इस ग़रज़ से आसान कर दिया है कि तुम इससे परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी सुनाओ, झगड़ालुओं को सज़ा से डराओ। (९७) और इनसे पहले हम बहुत जमातों को मार चुके हैं, भला अब तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनमें से किसी की आवाज़ सुनते हो। (९८) [रुकू ६ आयात १६]



२० सूरे ताहा ४५

मक्का में उतरी, इसमें १३५ आयतें और ८ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है। ताहा। (१) (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुम पर क़ुरान इसलिए नहीं उतारा† कि तुम मिहनत उठाओ। (२) (हाँ यह क़ुरान) शिक्षा है उसी-के लिये जो ख़ुदा से डरता है। (३) यह उसका उतारा हुआ है जिसने ज़मीन और ऊँचे आसमानों को पैदा किया। (४) रहमान (कृपालु) अर्श तख़्त पर विराज रहा है! (५) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ दोनों के बीच में है और जो कुछ मिट्टी के नीचे है, उसी का है। (६) और अगर तू पुकार कर बात करे तो वह भेद को और छिपी हुई बात को जानता है। (७) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं, अच्छे नाम उसी के हैं। (८) और क्या तुमने मूसा की पक्की बात सुनी है। (९) जब उनको आग§ दिखलाई दी तो उन्होंने अपने घर के लोगों से कहा ठहरो मुझको आग दिखाई दी है, अजब नहीं उससे तुम्हारे लिए चिनगारी (प्रकाश-ज्ञान) ले आऊँ या आग से राह का पता मालूम करूँ। (१०) फिर जब मूसा वहाँ आये तो उनको वहाँ आवाज़ आई कि ऐ मूसा ! (११) मैं तेरा परवरदिगार हूँ, तू अपनी जूतियाँ उतार डाल, तू तौबा के पाक मैदान

† जब क़ुरान उतरने लगा तो पैग़म्बर साहब पहले से अधिक ख़ुदा की पूजा पाठ करने लगे। रात-रात भर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते। इसको देखकर काफ़िर कहते, "क़ुरान तो आपके लिए मुसीबत बन गया।" इसके जवाब में यह आयतें उतरीं और ज्यादा पूजापाठ से रोका।

§ मूसा जब मदियन से मिस्र को चले तो उनके साथ बहुत-सी बकरियाँ और उनकी बीबी भी थीं। रास्ते में बीबी को प्रसव की पीड़ा उठी। इस समय बड़ी सर्दी थी और वह जंगल में भटक रहे थे। इतने में मूसा को दूर से आग दिखाई दी। यह आग न थी बल्कि ख़ुदा का नूर था। इन आयतों में इसी बात का विवरण है।

में है।(१२) और मैंने तुमको (पैग़म्बरी के लिए) चुना है तो जो कुछ आज्ञा होती है उसको कान लगाकर सुनो।(१३) कि मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवाय कोई पूजित नहीं, तुम मेरी ही पूजा किया करो और मेरी याद के लिए नमाज़ पढ़ा करो।(१४) क़यामत आने वाली है, मैं उसके (समय) को छिपाता हूँ ताकि हर आदमी डर से नेक काम करने की कोशिश करे (१५) और क़यामत में उसकी कोशिश का बदला मिले। तो ऐसा न हो कि जो आदमी क़यामत का यक़ीन नहीं रखता और अपनी दिली ख़्वाहिश के पीछे पड़ा है तुमको क़यामत से रोके रखे कि तू तबाह हो जावे।(१६) और मूसा! तुम्हारे दाहिने हाथ में यह क्या है? (१७) मूसा ने कहा यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लगाता हूँ, और इसी से अपनी बकरियों के लिए पत्ती झाड़ता हूँ और इसमें मेरे और भी मतलब हैं।(१८) फ़र्माया ऐ मूसा! इसको ज़मीन पर डाल दे।(१९) चुनांचे मूसा ने लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक भागता हुआ साँप बन गई।(२०) फ़र्माया इसको पकड़ लो और डरो मत, हम इसको फिर वही पहली हालत कर देंगे।(२१) और अपने हाथ को सिकोड़कर अपनी बग़ल में रख लो और फिर निकालो तो वह बिना किसी तरह की बुराई के सफ़ेद निकलेगा, यह दूसरा चमत्कार है।(२२) हम तुमको अपनी बड़ी निशानियाँ दिखलायें।(२३) अच्छा तू फ़िरऔन के पास चला जा, उसने बहुत सिर उठा रखा है।(२४) रुकू १ आ.२४]

मूसा ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा दिल खोल दे।(२५) और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर।(२६) और मेरी जीभ की गाँठ खोल दे,(२७) ताकि लोग मेरी बात समझें†।(२८) और मेरे घरवालों में से काम बनाने वाला (सहायक) दे।(२९) मेरे भाई हारूँ को।(३०) उससे मेरी हिम्मत बँधा।(३१) और मेरे काम में उसे

† कहा जाता है कि मूसा हकलाकर बात करते थे। इसलिए प्रार्थना की कि उनकी जीभ की गाँठ खुल जाय और वह ठीक-ठीक बोलने लगें।

शरीक कर।(३२) ताकि हम दोनो तेरी पवित्रता अधिक बयान करें (३३) और तेरी यादगारी में बहुत लगे रहें।(३४) तू हमारे हाल को ख़ूब देख रहा है।(३५) कहा मूसा ! तुम्हारी अभिलाषा पूरी हुई, ।(३६) और हम तुम पर एक बार और भी एहसान कर चुके हैं।(३७) हमने तुम्हारी मा को हुक्म भेजा जिसका हाल आगे बताया जाता है।(३८) यह कि उस मूसा को संदूक़ में रखकर दरिया में डाल दो। दरिया उस संदूक़ को किनारे पर लगा देगा। उसको हमारा दुश्मन और मूसा का दुश्मन फ़िरऔन ले लेगा† और ऐ मूसा ! हमने तुझ पर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाल दी और मतलब यह था कि तू हमारी निगरानी में परवरिश पावे। (३९) जब कि तुम्हारी बहन विदेशी बनकर कहती फिरती थी कि मैं तुमको एक ऐसी धाय बतला दूँ जो उसको पाले। हमने तुमको फिर तुम्हारी मा के पास पहुँचा दिया ताकि उसकी आँखें ठंडी रहें और रंज न करे और तूने एक आदमी को मार डाला तो हमने तुमको उस रंज से छुटकारा दिया। ग़रज़ यह कि हमने तुमको ख़ूब ठोक-बजाकर आज़माया फिर तू कई बरस मदियन के लोगों में रहा। फिर तू भाग्य से यहाँ आया।(४०) और मैंने तुझको अपने लिए चुन लिया है।(४१) तुम और तुम्हारा भाई हमारे चमत्कार लेकर जाओ और हमारी यादगारी में सुस्ती न करना।(४२) दोनो फ़िरऔन के पास जाओ, उसने बहुत सिर उठा रखा है।(४३) फिर उससे नर्मी से बात करो, शायद वह समझ जावे या डरे। (४४) दोनो भाइयों ने अर्ज़ की कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम इस

† फ़िरऔन बनी इसराईल के बेटों को मार डालता था क्योंकि उसे मालूम था कि उनके राज्य को उलटने के लिये बहुत जल्द एक बच्चा पैदा होनेवाला है। जब मूसा का जन्म हुआ तो उनकी मा डरी कि यह भी मार न डाला जाय। उनको स्वप्न में बताया गया कि बच्चे को सन्दूक़ में रखकर दरिया में डाल दो। उन्होंने ऐसा ही किया। सन्दूक़ बहता हुआ फ़िरऔन के बाग़ आया। फ़िरऔन की बीबी आसिया ने उसे उठाया और मूसा को अपना बना लिया।

बात से डरते हैं कि हम पर ज्यादती और सरकशी न करने लगे।(४५) फ़र्माया डरो मत हम तुम्हारे साथ सुनते और देखते हैं।(४६) ग़रज़ उसके पास जाओ और उससे कहो कि हम दोनों आपके परवर्दिगार के भेजे हुए हैं। तू इसराईल के बेटों को हमारे साथ भेज दे और उसको दुख न दे। हम तेरे परवरदिगार से चमत्कार लेकर आये हैं और सलामती उसी के लिए है जो सच्ची राह की पैरवी करे।(४७) हम पर हुक्म उतरा है कि सज़ा उसी पर होगी जो (ख़ुदा की आयतों को) झुठलाये और उससे मुँह मोड़े।(४८) फ़िरऔन ने पूछा तुम दोनों भाइयों का परवर्दिगार कौन है ?(४९) मूसा ने कहा हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसकी सूरत दी फिर उसको राह दिखलाई।(५०) फ़िरऔन ने पूछा भला अगले लोगों का क्या हाल है ?(५१) मूसा ने कहा इन बातों का ज्ञान मेरे परवर-दिगार के यहाँ किताब में मौजूद है। मेरा परवरदिगार न भटकता है, न भूलता है।(५२) उसी ने तुम लोगों के लिऐ ज़मीन का बिछौना बनाया और तुम लोगों के लिए ज़मीन में सड़कें निकालीं और आसमान से पानी बरसाया, फिर हमी ने पानी के ज़रिये से भाँति भाँति की पैदावारें निकालीं।(५३) खाओ और अपने चारपायों को चराओ। इनमें अक़्लवालों के लिए निशानियाँ हैं।(५४) [रुकू २ आ. ३०]

इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया और इसी में तुमको लौटाकर लायेंगे और इसी से तुमको दोबारा निकाल खड़ा करेंगे।(५५) और हमने फ़िरऔन को अपनी सभी निशानियाँ दिखलाईं, इस पर भी वह झुठलाता और इनकार ही करता रहा।(५६) कहा कि मूसा ! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हमको हमारे मुल्क से निकाल दे।(५७) हम भी ऐसा ही जादू तेरे सामने ला पेश करें। तू हमारे और अपने बीच एक वादा ठहरा कि न हम उसके खिलाफ़ करें और न तू खुले मैदान में हो।(५८) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा § सजनई के दिन है और यह कि लोग

§ यह कार्य त्योहार पर उठा रखा ताकि बहुत-से लोग उसको देखें।

दिनचढ़े जमा हों।(५९) यह सुनकर फ़िरऔन लौट गया। फिर उसने अपने हथकण्डे जमा किये, फिर आ मौजूद हुआ।(६०) मूसा ने फ़िरऔनियों से कहा कि तुम्हारी शामत आई है, ख़ुदा पर जादू की झूठी तुहमत (दोषारोपण) मत लगाओ, नहीं तो वह सज़ा से तुम्हें मटियामेट कर देगा। और जिसने ख़ुदा पर झूठ बाँधा वह मुराद को नहीं पहुँचा।(६१) फिर वह आपस में अपने काम पर झगड़ने लगे और चुपके-चुपके मंसूबा बाँधने लगे।(६२) सबने कहा यह दोनों जादूगर हैं। चाहते हैं कि अपने जादू से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मिस्त्रियों के सुन्दर धर्म को मिटा देवें।(६३) तो तुम भी कोई अपनी तदबीर उठा न रखो, पाँति बनाकर आओ और जो आज ऊपर रहा वही जीत गया।(६४) जादूगरों ने कहा कि मूसा! या तो यह हो कि तू अपनी चीज़ मैदान में डाल और या यह हो कि हम पहले डालें।(६५) मूसा ने कहा नहीं तुमही डाल चलो, तो बस मूसा को उनके जादू की वजह से ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ साँप बनकर इधर उधर दौड़ रही हैं।(६६) फिर मूसा अपने जी ही जी में डर गया। हमने कहा मूसा डरो मत।(६७) तुम्हीं ऊँचे रहोगे।(६८) और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो (लाठी) है उसको (मैदान में) डाल दो कि (इन जादूगरों ने) जो (जादू) बना खड़ा किया है (सबको) हड़प कर जावे। जो जादू बना खड़ा किया है जादूगरों का करतब है और जादूगर कहीं भी जाय उसको छुटकारा नहीं।(६९) (ग़रज़ मूसा की लाठी ने साँप बनकर जादूगरों की सँपलियों को हड़प कर लिया) तो (यह देखकर) जादूगरों ने दण्डवत की। कहने लगे हम हारूँ और मूसा के परवरदिगार पर ईमान लाये।(७०) (फ़िरऔन ने) कहा क्या इससे पहले कि हम तुमको इजाज़त दें तुम मूसा पर ईमान ले आये। हो न हो यह (मूसा) तुम्हारा बड़ा (गुरु) है, जिसने तुमको जादू सिखाया है, तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर उलटे काट डालूँ और तुमको खजूरों के तनों पर

सूली चढ़ाऊँ और तुमको मालूम हो जायगा कि हम (दो फ़रीक़ों में) किसकी मार ज़्यादा सख़्त और स्थायी (पायदार) है। (७१) (जादूगर) बोले कि खुले-खुले चमत्कार जो हमारे सामने आये उन पर और जिस (ख़ुदा) ने हमको पैदा किया है उस पर तो हम तुझको किसी तरह विजय देनेवाले नहीं हैं। तू जो करनेवाला है, कर गुज़र। तू दुनिया की इसी ज़िन्दगी पर हुक्म चला सकता है।(७२) और हम अपने परवरदिगार पर ईमान लाये हैं ताकि वह हमारे पापों को क्षमा करे और जादू को जिस पर तूने हमको लाचार किया। अल्लाह (की देन) बेहतर और चिरस्थायी है।(७३) कुछ शक नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने परवरदिगार के सामने गया उसके लिए नरक है, जिसमें वह न तो मरे हो गा और न ज़िन्दा ही रहेगा (७४) और जो ईमानदार ख़ुदा के सामने हाज़िर होगा (और) उसने नेक काम भी किये होंगे तो यही लोग हैं जिनके बड़े दर्जे होंगे (७५) रहने के बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे और (जो आदमी) पाक रहें उनका यही बदला है।(७६) [रुकू ३ आयात २२]

और हमने मूसा की तरफ़ हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (इसराईल के बेटों) को रातो-रात (मिस्र से) नदी में (लाठी मारकर उनके लिए) सूखी सड़क बनाकर निकाल ले जा।(७७) तू उनके पकड़े जाने का डर और शंका न कर। फिर फ़िरऔन ने अपना लश्कर लेकर इसराईल के बेटों का पीछा किया, फिर दरिया का जैसा कुछ (रेला) उन (फ़िरऔन) पर आया सो आया (वे डूब गये)।(७८) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराही में डाला और सीधा रास्ता न दिखाया। (७९) ऐ इसराईल के बेटों! हमने तुमको तुम्हारे दुश्मन (फ़िरऔन) से छुटकारा दिलाया और तुमसे तूर के दाहिनी ओर का वादा किया †

† कहते हैं कि फ़िरऔन के दरिया में डूब जाने के बाद मूसा की क़ौम ने उनसे एक किताब माँगी जिसमें उपदेश और काम की बातें हों। मूसा ने ७० आदमियों को साथ लिया और तूर की ओर इसी विचार से गये और हारून

और हमने तुम पर मन * और सलवा† उतारा।(८०) (और कहा) अच्छी रोज़ी जो हमने तुमको दी है खाओ और इसके बारे में नटखटी मत करो। (ऐसा करोगे) तो तुम पर हमारा ग़ज़ब उतरेगा और जिस पर हमारा ग़ज़ब उतरा तो (वह नरक के गढ़े में) जा गिरा। (८१) और जो शख़्स तौबा करे ईमान लाये और नेक काम करे फिर सही राह पर (क़ायम) रहे तो हम उस के क्षमा करनेवाले हैं।(८२) और ऐ मूसा ! तुम जल्दी करके अपनी क़ौम से कैसे आगे आ गये ?(८३) कहा कि वह भी मेरे पीछे आ रहे हैं और (ऐ मेरे परवरदिगार !) मैं जल्दी करके इसलिए तेरी ओर बढ़ आया हूँ कि तू खुश हो।(८४) फ़र्माया तुम्हारे पीछे हमने तुम्हारी क़ौम को एक और बला में फाँस दिया है और उनको सामरी ने फटकार दिया है।(८५) फिर मूसा ग़ुस्सा और अफ़सोस की हालत में अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आये। कहने लगे कि भाइयों ! क्या तुमसे तुम्हारे परवरदिगार ने भली (किताब) का वादा नहीं किया था, तो क्या तुमको मुद्दत लम्बी मालूम हुई या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार का ग़ज़ब आ उतरे और इस कारण से तुमने उस वादा के खिलाफ़ किया ?(८६) कहने लगे कि हमने अपने अख्तियार से वादा नहीं तोड़ा बल्कि क़ौम के ज़ेवरों का बोझ हम पर लदा था। अब (सामरी के कहने से) हमने उसे (आग में ला) डाला और इसी तरह सामरी ने भी।(८७) फिर (सामरी ही ने) लोगों के लिए बछड़ा बनाया जिसकी आवाज़ बछड़े जैसी थी, फिर कहने लगे यही तो तुम्हारा पूजित है और मूसा का पूजित है और वह (मूसा बछड़े को) अपनी जगह छोड़ गये। यहाँ से वह ४० दिन के बाद तौरेत लेकर लौटे। इसी बीच में सामरी ने एक सोने का बछड़ा बनाया और इसमें कुछ ऐसे कर्तब दिखाये कि लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और इसी कारण सच्चे मार्ग से भटक गये।

* मीठी चीज़ जो रात मे पत्तों पर जम जाती है।

† बटेर जैसी चिड़िया का मांस।

भूल (कर तूर पर चला) गया है।(८८) क्या इन लोगों को इतनी बात भी नहीं सूझ पड़ती थी कि बछड़ा इनकी बात का न तो उलटकर जवाब दे सकता है और न इनके किसी हानि-लाभ पर अधिकार रखता है। (८६) [रुकू ४ आयात १३]

और हारूँ ने (बछड़े की पूजा से) पहले इनसे कह दिया था कि भाइयों! इस बछड़े के सबब से तुम्हारी जाँच की जा रही है, वर्ना तुम्हारा परवरदिगार दयालु (रहमान) है, तो मेरे कहे पर चलो और मेरी बात मानो।(६०) कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास लौट कर न आये हम तो बराबर उसी पर जमे बैठे रहेंगे। (मूसा ने हारूँ की तरफ़ इशारा किया) कहा (६१) कि हारूँ! जब तुमने इनको देखा था (कि यह लोग) गुमराह हो गये (६२) तो क्यों तुमने मेरी शिक्षा की पैरवी न की? क्यों तुमने मेरा कहा न माना?(६३) (वह) बोले कि ऐ मेरे मा-जाये भाई! मेरे सिर और दाढ़ी को मत पकड़ो †। मैं इस (बात) से डरा कि (तुम वापस आकर) कहीं यह न कहने लगो कि तुमने इसराईल के बेटों में फूट डाल दी और मेरी बात का विचार न किया।(६४) (जब मूसा ने सामरी) से पूछा कि सामरी! तेरा क्या मतलब है, (६५) कहा मुझे वह चीज़ दिखाई दी जो दूसरों को नहीं दिखाई दी, तो मैंने (जिबराईल) फ़रिश्ते के पैर के निशान से एक मुट्ठी भर ली, फिर उसको बछड़े के पेट में डाल दिया (और वह बछड़े की बोली बोलने लगा) और यही बात मुझे उस समय भली लगी (६६) (मूसा ने) कहा चल (दूर हो) (इस) ज़िन्दगी में तेरी यह सज़ा है कि ज़िन्दगी भर कहता फिरे कि मुझे छू§ न जाना (इसी लिए सामरियों के हाथ की चीज़ यहूदी नहीं खाते) और तेरे लिए (क़यामत की सज़ा का) एक वादा है जो किसी

† यानी मुझसे न बिगड़ और मुझे लज्जित न कर।

§ सामरी को आगे चलकर ऐसा बुरा रोग लगा कि वह सबसे अलग रहने लगा और जो कोई उसको हाथ लगा देता उसको भी ताप चढ़ आता। ऐसा मालूम होता है कि उसे क्षय का रोग लगा था।

तरह नहीं टलेगा और अपने परवरदिगार (यानी बछड़े) की तरफ़ देखा जिस पर तू जमा बैठा था, इसको हम जला देंगे और दरिया में बहा देंगे।(९७) लोगों ! तुम्हारा पूजित एक अल्लाह है, जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं, उसके इल्म में हरएक चीज़ समा रही है।(९८) (ऐ पैग़म्बर !) इसी तरह हम गुज़रे हुए हालात तुमको सुनाते हैं और हमने तुमको अपने पास से क़ुरान दिया।(९९) जिन लोगों ने इससे मुँह फेरा क़यामत के दिन एक बोझ लादे होंगे।(१००) और इसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बड़ा बोझ है जो वह लोग क़यामत के दिन उठाये होंगे।(१०१) जिस दिन नरसिंहा फूंका जायगा और हम उस दिन अपराधियों को जमा करेंगे, उनकी आँखें (डर के मारे) नीली होंगी।(१०२) वह आपस में चुपके चुपके कहेंगे कि दुनिया में हम लोग दस ही दिन ठहरे होंगे।(१०३) जैसी-जैसी बातें (यह लोग उस दिन) करेंगे हम उनसे अच्छी तरह जानकार हैं, जो इनमें ज्यादा जानकार होगा वह कहेगा नहीं तुम (दुनिया में) ठहरे होंगे (तो) बस एक दिन †। (१०४) [रुकू ५ आयात १५]

और (ऐ पैग़म्बर !) तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं (कि क़यामत के दिन इनका क्या हाल होगा) तो कहो कि मेरा परवरदिगार इनको उड़ा देगा।(१०५) और ज़मीन को मैदान चौरस कर छोड़ेगा(१०६) जिसमें तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न कहीं ऊँचा-नीचा।(१०७) उस दिन वे सब लोग बिना इधर-उधर को मुड़े उसके पीछे हो जावेंगे और (मारे डर के) ख़ुदा दयालु के आगे (सबकी) आवाज़ें बैठ जायँगी। तू खुसर-फुसर के सिवाय और कुछ न सुनेगा।(१०८) उस दिन किसी की सिफ़ारिश काम न आवेगी, मगर जिसको रहमान (दयालु) ने इजाज़त दी और उसका बोलना पसन्द आया। (१०९) जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो उनसे पहले हो चुका है वह सब कुछ जानता है और लोग खोज करके भी उसे क़ाबू में नहीं

† क़यामत का दिन इतना लम्बा होगा कि दुनियावाले उसे अपने सारे जीवन से भी अधिक बड़ा समझेंगे।

ला सकते।(११०) और (क़यामत के दिन) हमेशा जीवित रहनेवाले के सामने मुँह रगड़ते होंगे और उस दिन (के लिए) जो आदमी ज़ुल्म का बोझ लादेगा उसी की तबाही है।(१११) और जो अच्छे काम करेगा और वह ईमान भी रखता होगा तो उसको बेइन्साफ़ी का डर न होगा।(११२) और ऐसे ही हमने अरबी ज़बान में क़ुरान उतारा है और उसमें तरह-तरह के डर सुना दिये हैं ताकि लोग बच चलें या उनमें विवेक पैदा हो।(११३) पस अल्लाह सबसे ऊँचा सच्चा बादशाह है और तू क़ुरान के लेने में जल्दी न कर जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो और प्रार्थना कर कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी समझ बढ़ा§।(११४) और हमने आदम से एक वादा लिया था, सो आदम भूल गया और हमने उसमें सब्र न पाया।(११५) [रुकू ६ आ. ११]

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे दण्डवत करो तो सब ही ने दण्डवत की, मगर इबलीस ने इन्कार किया।(११६) तो हमने (आदम से) कहा कि ऐ आदम! यह (इबलीस) तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो ऐसा न हो कि कहीं तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे।(११७) और यहाँ (जन्नत) में) तो तुमको ऐसा सुख है कि न तो तुम भूखे रहोगे न नंगे।(११८) और यहाँ तुम न प्यासे होगे न धूप में रहोगे।(११९) फिर शैतान ने आदम को फुसलाया और कहा ऐ आदम! कहो तो तुमको सदाबहार का दरख़्त बता दूँ कि जिसको खाकर हमेशा जीते रहो और ऐसी सल्तनत जो पुरानी न हो।(१२०) चुनाँचे दोनों ने दरख़्त के फल को† खा लिया (तो उन पर) उनके परदे की चीज़ें ज़ाहिर हो गईं और अपने को

§ मुहम्मद साहब इस डर से कि उतरनेवाली आयतें भूल न जायें उन्हें जल्दी में उतरने के बीच ही में याद करने लगते थे। यह बात ख़ुदा को अच्छी न लगी और ऐसा करने से उनको रोक दिया।

† आदम को एक पेड़ के पास जाने से मना किया गया था। शैतान ने उनको बहकाया और वह उसकी बातों में आ गये। उसका परिणाम यह हुआ कि उनके बदन से जन्नत के कपड़े छिन गये और वह अपने को पत्तों से ढाकने

(जन्नत के) बाग़ के पत्तों से ढाँकने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार का हुक्म न माना और भटक गया।(१२१) फिर उनके परवरदिगार ने उनको चुन लिया और उनकी ओर ध्यान दिया और राह दिखलाई।(१२२) फ़र्माया कि तुम दोनो यहाँ (जन्नत) से नीचे उतर जाओ, तुममें से एक दूसरे के दुश्मन होंगे, फिर अगर तुम्हारे पास हमारी तरफ़ से शिक्षा आवे तो जो हमारी हिदायत पर चलेगा न भटकेगा न दुख झेलेगा।(१२३) और जिसने हमारी याद से मुँह मोड़ा तो उसकी ज़िन्दगी तंगी में होगी और क़यामत के दिन हम उसको अन्धा उठावेंगे।(१२४) वह कहेगा (ऐ मेरे परवरदिगार!) तूने मुझको अन्धा क्यों उठाया और मैं तो देखता था।(१२५) (ख़ुदा) फ़र्मायेगा ऐसे ही हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ ख़बर न की और इसी तरह आज तेरी ख़बर न ली जायगी (१२६) और जो आदमी (हद से) बढ़ चला और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाया हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं और आख़िर की सज़ा (दुनिया की सज़ा से) बहुत ही सख़्त और देर तक की है।(१२७) क्या लोगों को इससे हिदायत न हुई कि इनसे पहले हमने कितनी जमातों को मार डाला जो अपने गिरोहों में चलते-फिरते थे। जो लोग बुद्धिमान हैं उनके लिए इसी में निशानियाँ हैं।(१२८) [रुकू ७ आयात १३]

अगर परवरदिगार ने पहले से एक बात न फ़र्माई होती और मिआद मुक़र्रर न की होती तो सज़ा का आना ज़रूरी बात थी।(१२९) (ऐ पैग़म्बर!) जैसी बातें (यह काफ़िर) कहते हैं उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ माला फेरा करो। और रात के समय में और (दोपहर) दिन के लगभग माला फेरा करो, शायद तुमको ख़ुशी मिल जाय।(१३०) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने जो जुदी

लगे। इस पेड़ के बारे में लोगों के भिन्न-भिन्न विचार हैं, किन्तु अधिकतर लोग उसे गेहूँ का पेड़ बताते हैं।

क़िस्म के लोगों को दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक़ के साज़ सामान इस्तेमाल के लिए दे रखे हैं तू उनकी तरफ़ नज़र न दौड़ा कि उनको उनमें आज़मायें और तुम्हारे परवरदिगार की रोज़ी कहीं बेहतर और टिकाऊ है।(१३१) और अपने घरवालों पर नमाज़ की ताक़ीद रखो और उसके पाबन्द रहो। हम तुमसे कोई रोज़ी नहीं माँगते, हम तुमको रोज़ी देते हैं और अन्त में परहेज़गारों ही का भला है।(१३२) और (यहूद और ईसाई) कहते हैं कि (यह पैग़म्बर) और परवरदिगार की तरफ़ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता, क्या अगली किताबों की साची इनके पास नहीं पहुँची।(१३३) और अगर हम क़ुरान से पहले किसी सज़ा से उनको मरवा देते तो वह कहते ऐ हमारे परवरदिगार ! तुमने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि बदनाम होने से पहले हम तेरी आज्ञा पर चलते। (१३४) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे कहो) कि सभी इन्तज़ार कर रहे हैं तुम भी करो तो आगे चलकर तुम जान लोगे कि सीधी राह पर कौन है, और किसने राह पाई। (१३५) [रुकू ८ आयात ७]

——):०:(——

सत्रहवाँ पारा (इक़्तरबलिन्नास)

२१ सूरे अम्बिया ७३

मक्का में उतरी, इसमें ११२ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है (शुरू करता हूँ)। लोगों के हिसाब का समय नज़दीक आ लगा, इस पर भी भूल में बेख़बर हैं।(१) उनके पास उनके परवदिगार की ओर से जो नया हुक्म आता है उसे (बेपरवाह होकर) सुनते हैं कि हँसी-खेल बनाते हैं।(२) उनके दिल ध्यान नहीं देते हैं और यह अन्यायी चुपके-चुपके कानाफूसी करते हैं कि यह (मुहम्मद) है ही क्या ? तुम ही जैसा एक आदमी, फिर जानते-बूझते क्यों जादू में पड़ते हो।(३) (पैग़म्बर ने)

कहा तुम लोग क्या कानाफूसी करते हो? जितनी बातें आसमान और ज़मीन में होती हैं मेरे परवरदिगार को मालूम हैं और वह सुनता-जानता है।(४) बल्कि कहने लगे कि यह तो विचारों की सिरखप्पन है बल्कि इसने यह झूठी झूठी बातें अपने दिल से गढ़ ली हैं बल्कि यह (तो) कवि है, नहीं तो कोई चमत्कार दिखावे जैसे अगले पैग़म्बरों ने दिखलाये हैं। (५) जिस बस्ती को हमने उससे पहले मार डाला वह (चमत्कार देखकर भी) ईमान न लाई तो क्या यह ईमान ले आवेंगे ? (६) और हमने पहले भी आदमी ही पैग़म्बर बनाकर (भेजे थे। हम उन्हें वही ईश्वरीय संदेश।) दिया करते थे, तो अगर तुमको मालूम नहीं तो किताबवालों से पूछ देखो।(७) और हमने उनके ऐसे शरीर भी नहीं बनाये थे कि खाना न खाते हों, न वे लोग दुनिया में हमेशा रहनेवाले (अमर) ही थे †।(८) फिर हमने उनको सज़ा का वादा सच्चा कर दिखाया तो उन (पैग़म्बरों) को और जिनको हमने चाहा (सज़ा से) बचा दिया। जो लोग हद्द से बढ़ गये थे हमने उनको मार डाला।(९) हमने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारा है जिसमें तुम्हारा ज़िक्र है। क्या तुम नहीं समझते ? (१०) [रुकू १ आ. १०]

और हमने बहुत-सी बस्तियों को जहाँ के लोग सरकश§ थे तोड़-फोड़कर बराबर कर दिया और उनके बाद दूसरे लोग उठा खड़े किये।(११) तो जब उन नष्ट होनेवालों ने हमारी सज़ा की आहट पाई तो उस (बस्ती) से भागने लगे। (१२) हमने कहा भागो मत और उसी (दुनिया के साज़ व सामान) की तरफ़ लौट जाओ जिसमें (अब तक) चैन करते थे और अपने मकानों की तरफ़ लौट जाओ, शायद तुम्हारी कुछ पूछ हो।(१३) वह कहने लगे हाय हमारी कमबख़्ती, हम ही अपराधी थे। (१४) पस वह लोग बराबर यही पुकारा किये,यहाँ तक

† इस्लाम के न माननेवालों का विचार था कि नबी या रसूल कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता। नबी होने के लिए असाधारण लक्षणों की आवश्यकता बताते थे।

§ यमन निवासियों ने अपने नबी का बध कर डाला था।

कि हमने उनको कटे हुए खेत बुझे हुए अंगारे (जैसा बर्बाद) कर दिया।(१५) और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है उसको खेल के लिए पैदा नहीं किया।(१६) अगर हमको खेल बनाना मन्ज़ूर होता तो तजर्बेज़ मे खेल बनाते, हमको ऐसा करना मन्ज़ूर नहीं था।(१७) बात यह है कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं तो वह झूठ के सिर को कुचल देता है और झूठ उसी दम मटियामेट हो जाता है और लोगों! तुम पर अफ़सोस है कि तुम ऐसी बातें बनाते हो।(१८) और जो आसमानों और जो ज़मीन में है उसी का है और जो है ख़ुदा के पास वह न तो उसकी पूजा से गर्व करते हैं और न थकते हैं।(१९) रात दिन उस की याद में लगे रहते हैं, सुस्ती नहीं करते। (२०) क्या इन लोगों ने ज़मीन की चीज़ों से ऐसे पूजित बनाये हैं जो इनको बना खड़ा करते हैं?(२१) अगर ज़मीन-आसमानों में ख़ुदा के सिवाय और पूजित होते तो (ज़मीन-आसमान दोनों) बर्बाद हो गये होते। तो जैसी-जैसी बातें यह लोग बनाते हैं अल्लाह जो तख़्त का मालिक है वह इनसे पाक है। (२२) जो कुछ वह करता है उसकी पूछ-ताछ उससे नहीं होती और लोगों से पूछ-ताछ होती है।(२३) क्या लोगों ने ख़ुदा के सिवाय दूसरे पूजित बना रखे हैं? (ऐ पैग़म्बर!) तुम इन लोगों से कहो कि अपनी दलील तो पेश करो। जो लोग मेरे साथ हैं उनकी किताब (क़ुरान) और जो मुझसे पहले हो चुके हैं उनकी किताबें (तौरात इन्जील आदि) मौजूद हैं। बात यह है कि इनमें से अक्सर लोग सच को न समझकर मुँह मोड़ते हैं। (२४) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहले जब कभी कोई पैग़म्बर भेजा तो उस पर हम हुक्म उतारते रहे कि हमारे सिवाय कोई पूजित नहीं। हमारी ही पूजा करो।(२५) और कोई-कोई कहते हैं कि दयालु (ख़ुदा) बेटे रखता है†। उसकी ज़ात पाक है। (फ़रिश्ते) ख़ुदा के बेटे नहीं बल्कि इज़्ज़तदार

† जैसे ईसाई हज़रत ईसा को और यहूदी हज़रत ओज़ैर को ख़ुदा का बेटा बताते थे।

सेवक हैं।(२६) उसके आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते और वह उसी के हुक्म पर काम करते हैं।(२७) इनका अगला-पिछला हाल उनको मालूम है और यह फ़रिश्ते किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते, मगर उसके लिए जिससे ख़ुदा राज़ी हुआ और वह ख़ुद अल्लाह के डर से काँपते हैं।(२८) और जो उनमें से यह दावा करें कि ख़ुदा नहीं मैं पूजित हूँ तो उसको हम नरक की सज़ा देंगे। अन्यायियों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (२९) [रुकू २ आयात १६]

क्या जो लोग इन्कार करनेवाले हैं उन्होंने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों का एक पिंडा-सा था। सो हमने (उसको तोड़कर) ज़मीन और आसमान को अलग-अलग किया और पानी से तमाम जानदार चीज़ें बनाईं, तो क्या इस पर भी लोग ईमान नहीं लाते?(३०) और हम ही ने ज़मीन में पहाड़ रखे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े और हम ही ने चौड़े-चौड़े रास्ते बनाये ताकि लोग राह पावें। (३१) और हम ही ने आसमान को बचाव की छत बनाया और वे आसमानी निशानियों को ध्यान में नहीं लाते।(३२) और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चन्द्रमा को पैदा किया कि तमाम चक्र (दायरे) में फिरा करते हैं।(३३) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहले किसी आदमी को अमर नहीं किया, पस अगर तुम मर जाओगे तो क्या यह लोग हमेशा रहेंगे। (३४) हर जीव को मौत चखनी है और हम तुमको बुराई और भलाई से आज़माकर जाँचते हैं और तुम सबको हमारी तरफ़ लौटकर आना है। (३५) और (ऐ पैग़म्बर!) जब इन्कार करनेवाले तुमको देखते हैं तो (आपस में) तुम्हारी हँसी उड़ाने लगते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे पूजितों की बुरी तरह चर्चा करता है और वह लोग रहमान (दयावान) को नहीं मानते हैं।(३६) आदमी जल्दी का पुतला बनाया गया है। हम तुमको अपनी निशानियाँ दिखाये देते हैं तो जल्दी मत मचाओ। (३७) और (इन्कार करनेवाले) कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह (क़यामत का) वादा कब (पूरा) होगा?(३८) कभी इन्कार करनेवाले

उस समय को जानें जबकि आग आ घेरेगी, न अपने मुँह से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से और न उनको मदद मिलेगी।(३९) बल्कि वह एकदम से उन पर आ पड़ेगी और उनके होश खो देगी फिर वह उसे न हटा सकेंगे और न इनको मुहलत मिलेगी।(४०) (ऐ पैग़म्बर !) तुमसे पहले पैग़म्बरों के साथ भी हँसी की जा चुकी है तो जो लोग जिस (सज़ा) की हँसी उड़ाया करते थे उसने आकर इनको पकड़ा। (४१) [रुकू ३ आयात १२]

(ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि रहमान से तुम्हारी रात दिन कौन चौकीदारी कर सकता है, मगर वह ख़ुदा के नाम से मुँह मोड़े हैं।(४२) क्या हमारे सिवाय इनके कोई और पूजित हैं जो इनको बचा सकते हैं, न वह आप अपनी मदद कर सकते हैं और न वह हमारे साथी हैं।(४३) बल्कि हमने इन लोगों को और इनके पुरखों को (दुनिया में) बसाया, यहाँ तक कि इन पर बहुत-सी उम्र गुज़र गई (यह घमण्डी हो गये)। तो क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम मुल्क को चारो तरफ़ से दबाते चले आते हैं*। अब क्या वह (क़ुरैश) जीतनेवाले हैं। (४४) (ऐ पैग़म्बर।) कहो कि मैं ईश्वरी संदेशा (इलहाम) से डराता हूँ, (मगर यह लोग बहरे हैं) और बहरों को डराया जाय तो वह पुकार नहीं सुनते। (४५) और (ऐ पैग़म्बर।) अगर इनको तुम्हारे परवरदिगार की सज़ा की हवा भी लग जाय तो बोल उठेंगे कि अफ़सोस हम ही अपराधी थे।(४६) और क़यामत के रोज़ (लोगों के काम की तौल के लिए) हम सच्ची तराज़ू† लगा देंगे तो किसी पर ज़रा भी ज़ुल्म न होगा और अगर राई के दाने बराबर भी अमल होगा तो हम उसे (तौलने के लिए) लावेंगे और हिसाब लेने के लिए हम काफ़ी हैं।(४७) और हमने मूसा और हारूँ को फ़र्क़ (विवेक)† करनेवाली किताब (तौरात) दी और रोशनी और शिक्षा

* यानी मुसलमान धीरे-धीरे अपने शत्रुओं को पराजित करते जाते हैं और उनके देश पर अपना अधिकार जमाते जाते हैं।

† सत्य, असत्य तथा पुण्य और पाप में फ़र्क़ बताने वाली तराज़ू।

डरवालों के लिए।(४८) जो बिन देखे ख़ुदा से डरते और उस घड़ी (क़यामत) से काँपते हैं।(४६) और यह (क़ुरान) शुभ शिक्षा है जो हमी ने उतारी है, सो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते ?(५०) [रुकू४आ.६]

और इब्राहीम को हमने शुरू ही से अच्छी समझ दी थी और हम उनसे जानकार थे।(५१) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि (यह) बुतें क्या हैं जिनकी पूजा पर जमे बैठे हो ?(५२) वह बोले कि हमने अपने बाप दादों को उन्हीं की पूजा करते देखा है।(५३) (इब्राहीम ने) कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बड़े ज़ाहिरा भूल में पड़े रहे।(५४) वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या दिल्लगी करता है ?(५५) (इब्राहीम ने) कहा आसमान और ज़मीन का मालिक तुम्हारा ख़ुदा है जिसने इनको पैदा किया और मैं इसी बात का क़ायल हूँ।(५६) ख़ुदा की क़सम तुम्हारे पीठ फेरे पीछे मैं तुम्हारे बुतों के साथ मकर करूंगा।(५७) (इब्राहीम ने) बुतों को (तोड़-फोड़) टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर उनके बड़े बुत को इस ग़रज़ से (रहने दिया) कि वह उसकी तरफ़ आवेंगे। (५८) (जब लोगों को मूर्तियों के तोड़े जाने का हाल मालूम हो गया तो) उन्होंने कहा हमारे पूजितों के साथ यह काम किसने किया वह कोई अन्यायी है।(५६) बोले कि वह नौजवान जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा जाता है, उसको हमने इन (मूर्तियों) का ज़िक्र करते हुए सुना है।(६०) (लोगों ने) कहा उसको आदमियों के सामने ले आओ ताकि लोग गवाह रहें।(६१) (ग़रज़ इब्राहीम बुलाये गये और)लोगों ने पूछा कि इब्राहीम हमारे पूजितों के साथ यह क्या हरकत तूने की है ?(६२) (इब्राहीम ने) कहा (नहीं) बल्कि यह जो इन सबमें बड़ी मूर्ति है उसने यह हरकत की (होगी) और अगर यह (बुत) बोल सकते हों तो इन्हीं से पूछ देखो।(६३) उस पर लोग अपने जी में सोचे और (आपस में) कहने लगे कि लोगों ! तुम्हीं अन्यायी हो।(६४) फिर अपने सिरों के बल औंधे (उसी गुमराही में) ढकेल दिये गये (और इब्राहीम से बोले कि) तुमको मालूम है कि वह (बुत) बोला नहीं

करते।(६५) (इब्राहीम ने कहा) क्या तुम खुदा के सिवाय ऐसे पूजितों को पूजते हो कि जो न तुमको कुछ फ़ायदा ही पहुँचा सकें और न कुछ नुक़सान ही पहुँचा सकते हैं।(६६) अफ़सोस तुम पर और उन चीज़ों पर जो तुम खुदा के सिवाय पूजते हो क्या तुम नहीं समझते हो ?(६७) (वह) कहने लगे कि अगर तुमको (कुछ) करना है तो इब्राहीम को (आग में) जला दो और अपने पुजितों की मदद करो।(६८) (चुनाँचे उन लोगो ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया) हमने (आग को) हुक्म दिया कि ऐ आग ! इब्राहीम के हक़ में ठंडा और आराम देनेवाला हो जा।(६९) और लोगो ने (इब्राहीम के साथ बुराई करना चाही थी, तो हमने उन्हीं को नाकामयाब किया(७०) और इब्राहीम को और लूत को सही-सलामत निकालकर उस ज़मीन (शाम) में ले जा दाखिल किया जिसमें हमने लोगों के लिए (तरह-तरह की) बरकतें रखीं हैं।(७१) और (इब्राहीम को) (एक बेटा इसहाक़ और (पोता) याक़ूब दिया और सभी को हमने नेकबख्त किया।(७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से उनको शिक्षा देते थे और उनको नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने के लिए कहला भेजा और वे हमारी पूजा में लगे रहते थे।(७३) और लूत को हमने हुक्म और समझ दी और उसको उस शहर से जहाँ के लोग गंदे काम करते थे बचा निकाला इसमें शक नहीं कि वह बड़े बुरे और बदकार थे।(७४) और लूत को हमने अपनी मेहरबानी में ले लिया क्योंकि वह नेकबख्तों में था।(७५)[रुकू ५ आ. २५]

और (ऐ पैग़म्बर !) नूह ने जब हमको पहले पुकारा तो हमने उसकी सुन ली और उसको और उसके लोगों को बड़ी मुसीबत से बचाया।(७६) और फिर हमने उसे उस क़ौम पर जो आयतों को झुठलाया करते थे जीत दी। और वह बुरे थे, हमने उन सबको डुबो दिया।(७७) और (ऐ पैग़म्बर !) दाऊद और सुलेमान जबकि वह दोनों एक खेती के बारे में, जिसमें कुछ लोगों की बकरियाँ जा पड़ी थीं, फ़ैसला करने लगे और हम उनके फ़ैसले को देख रहे थे।(७८)

फिर हमने फ़ैसला सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनों ही को हुक्म और समझ (फ़ैसले की) दी थी और पहाड़ों और पक्षियों को दाऊद के अधीन कर दिया कि उनके साथ ईश्वर की पवित्रता बयान करें और करनेवाले हम थे।(७९) और दाऊद को हमने तुम लोगों के लिए एक पहनाव (यानी बख़्तर) बनाना सिखा दिया था ताकि लड़ाई में तुमको बचाये, तो क्या तुम शुक्र करते हो ?(८०) और हमने ज़ोर की हवा को सुलेमान के ताबे कर दिया था कि उनके हुक्म से मुल्क शाम की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकतें दे रखी थीं और हम सब चीज़ों से जानकार थे। (८१) और कितने देवों को अधीन किया जो सुलेमान के लिए गोते लगाते (ताकि जवाहरात निकाल लावें) और हम ही उनको थामे रहते थे। (८२) और (ऐ पैग़म्बर !) ऐयूब जब उसने अपने परवरदिगार को पुकारा कि मुझे दुख पड़ा है और तू सब दया करनेवालों से ज़्यादा दया करनेवाला है।(८३) और हमने उनकी सुन ली और जो दुख उनको था उसको दूर कर दिया और जो लोग उसके मर गये थे जिला दिये, बल्कि उतने ही और अधिक कर दिये, हमारी कृपा थी और पूजा करनेवालों के लिए यादगार है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस और जल-किफ़्ल यह सब साबिर थे।(८५) और हमने इनको अपनी कृपा में ले लिया, क्योंकि वह लोग नेकबख़्तों में हैं।(८६) और मछलीवाले (यूनिस)† को याद करो जब नाराज़ होकर चल दिये और समझे कि हम उसे पकड़ न सकेंगे तो अंधेरों के अन्दर चिल्ला उठे कि तेरे सिवाय कोई पूजित नहीं, मैं अन्यायियों में हूँ।(८७) तो हमने उसकी सुन ली और उसको दुख से छुटकारा दिया और हम ईमानवालों को इसी तरह बचा लिया करते हैं।(८८) और ज़करिया ने जब

† हज़रत यूनिस ने अपनी क़ौम से कहा था कि ख़ुदा का ग़ज़ब उतरने वाला है। जब उन्होंने ऐसा न देखा तो अपनी क़ौम से शरमिन्दा होकर भाग गये। रास्ते में उनको एक मछली निगल गई। उसी के पेट में उन्होंने यह प्रार्थना की।

परवरदिगार को पुकारा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझको अकेला (यानी बे औलाद) मत छोड़ और तू सब वारिसों से अच्छा है ।(८९) तो हमने उसकी सुन ली और बेटा (यहिया) दिया और उसकी बीवी को उसके लिए भला-चंगा कर दिया । वह लोग नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको आशा और भय से पुकारते रहते और हमसे दबे रहते थे । (९०) और वह बीबी (मरियम) जिसने अपनी शर्म की यानी शहवत की जगह की हिफ़ाजत की, तो हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और हमने उसको और उसके बेटे (ईसा) को दुनिया जहान के लोगों के लिए निशानी क़रार दिया ।(९१) वह तुम्हारे दीन के लोग सब एक दीन पर हैं और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, सो सब हमारी ही पूजा करो ।(९२) और लोगों ने आपस में (फूटन करके) दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सब हमारी ही तरफ़ लौटकर आने वाले हैं ।(९३) [रुकू ६ आयात १८]

सो जो आदमी नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो तो उसकी कोशिश व्यर्थ होनेवाली नहीं है और हम उसको लिखते जाते हैं ।(९४) और जिस बस्ती को हमने बर्बाद कर दिया हो मुमकिन नहीं कि वह लोग लौटकर आवें । (९५) हाँ इतना जरूर ठहरना पड़ेगा कि याजूज-माजूज खोल दिये जावें, वह हर बुलन्दी से लुढ़कते हुए चले आवेंगे ।(९६) और सच्चा वादा पास आ पहुँचे तो एकदम से काफ़िरों की आँखें खुली की खुली रह जावें (और बोल उठें कि) हम तो सुस्ती में रह गये बल्कि हम ही अपराधी थे ।(९७) तुम जिन और चीजों को अल्लाह के सिवाय पूजते हो, यह सब नरक का ईंधन बनेंगे और तुमको नरक में जाना होगा ।(९८) अगर यह पूजित अल्लाह होते तो नरक में न जाते और वह सब इसमें हमेशा रहेंगे ।(९९) इन लोगों की नरक में चिल्लाहट लगी होगी और वह वहाँ न सुन सकेंगे । (१००) जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले से भलाई है वह नरक से दूर रखे जायेंगे । (१०१) उसकी भनक भी उनके कानों में न पड़ेगी और वह अपनी मनमानी मुरादों में हमेशा

रहेंगे (१०२) और उनको (क़यामत की) बड़ी भारी घबड़ाहट में भी डर न होगा और फ़रिश्ते उनको (हाथों हाथ) लेंगे और (कहेंगे कि) यही तो तुम्हारा दिन है जिसका वादा तुमसे कर दिया गया था।(१०३) जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में काग़ज़ लपेटते हैं, जिस तरह हमने पहले पैदाइश शुरू की हम उसे दुहरावेंगे, वादा हमारे ज़िम्मा है, हमें करना है। (१०४) और हम ज़बूर में शिक्षा के बाद यह बात लिख चुके हैं कि हमारे नेक बन्दे ज़मीन के वारिस होंगे।(१०५) जो लोग ख़ुदा की पूजा करनेवाले हैं उनके लिए इसमें मतलब है।(१०६) और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमको दुनिया-जहान के लोगों पर कृपा करके भेजा है।(१०७) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मुझको तो हुक्म आया है कि अकेला ख़ुदा ही तुम्हारा पूजित है तो क्या तुम हुक्मबरदारी करते हो ?(१०८) पस अगर न मानें तो कहो कि मैंने तुमको एकसा तौर पर ख़बर कर दी और मैं नहीं जानता कि जिस (सज़ा) को तुमसे वादा किया जाता है क़रीब आ लगी है या दूर है। (१०९) वह खुली बात को (जो मैंने ज़ाहिरा कही) जानता है और तुम्हारी छिपी हुई बातें भी जानता है।(११०) और मैं नहीं जानता, शायद ख़ुदा को उसमें तुमको जाँचना है और एक समय तक बर्तने देना मंज़ूर है।(१११) (पैग़म्बर ने) फ़र्माया है कि मेरा परवरदिगार ठीक फ़ैसला कर देगा और वह हमारा रहमान है जिससे हम उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम बनाते हो मदद माँगते हैं।(११२) [रुकू ७ आयात १९]

——:o:——

२२ सूरे हज्ज १०३

मक्का में उतरी, इसमें ७८ आयतें और १० रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। लोगों! अपने परवरदिगार से डरो (क्योंकि) क़यामत का भूचाल एक बड़ी चीज़ है।(१) जिस दिन यह तुम्हारे सामने आ मौजूद होगी हर दूध पिलानेवाली

अपने दूध-पीते बच्चे को भूल जायगी और गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और लोग (नशे में) दिखाई देंगे हालाँकि वह मतवाले नहीं, बल्कि ख़ुदा की सज़ा बड़ी सख़्त है।(२) और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो बेजाने ख़ुदा (के बारे) में झगड़ते और शैतान (सरकश) के पीछे हो जाते हैं।(३) शैतान के बारे में लिखा है कि जो कोई उसका दोस्त बने (या जिसका वह दोस्त बने) उसे भटकाकर नरक की राह बतावेगा।(४) लोगों! अगर तुमको जी उठने में शक है तो हमने तुमको मिट्टी से, फिर धातु से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर पूरी और अधूरी बनी हुई बोटी से पैदा किया ताकि तुम पर ज़ाहिर करें और पेट में हम जिसको चाहते हैं नियत समय तक ठहराये रखते हैं। फिर तुम को बच्चा बनाकर निकालते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो। और कोई-कोई तुममें से मर जाता है और कोई सबसे ज्यादा निकम्मी उम्र की तरफ़ लौटाकर लाया जाता है कि जाने पीछे कुछ न समझने लगे और तू ज़मीन को ख़ुश्क देखता है। फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लहलहाने और उभरने लगती है और भाँति-भाँति की खाने की चीजें उगने लगती हैं।(५) यह इस बात की (अपनी शक्ति की) दलील है कि अल्लाह सचमुच है और मुर्दों को जिलाता है और वह हर चीज पर शक्तिशाली है।(६) और यह कि वह घड़ी (क़यामत) अवश्य आनेवाली है, उसमें किसी तरह का शक नहीं और जो लोग क़ब्रों में हैं अल्लाह उनको उठायेगा।(७) और लोगों में कोई ऐसे भी हैं कि जो अल्लाह के बारे में बिना सूझ के और रोशन-किताब के झगड़ा करते हैं।(८) घमण्ड से ताकि ख़ुदा की राह से बहकावें। ऐसों के लिए (सज़ा) संसार में बदनामी है और क़यामत के दिन हम उनको जलने की सज़ा चखायेंगे।(९) यह उनका बदला है कि जो तूने अपने हाथों किया वर्ना ख़ुदा तो अपने बन्दों पर अन्याय नहीं करता (१०) [रुकू १ आयात १०]

और लोगों में कोई-कोई ऐसे भी हैं जो ख़ुदा की पूजा उखड़े-उखड़े करते हैं कि अगर कोई उनको फ़ायदा पहुँचा तो उसकी

वजह से इत्मीनान हो गया और कोई दुख आ पड़ा तो जिधर से आया था उल्टा उधर ही लौट गया। इसने दुनिया और आख़िरत दोनो ही गवाँये। ज़ाहिरा घाटा यही है।(११) ख़ुदा के सिवाय उन चीज़ों को बुलाते हो जो नफ़ा-नुक़्सान नहीं पहुँचातीं। यही भूल कर दूर पड़ना है।(१२) उन चीज़ों को बुलाते हो (अपनी मदद के लिए पुकारते हो) जिनके फ़ायदे से नुक़्सान ज़्यादा क़रीब है। ऐसा काम सँभालनेवाला भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा है (१३) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको अल्लाह बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। अल्लाह जो चाहे करे।(१४) जिसको यह ख़्याल हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद न करेगा तो उसको चाहिए कि ऊपर की तरफ़ को एक रस्सी लटकाये, फिर काट डाले, फिर देखे कि उसकी यह तदबीर ग़ुस्सा खाती है या नहीं†।(१५) और यों हमने यह क़ुरान खुली आयतों में उतारा है और अल्लाह जिसे चाहे समझ देवे।(१६) जो लोग ईमान लाये हैं और यहूदी और साबी, ईसाई और मजूस (अग्नि-पूजक) और शिर्क-वाले, क़यामत के दिन इनके बीच अल्लाह फ़ैसला कर देगा। अल्लाह सब बातों को देख रहा है।(१७) क्या तूने नहीं देखा कि जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र, सितारे और पहाड़ और दरख़्त और चौपाये ख़ुदा के आगे सिर झुकाये हैं और बहुत-से आदमी ऐसे भी हैं जिन पर सज़ा लाज़िम हो चुकी है, और जिसको ख़ुदा बदनाम करे तो कोई उसको इज़्ज़त देनेवाला नहीं। ख़ुदा जो चाहे सो करे।(१८)★[सिजदा ६] यह दो (फ़रीक़ हैं) एक दूसरे के आपस में विरुद्ध अपने परवरदिगार के बारे में झगड़ते हैं।(एक फ़रीक़ ख़ुदा को मानता है और एक नहीं मानता)तो जो लोग नहीं मानते उनके लिए आग के कपड़े ब्योंते (यानी आग उनके बदन से ऐसा लिपटेगी जैसे कपड़ा) हैं। उनके सिरों पर खौलता पानी डाला जायगा, (१९)

† ख़ुदा से हटकर आदमी सफलता की उम्मीद कैसे रख सकता है। कटी हुई रस्सी पर कैसे चढ़कर कोई पार उतर सकता है।

जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जायँगी।(२०) और उनके लिए लोहे के हथौड़े मौजूद हैं।(२१) घुट-घुटे जब उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जावेंगे ताकि जलने की सज़ा चखा करें।(२२) [रुकू २ आयात १२]

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको अल्लाह बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ उनको गहना पहनाया जायगा। सोने के कंगन और मोती और वहाँ उनकी पोशाक रेशमी होगी।(२३) और उनको अच्छी बात की शिक्षा दी गई थी और उनको उसी (ख़ुदा) की राह दिखाई गई थी जो तारीफ़ के योग्य है।(२४) जो लोग इन्कार करते हैं और ख़ुदा की राह से और मसजिद हराम से रोकते हैं जिसको हमने सब आदमियों के लिए बनाया है, चाहे वहाँ के रहनेवाले हों या बाहर के हों, सबको एकसाँ बनी है। और उनको, जो मसजिद हराम में शरारत से इन्कार करना चाहें, हम उसे दुखदाई सज़ा चखा देंगे।(२५) [रुकू ३ आयात ३]

और (ऐ पैग़म्बर !) जब हमने इब्राहीम के लिए काबे के घर की जगह मुक़र्रर कर दी और (हुक्म दिया) कि हमारे साथ किसी को शरीक न करना और हमारे घर की परिक्रमा करनेवालों और ठहरने, खड़े होने, सिजदा करनेवालों के लिए साफ़ और सुथरा रखना।(२६) और लोगों में हज्ज के लिए पुकार दो कि लोग तुम्हारी तरफ़ और हरलागर ऊँटों पर सवार होकर दूरी की राह से चले आवें।(२७) अपने फ़ायदों के लिए हाज़िर हों ख़ुदा ने जो मवेशी उनको दिये हैं ख़ास दिनों में उन पर ख़ुदा का नाम लें। उसमें से खाओ और दुखिया फ़क़ीर को खिलाओ।(२८) फिर चाहिए कि अपना मैल-कुचैल उतार दें और अपनी मन्नतें पूरी करें, पुराने काबे की परिक्रमा (फेरे) दें।(२९) यह सुन चुके और जो आदमी ख़ुदा के अदब की बड़ाई रखे तो यह उसके परवरदिगार के यहाँ उनके हक़ में अच्छा है और जो तुमको (क़ुरान से) पढ़कर सुनाया जाता है वह सब चौपाये तुमको हलाल हैं और बुतों की गन्दगी से

बचते रहो और झूठी बात के कहने से बचते रहो।(३०) एक अल्लाह के हो रहो, उनके साथी-साझी न ठहराओ और जो ख़ुदा का साझी बनावे गोया वह आसमानों से गिर पड़ा। फिर उसको परिन्दों (पक्षियों) ने उचक लिया या उसको हवा ने किसी और जगह पटक दिया।(३१) यह बात है और जो शख़्स उन चीज़ों का अदब-लिहाज़ रखे जो ख़ुदा के नाम रखी गई हैं तो यह दिलों की परहेज़गारी है।(३२) तुमको चौपायों में ख़ास वक़्त तक फ़ायदे हैं फिर पुराने ख़ाने (काबा) के पास उनको पहुँचा देना है।(३३) [रुकू ४ आ. ८]

हरएक गरोह के लिए हमने क़ुरबानी ठहरा दी है ताकि ख़ुदा ने जो उनको मवेशी दे रखे हैं उन पर ख़ुदा का नाम लेवे। सो तुम सबका एक ख़ुदा है, तो उसी के आज्ञाकारी बनो और गिड़गिड़ानेवाले बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दो।(३४) जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है उनके दिल काँप उठते हैं और जो दुख उन पर आ पड़े उस पर संतोष करते और नमाज़ पढ़ते और जो हमने उनको दे रखा है उसमें से ख़र्च करते हैं।(३५) और हमने तुम्हारे लिए क़ुरबानी के ऊँटों को उन चीज़ों में कर दिया है जो ख़ुदा के साथ नामज़द की जाती हैं। उनमें तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं तो उनको खड़ा रखकर उन पर ख़ुदा का नाम लो † फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पड़े तो उनमें से खाओ और सब्र वालों और फ़क़ीरों को खिलाओ। हमने यों तुम्हारे बस में इन जानवरों को कर दिया है ताकि तुम शुक्र करो। (३६) ख़ुदा तक न तो इनके गोश्त ही पहुँचते हैं और न इनके ख़ून* बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुँचती है। ख़ुदा ने इनको यों तुम्हारे

† ऊँट के हलाल करने का तरीक़ा यह है कि उसको काबे की ओर खड़ा करते हैं फिर उसकी छाती पर भाला मारते हैं ताकि उसका सारा ख़ून निकल जाय और जब वह गिर पड़ता तो काटते हैं।

* पहले क़ुरबानी का ख़ून काबे की दीवारों पर छिड़कते थे। मुसलमानों को ऐसा करने से रोका गया और बताया गया कि ख़ुदा तक केवल परहेज़गारी ही पहुँचती है।

क़ाबू में कर दिया है ताकि उसने जो तुमको राह दिखा दी है तो इसके बदले में उसकी बड़ाइयाँ करो। (३७) ख़ुदा ईमानवालों से (उनके पाप) हटाता रहता है। बेशक अल्लाह किसी दग़ाबाज़ कृतघ्नी (नाशुक्रा को) पसंद नहीं करता।(३८) [रुकू ५ आयात ५]

जिनसे (काफ़िर) लड़ते हैं उनको (भी उन काफ़िरों से लड़ने की) इजाज़त है, इस वास्ते कि उन पर ज़ुल्म हो रहा है और अल्लाह उनकी मदद करने पर शक्तिशाली है।(३९) यह वह हैं जो इस बात के कहने पर कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है नाहक़ अपने घरों से निकाल दिये गये और अगर अल्लाह एक दूसरे से न हटाया करता तो (ईसाइयों की) पूजा की जगहों और गिरजाओं और (यहूदियों की) पूजा की जगहों और मुसलमानों की मसजिद, जिनमें अधिकता से ख़ुदा का नाम लिया जाता है, कभी के ढाये जा चुके होते। और जो अल्लाह को मदद करेगा अल्लाह अवश्य उसको मदद करेगा। अल्लाह ज़बरदस्त शक्तिशाली है।(४०) यह लोग अगर इनके पाँव ज़मीन में जमा दें तो नमाज़ें पढ़ेंगे और ख़ैरात देंगे और अच्छे काम के लिए कहेंगे और बुरे कामों से मना करेंगे और सब चीज़ों का अन्त तो ख़ुदा ही के हाथ है (४१) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुमको झुठलाएँ तो इनसे पहले नूह (के गिरोह) के लोग और आद और समूद (के द्वारा झुठलाये जा चुके हैं)।(४२) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम।(४३) और मदायन के रहनेवाले (अपने-अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा झुठलाये जा चुके हैं। तो हमने काफ़िरों को मुहलत दी फिर उनको धर पकड़ा सो हमारी नाराज़गी कैसी थी।(४४) बहुत बस्तियाँ जो ज़ालिम थीं हमने उनको मार डाला, पस अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं और (कितने) कुएँ बेकार और पक्के महल वीरान पड़े हैं।(४५) क्या यह लोग मुल्क में चले-फिरे नहीं जो इनके ऐसे दिल होते कि उनके ज़रिये से समझते और ऐसे कान होते कि उनके ज़रिये से सुनते। बात यह है कि कुछ आँखें अन्धी नहीं हुआ करतीं बल्कि दिल जो छाती में है वह अन्धे हो जाया करते हैं। (४६) और

(ऐ पैग़म्बर !) तुम से सज़ा की जल्दी मचा रहे हैं और ख़ुदा तो कभी अपना वादा खिलाफ़ करने का नहीं और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ तुम लोगों को गिनती के अनुसार हज़ार वर्ष के बराबर एक दिन है।(४७) और बहुत-सी बस्तियाँ जिनको हमने ढील दिया फिर उनको पकड़ा और हमारी तरफ़ लौटकर आना है। (४८) [रुकू ६ आयात १०]

(ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मैं तुमको ज़ाहिरा (सज़ा) से डरानेवाला हूँ।(४९) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक कर्म किये उनके लिए इज्ज़त की रोज़ी है। (५०) और जो लोग हमारी आयतों को हराने के लिए दौड़ते हैं वही नरकवाले हैं। (५१) और (ऐ पैग़म्बर !) हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा और कोई ऐसा नबी कि उसको यह मामला पेश न आया हो कि जब वह ख़याल बाँधने लगा शैतान ने उसके ख़याल में कुछ न कुछ डाल दिया है §। फिर ख़ुदा ने शैतान के बदख़याल को दूर और अपनी आयतों को मज़बूत कर दिया और अल्लाह हिकमतवाला सब ख़बर रखता है। (५२) इस वास्ते कि उस शैतान के मिलाये से उन लोगों को जाँचे जिनके (दिलों में बुरे ख़यालों की) बीमारी है और उनके दिल सख़्त हैं और अपराधी तो खिलाफ़ों में दूर पड़े हैं। (५३) और यह इस लिए कि जिन लोगों को इल्म दिया गया है वह जान लें कि वह तेरे परवरदिगार से सच है, फिर वह उस पर ईमान लायें और उनके दिल उसके आगे दबें और जो ईमान लाये हैं ख़ुदा उनको सीधी राह दिखलाता है।(५४) और जो लोग इन्कार करनेवाले हैं वह तो हमेशा इस बात (क़ुरान की तरफ़) से शक ही में रहेंगे, यहाँ तक कि क़यामत यकायक उन पर आ पहुँचे या बुरे दिन की सज़ा उन पर उतरे (५५) हुकूमत उस दिन ख़ुदा की होगी। वह लोगों में फ़ैसला कर देगा तो

§ कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद साहब ने कुछ आयतें पढ़ीं तो शैतान ने उनकी ही आवाज़ में बुतों की तारीफ़ भी मिला दी। इस पर मुश्रिक बहुत ख़ुश हुए लेकिन रसूल को यह सुनकर बड़ा दुख हुआ।

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये वह आराम के बाग़ों में होंगे।(५६) और जो इन्कार करते और हमारी आयतों को झुठलाते रहे तो यही हैं जिनको बदनामी की सज़ा होगी।(५७) [रुकू ७ आ.६]

और जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में घर छोड़े फिर मारे गये या मर गये उनको ज़रूर उम्दा रोज़ी देगा और ख़ुदा ही सबसे अच्छी रोज़ी देनेवाला है। (५८) वह उनको ऐसी जगह पहुँचावेगा जैसी वह चाहेंगे और अल्लाह जानकार बरदाश्त करनेवाला है।(५९) यह सुन चुके और जिस आदमी ने उसी क़दर सताया जितना कि यह शख़्स सताया गया है, फिर उस पर ज़्यादती हुई तो इसकी ख़ुदा ज़रूर मदद करेगा। ख़ुदा क्षमा करनेवाला बख़्शनेवाला है। (६०) यह इस वजह से है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में। अल्लाह सुनता, देखता है।(६१) यह इस वजह से है कि अल्लाह ही सचमुच है और जिनको (इन्कारी) ख़ुदा के सिवाय पुकारते हैं वह झूठे हैं और इस सबब से अल्लाह ही बहुत बड़ा है।(६२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आसमान से पानी बरसाता है फिर ज़मीन हरी हो जाती है। बेशक अल्लाह छिपी चीज़ें जानता है।(६३) उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़ के लायक़ है।(६४) [रुकू ८ आयात ७]

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने उन चीज़ों को जो ज़मीन में हैं तुम लोगों के बस में दिया है और किश्ती उसके हुक्म से नदी में चलती है और आसमान ज़मीन पर गिरने से थमा है मगर उसके हुक्म से। कुछ शक नहीं कि अल्लाह आदमियों पर बड़ी मेहरबानी और मुहब्बत रखता है।(६५) और वही है जिसने तुममें जान डाली। फिर तुमको मारता है। फिर जिलावेगा। बेशक इन्सान बड़ा कृतघ्नी (नाशुक्रा) है।(६६) (ऐ पैग़म्बर!) हमने हर गिरोह के लिए (पूजा के) तरीक़े क़रार दिये कि यह उन पर चलते हैं, तो इन लोगों को चाहिए कि तुमसे इस काम में झगड़ा न करें और तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाये चले जाओ। बेशक तुम सीधी राह पर हो।(६७) और

अगर तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है।(६८) जिन बातों में तुम आपस में भेद डालते हो अल्लाह क़यामत के दिन झगड़ों का फ़ैसला कर देगा।(६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह उसे जानता है, यह किताब में लिखा हुआ है, वह अल्लाह पर आसान है। (७०) और खुदा के सिवाय उन चीज़ों की पूजा करते हैं जिनके लिए न तो खुदा ने कोई सनद उतारी है और न इनके पास कोई इसकी अक़ली दलील है और अन्यायियों का कोई मददगार न होगा। (७१) और (ऐ पैग़म्बर !) जब इनको हमारी खुशी-खुशी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरों में नाखुशी देखते हो, क़रीब है कि यह लोग क़ुरान सुनानेवालों पर (हमला कर) बैठें। (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि इससे भी बुरी (और एक चीज़, सुनाऊँ। वह नरक है जिसका वादा खुदा इन्कारियों से करता है, बुरा ठिकाना है (७२) [रुकू ९ आ. ८]

लोगों ! एक मिसाल बयान की जाती है तो उसको कान लगा कर सुनो कि खुदा के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकते, यदि उसके (पैदा करने के) लिए (सबके सब) इकट्ठे (क्यों न) हो जावें। और अगर मक्खी इनसे कुछ छीन ले जावे तो उसको उससे नहीं छुड़ा सको। (कैसे) बोदे यह (बुत) जो पीछा करें (और उसको न पकड़ सकें)(७३) और (कैसी) बोदी वह (मक्खी)† जिसका पीछा किया जाय और फिर हाथ न आवे। इन लोगों ने खुदा की जैसी क़दर जानना चाहिए थी नहीं जानी और अल्लाह तो बड़ा जबर-दस्त और जीतनेवाला है।(७४) अल्लाह फ़रिश्तों में से और आदमियों में से ईश्वरीय संदेशा पहुँचाने के लिए चुन लेता है। अल्लाह सुनता-देखता है।(७५) वह उनके अगले और पिछले हालातों को जानता है

† कहते हैं कि काफ़िर बुतों पर शहद चढ़ाते थे और जब मक्खियाँ उसको चाट जातीं तो खुश होते। सो यहाँ बताया गया है कि मूर्तियाँ तो ऐसी दुर्बल और हीन हैं कि अपना खाना तक मक्खियों से नहीं छीन सकतीं। वह दूसरों की क्या मदद करेंगे।

और सब कामों की पहुँच अल्लाह ही पर है।(७६) ऐ ईमानवालों! रुकू करो और सिजदा करो और अपने परवरदिगार की पूजा करो और भलाई करते रहो। (७७)★ [सिजदा शाफ़ई] और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि उसमें कोशिश करने का हक़ है। उसने तुमको चुन लिया और दीन में किसी तरह की सख़्ती नहीं की। दीन तुम्हारे बाप इब्राहीम का था। उसी ने तुम्हारा नाम पहले से मुसलमान रखा और इसमें (भी) ताकि पैग़म्बर तुम्हारे मुक़ाबिले में गवाह हों और तुम (दूसरे) लोगों के मुक़ाबिले में गवाह हो। तो नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह ही का सहारा पकड़ो, वही तुम्हारे काम का सँभालनेवाला है, ख़ूब मालिक है, और ख़ूब मददगार है। (७८) [रुकू १० आयात ६]

—○—

अठारहवाँ पारा (क़द अफ़लहल मौमिनून)

२३ सूरे मौमिनून ७४

मक्का में उतरी, इसमें ११८ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। ईमानवाले मुराद को पहुँच गये।(१) वह जो अपनी नमाज़ में नत हैं, (२) और वह जो निकम्मी बात पर ध्यान नहीं करते, (३) और वह जो ज़कात दिया करते हैं, (४) और वह जो अपनी शर्मगाहों (शिहबत की जगहों) की रक्षा करते हैं, (५) मगर अपनी बीबियों और बाँदियों के बारे में इल्ज़ाम नहीं है।(६) फिर जो कोई उसके सिवाय ढूँढ़े तो यही लोग हद से बाहर निकले हुए (मर्यादा-भ्रष्ट) हैं।(७) और वह जो अपनी अमानतों और क़ौल (प्रतिज्ञा) को ख़याल में रखते हैं, (८) और जो अपनी नमाज़ों के पाबन्द हैं, (९) यही लोग वारिस हैं। (१०) जो जन्नत के वारिस होंगे वही उसमें हमेशा रहेंगे।(११) और हमने आदमी को सनो मिट्टी से बनाया है।(१२)

फिर हमने उसको ठहरनेवाली जगह पर वीर्य्य बनाकर रखा।(१३) फिर हमने वीर्य्य से लोथड़ा बनाया। फिर हमने लोथड़े की बँधी हुई बोटी बनाई। फिर बधी बोटी की हड्डियाँ बनाईं। फिर हड्डियों पर गोश्त मढ़ा। फिर उसको एक नई सूरत में बना खड़ा किया। सो अल्लाह की बरकत है जो सबसे अच्छा बनानेवाला है।(१४) फिर इसके बाद तुमको मरना है।(१५) फिर क़यामत के दिन तुम उठा खड़े किये जाओगे।(१६) और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान बनाये और पैदा करने में हम अनाड़ी न थे।(१७) और हमने नापकर आसमान से पानी बरसाया, फिर उसको ज़मीन में ठहरा दिया और हम उस पानी को ले जा सकते हैं।(१८) फिर हमने उस (पानी) से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ उगा दिये। तुम्हारे लिए उसमें बहुत-से फल हैं और उनमें से ही तुम खाते हो।(१९) और सैना पहाड़ पर हमने एक पेड़ (जैतून) पैदा किया है जिससे तेल निकलता है और रोटी डुबाने को रसा निकलता है।(२०) और तुमको चौपायों में ध्यान करना है कि जो उनके पेटों में है उसी से हम तुमको (दूध) पिलाते हैं और तुमको उनमें बहुत फ़ायदे हैं और उनमें तुम किन्हीं-किन्हीं को खाते हो।(२१) और उन पर और किश्तियों पर चढ़े फिरते हो।(२२) [रुकू १ आ. २२]

और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा कि भाइयों! अल्लाह की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं, तो क्या तुमको डर नहीं लगता?(२३) इस पर उनकी क़ौम के सरदार जो इन्कारी थे कहने लगे वह भी एक आदमी है जो तुमसे बड़ा बनना चाहता है और अगर ख़ुदा को (पैग़म्बर ही भेजना) मंज़ूर होता तो फ़रिश्तों को उतारता, हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप-दादा से नहीं सुनी।(२४) हो न हो यह एक आदमी है जिसको जनून हो गया है, सो एक ख़ास वक़्त तक उसकी राह देखो।(२५) नूह ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवरदिगार! जैसा इन्होंने मुझे झुठलाया है, तू ही मेरी मदद कर।(२६) इस पर हमने नूह को हुक्म

भेजा कि हमारी आँखों के सामने और हमारे हुक्म से एक नाव बनाओ। फिर जब हमारी आज्ञा आवे और तनूर (ज़मीन से पानी) उबलने लगे तो नाव में हरएक (जीवधारी) में से (नर और मादा) दो-दो का जोड़ा और अपने घरवालों को बैठा लो, मगर उनमें से जिन (नूह की स्त्री और बेटे) का बाबत आज्ञा हो चुकी है और अन्यायियों के बारे में मुझसे न बोल। वह डूबेंगे।(२७) फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव में बैठ जाओ तो कहो कि ख़ुदा का शुक्र है, जिसने हमको ज़ालिम लोगों से छुटकारा दिया।(२८) और कहो कि ऐ परवरदिगार! मुझको बरकत का उतारना उतार और तू सब उतारनेवालों से अच्छा है।(२९) इसमें निशानियाँ हैं और हम जाँचनेवाले हैं।(३०) फिर हमने उनके बाद एक और गरोह उठाया।(३१) और उन्हीं में से (सालेह को) पैग़म्बर बनाकर भेजा कि ख़ुदा की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं, तो क्या तुमको डर नहीं लगता।(३२) [रुकू २ आयात १०]

और उसकी क़ौम के सरदार जो इन्कारी थे और क़यामत के आने को झुठलाते थे और दुनिया की ज़िन्दगी में हमने उनको आराम दिया था कहने लगे कि यह (सालेह) तुम्हीं जैसा आदमी है, जो तुम खाते हो यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते हो यह भी पीता है।(३३) और अगर तुम अपने-जसे आदमी के कहने पर चलो तो तुम बेशक ख़राब होगे।(३४) (यह शख़्स) तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और तुम्हारी मिट्टी और हड्डियाँ रह जावेंगी तो तुम दुबारा उठाये जाओगे।(३५) जो तुम्हें बादा दिया जाता है नहीं हो सकता, नहीं हो सकता। (३६) और कुछ नहीं यह हमारी दुनिया का जीना है। हम जीते और मरते हैं और हम उठाये न जावेंगे।(३७) हो न हो यह (सालेह) ऐसा आदमी है जिसने ख़ुदा पर झूठ बाँधा है और हम तो इसका यक़ीन नहीं करते। (३८) (सालेह ने) कहा ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी मदद कर, इन्होंने मुझे झुठलाया है। (३९)

(ख़ुदा ने)फ़र्माया थोड़े दिनों बाद पछतायेंगे।(४०) चुनाँचे सच के बमूजिब उनको चिंघार ने आ पकड़ा और हमने उनको कूड़ा कर दिया (कुचल दिया), ताकि अन्यायी लोग दूर हो जावें ।(४१) फिर उनके बाद हमने और संगत (गरोह) उठाई ।(४२) कोई संगत अपने समय से न आगे बढ़ सकती न पीछे रह सकती है (४३) फिर हम लगातार अपने पैग़म्बर भेजते रहे। जब किसी गरोह का पैग़म्बर उनके पास आता तो उसे झुठलाया करते थे, तो हम भी एक के पीछे एक को (हलाक) करते गये और हमने उनकी हदीसें (कथाएँ) बना दीं। तो जो लोग नहीं मानते दूर हो जावें। (४४) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारूँ को अपनी निशानियाँ और खुली सनद देकर भेजा।(४५) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो वह शेख़ी में आ गये और वह चढ़ रहे थे। (४६) कहने लगे क्या हम अपने जैसे दो आदमियों को मानने लगें हालाँकि उनकी क़ौम हमारी ग़ुलामी में है।(४७) इन लोगों ने (मूसा और हारूँ) दोनो को झुठलाया तो (यह) मार डाले गये।(४८) और हमने मूसा को किताब दी ताकि (लोग) शिक्षा पावें।(४६) और हमने मरियम के बेटे (ईसा) § और उनकी मा को निशानी बनाया और उन दोनो को एक ऊँची जगह पर जहाँ पड़ाव और सोता (चश्मा) था ठहराव दिया।(५०) [रुकू ३ आ. १८]

ऐ पैग़म्बरों! सुथरी चीजें खाओ और भले काम करो। जैसे काम तुम करते हो मैं जानता हूँ।(५१) और यह सब एक दीन पर थे और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, मुझसे डरते रहो।(५२) फिर लोगों ने आपस में फूट करके अपना दीन जुदा-जुदा कर लिया जो जिस फ़िर्क़े के पास है वह उससे रीझ रहा है।(५३) तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम एक समय तक इनको इनकी ग़फ़लत में रहने दो।(५४) क्या ऐसे लोग ख़याल करते हैं जो हम माल और औलाद इनको दिये जा रहे हैं। (५५)

§ ईसा ने जन्म लेते ही बातचीत की। यह उनकी करामात थी और उन की मा ने किसी पुरुष से मिले बिना ईसा-जैसा महान पुत्र जना, यह उनका चमत्कार था।

इनको लाभ पहुँचाने में हम जल्दी कर रहे हैं, बल्कि यह समझते नहीं (५६)
जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं (५७) और जो अपने परवर-
दिगार की आयतों को मानते हैं (५८) और जो अपने परवरदिगार
के साथ शरीक नहीं ठहराते (५६) और जितना कुछ देते बनता है (ख़ुदा
की राह में) देते हैं और उनके दिलों को इस बात का खटका लगा
रहता है कि उनको अपने परवरदिगार की ओर लौटकर जाना है। (६०)
यही लोग नेक कामों में जल्दी करते हैं और उनके लिए लपकते
हैं। (६१) और हम किसी आदमी को ताक़त से बढ़कर बोझ नहीं
डालते और हमारे यहाँ (लोगों के काम का) रजिस्टर है जो ठीक हाल
बताता है और उन पर अन्याय न होगा। (६२) लेकिन इनके दिल इस
बात से ग़ाफ़िल हैं और इन कामों के सिवाय और कामों में लगे (६३)
यहाँ तक कि जब हम इनमें से खुशहाल लोगों को सज़ा में धर
पकड़ेंगे तो यह लोग चिल्ला उठेंगे (६४) मत चिल्लाओ आज के दिन
तुम हमसे मदद न पाओगे। (६५) (क़ुरान में से) हमारी आयतें तुमको
पढ़ कर सुनाई जाती थीं और तुम उलटे भागते थे। (६६) तुम क़ुरान
से अकड़ते हुए बेहूदा बकवाद करते थे। (६७) क्या इन लोगों ने
(क़ुरान में) ध्यान नहीं दिया था। इनके पास एक बात आई जो इनके
अगले बाप दादों के पास नहीं आई थी। (६८) क्या यह लोग अपने
पैग़म्बर से जानकार नहीं थे और उसे ऊपरी समझते हैं ? (६९) क्या यह
कहते हैं कि इसको जनून है बल्कि रसूल इनका सच बात लेकर आया
है और इनमें से बहुतों को सच बात बुरी लगती है। (७०) और अगर
सच्चा ख़ुदा उनकी ख़ुशी पर चलता तो आसमान और ज़मीन
और जो कुछ उनके में है ख़राब हो गया होता, बल्कि हमने इनको
इन्हीं की शिक्षाएँ लाकर सुनाईं सो वे अपनी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं
देते। (७१) क्या (ऐ पैग़म्बर !) तुम इनसे कुछ मजदूरी माँगते हो तो
तुम्हारे परवरदिगार की देन भली है और वह रोज़ी देनेवाला बेहतर
है। (७२) और (ऐ पैग़म्बर !) तू इनको सीधी राह पर बुलाता है। (७३)
और जिन लोगों को क़यामत का यक़ीन नहीं है वही रास्ते से

हटे हुए हैं।(७४) और अगर हम इन पर रहम कर जावें और जो कष्ट इनको पहुँचता है दूर कर दें तो भटके हुए अपनी गुमराही में हमेशा पड़े रहेंगे।(७५) और हमने इनको सज़ा में फाँसा तो भी यह लाग अपने परवरदिगार के आगे न झुके और न आजिज़ी (नम्रता) की।(७६) यहाँ तक कि जब हम इन पर सख़्त सज़ा का दरवाज़ा खोल देंगे तब उसमें उनकी आस टूटेगी।(७७) [रुकू ४ आयात २७]

और उसी ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बना दिये (मगर) तुम बहुत ही कम शुक्र मानते हो।(७८) और उसी ने तुमको ज़मीन पर फैला रखा है और तुमको इकट्ठा होना है।(७९) और वही जिलाता और मारता है और रात दिन का बदलना भी उसी का काम है तो क्या तुम नहीं समझते।(८०) जो बात अगले* कहते चले आये हैं वैसी ही यह भी कहते हैं।(८१) कहते हैं कि क्या हम मर जावेंगे और हड्डियाँ (बाक़ी रह जावेंगी) तब क्या हम (दोबारा ज़िन्दा करके) उठा खड़े किये जावेंगे?(८२) हमको और हमारे बड़ों को इसका वादा पहले भी मिल चुका है, हो न हो यह अगले लोगों के ढकोसले हैं।(८३) (ऐ पैग़म्बर!) पूछो कि अगर तुम समझते हो तो बताओ कि ज़मीन और जो कुछ उसमें है किसके हैं।(८४) कहेंगे कि अल्लाह के। (उनसे) कहो कि फिर क्यों नहीं ध्यान देते?(८५) (ऐ पैग़म्बर! इनसे) पूछो कि सात आसमानों का मालिक और उस बड़े तख़्त का मालिक कौन है?(८६) अब बतावेंगे कि अल्लाह। कहो फिर तुम क्यों नहीं डरते?(८७) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) पूछो कि अगर जानते हो तो बताओ कि हर चीज़ पर अधिकार किसका है और कौन है, जो बचाता है? और उससे कोई बचा नहीं सकता।(८८) अब बतावेंगे अल्लाह को। कहो तो फिर कहाँ से जादू पड़ जाता है§?(८९) सच यह है कि हमने सच-सच बात इनको पहुँचा दी है और

* अगले लोग भी कहते थे कि मरने के बाद कोई न जिलाया जावेगा।

§ यह सब मानते हो, तो फिर इसको क्यों नहीं मानते कि वह फिर पैदा कर सकता है।

बेशक यह झूठे हैं।(९०) अल्लाह ने किसी को बेटा नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है। अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपने बनाये को लिए फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाता। जैसी-जैसी बातें यह (लोग) बयान करते हैं वह उनसे निराला है।(९१) ज़ाहिरा और छिपी बात का जाननेवाला उनसे बहुत ऊपर है और ये शरीक बताते हैं।(९२) [रुकू ५ आयात १५]

(ऐ पैग़म्बर !) तुम यह माँगो कि ऐ मेरे परवरदिगार ! जिस (सज़ा) का वादा इनसे किया गया है अगर तू मुझे भी दिखा दे।(९३) तो (ऐ मेरे परवरदिगार !) ज़ालिम लोगों में मुझे न शामिल कर लेना।(९४) और ऐ पैग़म्बर ! हमको सामर्थ्य है कि जिस (सज़ा) का वादा इन (काफ़िरों) से कर रहे हैं।(९५) तुमको दिखा दें। जो कुछ वह कहते हैं हम ख़ूब जानकार हैं।(९६) और दुआ करो ऐ परवरदिगार ! मैं शैतान की छेड़ से तेरा शरण चाहता हूँ।(९७) और ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं शरण माँगता हूँ। इसमें कि शैतान मेरे पास आवें।(९८) और यहाँ तक कि जब इनमें से किसी की मौत आती है कहता है कि ऐ मेरे परवरदिगार। मुझे फिर (दुनिया में) भेज।(९९) (ताकि दुनिया) जिसे मैं छोड़ आया हूँ उसमें (फिर जाकर) भले काम करूँ यह एक बात है जिसे वह कहता है उनके पीछे अटकाव है जब तक कि मुर्दों में से उठाये जायँ।(१००) फिर जब नरसिंहा (सूर) फूंका जायगा तो उस दिन लोगों में न तो रिश्तेदारियाँ (बाक़ी) रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे।(१०१) फिर जिनका पल्ला§ भारी निकलेगा तो यही लोग मुराद पावेंगे।(१०२) और जिनका पल्ला हल्का होगा तो यही लोग हैं जो अपनी जानें हार गये और हमेशा नरक में रहेंगे।(१०३) आग उनके मुँहों को झुलसाती होगी और वह वहाँ बुरे मुँह बनाये होंगे।(१०४) क्या हमारी आयतें तुमको पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं और तुम उनको झुठलाते थे।(१०५) वह

§ सबके अच्छे और बुरे कामों की तुलना की जायगी और जिसकी बुराइयाँ अधिक होंगी वह दोज़ख़ी होगा।

कहेंगे ऐ हमारे परवरदिगार ! हमको हमारी कमबख़्ती ने आ दबाया और हम भटके हुए थे। (१०६) ऐ हमारे परवरदिगार ! हमको इस (आग) से निकाल और अगर हम फिर ऐसा करें तो बेशक अपराधी होंगे। (१०७) (ख़ुदा) कहेगा दूर हो, इसी (आग) में रहो और हमसे बात न करो।(१०८) हमारे सेवकों में एक गिरोह ऐसा भी था जो कहा करता था कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम ईमान लाये, तू हमारे अपराध क्षमा कर और तू दयावानों में भला है।(१०९) फिर तुमने उनकी हँसी उड़ाई,यहाँ तक कि उन्होंने तुमको हमारी याद भुला दी और तुम उनसे हँसी-ठट्ठा करते रहे।(११०) आज हमने उनको सब्र का बदला दिया, वही मुराद पावेंगे। (१११) फिर ख़ुदा नरकवालों से पूछेगा कि तुम ज़मीन पर गिनती के कितने वर्ष रहे ? (११२) वह कहेंगे एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे। गिननेवालों से पूछ देख।(११३) फ़र्माया जायेगा तुम उसमें बहुत नहीं थोड़े ही रहे होंगे, अगर तुम जानते होते।(११४) क्या तुम ऐसा ख़्याल करते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और यह कि तुमको हमारी तरफ़ फिर लौटकर आना नहीं है। (११५) सो ख़ुदा सच्चा बादशाह बहुत ऊँचा है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही बड़े तख़्त का मालिक है। (११६) और जो शख़्स ख़ुदा के सिवाय किसी को बुलाता है उसके पास इस (शामिल करने) की कोई दलील नहीं। तो बस उसके परवरदिगार के ही यहाँ उसका हिसाब होना है। बेशक इन्कारी लोगों का भला न होगा।(११७) और तुम दुआ करो कि ऐ मेरे परवरदिगार ! क्षमा कर और कृपा कर और तू अन्य कृपा करनेवालों से भला है। (११८) [रुकू ६ आयात २६]

——o——

२४ सूरे नूर १०२

मक्का में उतरी, इसमें ६४ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। एक सूरत है जिसको हमने उतारा और यह हमारा ही बाँधा हुआ है और हमने इसमें खुले-खुले हुक्म उतारे ताकि तुम याद रखो। (१) मर्द और औरत छिनाला करें तो दोनों में से हरएक के सौ कोड़े मारो और अगर अल्लाह का और आख़िर दिन का विश्वास रखते हो तो अल्लाह की आज्ञा की तामील में तुमको उन पर तरस न आना चाहिए और मुसलमानों को चाहिए कि जब उन पर मार पड़े देखने आवें†।(२) व्यभिचारी आदमी व्यभिचारिणी से विवाह करेगा और शिर्कवाली औरत शिर्कवाले मर्द से विवाह करेगी और यह बात ईमान वालों पर हराम है। (३) और जो लोग पाक औरतों पर (छिनाले का) लफंट लगायें और चार गवाह न ला सकें तो उनके अस्सी चाबुक मारो और कभी उनकी गवाही क़बूल न करो और ये लोग बदकार हैं।(४) दुरुस्त कर ली तो अल्लाह बख़शनेवाला मेहरबान है। (५) और जो लोग अपनी बीबियों पर छिनाले का लफंट लगायें और उनके पास सिवाय उनकी जानों के और गवाह न हों तो उनमें से एक की गवाही चार दफ़े लेना चाहिए कि वह सच्चों में है।(६) और पाँचवें दफ़े यों कहे कि वह अगर झूठ बोलता हो तो उस पर अल्लाह की फटकार पड़े। (७) और (मर्द के हल्फ़ किये पीछे) औरत से इस तरह पर सज़ा टल सकती है कि वह चार बार ख़ुदा की सौगन्ध खाकर बयान करे कि यह आदमी बिल्कुल झूठा है। (८) पाँचवें (बार) यों कहे कि अगर यह (आदमी अपने दावे में) सच्चा है तो मुझ पर ख़ुदा ही का कोप पड़े।(९) और अगर तुम पर अल्लाह की मिहर और

† ताकि स्वयं ऐसा बुरा कर्म करने से डरें।

कृपा न होती तो तुम बड़ी आपत्ति में पड़ जाते परन्तु अल्लाह क्षमा करनेवाला हिकमतवाला है। (१०) [रुकू १ आयात १०]

जिन लोगों ने तूफ़ान उठा खड़ा किया† तुम ही में एक गरोह है। इस (तूफ़ान) को अपने हक़ में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे हक़ में अच्छा हुआ। तूफ़ान उठानेवालों में से जितना अपराध जिसने इकट्ठा किया है उसी का फल भोगेगा और जिसने उनमें से तूफ़ान का बड़ा हिस्सा लिया वैसी ही उसको बड़ी सज़ा होगी। (११) जब तुमने ऐसी बात सुनी थी ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों ने अपने हक़ में नेक ख़याल क्यों नहीं किया और क्यों न बोल उठे कि यह प्रत्यक्ष लफ़ंट है।(१२) (जिन लोगों ने यह तूफ़ान उठा खड़ा किया) अपने बयान के सबूत पर चार गवाह क्यों न लाये ? फिर जब गवाह न ला सके तो ख़ुदा के नज़दीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर तुम पर दुनिया और क़यामत में ख़ुदा की कृपा और मिहर न होती तो इस चर्चे में तुम पर बड़ी सज़ा उतरती। (१४) जब तुमने लफ़ंट को अपनी ज़बानों पर लिया और अपने मुँह से ऐसी बात कहने लगे जिसको तुम न जानते थे और तुम उसे हल्की बात समझे, हालाँकि अल्लाह के नज़दीक वह बड़ी (बात) है (१५) और जब तुमने ऐसी बात सुनी थी क्यों न बोल उठे कि हमको ऐसी बात मुँह से निकालना शोभा नहीं देता। अल्लाह तो पाक है और यह बड़ा लफ़ंट है। (१६) ख़ुदा तुमको शिक्षा देता है कि अगर तुम ईमान रखते हो तो फिर कभी ऐसा न करना।(१७) और अल्लाह (अपने) हुक्म तुमसे खोलकर बयान करता है और अल्लाह हिकमतवाला जानकार है।(१८) जो लोग चाहते हैं कि ईमानवालों में व्यभिचार की चर्चा हो उनके लिए दुनिया में और क़यामत में दुखदाई सज़ा है और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते। (१९) और अगर अल्लाह की कृपा और

† कुछ लोगों ने मुहम्मद साहब की चहीती स्त्री हज़रत आयशा पर बदकारी (जिना) का लफ़ंट लगाया था। यह आयतें उसी से सम्बन्धित हैं।

मिहर तुम पर न होती तुम एक भयंकर विपत्ति में पड़ जाते, लेकिन अल्लाह नर्मी करनेवाला मेहरबान है। (२०) [रुकू २ आयात १०]

ऐ ईमानवालों! शैतान के क़दम पर क़दम न रखो और जो शैतान के क़दम पर क़दम रखेगा तो शैतान (उसको) बेशर्मी और बुरे काम को कहेगा और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुममें से कोई कभी भी पाक न होता। लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पाक करता है और अल्लाह सुनता-जानता है।(२१) और तुमसे जो लोग बड़ाईवाले और सामर्थ्यवान हैं नातेदारों, मुहताजों और देश छोड़नेवालों को अल्लाह की राह में देने से सौगन्ध न खा बैठें बल्कि क्षमा करें और छोड़ दें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे अपराध क्षमा करे और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है?(२२) जो लोग ईमानवाली बेख़बर पाक औरतों पर (छिनाले का) लफ़ंट लगाते हैं (ऐसे लोग) दुनिया और क़यामत में फटकारे गये हैं और उनको बड़ी सज़ा होगी।(२३) जब इनकी ज़बानें और इनके हाथ और इनके पाँव इनके कामों की जो कुछ वे करते थे गवाही देंगे, (२४) उस दिन अल्लाह इनको पूरा-पूरा बदला देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सच्चा दिखानेवाला है। (२५) व्यभिचारिणी औरतें व्यभिचारी मर्दों के लिए और व्यभिचारी मर्द व्यभिचारिणी औरतों के लिए और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए और पाक मर्द पाक औरतों के लिए हैं और जो लफ़ंट लगाये फिरते हैं उनसे जो अलग हैं उनके लिए क्षमा है, इज़्ज़त की रोज़ी है। (२६) [रुकू ३ आयात ६]

ऐ ईमानवालों! अपने घरों के सिवाय और घरों में बग़ैर पूछे और बिना सलाम लिये न जाया करो, यह तुम्हारे हक़ में भला है, शायद तुम याद रखो।(२७) फिर अगर तुमको मालूम हो कि घर में कोई आदमी नहीं है तो जब तक तुम्हें इजाज़त न हो उसमें न जाओ और अगर तुमसे कहा जावे कि लौट जाओ तो लौट आओ यह तुम्हारे लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको जानता है।(२८) और ग़ैर आबाद मकान जिसमें तुम्हारा असबाब हो उनमें चले जानेसे तुम्हें पाप नहीं और जो

कुछ तुम ज़ाहिरा करते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो अल्लाह जानता है।(२९) (ऐ पैग़म्बर!) ईमानवालों से कहो कि अपनी आँख नीची रखें और अपनी शर्मगाहों को बुरे काम से बचाये रहें। इसमें उनको ज़्यादा सफ़ाई है और (लोग) जो कुछ भी किया करते हैं अल्लाह को ख़बर है।(३०) और (ऐ पैग़म्बर!) ईमानवाली औरतों से कहो कि अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों को बचाये रहें और अपना शृंगार न दिखावें, मगर जितना ज़ाहिर है (यानी मुँह, हाथ और पैर) और अपने कन्धों पर ओढ़नी ओढ़े रहें और अपना शृंगार न दिखावें, सिवाय अपने पति के और अपने बाप के या अपने ससुर के या अपने बेटे के या अपने पति के बेटे के या अपने भाइयों के या भतीजों के या अपने भान्जों के या अपनी मेल-जोल की औरतों के या अपने हाथ के माल (यानी लौंडियों या घर के लगे हुए ऐसे ख़िदमतगारों के या जो मर्द तो हों (मगर औरतों से कुछ) ग़रज़ नहीं रखते हों या लड़कों को जिन्होंने औरतों के भेद नहीं जाने। और (चलने में) अपने पाँव ऐसे ज़ोर से न रखें कि लोगों को उनके अन्दरूनी ज़ेवर की ख़बर हो और तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो, जिससे छुटकारा पाओ। (३१) और अपनी विधवाओं के निकाह करा दो और अपने ग़ुलामों और लौंडियों में से जो नेकबख़्त हों (उनके निकाह करा दो)। अगर यह लोग मुहताज होंगे तो अल्लाह उनको मालदार बना देगा और अल्लाह गुंजाइशवाला जानकार है। (३२) और जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ वे अपने को थामे रहें, यहाँ तक कि अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें सामर्थ्य दे और तुम्हारे हाथ के माल (लौंडी ग़ुलामों) में से जो लिखने† के चाहनेवाले हों तो तुम उनके साथ लिख दिया करो बशर्ते कि तुम उनमें नेकी पाओ और माले ख़ुदा में से जो उसने तुमको दे रखा है उनको दो और तुम्हारी लौंडियाँ जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनिया की

† यानी जो ग़ुलाम अपनी आज़ादी के लिये एक तहरीर चाहे जिसमें उस की आज़ादी की शर्तों का ज़िक्र हो तो तुम ऐसी तहरीर उसको दे दो।

ज़िन्दगी के फ़ायदे की ग़रज़ से हरामकारी पर मजबूर न करो और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये गये पीछे क्षमा करनेवाला मेहरबान है। (३३) और हमने (इस क़ुरान में) तुम्हारे पास खुले-खुले हुक्म भेजे हैं और जो लोग तुमसे पहले हो गुज़रे हैं उनके हालात परहेज़गारों के लिए शिक्षा हैं। (३४) [रुकू ४ आयात ८]

अल्लाह आसमान और ज़मीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक आला है, उस आले में एक चिराग़ और चिराग़ एक शीशे की कंडील में धरा है (और) कंडील एक सितारे की तरह चमकता है। जैतून के बरकत के पेड़ से उस चिराग़ में तेल जलता है जो न पूर्वी और न पश्चिमी है। उसका तेल (ऐसा साफ़ है) कि अगर उसको आँच न भी छुए तो भी जल उठे। रोशनी पर रोशनी। अल्लाह अपनी रोशनी की तरफ़ जिसको चाहता है राह दिखाता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान फ़र्माता है और अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (३५) ऐसे घरों में जिनकी बाबत (ख़ुदा ने) हुक्म दिया है कि उनकी बुज़ुर्गी की जाय और उनमें ख़ुदा का नाम लिया जावे, उनमें सुबह-शाम याद करते हैं।(३६) ऐसे लोग ख़ुदा की पाकी बयान करते रहते हैं जो सौदागरी और ख़रीद-फ़रोख़्त, ख़ुदा के ज़िक्र और नमाज़ के पढ़ने और ज़कात के देने से ग़ाफ़िल नहीं होते, उस दिन से डरते हैं जबकि दिल और आँखें उलट जायँगी।(३७) अल्लाह उनको उनके कामों का भला से भला बदला दे और उनको अपनी कृपा से बढ़ती दे और अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ा देता है (३८) और जो लोग इन्कार करनेवाले हैं उनके काम जैसे मैदान में चमकता हुआ रेत, प्यासा उसको पानी समझता है। यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचता है तो उसको कुछ नहीं पाता और ख़ुदा को अपने पास मौजूद पाया। उसने उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया और अल्लाह ज़रा देर में हिसाब करनेवाला है।(३९) (या उनके काम की मिसाल) बड़े गहरे नदी के अन्दरूनी अँधेरे जैसा है कि नदी को लहर ने ढाँक रखा है और लहर के ऊपर लहर उसके ऊपर बादल का अँधेरा है, एक के ऊपर एक अपना हाथ

निकाले तो उम्मेद नहीं कि उसको देख सकें। और जिसको अल्लाह ही ने रोशनी नहीं दी तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (४०) [रुकू ५ आयात ६]

क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह की पाकी बयान करता है और पक्षी पर फैलाये (उड़ते फिरते हैं।) सबने अपनी नमाज़ और याद (का तरीक़ा) जान रखा है। और जो कुछ यह करते हैं अल्लाह उससे जानकार है। (४१) और आसमान और ज़मीन की हुकूमत अल्लाह की है और अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है।(४२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को हाँकता है, फिर बादलों को आपस में जोड़ता है, फिर उनको तह पर तह करके रखता है, फिर तू बादल में से मेह को निकलते हुए देखता है और आसमान में जो ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं जिस पर चाहता है ओले बरसाता है और जिसे चाहता है उसे बचा देता है। बादल की बिजली की चमक आँखों को उचक ले जावे। (४३) अल्लाह रात और दिन की तब्दीली करता रहता है। जो लोग सूझ रखते हैं उनके लिए ध्यान की जगह है। (४४) और अल्लाह ने तमाम जानदारों को पानी से पैदा किया है फिर उनमें से कोई (जो) पेट के बल चलते हैं और कोई उनमें से पाँव से चलते हैं और कोई उनमें से चार पाँव से चलते हैं, अल्लाह को चाहता है बनाता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है।(४५) हमने खुली आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह बताता है।(४६) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और पैग़म्बर पर ईमान ले आये और हुक्म माना, फिर इसके बाद इनमें का एक फ़िर्क़ा नहीं मानता है और वे ईमान लानेवाले नहीं।(४७) और जब खुदा और पैग़म्बर की तरफ़ बुलाये जाते हैं कि उनमें (उनके आपस के झगड़ों का) निबटारा कर दें, उनका एक फ़रीक़ मुँह मोड़ता है।(४८) और अगर उनको कुछ हक़ पहुँचता हो तो कान दबाये रसूल की तरफ़ चले आते हैं।(४६) क्या इनके दिलों में कुछ रोग है या शक में पड़े

† जब अपने को किसी झगड़े में हक़ पर समझते हैं तो उसका इन्साफ़

हैं या डरते हैं कि अल्लाह और उसका रसूल उनकी हक़तलफ़ी न कर बैठें। बल्कि यही लोग अन्यायी हैं। (५०) [रुकू ६ आयात १०]

ईमानदारों की बात यह है कि जब ख़ुदा और उनके पैग़म्बर की तरफ़ फ़ैसले के लिए बुलाये जाते हैं तो कहते हैं हमने सुना और माना और यही लोग छुटकारा पाते हैं।(५१) और जो कोई अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा माने और अल्लाह से डरे और उससे बचता रहे तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुँचेंगे।(५२) और अल्लाह की पक्की सौगन्धें खा-खाकर कहते हैं कि अगर आप आज्ञा देवें तो बिला उज्र निकल खड़े हों (ऐ पैग़म्बर !) इन लोगों से कहो कि क़समें न खाओ तुम्हारी आज्ञाकारी (की सचाई) मालूम है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (५३) कहो कि अल्लाह का हुक्म मानो और पैग़म्बर का कहा मानो। फिर अगर तुम भागोगे तो जो ज़िम्मेदारी पैग़म्बर पर है उसका जवाबदेह वह है और जो ज़िम्मेदारी तुम पर है उसके जवाबदेह तुम हो। अगर पैग़म्बर के कहने पर चलोगे तो किनारे जा लगोगे और पैग़म्बर के ज़िम्मे तो (ख़ुदा की आज्ञा) साफ़ तौर पर पहुँचा देना है। (५४) तुममें से जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनसे ख़ुदा का वादा है कि उनको मुल्क में ख़लीफ़ा बनायेगा जैसे इन लोगों से पहले ख़लीफ़े बनाये थे। उनका दीन जो उसने उनके लिए पसंद किया उसको उनके लिए मज़बूत कर देगा और डर जो इनको है इनके बाद इनको (बदले में) अमन देगा कि हमारी पूजा किया करेंगे (और) किसी चीज़ को हमारा साझा न मानेंगे और जो आदमी इनके बाद इन्कारी हो ऐसे ही लोग बे-हुक्म हैं। (५५) और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और पैग़म्बर के कहे पर चलो, शायद तुम पर रहम किया जावे।(५६) (ऐ पैग़म्बर !) ऐसा ख़याल न करना कि काफ़िर मुल्क में (हमें) हरा देंगे और इनका ठिकाना नरक है, और वह बुरी जगह है।(५७) [रुकू ७ अयात ७]

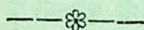
कराने के लिए तुम्हारे पास दौड़ आते हैं लेकिन अल्लाह की तरफ़ से उतरी हुई आयतों की परवाह नहीं करते।

ऐ ईमानवालों! तुम्हारे हाथ के माल (यानी लौंडी ग़ुलाम) तुम्हारे नाबालिग़ लड़के तीन वक़्तों§ में तुम्हारी इजाज़त लेकर घर आवें। एक तो सुबह की नमाज़ से पहले और दूसरे दोपहर को जब तुम कपड़े उतारा करते हो और तीसरे रात की नमाज़ के बाद। यह तीन वक़्त तुम्हारे पर्दे के हैं। इन वक़्तों के सिवाय न (वे इजाज़त आने देने में) तुम पर कुछ गुनाह है और न (वे इजाज़त चले आने में) उन पर,(क्योंकि वह) अक्सर तुम्हारे पास आते-जाते रहते हैं। यों अल्लाह आयतों को तुमसे खोल-खोलकर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला हिकमतवाला है। (५८) जब तुम्हारे लड़के बालिग़ हो जावें तो जिस तरह इनके अगले इजाज़त माँगा करते हैं (इसी तरह) इनको भी इजाज़त माँगना चाहिए। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है और अल्लाह जानकार हिकमतवाला है (५६) और बड़ी-बूढ़ी औरतें जिनको निकाह की उम्मेद नहीं और अपने कपड़े (दुपट्टे या चद्दर) उतार रखा करें तो इसमें उन पर कुछ अपराध नहीं बशर्ते कि उनको (अपना) बनाव दिखाना मंज़ूर न हो और अगर बचाव रखें तो उनके हक़ में भला है और अल्लाह सुनता जानता है।(६०) अंधे, लँगड़े और बीमार तुम्हारी जानों पर भी कुछ पाप नहीं कि अपने बाप के घर से या मा के घर से या अपने भाइयों के घर से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी मौसियों के घरों से या उन घरों से जिनकी कुंजियाँ तुम्हारे क़ाबू में हैं या अपने दोस्तों के घरों से (फिर इसमें भी) तुम पर पाप नहीं कि सब मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को सलाम कर लिया करो। क्षेम कुशल की आशिष ख़ुदा की ओर से बरकत उम्मह वाली है। यों

§ यह तीनो वक़्त ऐसे हैं जिनमें स्त्री और पुरुष एक दूसरे के साथ होते हैं, इसलिए आज्ञा लिये बिना न आना चाहिए।

अल्लाह हुक्म खोल-खोलकर बयान करता है शायद तुम समझो। (६१) [रुकू ८ आयात ४]

ईमानवाले हैं जो अल्लाह और पैग़म्बर पर ईमान लाये हैं और जब किसी ऐसी बात के लिए, जिसमें लोगों के जमा होने की जरूरत है, पैग़म्बर के पास होते हैं तो जब तक पैग़म्बर से इजाज़त न ले लें नहीं जाते हैं। (ऐ पैग़म्बर !) जो तुमसे इजाज़त ले लेते हैं हक़ीक़त में वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये हैं। तो यह लोग अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाज़त माँगें तो तुम इनमें से जिसको चाहो इजाज़त दे दिया करो। ख़ुदा से उनके लिए क्षमा माँगो। अल्लाह बख्शनेवाला मेहरबान है।(६२) (जब) पैग़म्बर (तुममें से किसी को बुलाएँ तो उन)के बुलाने को आपस में (मामूली बुलाना) न समझो जैसा तुममें एक को एक बुलाया करता है। अल्लाह उन लोगों को ख़ूब जानता है जो तुममे से छिपकर सटक जाते हैं। तो जो लोग रसूल की आज्ञा का विरोध करते हैं, उनको इससे डरना चाहिए कि उन पर कोई आफ़त न आ पड़े या उन पर दुखदाई सज़ा आ जाये।(६३) सुनो जो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, तुम जिस हाल में हो उसे मालूम है और जिस रोज़ ख़ुदा की तरफ़ लौट कर लाये जाओगे तो जैसे काम करते रहे हैं ख़ुदा उनको बता देगा और अल्लाह सब कुछ जानता है। (६४) [रुकू ९ आयात ३]



२५ सूरे फ़ुर्क़ान ४२

मक्का में उतरी, इसमें ७७ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। उसको बरकत है जिसने अपने सेवक(मुहम्मद)पर क़ुरान उतारा ताकि तमाम दुनिया के लिए डरानेवाला हो। (१) आसमान और ज़मीन की सल्तनत उसी की है और वह कोई बेटा नहीं रखता और न राज्य में उसका कोई

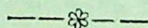
साक्षी है। और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर हरएक चीज़ के लिए एक अंदाज़ा ठहरा दिया।(२) और काफ़िरों ने ख़ुदा के सिवाय (दूसरे) पूजित मान लिये हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद बनाये हुए हैं। और अपने लिए बुरे-भले के मालिक नहीं हैं और न मरने के और न जीने के और न जी उठने के मालिक हैं।(३) और काफ़िर (क़ुरान की निस्बत) कहते हैं कि यह तो निरा झूठ है जिसको इस (पैग़म्बर) ने गढ़ लिया है और दूसरे लोगों ने उसकी मदद की है। यह लोग झूठ और ज़ुल्म पर हैं।(४) और कहते हैं कि क़ुरान अगले लोगों की कहानियाँ हैं जिसको इस मुहम्मद ने किसी से लिखवा लिया है और वही सुबह-शाम पढ़कर सुनाया जाता है।(५) (ऐ पैग़म्बर !) कहो यह क़ुरान उसने उतारा है जो आसमान और ज़मीन की सब छिपी बातों को जानता है। वह बख़्शनेवाला मेहरबान है।(६) और कहते हैं कि यह कैसा पैग़म्बर है जो खाना खाता और बाज़ारों में फिरता है†। इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं भेजा गया कि इसके साथ होकर डराता।(७) या इस पर कोई ख़ज़ाना बरसा होता या इसके पास बाग़ होता कि उससे खाता। और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो ऐसे आदमी के पीछे हो गये हो कि जिस पर किसी ने जादू कर दिया है।(८) (ऐ पैग़म्बर !) देखो तुम्हारी बाबत कैसी बातें बनाते हैं जिससे गुमराह हो गये और फिर राह पर नहीं आ सकते हैं।(९) [रुकू १ आयात ९]

वह ऐसा बरकतवाला है कि चाहे तो तुम्हारे लिए ऐसे बाग़ दे कि जिनके नीचे नहरें बहती हों और तुम्हारे लिए महल बना दे।(१०) असली बात यह है कि यह लोग क़यामत को झूठ समझते हैं और जो लोग क़यामत को झूठ समझें उनके लिए हमने नरक तैयार कर रखा है।(११) जब वह उसको दूर से देखेंगे तो उसकी चिल्लाहट

---

† काफ़िर समझते थे कि नबी या रसूल साधारण मनुष्य के समान नहीं रहता। उसके साथ हर समय एक फ़रिश्ता रहता है, जो दूसरों को बताता रहता है कि यह नबी या रसूल है।

और झुंझलाहट सुनेंगे। (१२) और जब नरक की किसी तंग जगह में मुश्कें बाँधकर डाल दिये जायँगे तो वहाँ मौत को पुकारेंगे। (१३) फ़रिश्ते कहेंगे कि एक मौत को न पुकारो बल्कि बहुत मौतों को पुकारो।(१४) (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि यह बढ़कर है या हमेशा रहने के बाग़ जिसका वादा परहेज़गारों को मिला है कि उनका बदला वह ठिकाना होगा।(१५) और जो चीज़ वह चाहेंगे वहाँ मौजूद होगी हमेशा रहेंगे। वह उनका माँगा हुआ वादा तेरे ख़ुदा पर लाज़िम आ गया है।(१६) और जिस दिन ख़ुदा उन काफ़िरों को और (उन पूजितों को) जिनको यह ख़ुदा के सिवाय पूजते हैं जमा करेगा फिर (इनके पूजितों से) पूछेगा कि क्या तुमने मेरे इन दासों को गुमराह किया था या यह (आप से) आप राह भटक गये थे ?(१७) (इनके पूजित) कहेंगे कि तू पाक है, हमको यह बात किसी तरह शोभा नहीं देती थी कि तेरे सिवाय दूसरे काम सँभालनेवाले बनाते बल्कि तूने इनको और इनके बड़ों को आराम-चैन दी, यहाँ तक कि वह (तेरी) याद को भुला बैठे और यह हलाक होनेवाले लोग थे।(१८) (हम काफ़िरों से फ़र्माएँगे) तुम्हारे इन पूजितों ने तुमको सारी बातों में झुठलाया। अब तुम न तो (हमारी सज़ा को) टाल सकते हो और न मदद ले सकते हो। और जो तुममें से (शरीक ख़ुदा बनाकर) ज़ुल्म करेगा हम उसको बड़ी सज़ा देंगे। (१९) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहले रसूल भेजे, वह खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे और हमने तुममें एक दूसरे को जाँच को रखा है तो देखें ठहरे रहते हो (या नहीं) और तुम्हारा परवरदिगार देख रहा है।(२०)[रुकू २ आ. ११]



उन्नीसवाँ पारा (वक़ालल्लज़ीन)

और जो लोग हमसे मिलने की उम्मेद नहीं रखते वह कहा करते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतरे या हम अपने परवरदिगार को देखें (तो यक़ीन करें)। इन लोगों ने अपने दिलों में अपनी बड़ी बड़ाई

समझ रखी है और हद से बहुत बढ़ गये हैं।(२१) जिस दिन लोग फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन पापियों को कोई ख़ुशी न होगी (और फ़रिश्तों को देखकर) कहेंगे कि किसी आड़ में हो जाओ। (२२) और यह लोग जो काम कर गये हैं अब हम उनकी तरफ़ ध्यान देंगे और उनको बिखरी हुई धूल कर देंगे।(२३) जन्नतवालों का उस दिन अच्छा ठिकाना होगा और दोपहर को सोने की जगह भी अच्छी मिलेगी।(२४) और जिस दिन आसमान बदली से फट जायगा और फ़रिश्ते दर्जा बदर्जा उतारे जायँगे, (२५) उस दिन रहमान का सच्चा राज्य होगा और वह दिन काफ़िरों को कठिन होगा।(२६) और जिस दिन अपराधी अपने हाथ चबा-चबा लेगा और कहेगा कि किसी तरह मैंने पैग़म्बर के साथ राह पकड़ी होती।(२७) हाय मेरी कमबख़्ती में फ़लाँ (आदमी) को यार बनाता।(२८) उसने तो शिक्षा आये पीछे भी मुझको बहका दिया और शैतान आदमियों को समय पर दगा देनेवाला है।(२९) और उस समय पैग़म्बर (मुहम्मद ख़ुदा के सामने) अर्ज़ करेंगे कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरे गरोह ने इस क़ुरान को बकवाद समझा।(३०) और (ऐ पैग़म्बर ! जिह तरह तुम्हारे ज़माने के काफ़िर तुम्हारे दुश्मन हैं) इसी तरह पापियों को हम हरएक पैग़म्बर के दुश्मन बनाते आये हैं) और हिदायत देने और मदद करने को तुम्हारा परवरदिगार काफ़ी है।(३१) और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर क़ुरान सारे का सारा एकदम से क्यों नहीं उतारा गया ? हम इसके द्वारा तुम्हारे दिल को तसल्ली देते हैं और हमने उसे ठहर-ठहरकर उतारा।(३२) और जो मिसाल यह तेरे पास लाते हैं, हम उसका ठीक जवाब और सच्चा बयान तुझे देते रहते हैं।(३३) जो लोग औंधे मुँह नरक की तरफ़ हाँके जायँगे यही लोग बुरी जगह में होंगे और वही बहुत भटके हुए हैं।(३४) [रुकू ३ आ. १४]

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उनके भाई हारूँ को उनके साथ नायब कर दिया।(३५) फिर हमने आज्ञा दी कि दोनो (भाई) उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को

झुठलाया है तो हमने उन लोगों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया ।(३६) और क़ौम नूह ने भी जब पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमने उनको डुबो दिया और उनको लोगों के लिए निशान उदाहरण बना दिया और हमने अन्यायियों को दुखदाई सज़ा तैयार कर रखी है ।(३७) (इसी तरह) आद और समूद और खन्दकवालों और उनके बीच-बीच में और बहुत से गरोहों को (हमने मार डाला) ।(३८) और सबों को मिसालें दे देकर समझाया था और हमने उनका सत्यानास कर दिया (३६) और यह (मक्के के काफ़िर) ज़रूर (क़ौम लूत की उस) बस्ती पर हो आये हैं जिस पर बुरा पथराव बरसाया गया था, तो क्या उन्होंने उसे न देखा होगा, मगर इन लोगोंको (मरे पीछे) जी उठने की उम्मेद ही नहीं ।(४०) और (ऐ पैग़म्बर !) जब यह लोग तुमको देखते हैं तुम्हारी हँसी बनाते हैं और छेड़ने के तौर पर कहते हैं कि क्या यही है जिसको अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है ?(४१) अगर हम मूर्तियों (की पूजा) पर जमे न रहते तो इस शख़्स ने हमको हमारे पूजितों से फिरा दिया था और चन्द रोज़ बाद (क़यामत के दिन जब यह लोग सज़ा को देख लेंगे तो जान लेंगे कि कौन गुमराह था ।(४२) (ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उस शख़्स पर भी नज़र की जिसने अपनी चाह को अपना ख़ुदा बना रखा है, तो क्या तुम निगरानी कर सकते हो ?(४३) या तुम ख़याल करते हो कि इन (काफ़िरों) में अक्सर सुनते या समझते हैं ? यह तो चौपायों की तरह हैं बल्कि यह (उनसे भी) गये-गुज़रे हैं ।(४४) [रुकू ४ आयात १०]

(ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने अपने परवरदिगार की तरफ़ नहीं देखा कि उसने साये को क्योंकर फैला रखा है और अगर चाहता तो उसको ठहराये रहता । फिर हमने सूरज को साया का कारण ठहरा दिया है ।(४५) फिर हमने साया को धीरे-धीरे अपनी तरफ़ समेट लिया ।(४६) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को ओढ़ना और नींद को आराम बनाया और दिन लोगों के चलने-फिरने के लिए बनाया । (४७) और वही है जो अपनी कृपा के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी

देने को भेजता है और हमने आसमान से पाक पानी उतारा।(४८) ताकि उसके द्वारा मुर्दा (सूखे) शहर में जान डाल दें और अपने पैदा किये हुए यानी बहुत से चारपायों और आदमियों को उससे पानी पिलावें।(४६) और हमने लोगों में (पानी को) तरह-तरह से बाँटा लेकिन अक्सर लोगों ने कृतघ्नता के सिवाय कुछ न माना।(५०) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डर सुनानेवाला (यानी पैग़म्बर) उठा खड़ा करते।(५१) ता (ऐ पैग़म्बर!) तुम काफ़िरों का कहा न मानो और क़ुरान (की दलीलों) से उनका सामना बड़े जोर से करो।(५२) और वही है जिसने दो दरियाओं को मिलाया एक (का पानी) मीठा मज़ेदार और (एक का) खारी कड़वा, और दोनों में एक रोक और अटल आड़ बना दी।(५३) और वही है जिसने पानी (वीर्य) से आदमी को पैदा किया। फिर उसको किसी का बेटा या बेटी और किसी का दामाद-बहू बनाया। और तुम्हारा परवरदिगार हर चीज पर शक्तिमान है।(५४) और काफ़िर ख़ुदा के सिवाय (झूठे पूजितों) को पूजते हैं जो न उनको नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न उनको नुक़सान पहुँचा सकते हैं और काफ़िर तो अपने परवरदिगार से पीठ दिये हुए हैं।(५५) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमको खुशखबरी सुनाने और सिर्फ़ डराने के लिए भेजा है।(५६) (इन लोगों से) कहो कि मैं तुमसे इस (ख़ुदा के हुक्म) पर कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, हाँ जो चाहे अपने परवरदिगार तक पहुँचने की राह पकड़े।(५७) (ऐ पैग़म्बर!) उस ज़िन्दा (चैतन्य) पर भरोसा रखो जो अमर है और तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करते रहो और अपने दासों के पापों से वह काफ़ी खबरदार है।(५८) जिसने आसमान और जमीन और जो कुछ आसमान और जमीन में है (सबको छः दिन में पैदा किया, फिर तख्त पर जा बैठा।(वही ख़ुदा) रहमान है, तो उसकी खबर किसी खबरदार से पूछोगे।(५६) और जब काफ़िरों से कहा जाता है कि रहमान ही की पूजा के लिए झुको, तो कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है? क्या जिसके आगे तुम हमें (सिजदा करने को कहो) उसी के आगे झुकने लगें? और उनकी नफ़रत बढ़ती है।(६०) [रुकू५आ.१६ ★सि.७]

बड़ी बरकत है उसकी जिसने आसमान में बुर्ज बनाये और उसमें चिराग़ और चाँद उजाला करनेवाला रखा।(६१) और वही है जिसने रात और दिन को जो एक के बाद एक आते-जाते रहते हैं ठहराया, उन लोगों के लिए जो ग़ौर करना चाहें या शुक्रगुज़ारी करना चाहें।(६२) और रहमान के दास तो वह हैं जो ज़मीन पर आजिज़ो (नम्रता) के साथ चलें और जब जाहिल उनसे बातें करने लगते हैं तो उनको सलाम करते हैं†,(६३) और जो रात अपने परवरदिगार के लिए सिजदा और खड़े रहने में काटते हैं।(६४) और जो कहते हैं ऐ हमारे परवरदिगार! नरक की सज़ा को हमसे दूर रख, क्योंकि उसकी सज़ा बड़ी मुसीबत है।(६५) वह ठहरने की बुरी जगह है और रहने की बुरी जगह है।(६६) और जब वह ख़र्च करते हैं तो वृथा ख़र्च नहीं करते और न बहुत तंगी करते हैं बल्कि उनका ख़र्च औसत दर्जे का होता है।(६७) और जो ख़ुदा के साथ (किसी) दूसरे पूजित को न पुकारें और वृथा किसी आदमी को जान से न मारें जिसको ख़ुदा ने हराम कर रखा है, और छिनाले के भी क़बूल करनेवाले न हों, और जो कोई यह काम करेगा वह पाप का बदला भुगतेगा।(६८) क़यामत के दिन उसको दोहरी सज़ा दी जावेगी और अपमान के साथ उसी हाल में हमेशा रहेगा।(६९) मगर जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक काम किये तो अल्लाह ऐसे लोगों के पापों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।(७०) और जिसने तौबा की और भले काम किये वह हक़ीक़त में ख़ुदा की तरफ़ फिर आये हैं।(७१) और वह जो झूठ गवाही न दें और जब बेहूदा कामों के पास होकर गुज़रें वज़ेदारी के साथ गुज़र जावें।(७२) और वह लोग जब उनको उनके परवरदिगार की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाई जावें तो अन्धे और बहरे होकर उन पर नहीं गिरते§।(७३) और जो दुआएँ माँगते हैं कि

† यानी वह इनसे उन्हीं की तरह मूर्खता का व्यवहार नहीं करते।

§ यानी यह लोग बुरी बातों से बहुत बचते रहते हैं।

ऐ हमारे परवरदिगार ! हमको हमारी बीबियों और संतान से आँखों की ठंडक दे और हमको परहेजगारों का पेशवा बना।(७४) यही लोग हैं जिनको उनके सब्र के बदले में (जन्नत में रहने को) बालाखाने (ऊपर के मकान) मिलेंगे और दुआ और सलाम के साथ वहाँ उनकी अगवानी की जायगी।(७५) (और यह लोग) जन्नत में हमेशा रहेंगे। क्या अच्छी जगह ठहरने के लिए है और क्या ही अच्छी जगह रहने के लिए है।(७६) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मेरा परवरदिगार तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता, सो तुमने उसकी आयतों को झुठलाया, पस अब तो उसका बवाल पड़कर रहेगा।(७७) [रुकू ६ आयात १७]

——:o:——

२६ सूरे शुअरा ४७

मक्का में उतरी, इसमें २२७ आयतें और ११ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। तो सीन मीम १) यह उसी किताब की आयतें हैं जिसका मतलब साफ़ है।(२) (ऐ पैग़म्बर !) शायद तू अपनी जान घोट मारे कि यह लोग ईमान (क्यों) नहीं लाते† ?(३) हम चाहें तो इन पर आसमान से एक निशानी उतारें, फिर तो इनकी गर्दनें उसके आगे झुककर रह जावेंगी।(४) और जब कभी रहमान (ख़ुदा) के पास से उनके पास कोई नई शिक्षा आती है तो उससे मुँह मोड़ते हैं।(५) यह लोग तो झुठला चुके, इनको उस (सज़ा) की हक़ीक़त मालूम हो जायगी जिसकी हँसी उड़ाया करते थे।(६) क्या इन लोगों ने जमीन की तरफ़ नहीं देखा कि हमने भाँति-भाँति की अच्छी-अच्छी चीजें कितनी उसमें पैदा की हैं।(७) इनमें निशानी है। मगर इनमें से अक्सर ईमान लानेवाला नहीं।(८) तुम्हारा परवरदिगार शक्तिशाली रहमवाला है।(९) [रुकू १ आयात ९]

† मुहम्मद साहब इस बात से बहुत दुखी रहते थे कि काफ़िर ईमान नहीं लाते थे। यह आयतें उनको संतोष दिला रही हैं।

और(ऐ पैग़म्बर !) जब तेरे परवर्रादिगार ने मूसा को बुलाया कि (इन) ज़ालिम लोगों (यानी फ़िरऔन की क़ौम) के पास जाओ ।(१०) क्या यह लोग नहीं डरते ?(११) (मूसा ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवरदिगार । मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठलायेंगे ।(१२) और (बातें करने में) मेरा दम रुकता है और मेरी ज़बान नहीं चलती (हकलाती है), इसलिये हारूँ को ईश्वरीय संदेशा भेज दे कि मेरे साथ चले (१३) और मेरे ज़िम्मे एक पाप उनका दावा भी है(मैंने एक क़िब्ती को मार दिया था)सो मैं डरता हूँ कि मुझको मार न डालें।(१४) फ़र्माया हरगिज़ नहीं । तुम दोनों (भाई) हमारी निशानियाँ लेकर जाओ । हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे । (१५) वह दोनों फ़िरऔन के पास आये और कहा कि हम सारे संसार के पालनकर्त्ता के भेजे हुए हैं ।(१६) तू इसराईल के बेटों को हमारे साथ भेज दे ।(१७) फ़िरऔन ने कहा क्या हमने तुझको अपने यहाँ (रखकर) बच्चे की तरह नहीं पाला था ? तू बरसों हमारे यहाँ रहा । (१८) और तूने एक हरकत भी की थी (याना क़िब्ती का ख़ून), और तू कृतघ्नी है ।(१६) (मूसा ने)कहा कि मैं उन दिनों वह (हरकत) कर बैठा जब मैं ग़लती पर था ।(२०) फिर जब मुझको तुमसे डर लगा मैं भाग गया । फिर मेरे पालनकर्त्ता ने मुझे (पैग़म्बरी के) अधिकार दिये और पैग़म्बरों में दाख़िल कर लिया । (२१) और वह एहसान है जो तू मुझ पर रखता है (या) कि तूने इसराईल की संतान को ग़ुलाम बना रखा है† ? (२२) फ़िरऔन ने पूछा तमाम जहान का पालनकर्त्ता कौन है ? (२३) मूसा ने कहा, आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें है सबका वही मालिक है, अगर तुम यक़ीन करो ।(२४) फ़िरऔन ने अपने मुसाहिबों से जो उसके आस-पास थे कहा क्या तुम (मूसा की)

† फ़िरऔन ने मूसा को पाला-पोसा था और उनको बहुत दिनों अच्छी तरह रखा था। मगर मूसा ने अपनी अपेक्षा अपनी जाति का अधिकतर खयाल किया और उनको स्वतंत्र करना चाहा, इसीलिये यह कहा, "मेरे लालन-पालन का एहसान मुझपर क्या रखता है जबकि तूने मेरी क़ौम को दास बना रखा है ।"

बातें नहीं सुनते ?(२५) (मूसा ने) कहा वही तुम लोगों का और तुम्हारे बाप-दादा का पालनकर्त्ता है।(२६) (फ़िरऔन ने) कहा कि (हो न हो)तुम्हारा पैग़म्बर जो तुम्हारे पास भेजा गया बावला है।(२७) मूसा ने कहा (वही) पूर्व और पश्चिम का और जो कुछ उनके बीच में है सबका मालिक है, अगर तुम अक़्ल रखते हो। (२८) (फ़िरऔन ने) कहा अगर मेरे सिवाय (किसी और को) तूने ख़ुदा माना तो मैं तुझको क़ैद कर दूँगा।(२९) (मूसा ने) कहा कि अगर मैं तुझको एक खुला हुआ चमत्कार दिखाऊँ। (३०) (फ़िरऔन ने) कहा अगर तू सच्चा है तो ला दिखा।(३१) इस पर (मूसा ने) अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक ज़ाहिरा साँप है। (३२) और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकालने के साथ सब देखनेवालों की नज़र में बड़ा चमक रहा था। (३३) [रुकू २ आयात २४]

(फ़िरऔन ने) अपने दरबारियों से जो इर्द-गिर्द थे कहा कि इसमें शक नहीं कि यह कोई जानकार जादूगर है। (३४) और चाहता है कि तुमको अपने जादू से देश से बाहर निकाल दे, तो तुम लोग क्या सलाह देते हो ? (३५) (दरबारियों ने) निवेदन किया कि मूसा और हारू को रोको और मुल्क में जादूगरों को जमा करने को हरकारे दौड़ाओ (३६) कि वह तमाम बड़े-बड़े जादूगरों को तुम्हारे पास लावें।(३७) ठहरे हुए दिन जादूगर जमा किये गये (३८) और लोगों में मनादी करा दी गई कि अब तुम लोग जमा होगे या नहीं। (३९) अगर जादूगर (मूसा) ही जीत में रहा तो शायद हम उन्हीं का दीन क़बूल कर लें। (४०) तो जब जादूगर आये, उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि अगर हम जीते तो हमको क्या इनाम मिलेगा ? (४१) (फ़िरऔन ने) कहा हाँ ज़रूर, जीतने पर तुम पास बैठनेवालों में से होगे†।(४२) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ

† यानी हमारे दरबारियों में से हो जाओगे, जिससे ऊँचा कोई पद नहीं हो सकता।

तुमको डालना मंजूर हो डाल चलो।(४३) इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ डाल दीं और बोले कि फ़िरऔन के प्रताप से हम ही जबरदस्त रहेंगे।(४४) इस पर मूसा ने अपनी लाठी (मैदान में) डाली तो बस वह उन (जादुओं) को जो जादूगर न लाये थे एकदम से निगलने लगी।(४५) यह देखकर जादूगर सिजदे में गिर पड़े। (४६) और बोले कि हम तमाम जहान के परवरदिगार पर ईमान लाये, (४७) जो मूसा और हारूँ का परवरदिगार है।(४८) (फ़िरऔन ने) कहा क्या तुम मेरे हुक्म देने से पहले ईमान लाये ? हो न हो यह (मूसा) तुम्हारा बड़ा गुरु है, जिसने तुम्हें जादू सिखलाया है सो तुमको मालूम हो जायगा। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव उल्टे काटूँगा और तुम सबको फाँसी दूँगा।(४९) वह बोले कुछ हर्ज की बात नहीं, हम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट जावेंगे‡।(५०) हम उम्मेद रखते हैं कि हमारा परवरदिगार हमारे अपराधों को क्षमा कर दे, इसलिए कि हम सबसे पहले ईमान लाये हैं।(५१) [रुकू ३ आ. १८]

और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि हमारे बन्दों (यानी इसराईल की संतान) का रातों रात निकाल ले जा (क्योंकि) तुम्हारा पीछा किया जावेगा।(५२) इस पर फ़िरऔन ने शहरों में हरकारे दौड़ाये (५३) कि इसराईल की संतान थोड़ी-सी जमात हैं।(५४) और उन्होंने हमको क्रोध दिलाया है।(५५) और हमारी जमात हथियार-बन्द है।(५६) ग़रज़ हमने फ़िरऔन के लोगों को बाग़ों से, चश्मों से(५७) और ख़ज़ानों से और इज्ज़त की जगह से निकाल बाहर किया (५८) ऐसा ही और इसराईल की संतान को उन चीज़ों का वारिस बनाया।(५९) तो फ़िरऔन के लोगों ने दिन निकलते-निकलते इसराईल के बेटों का पीछा किया। (६०) फिर जब दोनो जमातें एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा के लोग कहने लगे कि अब तो दुश्मनों ने हमको घेर लिया। (६१) (मूसा ने) कहा हरगिज़ नहीं, मेरे साथ मेरा परवरदिगार है, वह मुझको राह दिखायेगा।(६२)

‡ यानी अधिक से अधिक तू हमको मार डालेगा और क्या कर लेगा।

फिर हमने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो, चुनाँचे (मूसा ने दे मारी) दरिया फट गया और हरएक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था।(६३) और उसी मौक़े के पास हम दूसरे लोगों (फ़िरऔन वालों) को लिवा लाये।(६४) और हमने मूसा और जो लोग उनके पास थे सबको बचा लिया।(६५) फिर दूसरों (फ़िरऔन वालों) को डुबो दिया।(६६) इसमें एक चमत्कार है और फ़िरऔन के लोगों में से अक्सर ईमान लानेवाले न थे।(६७) और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा परवरदिगार अलबत्ता ज़बरदस्त रहमवाला है।(६८) [रुकू ४ आयात १७]

(और ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को इब्राहीम का हाल सुनाओ।(६९) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से पूछा कि तुम किस चीज़ को पूजते हो?(७०) तो उन्होंने जवाब दिया कि हम मूर्तियों को पूजते हैं और उन्हीं की सेवा करते रहते हैं।(७१) (इब्राहीम ने) पूछा कि जब तुम (उनको) पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी सुनते हैं ?(७२) या तुमको फ़ायदा या नुक़सान पहुँचा सकते हैं?(७३) उन्होंने कहा नहीं। मगर हमने अपने बड़ों को ऐसा ही करते देखा है।(७४) (इब्राहीम ने) कहा भला देखो तो जिन्हें तुम पूजते हो, (७५) तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादे पूजते चले आये हों।(७६) यह तो मेरे दुश्मन हैं, मगर संसार का परवरदिगार साथी है।(७७) जिसने मुझको पैदा किया वह राह दिखाये।(७८) और जो मुझको खिलाता और पिलाता है (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूँ वही मुझको अच्छा करता है।(८०) और जो मुझको मारेगा और फिर जिलायेगा।(८१) और मुझे उम्मेद है कि बदले के दिन मेरे अपराध माफ़ करेगा।(८२) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझको समझ दे और नेक दासों में शामिल कर।(८३) और आनेवाली नस्लों में मेरा अच्छा ज़िक्र जारी रख।(८४) और जन्नत की न्यामतों के वारिसों में से मुझको भी एक (वारिस) बना।(८५) और मेरे बाप को क्षमा कर, वह गुमराहों में से था।(८६) और जब लोग (दुबारा जिलाकर) खड़े किये जायेंगे

मुझको उस दिन बदनाम न कर।(८७) उस दिन माल और बेटे काम न आवेंगे।(८८) अगर जो पाक दिल लेकर खुदा के सामने हाज़िर होगा।(८९) और जन्नत में परहेज़गारों के क़रीब लाया जायगा।(९०) और नरक गुमराहों के वास्ते खोला जायगा।(९१) और उनसे कहा जायगा कि खुदा के सिवाय जिन चीज़ों को तुम पूजते थे कहाँ हैं?(९२) क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सके या बदला ले सकते हैं? (९३) फिर वे (पूजित) और वह (लोग) औंधे मुँह नरक में झोंक दिये जायेंगे।(९४) और इबलीस का सब लश्कर औंधे मुँह नरक में ढकेल दिया जायगा।(९५) गुमराह और उनके पूजित वहाँ (आपस में झगड़ते हुए) यों कहेंगे (९६) खुदा की क़सम, हम तो ज़ाहिरा गुमराही में थे।(९७) जब हमने तुमको संसार के परवरदिगार के बराबर ठहराया था (९८) और हमको तो (पूजितों) पापियों ने गुमराह किया था। (९९) तो न तो कोई (हमारी) सिफ़ारिश करनेवाला है, (१००) और न कोई दिली दोस्त। (१०१) सो यदि हमको (दुनिया में) फिर लौटकर जाना हो तो हम ईमानवालों में रहे। (१०२) बेशक (इब्राहीम) के इस (क़िस्से) में चमत्कार है और इब्राहीम के गरोह में अक्सर ईमान लानेवाले न थे।(१०३) और पैग़म्बर!) तेरा परवरदिगार ज़बरदस्त रहमवाला है।(१०४) रुकू५ आ.३६]

(इसी तरह) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।(१०५) उनसे उनके भाई नूह ने कहा क्या तुम (लोग खुदा से) नहीं डरते?(१०६) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ।(१०७) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो।(१०८) और मैं इस (समझाने) पर तुमसे मज़दूरी नहीं माँगता। मेरी मज़दूरी तो दुनिया के परवरदिगार पर है।(१०९) खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (११०) वह कहने लगे कि क्या हम तुम्हारी बात को मान लें और हम देखते हैं छोटे दर्जे के (लोग) तुम्हारे पीछे हो गये हैं।(१११) कहा जो यह लोग करते रहे

† हर सुधार करनेवाले के साथ निम्न श्रेणी के लोग होते हैं, इसी तरह नूह पर ईमान लाने वाले भी थे।

हैं, मुझको क्या ख़बर है।(११२) इनका हिसाब तो सिर्फ़ अल्लाह पर है अगर तुम समझो।(११३) और मैं ईमानवालों को धक्का देनेवाला नहीं हूँ। (११४) मैं तो (लोगों को) साफ़ तौर पर (ख़ुदा की सज़ा से) डरानेवाला हूँ। (११५) वह बोले नूह! अगर तू (अपनी हरकत से) बाज़ न आया तो ज़रूर पत्थर से मारा जायगा। (११६) (नूह ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी क़ौम ने मुझको झुठलाया।(११७) तू मुझमें और इन लोगों में फ़ैसला कर दे और मुझे और ईमानवालों को छुटकारा दे।(११८) फिर हमने नूह और उन लोगों को जो भरी हुई किश्ती में उनके साथ थे (तूफ़ान से) बचा दिया।(११९) फिर इसके बाद हमने बाक़ी लोगों को डुबो दिया।(१२०) इसमें अलबत्ता शिक्षा है और नूह के गरोह के बहुत लोग ईमान लाने वाले न थे। (१२१) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा परवरदिगार अलबत्ता वही ज़ोरावर रहमवाला है।(१२२) [रुकू ६ आयात १८]

(इसी तरह क़ौम) आद ने पैग़म्बरों को झुठलाया।(१२३) जब उनके भाई हूद ने इनसे कहा क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते? (१२४) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ।(१२५) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो।(१२६) और मैं इस पर तुमसे कुछ (बदला) तो नहीं माँगता, मेरी उजरत तो बस संसार के परवरदिगार पर है।(१२७) क्या तुम हर ऊँची जगह पर बे ज़रूरत यादगारें† बनाते हो।(१२८) और (बड़ी कारीगरी के) महल बनाते हो। गोया तुम (संसार में) हमेशा रहोगे। (१२९) और जब हाथ डालते हो तो बड़ी सख़्ती§ से पकड़ते हो। (१३०) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१३१) और उस (के कोप) से डरो, जिसने तुम्हारी (तमाम) चीज़ों से मदद की, जो तुमको मालूम है।(१३२) चारपायों और बेटों से (१३३) और बाग़ों और चश्मों से (तुम्हारी) मदद की।(१३४) मैं तुम्हारी बाबत बड़े दिन की सज़ा से डरता हूँ।(१३५)

† लोगों को ऊँची-ऊँची इमारतें बनवाने का बड़ा शौक़ था।

§ यानी जब अत्याचार करते हो तो कठोर हो जाते हो।

वह बोले तुम हमको शिक्षा करो या न करो हमको (तो सब) बराबर हैं।(१३६) यह शिक्षा देना अगले लोगों का एक स्वभाव है।(१३७) और हम पर कोई दुख नहीं पड़ने का। (१३८) ग़रज़ क़ौम आद ने हूद को झुठलाया तो हमने उनको मार डाला। इसमें एक शिक्षा है। और हूद की क़ौम में अक्सर ईमान लानेवाले न थे। (१३६) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारा परवरदिगार ज़ोरावर रहमवाला है। (१४०) [रुकू ७ आयात १८]

समूद ने पैग़म्बरों को भुठलाया। (१४१) फिर उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते?(१४२) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ।(१४३) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (१४४) और मैं इस पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं चाहता और मेरी मज़दूरी तो संसार के परवरदिगार पर है।(१४५) क्या जो चीजें यहाँ हैं, (१४६) (यानी) बाग़ों और चश्मों में, (१४७) और खेतों और खजूर में जिनके गुच्छे (मारे बोझ के) टूटे पड़ते हैं।(१४८) तुम इन्हीं में छोड़ दिये जाओगे। ख़ुशी से पहाड़ों को काट-काटकर घर बनाते हो। (१४६) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१५०) और (हद से) बढ़े जानेवालों के कहे में न आ जाना, (१५१) जो मुल्कों में फ़साद डालते हैं और दुरुस्ती नहीं करते। (१५२) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१५३) तुम भी हम ही जैसे आदमी हो और अगर सच्चे हो तो कोई चमत्कार ला दिखाओ।(१५४) (सालेह ने कहा) यह ऊँटनी चमत्कार है। पानी पीने की (एक दिन की) बारी इसकी है और तुम्हारे पानी पीने को एक दिन† मुक़र्रर है।(१५५) और इसको किसी तरह का नुक़सान न पहुँचाना वरना बड़े दिन की सज़ा तुमको आयेगी।(१५६) इस पर (भी) लोगों ने उसकी कूचें (एड़ी के ऊपर के हिस्से)

† हज़रत सालेह की ऊँटनी को भागते देखकर दूसरे मवेशी भाग जाते थे, इसलिए यह ठहरी कि एक दिन ऊँटनी घाट पर जाय, दूसरे दिन पशु जायें।

काट डाले, फिर पछताये।(१५७) आख़िरकार उनको सज़ा ने पकड़ लिया। इसमें(भी एक बड़ी) शिक्षा है और सालेह की क़ौम के बहुत-से लोग ईमान लाने वाले न थे। (१५८) और (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा परवरदिगार ज़ोरावर रहमवाला है।(१५९) [रुकू ८ आयात १६]

(इसी तरह) क़ौम लूत ने पैग़म्बरों को झुठलाया।(१६०) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा क्या तुम नहीं डरते।(१६१) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ।(१६२) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।(१६३) और मैं इस पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी तो संसार के परवरदिगार पर है।(१६४) क्या तुम दुनिया के लोगों में से लड़कों पर दौड़ते हो†।(१६५) और तुम्हारे पालन-कर्त्ता ने जो तुम्हारे लिये बीबियाँ दी हैं उन्हें छोड़ देते हो बल्कि तुम सरकश क़ौम हो।(१६६) वह बोले लूत ! अगर तुम (इन बातों से) बाज़ न आओगे तो देश से निकाल बाहर करेंगे।(१६७) (लूत ने) कहा कि मैं तुम्हारे (इस) काम का दुश्मन हूँ।(१६८) (लूत ने दुआ की कि) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझको और मेरे घरवालों को इन (नापाक) कामों से जो वह लोग करते हैं छुटकारा दे।(१६९) फिर हमने लूत को और उनके घरवालों को सबको छुटकारा दिया। (१७०) मगर (लूत की बूढ़ी) औरत बाक़ी रही§।(१७१) फिर हमने बाक़ी लोगों को हलाक़ कर मारा।(१७२) और इन पर पत्थर बरसाये। बुरा पत्थरों का बरसाना था जो उन लोगों पर बरसा जो (हमारी सज़ा से) डराये गये थे।(१७३) इसमें निशानी है। और लूत की क़ौम के बहुधा लोग तो ईमान लानेवाले न थे।(१७४) और तुम्हारा परवरदिगार ज़ोरावर रहमवाला है।(१७५) [रुकू ९ आयात १६]

† यह जाति स्त्री का काम सुन्दर बालकों से निकालती थी। अर्थात् महापाप करती थी।

§ लूत को पहले ही से ईश्वर के कोप के आने का समाचार मिल चुका था। उन्होंने जब अपनी पत्नी से बस्ती के बाहर निकल चलने को कहा तो उसने न माना और अन्त में नगर-निवासियों के साथ नष्ट हो गई।

इसी तरह वन के रहनेवालों ने पैग़म्बरों को झुठलाया ।(१७६) जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते ?(१७७) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ ।(१७८) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो ।(१७९) और मैं इस पर तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं चाहता मेरी मज़दूरी तो संसार के परवरदिगार पर है ।(१८०) (कोई चीज़ पैमाने से नापकर दिया करो तो) नाप भरकर दिया करो । (लोगों को) नुक़सान पहुँचानेवाले न बनो ।(१८१) और तौला करो तो (तराज़ू की डंडी) सीधी रखकर तौला करो । (१८२) और लोगों को उनकी चीज़ें (जो ख़रीदें) कमी से न दिया करो और मुल्क में फ़साद फैलाते न फिरो । (१८३) और उस (ख़ुदा) से डरते रहो जिसने तुमको और तुमसे अगलों को पैदा किया ।(१८४) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है ।(१८५) और तुम तो हमारी तरह के एक आदमी हो और हम तुमको झूठा ही समझते हैं ।(१८६) और सच्चे हो तो हम पर आसमान से एक टुकड़ा गिरा दो ।(१८७) (शुऐब ने) कहा जो तुम कर रहे हो मेरा परवरदिगार उसको ख़ूब जानता है ।(१८८) ग़रज़ उन लोगों ने शुऐब को झुठलाया तो उनको सायबान* की सज़ा ने आ घेरा, बेशक सायबान ही की सज़ा थी ।(१८९) इसमें बेशक शिक्षा है और शुऐब के गरोह के बहुधा लोग ईमान लानेवाले न थे । (१९०) और तुम्हारा परवरदिगार ज़ोरावर रहमवाला है ।(१९१) [रुकू १० आयात १६]

और यह (क़ुरान) दुनिया के परवरदिगार का उतारा हुआ है ।(१९२) इसको जिब्राईल अमीन ने उतारा है ।(१९३) तेरे दिल पर ताकि तू डरानेवालों में हो जाय । (१९४) साफ़ अरबी ज़बान ।(१९५) इसकी ख़बर अगले पैग़म्बरों की किताबों में है । (१९६) क्या लोगों के लिए यह दलील नहीं है कि इसराईल के बेटों में विद्वान इस होनहार से जानकार हैं । (१९७) और अगर हम क़ुरान को

* बादल ऐसा छाया जैसे सायबान सर पर तान दिया जाये । इस बादल से पानी की जगह आग बरसी ।

किसी ऊपरी ज़बानवाले पर (उसकी ज़बान में) उतारते, (१९८) और वह उसे इन (अरब वालों) को पढ़कर सुनाते तो वह उस पर ईमान न लाते।(१९९) इसी तरह के इन्कार को हमने अपराधियों के दिल में जमा दिया है।(२००) जब तक दुखदाई सज़ा न देख लें इस पर ईमान न लावेंगे। (२०१) वह (सज़ा) इन पर यकायक इनके सामने आ जायगी और इनको ख़बर भी न होगी।(२०२) फिर कहेंगे हमें कुछ मुहलत मिल सकती है।(२०३) क्या यह लोग हमारी सज़ा के लिए जल्दी मचा रहे हैं।(२०४) तो (पैग़म्बर!) ज़रा देखो तो सही अगर हम चन्द साल इनको (दुनिया) के फ़ायदे उठाने दें।(२०५) फिर जिस सज़ा का इनसे वादा किया जाता है वह उनके सामने आवेगी।(२०६) तो वह जो इन्होंने (दुनिया के) फ़ायदे उठा लिए इनके क्या काम आ सकते हैं।(२०७) और हमने किसी गाँव को नहीं मारा जब तक उनके पास डर सुनानेवाले (पैग़म्बर) न आयें।(२०८) याद दिलाने को और हमारा काम ज़ुल्म करना नहीं है।(२०९) और इस (क़ुरान) को (जैसा यह लोग ख़याल करते हैं) शैतान लेकर नहीं उतरे।(२१०) और न यह काम उनके करने का है और न वह (इनको) कर सकते हैं।(२११) वह तो सुनने से दूर रखे गये हैं।(२१२) तो (पैग़म्बर!) तुम ख़ुदा के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारने लगना वरना तुम भी सज़ा में फँस जाओगे।(२१३) और अपने पास के रिश्तेदारों को (ख़ुदा की सज़ा से) डराओ।(२१४) और जो ईमानवालों में से तेरे पीछे हो गया है उससे ख़ातिरदारी के साथ पेश आओ। (२१५) अगर लोग तेरा कहा न मानें तो कह दे कि मैं तुम्हारे कर्मों से बरी हूँ।(२१६) और ज़ोरावर मेहरबान (ख़ुदा) पर भरोसा रखो।(२१७) तो जो तुम नमाज़ में खड़े होते हो तो वह तुम्हारे खड़े होने को देखता है (२१८) और नमाज़ियों में तेरा फिरना देखता है। (२१९) बेशक वही सुनता, जानता है।(२२०) (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों से कहो कि मैं तुमको बताऊँ कि किस पर शैतान उतरा करते हैं। (२२१) वह हर झूठे कुकर्मी पर उतरा

करते हैं।(२२२) शैतान सुनी सुनाई बात (उन पर) डाल देते हैं और उनमें बहुतेरे झूठे ही होते हैं।(२२३) कवि (शायर) की बात पर वही चले जो गुमराह हों। (२२४) क्या तूने न देखा कि यह (कवि) हरएक मैदान में सिर मारते फिरते हैं! (२२५) और ऐसी बातें कहा करते हैं जो खुदा नहीं करते।(२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये और बहुतायत से खुदा का ज़िक्र किया और उन पर ज़ुल्म हुए पीछे बदला लिया और जिन्होंने (लोगों पर) ज़ुल्म किये हैं उनको जल्दी मालूम हो जायगा किस करवट पर उलटते हैं।(२२७) [रुकू ११ आयात ३६]

---

२७ सूरे नम्ल ४८

मक्का में उतरी, इसमें ९३ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। तो-सीन। यह क़ुरान यानी किताब की चंद आयतें हैं।(१) जो ईमानवालों के लिए शिक्षा और खुशखबरी है (२) जो नमाज़ पढ़ते, ज़कात देते और आख़ीर दिन का भी यक़ीन रखते हैं।(३) जो लोग आख़ीर दिन का यक़ीन नहीं रखते हमने उनके काम उन्हें अच्छे कर दिखाये तो यह लोग भटके फिरते हैं।(४) यही लोग हैं जिनको बुरी तरह की सज़ा होती है और यही लोग क़यामत में ज़्यादा नुक़सान में रहेंगे।(५) और तुझको तो क़ुरान एक हिकमतवाले खबरदार (खुदा) से मिलता है।(६) जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि मुझको आग दिखलाई दी है। मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर या एक सुलगता अंगारा लाऊँगा ताकि तुम तापो।(७) फिर जब मूसा आग के पास आये तो उनको आवाज़ आई कि वह जो आग में है और वह जो इस (आग) के आस-पास है बरकतवाला है और अल्लाह तमाम संसार का परवरदिगार और पाक है।(८) (ऐ मूसा) मैं ज़ोरावर हिकमतवाला अल्लाह हूँ।(९) और अपनी लाठी डाल। तो जब (मूसा ने) देखा

कि लाठी चल रही है मानिन्द ज़िन्दा साँप के तो पीठ फेरकर भागे और पीछे न देखा। (हमने फ़र्माया) मूसा डरो मत, हमारे पास पैग़म्बर नहीं डरा करते।(१०) मगर (जिसने) कोई क़सूर किया हो फिर अपराध के बाद नेकी को तो मैं बख़्शनेवाला मेहरबान हूँ।(११) और अपना हाथ अपनी छाती पर रख फिर निकालो तो वह बेरोग सफ़ेद निकलेगा। फ़िरऔन और उसकी क़ौम के लोगों की तरफ़ यह नये चमत्कार हैं कि वे अन्यायी हैं।(१२) तो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देनेवाले चमत्कार आये तो कहने लगे कि यह तो ज़ाहिरा जादू है। (१३) और बावजूद कि उनके दिल क़बूल कर चुके थे। (मगर) उन्होंने हेकड़ी और शेखी से उन्हें न माना तो (ऐ पैग़म्बर!) देख झगड़ालुओं का कैसा अन्त हुआ। (१४) [रुकू १ आयात १४]

और हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म दिया था और दोनों ने कहा कि ख़ुदा का धन्यवाद है जिसने हमको अपने बहुत-से ईमानवाले बन्दों पर बुज़ुर्गी दी है।(१५) और सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा लोगों! हमको (ख़ुदा की तरफ़ से) परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हमको हर तरह के सामान मिले, यह (ख़ुदा की) ज़ाहिरा कृपा है।(१६) और सुलेमान का लश्कर जिन्नों और आदमियों और चींटियों में से जमा किये गये तो वह कतार बाँध-बाँधकर खड़े किये जाते थे। (१७) यहाँ तक कि जब चींटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा कि चींटियों, अपने बिलों में घुस जाओ। ऐसा न हो कि सुलेमान और सुलेमान का लश्कर तुमको कुचल डाले और उनको ख़बर भी न हो। (१८) चींटी की (इस) बात से सुलेमान हँसे और कहने लगे कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको सामर्थ्य दे कि जैसे एहसान तूने मुझ पर और मेरे मा-बाप पर किये हैं तेरे उन एहसानों का शुक्र अदा करूँ और ऐसे अच्छे काम करता रहूँ कि जिनको तू पसंद फ़र्मा। तू मुझे अपनी बख़्शीश से अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर। (१९) और सुलेमान ने चिड़ियों की हाज़िरी ली तो कहा कि क्या वजह है जो मैं हुदहुद को नहीं देखता या वह ग़ैरहाज़िर है। (२०)

मैं उसको ज़रूर सख्त सज़ा दूँगा या उसे हलाल कर डालूँगा या वह हमारे हुज़ूर में कोई वजह (ग़ैरहाज़िरी की) बयान करे। (२१) फिर थोड़ा देर बाद हुदहुद आ गया और कहने लगा कि मुझको एक ऐसा हाल मालूम हुआ है जो तुम्हें मालूम नहीं, और मैं (शहर) सबा की एक जची खबर लाया हूँ। (२२) मैंने एक औरत को देखा जो यहाँ की रानी है और हर तरह के सामान (राज्य) उसको मिले हैं और उनके यहाँ बड़ा तख्त है।(२३) मैंने मलिका और उसके लोगों को देखा कि ख़ुदा को छोड़कर सूरज को सिजदा करते हैं और शैतान ने उनके कामों को उन्हें अच्छा कर दिखाया है और उनको सीधी राह से रोक दिया है तो उनको नहीं सूझ पड़ता।(२४) फिर ख़ुदा ही के आगे (क्यों) न सिजदा करें जो आसमान और ज़मीन की छिपी हुई चीज़ों को ज़ाहिर करता है और जो काम तुम छिपाकर करते हो या ज़ाहिरा करते हो वह सबसे जानकार है।(२५) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं, सिर्फ़ वही बड़े तख्त का मालिक है।(२६) ☆[सि० ८] कहा अब देखूँगा कि तू सच्चा है या झूठा।(२७) यह हमारी लिखावट लेकर चला जा और इसको उनकी तरफ़ डाल दे। फिर उनसे हट जा, फिर देख कि वह लोग क्या जवाब देते हैं। (२८) बोली † ऐ दरबारियों! एक इज्ज़त का ख़त मेरी तरफ़ डाला गया है।(२९) यह सुलेमान की तरफ़ से है और शुरू अल्लाह के नाम से है जो बड़ा रहमवाला मेहरबान है।(३०) और यह कि हमसे सरकशी न करो और हुक्मबरदार बनकर हमारे सामने चले आओ। (३१) [रुकू २ आयात १७]

बोली ऐ दरबारियों! मेरे मामलों में अपनी राय दो। जब तक तुम मेरे सामने मौजूद न हो मैं किसी काम में पक्का हुक्म नहीं दिया करती। (३२) (दरबारियों ने) निवेदन किया कि हम ताक़तवर और बड़े लड़नेवाले हैं और तुझे अख्तियार है जैसा चाहे हुक्म दे। देखें तू क्या हुक्म देती है (३३) (वह) बोली बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं तो उसको ख़राब करते हैं और वहाँ के इज्ज़तदारों

† यानी रानी सबा की, जिसका नाम बिलक़ीस था।

को बेइज्जत करते हैं, ऐसा ही करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ़ नज़र भेजकर देखती हूँ कि दूत क्या जवाब लेकर आते हैं। (३५) फिर जब सुलेमान के सामने (नज़र लेकर) आया तो (सुलेमान ने) कहा क्या तुम लोग माल से मेरी सहायता करते हो। जो कुछ ख़ुदा ने मुझको दे रखा है बेहतर है, बल्कि तुम अपने तुहफ़े से ख़ुश रहो।(३६) (ऐ दूत! जिसने तुझे भेजा है) उन्हीं के पास लौट जा और (हम) ऐसा लश्कर लेकर उन पर चढ़ाई करेंगे कि जिसका उनसे सामना न हो सकेगा और हम वहाँ से उनको अपमानित करके निकाल देंगे।(३७) (सुलेमान ने) कहा ऐ दरबारियों! कोई तुम में ऐसा भी है कि उस औरत का तख़्त मेरे पास उठा लाये उससे पहले कि वह (इस पर) मुसलमान होकर हाज़िर हो ?(३८) (इस पर) जिन्नों में से एक बोला कि दरबार के बरख़ास्त होने के पहले मैं वह तख़्त ले आऊँगा। मैं उसके उठा लाने पर अमानतदार ज़ोरावर हूँ। (३९) एक आदमी जिसको किताब का इल्म था बोला कि मैं आँख झपकने के पहले तख़्त को तुम्हारे सामने ला हाज़िर करूंगा। (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास मौजूद पाया तो बोल उठा कि यह भी मेरे परवरदिगार का एहसान है ताकि मुझे आज़माये कि मैं धन्यवाद देता हूँ या कृतघ्नता (नाशुक्री) करता हूँ। और कोई (ख़ुदा का) धन्यवाद देता है तो वह अपने लिए धन्यवाद देता है और कोई कृतघ्नता करता है तो मेरा परवरदिगार बेपरवाह दाता है। (४०) (सुलेमान ने) हुक्म दयाकि मलिका (की अक़्ल-आज़माई) के लिए उस तख़्त की सूरत बदल दो ताकि हम देखें कि वह पहचानती है या उनमें होती है जो राह पर नहीं आते।(४१) फिर जब आई तो (उससे) कहा गया कि ऐसा ही तेरा तख़्त है ? वह बोली गोया वही है और (सुलेमान से बोली कि) मुझे तो इससे पहले मालूम हो गया था और मैं मान गई थी।(४२) और वह ख़ुदा के सिवाय (सूरज को) पूजती थी, उससे उसको रोका गया, क्योंकि वह काफ़िरों में से थी। (४३) उससे कहा गया कि महल में दाख़िल हो, तो जब उसने महल को देखा तो उसको पानी का हौज़ समझी और दोनो पिंडलियाँ खोल दीं। (सुलेमान ने

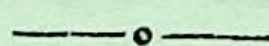
कहा यह तो शीश) महल है जिसमें शोशे जड़े हैं। बोली ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने अपना ही नुक़सान किया और अब मैं सुलेमान के साथ होकर अल्लाह दोनो जहान के पालनकर्ता पर ईमान लाई। (४४) [रुकू ३ आयात १३]

और हमने (क़ौम) समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को (पैग़म्बर बनाकर) भेजा था कि ख़ुदा की पूजा करो, तो सालेह के आते ही वह लोग दो फ़रीक़ हो गये और झगड़ने लगे। (४५) (सालेह ने) कहा भाइयों! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो अल्लाह के सामने क्यों नहीं क्षमा माँगते, शायद तुम पर रहम हो। (४६) वह बोले हमने तुझे और इन लोगों को जो तेरे साथ हैं बड़ा ही बुरा पाया है। (सालेह ने) कहा तुम्हारी बदक़िस्मती ख़ुदा की तरफ़ है। बल्कि तुम लोग जाँचे जा रहे हो। (४७) और शहर में नौ आदमी थे जो देश में फ़साद करते और सलाह न करते थे। (४८) उन्होंने कहा आपस में ख़ुदा की क़सम खाओ कि हम जरूर सालेह को और उसके घरवालों को रात के समय जा मारेंगे। फिर उसके वारिस से कह देंगे कि सालेह के घरवालों के मारे जाने के समय हम मौजूद न थे और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (४९) ग़रज़ वह एक दाँव चले और हम भी एक दाँव चले और उनको ख़बर भी न हुई (५०) तो (ऐ पैग़म्बर!) देखा कि उनके दाँव का कैसा परिणाम हुआ कि हमने उनको और उनकी सब क़ौम को हलाक कर डाला। (५१) अब यह कि उनके घर अन्यायियों से ख़ाली पड़े हैं। इसमें उनको जो जानते हैं शिक्षा है। (५२) और जो लोग ईमान लाये और ख़ुदा से डरते थे उनको हमने बचा लिया। (५३) और लूत ने जब अपनी क़ौम से कहा कि तुम बेशर्मी करते हो और देखते जाते हो* । (५४) क्या तुम औरतों को छोड़कर मर्दों पर ललचाकर दौड़ते हो? बात यह है कि तुम बेसमझ हो। (५५) तो लूत के क़ौम का इसके सिवाय और कुछ जवाब न था कि लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल बाहर

* यानी जानते हो कि यह कैसा बुरा काम है।

करो। (क्योंकि) यह लोग बड़े पाक बनना चाहते हैं। (५६) तो हमने लूत को और उनके खानदान के लोगों को (सज़ा से) बचा लिया, मगर उनकी बीबी जिसकी तक़दीर में लिख चुके थे कि वह पीछे रहनेवालों में होगी।(५७) और हमने उन पर पत्थर बरसाये, सो उन लोगों पर बरसे जो डराये जा चुके थे। (५८) [रुकू ४ आयात १४]

(ऐ पैग़म्बर !) कहो खुदा का शुक्र है और खुदा के बन्दों को सलाम है जिनको उसने क़बूल किया। भला अल्लाह बेहतर है या जिनको ये शरीक ठहराते हैं ? (५९)



बीसवाँ पारा (अम्मन खलक़)

भला आसमान व ज़मीन किसने पैदा किये और आसमान से तुम लोगों के लिए (किसने) पानी बरसाया? फिर पानी के ज़रिये से हमने उम्दा बाग़ पैदा किये। तुम्हारे बस की तो बात न थी कि तुम उनके दरख्तों को उगा सको। क्या खुदा के साथ (कोई और) पूजित है ? मगर यही लोग राह से मुड़ते हैं।(६०) भला किसने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच में नदी-नाले बनाए और उसके लिए अटल पहाड़ बनाये और दो समुद्रों में खास सीमा रखी। क्या अल्लाह के साथ (कोई और) पूजित है? कोई नहीं। मगर इन लोगों में बहुधा नहीं जानते। (६१) भला बेचैन की पुकार कौन सुनता है जब वह पुकारे और कौन बुराई को टाल देता है और तुमको ज़मीन में नायब बनाता है ? क्या अल्लाह के साथ कोई पूजित है ? तुम बहुत कम फ़िक्र करते हो।(६२) भला कौन तुम लोगों को ज़मीन और पानी के अँधियारे में दिखाता है और कौन, अपनी कृपा (मेह) के आगे हवाओं को (मेह की) खुशखबरी देने के लिए भेजता है। क्या अल्लाह के साथ (कोई और) पूजित है ? खुदा उनके शिर्क से ऊँचा है।(६३) कौन है जो पहले नई सृष्टि पैदा करता है और उसी तरह बार-बार पैदा करता है और कौन है जो तुम्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ी देता है, क्या

अल्लाह के साथ (और कोई) पूजित है ? (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो।(६४) कहो कि जितनी पैदाइश आसमान व ज़मीन में है उसमें से किसी को भी ख़ुदा के सिवाय छिपे हुए भेद की खबर नहीं, मगर अल्लाह जानता है और वह नहीं जानते कि किस समय उठाये जायेंगे।(६५) बात यह कि उन लोगों की मालूमात क़यामत के बारे में हार गई बल्कि इसके बारे में इनको शक है, यह लोग उससे अन्धे बने हुए हैं। (६६) [रूकू५आ.८]

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जायँगे तो क्या हम फिर निकाले जायँगे ? (६७) पहले से भी हमारे बाप दादों के साथ और ऐसे वादे होते चले आये हैं, यह अगले लोगों के ढकोसले हैं।(६८) ऐ पैग़म्बर ! इनसे कहो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा अंत हुआ।(६९) और इन पर कुछ अफ़सोस न करो और जैसी जैसी तदबीरें कर रहे हैं उनसे तंगदिल न हो।(७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब होगा ? (७१) क्या आश्चर्य जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो, वह तुम्हारे पास आ लगी हो।(७२) और यह कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों पर कृपा रखता है मगर अक्सर लोग शुक्रगुज़ार नहीं होते। (७३) और यह कि जैसी-जैसी बातें लोगों के दिलों में छिपी हुई हैं और जो कुछ यह प्रत्यत्त करते हैं तुम्हारे परवरदिगार को मालूम है।(७४) आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छिपी हुई बात नहीं (जो) खुली किताब (लोहमहफ़ूज़) में न लिखी हो।(७५) यह क़ुरान इसराईल के बेटों की बहुधा बातों को जिनमें फ़र्क़ डालते हैं ज़ाहिर करता है। (७६) और यह (क़ुरान) ईमानवालों के हक़ में हिदायत और कृपा है।(७७) (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा परवरदिगार अपनी आज्ञा से इनके बीच फ़ैसला कर दे और वह ज़ोरावर सबका जानकार है।(७८) तो (ऐ पैग़म्बर !) अल्लाह ही पर भरोसा रखो; तुम राह पर रहो।(७९) तुम मुर्दों* को नहीं सुना सकते और न बहरों को आवाज़ सुना

* काफ़िर तुम्हारी बात नहीं मान सकते। वह ऐसे बहरे और अन्धे हैं

सकते हो ऐसी हालत में कि वह पीठ फेरकर भाग खड़े हों। (८०) और न तुम अन्धों को गुमराही से राह दिखा सकते हो, तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों का विश्वास रखते हैं। तो वह मान भी जाते हैं।(८१) और जब वादा (क़यामत) इन लोगों पर पूरा होगा तो हम ज़मीन से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे, वह इनसे बातें करेगा कि लोग हमारी बातों का विश्वास नहीं रखते थे।(८२) [रुकू ६ आयात १६]

और जब हम हरएक गरोह में से उस दल को जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे फिर कतार में खड़े किये जायँगे।(८३) यहाँ तक कि जब हाज़िर होवेंगे तो (ख़ुदा उनसे) पूछेगा कि बावजूद कि तुमने हमारी आयतों को अच्छी तरह समझा भी या क्यों तुमने उनको झुठलाया ? (यह नहीं किया तो और) क्या करते रहे ? (८४) और चूँकि यह लोग सरकशी करते रहे, वादा (सज़ा) उन पर पूरा हुआ और यह लोग बात भी न कर सकेंगे।(८५) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हमने रात को बनाया है कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया देखने को। इसमें उन लोगों को निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं।(८६) और जिस दिन नरसिंहा फूंका जायगा तो जो आसमान में हैं और जो ज़मीन में हैं सब काँप जायेंगे, मगर जिसको ख़ुदा चाहे वही धैर्य से रहेगा और सब उसके सामने झुके हाज़िर होंगे।(८७) और तू पहाड़ों को देखकर ख़याल करता है कि जमे हुए हैं। मगर यह (क़यामत के दिन) बादल की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे। (यह भी) अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को ख़ूब पुख़्ता तौर पर बनाया है। बेशक जो कुछ भी तुम करते हो वह उससे ख़बरदार है।(८८) जो आदमी अच्छे कर्म लेकर आयेगा तो उनको उससे बढ़कर अच्छा (दरजा) मिलेगा और ऐसे आदमी उस दिन डर (से छूटकर) चैन में होंगे।(८९) और जो बुरे काम लेकर आवेंगे वह औंधे मुँह नरक में ढकेल दिये जावेंगे तुमको उन्हीं कर्मों की सज़ा दी जा

कि किसी तरह उनको सीधा मार्ग दिखाया और बताया नहीं जा सकता।

रही है जो तुम करते थे (९०) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से कहो कि) मुझको यही हुक्म मिला है कि उस (शहर) मक्का के मालिक की पूजा करूँ जिसने उनको प्रतिष्ठा दी है और सब कुछ उस का है और मुझे आज्ञा मिली है कि आज्ञाकारी रहूँ ।(९१) और यह कि क़ुरान पढ़-पढ़-कर सुनाऊँ तो जो राह पर आ गया सो अपने ही भले को और जो गुमराह हुआ तो तुम कह दो कि मैं तो सिर्फ़ डरानेवाला हूँ ।(९२) और कहो कि ख़ुदा की तारीफ़ हो, वह जल्दी तुमको अपनी निशानियाँ दिखलायेगा और तुम उनको पहचान लोगे और जैसे-जैसे काम तुम लोग कर रहे हो तुम्हारा परवरदिगार उनसे बेख़बर नहीं ।(९३) [रुकू ७ आयात ११]

---

२८ सूरे क़सस ४९

मक्का में उतरी, इसमें ८८ आयतें और ९ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है । तो-सीन-मीम । (१) यह खुली किताब की आयतें हैं । (२) (ऐ पैग़म्बर !) हम उन लोगों के लिए जो यक़ीन करते हैं मूसा और फ़िरऔन के सच्चे हाल को तेरे सामने सुनाते हैं ।(३) फ़िरऔन मुल्क मिस्र में चढ़ रहा था और उसने वहाँ के लोगों के अलग-अलग जत्थे कर रखे थे । उनमें से एक गरोह (इसराईल की संतान) को कमज़ोर कर रखा था कि उनके बेटों को हलाक करवा देता और बेटियों को ज़िन्दा रखता । वह फ़सादियों में से था ।(४) और हमारा इरादा यह था कि जो लोग मुल्क में कमज़ोर समझे गये थे उन पर नेकी करें और उनको सरदार बनाएँ और उनको (राज्य का) मालिक बनाएँ ।(५) और उनको मुल्क में जमावें और फ़िरऔन, हामान और उनके लश्कर को जिस बात का डर है वही उनके आगे लावें ।(६) और हमने मूसा की मा को हुक्म भेजा कि उसको दूध पिलाओ, फिर जब इनकी बाबत तुमको डर होवे तो इनको नदी में डाल दे और डर न करना और न

रंज करना, हम इनको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे§ और इनको पैग़म्बर में से (एक पैग़म्बर) बनावेंगे। (७) तो फ़िरऔन के लोगों ने उसे (बहते को) उठा लिया कि उनका दुश्मन रंज पहुँचाने का कारण हो। कुछ शक नहीं कि फ़िरऔन और हामान और उनके सिपाहियों ने ग़लती की थी। (८) और फ़िरऔन की औरत (अपने पति से) बोली यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठण्डक है, इसको मार मत डालो, आश्चर्य नहीं कि हमारे काम आवे। या इसको अपना बेटा बना लें और उनको ख़बर न थी। (९) और मूसा की मा का दिल बेचैन हो गया और वह ज़ाहिर करनेवाली ही थी (कि मैं उसकी माता हूँ)। हमने उसके दिल को मज़बूत कर दिया ताकि वह ईमानवालों में रहे। (१०) और (सन्दूक को दरिया में डालते समय मूसा की मा ने) मूसा की बहन से कहा कि इसके पीछे-पीछे चली जा। तो वह उसको दूर से ऊपरी की तरह देखती रही और फ़िरऔन के लोगों को ख़बर न हुई। (११) और हमने मूसा पर पहले ही से (धाय के) दूध बन्द कर रखे थे (कि वह किसी की छाती मुँह में लेते ही न थे)। इस पर (मूसा की बहन ने) कहा कि कहो हम तुमको एक घराने का पता बतावें कि वह तुम्हारे लिए इसकी परवरिश करेंगे और वह इसके हित के चाहनेवाले हैं। (१२) फिर हमने मूसा को उसकी माता† के पास भेजा ताकि उसकी आँखें ठण्डी हों और उदास न रहे और वह भी

---

§ फ़िरऔन को ज्योतिषियों ने बता दिया था कि इसराईल की संतान में एक बच्चा होनेवाला है जो तेरे राज्य को छिन्न भिन्न कर देगा। इसीलिए उसने हर लड़के की हत्या करनी आरंभ कर दी थी।

मूसा की मा ने मूसा को एक काठ के सन्दूक़ में रखकर नहर में बहा दिया। वह संदूक़ बहते-बहते फ़िरऔन के महल के पास आया। फ़िरऔन ने उसको निकलवाया और मूसा को अपने पुत्र के समान पाला।

† मूसा को दूध पिलाने के लिए मूसा की मा ही को चुना गया क्योंकि मूसा ने अपनी मा के सिवाय और किसी दाई का दूध मुह ही से नहीं लगाया।

जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन बहुत लोग नहीं जानते। (१३) [रुकू १ आयात १३]

और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँचे और सँभले, हमने उसको हुक्म और बुद्धि दी और सुकर्मियों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं।(१४) और मूसा शहर में आया कि लोग बेख़बर थे तो क्या देखते हैं कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं, एक तो उनकी क़ौम का है और एक उनके दुश्मनों में था। तो जो मूसा की क़ौम का था, इसने उस आदमी के सामने जो उनके वैरियों में था मदद माँगी। तो मूसा ने उस (बैरी) के घूसा मार और उसका काम तमाम कर दिया। (फिर) कहने लगे कि यह तो एक शैतानी काम हुआ। कुछ शक नहीं कि शैतान प्रत्यक्ष गुमराह करनेवाला है। (१५) (मूसा ने) कहा कि ऐ मेरे परवर्रादिगार! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तू मेरा पाप क्षमा कर। ख़ुदा ने उसका पाप क्षमा किया। वह बहुत क्षमा करनेवाला दयालु है।(१६) (मूसा ने) कहा ऐ मेरे परवरदिगार! जैसी तूने मुझ पर कृपा की मैं आइन्दा कभी अन्यायियों का साथी न हूँगा। (१७) सुबह को डरते डरते शहर में गया। इतने में क्या देखता है कि वही आदमी जिसने कल इनसे मदद माँगी थी (आज फिर) इसको पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा कि इसमें शक नहीं तू तो प्रत्यक्ष ख़राब राह पर है।(१८) फिर जब मूसा ने उस (क़िब्ती) को जो इसका और उस फ़रियाद करनेवाले दोनों का दुश्मन था पकड़ना चाहा, तो (इसराईल की संतान को) शक हुआ कि मुझको पकड़ना चाहते हैं और वह चिल्ला उठा कि मूसा, जिस तरह तूने कल एक आदमी को मार डाला, क्या मुझको भी मार डालना चाहता है? बस तू यह चाहता है कि मुल्क में ज़ुल्म करता फिरे और मेल करा देने वाला नहीं बनना चाहता। (१९) और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उसने ख़बर दी कि मूसा बड़े-बड़े आदमी तुम्हारे बारे में सलाहें कर रहे हैं कि तुमको मार डालें, तुम निकल जाओ, मैं तेरे भले की कहता हूँ। (२०) चुनाँचे (मूसा) शहर से

निकल भागे और डरते-डरते जाते थे कि देखें क्या होता है और (मूसा ने) दुआ की ऐ मेरे परवरदिगार! ज़ालिम लोगों से छुटकारा दे। (२१) [रुकू २ आयात ८]

और जब मदीयन की तरफ़ मुँह किया तो कहा मुझको अपने परवरदिगार से उम्मेद है कि वह मुझको सीधी राह दिखायेगा।(२२) और जब शहर मदीयन के कुए पर पहुँचा तो देखा कि लोग पानी पिला रहे हैं। और देखा उनसे अलग दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। (मूसा ने उनसे) पूछा कि तुम्हारा क्या प्रयोजन है? वह बोली जब तक (दूसरे) चरवाहे (अपने जानवरों को पानी पिलाकर)हटा न ले जायँ, हम (अपनी बकरियों को पानी) पिला नहीं सकतीं और हमारे पिता निहायत बूढ़े हैं। (२३) यह सुनकर (मूसा ने) उनके लिए (पानी खींचकर उनकी बकरियों को) पिला दिया, फिर हटकर साये में जा बैठे और कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! तू (अपनी कृपा के थाल से इस समय) जो मुझको भेज दे मैं उसका चाहनेवाला हूँ।(२४) इतने में उन दो औरतों में से एक† उनकी तरफ़ शरमाती चली आ रही है। उसने (मूसा से) कहा कि मेरे पिता तुझे बुला रहे हैं कि वह जो तूने हमारी खातिर (हमारी बकरियों को पानी) पिला दिया था, तुमको उसकी मजदूरी देंगे। जब मूसा उस (बुड्ढे) के पास पहुँचा और उनसे हाल बयान किया तो (उन्होंने) कहा डर न कर, तू ज़ालिम लोगों से बच गया।(२५) फिर उन दो (औरतों) में से एक ने (अपने बाप से) कहा कि ऐ बाप! तू इनको नौकर रख ले क्योंकि अच्छे से अच्छा आदमी जो तू नौकर रखना चाहे मज़बूत अमानतदार होना चाहिए।(२६) (उस बुड्ढे ने मूसा से) कहा कि मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूँ। इस वचन पर तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो

† यह दोनो लड़कियाँ हज़रत शुऐब की पुत्रियाँ थीं। जब उन्होंने अपने बाप से मूसा के पानी भरकर पिला देने का हाल बताया, तो उन्होंने मूसा को अपने पास बुला भेजा।

और अगर तुम (दस वर्ष) पूरे करो तो तुम्हारी भलाई है और मैं तुझे कष्ट नहीं देना चाहता (और) तू मुझको ख़ुदा ने चाहा तो भला आदमी पायेगा।(२७) (मूसा ने) कहा यह बातें मेरे और तेरे बीच हो चुकीं, मुझको अख़्तियार है दोनो मुद्दतों में से जौन-सी (मुद्दत चाहूँ) पूरी करूं। मुझ पर किसी तरह का जब्र नहीं और जो मेरे और तेरे बीच में वचन हुआ है अल्लाह उसका साक्षी है।(२८) [रुकू ३ आयात ७]

फिर जब मूसा ने मुद्दत पूरी की और अपनी बीबी को लेकर चल दिया तो तूर (पहाड़) की तरफ़ से इसको एक आग दिखाई दी (मूसाने) अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (इसी जगह) ठहरो, मुझको आग दिखाई दी है। शायद वहाँ से तुम्हारे पास कुछ ख़बर ले आऊँ या आग की एक चिनगारी लेता आऊँ, ताकि तुम लोग तापो।(२९) फिर जब मूसा आग के पास पहुँचा तो (उस) पाक जगह मैदान के दाहिने किनारे दरख़्त से उसे आवाज़ सुनाई दी कि मूसा हम सब संसार के पालने वाले अल्लाह हैं।(३०) और यह कि तुम अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दो। तो जब लाठी को डाला और उसका इस तरह चलते हुए देखा कि गोया वह साँप है तो पीठ फेरकर भागा और पीछे को न देखा। (हमने फ़र्माया) मूसा, आगे आओ और डर न कर। तू बेखटके है (३१) अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर रखो (और फिर निकालो तो वह) बिना किसी बुराई के सफ़ेद निकले गा। डर दूर हो जाने के लिए अपनी भुजा अपनी तरफ़ सिकोड़ ले। सारांश (असा—लाठी और सफ़ेद हाथ) यह दोनो चमत्कार ख़ुदा के दिये हुए हैं। (जो तुम्हारी मारफ़त) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजे जाते हैं क्योंकि वे बेहुक्म हैं।(३२) (मूसा ने) कहा ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने उनमें से एक आदमी का ख़ून कर दिया है। सो डर है कि मुझे मार न डालें।(३३) और मेरे भाई हारू जिसकी ज़बान मुझसे ज्यादा साफ़ है सो उसको मेरी मदद के लिए भेज कि वह मुझे सच्चा करे। मुझको डर है कि (फ़िरऔन के लोग) मुझको झुठलायेंगे।(३४) फ़र्माया मैं तेरे भाई को तेरा मददगार बनाऊँगा और तुम दोनो को ऐसी जीत देंगे कि

फ़िरऔन के लोग तुम तक पहुँच न सकेंगे। तुम दोनो और जो तुम दोनो की पैरवी करें विजयी होंगे।(३५) फिर जब मूसा खुले हुए चमत्कार लेकर उनके पास पहुँचा वह कहने लगे यह बनाया हुआ जादू है और हमने अपने अगले बाप दादों से ऐसी बातें नहीं सुनीं।(३६) और मूसा ने कहा जो आदमी ख़ुदा की तरफ़ से सूझ की बात लेकर आया है और जिसका अन्तिम परिणाम भला होगा मेरे परवरदिगार को ख़ूब मालूम है। बेशक अन्यायियों का भला न होगा।(३७) और फ़िरऔन ने कहा दरबारियों! मुझको तो अपने सिवाय तुम्हारा कोई ख़ुदा मालूम नहीं। ऐ हामान!* तू हमारे लिए मिट्टी (की ईटों) में आग लगा (पजावा) और हमारे लिए एक महल बनवा कि हम (उस पर चढ़कर) मूसा के ख़ुदा को झाँकें और हम मूसा को झूठा ही समझते हैं।(३८) और फ़िरऔन और उसके लश्करों ने वृथा मुल्कोंमें बहुत सिर उठाया और उन्होंने ऐसा समझा कि वह हमारी तरफ़ लौटाकर नहीं लाये जायंगे।(३९) तो हमने फ़िरऔन और उसके लश्करों को धर पकड़ा और उनको समुद्र में फेंक दिया, सो देख जालिमों का कैसा परिणाम हुआ।(४०) और हमने उनको सरदार किया कि नरक की तरफ़ बुलाते रहे और क़यामत के दिन इनको मदद मिलने की नहीं।(४१) और हमने इस दुनिया में उनके पीछे फटकार लगा दी और क़यामत के दिन तो उनका बुरा हाल होना है।(४२) [रुकू ४ आयात १४]

और अगले गरोहों के मार डाले पीछे हमने मूसा को किताब (तौरात) दी जिससे लोगों को सूझ हो और राह पकड़ें और कृपा हो, शायद वे शिक्षा पावें।(४३) और (ऐ पैग़म्बर!) जिस समय हमने मूसा को हुक्म भेजा तू (तूर के) पश्चिम ओर न था और तू देखने वालों में न था†।(४४) लेकिन हमने बहुत-से गरोह निकाल खड़े किये और

---

* हामान फ़िरऔन का प्रधान मंत्री था। इसी के कहने से फ़िरऔन बेगार लिया करता था।

† मक्केवाले कहते थे कि मुहम्मद अपने जी से बात बनाते हैं और कहते हैं कि ये बातें ख़ुदा ने बताई हैं। तो मुहम्मद पिछले पैग़म्बरों की बातें कैसे बताते हैं, वह न तो उनके वक़्त में थे और न पढ़े-लिखे हैं।

उन पर बहुत-सी उम्रें गुज़र गईं और तुम मदियन के लोगों में न रहते थे कि तुम उनको हमारी आयतें पढ़-पढ़कर सुनाते बल्कि हम पैग़म्बर भेजते रहे हैं ।(४५) और तू तूर के पास उस वक़्त न था जबकि हमने मूसा को बुलाया था बल्कि तेरे परवरदिगार की कृपा है कि तू उन लोगों को डरावे जिनके पास तुमसे पहले कोई डरानेवाला नहीं आया। शायद यह लोग शिक्षा पकड़ें। (४६) और ऐसा न हो कि इन पर अपने ही करतूत के बदले में कोई आफ़त आ पड़े तो कहने लगें ऐ मेरे परवरदिगार! तूने मेरे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा जिससे हम तेरी आज्ञा की पैरवी करते और ईमानवालों में होते ।(४७) फिर जब हमारी तरफ़ से ठीक बात उनके पास पहुँची तो कहने लगे कि जैसे (चमत्कार) मूसा को मिले थे ऐसे ही इस (पैग़म्बर) को क्यों नहीं मिले ? क्या जो (चमत्कार) पहले मूसा को मिले थे लोग उनके इन्कार करनेवाले नहीं हुए थे ? उन्होंने कहा था कि (मूसा और हारूँ) दोनो जादूगर हैं और एक दूसरे के साथी हैं और कहा कि हम दोनो को नहीं मानते ।(४८) (पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो ख़ुदा के यहाँ से कोई किताब ले आओ जो इन दोनो से हिदायत में बढ़कर हो, मैं उस पर चलूँ ।(४९) तो अगर यह लोग तेरे कहने के बमूजिब न कर दिखायें तो जान लो कि अपनी बुरी चाहों पर चलते हैं और उससे बढ़कर गुमराह कौन है कि ख़ुदा के बिना राह बताये अपनी चाह पर चले। अल्लाह अन्यायियों को राह नहीं दिखाता। (५०) [रुकू ५ आयात ८]

और हम बराबर लोगों पर (आयतें) आज्ञायें भेजते रहे हैं। शायद वह शिक्षा पकड़ें। (५१) जिन लोगों को क़ुरान से पहले हमने किताब दी वह इस पर ईमान ले आते हैं। (५२) और जब उनको क़ुरान सुनाया जाता है तो बोल उठते हैं कि हमको तो इसका विश्वास आ गया कि हमारे परवरदिगार की तरफ़ से भेजा हुआ ठीक है। हम तो इससे पहले के हुक्म माननेवाले हैं ।(५३) यही लोग हैं जिनको इनके सब्र के बदले दोहरा बदला दिया जायगा और नेकी से बदी का

बदला करते हैं और हमने जो इनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं।(५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे किनारा पकड़ते हैं और कहते हैं कि हमारे काम हमको और तुम्हारे काम तुमको हैं। हम तुम (दूर ही से) सलाम करते हैं। हम बेसमझों को नहीं चाहते। (५५) (ऐ पैग़म्बर !) तू जिसको चाहे हिदायत नहीं दे सकता बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है और वही राह पर आनेवालों से खूब जानकार है †। (५६) और (लोग) कहते हैं कि अगर हम तेरे साथ सच्चे दीन की पैरवी करें तो हम अपनी जगह से उचक जायें। क्या हमने उनको अदनवाले मकान में, जहाँ चैन है, जगह नहीं दी कि हर तरह के फल यहाँ खिंचे आते हैं। (इनकी) रोज़ी हमारे यहाँ से है। मगर वह बहुधा नहीं जानते। (५७) और हमने बहुत-सी बस्तियाँ मार डालीं जो अपनी रोज़ी में इतरा चली थीं। तो यह उनके घर हैं जो उनके पीछे आबाद नहीं हुए सिवाय थोड़ों के और हम ही वारिस हुए। (५८) और जब तक तेरा परवरदिगार किसी बस्ती में पैग़म्बर न भेज ले और वह उनको हमारी आयतें पढ़कर न सुना दे तब तक वह बस्तियों को मार नहीं सकता और हम बस्तियों को तभी मार डालते हैं जबकि वहाँ के लोग पापी हो जाते हैं। (५९) और जो कुछ तुमको दिया गया है, दुनिया की ज़िन्दगी में बर्तने के लिए है और यहाँ की शोभा है और जो अल्लाह के यहाँ है वही बढ़कर है और वही स्थायी रहनेवाला है, क्या तुम लोग नहीं समझते ?(६०) [रुकू६ आ.१०]

भला वह आदमी जिसे हमने अच्छा वादा दिया और वह उस को मिलनेवाला है क्या उसके बराबर है जिसे हमने दुनिया का बर्तना बर्ता लिया। फिर वह क़यामत के दिन पकड़ा हुआ आया।(६१) और जिस दिन ख़ुदा काफ़िरों को बुलाकर पूछेगा कि जिन लोगों

---

† मुहम्मद साहब बहुत चाहते थे कि उनके चाचा अबूतालिब मुसलमान हो जायँ मगर अबूतालिब ने मरते समय तक ईमान लाने से इन्कार किया और कहा कि बेटा मैं जानता हूँ तू सच्चा है, पर मैं मुसलमान नहीं हो सकता क्योंकि क़ुरैश कहेंगे कि अबूतालिब ने मौत से डरकर इस्लाम स्वीकार कर लिया।

का तुम हमारे साझी समझते थे कहाँ हैं ? (६२) जिन पर बात साबित हुई बोल उठेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! यह वही लोग हैं जिनको हमने बहकाया । जिस तरह हम ख़ुद बहके थे इसी तरह हमने उनको भी बहकाया । हम तेरे सामने इन्कार करते हैं, यह लोग हमको नहीं पूजते थे ।(६३) और कहेंगे कि अपने शरीकों को बुलाओ । फिर यह लोग उनको बुलायेंगे तो वह (पूजित) इनको जवाब न देंगे और सज़ा को देख लेंगे और पछताएँगे कि हम सच्ची राह पर होते ।(६४) और जिस दिन ख़ुदा काफ़िरों को बुलाकर पूछेगा कि पैग़म्बरों को तुमने क्या जवाब दिया ?(६५) तो उस दिन उनको कोई बात न सूझ पड़ेगी और वह आपस में पूछ-ताछ भी न कर सकेंगे । (६६) सो जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो आशा है कि ऐसे आदमी मुक्ति पानेवाले हों ।(६७) और (ऐ पैग़म्बर !) तेरा परवरदिगार जो चाहता है पैदा करता और चुन लेता है । चुनना लोगों के हाथ में नहीं है । अल्लाह पाक है और इनके शरीकों (पूजितों) से ऊँचा है । (६८) और जो यह लोग अपने दिलों में छिपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तेरा परवरदिगार उनका (सब) जानता है ।(६९) और वही अल्लाह है कि उसके सिवाय कोई पूजित नहीं । दुनिया और क़यामत में उसी की तरफ़ है और उसी का हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुम लोगों को लौटकर जाना है । (७०) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि देखो तो कि अगर अल्लाह क़यामत के दिन तक लगातार तुम पर रात किये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आये । क्या तुम नहीं सुनते ।(७१) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि अगर अल्लाह क़यामत के दिन तक लगातार तुम पर दिन ही बनाये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिए रात लावे जिसमें चैन पाओ । क्या तुम नहीं देखते । (७२) और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया है, ताकि तुम रात में चैन पाओ और उसका कृपाकी तलाश में लगे रहो । शायद तुम कृतज्ञ (शुक्रगुज़ार) हो। (७३) और जिस दिन (ख़ुदा) मुशरिकों को बुलाकर पूछेगा

कि कहाँ हैं मेरे शरीक, जिनका तुम दावा करते थे ?(७४) और हरएक गरोह में हम एक साक्षी (यानी पैग़म्बर को) अलग करेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो तब जानेंगे कि अल्लाह को बात सच्ची है और जो बातें बनाते थे उनसे गुम हो जायगी।(७५) [रुकू ७ आ. १५]

क़ारून मूसा की क़ौम में से था। फिर वह उन पर जुल्म करने लगा और हमने उसको इतने खज़ाने दे रखे थे कि कई जोरावर मर्द उसकी कुंजियाँ मुश्किल से उठा सकते थे। तब उसकी क़ौम ने उससे कहा इतरा मत (क्योंकि) अल्लाह इतरानेवालों को नहीं चाहता।(७६) और जो तुझको ख़ुदा ने दे रखा है उससे अंत के घर की फ़िक्र कर और दुनिया में जो तेरा हिस्सा है उसको मत भूल और जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है तू भी भलाई कर और मुल्क में फ़साद चाहने वाला न हो। अल्लाह झगड़ा करनेवालों को पसंद नहीं करता।(७७) क़ारून बोला यह तो मुझको अपनी लियाक़त से मिला है, क्या वह ख्याल न किया कि इससे पहले ख़ुदा कितने गरोहों का नाश कर चुका जो इस क़ारून से ज्यादा बल और खज़ाना रखते थे और पापियों से उनके पाप न पूछे जायँगे। (७८) फिर क़ारून अपनी ठसक से अपनी क़ौम पर निकला तो जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के चाहनेवाले थे कहने लगे कि जैसा कुछ क़ारून को मिला है हमको भी मिले, बेशक क़ारून बड़ा भाग्यवान है।(७९) और लोगों को समझ मिली थी, बोल उठे कि तुम्हारा सत्यानाश हो, जो आदमी ईमान लाया और उसने सुकर्म किये उसके लिए ख़ुदा का सवाब (क़ारून के माल से) बहुत है और यह बात सब्र करनेवालों के लिए है।(८०) फिर हमने क़ारून और उसके घर को ज़मीन में धँसा दिया‡ और ख़ुदा के सिवाय कोई गरोह उसकी मदद को न आया और न अपने तईं बचा सका।(८१) और लोग कल उस-जैसे होने की इच्छा करते थे सुबह उठकर कहने लगे अरे अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसकी रोज़ी चाहे बढ़ा दे और (जिसकी चाहे) तंग करे।

‡ इस पर यह आयतें उतरीं।

अगर ख़ुदा हम पर कृपा न करता तो हमको भी धँसा देता। अरे काफ़िरों का भला नहीं होता।(८२) [रुकू ८ आयात ७]

यह आख़िरत का घर है। हमने उन लोगों के लिए कर रखा है जो दुनिया में शेख़ी और फ़साद नहीं चाहते और परहेज़गारों का अच्छा परिणाम है।(८३) जो आदमी सुकर्म करे उसको उससे बढ़कर फल मिलेगा और जो कुकर्म करेगा तो जिन लोगों ने जैसा बुरा किया है वैसा ही फल पायेंगे।(८४) (वह ख़ुदा) जिसने क़ुरान को तुम पर कर्तव्य ठहराया है ज़रूर तुमको ठिकाने से लगा देगा।(ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि मेरा परवरदिगार जानता है कि कौन सच्चा दीन लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष गुमराही में है।(८५) और तुम्हें क्या उम्मेद थी कि तुम पर किताब उतारी जायगी? मगर तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गई। तू काफ़िरों का साथी न हो।(८६) और ऐसा न हो कि जब ख़ुदा के हुक्म तुम पर उतर चुके हैं उसके बाद यह आदमी तुमको उनसे रोकें। और अपने परवरदिगार की तरफ़ (लोगों को) बुलाये चले जाओ और मुशरिकों में न हो।(८७) और अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारो। उसके सिवाय कोई और पूजित नहीं। उसकी ज़ात के सिवाय सब चीज़ें मिटनेवाली हैं, उसी की हुकूमत है और उसी की तरफ़ तुमको लौटकर जाना है।(८८) [रुकू ९ आयात ६]

——❀——

२९ सूरे अन्कबूत ८५

मक्का में उतरी, इसमें ६९ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला कृपालु है। अलिफ़-लाम-मीम(१) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि इतना कहने पर छूट जायँगे कि हम ईमान ले आये और उनको आज़माया न जायगा?(२) और हमने उन लोगों को आज़माया था जो इनसे पहले थे, पस ख़ुदा को चाहिए कि सच्चे भी मालूम हो जायँ और झूठे भी मालूम हो जायँ।(३)

क्या जो लोग बुरे काम करते हैं उन्होंने समझ रखा है कि हमारे क़ाबू से बाहर हो जायँगे ? यह लोग क्या बुरी तजवीज़ करते हैं ।(४) जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मेद हो तो ख़ुदा का वक़्त ज़रूर आनेवाला है। और वह सुनता जानता है।(५) और जो मेहनत उठाता है वह अपने ही लिए मेहनत उठाता है ख़ुदा को दुनिया के लोगों की परवाह नहीं।(६) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये हम ज़रूर उनके पाप उनसे दूर कर देंगे और इनको अच्छे से अच्छे कामों का फल देंगे।(७) और हमने आदमी को अपने मा बाप के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया और अगर मा-बाप ज़ोर दें कि तू किसी को हमारा साझी ठहरा जिसकी तेरे पास कोई दलील नहीं तो तू इनका कहा न मानना। तुमको हमारी तरफ़ लौटकर आना है फिर जो तुम करते हो हम तुमको बता देंगे।(८) और जो ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये हम उनको नेक लोगों में दाख़िल करेंगे। (९) और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि ख़ुदा पर ईमान लाये। फिर जब उनको ख़ुदा की राह में दुख पहुँचता है तो लोगों के दुख को ख़ुदा की सज़ा के बराबर ठहराते हैं और अगर तेरे परवरदिगार की तरफ़ से मदद पहुँचे तो कहने लगते हैं कि हम तुम्हारे साथ थे। भला जो कुछ दुनिया-जहान के दिलों में है क्या ख़ुदा उनसे जानकार नहीं।(१०) और जो लोग ईमान लाये हैं अल्लाह उनको जान लेगा और जान लेगा उनको जो दग़ाबाज़ हैं।(११) और काफ़िर ईमानवालों से कहते हैं कि हमारे क़ायदे पर चलो और तुम्हारे पाप हम उठायेंगे हालाँकि यह लोग ज़रा भी उनके पाप नहीं उठा सकते और यह झूठे हैं।(१२) मगर हाँ अपने बोझ उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और भी बोझ उठायेंगे। और जैसी जैसी लफ़ंटबाज़ियाँ यह लोग करते रहे हैं क़यामत के दिन इनसे पूछा जायगा।(१३) [रुकू १ आयात १३]

और हमने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा तो वह पचास वर्ष कम हज़ार वर्ष उनमें रहे, फिर † उनको तूफ़ान ने पकड़ लिया और

† कहते हैं कि नूह १४०० वर्ष जीवित रहे। जब उनकी आयु ९५० वर्ष

वह पापी थे।(१४) फिर हमने नूह को और जो किश्ती में थे उनको (तूफ़ान से) बचा दिया।(१५) और हमने इसको तमाम दुनिया के लिए शिक्षा बना दी। और इब्राहीम ने जब अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की पूजा करो और उससे डरो यह बढ़कर है अगर तुम समझ रखते हो।(१६) तुम जो ख़ुदा के सिवाय बुतों की पूजा करते हो और झूठी-झूठी बातें बनाते हो। ख़ुदा के सिवाय जिनकी तुम पूजा करते हो तुम्हारी रोज़ी के मालिक नहीं हैं। सो रोज़ी ख़ुदा ही से माँगो और उसी की पूजा करो और उसी को धन्यवाद दो और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है।(१७) और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत संगतें (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं और पैग़म्बर के ज़िम्मे तो (ख़ुदा की आज्ञा) साफ़ तौर पर पहुंचा देना है।(१८) क्या लोगों ने नहीं देखा कि ख़ुदा किस तरह सृष्टि को पहली बार पैदा करके फिर उसी की सृष्टि बार-बार पैदा करता रहता है। यह अल्लाह के लिए एक साधारण बात है।(१९) समझाओ कि तुम मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि ख़ुदा ने किस तरह पर पहली मर्तबा (सृष्टि को) पैदा किया। फिर ख़ुदा आख़िरी उठाना (भी) उठायेगा।

अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है।(२०) जिसे चाहे सज़ा दे और जिस पर चाहे कृपा करे और तुम उसकी तरफ़ लौटकर जाओगे।(२१) और तुम न तो ज़मीन में (ख़ुदा को) हरा सकते हो और न आसमान में और ख़ुदा के सिवाय न तो कोई तुम्हारे काम का सम्भालने वाला होगा न साथी होगा।(२२) [रुकू २ आयात ९]

और जो लोग ख़ुदा की आयतों को और उससे मिलने को नहीं जानते वे हमारी कृपा से निराश हुए हैं और उनको दुखदाई सज़ा है।(२३) पस इब्राहीम की क़ौम के पास इसके सिवाय जवाब न था कि इसको मार डालो या जला दो। चुनाँचे (उनको आग में फेंक दिया मगर) ख़ुदा ने उसको आग से बचा दिया। इसमें बड़े पते हैं उन लोगों

की हुई तो भयंकर तूफ़ान आया जिसमें पृथ्वी डूब गई।

को जो ईमान रखते हैं।(२४) और (इब्राहीम) ने कहा कि तुमने जो ख़ुदा के सिवाय मूर्तियों को मान रखा है सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी में आपस की दोस्ती मुहब्बत के ख़याल से, फिर क़यामत के दिन तुममें से एक का एक इन्कार करेगा और एक लानत करेगा और तुम सबका ठिकाना नरक होगा और (बुतों में से) कोई भी तुम्हारा मददगार नहीं होगा।(२५) इस पर (सिर्फ़) लूत इब्राहीम पर ईमान लाये और (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो देश छोड़कर अपने परवरदिगार की तरफ़ निकल जाऊँगा बेशक वह ज़ोरावर हिकमतवाला है।(२६) और हमने इब्राहीम को (बेटा) इसहाक़ और (पोता) याक़ूब दिया और उनके कुटुम्ब में पैग़म्बरी और किताब को (जारी) रखा और हमने इब्राहीम को दुनिया में भी उनका बदला दे दिया और क़यामत में भी वह नेकों में हैं।(२७) और लूत (को भेजा) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बेशर्मी का काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया-जहान के लोगों में से किसी ने नहीं किया।(२८) क्या तुम लड़कों पर गिरते और राह मारते और अपनी मजलिसों में बुरे काम करते हो। उस लूत को क़ौम का यही जवाब था कि अगर तू सच्चा है तो हम पर ख़ुदा की सज़ा ला। (२६) (लूत ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! फ़सादी लोगों के मुकाबिले में मेरी मदद कर। (३०) [रुकू ३ आयात ८]

और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर आये तो उन्होंने (इब्राहीम से) कहा कि हम उस बस्ती के रहनेवालों का नाश कर देंगे (क्योंकि) इसके लोग शरीर हैं।(३१) (इब्राहीम ने) कहा कि उसमें लूत भी है। वह बोले कि जो लोग उसमें हैं हमें ख़ूब मालूम है। हम लूत को और उसके घरवालों को बचा लेंगे मगर लूत की बीबी पीछे रह जानेवालों में होगी। (३२) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये तो (लूत) उनसे नाख़ुश हुआ और दिल दुखाया। फ़रिश्तों ने कहा डर न कर और उदास न हो। हम तुझको और तेरे घर के लोगों को बचा लेंगे मगर तेरी बीबी रह जानेवालों में रहेगी।(३३) हम इस बस्ती के लोग जैसे कुकर्म करते रहे हैं उसको

सज़ा में इन पर एक आसमान से आफ़त उतारनेवाले हैं। (३४) और हमने उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं उस बस्ती का ज़ाहिरा निशान छोड़ रखा है। (३५) और (हमने) मदियन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा की भाइयों! ख़ुदा की पूजा करो और अन्त का ख़याल रखो और मुल्क में फ़साद फैलाते न फिरो।(३६) तो उन्होंने शुऐब को झुठलाया। पस भूचाल ने उन को पकड़ा और सुबह को अपने घरों में बैठे रह गये।(३७) और (हमने क़ौम) आद और समूद को (मेट दिया) और तुमको उनके घर दिखाई देते हैं और शैतान ने उनके लिए जो वह करते थे अच्छा कर दिखाया था और राह से रोका था हालाँकि वह सूझ-बूझ के लोग थे। (३८) और (हमने) क़ारून और फ़िरऔन और हामान को भी (मिटा दिया) और मूसा उनके पास खुले-खुले चमत्कार लेकर आये वह मुल्क में घमण्ड करने लगे थे और हमसे जीतनेवाले न थे।(३९) तो हमने सबको उनके पाप में धर पकड़ा। चुनाँचे उनमें से कोई तो वह थे जिन पर हमने पत्थर बरसाये (क़ौम आद), कोई उनमें से वह थे जिनको बड़े ज़ोर की आवाज़ ने पकड़ा (जैसे समूद) और उनमें से कोई वह थे जिनको हमने ज़मीन में धँसाया (जैसे क़ारून) और कोई उनमें से वह थे जिनको डुबो दिया (जैसे-फ़िरऔन और हामान)। और ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता मगर वह अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया करते थे। (४०) जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवाय दूसरे काम सँभालनेवाले बना रखे हैं उनकी मिसाल मकड़ी-जैसी † है कि उसने घर बनाया और सब घरों में बोदा मकड़ी का घर है अगर यह लोग समझते! (४१) जिनको ख़ुदा के सिवाय (यह लोग) पुकारते हैं वह जानता है और वह ज़बरदस्त हिकमतवाला है। (४२) और हम यह मिसालें लोगों के लिए बयान करते हैं। और समझदार ही इनको समझते हैं।(४३) ख़ुदा ने आसमान-ज़मीन बनाई। इसमें ईमानवालों के लिए निशानी है। (४४) [रुकू ४ आयात १४]

——❀:——

†यानी जैसे मकड़ी का जाला बहुत बोदा होता है वैसे ही इनका मत है।

इक्कीसवाँ पारा (उत्लु ला ऊहिय)

(ऐ पैग़म्बर !) किताब में जो ईश्वरीय संदेशा दिया जाता है उसे पढ़ और नमाज़ पढ़ा कर। नमाज़ बेशर्मी और बुरी आदतों से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी बात है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानता है।(४५) और किताबवालों के साथ झगड़ा न किया करो मगर ऐसी तरह पर जो बेहतर है। हाँ जो लोग उनमें से तुम पर ज़्यादती करें और कहो कि जो हम पर उतरा है और तुम पर उतरा है सभी को मानते हैं और हमारा ख़ुदा और तुम्हारा ख़ुदा एक ही है और हम उसी के हुक्म पर हैं।(४६) और इसी तरह हमने तुम पर किताब उतारी सो जिनको हमने किताब दी है वे उसको मानते हैं और इनमें से भी ऐसे हैं कि वह भी उस पर ईमान ले आते हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मानते।(४७) और क़ुरान से पहले न तो तुम कोई किताब ही पढ़ते थे और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था। अगर ऐसा तुम करते होते तो बेशक यह झूठा ठहरानेवाले लोग शक कर सकते थे।(४८) जिन लोगों को समझ दी गई है उनके दिलों में यह खुली आयतें हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मानते।(४९) और कहते हैं कि इस पर इनके परवरदिगार ने निशानियाँ क्यों नहीं उतारीं। कहो निशानियाँ तो ख़ुदा के पास हैं और मैं तो साफ़ तौर पर डर सुनानेवाला हूँ।(५०) (ऐ पैग़म्बर !) क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हमने तुम पर क़ुरान उतारा, जो उनको पढ़कर सुनाया जाता है। जो लोग ईमान लानेवाले हैं उनके लिए इसमें कृपा और शिक्षा है।(५१) [रुकू ५ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह काफ़ी गवाह है। वह आसमान और ज़मीन की चीज़ों को जानता है और जो लोग झूठे (पूजितों) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह से फिरे हुए हैं यही तो घाटे में रहेंगे। (५२) और (ऐ पैग़म्बर) ! तुमसे सज़ा

के लिए जल्दी मचा रहे हैं और अगर समय नियत न होता तो इन पर सज़ा आ चुकी होती और वह एकबारगी इन पर आवेगी और इनको खबर भी न होगी ।(५३) तुमसे सज़ा के लिए जल्दी मचा रहे हैं और नरक काफ़िरों को घेरे हुए है ।(५४) जबकि सज़ा उनके ऊपर से और इनके पैरों के तले से इनको घेर लेगी और (खुदा) कहेगा कि जैसे-जैसे कर्म तुम करते रहे हो (उनका मज़ा) चखो । (५५) हमारे सेवकों जो ईमान लाये हो, हमारी ज़मीन चौड़ी है, हमारी ही पूजा करो ।(५६) हर जीव मौत को चखेगा फिर हमारी तरफ़ लौटकर आवेगा ।(५७) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनको हम जन्नत की खिड़कियों में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी । उनमें हमेशा रहेंगे । कामवालों का अच्छा बदला है (५८) जिन्होंने संतोष किया और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते रहे (उनका अच्छा फल है) । (५९) और कितने जीव हैं जो अपनी रोज़ी उठा नहीं सकते, अल्लाह ही उनको रोज़ी देता है और वही सुनता और जानता है ।(६०) और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तू इनसे पूछे कि किसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और किसने चाँद और सूरज को बस में कर रखा है, ज़रूर जवाब देंगे कि अल्लाह ने, फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं ।(६१) अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसको चाहे रोज़ी देता है और जिसको चाहता है नपी-तुली कर देता है । अल्लाह ही हर चीज़ से जानकार है ।(६२) और अगर तुम इनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी बरसाया फिर उस पानी के ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे कौन ज़िला उठाता है, तो जवाब देंगे कि अल्लाह । (ऐ पैग़म्बर) तू कह सब खूबी अल्लाह की है । इनमें अक्सर समझ नहीं रखते । (६३) [रुकू ६ आयात १२]

और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो जी बहलाना और खेल है और पिछला घर (परलोक) का जीना ही जीना है अगर यह समझें ।(६४) फिर जब किश्ती में सवार होते हैं तो उसी पर पूरा भरोसा करके अल्लाह को पुकारते हैं । फिर जब उनको छुटकारा देकर खुश्की

की तरफ़ पहुँचा देता है तो छुटकारा पाते ही वह साझी ठहराने लगते हैं।(६५) जो हमने उनको दिया है उससे मुकरते हैं और बर्तते रहते हैं आगे चलकर मालूम कर लेंगे।(६६) क्या मक्के के काफ़िर ने नहीं देखा कि हमने हरम को अमन की जगह बना रखा है और लोग इनके आस-पास उचके जाते हैं तो क्या यह लोग झूठ पर ईमान रखते हैं और अल्लाह का एहसान नहीं मानते।(६७) और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम है जो ख़ुदा पर झूठ लफंट लगाये या जब सत्य बात को पहुँचे तो उसको झुठलावे। क्या इन्कार करनेवालों का नरक ही ठिकाना नहीं है।(६८) और जिन्होंने हमारे काम में कोशिश की हम उनको अपनी राह दिखलावेंगे और बेशक नेक कामवालों का अल्लाह ही साथी है।(६९) [रुकू ७ आयात ६]

---:o:---

३० सूरे रूम ८४

मक्का में उतरी, इसमें ६० आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-मीम।(१) रूमी लोग दब गये हैं।(२) समीप के देशों में (दब गये हैं) और वे हारे पीछे फिर जीत जायेंगे।(३) चन्द वर्षों में पहले और पिछले काम अल्लाह ही के हाथ में हैं और उस दिन ईमानदार ख़ुश होंगे §।(४) वह जिसको चाहता मदद करता है और वह बलवान दयालु है।(५) अल्लाह का वादा (है) और अल्लाह अपने वादे के

§ रूम (ईसाई) और ईरान (अग्नि पूजक) के बीच युद्ध हुआ। इस में ईरानवाले जीते! उनकी विजय से मक्का के काफ़िर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि उनका मत ईरान के अग्नि के उपासकों से मिलता था। इसलिए मक्का के मुशरिक मुसलमानों से बड़ा बोल बोलने लगे और कहने लगे जैसे रूम के ईसाई परास्त हुए हैं जो एक प्रकार तुम्हारे ही मतवाले हैं वैसे ही तुम भी जब हमसे लड़ोगे तो अवश्य हारोगे। इस पर यह आयतें उतरीं।

खिलाफ़ नहीं किया करता। लेकिन बहुधा लोग नहीं समझते। (६) संसारी जीवन के जाहिरा हालों को समझते हैं और आख़िरत (परलोक) से यह लोग बिलकुल बेख़बर हैं। (७) क्या इन लोगों ने अपने दिल में ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो इन दोनों के बीच में हैं किसी मतलब से और नियत समय के लिए पैदा किया है और बहुतेरे आदमी (क़यामत के दिन) अपने परवरदिगार से मिलने को नहीं मानते। (८) क्या यह लोग मुल्क मे नहीं चलते-फिरते हैं कि अपने पहलों का परिणाम (फल) देखें। वह लोग इनसे बल में भी बढ़कर थे और उन्होंने इनसे ज्यादा ज़मीन को जोता और आबाद किया था और उनके पास उनके पैग़म्बर चमत्कार लेकर आये थे (मगर उन्होंने न माना और अपने किये की सज़ा पाई)। तो ख़ुदा उन पर ज़ुल्म करनेवाला नहीं था बल्कि वह अपनी जानों पर आप ज़ुल्म करते थे (९) फिर जिन लोगों ने बुरा किया उनका परिणाम बुरा ही हुआ क्योंकि उन्होंने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया और उनको हँसी उड़ाई थी। (१०) [रुकू १ आयात १०]

अल्लाह पहली दफ़ा सृष्टि पैदा करता है फिर उसको दुहरावेगा, फिर उसकी तरफ़ लौट जाओगे। (११) जिस दिन क़यामत उठेगी अपराधी निराश होकर रह जावेंगे। (१२) और इनके शरीकों में से कोई सिफ़ारिशी न होगा और ये अपने शरीकों से फिर बैठेंगे। (१३) जिस दिन क़यामत उठेगी उस दिन वे (भले-बुरे) तितर बितर हो जायँगे। (१४) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये वह बाग़ (जन्नत) में होंगे। उनकी आवभगत हो रही होगी। (१५) और जिन लोगों ने इन्कार किया और हमारी आयतों और अन्तिम दिन के पेश आने को झुठलाते रहे तो यही लोग सज़ा में पकड़े जावेंगे। (१६) पस जिस समय तुम लोगों को शाम हो और जिस समय तुमको सुबह हो अल्लाह की पवित्रता से याद करो। (१७) आसमान-ज़मीन में वही अल्लाह तारीफ़ के लायक़ है और तीसरे पहर भी और जब तुम लोगों को दोपहर हो। (१८)

ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम (लोग भी मरे पीछे ज़मीन से) निकाले जाओगे।(१६) [रुकू २ आ.६]

उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर जब तुम इन्सान होकर फैले हुए हो।(२०) और उसके चमत्कारों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे बीच औरतें पैदा कीं कि तुमको उनके पास चैन मिले और तुममें प्यार और प्रेम पैदा किया। इस मामले में समझवालों के लिए चमत्कार है।(२१) और आसमान और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी बोलियाँ और तुम्हारी रंगतों का जुदा-जुदा होना, इसमें समझनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।(२२) और तुम्हारा रात और दिन का सोना और उसकी कृपा तलाश करना उसकी निशानियों में से है। जो लोग सुनते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं (२३) और उसी की निशानियों में से हैं कि वह तुमको डरने और उम्मेद करने के लिए बिजलियाँ दिखाता और आसमान से पानी बरसाता और उसके ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे (यानी पड़ती पड़े) पीछे जिला उठाता है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए इन बातों में निशानियाँ हैं। (२४) और उसी की निशानियों में से है कि आसमान और ज़मीन उसकी आज्ञा से क़ायम हैं। फिर जब वह तुमको एक आवाज़ देकर ज़मीन से बुलायेगा तो तुम (सबके सब) निकल पड़ोगे।(२५) और जो आसमान और ज़मीन में हैं उसी के हैं। सब उसी के क़ाबू में हैं।(२६) और वही जो पहली दफ़ा पैदा करता है, फिर उनको दुबारा पैदा करेगा, यह उसके लिए सहल है और आसमान और ज़मीन में उसी की शान ज़्यादा है और वह बलवान हिकमतवाला है। (२७) (रुकू ३ आयात ८)

वह तुम्हारे लिए तुममें का एक उदाहरण बयान करता है कि तुम्हारे बाँदी ग़ुलामों में से कोई हमारी दी हुई रोज़ी में साझी है कि बस तुम उसमें बराबर (हक़ रखते) हो। तुम उनकी (वैसी ही) परवाह

करते हो जैसा कि तुम अपनी परवाह करते हो† जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए हम आयतों को इसी तरह खोल-खोलकर बयान करते हैं। (२८) मगर जो लोग (साझी ख़ुदा बनाकर) ज़ुल्म कर रहे हैं वह तो बे जाने-बूझे अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं, तो जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसको कौन सीधा राह पर ला सकता है, और ऐसे लोगों का कोई मददगार न होगा।(२६) (ऐ पैग़म्बर!) तू एक (ख़ुदा) का होकर दीन की तरफ़ अपना मुँह सीधा कर। (यह) ख़ुदा की चतुराई है जिससे उसने लोगों की सूरत बनाई है। ख़ुदा की बनावट में तब्दीली नहीं हो सकती यही दीन सीधा है! मगर अक्सर लोग नहीं समझते। (३०) उसी की तरफ़ फिरो और उसी (एक ख़ुदा) का डर और नमाज़ पढ़ो और शरीक ठहरानेवालों में न हो। (३१) जिन्होंने अपने दीन में अन्तर डाला और (ख़ुदा के सिवाय दूसरे पूजित बनाकर) फ़िरक़े हो गये। जो जिस फ़िरक़े में है वह उसी में मगन है।(३२) और जब लोगों को कोई दुख पहुँचता है तो वह अपने परवरदिगार की तरफ़ फिर कर उसी को पुकारने लगते हैं। फिर जब वह उनको अपनी कृपा चखा देता है तो उनमें से कुछ लोग (झूठे पूजितों को) अपने परवरदिगार का साझी बना बैठते हैं।(३३) ताकि जो (निआमतें) हमने उनको दी हैं उनकी नाशुक्री करें तो फ़ायदे उठा लो आगे चलकर (फल) मालूम कर लोगे।(३४) क्या हमने इन लोगों पर कोई सनद उतारी है कि जिससे यह लोग ख़ुदा के साथ शरीक ठहरा रहे हैं, वह (सनद इनको शरीक करना) बता रही है।(३५) और जब लोगों को हम कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो वह उससे ख़ुश होते हैं और अगर उनके पिछले कर्मों के बदले में उन पर आफ़त आ जावे तो वह आस तोड़ बैठते हैं।(३६) क्या लोगों ने नहीं

† कहने का अर्थ यह है कि जैसे तुम अपने दासों और बाँदियों की परवाह नहीं करते और जैसा तुम्हारा मन चाहता है वैसे करते हो वैसे ही ख़ुदा को तुम्हारा और सारी सृष्टि का कुछ डर नहीं। वह जो चाहे करे। उसकी शान निराली है।

देखा कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहे ज़्यादा कर दे और (जिसकी चाहे) नपी-तुली कर देता है। जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इसमें निशानियाँ हैं।(३७) तो रिश्तेदार को और मुहताज को और मुसाफ़िर को उनका हक़ देते रहो। जो लोग ख़ुदा की रोज़ी के चाहने वाले हैं यह उनके वास्ते बेहतर है और यही मनुष्य मनमाने फल पाने वाले हैं।(३८) और जो तुम लोग ब्याज देते हो ताकि लोगों के माल में ज़्यादती हो तो वह (ब्याज) ख़ुदा के यहाँ (फूलता) फलता नहीं। जो ख़ुदा की राह पर ख़ैरात करते हो तो जो लोग ऐसा करते हैं उन्हीं के दून हो गये। (३९) अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोज़ी दी, फिर तुमको मारता है, फिर तुमको जिलायेगा। भला तुम्हारे शरीकों में कोई है जो इनमें से कोई काम कर सके? यह लोग जैसे-जैसे शरीक ठहराते हैं, ख़ुदा इनसे पाक और ज़्यादा बड़ा है।(४०) [रुकू ४ आयात १३]

लोगों की ही करतूतों से ख़ुश्की और पानी में ख़राबियाँ ज़ाहिर हो चुकी हैं। लोग जैसे-जैसे कार्य कर रहे हैं ख़ुदा उनको उनके कामों का मज़ा चखाये। शायद वे मान जावें।(४१) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि ज़मीन पर चलो-फिरो और पहलों का अन्त (आख़िर) देखो। उनमें से बहुधा शरीक ठहराते थे।(४२) तो इससे पहले कि ख़ुदा की तरफ़ से वह रोज़ (क़यामत) आवे जो टल नहीं सकता, तू दीन के सीधे (रास्ते) पर अपना मुँह सीधा किये रह। उस दिन (ईमानवाले और काफ़िर एक दूसरे से) जुदा-जुदा होंगे।(४३) जो इन्कार करता है तो उसी पर इसके इन्कारी की आफ़त पड़ेगी और जो अच्छे काम करता है तो वह अपने ही लिए (आराम का) सामान कर रहा है।(४४) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सत्कर्म किये, उनको अल्लाह अपनी कृपा से बदला देगा। वह काफ़िरों को पसंद नहीं करता(४५) और उसकी (क़ुदरत की) निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है (कि बारिश की) ख़ुशख़बरी पहुँचावें, ताकि अल्लाह तुम लोगों को अपनी कृपा (का स्वाद) चखाये, ताकि अपने हुक्म से नावें

चलावे और शायद तुम उसकी कृपा तलाश करो और भलाई मानो।(४६) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमसे पहले भी पैग़म्बर उनको क़ौमों की तरफ़ भेजे तो वह (पैग़म्बर) चमत्कार लेकर उनके पास आये (मगर उन्होंने झुठलाया)। तो जो लोग (झुठलाने के) अपराध के अपराधी हुए उनसे हमने बदला लिया और ईमानवालों को मदद देना हम पर ज़रूरी था।(४७) अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है। वह बादलों को उभारती है फिर जिस तरह चाहता है बादल को आसमान में फैलाता है और उसको टुकड़े-टुकड़े कर देता है। तो तू देखता है बादल के बीच में से मेंह बरसता है। फिर जब ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है बरसा देता है तो वह लोग ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं(४८) अगर्चे मेंह के बरसने से पहले यह लोग निराश† थे।(४९) तो ख़ुदा की कृपा की निशानियों को देख कि ज़मीन को उसके मरे पीछे कैसे जिलाता है। बेशक यह (ख़ुदा) मुर्दों का जिलाने-वाला है और हर चीज़ पर शक्तिमान है।(५०) और अगर हम (ऐसी) हवा चलावें और यह लोग खेती को पीला देखें तो खेती के पीले पड़े पीछे ज़रूर कृतघ्नता (नाशुक्री) करने लगते हैं।(५१) तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम न तो मुर्दों को सुना सकते हो न बहरों ही को (अपनी) आवाज़ सुना सकते हो उस वक़्त कि बहरे पीठ फेरकर भागें। (५२) और तू न अन्धों को उल्टे रास्ते से सीधे रास्ते पर ला सकता है, तू तो बस उन्हीं लोगों को सुना सकता है जो हमारी आयतों को मान लेते हैं। वही ईमानवाले हैं। (५३) [रुकू ५ आयात १३]

अल्लाह वह है जिसने तुम लोगों को कमज़ोर हालत से पैदा किया फिर (लड़कपन की) कमज़ोरी के बाद (जवानी की) ताक़त दी। फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापे (की हालत) दी। जो चाहता है पैदा करता है और वही जानकार क़ुदरतवाला है। (५४) और

† यानी जैसे वर्षा से पहले प्रायः लोग समझते हैं कि पानी न बरसेगा। वैसे ही सच्चे धर्म के प्रचार से पहले लोग उसके विषय में मनमानी बातें करते हैं।

जिस दिन क़यामत होगी पापी लोग सौगन्धें खायेंगे कि (दुनिया में) एक घड़ी से ज्यादा नहीं ठहरे। इसी तरह से लोग बहके रहे।(५५) जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया है वह जवाब देंगे कि तुम तो अल्लाह की किताब में क़यामत के दिन तक ठहरे और यह क़यामत का दिन है, मगर पापियों को यक़ीन न था।(५६) तो उस दिन न पापियों को उनका उज्र करना फ़ायदा पहुँचायेगा और न उन को ख़ुदा के राज़ी कर लेने का मौक़ा दिया जायगा।(५७) और हमने लोगों के लिए इस क़ुरान में हर तरह की मिसालें बयान कर दी हैं और अगर तुम इनको कोई चमत्कार लाकर दिखाओ तो जो इन्कार करनेवाले हैं वह कहेंगे कि तुम निरे फ़रेबी हो। (५८) जो लोग समझ नहीं रखते उनके दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है (५९) तो (ऐ पैग़म्बर!) तू क़ायम रह बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और ऐसा न हो कि जो लोग यक़ीन नहीं करते, तुमको उछाल दें।(६०) [रुकू ६ आयात ७]

---

३१ सूरे लुक़मान ५७

मक्का में उतरी, इसमें ३४ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-मीम।(१) यह हिकमतवाली किताब की आयतें हैं। (२) नेकों के लिए सूझ और कृपा है।(३) जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और वह क़यामत का भी यक़ीन रखते हैं।४) वे परवरदिगार की तरफ़ से सूझ पर हैं और वे मनमाने फल पानेवाले हैं।(५) और लोगों में कोई ऐसे भी हैं जो व्यर्थ कहानियाँ मोल लेते हैं ताकि बे समझे-बूझे ख़ुदा की राह से भटकाएँ और ख़ुदा की आयतों की हँसी उड़ाएँ। यही हैं जिनको ज़िल्लत की सज़ा होनी है।(६) और जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो अकड़ता हुआ मुँह फेरकर चल देता है, मानो उसको सुना ही नहीं, गोया उसके दोनो कान बहरे हैं। सो

तू उसे दुखदाई सज़ा की खुशख़बरी सुना दे।(७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिए निश्रामत के बाग़ हैं।(८) उनमें हमेशा रहेंगे, खुदा का दक्का वादा है। और वह जोरावर हिकमतवाला है।(६) उसी ने आसमानों को जिनको तुम देखते हो बग़ैर खम्भों के खड़ा किया है और ज़मीन में पहाड़ों को डाल दिया कि तुम्हें लेकर ज़मीन झुक न पड़े और उसमें हर क़िस्म के जानदार फैला दिये और आसमान से पानी बरसाया, फिर ज़मीन में हर तरह के उम्दा जोड़े पैदा किये। (१०) यह खुदा की पैदाइश है पस तुम मुझे दिखाओ कि खुदा के सिवाय जो पूजित तुम लोगों ने बना रखे हैं उन्होंने क्या पैदा किया। ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।(११) [रुकू १ आयात ११]

और हमने लुक़मान को हिकमत दी कि अल्लाह को जो धन्यवाद देता है अपने ही लिए धन्यवाद देता है और कृतघ्नता करता है तो अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़ के योग्य है।(१२) और जब लुक़मान ने अपने बेटे को शिक्षा देते समय उससे कहा कि बेटा, (किसी को) खुदा का शरीक न ठहराना। शरीक ठहराना जुल्म की बात है।(१३) और इन्सान को उसके माता-पिता के हक़ में ताक़ीद की कि उसकी माता ने बोझ उठाकर उसको पेट में रखा और दो बरस में उसका दूध छूटता है, मेरा और अपने माता-पिता का शुक्रगुज़ार हो, आख़िर को मेरे पास ही तुझको आना है।(१४) और अगर तेरे माता-पिता† तुझ को मजबूर करें कि तू हमारे साथ शरीक बना, जिसका तुझे इल्म नहीं, तो उसका कहा न मान। दुनिया में§ उनके साथ अच्छी तरह रह और उन लोगों के तरीक़े पर चल जो मेरी तरफ़ रुजू हैं। फिर तुमको मेरी तरफ़ लौटकर आना है, तो जैसे काम तुम लोग करते रहे हो मैं तुमको

---

† कहते हैं कि साद-बिन-वक्क़ास की मा ने तीन दिन खाना-पानी न लिया ताकि साद डरकर इस्लाम धर्म को छोड़ दे। परन्तु साद ने कहा कि मेरी मा सत्तर बार मरे तो भी मैं अपना ईमान न छोड़ूँगा। इस आयत का उतरना इसी घटना से संबंधित बताया जाता है।

§ दुनिया की बातों में मा-बाप की आज्ञा का पालन करो।

बताऊँगा।(१५) बेटा, अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज हो और फिर वह किसी पत्थर के अन्दर या आसमानों में या ज़मीन में हो तो उसको ख़ुदा ला हाज़िर करेगा। बेशक ख़बरदार अल्लाह बारीक जाननेवाला है।(१६) बेटा, नमाज़ पढ़ा कर और भली बात सिखला और बुरी बातों से मना कर और जो कुछ तुझ पर आ पड़े उसे झेल, बेशक यह एक बड़ा काम है।(१७) और लोगों से बेरुख़ी न करना और ज़मीन पर इतरा कर न चल। अल्लाह किसी इतरानेवाले को पसंद नहीं करता।(१८) और बीच की चाल चल। अपनी आवाज नीची कर। बुरी से बुरी गधों की आवाज़ है†।(१९) [रुकू २ आ.८]

क्या तुमने नहीं देखा कि जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा रखा है और तुम पर अपनी ज़ाहिरा और छिपी हुई निआमत पूरी की है, और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं। न तो इल्म है और न हिदायत और न रोशन किताब (जो उनको सीधा रास्ता) दिखाये।(२०) और जब इनसे कहा जाता है कि (क़ुरान) जो ख़ुदा ने उतारा है उस पर चलो, तो जवाब देते हैं कि नहीं हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया। भला अगर शैतान इनके बड़ों को नरक की सज़ा की तरफ़ बुलाता रहा हो (तो भी चलेंगे)? (२१) और जो ख़ुदा के सामने अपना सिर झुकाये और वह सत्कर्मी हो तो उसने पुख़्ता रस्सी पकड़ ली और हर काम का अन्त ख़ुदा पर है।(२२) और जो इन्कारी है तो उसके इन्कार की वजह से तुझे उदास न होना चाहिए। हमारी तरफ़ लौटकर आना है। तो जो कुछ यह करते रहे हम इनको बतावेंगे। अल्लाह जो दिलों में है, जानता है।(२३) हम इनको थोड़े फ़ायदे पहुँचाते रहेंगे, फिर इनको दुखदाई सज़ा की तरफ़ खींच बुलावेंगे (२४) और अगर तुम लोगोंसे पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया, तो यही जवाब देंगे कि ख़ुदा ने, तो कहो सब ख़ूबियाँ

† यानी गधों के समान ऊँचे स्वर में न बोल; इस प्रकार की बोली बुरी समझी जाती है।

अल्लाह को हैं, मगर इनमें से अक्सर समझ नहीं रखते।(२५) अल्लाह ही का है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है। बेशक अल्लाह बेपरवाह और तारीफ़ के योग्य है।(२६) और ज़मीन में जितने दरख्त हैं अगर (सब) कलम बन जायें और समुद्र उसके बाद सात समुद्र और उसकी मदद करें (यानी स्याही के हो जावें तो भी) ख़ुदा की बातें तमाम न होवें। बेशक अल्लाह ज़ोरावर हिकमतवाला है।(२७) तुम सबको पैदा करना और मरे पीछे जिलाना ऐसा ही है जैसा एक शख्स का (पैदा करना) और जिलाना। बेशक अल्लाह सुनता-देखता है।(२८) तूने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल करता है और सूर्य्य चन्द्रमा को काम में लगा रखा है कि हरएक ठहरे हुए वादे तक चलता है और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी खबर है।(२९) यह इसलिए है कि अल्लाह ही सच है और उसके सिवाय जिनको तुम पुकारते हो झूठ है और अल्लाह बड़ा सबसे ऊपर है। (३०) [रुकू ३ आयात ११]

तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही की कृपा से नाव नदी में चलती है कि कुछ अपनी क़ुदरत तुमको दिखाये। हरएक संतोषी और सच समझनेवाले के लिए निशानियाँ हैं।(३१) और जब लहरें (नाव के) चढ़नेवालों पर बादलों की तरह आ जाती हैं तो साफ़ दिल से अल्लाह की बन्दगी को ज़ाहिर करके उसी को पुकारने लगते हैं लेकिन जब ख़ुदा उनको छुटकारा देकर खुश्की पर पहुँचा देता है तो उनमें से कुछ हो बीच की चाल पर क़ायम§ रहते हैं और हमारी निशानियों से वही लोग इन्कारी रखते हैं जो क़ौल के झूठे और सच न समझने वाले हैं (३२) लोगों! अपने परवरदिगार का डर रखो और उस दिन से डरो कि न कोई बाप अपने बेटे के काम आवेगा और न कोई बेटा अपने बाप के काम आ सकेगा। ख़ुदा का वादा (क़यामत

§ यानी कठिनाई के समय मुशरिक और मुसलमान दोनों ख़ुदा ही को सहायता के लिए पुकारते हैं परन्तु आपत्ति टल जाने पर मुशरिक ख़ुदा को छोड़कर मूर्ति पूजने लगते हैं और मुसलमान हर हालत में ख़ुदा ही को पूजते हैं।

के दिन) सच्चा है, तो दुनिया की ज़िन्दगी के धोखे में न आ जाना और न ख़ुदा में फ़रेबिये (शैतान) का धोखा खाना।(३३) अल्लाह ही के पास क़यामत की खबर है और वही मेंह बरसाता और जो कुछ माताओं के पेट में है जानता है और कोई नहीं जानता कि कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा। बेशक अल्लाह ही जाननेवाला खबर रखनेवाला है।(३४) [रुकू ४ आयात ४]

---

३२ सूरे सिज्दह ७५

मक्का में उतरी, इसमें ३० आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। अलिफ़-लाम-मीम।(१) इसमें कुछ शक नहीं कि क़ुरान संसार के परवरदिगार की ओर से उतरता है।(२) क्या कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिल से) बना लिया है। बल्कि यह ठीक तुम्हारे परवरदिगार की ओर से है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहले कोई डरानेवाला नहीं पहुँचा (ख़ुदा की सज़ा से) डराओ। अजब नहीं कि यह लोग राह पर आ जावें।(३) अल्लाह वह है जिसने ६ दिन में आसमान और ज़मीन और उन चीज़ों को पैदा किया जो आसमान और ज़मीन के बीच में हैं। फिर तख़्त पर जा बिराजा। उसके सिवाय न कोई तुम लोगों का काम सँभालनेवाला है और न कोई सिफ़ारशी है। क्या तुम नहीं सोचते (४) (वह) आसमान से ज़मीन तक का बन्दोबस्त करता है। फिर तुम लोगों की गिनती के (अनुसार) हज़ार वर्ष की मुद्दत का एक दिन होगा। उस दिन तमाम इन्तज़ाम उसके सामने गुज़रेगा।(५) वही छिपी और खुली सब बातों का जाननेवाला ज़ोरावर मेहरबान है।(६) उसने जो चीज़ बनाई ख़ूब ही बनाई और आदमी की पैदायश को मिट्टी से शुरू किया।(७) फिर नाचीज़ निचोड़ यानी (वीर्य) से उसकी संतान बनाई।(८) फिर उसको दुरुस्त किया और

उसमें अपनी तरफ़ से जान डाली और तुम लोगों के लिए कान, आँखें, और दिल बनाये। तुम बहुत ही थोड़ी भलाई मानते हो।(९) और कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जायँगे तो क्या (फिर) हम नये जन्म में आवेंगे, बल्कि अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने को नहीं मानते (१०) कहो कि मौत (यमदूत) जो तुम पर तैनात हैं तुम्हारे जीवों को निकालते हैं फिर अपने परवरदिगार की ओर लौटाये जाओगे।(११) [रुकू २ आयात ११]

और अफ़सोस तुम अपराधियों को देखो कि अपने परवरदिगार के सामने सिर झुकाये खड़े हैं (और फ़रियाद कर रहे हैं) ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी आँखें और हमारे कान खुलें, हमको फिर (दुनिया में) भेज कि हम भलाई करें, हमको विश्वास आया।(१२) हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते, मगर हमारी बात पूरी होती है कि जिन्न और आदमी सबसे हम नरक भर देंगे।(१३) तो जैसे तुम अपने इस दिन के पेश आने को भूल रहे थे (आज उसका) मज़ा चखो कि हमने तुमको भुला दिया और जैसे-जैसे तुम काम करते रहे उसके बदले में हमेशा की सज़ा चखो।(१४) हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको वह याद दिलाई जाती है (तो) सिजदे में गिर पड़ते और अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ पवित्र याद करने लगते हैं और वे ग़ुरूर नहीं करते।(१५)★[सि.६] रात के समय उनकी करवटें बिछौना से तृप्त नहीं होतीं, डर और आशा से अपने परवरदिगार से दुआयें माँगते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमें से (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते हैं।(१६) तो कोई आदमी नहीं जानता कि लोगों के नेक काम के बदले में कैसी कैसी आँखों की ठंडक उसके लिये छिपा रखी है।(१७) तो क्या ईमान लानेवाला उसके बराबर है जो बेहुक्म है? बराबर नहीं हो सकते।(१८) सो जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये, उनके लिए रहने को बाग़ होंगे, मेहमानदारी उनके (नेक) कामों का बदला है जो करते रहे। (१९) और जो लोग बेहुक्म हुए उनका ठिकाना नरक होगा। जब उससे

निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायँगे और उनसे कहा जायगा कि जिस सज़ा (नरक) को तुम झुठलाते रहे अब उसी (नरक) का मज़ा चखो।(२०) और क़यामत की बड़ी सज़ा से पहले हम इनको (दुनिया में भी) सज़ा का मज़ा चखायेंगे। शायद यह लोग फिरें।(२१) और उससे बढ़कर अन्यायी कौन है कि उसको उसके परवरदिगार की बातों से शिक्षा दी जाय और वह उनसे मुँह फेर ले, हमको इन पापियों से बदला लेना है। (२२) [रुकू २ आयात ११]

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी थी तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम भी उसके मिलने से शक में न रहो और हमने उसको इसराईल के बेटों के लिए हिदायत ठहराया था।(२३) और हमने इसराईल के बेटों में से पेशवा बनाये थे जो हमारी आज्ञा से हिदायत किया करते थे और वह संतोष किये बैठे रहे और हमारी आयतों का विश्वास रखते रहे।(२४) (ऐ पैग़म्बर !) इसराईल के बेटे जिन-जिन बातों में फूट डालते रहे तुम्हारा परवरदिगार क़यामत के दिन उन-उनका फ़ैसला कर देगा (२५) क्या लोगों को इसको हिदायत नहीं हुई कि हमने इनसे पहले कितने गरोह मार डाले, यह लोग उन्हीं के घरों में चलते-फिरते हैं। इस लौट-फेर में बहुत पते हैं, तो क्या यह लोग सुनते नहीं।(२६) और क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम पड़ी हुई ज़मीन की तरफ़ पानी को निकाल देते हैं। फिर पानी के द्वारा खेती को निकालते हैं जिनमें से इनके चौपाये भी खाते हैं और आप भी खाते हैं, तो क्या (यह लोग) नहीं देखते।(२७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह फ़ैसला कब होगा।(२८) (ऐ पैग़म्बर !) जवाब दो कि जो लोग (दुनिया में) इन्कार करते रहे फ़ैसले के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आवेगा और न उनको मुहलत मिलेगी।(२९) (सो ऐ पैग़म्बर !) तू उनका ख़याल छोड़ और राह देख, वे भी राह देखते हैं।(३०) [रुकू ३ आयात ८]

—o—

३३ सूरे अहज़ाब १०

मक्का में उतरी, इसमें ७३ आयतें और ९ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है।(ऐ पैग़म्बर!) ख़ुदा से डरते रहो और काफ़िरों और दग़ाबाज़ों का कहा न मानो। बेशक अल्लाह जानकार हिकमतवाला है।(१) और तेरे परवरदिगार से जो हुक्म आवे उसी पर चल, अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(२) और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काम का बनाने वाला काफ़ी है।(३) अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे और न तुम लोगों की उन बीबियों को जिनको तुम मा कह बैठते हो तुम्हारी सच्ची मा बनाया और न तुम्हारे मुँहबोले बेटे को तुम्हारा बेटा ठहराया। यह तुम्हारे अपने मुँह की बात है और अल्लाह ठीक बात कहता है और वही राह दिखाता है।(४) उन (मुँहबोले बेटों) को उनके (सगे) बापों के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के न्याय के अधिक नज़दीक है। पस अगर तुमको उनके बाप मालूम न हों तो तुम्हारे दीनी भाई और तुम्हारे दीनी दोस्त हैं और तुमसे इसमें भूलचूक हो जाय तो इसमें तुम पर कुछ पाप नहीं। मगर हाँ दिल से इरादा करके ऐसा करो। और अल्लाह क्षमा करनेवाला मेहरबान है। (५) ईमानवालों को अपनी जान से ज्यादा नबी से लगाव है और उस (पैग़म्बर) की स्त्रियाँ उनकी माताएँ हैं। नातेवाले एक दूसरे से सब ईमानवालों और देश छोड़नेवालों से ज्यादा लगाव रखते हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों के साथ नेक बर्ताव करना चाहो, यह आज्ञा किताब में लिखी हुई है।(६) और जब हमने पैग़म्बरों से और तुझसे, नूह से, इब्राहीम से, मूसा और मरियम के बेटे ईसा से क़रार लिया और पुख़्ता अहद बाँधा था।(७) (क़यामत के दिन ख़ुदा) सच्चों से उनकी सत्यता का हाल पूछेगा और काफ़िरों को दुखदाई सज़ा तैयार है। (८) [रुकू १ आयात ८]

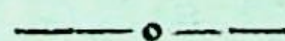
ऐ मुसलमानों ! अपने ऊपर अल्लाह का एहसान याद करो जब तुम पर (बद्र व ऊहद के युद्ध में) फ़ौजें चढ़ आई तब हमने उन पर आँधी भेजी और फ़ौज जो तुमको दिखलाई नहीं देती थी और जो तुम लोग करते हो अल्लाह देख रहा है।(६) जिस वक़्त कि (दुश्मन) तुम पर तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ़ से आये थे और (डर के मारे तुम्हारी) आँखें फिरी रह गई थीं और दिल गलों तक आ गये थे और तुम ख़ुदा की बाबत तरह-तरह के ख़याल करने लगे थे।(१०) वहाँ मुसलमानों की जाँच की गई और वह ख़ूब ही हिलाये गये।(११) और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनके दिलों में रोग थे, बोल उठे कि ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने जो हमसे वादा किया था बिल्कुल धोखा था।(१२) और जब उनमें से एक गरोह कहने लगा कि मदीने के लोगों, तुमसे (इस जगह दुश्मन के मुक़ाबिलों में) नहीं ठहरा जायगा तो लौट चलो और उनमें से कुछ लोग पैग़म्बर से घर लौट जाने की इजाज़त माँगने लगे (और) कहने लगे कि हमारे घर खुले पड़े हैं। वह हरगिज़ खुले न पड़े थे उनका इरादा सिर्फ़ भागने का था।(१३) और अगर शहर में कोई किनारे से आकर घुसे, फिर उन्हें दीन से बिचलाना चाहे तो वह लोग मान ही लेते और थोड़ी देर करते।(१४) हालाँकि पहले ख़ुदा से वादा कर चुके थे कि (हम दुश्मन के सामने से) पीठ न फेरेंगे और ख़ुदा के वादे की पूछ-ताछ होकर रहेगी। (१५) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो (यह) भागना तुम्हारे काम न आवेगा और अगर भागकर बच भी गये तो (दुनिया में) चन्द रोज़ रह-बस लोगे।(१६) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ बुराई (करानी) चाहे तो कौन ऐसा है जो तुमको उससे बचा सके, तुम पर मेहरबानी करना चाहे (तो कौन उसको रोक सकता है) और ख़ुदा के सिवाय न तो अपना हिमायती ही पाओगे और न मददगार।(१७) ख़ुदा तुम में से उनको ख़ूब जानता है जो (दूसरों को लड़ाई में शामिल होने से) रोकते और अपने भाईबन्दों से कहते हैं कि (लड़ाई से

अलग होकर) हमारे पास चले आओ और लड़ाई में हाज़िर नहीं होते मगर थोड़ी देर के लिए।(१८) दरेग़ रखते हैं तुम्हारी तरफ़ से तो जब डर का वक़्त आवे तो तू उनको देखगा कि तेरी तरफ़ ताकते हैं और उनकी आँखें ऐसी फिरती हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी हो। फिर जब डर दूर हो जाता है तो माल (लूट) पर गिर पड़ते हैं और बढ़-चढ़कर तेज़ ज़बानों से तुम पर ताने मारते हैं। यह लोग ईमान नहीं लाये तो अल्लाह ने उनके काम अकारथ कर दिये और अल्लाह के पास यह आसान है।(१६) ख़्याल कर रहे हैं कि (यह) लश्कर नहीं गये और अगर दुश्मनों के) लश्कर आ जायें तो यह लोग चाहें कि देहात में निकल जायँ और उनकी ख़बर पूछते हैं, और अगर यह लोग तुममें होते हैं तो बहुत ही कम लड़ते हैं।(२०) [रुकू २ आयात १२]

तुम्हारे लिए पैग़म्बर की चाल सीखनी भली थी। उसके लिए जो अल्लाह और क़यामत के दिन से डरते थे और बहुत-बहुत ख़ुदा की याद किया करते थे।(२१) और जब मुसलमानों ने (दुश्मनों के) गराह को देखा तो बोल उठे कि यह तो वही है जो ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने हमें पहले से बता रखा था और अल्लाह और रसूल ने सच कहा था और उससे लोगों का ईमान और भी ज़्यादा हो गया।(२२) ईमानवालों में कितने मर्द हैं कि अल्लाह से जो उन्होंने क़ौल कर लिया था उसे सच कर दिखाया। तो उनमें वह भी थे जो काम पूरा कर चुके और उनमें ऐसे भी हैं कि इन्तज़ार करते हैं और वह कुछ भी नहीं बदले।(२३) तो अल्लाह सच्चों को सच का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या उनकी तौबा क़बूल कर ले, बेशक अल्लाह क्षमा करनेवाला मेहरबान है।(२४) और ख़ुदा ने काफ़िरों को हटा दिया। ग़ुस्से में उनको कुछ भी फ़ायदा न पहुँचा और ख़ुदा ने मुसलमानों को लड़ने की नौबत न आने दी, और अल्लाह बलवान जीतनेवाला है।(२५) और किताबवालों में से जो लोग (यानी यहूदी) मुशरिकीन के मददगार हुए थे, ख़ुदा ने उनको गढ़ियों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में

ऐसी धाक बैठा दी कि तुम कितनों को जान से मारने लगे और कितनों को क़ैद करने लगे।(२६) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का और उस ज़मीन (ख़ैबर) का जिसमें तुमने क़दम तक नहीं रखा था तुमको मालिक कर दिया और अल्लाह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है। (२७) [रुकू ३ आयात ७]

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया का जीना या यहाँ की रौनक़ चाहती हो तो मैं तुम्हें दिलाकर अच्छी तरह से विदा कर दूँ।(२८) और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर और क़यामत के घर को चाहनेवाली हो तो तुममें से जो नेकी पर हैं उनके लिए खुदा ने बड़े फल तैयार कर रखे हैं।(२९) ऐ पैग़म्बर की बीबियों ! तुममें से जो कोई ज़ाहिरा बदकारी करेगी, उसके लिए दोहरी सज़ा की जायगी और अल्लाह के नज़दीक यह मामूली बात है।(३०)



बाईसवाँ पारा (वमें यक़्नुत)

और जो तुममें से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञाकारिणी होगी और भले काम करेगी हम उसको उसका दुगना फल देंगे और हमने उनके लिए प्रतिष्ठा की रोज़ी तैयार कर रखी है। (३१) ऐ पैग़म्बर की बीबियों ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुमको परहेज़गारी मंज़ूर है तो दबी ज़बान (किसी) के साथ बात न किया करो। (कि ऐसा करोगी) तो जिसके दिल में (किसी तरह की) खोटाई है, वह तुमसे (किसी तरह की) आशा पैदा कर लेगा और तुम माक़ूल बात कहो।(३२) और अपने घरों में ठहरो और अपना बनाव-शृंगार वग़ैरह न दिखाती फिरो, जैसा पहले नादानी के वक़्त में दिखाने का दस्तूर था। और नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा मानो। घरवालियों ! खुदा यही चाहता है कि तुम से नापाकी दूर करे और तुमको खूब पाक-साफ़ बनाये।(३३) और

तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की बात और अक़्लमंदी की बातें पढ़ी जाती हैं उनको याद रखो, (क्योंकि) अल्लाह भेद का जाननेवाला जानकार है। (३४) [रुकु ४ आयात ७]

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतें और आज्ञाकारी मर्द और आज्ञाकारी औरतें और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें और संतोषी मर्द और संतोषी औरतें और गिड़गिड़ाने वाले मर्द और गिड़गिड़ाने वाली औरतें और पुण्य करनेवाले मर्द और पुण्य करनेवाली औरतें और रोज़ा (व्रत) रखनेवाले मर्द और रोज़ा रखनेवाली औरतें और विषय-इन्द्रिय के थामनेवाले मर्द और विषय-इन्द्रिय को थामनेवाली औरतें और अक्सर याद करनेवाली औरतें इन (सब) के लिए अल्लाह ने पापों की क्षमा और बड़े फल तैयार कर रखे हैं।(३५) जब अल्लाह और उसका पैग़म्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी मुसलमान औरत और मर्द को अपने काम का अधिकार नहीं है (जैनब और उसके भाई अब्दुल्ला का ज़िक्र है जिन्होंने हज़रत की तजवीज़ को नामंज़ूर किया था कि ज़ैद [ग़ुलाम] को शादी के लिए नामंज़ूर करते थे)। और जिसने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म नहीं माना, वह ज़ाहिरा राह भूल गया (यह सुनकर जैनब ने लाचारी से ज़ैद के साथ निकाह किया]।(३६) और जब तू (ऐ मुहम्मद !) उस (ज़ैद) से जिस पर अल्लाह ने और तू ने कृपा की कहता था† कि तू अपनी जोरू को अपने पास रहने दे

† ज़ैद (एक ग़ुलाम) को मुहम्मद साहब ने मोल लेकर आज़ाद कर दिया था और उसकी शादी जैनब के साथ कर दी थी। क़ुरैश दासों के साथ ब्याह करने को बुरा समझते थे। शादी होने के बाद जैनब अपने पति को दास होने का ताना दे बैठती थी। इस पर ज़ैद ने उनको तलाक़ देना चाहा। मुहम्मद साहब चाहते थे कि यह संबंध बना रहे इसलिए दोनों को समझाते-बुझाते थे परन्तु वह अन्त में टूट ही कर रहा और जैनब के साथ मुहम्मद साहब ने स्वयं ब्याह कर लिया क्योंकि उस समय जैनब का ब्याह और किसी आज़ाद के साथ नहीं हो सकता था। इस सम्बन्ध का लक्ष्य अरब की दो बुरी रीतियों

और अल्लाह से डर और तू अपने दिल में उस बात को छिपाता था अल्लाह जिसे ज़ाहिर किया चाहता था। और तू आदमियों से डरता था हालाँकि तुझे अल्लाह से डरना चाहिए था। पस जब ज़ैद ने तलाक़ दी तो हमने मुहम्मद तेरा निकाह उस औरत से कर दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुँह बनाये बेटों (दत्तक पुत्रों) की जोरुओं से निकाह कर लेना पाप न रहे, जबकि उसको छोड़ दें और उससे अपना सम्बन्ध तोड़ दें और यह ख़ुदा ही का हुक्म था। (३७) अल्लाह ने पैग़म्बर के लिए जो बात ठहरा दी हो उसमें पैग़म्बर के लिए कुछ हर्ज नहीं। जो पैग़म्बर पहले हो चुके हैं उनमें ख़ुदा का यही दस्तूर रहा है और अल्लाह का हुक्म मुक़र्रर ठहर चुका है। (३८) वे ख़ुदा के पैग़ाम पहुँचाते और ख़ुदा का डर रखते थे और ख़ुदा के सिवाय किसी से नहीं डरते थे और हिसाब के लिए अल्लाह काफ़ी है।(३९) मुहम्मद तुममें से किसी मर्द का बाप नहीं है (तो ज़ैद का क्यों है)। वह तो अल्लाह का पैग़म्बर है और सब पैग़म्बरों पर मुहर है और अल्लाह सब चीज़ों से जानकार है।(४०) [रुकू ५ आयात ६]

मुसलमानों! बहुतायत से ख़ुदा को याद किया करो।(४१) और सुबह व शाम उसी की पवित्रता याद करते रहो।(४२) वही है जो तुम पर दया भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी, ताकि तुमको अँधेरों से निकालकर रोशनी में लाये और ख़ुदा ईमानवालों पर मेहरबान है।(४३) जिस दिन यह लोग ख़ुदा से मिलेंगे (उसका) सलाम उनकी सलामी होगी और ख़ुदा ने उनके इज़्ज़त का फल तैयार कर रखा है।(४४) पैग़म्बर हमने तुमको गवाही देनेवाला और डरानेवाला भेजा है।(४५) और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ़ बुलानेवाला और रोशन चिराग़ बनाकर भेजा है।(४६) और ईमानवालों को इसकी ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन पर अल्लाह की बड़ी कृपा है।(४७) और काफ़िरों और दग़ाबाज़ों का कहा न मान और उनके दुख देने की

को तोड़ना था: एक यह कि आज़ाद हुए ग़ुलाम की छोड़ी हुई स्त्री को घृणा की दृष्टि से देखना, दूसरे मुँह बोले बेटों को सगे बेटों ही जैसा हर बात में समझना।

चिन्ता न कर और ख़ुदा पर भरोसा रख और ख़ुदा काम बनानेवाला काफ़ी है।(४८) मुसलमानों! जब तुम मुसलमान औरतों के साथ अपना निकाह करो फिर उनका हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, तो इद्दत (में बिठाने) का तुमको उन पर कोई हक़ नहीं कि इद्दत की गिनती पूरी कराने लगो। सो उनको कुछ दे-दिलाकर अच्छे क़ायदे के साथ बिदा कर दो।(४९) ऐ पैग़म्बर। हमने तेरी वह बीवियाँ तुझ पर हलाल कीं जिनके मिहर तू दे चुका है और लौंडियाँ जिन्हें अल्लाह तेरी तरफ़ लाया और तेरे चचा की बेटियाँ और तेरी बुआ की बेटियाँ और तेरे मामा की बेटियाँ और तेरी मौसियों की बेटियाँ जो तेरे साथ देश त्यागकर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होंने अपने को पैग़म्बर को दे दिया। (वे मिहर निकाह से आना चाहें) बशर्ते कि पैग़म्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे। यह हुक्म ख़ास तेरे ही लिए है, सब मुसलमानों के लिए नहीं। हमने जो मुसलमानों पर उनकी बीवियों और उनके हाथ के माल (यानी लौंडियों) का हक़ (मिहर) ठहरा दिया है हमको मालूम है इसलिए कि तुम पर (किसी तरह की) तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।(५०) अपनी बीवियों में से जिसको चाहो अलग रखो, जिसको चाहो अपने पास रखो। और जिनको तुमने अलग कर दिया था उनमें से किसी को फिर बुलवा लो तो तुम पर कोई पाप नहीं। यह इसलिए कि बहुधा तुम्हारा बीवियों की आँखें ठंडी रहें और उदास न हों और जो तुम उनको दे दो उसे लेकर सबकी सब राज़ी रहें और जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है अल्लाह जानता है और अल्लाह जानने-सहनेवाला है।(५१) (ऐ पैग़म्बर! इस वक़्त के) बाद से (दूसरी) औरतें तुमको दुरुस्त नहीं और न यह (दुरुस्त है) कि उनको बदलकर दूसरी बीवियाँ कर लो। अगर्चे उनकी ख़ूबसूरती तुमको अच्छी ही क्यों न लगे। मगर बाँदियाँ (और भी आ सकती हैं) और अल्लाह हर चीज़ का देखनेवाला है।(५२)[रुकू ६ आ. १२]

मुसलमानों! पैग़म्बर के घरों में न जाया करो, मगर यह कि तुमको खाने के लिए (आने की) इजाज़त दी जाय कि तुमको खाना

तयार होने की राह न देखनी पड़े, मगर जब तुम बुलाये जाओ तब आओ और जब खा चुको तो अपनी-अपनी राह लो और बातों में न लग जाओ, इससे पैग़म्बरों को दुख होरहा है और पैग़म्बर तुमसे शरमाते हैं, और अल्लाह ठीक बात बताने में शर्म नहीं करता। और जब पैग़म्बर की बीबियों से तुम्हें कोई वस्तु माँगनी हो तो पर्दे के बाहर खड़े रहकर उनसे माँगो। इससे तुम्हारे और उनकी औरतों के दिल पाक रहेंगे; और तुम्हें योग्य नहीं है कि ख़ुदा के पैग़म्बर को दुख दो और न यह योग्य है कि पैग़म्बर के बाद कभी उनकी बीबियों से निकाह करो। ख़ुदा के यहाँ यह बड़ा पाप है।(५३) तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ, अल्लाह सब जानता है।(५४) पैग़म्बर की बीबियों पर अपने बापों के अपने बेटों के अपने भाइयों के अपने भतीजों के और अपने भानजों के और अपनी औरतों और अपने बाँदी-ग़ुलामों के सामने होने में कुछ पाप नहीं और अल्लाह से डरती रहो, अल्लाह हर चीज़ का गवाह है।(५५) अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर पर मेहरबानी भेजते रहते हैं (सो) मुसलमानों !(तुम भी पैग़म्बर पर मेहरबानी और सलाम भेजते रहो।(५६) जो लोग अल्लाह और पैग़म्बर को दुख देते हैं उन पर दुनिया और क़यामत में अल्लाह की फटकार है और ख़ुदा ने उनके लिए ज़िल्लत की सज़ा तैयार कर रखी है।(५७) और जो लोग मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बिना अपराध सताते हैं (लफ़ंट लगाते हैं) तो उन्होंने झूठ का और ज़ाहिरा पाप का बोझ उठाया। (५८) [रुकू ७ आयात ६]

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीबियों और अपनी बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि अपनी चादरों के घूँघट निकाल लिया करें। इससे बहुधा पहचान पड़ेगी (कि नेकबख़्त हैं) और कोई छेड़ेगा नहीं; (मदीने में बिला घूँघटवाली औरतों को शरीर लोग छेड़ते थे) और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है।(५९) मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनकी नियतें बुरी हैं और जो लोग मदीने में (झूठी) ख़बरें फैलाया करते हैं अगर बाज़ न आवेंगे तो हम तुमको उन पर उभार देंगे। फिर मदीने में तुम्हारे पड़ोस में चन्द रोज़ के सिवाय ठहरने न

पावेंगे। (६०) इनका यह हाल हुआ कि जहाँ पाये गये पकड़े गये और जान से मारे गये। (६१) जो लोग पहले हो चुके हैं उनमें ख़ुदा का दस्तूर रहा है। (ऐ पैग़म्बर !) तुम ख़ुदा के दस्तूर में कदापि तब्दीली न पाओगे। (६२) (ऐ पैग़म्बर !) लोग तुमसे क़यामत का हाल दरयाफ़्त करते हैं, तुम कहो कि क़यामत की खबर तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानो शायद क़यामत निकट आ गई।(६३) बेशक अल्लाह ने काफ़िरों को फटकार दिया है और उनके लिए दहकती हुई आग तैयार कर रखी है।(६४) उसमें हमेशा रहेंगे, न हिमायती पावेंगे और न मददगार।(६५) (यह वह दिन होगा) जबकि इनके मुँह आग में उलट-पलट किये जावेंगे और कहेंगे शोक हमने अल्लाह का और पैग़म्बर का कहा माना होता।(६६) और कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहा माना, फिर उन्होंने हमको राह से भटका दिया।(६७) तो ऐ हमारे परवरदिगार! उनको दुहरी सज़ा दे और उन पर बड़ी लानत कर। (६८) [रुकू ८ आयात १०]

मुसलमानों! उन लोगों-जैसे न बनो जिन्होंने मूसा को दुख दिया फिर अल्लाह ने उनके कहे से उसे बेऐब दिखलाया और वह अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़तदार था।(६९) मुसलमानों! अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहो। (७०) वह तुमको तुम्हारे कर्म सँभाल देगा और तुम्हारे पाप तुमको क्षमा करेगा। और जिसने अल्लाह और पैग़म्बर का कहा माना उसने बड़ी कामयाबी पाई।(७१) हमने वह अमानत आसमानों, ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी। उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गये और आदमी ने उसे उठा लिए, वह बड़ा ज़ालिम नादान था।(७२) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (कपटी) मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को सज़ा दे और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों पर (अपनी) कृपा करे। अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (७३) [रुकू ९ आयात ५]

—o—

३४ सूरे सबा ५८

मक्का में उतरी, इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। सब खूबी अल्लाह की है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है उसी का है और आखिरत में उसी की प्रशंसा है और वही हिकमतवाला खबरदार है।(१) जो कुछ जमीन में दाखिल होता है (जैसे बीज) और जो कुछ उससे निकलता है जैसे वनस्पति और जो कुछ आसमान से उतरता है (जैसे पानी) और जो कुछ उसमें चढ़कर जाता है (जैसे भाप) वह जानता है, और वही कृपालु बख़्शनेवाला है।(२) और इन्कारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। पोशीदा बातों के जाननेवाले अपने परवरदिगार की क़सम जरूर आवेगी, जर्रा भर आसमानों और ज़मीन में उससे छिपा नहीं और जर्रा (कण) से छोटी और जर्रा से बड़ा जितनी चाजें हैं सब रोशन किताब में लिखी हुई हैं।(३) ताकि ईमानवालों को उनका बदला दे। यही वह लोग हैं जिनके लिए बख़्शीश और इज्ज़त की रोज़ी है।(४) और जो लोग हमारी आयतों के हराने में कोशिश करते रहे उन्हें दुखदाई सज़ा है।(५) और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि तेरे परवरदिगार की तरफ़ से जो तुझ पर उतरा है वही सच है और उस जबरदस्त खूबियोंवाले की राह दिखलाता है।(६) और जो लोग इन्कार करनेवाले हैं वह कहते हैं कि कहो तो हम तुमको ऐसा आदमी (मुहम्मद) बतलावें जो तुमको खबर देगा कि जब तुम मरे पीछे बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो जाओगे तो तुमको फिर नये जन्म में आना होगा।(७) (इस शख़्स ने) अल्लाह पर कैसा झूठ बाँधा है या इसको किसी तरह का जुनून है, (कोई नहीं) परन्तु जो क़यामत का यक़ीन नहीं रखते दुख में और गलती में दूर पड़े हैं, (८) तो क्या इन लोगों ने आसमान और जमीन की तरफ़ जो इनके आगे और इन के पीछे है नहीं देखा। अगर हम चाहें तो इनको जमीन में धँसा दें या

इन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इसमें हरेक बन्दे को जो रुजू रखता है पता है। (९) रुकू १ आयात ९]

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बड़ाई दी। ऐ पहाड़ों और परिन्दों! दाऊद के साथ रुजू होकर पढ़ो और उस (दाऊद) के लिए हमने लोहे को मुलायम कर दिया (१०) कि पूरी जिरह बख़्तर बनाये (और कड़ियों के) जोड़ने में अन्दाज़ का ख़्याल रक्खा और तुम सब भले काम करो। जो कुछ तुम करते हो, मैं देख रहा हूँ।(११) और हवा को सुलेमान के अधिकार में कर दिया था कि उसकी सुबह की मंज़िल एक महीना भर को (राह) होती और उसकी शाम की मंज़िल महीना भर की (राह) होती। और हमने उनके लिए ताँबे का चश्मा बहा दिया और जिन्नों में से वह जिन्न जो उसके परवरदिगार के हुक्म से उनके सामने काम करते। और इनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरेगा हम उसको नरक की सज़ा चखायेंगे।(१२) और वह जिन्न उनके लिए जो वह चाहता बनाते थे। किले तसवीरें† और प्याले जैसे तालाब और देगें जो एक ही जगह रखे रहें। ऐ दाऊद के घरवालों! शुक्रगुज़ारी करो और हमारे बन्दों में थोड़े शुक्रगुज़ार हैं।(१३) फिर जब हमने सुलेमान पर मौत भेजी तो जिन्नों को उनके मरने का पता न बताया। मगर घुन के कीड़े ने जो सुलेमान की लाठी को खाता था यानी जब वह गिर पड़ी तो जिन्नों ने जाना कि अगर (हम) छिपी हुई बातें जानते होते तो ज़िल्लत की मुसीबत में न रहते।(१४) सबा (के लोगों) के लिए उनकी बस्ती में एक निशानी थी। दो बाग़ दाहिने और बायें थे, अपने परवरदिगार की रोज़ी खाओ और उसको धन्यवाद दो। उम्दा शहर और बख़्शनेवाला परवरदिगार।(१५) इस पर उन्होंने कुछ परवाह न की, तो हमने उन पर बड़े ज़ोर का नाला छोड़

† दाऊद के समय में मूर्तियाँ बनाना मना नहीं था। यह मूर्तियाँ महापुरुषों की होती थीं जैसे पैग़म्बर और सन्त आदि। उनको मस्जिदों में रखा जाता था ताकि लोग उनको देखकर ख़ुदा को याद करें। अरबवाले उनको स्वयं पूजने लगे, इसलिए इस्लाम में जीवधारी वस्तुओं की मूर्तियाँ बनाना रोक दिया गया।

दिया और हमने उनके दो बाग़ों के बदले में और ही दो बाग़ दिये जिनके फल कसैले और झाऊ और थोड़े से बेर थे।(१६) यह हमने उनको उनकी कृतघ्नता (नाशुक्री) का बदला दिया और हम कृतघ्नों को (ऐसे) बदला दिया करते हैं।(१७) और हमने सबा के लोगों और उन देहात के बीच जिनमें हमने बरकत दे रखी थी और (बहुत से) गाँव (आबाद) कर रखे थे जो दिखाई देते थे और उनमें चलने की मंज़िलें ठहरा दीं कि बेखटके इनमें रातों और दिनों को चलो-फिरो।(१८) फिर कहने लगे ऐ परवरदिगार! हमारी मंज़िलों को दूर-दूर कर दे। इन लोगों ने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया। फिर हमने उनके हिस्से बना दिये और टुकड़े-टुकड़े कर दिये। हर ठहरने वाले (संतोषी) और सच समझनेवालों के लिए इसमें पते हैं।(१९) और इब्लीस ने अपनी अटकल उन पर सच कर दिखाई। उन्होंने उसी की राह पकड़ी मगर थोड़े-से ईमानवालों ने (उसकी राह न पकड़ी)(२०) और शैतान का उन पर कुछ ज़ोर न था और मतलब असली यह था कि जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं हम उनको उन लोगों से मालूम कर लें जो उसकी तरफ़ से शक में हैं और तेरा परवरदिगार हर चीज़ का निगहबान है। (२१) [रुकू २ आयात १२]

(ऐ पैग़म्बर!) कहो कि ख़ुदा के सिवाय जिनको तुम समझते हो उनको बुलाओ (कि वह) न तो आसमानों ही में ज़र्रा भर अधिकार रखते हैं और न ज़मीन में और न आसमान ज़मीन में इनका कुछ साझा है और न इनमें से कोई मददगार।(२२) और ख़ुदा के यहाँ इनकी सिफ़ारिश काम नहीं आती मगर उसके (काम आयेगी) जिसकी बाबत सिफ़ारिश की इजाज़त दे, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट उठ जावे तब कहेंगे तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फ़र्माया। वे कहेंगे जो वाजिबी है, और वही सबसे ऊपर बड़ा है।(२३) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) पूछो कि तुमको आसमान और ज़मीन में कौन रोज़ी देता है? कहो कि अल्लाह और मैं (हूँ) या तुम (हो, एक न एक फ़रीक़ तो) अवश्य सच राह पर है और (दूसरा) खुली हुई

गुमराही में।(२४) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि हमारे पापों की पूछ न तुमसे और न तेरे पापों की पूछ-ताछ मुझसे होगी।(२५) (और) कह दो कि हमारा परवरदिगार (क़यामत के दिन) हमको जमा करेगा। फिर हममें न्याय के साथ फ़ैसला कर देगा और वह बड़ा जानकार न्यायी है।(२६) (ऐ पैग़म्बर !) कहो जिसको तुम शरीक (ख़ुदा) बनाकर ख़ुदा के साथ मिलाते हो उन्हें मुझे दिखलाओ। कोई उसका शरीक नहीं बल्कि वही अल्लाह ज़बरदस्त हिकमतवाला है।(२७) और हमने तुमको तमाम (दुनिया के) लोगों की तरफ़ भेजा है कि उनको ख़ुशख़बरी सुनाओ और डराओ। मगर अक्सर लोग नहीं समझते।(२८) और (पूछते हैं) अगर तुम सच्चे हो तो यह (क़यामत का) वादा कब पूरा होगा ? (२९) कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का वादा है तुम न उसके एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे। (३०) [रुकू ३ आयात ९]

और इन्कारी कहने लगे कि हम इस क़ुरान को कभी न मानेंगे और न इससे पहली किताबों को मानेंगे और अफ़सोस तुम देखो जब (क़यामत के दिन यह) ज़ालिम अपने परवरदिगार के सामने खड़े किये जायँगे एक की बात एक रद्द कर रहा होगा कि कमज़ोर (यानी छोटे दर्जे के मनुष्य) बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाते। (३१) (इस पर) बड़े लोग कमज़ोरों से कहेंगे कि जब तुम्हारे पास (ख़ुदा की ओर से) हिदायत आई तो क्या उसके आये पीछे हमने तुमको उससे रोका ? बल्कि तुम अपराधी थे।(३२) और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे रात-दिन के तुम्हारे फ़रेब ने हमें गुमराह कर दिया। जब तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह को न मानें और उसके साथ दूसरे पूजित ठहरावें और जब यह लोग सज़ा को देखेंगे तो छिपे छिपे पछतायेंगे और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डलवा देंगे। जैसे-जैसे काम ये लोग करते रहे हैं उन्हीं का फल पावेंगे।(३३) और हमने जिस बस्ती में डरानेवाला भेजा वहाँ के धनी लोगों ने कहा कि जो कुछ तुम लाये हो हम उसे नहीं मानते। (३४)

और (इसी तरह ये मक्के के काफ़िर भी मुसलमानों से) कहते हैं कि हम माल और औलाद में अधिक हैं और हमको दण्ड न होगा। (३५) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरा परवरदिगार जिसकी रोज़ी चाहता है ज्यादा कर देता है और (जिसकी चाहता है) नपी तुली। मगर बहुत लोग नहीं जानते (३६) [रुकू ४ आयात ६]

और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसी नहीं कि तुमको हमारा नगीची बनावे, मगर जो ईमान लाया और उसने नेक काम किये ऐसे मनुष्यों के लिए उनके काम का दुगना बदला है और वह बालाख़ानों में भरोसे से बैठे होंगे। (३७) और जो लोग हमारी आयतों के हराने की कोशिश करते हैं वह सज़ा में रखे जायँगे।(३८) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मेरा परवरदिगार अपने सेवकों में से जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है नपी-तुली कर देता है और तुम लोग कुछ भी (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करो वह उसका बदला देगा और वह सब रोज़ी देनेवालों से अच्छा है।(३९) और ख़ुदा सब लोगों को जमा किये पीछे फ़रिश्तों से पूछेगा कि क्या यह तुम्हारी ही पूजा किया करते थे।(४०) वह बोले तू पाक है, हमको तुझसे सरोकार है, इनसे नहीं। बल्कि यह लोग जिन्नों की पूजा करते थे। इनमें अक्सर जिन्नों पर यक़ीन रखते हैं।(४१) सो आज तुममें एक दूसरे के भले-बुरे का मालिक नहीं और हम उन पापियों से कहेंगे कि जिस आग को तुम झुठलाते थे उसका मज़ा चखो।(४२) और जब हमारी खुली-खुली आयतें उनके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं कि यह (मुहम्मद) एक आदमी है। इसका मतलब यह है कि जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजा करते थे तुमको उनसे रोक दे और (क़ुरान के बारे में) कहते हैं कि यह तो बस निरा झूठ है (और इसका अपना) बनाया हुआ और लोग इन्कार करनेवाले हैं। जब उनके पास सच्ची बात आई तो वह उसकी निस्बत कहने लगे कि यह तो ज़ाहिरा जादू है। (४३). और हमने इनको किताबें नहीं दीं कि उनको पढ़ते हों और न तुमसे पहले इनकी तरफ़ कोई डरानेवाला

भेजा।(४४) और इनसे अगले लोगों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया था और जो हमने उन लोगों को दे रखा था यह लोग (तो अभी) उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे। फिर उन्होंने हमारे पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमारा क्या बिगाड़ हुआ ?(४५) [रुकू ५ आयात ६]

(ऐ पैग़म्बर ! तुम इनसे) कहो कि मैं तुमको एक नसीहत (शिक्षा) करता हूँ कि अल्लाह के काम के लिए दो-दो और एक-एक खड़े हों। फिर सोचो कि तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद) को किसी तरह का जनून तो नहीं है। यह तो तुमको आगे आनेवाली एक बड़ी आफ़त से डरानेवाला है।(४६) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मैं तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं चाहता, मेरी मज़दूरी तो अल्लाह पर है औ वह हर चीज़ का गवाह है ! (४७) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मेरा परवरदिगार सच्चा चला रहा है और वह छिपी हुई बातों को ख़ूब जानता है।(४८) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि सच्ची बात आ पहुँची और झूठ से न तो कभी कुछ होता है और न आगे होगा।(४६) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मैं ग़लती पर हूँ तो मेरी ग़लती मेरे ही ऊपर है और अगर सच्ची राह पर हूँ तो इस ईश्वरीय सन्देशे के सबब से जिसे मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ भेजता है, वह सुननेवाला नज़दीक है।(५०) और (ऐ पैग़म्बर !) कभी तू देख जब यह घबड़ाये हुए फिर भागकर नहीं बचेंगे और पास के पास से पकड़ जायँगे।(५१) और कहेंगे हम उस पर ईमान लाये और (इतनी) दूर जगह से कैसे इनके हाथ (ईमान) आ सकता है। (५२) और पहले उससे इन्कार करते रहे और वे देखे भाले दूर ही से (अटकलें) तुक्के चलाते रहे।(५३) और इनमें और इनकी उम्मेदों में एक अटकाव पड़ गया, जैसा पहले उनके पूर्वजों के साथ किया गया कि वे लोग धोखे में थे। (५४) [रुकू ६ आयात ६]

——:०:——

३५ सूरे फ़ातिर ४३

मक्का में उतरी, इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को है जिसने आसमान और ज़मीन बना निकाले। उसी ने फ़रिश्तों को दूत बनाया जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर हैं। पैदायश में जो चाहता है ज्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है।(१) अल्लाह जो लोगों पर कृपा खोले तो कोई उसको बन्द करनेवाला नहीं और बन्द कर ले तो उसके पीछे कोई उसको जारी करनेवाला नहीं, और वह ज़ोरावर हिकमतवाला है।(२) ऐ लोगों! अल्लाह की भलाइयाँ जो तुम पर हैं, उनको याद करो। अल्लाह के सिवाय क्या कोई पैदा करनेवाला है जो आसमान ज़मीन से तुमको रोज़ी दे। उसके सिवाय कौन पूजित है? फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो।(३) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुमको झुठलायें तो तुमसे पहले भी पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं और सब काम अल्लाह ही की तरफ़ फिरते हैं।(४) लोगों! अल्लाह का वादा (क़यामत का) सच्चा है तो ऐसा न हो कि दुनिया की जिन्दगी तुमको धोखे में डाल दे और ऐसा न हो कि (शैतान) दग़ाबाज़ ख़ुदा के बारे में तुमको धोखा दे।(५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है, सो उसको दुश्मन ही समझे रहो। वह अपने लोगों को (अपनी ओर) सिर्फ़ इस ग़रज़ से बुलाता है कि वह लोग नरकवासियों में हों।(६) जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनको सख़्त सज़ा होनी है। जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिए बख़्शिश और बड़ा फल है।(७) [रुकू १ आ.७]

तो क्या वह जिसको उसके कुकर्मों को सुकर्म करके दिखाया गया और वह उसको अच्छा समझता है (अच्छे लोगों की भाँति हो सकता है? नहीं कदापि नहीं)। अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है, तो इन लोगों पर अफ़सोस करके तुम्हारी जान न जाती रहे। जैसे-जैसे कर्म यह लोग कर

रहे हैं अल्लाह उनसे जानकार है।(८) अल्लाह है जो हवाएँ चलाता है, फिर हवाएँ बादल को उभारती हैं, फिर बादल को दूसरे शहर की तरफ़ हाँका। फिर हमने मेंह के ज़रिये ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा किया है। इसी तरह मुर्दों का उठाना है।(९) जो इज़्ज़त का चाहने वाला हो सब इज़्ज़त ख़ुदा को है। अच्छी बातें उसी तक पहुँचती हैं और सुकर्म को ऊँचा करता है और जो लोग बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनको सख़्त सज़ा होगी और उनकी तदबीरें वहीं मटियामेट हो जायँगी।(१०) और अल्लाह ही ने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर वीर्य से, फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया। और न कोई औरत गर्भ रखती और न जनती है, वह (सब) अल्लाह के इल्म से है। और बड़ी उम्रवाला जो उम्र पाता है और जिसकी उम्र घटती है, सब किताब में है। यह अल्लाह पर आसान है।(११) और दो समुद्र एक तरह के नहीं हैं। एक का पानी मीठा स्वादिष्ट और प्यास बुझानेवाला है और एक का पानी खारी कड़वा है, और तुम दोनों में से (मछलियाँ शिकार करके) ताज़ा गोश्त खाते और ज़ेवर (यानी मोती) निकालते हो जिनको पहनते हो। और तू देखता है कि किश्तियाँ नदियों में पानी को फाड़ती चली जाती हैं ताकि तुम ख़ुदा की कृपा ढूँढ़ो और तुम भलाई मानो।(१२) वह रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल कर देता है, और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा बस में कर रखे हैं कि दोनो बँधे हुए वक़्तों में चल रहे हैं। यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है, उसी का राज्य है और उसके सिवाय जिन (पूजितों) तो तुम पुकारा करते हो वे ज़रा-सा भी अधिकार नहीं रखते।(१३) तुम उनको (कितना ही) बुलाओ वह तुम्हारे बुलाने को नहीं सुनेंगे और सुनें भी तो तुम्हारी दुआ क़बूल नहीं कर सकते और क़यामत के दिन तुम्हारे शरीक ठहराने से इन्कार करेंगे और जैसी ख़बर रखनेवाला बतावेगा वैसा और कोई तुझे न बतावेगा (१४) [रुकू २ आयात ७]

लोगों! तुम ख़ुदा के मुहताज हो और अल्लाह बेपरवाह ख़ूबियोंवाला है।(१५) वह चाहे तुमको ले जाये और नई सृष्टि ला बसाये।(१६)

और यह अल्लाह को कठिन नहीं।(१७) और कोई आदमी किसी दूसरे का बोझ नहीं उठावेगा और अगर किसी पर (पापों का बड़ा) भारी बोझ हो और वह अपना बोझ बटाने के लिए (किसी को) बुलावे तो उसका ज़रा-सा भी बोझ नहीं बटाया जायगा अगर्चे वह उसका रिश्तेदार क्यों न हो।(ऐ पैग़म्बर!) तुम तो उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बे देखे अपने परवरदिगार से डरते और नमाज़ पढ़ते हैं और जो शख़्स सुधरता है सो अपने ही लिए सुधरता है और अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है।(१८) और अन्धा और आँखोंवाला बराबर नहीं।(१९) और न अँधेरा और उजेला (२०) और न छाया और धूप (२१) और न ज़िन्दे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं। अल्लाह जिसको चाहता है सुनाता है और जो लोग क़ब्रों में हैं तू उनको सुना नहीं सकता।(२२) और तू तो सिर्फ़ डरानेवाला है।(२३) हमने तुमको ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा है और कोई गरोह ऐसा नहीं जिसमें कोई डरानेवाला न हो।(२४) और जो वह तुझे झुठलायें तो इनसे पहलों ने भी (अपने पैग़म्बर को) झुठलाया है और उनके पैग़म्बर उनके पास खुले चमत्कार और छोटी किताबें और रोशन किताबें लेकर आये थे।(२५) फिर मैंने इन्कार करनेवालों को धर पकड़ा तो मेरे इन्कार का कैसा फल हुआ।(२६) [रुकू ३ आयात १२]

क्या तूने देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसके ज़रिये हमने जुदे-जुदे रंगों के फल निकाले और पहाड़ों में जुदी-जुदी रंगतों के कुछ पत्थर निकाले। सफ़ेद, लाल और काले भुजंग (२७) और इसी तरह आदमियों और जानवरों और चारपायों की रंगतें भी कई-कई तरह की हैं। ख़ुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो समझ रखते हैं। अल्लाह बलवान बख़्शनेवाला है।(२८) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते और नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमें से छिपाकर और खुले तौर पर (ख़ुदा की राह में) ख़र्चा करते हैं, वह ऐसे व्यापार की आस लगाये बैठे हैं जिसमें कभी

घाटा नहीं हो सकता। (२९) ख़ुदा उनको उनका पूरा फल देगा और अपनी कृपा से उनको ज्यादा भी देगा। वह बख़्शनेवाला क़दरदान है। (३०) और (ऐ पैग़म्बर ! यह) किताब जो हमने ईश्वरी संदेशे से तुम पर उतारी है यह ठीक है (और जो) (किताब) इससे पहले की हैं (यह) उनकी सचाई साबित करती है। अल्लाह अपने सेवकों से ख़बरदार देख रहा है। (३१) फिर हमने अपने सेवकों में से उन लोगों को (इस) किताब का वारिस ठहराया जिनको हमने चुना। फिर उनमें से कोई अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं और कोई उसमें से बीच की चाल चले जाते हैं और कोई उनमें से ख़ुदा के हुक्म से नेकियों में आगे बढ़े हुए हैं। यही (ख़ुदा की) बड़ी कृपा है। (३२) (और उसका बदला यह है) वहाँ बसने को बाग़ हैं, यह लोग उनमें दाख़िल होंगे। वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायगा और उनकी पोशाक रेशमी होगी। (३३) और कहेंगे कि ख़ुदा को धन्यवाद है जिसने हमसे दुख दूर कर दिया। हमारा परवरदिगार बड़ा बख़्शनेवाला क़दर जाननेवाला है। (३४) जिसने हमको अपनी कृपा से ठहरने के घर में उतारा। यहाँ हमको कोई दुख न पहुँचायेगा और न यहाँ हमको थकान आवेगी। (३५) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिए नरक की आग है। न तो उनको मौत आती है कि मर जायें और न नरक की सज़ा ही उनसे हलकी की जाती है, हम हरएक नाशुक्र (कृतघ्नी) को इसी तरह पर सज़ा दिया करते हैं। (३६) और यह लोग नरक में चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमको (यहाँ से) निकाल (दुनिया में ले चल) कि हम जैसे कर्म करते रहे थे वैसे नहीं (बल्कि) सुकर्म करेंगे (तो इनसे कहा जायगा) क्या हमने तुमको इतनी उम्र नहीं दी थी कि इसमें जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डरानेवाला आ चुका था। पस चखो (मज़ा दुख का) ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (३७) [रुकू ४ आ. ११]

अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है और जो दिलों के अन्दर है वह जानता है। (३८) वही है जिसने तुमको

ज़मीन में क़ायम मुक़ाम बनाया । फिर जो इन्कार करता है उसकी इन्कारी का बवाल उसी पर है और जो लोग इन्कार करते हैं उनकी इन्कारी ख़ुदा का ग़ुस्सा ही बढ़ाती है और इन्कार की वजह से काफ़िरों को घाटा ही होता चला जाता है। (३९) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि तुम अपने शरीकों को, जिनको तुम ख़ुदा के सिवाय बुलाया करते हो, मुझे दिखाओ। उन्होंने कौन-सी ज़मीन बनाई है या आसमानों में उनका कुछ साझा है या हमने इन (मुशरिकों) को कोई किताब दी है कि यह उसकी सनद रखते हैं, ज़ालिम दूसरों को धोखे ही के वादे देते हैं।(४०) अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को थाम रखा है कि टल न जायँ, और टल जाय तो फिर उसके सिवाय कोई नहीं जो उनको थाम सके। अल्लाह संतोषी और बख़्शनेवाला है।(४१) और अल्लाह की बड़ी-बड़ी पक्की क़समें खाया करते थे कि इनके पास कोई डरानेवाला आयेगा तो वह ज़रूर हरएक गरोह से ज़्यादा राह पर होंगे। फिर जब डरानेवाला उनके पास आया तो उनकी नफ़रत ही बढ़ी।(४२) देश में सरकशी और बुरी तदबीरें करने लगे और बुरी तदबीर (उलटकर) बुरी तदबीर करनेवाले ही पर पड़ती है। अब वह अगले लोगों के दस्तूर ही की राह देखते हैं और तू ख़ुदा के दस्तूर में हेर-फेर न पायेगा। और अल्लाह के दस्तूर में टलना नहीं पायेगा।(४३) क्या चले-फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखें। वह बल में इनसे कहीं बढ़कर थे और अल्लाह इस लायक़ नहीं कि आसमान-ज़मीन में उसको कोई चीज़ थका सके। वह जाननेवाला बलवान है।(४४) और अगर ख़ुदा लोगों को उनके कामों के बदले में पकड़े तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़े। मगर वह एक नियत समय तक (यानी क़यामत) तक लोगों को मुहलत दे रहा है। फिर जब उनका समय आयगा तो (उनको बदला देगा)। अल्लाह अपने सेवकों को देख रहा है।(४५) [रुकू ५ आयात ८]

——):o:(——

३६ सूरे यासीन ४१

मक्का में उतरी, इसमें ८३ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। यासीन (१)
हिकमतवाले पक्के क़ुरान की क़सम।(२) तू पैग़म्बरों में है।(३) सीधी
राह पर।(४) (यह क़ुरान) शक्तिवान (और) मेहरबान ने उतारा
है।(५) ताकि तुम ऐसे लोगों को डराओ जिनके बाप डराये नहीं गये
और वह बेख़बर हैं।(६) इनमें से बहुतेरों पर बात (सज़ा) क़ायम
हो चुकी है, सो वह न मानेंगे।(७) हमने इनकी गर्दनों में ठोड़ियों
तक तौक़ डाल दिये हैं, सो वह सिर उलार कर रह गये हैं।(८) और
हमने एक दीवार इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे।
फिर ऊपर से ढक दिया सो उनको नहीं सूझता।(९) और (ऐ
पैग़म्बर! इनके लिए एकसाँ है कि तुम इनको डराओ या न डराओ,
यह तो ईमान लानेवाले नहीं हैं।(१०) तू तो उसी को डरा सकता
है जो समझाये पर चले और बेदेखे रहमान से डरे, तो उसको माफ़ी
और इज़्ज़त की ख़ुशख़बरी सुनादो।(११) हम मुर्दों को जिलाते हैं
और जो आगे भेज चुके हैं उनकी निशानी हम लिख रहे हैं और हमने
हर चीज़ खुली असल किताब में लिख ली है।(१२) [रुकू १ आ. १२]

और (ऐ पैग़म्बर!) इनसे मिसाल के तौर पर एक गाँव (रूम)
वालों का हाल बयान करो कि जब उनके पास पैग़म्बर आये।(१३)
जब हमने उनकी तरफ़ दो (पैग़म्बर) भेजे तो उन्होंने इन दोनों को
झुठलाया। इस पर हमने तीसरे (पैग़म्बर को) भेजकर उनकी मदद
की तो उन तीनों ने (मिलकर) कहा कि हम तुम्हारे पास (ख़ुदा के)
भेजे हुए हैं।(१४) वह कहने लगे कि तुम हमारी तरह के आदमी
हो और ख़ुदा ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम झूठ बोलते हो।(१५)
(पैग़म्बरों ने) कहा हमारा परवरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी
तरफ़ भेजे गये हैं।(१६) और हमारा काम तो साफ़ पहुँचा देना
है।(१७) वह कहने लगे हमने तो तुमको मनहूस पाया। अगर

तुम न मानोगे तो तुमको पत्थरों से मारेंगे और हमारे हाथों से तुमको दुखदाई मार लगेगी।(१८) कहा कि तुम्हारी शामत तुम्हारे साथ है क्या तुमको समझाया गया (तुम हमको नाहक उल्टा उलहना देने लगे), नहीं तुम लोग हद से बढ़ गये हो।(१९) और शहर के परले सिरे से एक आदमी† दौड़ता हुआ आया (और) कहने लगा कि भाइयों! (इन) पैग़म्बरों के कहे पर चलो।(२०) ऐसे लोगों के कहे पर चलो जो तुमसे बदला नहीं माँगते और ख़ुद सीधी राह पर हैं।(२१)

——०——

तेईसवाँ पारा (वमा लिय)

और मुझे क्या है कि जिसने मुझको पैदा किया है उसकी पूजा न करूँ। तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।(२२) क्या उसके सिवाय दूसरों को पूजित मान लूँ। अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आवे और वह मुझको न छुड़ा सकें।(२३) (अगर) ऐसा करूँ तो मैं प्रत्यक्ष गुमराही में जा पड़ा।(२४) मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया हूँ, सो सुन लो।(२५) हुक्म हुआ कि जन्नत में चला जा। बोला कि क्या अच्छा होता जो मेरी जाति को मालूम हो जाता।(२६) कि मुझे मेरे परवरदिगार ने क्षमा कर दिया और इज़्ज़तदारों में दाख़िल किया।(२७) और हमने उसके पीछे उसकी क़ौम पर आसमान से (फ़रिश्तों का) कोई लश्कर न उतारा और हम (फ़ौजें) नहीं उतारा करते।(२८) वह तो बस एक आवाज़ थी और उसी दम वह जाति (आग की तरह) बुझकर रह गई।(२९) बन्दों पर शोक है जब कोई पैग़म्बर उनके पास आया इन्होंने उसकी हँसी ही उड़ाई।(३०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि इनसे पहले हमने कितने गरोहों को मार डाला। और वे इनकी तरफ़ लौटकर कभी न आयेंगे।(३१)

† यह आदमी एक ग़ार में रहता था। इसका नाम हबीब था।

और सबमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा हमारे पास पकड़ा (हुआ) न आवे।(३२) [रुकू २ आयात २०]

और इनके लिए मुर्दा ज़मीन एक निशानी है। हमने उसको जिलाया और उसने अनाज निकाला जो उसी में से खाते हैं।(३३) और ज़मीन में हमने खजूर और अंगूरों के बाग़ लगाये और उनमें चश्मे बहाये।(३४) ताकि बाग़ के फलों में से क़िस्मत का खायें और यह (फल) इनके हाथों के बनाये हुए नहीं। फिर क्यों धन्यवाद नहीं देते।(३५) वह पाक है जिसने सब चीज़ों से जिन्हें ज़मीन उगाती है और इनकी क़िस्म में से और उस क़िस्म में से जिन्हें तुम नहीं जानते हो जोड़े पैदा किये।(३६) और इनके लिए एक निशानी रात है कि हम उसमें से दिन को खींचकर निकाल लेते हैं, फिर यह लोग अँधेरे में रह जाते हैं।(३७) और सूरज अपने एक ठिकाने पर चला जाता है। यह ज़ोरावर व आगाह से सधा हुआ है।(३८) और चाँद के लिए हमने मंज़िलें ठहरा दीं यहाँ तक कि (आख़िर माह में घटते-घटते) फिर ऐसा टेढ़ा पतला रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी।(३९) न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि चाँद को पकड़े और न रात ही दिन से आगे आ सकती है और हर कोई एक-एक घेरे में फिरते हैं।(४०) और इनके लिए एक निशानी है कि हमने इन (आदमियों) की औलाद को भरी हुई नाव में उठा लिया।(४१) और नाव की तरह हमने इनके लिए और चीज़ें पैदा की हैं जिन पर सवार होते हैं।(४२) और हम चाहें तो उनको डुबो दें, फिर न तो कोई इनकी फ़रयाद लेनेवाला होगा और न यह छुड़ाये जा सकेंगे।(४३) मगर (यह) हमारी कृपा है और एक वक़्त तक फ़ायदे के लिए (मंज़ूर है)।(४४) और जब उनसे कहा जाता है कि जब तुम्हारे आगे और पीछे हैं उनसे डरते रहो। शायद तुम पर कृपा की जावे।(४५) और इनके परवरदिगार की निशानियाँ इन के पास आती हैं तो यह उनसे मुँह मोड़ते हैं।(४६) और जब इनसे कहा जाता है कि ख़ुदा ने जो तुमको रोज़ी दे रखी है उसमें

से कुछ खर्च करते रहा करो तो काफ़िर मुसलमानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलायें जिनको ख़ुदा चाहे तो आप खिला सकता है। तुम प्रत्यक्ष (ज़ाहिरा) गुमराही में हो*।(४७) और कहते हैं अगर तुम सच्चे हो तो यह (क़यामत का वादा) कब पूरा होगा ?(४८) यही राह देखते हैं कि यह लोग आपस में लड़-झगड़ रहे हों और एक ज़ोर की आवाज़ इनको आ पकड़े।(४९) फिर न तो वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने बाल-बच्चों में लौटकर जा सकेंगे।(५०) [रुकू ३ आयात १८]

और सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा तो एकदम से क़ब्रों से (निकल-निकल) अपने परवरदिगार की तरफ़ चल खड़े होंगे।(५१) पूछेंगे कि हाय ! हमारा अभाग्य किसने हमारी क़ब्रों से हमको उठाया? यही तो वह क़यामत है जिसका वादा रहमान ने कर रखा था और पैग़म्बर सच कहते थे। (५२) क़यामत बस एक ज़ोर की आवाज़ होगी तो एकदम से सब लोग हमारे सामने पकड़ आवेंगे।(५३) फिर उस दिन किसी आदमी पर ज़रा सा भी ज़ुल्म न होगा और तुम लोगों को उसी का बदला दिया जायगा जो करते रहे।(५४) जन्नत वाले उस दिन मज़े से जी बहला रहे होंगे।(५५) वह और उनकी बीबियाँ साये में तकिया लगाये तख़्तों पर बैठी होंगी।(५६) वहाँ उनके लिए मेवे होंगे और जो कुछ वे माँगें।(५७) परवरदिगार मेहरबान से सलाम किया जायगा।(५८) और ऐ अपराधियों ! आज तुम अलग हो जाओ।(५९) ऐ आदम की औलाद ! क्या हमने तुम पर ताक़ीद नहीं कर दी थी कि शैतान की पूजा न करना कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(६०) और यह कि हमारी ही पूजा करना, यही सीधा राह है।(६१) और उसने तुममें से अक्सर लोगों को

* काफ़िर कहते थे कि हम उन लोगों को अपनी गाढ़ी कमाई में से क्यों खाने को दें जिनको ख़ुदा ही ने खाने को नहीं दिया। यदि ख़ुदा इनको खिलाना चाहता तो स्वयं खिलाता। इनको खिलाना तो ख़ुदा की इच्छा के विरुद्ध करना है। इसपर ये आयतें और इनके अतिरिक्त और कई आयतें उतरीं।

गुमराह कर दिया, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते थे ?(६२) यह नरक है जिसका तुमसे वादा किया जाता था।(६३) आज अपनी इन्कारी के बदले इसमें दाख़िल हो।(६४) आज हम इनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और जैसे काम यह लोग कर रहे थे इनके हाथ हमको बता देंगे और इनके पाँव गवाही देंगे।(६५) और हम चाहें तो इनकी आँखों को मेट दें, फिर यह राह चलने को दौड़ें तो कहाँ से देख पावें।(६६) और अगर हम चाहें तो यह जहाँ हैं वहीं इनकी सूरतें बदल दें, फिर न आगे चल सकें न पीछे फिर सकें।(६७) [रुकू ४ आयात १७]

और हम जिसकी उम्र बड़ी करते हैं दुनिया में उसको उलटा घटाते चले जाते हैं। फिर क्या नहीं समझते ? (६८) और हमने इन पैग़म्बर (मुहम्मद) को शायरी नहीं सिखाई और शायरी इनके योग्य भी नहीं। यह (क़ुरान) तो शिक्षा है और साफ़ है। (६९) ताकि जो ज़िन्दा (दिल) हो उनको (ख़ुदा की सज़ा से) डरायें। काफ़िरों पर बात (सज़ा) क़ायम करें। (७०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हमने अपने हाथों से इनके लिए चौपाये पैदा किये और यह उनके मालिक हैं।(७१) और हमने उनको इनके वश में कर दिया है तो उनमें से (बाज़) इनकी सवारियाँ हैं और उनमें (बाज़ को) खाते हैं।(७२) और उनमें इनके लिए फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें (यानी दूध), तो क्या (यह लोग) धन्यवाद नहीं देते।(७३) और लोगों ने ख़ुदा के सिवाय दूसरे पूजित इस उम्मेद से बना रखे हैं कि उनको मदद मिले।(७४) सो वह उनकी मदद नहीं कर सकते बल्कि यह उनकी फ़ौज होकर (ख़ुद) पकड़े जावेंगे।(७५) तो इनकी बातें तुम्हारी उदासी का कारण न हों क्योंकि जो कुछ छिपाकर और जो करते हैं ज़ाहिरा करते हैं, हम जानते हैं।(७६) क्या आदमी को मालूम नहीं कि हमने उसको वीर्य से पैदा किया, फिर वह ज़ाहिरा झगड़ालू हो गया।(७७) और हमारी बाबत बातें बनाने लगा और अपनी पैदायश को भूल गया और कहने लगा जब हड्डियाँ गल गईं तो उनको कौन जिला खड़ा करेगा।(७८) (ऐ पैग़म्बर ! तुम

इस गुस्ताख़ से) कहो कि जिसने हड्डियों को पहली बार पैदा किया था वही उनको जिलायेगा और वह सब (तरह का) पैदा करना जानता है।(७९) वही है जो हरे दरख़्तों से तुम्हारे लिए आग पैदा करता है, फिर तुम उससे (और आग) सुलगा लेते हो।(८०) क्या जिसने आसमान और ज़मीन पैदा किये वह इस पर शक्तिमान नहीं कि इन जैसे (आदमियों को दुबारा) पैदा करे। हाँ ज़रूर शक्तिमान है और वह बड़ा पैदा करनेवाला जाननेवाला है।(८१) उसका हुक्म यही है कि जब किसी चीज़ (के बनाने) का इरादा करे तो उसे कहे 'हो' और वह हो जाता है (८२) वह पाक है, जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा अधिकार है और मरे पीछे तुम उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (८३) [रुकू ५ आयत १६]

———

३७ सूरे साफ़्फ़ात ५६

मक्का में उतरी, इसमें १८२ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। लश्करों की क़सम जो क़तारों में खड़े होते हैं।(१) फिर झिड़क कर डाटनेवालों की क़सम। (२) फिर याद कर (क़ुरान) पढ़नेवालों की क़सम। (३) बेशक तुम्हारा हाकिम एक (ख़ुदा) है।(४) आसमान ज़मीन और जो चीज़ें आसमान और ज़मीन में हैं सबका परवरदिगार और उन मुक़ामों का परवरदिगार जहाँ जहाँ से सूरज जुदा-जुदा समय पर निकलता है।(५) हमने आसमान को सितारों की शोभा से सजाया।(६) और हर शैतान सरकश से बचाव बनाया।(७) वह (शैतान) ऊपर के लोगों (यानी फ़रिश्तों की बातों) की तरफ़ कान नहीं लगाने पाते और उनके लिए हर तरफ़ से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं।(८) भागने के लिए और उनको हमेशा की मार है। (९) मगर कोई (किसी फ़रिश्ते की बात को) जल्दी से उचक ले जाता

है तो दहकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगता है। (१०) तो (ऐ पैग़म्बर !) इनसे पूछ कि क्या इनका पैदा करना ज्यादा मुश्किल है या जिनको हमने बनाया है ? इन आदम के बेटों को हमने लसदार मिट्टी से पैदा किया है।(११) (ऐ पैग़म्बर !) तूने अचम्भा किया और यह हँसते हैं।(१२) और जब इनको समझाया जाता है तो नहीं समझते। (१३) और जब कोई निशानी देखते हैं हँसी उड़ाते हैं।(१४) और कहते हैं यह तो बस प्रत्यक्ष जादू है।(१५) क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह गये, क़यामत में उठा खड़े किये जावेंगे ?(१६) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी उठेंगे ?(१७) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि हाँ, और तुम ज़लील होगे।(१८) सो वह तो एक झिड़की है, फिर तभी यह देखने लगेंगे।(१९) और बोल उठेंगे कि हाय ! हमारा अभाग्य, यह तो न्याय का दिन है।(२०) यही फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे।(२१) [रुकू १ आयात २१]

ज़ालिमों को और उनकी जोरुओं को और ख़ुदा के सिवाय जिनको पूजते रहे हैं उनको इकट्ठा करो।(२२) फिर उनको नरक की राह ले चलो।(२३) और उनको खड़ा रखो कि उनसे सवाल होगा।(२४) तुम्हें क्या हो गया कि एक दूसरे की मदद नहीं करते। (२५) (यह कुछ भी जवाब न देंगे) बल्कि यह उस दिन नीची गर्दन किये होंगे।(२६) और एक की तरफ़ एक ध्यान देकर पूछा पाछी करेगा।(२७) एक फ़रीक़ (दूसरे फ़रीक़) से कहेगा कि तुम्हीं दाहिनी तरफ़ से (बहकाने को) हमारे पास आया करते थे।(२८) वह कहेंगे नहीं तुम (आप) ईमान नहीं लाते थे।(२९) और तुम पर हमारा कुछ ज़ोर तो न था बल्कि तुम सरकश थे।(३०) सो हमारे परवरदिगार का वादा हमारे हक़ में पूरा हुआ, हमको सज़ा के मज़े चखने होंगे।(३१) हम बहके हुए थे सो हमने तुमको भी बहका दिया।(३२) सो वे उस दिन सज़ा में शरीक होंगे।(३३) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।(३४) (यह ऐसे) सरकश थे। जब इनसे

कहा जाता था कि ख़ुदा के सिवाय कोई पूजित नहीं तो यह अकड़ बैठते थे।(३५) और कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक पागल शायर के लिए छोड़ दें।(३६) बलिक वह सच्चा दीन लेकर आया है और सब पैग़म्बरों को सच माना है।(३७) तुम ज़रूर दुखदाई सज़ा चखोगे।(३८) और जैसे-जैसे कर्म करते रहे हो उन्हीं का बदला पाओगे।(३९) मगर अल्लाह के ख़ास बन्दे।(४०) वह ऐसे होंगे कि इनकी रोज़ी मालूम है।(४१) मेवे और इनकी इज़्ज़त होगी।(४२) निआमत के बाग़ों में (४३) तख़्तों पर आमने-सामने होंगे (४४) इनमें साफ़ शराब का प्याला घुमाया जायगा।(४५) सफ़ेद रंग पीनेवालों को मज़ा देगी।(४६) न उससे सिर घूमते हैं और न उससे बकते हैं।(४७) और उनके पास नीची निगाहवाली बड़ी आँखों की औरतें होंगी।(४८) गोया वह अण्डे छिपे रखे हैं।(४९) फिर यह एक दूसरे की तरफ़ ध्यान देकर आपस में पूछा पाछी करेंगे।(५०) इनमें से एक कहेगा कि एक मेरा साथी था।(५१ (और वह) पूछा करता था कि क्या तू उन लोगों में है जो (क़यामत) को मानते हैं।(५२) क्या जब हम मर जायँगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जायँगे हमको बदला मिलेगा ? (५३) कहने लगा भला तू झाँककर देखेगा।(५४) फिर झाँकेगा तो उसको नरक के बीचोबीच देखेगा।(५५) बोल उठेगा कि ख़ुदा की क़सम तू तो मुझे तबाह करने को था।(५६) और अगर परवरदिगार की कृपा न होती तो मैं पकड़े हुओं में होता।(५७) क्या हमको अब मरना नहीं।(५८) अगर पहली बार मर चुके और हमें सज़ा न होगी।(५९) बेशक यही बड़ी कामयाबी है।(६०) चाहिए कि ऐसी कामयाबी के लिए काम करनेवाले काम करें।(६१) भला यह मेहमानी बेहतर है या सेंहुड़ का पेड़ ?(६२) हमने उसको ज़ालिमों के ख़राब करने को रखा है।(६३) यह एक दरख़्त है जो नरक की जड़ में (से) उगता है।(६४) उसके फल जैसे शैतानों के सिर।(६५) सो यह उसी में से खायँगे और उसी से पेट भरेंगे।(६६)

फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा ।(६७) फिर इनको नरक की तरफ़ लौटना होगा ।(६८) (ऐ पैग़म्बर!) इन्होंने (यानी मक्के के काफ़िरों) ने अपने बाप-दादों को बहका हुआ पाया ।(६९) सो वे उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहे हैं ।(७०) और इनसे पहले अक्सर गुमराह हो चुके हैं ।(७१) और उनमें भी हमने डर सुनानेवाले (पैग़म्बर भेजे) थे ।(७२) तो (ऐ पैग़म्बर ! देखो) उन लोगों का कैसा (अच्छा) परिणाम हुआ जो उठाये जा चुके हैं ।(७३) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे । (७४) [रुकू २ आयात ५३]

और नूह ने हमको पुकारा था तो (हमने उनकी फ़रयाद सुन ली और) हम अच्छी फ़रयाद पर पहुँचनेवाले हैं ।(७५) नूह और उनके घरवालों को उस बड़ी घबड़ाहट से बचा दिया ।(७६) और उनकी औलाद को ऐसा किया कि बाक़ी रह गई ।(७७) और आनेवाले गरोहों में उनका ज़िक्र-ख़ैर बाक़ी रखा ।(७८) सारे जहान में (हर तरफ़ से) नूह पर सलाम ।(७९) नेक मनुष्यों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं ।(८०) नूह हमारे ईमानदार बन्दों में से हैं ।(८१) औरों को हमने डुबो दिया ।(८२) और नूह के तरीक़े पर चलने में से एक इब्राहीम भी थे ।(८३) जब साफ़ दिल से अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजू हुआ, (८४) जब अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि तुम क्या पूजते हो ।(८५) क्यों अल्लाह के सिवाय झूठे पूजित बनाकर चाहते हो ।(८६) फिर तुमने जहान के पालनेवाले को क्या समझ रखा है ?(८७) फिर तारों पर एक निगाह की ।(८८) फिर कहा मैं बीमार हूँ† ।(८९) तो वह लोग उनको छोड़कर चले गये ।(९०) उनका जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनकी मूर्तियों में जा घुसे और कहा कि तुम खाते नहीं ।(९१) तुम्हें क्या हुआ, तुम क्यों

† हज़रत इब्राहीम की क़ौम ने उनसे मेले चलने को कहा, तो उन्होंने यह बात कहकर उनको अपने पास से टाल दिया और फिर उनके बुतों को तोड़ डाला ताकि उनकी क़ौम वाले समझ लें कि वह जिनको पूजते हैं वह बेबस दूसरों का क्या, अपना भी बचाव नहीं कर सकते ।

नहीं बोलते ?(९२) फिर (इब्राहीम) दाहिने हाथ से उनके मारने को घुसा।(९३) फिर लोग उस पर घबड़ाते दौड़े आये।(९४) (इब्राहीम ने) कहा क्या तुम ऐसी चीज़ों को पूजते हो जिनको तुम (आप) तराशकर बनाते हो ?(९५) तुमको और जिन चीज़ों को तुम बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है।(९६) (यह सुनकर वह लोग) कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक इमारत बनाओ और उनको दहकती हुई आग में डाल दो।(९७) फिर इब्राहीम के साथ बुरा दाँव चाहने लगे फिर हमने उन्हीं को नीचे डाला।(९८) और कहा मैं अपने परवरदिगार की ओर जाता हूँ, वह मुझे ठिकाने लगा देगा।(९९) और (इब्राहीम ने दुआ माँगी) ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको नेकों में से (एक नेक जीव) दे।(१००) फिर हमने उनको एक बड़े हलीम लड़के (इस्माईल) की खुशखबरी दी।(१०१) फिर जब लड़का इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा! मैं स्वप्न में देखता हूँ कि मैं तुझको बलिदान कर रहा हूँ, फिर देख कि तेरी क्या राय है ? (बेटे ने) कहा कि ऐ बाप! जो तुझको हुक्म हुआ है तू कर, ख़ुदा ने चाहा तू मुझे संतोषी पायेगा।(१०२) फिर जब दोनो (बाप बेटों) ने हुक्म माना और बाप ने (हलाल करने के लिए) बेटे को माथे के बल पछाड़ा।(१०३) और हमने उसे पुकारा कि ऐ इब्राहीम !(१०४) तूने स्वप्न को सच कर दिखाया, नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।(१०५) बेशक यह खुली हुई परीक्षा थी। (१०६) और हमने बड़े बलिदान§ को इस्माईल के बदले में दिया।(१०७) और आनेवाले गरोहों में उनका ज़िक्र बाक़ी रखा। (१०८) इब्राहीम पर सलाम। (१०९) हम नेक सेवकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (११०) वह (इब्राहीम) हमारे ईमानदार बन्दों में हैं।(१११) और हमने इब्राहीम को (दूसरे बेटे) इसहाक़ की ख़ुशख़बरी दी कि

§ ख़ुदा ने उनके बेटे को बचा लिया और उनके बदले एक दुम्बा हलाल हो गया। यह बात इब्राहीम को उस समय मालूम हुई जबकि अपनी आँखों की पट्टी खोली।

(यह भी) नेक और पैग़म्बर होगा।(११२) और हमने इब्राहीम और इसहाक़ को बरकतें दीं और इन दोनो की औलाद में कोई नेक और कोई बुरे अपने ऊपर आप ज़ुल्म करनेवाले भी हैं।(११३) [रुकू ३ आयात ३६]

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किये।(११४) और दोनो (भाइयों को और उनकी क़ौम) को बड़ी घबराहट (यानी फ़िरऔन के ज़ुल्म) से छुटकारा दिलाया।(११५) और (फ़िरऔन के मुक़ाबिले में) उनकी मदद की तो यही लोग जीत में रहे।(११६) और दोनो भाइयों को (तौरात की) किताब दी।(११७) और दोनो को सीधी राह दिखाई।(११८) और (इनके बाद) आनेवाले गरोह में उनका ज़िक्र बाक़ी रखा।(११९) मूसा और हारून पर सलाम है।(१२०) हम नेक सेवकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं।(१२१) यह दोनो हमारे ईमानवाले बन्दों में हैं।(१२२) और इलियास (भी) बेशक पैग़म्बर में से हैं।(१२३) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (ख़ुदा से) नहीं डरते ?(१२४) क्या तुम बाल (मूर्ति) को पूजते और बेहतर अल्लाह को छोड़ बैठे हो ?(१२५) अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार और तुम्हारे अगले बाप-दादों का भी परवरदिगार है।(१२६) लोगों ने उनको झुठलाया सो यह लोग भी गिरफ़्तार होंगे।(१२७) मगर अल्लाह के चुने बन्दे।(१२८) और (इलियास के बाद) आनेवाले गिरोहों में हमने उनका ज़िक्र बाक़ी रक्खा।(१२९) इलियास पर सलाम हो।(१३०) हम नेकों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।(१३१) इलियास हमारे ईमानवाले दासों में से हैं।(१३२) और बेशक लूत पैग़म्बरों में से हैं।(१३३) हमने लूत को और उनके तमाम कुटुम्ब को बचा लिया।(१३४) मगर एक बुढ़िया (लूत की स्त्री) बाक़ियों में थी।(१३५) फिर हमने औरों को मार डाला।(१३६) और तुम सुबह को गुज़रते हो।(१३७) और रात को भी (गुज़रते हो) क्या तुम नहीं समझते।(१३८) [रुकू ४ आयात २५]

और बेशक यूनिस पैग़म्बरों में से हैं।(१३९) जब भागकर भरी हुई किश्ती के पास पहुँचे।(१४०) और फिर कुरा (चिट्ठियाँ) डाला (चूँकि कुरे में उनका नाम निकला) तो ढकेले हुओं में हो गया।(१४१) फिर उनको मछली ने निगल लिया और वह उस वक़्त अपने आपको मलामत करता था।(१४२) अगर यूनिस (ख़ुदा की) पवित्रता से याद करनेवालों में से न होता (१४३) तो उस दिन तक जब कि लोग उठा खड़े किये जायँगे मछली ही के पेट में रहता।(१४४) फिर हमने उसको (मछली के पेट से निकालकर) खुले मैदान में डाल दिया और वह (मछली के पेट में रहने से (बीमार था।(१४५) फिर हमने उस पर (कद्दू की तरह का) एक बेलदार दरख़्त उगाया।(१४६) और उसको लाख बल्कि लाख से भी अधिक आदमियों की तरफ़ (पैग़म्बर बनाकर) भेजा।(१४७) फिर वह ईमान लाये तो हमने उनको एक वक़्त तक बरतने दिया।(१४८) तो (ऐ पैग़म्बर) इन (मक्का के काफ़िरों) से पूछो कि क्या ख़ुदा के लिये बेटियाँ और उनके लिये बेटे हैं।(१४९) या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और वह देख रहे थे।(१५०) यह तो अपने दिल से बना-बनाकर कहते हैं (१५१) कि ख़ुदा औलादवाला है और कुछ शक नहीं कि यह लोग झूठे हैं।(१५२) क्या (ख़ुदा ने) बेटों पर बेटियाँ पसन्द कीं।(१५३) तुमको क्या हुआ कैसा इन्साफ़ करते हो।(१५४) क्या तुम ध्यान नहीं देते।(१५५) क्या तुम्हारे पास कोई खुली हुई सनद है।(१५६) सच्चे हो तो अपनी किताब लाओ।(१५७) और इन लोगों ने ख़ुदा में और जिन्नों में नाता ठहराया है हालाँकि जिन्नों को अच्छी तरह मालूम है कि वह हाज़िर किये जायँगे।(१५८) जैसी बातें (यह लोग) बनाते हैं ख़ुदा उनसे पाक है।(१५९) मगर अल्लाह के ख़ालिस बन्दे हैं।(१६०) सो तुम और (जिन्नों को) जिनकी तुम पूजा करते हो, (१६१) ख़ुदा से ज़िद करके किसी को बहका नहीं सकते।(१६२) मगर उसी को जो नरक में जानेवाला

है।(१६३) और हममें से हरएक का दर्जा मुक़र्रर है।(१६४) और हम जो हैं हम ही हैं (ख़ुदा की बन्दगी में) पाँति बाँधनेवाले।(१६५) और हम तो उसकी (ख़ुदा की) याद में लगे रहते हैं।(१६६) और यह (मक्का के काफ़िर) कहा ही करते थे।(१६७) कि अगले लोगों का कोई पुस्तक हमारे पास होती (१६८) तो हम ख़ुदा के चुने हुए बन्दे होते।(१६६) सो उन्होंने इस (क़ुरान) को न माना तो आगे चलकर मालूम कर लेंगे।(१७०) और हमारे बन्दे पैग़म्बरों के हक़ में हमारा हुक्म पहले ही हो चुका है।(१७१) बेशक उन्हीं की मदद होती है।(१७२) और हमारा लश्कर ज़बरदस्त रहा करता है।(१७३) तो (ऐ पैग़म्बर) चन्दरोज़ इन इन्कार करनेवालों से मुँह मोड़ ले।(१७४) और उन्हें देखता रह कि आगे वह भी देख लेवें।(१७५) क्या हमारी सज़ा के लिये जल्दी मचा रहे हैं।(१७६) जब वह सज़ा उनके आँगनों में उतरेगी तो जिन लोगों को पहिले से डराया जा चुका था उनकी सुबह बुरी होगी।(१७७) और तू उनसे एक वक़्त तक मुँह मोड़ ले।(१७८) और देखता रह आगे चलकर यह भी देख लेंगे।(१७६) (ऐ पैग़म्बर) जैसी-जैसी बात (यह लोग) बनाते हैं उनसे तेरा इज़्ज़तवाला परवरदिगार पाक है।(१८०) और पैग़म्बर पर सलाम है(१८१) और सब ख़ूबी अल्लाह को है जो सब संसार का परवरदिगार है।(१८२) [रुकू ५ आयात ४४]

—— ❀ ——

३८ सूरे साद ३८

मक्का में उतरी, इसमें ८८ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। साद क़ुरान की क़सम जिसमें नसीहत है।(१) बल्कि जो लोग इन्कार करनेवाले हैं हेकड़ी और दुश्मनी में हैं।(२) हमने इनसे पहले बहुत-से गिरोहों को मार डाला (सज़ा के वक़्त) चिल्ला उठे और रिहाई

की मुहलत न रही।(३) और इन लोगों ने अचम्भा किया कि इनमें का डरानेवाला इनके पास आ गया और काफ़िरों ने कहा यह जादूगर झूठा है।(४) क्या इसने पूजितों की खोज खोकर एक ही पूजित रक्खा, यह बड़ी ही अनोखी बात है।(५) और इनमें के चन्द सरदार लोग यह कहकर चल खड़े हुए और अपने पूजितों पर जमे रहो, यह बात (जा यह शख्स समझाता है) बेशक इसमें इसकी कुछ ग़रज़ है।(६) हमने यह बात पिछले मज़हब में नहीं सुनी, यह (इसकी) गढ़न्त है।(७) क्या हम में से उसी पर खुदा की बात उतरी है। वह मेरे कलाम की बाबत शक में हैं। अभी इन्होंने हमारी सज़ा नहीं चक्खी।(८) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुम्हारे परवरदिगार शक्तिमान दाता की कृपा के ख़ज़ाने इन्हीं के पास हैं।(९) यह आसमान या ज़मीन और वह चीज़ें जो आसमान-ज़मीन में हैं उनका अधिकार उन्हीं को है, तो इनको चाहिए कि रस्सियाँ लगाकर (आसमान पर) चढ़ें।(१०) (ऐ पैग़म्बर) तमाम लश्करों में से यह क़ौम भी इस जगह एक शिकस्त खाई हुई फ़ौज है।(११) इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेखोंवाले फ़िरऔन झुठला चुके हैं।(१२) और समूद और लूत की क़ौम और एका के गिरोह।(१३) इन सब ही ने तो पैग़म्बर को झुठलाया फिर हमारी सज़ा आ उतरी।(१४) [रुकू १ आयात १४]

और यह (क़ुरैश) भी एक चिंघाड़ की बाट देखते हैं जो बीच में दम न लगी।(१५) उन्होंने कहा ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे कर्म का लेखा हिसाब लेने के दिन से पहिले हमको जल्दी दे।(१६) (ऐ पैग़म्बर)जैसी-जैसी बातें यह लोग करते हैं उन पर सब्र कर और हमारे सेवक दाऊद को याद कर कि (हर तरह की) ताक़त रखते थे और वह (खुदा की तरफ़) रुजू रहते थे।(१७) हमने पहाड़ों को उनके क़ब्ज़े में कर रक्खा था कि सुबह शाम उनके साथ पवित्र बोला करें।(१८) और परिन्दे सब जमा होकर उनके सामने रुजू रहते (१९) और हमने उसके राज्य को मज़बूत कर दिया और उसे हिकमत और फ़ैसला

की बात दी थी।(२०) और (ऐ पैग़म्बर) क्या दावेदारों की खबर तेरे पास आई है जब वह पूजित जगहों की दीवारें (फाँदकर) (२१) दाऊद के पास आये। वह उनसे डरा, उन्होंने कहा मत डरो। हम दोनो झगड़ालू हैं, हममें से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है। तू हममें सच्चा फ़ैसला कर दे और बात को दूर न डाल और हमको सीधी राह बता दे।(२२) यह मेरा भाई है, इसके निन्नान्नवे भेड़ें हैं और मेरे (यहाँ सिर्फ़) एक ही भेड़ है। अब यह कहता है कि अपनी भेड़ भी मुझे दे डाल और बातचीत में मुझसे सख़्ती की है।(२३) (दाऊद ने) कहा कि इसने जो तेरी भेड़ माँगकर अपनी भेड़ों में मिलाने के लिए तुझ पर ज़ुल्म किया है और बहुधा शरीक एक दूसर पर ज़्यादती करते रहते हैं मगर जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं। और दाऊद को ख़याल आया कि हमने उनको आज़माया, फिर अपने परवरदिगार से क्षमा माँगी और झुककर मेरी ओर रुजू हुआ।(२४)★[सि.१०] और हमने उनको क्षमा कर दिया और हमारे यहाँ उसका मर्तबा और अच्छा ठिकाना है।(२५) (ऐ दाऊद) हमने तुझे मुल्क में नायब बनाया, तू लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया कर और (अपनी) ख़्वाहिश पर न चल (ऐसा करोगे) तो (इन्द्रियों की इच्छाओं) की पैरवी तुझे ख़ुदा की राह से भटका देगी। जो लोग ख़ुदा की राह से भटकते हैं उनको सख़्त सज़ा होनी है। इसलिए कि क़यामत के दिन को भूल रहे हैं।(२६) [रुकू २ आयात १२]

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो चीज़ें आसमान और ज़मीन में हैं उनको वृथा नहीं पैदा किया। यह उन लोगों का ख़याल है जो काफ़िर हैं और नरक के सबब से काफ़िरों के हाल पर अफ़सोस है।(२७) क्या हम ईमानदारों और नेक काम करनेवालों को ज़मीन में फ़सादियों के बराबर कर देंगे या हम परहेज़गारों को बदकारों के बराबर करेंगे।(२८) (ऐ पैग़म्बर! यह क़ुरान) बरकतवाली किताब है जो हमने तेरी तरफ़ उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों में ध्यान दें और अक़्लवाले समझें।(२९) हमने दाऊद को सुलेमान (बेटा) दिया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहनेवाला

था।(३०) जब शाम के वक़्त ख़ासे असील घोड़े उनके सामने पेश किये गये (तो वह उनके देखने में ऐसे जुटे कि नमाज़ का वक़्त जाता रहा) (३१) तो कहने लगे कि मैंने अपने परवरदिगार की यादगारी से माल की मुहब्बत ज्यादा की, यहाँ तक कि सूरज ओट में छिप गया।(३२) (अच्छा तो) इन घोड़ों को मेरे पास लौटा लाओ और अब पिंडलियाँ और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे।(३३) और हमने सुलेमान को जाँचा और उसके तख्त पर एक मुर्दा जिस्म को डाल दिया और फिर सुलेमान रुजू हुआ।(३४) बोला ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा अपराध क्षमा कर और मुझे ऐसा राज्य दे कि मेरे पीछे किसी को न चाहे। बेशक तू बड़ा बख़्शनेवाला है।(३५) फिर हमने हवा उसके क़ाबू में कर दी थी। उसी के हुक्म से हवा धीरे-धीरे जहाँ वह चाहता था चलती थी।(३६) और शैतान जितने थवई (इमारत बनानेवाले) और डुबकी लगानेवाले थे उनके क़ाबू में कर दिये थे।(३७) कितने और बँधे बेड़ियों में हैं।(३८) यह हमारी बेहिसाब देन है। अब तू भलाई कर या अपने ही पास रक्खे रह।(३९) और बेशक सुलेमान का हमारे यहाँ मर्तबा और अच्छा ठिकाना है।(४०) [रुकू ३ आयात १४]

(ऐ पैग़म्बर) हमारे दास अयूब को याद करो। जब उसने अपने परवरदिगार को पुकारा कि शैतान ने मुझे दुख और तकलीफ़ पहुँचा रक्खी है।(४१) (ख़ुदा ने कहा) अपने पाँव से लात मार (चुनाँचे लात मारी तो) एक चश्मा निकला (तो हमने अयूब से फ़र्माया कि) तुम्हारे नहाने और पीने के लिये यह ठंडा पानी हाज़िर है।(४२) और हमने उसको उसके बाल-बच्चे और उनके साथ इतने ही और दिये। (यह हमने) अपनी तरफ़ से कृपा की ताकि जो समझ रखते हैं उनके लिए यादगारी रहे।(४३) और (हमने अयूब से फ़र्माया) सींकों का मुट्ठा अपने हाथ में ले और (अपनी बीबी को) उसमें† मार

---

† कहते हैं कि अयूब ने अपनी बीबी से किसी बात पर बिगड़कर क़सम खाई थी कि मैं तुमको सौ छड़ियाँ मारूँगा। क़सम का पालन करने के लिये सौ सींकों की झाड़ू से एक बार अपनी बीबी को मारने का उनको हुक्म दिया गया।

और (अपनी) क़सम न तोड़। हमने अयूब को (संतोषी) पाया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहनेवाला था।(४४) और (ऐ पैग़म्बर) हमारे बन्दा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब को याद कर। (वे) हाथों और आँखोंवाले थे।(४५) हमने उनको एक खास बात क़यामत की याद के लिये चुना था।(४६) और वह हमारे यहाँ क़बूल किये हुए नेक दासों में हैं (४७) और इस्माईल और इलियास और ज़ुलकिफ़िल को याद कर। सब नेक बन्दों में हैं।(४८) यह ज़िक्र है और बेशक परहेज़गारों का अच्छा ठिकाना है।(४६) रहने के (जन्नत के) बाग़ जिनके दरवाज़े उनके लिये खुले होंगे।(५०) उनमें तकिया लगाकर बैठेंगे। वहाँ जन्नत के नौकरों से बहुत से मेवे और शराब मँगावेंगे।(५१) और उनके पास नीची नज़र वाली (बीबियाँ) होंगी और हमउम्र होंगी।(५२) यह वह (नियामतें) हैं जिनका उससे क़यामत के दिन के लिये वादा किया जाता है।(५३) बेशक यह हमारी (दी हुई) रोज़ी है, जो कभी खत्म होने की नहीं।(५४) यह बात है कि सरकशों का बुरा ठिकाना है।(५५) नरक उसमें इनको जाना पड़ेगा और वह बुरी जगह है।(५६) यह खौलता हुआ पानी और पीब इसको चक्खो (५७) और इसी तरह की और तरह-तरह की चीज़ें हैं।(५८) यह एक फ़ौज है वही तुम्हारे साथ नरक में धसती आती है। इनको जगह न मिले वह आग में जानेवाले हैं।(५६) बोले तुम्हीं तो हो तुम्हें ख़ुशी भी नसीब न हो। तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाये हो, यह बुरी जगह है।(६०) बोले ऐ हमारे परवरदिगार। जो यह हमारे आगे लाया उसको नरक में दोहरी सज़ा बढ़ा दे।(६१) और कहेंगे कि जिन लोगों को हम बुरे लोगों में गिना करते थे हम उनको नहीं देखते।(६२) क्या हमने उनको हँसोड़ ठहराया या उनकी तरफ़ से आँखें टेढ़ी हो गई थीं।(६३) यह नरकवासियों का आपस में झगड़ना सच है (६४) [रुकू ४ आयात २४]

(ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मैं सिर्फ़ डरानेवाला हूँ और एक ख़ुदा के सिवाय और कोई ज़ोरावर नहीं। ६५) आसमान और

ज़मीन और उन चीज़ों का मालिक है जो आसमान और ज़मीन के बीच में हैं और (वह) ज़ोरावर बड़ा बख़्शनेवाला है।(६६) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि क़ुरान बड़ी ख़बर है।(६७) क्या तुम इसको ध्यान में नहीं लाते।(६८) मुझको ऊपरवाली किसी आबादी की कुछ ख़बर न थी, जब वह झगड़ते थे।(६९ मुझको तो यही हुक्म आता है कि मैं सिर्फ़ एक ज़ाहिरा डर सुनानेवाला हूँ।(७०) जब तेरे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक आदमी बनानेवाला हूँ।(७१) तो जब मैं उसे पूरा कर लूँ और अपनी रूह उसमें फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सिजदे में गिर पड़ना।(७२) चुनाँचे सब ही फ़रिश्तों ने उसे सिजदा किया।(७३) मगर इब्लीस ने ग़रूर किया और वह काफ़िरों में था।(७४) ख़ुदा ने (इब्लीस से) पूछा कि ऐ इब्लीस! जिसको मैंने अपने हाथों बनाया उसको सिजदा करने से तुझे किसने रोका। क्या तूने घमंड किया या तू दर्जे में बड़ा था।(७५) बोला मैं उससे कहीं बेहतर हूँ। मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया है।(७६) फ़र्माया तू यहाँ से निकल, तू फटकारा हुआ है।(७७) और क़यामत तक तुझ पर हमारी फटकार है।(७८) बोला ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको उस दिन तक की मुहलत दे जबकि मुर्दे दुबारा उठा खड़े किये जायेंगे।(७९) फ़र्माया तुझको उस दिन तक की मुहलत है।(८०) उस वक़्त के दिन तक जो मालूम है।(८१) फिर बोला तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं इन सबको गुमराह करूँगा।(८२) मगर जो तेरे चुने बन्दे हैं (उनको नहीं)।(८३) फ़र्माया तो ठीक बात यह है और ठीक ही कहता हूँ (८४) कि मैं तुझसे और जो कोई उनमें से तेरी पैरवी करेगा उनसे नरक को भर दूँगा।(८५) (ऐ पैग़म्बर! तुम इन लोगों से) कहो कि मैं ख़ुदा के इस हुक्म पर तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता और न मुझको तक़ल्लुफ़ करना आता है।(८६) यह क़ुरान दुनिया जहान के लोगों को शिक्षा है।(८७) और कुछ दिनों में तुमको इसकी ख़बर मालूम हो जायगी।(८८) [रुकू ५ आयात २४]

——:o:——

३९ सूरे ज़ुमर ५९

मक्का में उतरी, इसमें ७५ आयतें और ८ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। ज़ोरावर हिकमत-वाले अल्लाह की तरफ़ से इस किताब का उतरना हुआ है।(१) हमने तेरी तरफ़ ठीक किताब उतारी है सो केवल अल्लाह ही की पूजा में लग कर अल्लाह ही की पूजा किये जाओ।(२) पूजा सारी ख़ुदा ही के लिये है। और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवाय हिमायती बना रक्खे हैं कि हम इनकी पूजा सिर्फ़ इसलिये करते हैं कि ख़ुदा से हमको नज़दीक करें। जिन-जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं ख़ुदा उनके बीच उनका फ़ैसला कर देगा। अल्लाह झूठे और न माननेवाले को हिदायत नहीं दिया करता।(३) अगर ख़ुदा किसी को अपना बेटा करना चाहता तो अपनी सृष्टि में से जिसको चाहता पसन्द करता। वह अकेला ख़ुदा पाक और बड़ा बलवान है। (४) उसी ने आसमान और ज़मीन को ठीक पैदा किया। रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसी सूरज और चाँद को काम में लगा रक्खा है, (यह) हरएक नियत समय तक चलता है। वही (ख़ुदा) ज़ोरावर बड़ा बख़्शनेवाला है।(५) उसी ने तुम लोगों को अकेले शरीर से पैदा किया, फिर उसी से उसकी बीबी को पैदा किया और तुम्हारे लिए आठ तरह के चौपाये पैदा किये। वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट में एक तरह के बाद दूसरी तरह तीन अँधेरों में बनाता है। यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है। उसी की हुकूमत है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। फिर किधर को फिरे चले जा रहे हो।(६) अगर तुम इन्कारी हो जाओ तो अल्लाह तुम्हारी परवाह नहीं करता और अपने बन्दों के लिए इन्कारी को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करो तो वह तुम्हारे फ़ायदे के लिए पसन्द करेगा और कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा। फिर तुमको अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है। तो जैसे-जैसे कर्म तुम करते रहे हो, तुमको बता देगा।

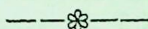
वह दिल की बातों को जानता है।(७) और जब आदमी को कोई दुख पहुँचता है तो अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजू होकर पुकारता है। फिर जब (खुदा) अपनी तरफ़ से उसको कोई नियामत देता है तो जिस लिये उसे पहिले पुकारता था भूल जाता है और खुदा के शरीक ठहराता है ताकि खुदा की राह से भटकावे, तो कह (और) बरत ले, इन्कार के साथ थोड़े दिन में तू नरकवासियों में होगा।(८) भला जो रात के समय में (खुदा की) बन्दगी में लगा है, सिजदा करता है और खड़ा होता आखिरत से डरता है और अपने परवरदिगार की मेहरबानी का उम्मेदवार है (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि कहीं जाननेवाले और न जाननेवाले बराबर होते हैं, वही लोग शिक्षा पकड़ते हैं जो समझ रखते हैं।(९) [रुकू १ आयात ९]

(ऐ पैग़म्बर) समझा दो कि हमारे ईमानदार बन्दों, अपने परवरदिगार से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं उनके लिए भलाई है और खुदा की ज़मीन चौड़ी है, संतोषियों को उसका बदला (फल) बे हिसाब मिलता है।(१०) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि मुझे हुक्म मिला है कि मैं केवल अल्लाहही की पूजा करूँ(११) और मुझे यही आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान बनूँ।(१२) (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि अगर मैं परवरदिगार की बेहुक्मी करूँ तो मुझे बड़े दिन की सज़ा से डर है।(१३) (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि मैं निरे खुदा ही में लगकर उसकी पूजा करता हूँ।(१४) (रहे तुम) सो उसके सिवाय जिसको चाहो पूजो। (ऐ पैग़म्बर! इनसे कहो कि घाटे में वह लोग हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने को और अपने बाल बच्चों को घाटे में डाला यही तो प्रत्यक्ष घाटा है।(१५) इनके ऊपर आग का ओढ़ना और नीचे आग ही का बिछौना होगा। यह बात है जिससे खुदा अपने बन्दों को डराता है। तो ऐ हमारे सेवकों, हमारा ही डर मानो।(१६) और जो लोग बुतों के पूजने से बचे और की तरफ़ ध्यान दिया उनके लिये (जन्नत की) खुशखबरी है। सो तू हमारे उन सेवकों को खुशखबरी सुना दे (१७)

जो (हमारी) बात को कान लगाकर सुनते और उसकी अच्छी बातों पर चलते हैं। यही वह लोग हैं जिनको ख़ुदा ने राह दी है और यही बुद्धिमान हैं।(१८) भला जिसे सज़ा का हुक्म हो चुका सो तू उस नरकवासी को नरक से निकाल सकेगा।(१६) मगर जो अपने परवरदिगार से डरते हैं उनके लिये (जन्नत) में खिड़कियों पर खिड़कियाँ बनी हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। (यह) ख़ुदा वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता।(२०) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर ज़मीन के चश्मों में वह पानी बहा दिया फिर उससे रंग-बिरंग की खेती निकलती है, फिर वह ज़ोरों पर आती है, फिर (पके पीछे) तू उसे पीली हुई देखेगा। तो ख़ुदा उसे चूर-चूर कर डालता है। बेशक (खेती के इस शुरू और अंत में) बुद्धिमानों के लिये शिक्षा है।(२१) [रुकू २ आयात १२]

जिसका दिल ख़ुदा ने इस्लाम के लिये खोल दिया फिर वह अपने परवरदिगार की रोशनी में है। अफ़सोस है उन लोगों पर जिनके दिल अल्लाह की याद से सख़्त हैं। यही लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं।(२२) अल्लाह ने बहुत ही अच्छी बात (यानी) किताब उतारी। (बातें) बार-बार दुहराई गई हैं जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, इससे उन के बदन काँप उठते हैं, फिर उनके जिस्म और दिल अल्लाह की याद में नरम होते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, जिसे चाहे इससे राह दिखाता है और जिसे ख़ुदा भटकाये उसे फिर कोई शिक्षा देनेवाला नहीं।(२३) कोई जो क़यामत के दिन बुरी सज़ा से अपने मुँह छिपा सके और ज़ालिमों से कहा जायगा जैसा तुमने किया है वैसा भुगतो।(२४) इनसे पहिलों ने झुठलाया था तो उनको सज़ा ने ऐसी तरफ़ से आ घेरा कि उन्हें उसकी ख़बर न थी। (२५) दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह ने उन्हें बदनामी चखाई और आख़िरत की सज़ा कहीं बढ़कर है, अगर यह लोग जानते।(२६) और हमने लोगों के लिये इस क़ुरान में सभी तरह की मिसालें बयान की हैं। शायद वह लोग शिक्षा पकड़ें।(२७) अरबी क़ुरान में किसी तरह की पेचीदगी नहीं ताकि डरें।(२८) अल्लाह ने एक मिसाल बयान की कि

एक आदमी है, उसमें कई साझी हैं जो आपस में भेद रखते हैं और एक मनुष्य एक शख्स का पूरा (ग़ुलाम है), तो क्या इन दोनों की हालत एक सी हो सकती है। सब खूबी अल्लाह को है पर बहुत लोग समझ नहीं रखते।(२६) तुमको मरना है और वे भी मरेंगे। (३०) फिर क़यामत के दिन तुम अपने परवरदिगार के सामने झगड़ोगे। (३१) [रुकू ३ आयात १०]



चौबीसवाँ पारा (फ़मन अज़लम)

फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो खुदा पर झूठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुँची उसको झुठलाया। क्या काफ़िरों का नरक ही ठिकाना नहीं है ?(३२) और जो सत्य बात लेकर आया और (जिन्होंने) सच माना यही लोग परहेज़गार हैं।(३३) जो चाहेंगे उनके परवरदिगार के यहाँ उनके लिए होगा। नेकी करनेवालों का यही बदला है।(३४) ताकि खुदा उनके कुकर्म उनसे उतार दे और उनके नेक कामों के बदले में उनको फल दे।(३५) क्या खुदा अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं और (ऐ पैग़म्बर) यह लोग तुमको खुदा के सिवाय दूसरे पूजितों से डराते हैं और जिसको खुदा गुमराह करे उसको कोई राह बतानेवाला नहीं।(३६) और जिसको खुदा शिक्षा दे तो कोई उसको गुमराह करनेवाला नहीं। क्या खुदा ज़बरदस्त बदला देने वाला नहीं है।(३७) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तू इनसे पूछ कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो कहेंगे खुदा ने। कहो कि भला देखो तो सही कि खुदा के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या यह (पूजित) उस तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर खुदा मुझ पर कृपा करना चाहे तो क्या यह (पूजित) उसकी कृपा को रोक सकते हैं ? (ऐ पैग़म्बर! तुम) कहो कि मुझे तो खुदा काफ़ी है। भरोसा रखनेवाले उसी पर भरोसा रखते हैं (३८) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि भाइयों, तुम

अपनी जगह काम किये जाओ; मैं (अपनी जगह) काम कर रहा हूँ फिर आगे चलकर तुमको मालूम हो जायगा (३६) कि किस पर आफ़त आती है, जो उसकी ख़्वारी करे और किसी पर सदा के लिए सज़ा उतरेगी।(४०) किताब हमने लोगों के (फ़ायदे के) लिए तुम पर उतारी, फिर जो कोई राह पर आया सो अपने भले को और जो कोई बहका सो अपने बुरे का बहका और तुझ पर उसका ज़िम्मा नहीं। (४१) [रुकू ४ आयात १०।

लोगों के मरते समय अल्लाह उनकी जानों को बुला लेता है और जो लोग मरे नहीं उनकी जानें सोते समय (नींद में बुला लेता है)। फिर जिनकी निस्बत मौत का हुक्म दे चुका है उनको (सोनेवालों) को एक मुक़र्रर वक़्त तक (फिर दुनिया में) भेज देता है। जो लोग ध्यान दें उनके लिये इसमें निशानात† हैं।(४२) क्या इन लोगों ने ख़ुदा के सिवाय दूसरे सिफ़ारिशी ठहराये हैं (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से कहो अगर्चे (यह सिफ़ारिशी) कुछ भी अधिकार न रखते हों और न समझ रखते हों तो भी (तुम उन्हें माने जाओगे)।(४३) कहो कि सिफ़ारिश तो सारी ख़ुदा के अधिकार में है, आसमानों और ज़मीन में उसकी हुकूमत है। फिर तुम उसकी तरफ़ को लौटाये जाओगे।(४४) और जब अकेले ख़ुदा का ज़िक्र हो तो जो लोग आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते उनके दिल रुक जाते हैं और जब ख़ुदा के सिवाय (दूसरे पूजितों) का ज़िक्र आता है तो यह लोग ख़ुश हो जाते हैं। (४५) (ऐ पैग़म्बर) तू कह कि ऐ ख़ुदा आसमानों और ज़मीन के पैदा करनेवाले, छिपे और खुले के जाननेवाले, जिन बातों में तेरे बन्दे आपस में भेद डाल रहे हैं तू ही इनके झगड़ों को चुकायेगा।(४६) और अपराधियों के पास जितना कुछ ज़मीन में है वह सब हो और उसके साथ उतना ही और हो तो क़यामत के दिन दुखदाई सज़ा के छुड़वाने में सब दे डालें और इनको ख़ुदा की तरफ़ से (ऐसा मामला

† सोना और मरना बराबर है। जैसे मनुष्य सोकर फिर उठता है वैसे ही मरकर फिर उठेगा।

पेश आवेगा जिसका उनको गुमान भी न था।(४७) और जैसे-जैसे कर्म (वह लोग) करते रहे हैं उनकी ख़राबियाँ उन पर ज़ाहिर हो जायँगी और जिस (सज़ा) की हँसी उड़ाते रहे हैं वह उनको आ घेरेगी। (४८) इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से कोई नियामत देते हैं तो कहने लगता है कि यह तो मुझको इल्म से मिला। यह जाँच है, मगर बहुत लोग नहीं समझते।(४६) ऐसी बात इनसे अगले कह चुके हैं फिर जो वह कमाते थे उनके काम न आया।(५०) और उनके कर्मों के बुरे फल उनको पहुँचे और इन (मक्का के इन्कार करने वालों) में से जो लोग बेहुक्म हैं उनको उनके कर्म का बुरा फल मिलेगा और वह हरा न सकेंगे।(५१) क्या इनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है (और जिसको चाहता है) नपी तुली कर देता है। इसमें ईमानवालों के लिए निशानियाँ हैं। (५२) [रुकू ५ आयात ११]

(ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कह दो कि ऐ हमारे बन्दों, जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की, अल्लाह की मेहरबानी से नाउम्मेद न हो जाओ। अल्लाह तमाम पापों को क्षमा कर देता है। वह बख़्शनेवाला मेहरबान है।(५३) और तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ ध्यान दो और उसका हुक्म उठाओ। इससे पहले कि तुम पर सज़ा आ उतरे और फिर उस वक़्त तुमको मदद न मिलेगी।(५४) और अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजू हो और हुक्मबरदारी करो। इससे पहले कि अचानक सज़ा तुम पर आ उतरे और तुमको ख़बर न हो।(५५) कोई शख़्स कहेगा अफ़सोस मैंने ख़ुदा के सामने पाप किया और मैं तो हँसता ही रहा।(५६) या कहने लगा कि अगर ख़ुदा मुझको शिक्षा देता तो मैं परहेज़गारों में होता।(५७) जब सज़ा देखी तब कहने लगा कि किसी तरह मुझको (दुनिया) में फिर जाना हो तो मैं नेकों में हो जाऊँ।(५८) हमारी आज्ञायें तुमको पहुँचीं तो तूने उन्हें झुठलाया और अकड़ बैठा और तू इन्कार करनेवालों में था।(५६)

और (ऐ पैग़म्बर ! तू) क़यामत के दिन इन्हें देखेगा जो ख़ुदा पर झूठ बोलते थे उनके मुँह काले होंगे। क्या घमण्डियों का ठिकाना नरक में नहीं है।(६०) और जो लोग परहेज़गारी करते हैं उनको ख़ुदा कामयाबी के साथ छुटकारा देगा। उनको सज़ा नहीं छुएगी और न वह उदास होंगे।(६१) अल्लाह हर चीज़ को पैदा करनेवाला है और वही हर चीज़ का ज़िम्मा लेने वाला है।(६२) आसमान और ज़मीन की कुंजियाँ उसी के पास हैं और जो लोग ख़ुदा की आयतों को नहीं मानते वही घाटे में हैं।(६३) [रुकू ६ आयात ११]

(ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि क्या तुम मुझे ख़ुदा के सिवाय दूसरों की पूजा का हुक्म देते हो।(६४) और तुझको और तुझसे अगलों को हुक्म हो चुका है कि अगर तूने शरीक ठहराया तो तेरे किये सब अकारथ जावेंगे और तू घाटे में होगा।(६५) बल्कि अल्लाह ही की पूजा करो और शुक्रगुज़ारी में रहो।(६६) और इन लोगों ने ख़ुदा की जैसी क़दर करनी चाहिये थी, वैसी क़दर नहीं की। हालाँकि क़यामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और सब आसमान लिपटे हुए उसके दाहिने हाथ में होंगे और वह इनके बनाये हुऐ शरीकों से ज्यादा पाक और बहुत ऊपर है (६७) और सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा तो जो आसमानों में और ज़मीन में हैं बेहोश हो जायँगे मगर जिसको ख़ुदा चाहे (बेहोश न होगा)। फिर दुबारा सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा। फिर वे खड़े हो जायँगे और देखने लगेंगे।(६८) और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जायँगी और उनमें पैग़म्बर गवाह हाज़िर किये जायँगे और उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायगा और उन पर ज़ुल्म न होगा।(६९) और जिसने जैसे काम किये हैं सबको पूरा-पूरा बदला मिलेगा और जो कुछ भी कर रहे हैं ख़ुदा उससे ख़ूब जानकार है।(७०) [रूकू ७ आयात ७]

और काफ़िर नरक की तरफ टोलियाँ बना-बनाकर हाँके जायँगे यहाँ तक कि जब नरक के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये

जायँगे और नरक का दारोग़ा उनसे कहेगा कि क्या तुममें के पैग़म्बर तुम्हारे पास नहीं आये थे कि वह तुम्हारे परवरदिगार की आयतें तुमको पढ़कर सुनाते और इस दिन की मुलाक़ात से तुम्हें डराते। यह जवाब देंगे कि हाँ मगर सज़ा का हुक्म काफ़िरों पर क़ायम हो गया है।(७१) (फिर इनसे) कहा जायगा कि नरक के दरवाज़ों में दाख़िल हो, हमेशा इसमें रहो। ग़रज़ अकड़नेवालों का बुरा ठिकाना है।(७२) और जो अपने परवरदिगार से डरते थे उनकी टोलियाँ बना बनाकर जन्नत की तरफ़ ले जाई जायँगी। यहाँ तक कि जन्नत के पास पहुँचेंगे और उसके दरवाज़े खुले होंगे और जन्नत के कार्यकर्ता उनसे सलाम करके कहेंगे कि तुम मज़े में रहे। जन्नत में हमेशा के लिये दाख़िल हो (७३) और (यह लोग) कहेंगे कि ख़ुदा का धन्यवाद हमको सच कर दिखाया और हमको ज़मीन का मालिक बनाया कि हम जन्नत में जहाँ रहें तो (नेक) काम करनेवालों को अच्छा फल है।(७४) और (ऐ पैग़म्बर! उस दिन) तू देखेगा कि फ़रिश्ते अपने परवरदिगार की ख़ूबी बयान करते तख़्त को आस-पास घेरे हैं और इनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायगा और कहा जायगा कि संसार के परवरदिगार अल्लाह की तारीफ़ हो। (७५) [रूकू ८ आयात ५]

---

४० सूरे मौमिन ६०

मक्का में उतरी, इसमें ८५ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा-मीम(१) ज़ोरावर हिकमतवाले अल्लाह की तरफ़ से इस किताब का उतरना हुआ है (२) पापों का क्षमा करनेवाला है और तौबा का क़बूल करनेवाला सख़्त सज़ा देनेवाला है। बड़ी कृपा करनेवाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं, उसकी तरफ़ लौटकर जाना है।(३) ख़ुदा की आयतों में सिर्फ़ वही लोग झगड़े निकालते हैं जो इन्कार कनेवाले हैं। इन

लोगों का शहरों में इधर-उधर चलना-फिरना तुमको धोखे में न डाले (४) इनसे पहिले नूह की क़ौम ने और उनके बाद और गिरोहों ने (अपने पैग़म्बरों को) झुठलाया और हर गिरोह ने अपने पैग़म्बर के गिरफ़्तार करने का इरादा किया और झूठी बातों से झगड़े ताकि अपनी हुज्जतों से सच को डिगा दें। फिर मैंने उनको धर पकड़ा तो मैंने उनको कैसी सज़ा दी। (५) और इसी तरह काफ़िर पर तुम्हारे परवरदिगार की बात साबित हुई कि यह नरकगामी हैं। (६) जो (फ़रिश्ते) तख़्त को उठाये हुए हैं और जो तख़्त के आस पास हैं अपने परवरदिगार की तारीफ़ और पाकी के साथ याद करते और उस पर ईमान लाते और ईमानवालों के लिए क्षमा कराते हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! तेरी कृपा और तेरे ज्ञान में सब चीज़ें समाई हैं। जिन्होंने तौबा की और तेरी राह पर चले, उनको क्षमा कर दे और उन्हें नरक की सज़ा से बचा। (७) और ऐ हमारे परवरदिगार! उनको (जन्नत के) बसने के बाग़ों में ले जाकर दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप-दादों और बीवियों और उनकी औलाद में से जो-जो नेक हों उनको भी। बेशक तू ज़ोरावर हिकमतवाला है। (८) और उनको ख़राबियों से बचा और जिनको तूने उस दिन ख़राबियों से बचाया उन पर तूने कृपा की और यही बड़ी कामयाबी है। (९) [रुकू १ आयात ९]

जो लोग इनकार करनेवाले हैं (क़यामत के दिन) उनसे ज़ोर से कह दिया जायगा कि जैसे तुम (आज) अपने जी से बेज़ार हो इससे बढ़कर ख़ुदा बेज़ार था, जब कि तुम ईमान की तरफ़ बुलाये जाते थे और नहीं मानते थे। (१०) काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमको दो बार मुर्दा और दो बार ज़िन्दा कर चुका। पस हम अपने पापों का इक़रार करते हैं, फिर निकलने की कोई सूरत है? (११) (ख़ुदा कहेगा नहीं और) यह इसलिए कि (दुनिया में) जब अकेले ख़ुदा को पुकारा जाता था तो तुम नहीं मानते थे और अगर उसके साथ शरीक

ठहराये जाते थे तो तुम यक़ीन कर लेते थे, तो (आज) सब से ऊपर और बड़े अल्लाह ही का हुक्म है।(१२) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता और आसमान से तुम्हारे लिए रोज़ी उतारता है और वही सोचता है जो ध्यान देता है।(१३) (तो मुसलमानों !) ख़ुदा ही के आज्ञाकारी ख़्याल करके उसी को पुकारो अगर्चि काफ़िरों को भले ही बुरा लगे।(१४) साहिब ऊँचे दर्जे के तख़्त का मालिक अपने दासों में से जिस पर चाहता है अपने अधिकार से भेद की बात उतारता है ताकि (पैग़म्बर) क़यामत के दिन की मुसीबत से डरावे।(१५) जब कि वह (ख़ुदा के) सामने आ मौजूद होंगे उनकी कोई बात ख़ुदा से छिपी न होगी आज। जिसकी हुकूमत है ? अकेले अल्लाह दबाववाले की।(१६) आज हर आदमी अपने किये का बदला पायेगा। आज (किसी पर) ज़ुल्म होगा। अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।(१७) और इन लोगों को आनेवाले दिन से डराओ कि रंज के सबब दिल गले तक आ जावेंगे। पापियों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिसकी बात मानी जावे।(१८) ख़ुदा आँखों की चोरी और जो सीनों (छातियों) में छिपी है, जानता है।(१९) और अल्लाह ठीक आज्ञा देता है और उसके सिवाय जिन (पूजितों) को यह लोग पुकारते हैं वह किसी तरह की आज्ञा नहीं दे सकते। बेशक अल्लाह सुननेवाला देखनेवाला है।(२०) [रुकू २ आयात ११]

और क्या इन लोगों ने मुल्क में चल-फिरकर नहीं देखा कि जो उनसे पहले थे उनका परिणाम (आख़िर) क्या हुआ ? वह बलबूते के लिहाज़ से और उन निशानों के लिहाज़ से जो ज़मीन पर छोड़ गये हैं इनसे कहीं बढ़चढ़ कर थे। तो ख़ुदा ने उनको उनके अपराधों की सज़ा में धर पकड़ा और उनको ख़ुदा से कोई बचानेवाला न हुआ। (२१) यह इस सबब से हुआ कि उनके पैग़म्बर चमत्कार लेकर उनके पास आये, इस पर उन्होंने न माना तो अल्लाह ने उनको धर पकड़ा वह बड़ी सख़्त सज़ा देनेवाला है।(२२) और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और खुली खुली दलीलें देकर भेजा।(२३) फ़िरऔन

और हामान† और क़ारून की तरफ़। तो वह कहने लगे कि (यह) जादूगर झूठा है।(२४) (फिर जब) मूसा हमारी ओर से सच लेकर उनके पास गया तो उन्होंने हुक्म दिया कि जो लोग मूसा के साथ ईमान लाये हैं उनके बेटों को क़त्ल कर डालो और बेटियों को जीता रखो और काफ़िरों का दावा ग़लती में होता है।(२५) और फ़िरऔन ने (अपने दरबारियों) से कहा कि मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को क़त्ल करूँ और वह अपने परवरदिगार को बुलावे। तुझको अन्देशा है कि (कहीं ऐसा न हो कि) तुम्हारे दीन को उलट-पलट कर डाले या देश में फ़साद फैलावे।(२६) और मूसा ने कहा मैं अपने परवरदिगार और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूँ। हर एक घमंडी से जो क़यामत को नहीं मानता।(२७) [रुकू ३ आयात ७]

और फ़िरऔन के लोगों में से एक मर्द ईमानदार था जो अपने ईमान को छुपाता था। वह बोला कि क्या तुम एक मनुष्य के क़त्ल करने को उद्यत हो कि वह ख़ुद ही को अपना परवरदिगार बताता है। हालाँकि वह तुम्हारे परवरदिगार की ओर से तुम्हारे पास चमत्कार लेकर आया है और अगर झूठा भी हो तो उसके झूठ का बवाल उसी पर पड़ेगा और अगर सच्चा हुआ तो जिस जिस का तुमसे वादा करता है उनमें से कोई तुम पर आ उतरेगा। अल्लाह किसी झूठे बेहुक्म को हिदायत नहीं करता।(२८) आज तुम्हारी हुकूमत मुल्क में बढ़ी-चढ़ी है, अगर ख़ुदा की सज़ा हमारे सामने आवे तो कौन हमारी मदद करेगा। फ़िरऔन ने कहा मैं तुमको वही बात समझाता हूँ जो मैं समझा हूँ और वही राह बताता हूँ जिसमें भलाई है।(२९) और ईमानदार बोला ऐ भाइयों! मुझको तुम्हारी बावत डर है कि तुम पर अगले गरोहों जैसा दिन न आजाय (३०) जैसा नूह, आद और समूद की क़ौम पर और उन लोगों का हुआ जो उनके बाद हुए। और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता।(३१)

† हामान फ़िरऔन का मंत्री था। क़ारून बड़ा धनी था। क़ारून का ख़ज़ाना मशहूर है।

और ऐ क़ौम मुझको तुम्हारी बाबत क़यामत के दिन का डर है।(३२) जब कि तुम पीठ देकर भागोगे। तुमको ख़ुदा से कोई न बचावेगा और ख़ुदा जिसको गुमराह करे तो उसको कोई हिदायत देनेवाला नहीं।(३३) और (इससे) पहले यूसुफ़ खुले हुक्म लेकर तुम्हारे पास आ चुका है। फिर जब वह तुम्हारे पास लेकर आये तुम उनमें शक ही करते रहे, यहाँ तक कि जब वह मर गया तब तुम कहने लगे कि इसके बाद अल्लाह कोई पैग़म्बर न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उनको जो लोग हद से बढ़े हुए शक में पड़े रहते हैं राह भटकाया करता है।(३४) जो लोग ख़ुदा की आयतों में बिना किसी सनद के झगड़ते हैं अल्लाह के और ईमानवालों के नज़दीक नापसंद बात है। घमण्डी सरकशों के दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है।(३५) और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए एक महल बनवा कि मैं रास्तों पर पहुँचूँ।(३६) रास्तों में आसमान के कि मैं मूसा के ख़ुदा तक पहुँचूँ, और मैं तो मूसा को झूठा समझता हूँ। और इसी तरह फ़िरऔन की बदकारी उसको भलाई कर दिखाई गई और वह राह से रोका गया, और फ़िरऔन की तदबीरें ग़ारत होनेवाली थीं।(३७) [रुकू ४ आयात १०]

और वह ईमानदार बोला ऐ क़ौम। मेरे कहे पर चल मैं तुझको सीधी राह दिखा दूँगा।(३८) भाइयों! यह दुनिया की जिन्दगी थोड़ा फ़ायदा है और आख़िरत रहने का घर है (३६) जो बुरे काम करता है उसको वैसा ही बदला मिलेगा और जो नेकी करता है मर्द हो या औरत, मगर हो ईमानदार तो यह लोग जन्नत में होंगे, वहाँ उनको बेहिसाब रोज़ी मिलेगी (४०) और ऐ क़ौम! मुझे क्या हुआ कि मैं तुमको छुटकारे की तरफ़ और तुम मुझे नरक की तरफ़ बुलाते

† कहते हैं कि फ़िरऔन ने ख़ुदा से लड़ने के लिये एक बड़ी ऊँची इमारत बनवाई थी और उसकी छत से एक तीर भी आकाश की ओर मारा था। यह तीर लहू में भरा हुआ जब भूमि पर गिरा तो वह यह समझा कि उसने ख़ुदा को मार डाला।

हो।(४१) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूँ और उसके साथ उस चीज़ को शरीक करूँ जिसका मुझे इल्म ही नहीं, और मैं तुम्हें बली बख़शनेवाले की तरफ़ बुलाता हूँ।(४२) कुछ शक नहीं कि जिस चीज़ की तरफ़ मुझको बुलाते हो वह न दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न आख़िरत में और कुछ शक नहीं कि हमको अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है। जो लोग हद से बढ़े हुए हैं वही नरकवासी हैं।(४३) जो मैं तुमसे कहता हूँ सो आगे याद करोगे और मैं अपना काम ख़ुदा को सौंपता हूँ। बेशक अल्लाह की निगाह में सब बन्दे हैं।(४४) चुनाँचे मूसा को तो अल्लाह ने फ़िरऔनियों के बुरे दाँवों से बचा दिया और फ़िरऔनियों को बुरी सज़ा ने घेर लिया।(४५) (यानी नरक की) सुबह और शाम फ़िरऔन के लोग आग के सामने खड़े किये जाते हैं और जिस दिन क़यामत आवेगी सख़्त सज़ा में दाख़िल होंगे।(४६) और एक वक़्त एक दूसरे से नरक में झगड़ेंगे; तो कमज़ोर मनुष्य ज़ालिमों से कहेंगे कि हम तुम्हारे क़ाबू में थे, फिर क्या तुम थोड़ी-सी आग भी हम पर से हटा सकते हो ?(४७) घमण्डी कहेंगे कि हम सब इसी में हैं अल्लाह बंदों में हुक्म दे चुका है (४८) और जो लोग नरक में हैं वह नरक के कार्यकर्त्ता (दरोग़ाओं) से कहेंगे कि अपने परवरदिगार से अर्ज़ करो कि एक ही दिन की सज़ा हमसे हलकी कर दी जावे (४६) वह जवाब देंगे क्या तुम्हारे पैग़म्बर तुम्हारे पास खुले चमत्कार लेकर नहीं आते रहे। वह कहेंगे हाँ? फिर तुम्हीं पुकारो और काफ़िरों का पुकारना सिर्फ भटकना है और कुछ नहीं।(५०) [रुकू ५ आयात १३]

हम दुनिया की ज़िन्दगी में अपने पैग़म्बरों की और ईमानवालों की मदद करते हैं और उस दिन (भी मदद करेंगे) जब कि गवाह खड़े होंगे।(५१) जिस दिन इन्कारियों का उज्र काम न देगा और उन पर फटकार होगी और उनको बुरा घर मिलेगा।(५२) और हमने मूसा को शिक्षा दी और इसराईल के बेटों को किताब का वारिस बनाया।(५३) बुद्धिमानों के लिए शिक्षा और हिदायत है।(५४)

सो (ऐ पैग़म्बर !) तू ठहरा रह—ख़ुदा का वादा सच्चा है और अपने पापों की क्षमा माँग और सुबह और शाम अपने परवरदिगार की ख़ूबियों की पाकी बोल।(५५) जो लोग बिना किसी सनद के ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं उनके दिलों में अकड़ है। वह इसको न पहुँचेंगे ख़ुदा की पनाह माँग। वह सुनता-देखता है।(५६) आसमानों को और ज़मीन को पैदा करना आदमियों के पैदा करने के मुक़ाबिले में बड़ा काम है। मगर बहुधा लोग नहीं समझते।(५७) और अन्धा और आँखोंवाला बराबर नहीं और ईमानदार जो भले काम करते हैं कुकर्मियों के बराबर नहीं। तुम थोड़ी ही नसीहत पकड़ते हो।(५८) वह घड़ी (क़यामत) आनेवाली है इसमें शक नहीं। लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।(५९) और (लोगों !) तुम्हारे परवरदिगार ने मुझ से कहा है कि तुम दुआ करो। मैं उसे क़बूल करूँगा। जो लोग मेरी पूजा से सिर उठाते हैं, बदनाम होकर नरक में जावेंगे।(६०) [रुकू ६ आयात १०]

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उससे आराम करो और दिन बनाये ताकि देखो। अल्लाह लोगों पर बड़ा ही मिहरबान है लेकिन बहुधा लोग धन्यवाद नहीं देते।(६१) यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है कुल चीज़ों का पैदा करनेवाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। फिर तुम किधर बहके चले जाते हो।(६२) जो लोग ख़ुदा की आयतों से इन्कारी हैं इसी तरह बहकाये जाते हैं।(६३) अल्लाह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और उसीने तुम्हारी सूरतें बनाईं और अच्छी बनाईं और उम्दा-उम्दा वस्तुएँ तुम्हें दीं। यही अल्लाह तो तुम्हारा परवरदिगार है। सो अल्लाह संसार का परवरदिगार बड़ा बरकत देनेवाला है।(६४) वह ज़िन्दा है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं तो ख़ालिस उसी की आज्ञा का ख़याल रखकर उसी की पूजा करो। सब तारीफ़ें ख़ुदा ही को हैं, जो सब संसार का पोषण करनेवाला है।(६५) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मुझे मना हुआ है कि मैं अल्लाह के सिवाय उन्हें पूजूँ जिन्हें तुम पुकारते हो। जब कि मेरे परवरदिगार से मेरे पास

खुली आयतें क़ुरान की आ गईं और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं संसार के परवरदिगार पर ईमान लाऊँ।(६६) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े से। फिर तुमको बच्चा निकालता है तुम अपनी जवानी को पहुँचते हो। फिर तुम बूढ़े हो जाते हो और तुममें से कोई पहले मर जाते हैं और (जिनको जवानी या बुढ़ापे तक ज़िन्दा रखा जाता है, तो) इस ग़रज़ से कि तुम मुक़र्रर वक़्त तक पहुँचो और शायद तुम समझो।(६७) (वही) जिलाता और मारता है फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि हो और वह हो जाता है।(६८)[रुकू ७ आयात ८]

(ऐ पैग़म्बर!) क्या तूने उनकी तरफ़ न देखा जो ख़ुदा की आयतों में झगड़ा करते हैं, किधर को बहके चले जा रहे हैं।(६९) यह लोग जो किताब को झुठलाते हैं और उन (किताबों) को जो हमने अपने (दूसरे) पैग़म्बरों की मारफ़त भेजी हैं सो आख़िरकार इनको मालूम हो जायगा।(७०) जब इनकी गर्दनों में तौक़ और ज़ंजीरें होंगी घसीटते हुए उनको झुलसते पानी में ले जायेंगे (७१) फिर आग में झोंके जायेंगे।(७२) फिर इनसे पूछा जायगा कि ख़ुदा के सिवाय तुम जिन (पूजितों) को शरीक ठहराते थे वे कहाँ हैं।(७३) वे कहेंगे हमसे खोये गये बल्कि हम तो पहले (अल्लाह के सिवाय) किसी चीज़ की पूजा करते ही न थे। अल्लाह काफ़िरों को इसी तरह भटकाता है।(७४) (उनसे कहा जायगा कि) यह तुम्हारी उन बातों की सज़ा है कि तुम ज़मीन पर बेफ़ायदा ख़ुशियाँ मनाया करते थे और उसकी सज़ा है कि तुम इतराया करते थे।(७५) (तो अब) नरक के दरवाज़ों में जा दाखिल हो। हमेशा इसी में रहो ग़र्ज़ घमण्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है।(७६) (ऐ पैग़म्बर!) संतोष कर ख़ुदा का वादा सच्चा है। तो जैसे वादे हम इन लोगों से करते हैं कुछ तुझको दिखायेंगे या तुझे (दुनिया से) उठा लेंगे फिर वे हमारी तरफ़ आवेंगे।(७७) और हमने तुमसे पहले कितने पैग़म्बर भेजे उनमें से (कोई) ऐसे हैं जिनके हालात हमने तुमको सुनाये और उनमें से (कोई)

ऐसे हैं† जिनके हालात हमने तुमको नहीं सुनाये और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि बेइजाज़त-ख़ुदा कोई चमत्कार ला दिखावे। फिर जब ख़ुदा का हुक्म यानी सज़ा आई तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और जो लोग ग़लती में थे घाटे में रहे।(७८) [रुकू ८ आ. १०]

अल्लाह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते चौपाये बनाये ताकि उन पर सवारी लो और (कोई) उनमें से ऐसा है कि तुम उनको खाते हो।(७६) और तुम्हारे लिए चौपायों में बहुत फ़ायदे हैं और उन पर चढ़कर अपने दिली मतलब को पहुँचो और चौपायों पर और किश्तियों पर तुम (लदे फिरते हो)।(८०) और तुमको (ख़ुदा) अपनी निशानियाँ दिखाता है तो ख़ुदा की (क़ुदरत की) कौन २ सी निशानियों से इन्कार करते हो।(८१) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अपने अगलों का परिणाम (आख़ीर) देखते। वह बलबूते के लिहाज़ से और ज़मीन पर छोड़े हुए निशानों के लिहाज़ से इनसे कहीं बढ़चढ़ कर थे फिर उनकी कमाई इनके कुछ काम न आई।(८२) और जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली हुई दलीलें लेकर आये तो जो उनके पास ख़बर थी उसपर ख़ुश हुए और जिसकी हँसी उड़ाते थे वह इन्हीं पर उलट पड़ी।(८३) फिर जब उन्होंने हमारी सज़ा (आते) देखी तो कहने लगे कि हम एक ख़ुदा पर ईमान लाये और जिन चीज़ों को हम शरीक ठहराते थे (अब) हम उनको नहीं मानते।(८४) मगर जब उन्होंने हमारी सज़ा (आते) देखली तो ईमान लाना उनको कुछ भी फ़ायदेमन्द न हुआ (यह) दस्तूर अल्लाह का है जो उसके बन्दों में जारी है और काफ़िर यहाँ घाटे में होते हैं।(८५) [रुकू ६ आयात ७]

——:०:——

† क़ुरान में कुछ रसूलों ही के हालात हैं कुछ के नाम हैं और कुछ के नाम नहीं हैं और न उनके हालात ही हैं, यद्यपि वह समय समय हर विभिन्न स्थानों में हुए हैं।

४१ सूरे हामीमसिज्दह ६१

मदीना में उतरी, इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा-मीम (१) मिहरबान ख़ुदा (रहमान रहीम) की तरफ़ से उतरा। (२) यह (क़ुरान) किताब है जिसकी आयतें अरबी बोली में समझदार लोगों के लिए ब्यौरे के साथ बयान करदी गई हैं।(३) ख़ुशख़बरी सुनाता और डराता है, इस पर भी इनमें से अक्सरों ने मुँह मोड़ा और वह नहीं सुनते।(४) और कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ तुम हमको बुलाते हो हमारे दिल उससे पर्दों में हैं और हमारे कान भारी हैं और हममें और तुममें भेद है। तू काम कर और हम काम कर रहे हैं।(५) (ऐ पैग़म्बर! कहो कि मैं तुम्हीं जैसा आदमी हूँ। मुझ पर हुक्म आता है, कि तुम्हारा एक पूजित है, सो सीधे उसी की तरफ़ चले जाओ और उससे क्षमा माँगो और शरीक करनेवालों पर अफ़सोस (शोक) है, (६) जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के भी इनकार करने वाले हैं।(७) अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिए बड़ा फल है।(८) (ऐ पैग़म्बर!) कहो क्या तुम उससे इनकार करते हो जिसने दो दिन में ज़मीन को पैदा किया और तुम उसका शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का परवरदिगार है। (९) [रुकू १ आयात ६]

और उसी ने ज़मीन में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दी और उसी में माँगनेवालों के लिए चार दिनों में ख़ूराकें ठहरा दीं।(१०) फिर आसमान की तरफ़ सीधा हो गया और वह धुआँ था। ज़मीन और आसमान दोनो से कहा कि तुम दोनो ख़ुशी से आये या लाचारी से? दोनो ने कहा हम ख़ुशी से आये।(११) इसके बाद दो दिन में उस (धुएँ) के सात आसमान बनाये और हरएक आसमान में अपना हुक्म उतारा और पहले आसमान को हमने तारों से सजाया और हिफ़ाज़त रखी। यह ज़ोरावर क़ुदरतवाले से सधा है।(१२) फिर अगर

(मक्का के काफ़िर) सिर में फेरें तो कह कि जैसी कड़क आद और समूद पर हुई थी, उसी तरह की कड़क से तुमको भी डराता हूँ।(१३) तब उनके पास उनके आगे से और उनके पीछे से पैग़म्बर आये कि ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा न करो। वह कहने लगे अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते भेजता, फिर जो कुछ तुम लाये हो हम उसको नहीं मानते।(१४) सो आद (के लोगों) ने वृथा घमण्ड किया और बोले बलबूते में हम से बढ़कर कौन है ? क्या उनको इतना न सूझा कि जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया वह बलबूते में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर है। ग़रज़ वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे।(१५) तो हमने उन पर बड़े ज़ोर की आँधी चलाई ताकि दुनिया की ज़िन्दगी में उनको सज़ा का मज़ा चखायें और आख़िरत की सज़ा में तो पूरी ख़्वारी है और उनको मदद न मिलेगी।(१६) और वह जो समूद थे हमने उन्हें हिदायत की, उन्होंने सीधी राह छोड़कर गुमराही इख़्तयार की। परिणाम यह हुआ कि उनके कुकर्मों की वजह से उनको ज़िल्लत की कड़क ने दबा लिया।(१७) और जो लोग ईमान लाये और डरते थे उनको हमने बचा लिया।(१८) [रुकू २ आ ६]

और जिस दिन ख़ुदा के दुश्मन नरक की तरफ़ हाँके जायँगे उनके गरोह जुदा-जुदा होंगे।(१९) यहाँ तक कि (जब सब) नरक के पास जमा होंगे तो जैसे-जैसे काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े उनके मुक़ाबिले में गवाही देंगे।(२०) और यह लोग अपनी (खाल) से पूछेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी ? वह जवाब देगी कि जिस (ख़ुदा) ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी, उसी ने हमसे बुलवा लिया। उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा

† काफ़िरों के आमालनामे (कर्मसूची) फ़रिश्ते लायेंगे तो वह कहेंगे यह हमारे शत्रु हैं। इनकी बात हम नहीं मानते। फिर पृथ्वी और आकाश उनके कर्मों को बतायेंगे परन्तु वे उनको भी झूठा बतायेंगे तो उनकी इन्द्रियाँ नाक कान आदि स्वयं बुरे कामों की गवाही देंगी।

किया और अब तुम लोग उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (२१) और तुम इस बात की परवा न करते थे कि तुम्हारे कान, आँखें और चमड़ा गवाही देंगे बल्कि तुमको ख़्याल था कि तुम्हारे बहुत-से कामों से ख़ुदा (भी) जानकार नहीं। (२२) और उस बदगुमानी ने जो तुमने अपने परवरदिगार के हक़ में की तुमको बर्बाद किया और तुम घाटे में आ गये। (२३) फिर अगर यह लोग संतोष करें तो उनका ठिकाना नरक है और अगर क्षमा चाहें तो इनको क्षमा नहीं दी जायगी।(२४) और हमने इन (काफ़िरों के साथ बैठनेवाले मुक़र्रर कर दिये थे† तो उन्होंने इनके अगले और पिछले तमाम हालात इनकी नज़र में अच्छे कर दिखाये और जिन्नों और आदमियों के सब फ़िर्क़ों पर जो उनसे आगे हो चुके हैं, बात ठीक पड़ी। बेशक वे घाटे में थे। (२५) [रुकू ३ आयात ७]

और जो लोग इन्कार करनेवाले हैं वह कहा करते हैं कि इस क़ुरान को मत सुनो और इसमें गुल मचा दिया करो। शायद तुम बाज़ी ले जाओ।(२६) सो जो लोग इन्कार करनेवाले हैं हम उनको सख़्त सज़ा चखायेंगे। और उनके कामों का बुरा बदला देंगें।(२७) नरक ख़ुदा के दुश्मनों (यानी काफ़िरों) का बदला है। वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते थे, उसकी सज़ा में उनको हमेशा के लिए नरक में घर मिला।(२८) और जो लोग इन्कार करनेवाले हैं (क़यामत में) कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! शैतान और आदमी जिन्होंने हमको गुमराह किया था (एक नज़र) उनको हमें (भी) दिखा कि हम उनको अपने पैरों के तले डालें ताकि वह बहुत ही ज़लील हों।(२९) जिन लोगों ने इक़रार किया कि अल्लाह हो हमारा परवरदिगार है और जमे रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे कि न डरो और न रंज करो और जन्नत जिसका तुम्हें वादा मिला था अब उससे ख़ुश हो। (३०)

† ये साथी शैतान हैं जिन्होंने उनको यह समझा रखा है कि दुनिया का सुख-चैन उठाना चाहिए और आख़िरत (परलोक) को तो किसी ने नहीं देखा, उससे डरना बेकार है।

हम दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत की ज़िन्दगी में तुम्हारे मददगार हैं। जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहे और जो तुम माँगो मौजूद होगी।(३१) वहाँ बख़्शनेवाले मेहरबान की तरफ़ से मेहरबानी है।(३२) [रुकू ४ आयात ७]

और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और नेक काम करे और कहे कि मैं ख़ुदा के आज्ञाकारी सेवकों में हूँ।(३३) और नेकी और बदी बराबर नहीं। बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दे, तो तुझ में और जिस आदमी में दुश्मनी थी उसे तू पक्का दोस्त पायेगा (३४) और बात उन्हीं लोगों को दी जाती है जो सब्र करते हैं और यह उन्हीं लोगों को दी जाती है जिनके बड़े भाग्य हैं।(३५) और अगर तुमको किसी तरह का शैतानी ख़याल बहकाये तो ख़ुदा से पनाह माँगो। वही सुनता-जानता है।(३६) और ख़ुदा की निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद भी हैं। न सूरज को सिजदा करो और न चाँद को, और अगर तुम ख़ुदा के पूजनेवाले हो तो अल्लाह ही को सिजदा करना, जिसने इन चीज़ों को पैदा किया है।(३७) फिर अगर (यह लोग) घमण्ड करें (तो ख़ुदा को इनकी कोई परवा नहीं)। जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वह रात और दिन उसकी दिल से याद करने में लगे रहते हैं और वह नहीं थकते।(३८)★ [सि.११] और उसकी निशानियों में से एक यह है कि तू ज़मीन को दबी हुई देखता है, फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो वह लहलहाने लगती और उभर चलती है। जिसने इस (ज़मीन) को जिलाया, वही मुर्दों को भी जिलानेवाला है। वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।(३९) जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन पैदा करते हैं, हम पर छिपे नहीं। जो आदमी नरक में डाला जाय वह बेहतर है या वह आदमी जिसको क़यामत के दिन खटका न हो? लोगो! जो चाहो सो करो। जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उसको देख रहा है।(४० जिन लोगों के पास शिक्षा आई और उन्होंने उसको न माना। और यह (क़ुरान) अजीब किताब है।(४१) इसमें झूठ का न इसके आगे से और न इसके

पीछे से दखल है, हिकमतवाले सब ख़ूबियों के सराहे से उतरी हुई है।(४२) (ऐ पैग़म्बर !) तुझसे वही बात कही जाती है जो तुझसे पहले पैग़म्बरों से कही जा चुकी है। बेशक तेरा परवरदिगार क्षमा करनेवाला और उसकी सज़ा दुखदाई है।(४३) और अगर हम इसको अरबी† के सिवाय दूसरी ज़बान में बनाते तो कहते कि इसकी आयतें अच्छी तरह खोलकर क्यों नहीं समझाई गईं ? इसकी ज़बान तो अरबी है और हमारी अरबी। (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए तो यह (क़ुरान) हिदायत और सेहत है और जो ईमान नहीं रखते उनके कानों में बोझ है और वह उनके हक़ में अन्धापन है। यह लोग दूर की जगह से पुकारे जाते हैं (कैसे सुनें ?)।(४४) [रुकू ५ आ. १२]

और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें (बड़े-बड़े) भेद डाले गये और अगर तुम्हारे परवरदिगार से (फ़ैसला करने की आज्ञा) पहले उतर न चुकती तो इनमें फ़ैसला कर दिया गया होता और यह लोग क़ुरान की निस्बत शक पर शक में पड़े हैं।(४५) (ऐ पैग़म्बर !) जिसने नेक काम किये उसने अपने लिए और जिसने बुरा किया तो उसी पर है और तेरा परवरदिगार बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।(४६)

——):०:(——

पच्चीसवाँ पारा (इलैहि यूरद्दु)

उसी की तरफ़ क़यामत के इल्म का हवाला दिया जाता है और उसी के इल्म से फल गाभों से निकलते हैं। न किसी मादा का पेट रहता है और वह जनती है मगर उसके इल्म से। और जब ख़ुदा लोगों को पुकारेगा कि तुम्हारे शरीक कहाँ हैं ? वह जवाब देंगे कि हमने तुझे सुना

† इन्कारी कहते थे कि क़ुरान अरबी भाषा में क्यों उतरी ? और किसी भाषा में उतरती तो हम मान भी लेते। अरबी तो मुहम्मद की मातृभाषा है। उन्होंने अपने आप बना लिया होगा। इसका यह उत्तर दिया गया है कि यदि यह क़ुरान किसी अन्य भाषा में भी होती तो भी न माननेवाले न मानते और कहते हम पराई बोली क्या जानें और उसे क्यों मानें ?

दिया कि हममें से किसी को खबर नहीं।(४७) और जिन पूजितों को पहले यह लोग पुकारते थे, अब इनसे खोये गये और यह समझ लेंगे कि इनके लिए छुटकारा नहीं।(४८) आदमी भलाई माँगने से नहीं थकता और जो उसे बुराई पहुँचे तो उदास और निराश हो जाता है।(४९) और अगर उसको कोई दुख पहुँचे और दुख के बाद हम उसको अपनी कृपा चखावें तो कहने लगता है कि यह तो मेरे ही लिए है और मैं नहीं समझता कि क़यामत क़ायम हो और अगर मुझको अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया जायगा तो उसके यहाँ मेरे लिए खूबी होगी। सो हम काफ़िरों को उनके काम बता देंगे और उनको सख्त सज़ा का मज़ा चखायेंगे।(५०) और जब हम आदमी पर निआमत भेजते हैं तो मुँह फेर लेता है और अलग हो जाता है और जब उसको दुख पहुँचता है तो लम्बी-चौड़ी दुआएँ करने लगता है। (५१) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि भला देखो तो सही कि अगर (यह क़ुरान) खुदा के यहाँ से हो और इस पर भी तुम इससे इन्कार करो तो जो दुश्मन होकर दूर चला जावे तो उससे बढ़कर गुमराह कौन है?(५२) हम इनको अपनी निशानियाँ चौतरफ़ा दिखलावेंगे और उनकी जानों में भी। यहाँ तक कि इन पर जाहिर हो जायगा कि यह सच है। क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार हर वस्तु का साक्षी है?(५३) यह अपने परवरदिगार की मुलाक़ात से सन्देह में हैं खुदा हर वस्तु को घेरे हुए है।(५४) [रुकू ६ आयात १०]

---

४२ सूरे शूराय् ६२

मक्का में उतरी, इसमें ५३ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा-मीम (१) ऐन-सीन क़ाफ़।(२) (ऐ पैग़म्बर!) (जिस तरह यह सूरत तुम्हारे ऊपर उतारी जाती है) इसी तरह अल्लाह जो बड़ी हिकमतवाला

है, तुम्हारी तरफ़ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ़ जो तुमसे पहले हो चुके हैं वही (ईश्वरीय संदेश) भेजता रहता है।(३) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वही बड़ा आलीशान है।(४) दूर नहीं कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ पाकी से याद करने में लगे हैं। और जो लोग ज़मीन में हैं उनकी माफ़ी माँगा करते हैं। अल्लाह ही माफ़ करनेवाला मेहरबान है।(५) और जिन लोगों ने खुदा के सिवाय काम सँभालनेवाले ठहरा रखे हैं अल्लाह को याद है और तू उन पर कुछ तैनात नहीं।(६) और इसी तरह अरबी क़ुरान हमने उतारा ताकि तू मक्का के रहनेवालों को और जो लोग मक्का के आस-पास हैं उनको डरावे और क़यामत के दिन की मुसीबत से डरावे। इसमें कुछ शक नहीं कुछ लोग स्वर्ग में और कुछ लोग नरक में होंगे। (७) और खुदा चाहता तो लोगों का एक ही फ़िरक़ा बना देता लेकिन वह जिसको चाहे अपनी कृपा में ले और पापियों का कोई हामी और मददगार न होगा।(८) क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवाय (दूसरे) काम सँभालने वाले बना रखे हैं? सो अल्लाह ठीक काम बनानेवाला है और वही मुर्दों को जिलाता और हर चीज़ पर शक्तिमान है। (९) [रुकू १ आयात ९]

और जिन-जिन बातों में तुम लोग आपस में भेद रखते हो उसका फ़ैसला खुदा ही के हवाले है। (लोगों!) यही अल्लाह मेरा परवरदिगार है। मैं उसी पर भरोसा रखता और उसी की तरफ़ ध्यान करता हूँ।(१०) आसमान और ज़मीन का पैदा करनेवाला है। उसीने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाये और चारपायों के जोड़े।(इस तरह) तुमको ज़मीन पर फैलाता है, कोई चीज़ उस जैसी नहीं, और वह सुनता-देखता है।(११) आसमान-ज़मीन की कुञ्जियाँ उसी के पास हैं। जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ा देता है और (जिसकी चाहता है) नपी-तुली कर देता है। वह हर चीज़ से जानकार है।(१२) उसने तुम्हारे लिए दीन की वही राह ठहराई है, जिस (पर चलने) का उसने नूह

को हुक्म दिया था और (ऐ पैग़म्बर !) तेरी तरफ़ हमने जो हुक्म भेजा और जो हमने इब्राहीम, मूसा और ईसा को हुक्म दिया था कि (इसी) दीन को क़ायम रखो और इनमें फ़र्क़ न डालो। (ऐ पैग़म्बर !) तुम जिस (दीन) की तरफ़ मुशरिकों को बुलाते हो वह उन पर गिराँ गुज़रता है। अल्लाह जिसे चाहे अपनी तरफ़ चुन ले, और उसको अपनी तरफ़ राह दिखाता है, जो रुजू होता है।(१३) और उन्होंने समझ आये पीछे आपस की ज़िद के सबब से भेद डाला। (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक वक़्त मुक़र्रर तक का वादा पहले से न हुआ होता तो उनमें फ़ैसला कर दिया गया होता और जो लोग अगलों के बाद किताब के वारिस हुए वे उसकी तरफ़ से धोखे में हैं, (१४) तो (ऐ पैग़म्बर ! तू उसी की तरफ़ बुला और जैसा तुझसे फ़र्माया गया है (उस पर) क़ायम रह और इनकी ख़्वाहिशों पर न चल। और कह दो हर किताब पर जो ख़ुदा ने उतारी है, ईमान लाता हूँ और मुझे हुक्म मिला है कि तुममें इन्साफ़ करूँ। अल्लाह हमारा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है। हमारा किया हमको और तुम्हारा किया तुमको मिलेगा। हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हम सबको जमा करेगा और उसी की तरफ़ जाना है।(१५) और जब ख़ुदा को मान चुके तो जो लोग इसके बाद अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं तो उन के परवरदिगार के नज़दीक उनकी हुज्जत झूठी है और उनपर ग़ज़ब है और उनके लिए दुखदाई सज़ा है।(१६) अल्लाह जिसने किताबें और तराज़ू सच्ची उतारीं (ऐ पैग़म्बर!) तुम क्या जान सकते हो शायद क़यामत क़रीब हो।(१७) जिनको क़यामत का यक़ीन नहीं, वह तो उसके लिए जल्दी मचा रहे हैं और जो ईमानवाले हैं, वह उससे डर रहे हैं जानते हैं कि क़यामत सच है। सुनो जो लोग क़यामत में झगड़ते हैं वे भटककर दूर जा पड़े हैं।(१८) अल्लाह अपने सेवकों पर मेहरबान है जिसे चाहता है रोज़ी देता है और वह ज़ोरावर बली है।(१९) [रुकूअ २ आ. २०]

जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है हम उसकी खेती में उसके लिए बढ़ती देंगे और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसको कुछ

उसमें से देंगे। फिर आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नहीं।(२०) क्या इन लोगों के शरीक वे लोग हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसे दीन का रास्ता ठहरा दिया है जिसका ख़ुदा ने हुक्म नहीं दिया। और यक़ीनी वादा न हुआ होता तो इनमें फ़ैसला कर दिया गया होता और पापियों को दुखदाई सज़ा है।(२१) ऐ पैग़म्बर! तू (उस दिन) पापियों को देखेगा कि वे अपनी कमाई से डरते होंगे। वह बदला इन पर पड़नेवाला है और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वह जन्नत के बाग़ की क्यारियों में होंगे। जो उनको दरकार होगा उनके परवरदिगार के यहाँ होगा। यही तो बड़ी कृपा है।(२२) यह वह बदला है जिसकी ख़ुश-ख़बरी ख़ुदा अपने ईमानदार नेक काम करनेवाले सेवकों को देता है। (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई मज़दूरी नहीं चाहता। मगर रिश्ते नाते की मुहब्बत और जो शख़्स नेकी करेगा उसके लिए हम और ज़्यादा ख़ूबी पैदा कर देंगे, अल्लाह क्षमा करनेवाला क़द्र-दान है।(२३) क्या यह (लोग) कहते हैं कि इस शख़्स ने ख़ुदा पर झूठ बाँधा सो ख़ुदा अगर चाहे तो तेरे दिल पर मुहर लगाये। मगर अल्लाह अपनी बात से झूठ को मिटाता और सच को जमाता है और वह दिल की बात जानता है।(२४) वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और बुराइयाँ माफ़ करता और जैसे-जैसे कर्म तुम करते हो जानता है (२५) और वह ईमानवालों का जो नेक काम करते हैं दुआ क़बूल करता है और अपनी कृपा से उनको बढ़ती देता है और जो लोग इन्कार करनेवाले हैं उनके लिए सख़्त सज़ा है। (२६) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी ज़्यादा कर दे तो वह मुल्क में सरकशी करने लगें अगर वह अन्दाज़ से जितनी (रोज़ी) चाहता है उतारता है। वह अपने सेवकों का ख़बरदार देखनेवाला है।(२७) वही है जो लोगों के निराश हुए पीछे मेंह बरसाता है और अपनी कृपा को सब पर कर देता है और वह काम बनानेवाला और प्रशंसा के योग्य है।(२८) और उसी की निशानियों में से आसमान और ज़मीन का पैदा करना है और उन जानदारों

को जो उसने आसमान और ज़मीन में फैला रक्खे हैं। वह जब चाहे उनके जमा कर लेने पर शक्तिमान है।(२९) [रुकू ३ आयात १०]

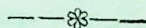
और तुम पर जो दुख पड़ता है सो तुम्हारे हाथों की कमाई का बदला है और ख़ुदा बहुत अपराधों से बराता है।(३०) तुम ज़मीन में (ख़ुदा को) हरा नहीं सकते और न ख़ुदा के सिवाय तुम्हारा कोई काम बनानेवाला है और न मददगार।(३१) और उसी की निशानियों में से जहाज़ हैं जो समुद्रों में पहाड़ों की तरह हैं।(३२) अगर ख़ुदा चाहे हवा को ठहरा दे तो जहाज़ समुद्र की सतह पर खड़े के खड़े रह जायँ। इसमें ठहरनेवालों और धन्यवाद करनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।(३३) क्या जहाज़वालों के कर्मों के बदले में जहाजों को तबाह कर दे।(३४) और बहुतेरे अपराधों को क्षमा करता है। और जो लोग हमारी आयतों में झगड़नेवाले हैं, जान लें कि उनको भागने की जगह नहीं है।(३५) सो जो कुछ तुमको दिया गया है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान है और जो ख़ुदा के यहाँ है ईमानदारों और जो अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं उनके लिए बढ़कर और पुख़ता है।(३६) और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेशर्मी की बातों से अलग रहते हैं और जब उनको ग़ुस्सा आ जाता है तब घबरा जाते हैं।(३७) और जिन्होंने परवरदिगार की आज्ञा मानी और नमाज़ पढ़ी और उनका काम आपस के मशविरों से होता है और हमने जो उनको दे रक्खा है उसमें से (ख़ुदा की राह पर) खर्च करते हैं।(३८) और जो ऐसे हैं कि उन पर ज़्यादती होती है वह बदला ले लेते हैं।(३९) और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, इस पर जो क्षमा कर दे और सुलह कर ले तो उसका पुण्य अल्लाह के जिम्मे है। वह ज़ुल्म करने को पसन्द नहीं करता।(४०) और जिस पर ज़ुल्म हुआ हो और वह उसके बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर कोई दोष नहीं।(४१) दोष उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते और व्यर्थ मुल्क में ज़्यादती करते हैं उन्हीं को दुखदाई सज़ा है।(४२) और जिसने संतोष किया और

(दूसरे की ख़ता को) क्षमा कर दिया तो यह बातें हिम्मत की हैं। (४३) [रुकू ४ आयात १४]

और जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया फिर उसे अल्लाह के सिवाय कोई सहायक नहीं और तू ज़ालिमों को देखेगा कि जब सज़ा को देख लेंगे तो कहेंगे कि भला (दुनिया में) फिर लौट चलने की भी कोई राह है।(४४) और तू इनको देखेगा कि नरक के सामने बदनामी के मारे हुए झुके हुए छिपी निगाहों को देखते होंगे और (उस वक़्त) ईमानवाले कहेंगे कि घाटे में वह हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने आपको और अपने घरवालों को तबाह किया। ज़ुल्म करने वाले हमेशा की सज़ा में रहेंगे।(४५) और ख़ुदा के सिवाय उनका कोई मददगार न होगा जो उनकी मदद करे और जिसे ख़ुदा ने गुमराह किया तो उसके लिए कोई राह नहीं।(४६) अपने परवरदिगार का कहा मान लो। उस दिन (क़यामत) के आने से पहिले जो ख़ुदा की ओर से टलने वाली नहीं। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई बचाव की जगह होगी और न इन्कार बन पड़ेगा।(४७) तो अगर यह लोग मुँह मोड़ें तो हमने तुमको इन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजा। तेरा ज़िम्मा पहुँचाना है और जब हम आदमी को अपनी कृपा चखाते हैं तो वह उससे ख़ुश होता है और लोगों को जो उनके कामों के बदले में दुख पहुँचता है तो इन्सान बड़ा ही भलाई भूलनेवाला है।(४८) आसमान और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है जो चाहे पैदा करे जिसे चाहे बेटियाँ दे और जिसे चाहे बेटा दे।(४९) या बेटे और बेटियाँ (मिलाकर) उनको दोनो तरह की औलाद दे और जिसको चाहे बाँझ करे, वह जानकार और शक्तिमान है।(५०) और किसी आदमी की ताक़त नहीं कि ख़ुदा से बात करे* मगर आकाशवाणी से

* मक्का के काफ़िर मुहम्मद साहब से कहते थे कि ख़ुदा तुम्हारे सामने आकर बातें क्यों नहीं करता। वह तो मूसा से ऐसे ही बातें करता था। इस पर यह आयत उतरी कि ख़ुदा किसी से उसके आमने-सामने आकर बातें नहीं करता।

या पर्दे के पीछे से या किसी फ़रिश्ते को उसके पास भेज दे और वह खुदा के हुक्म से जो मंज़ूर हो पहुँचा देता है। वह सबके ऊपर हिकमत वाला है।(५१) और (ऐ पैग़म्बर) इसी तरह हमने अपने हुक्म से तेरी तरफ़ एक फ़रिश्ता भेजा। तू न जानता था कि किताब क्या चीज़ और ईमान क्या चीज़ है। लेकिन हमने क़ुरान को रोशन बनाया और अपने सेवकों में से जिसे चाहे उसके ज़रिये से राह दिखावे और (ऐ पैग़म्बर) तू अलबत्ता सीधी राह दिखाता है।(५२) राह अल्लाह की है जो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों का मालिक है। सुनो जो अल्लाह तक कामों की पहुँच है।(५३) [रुकू ५ आयात १०]



४३ सूरे ज़ुखरुफ़ ६३

मक्का में उतरी, इसमें ८९ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा-मीम (१) ज़ाहिर किताब की क़सम।(२) हमने इसको अरबी में बनाया है ताकि तुम समझो। (३) और यह (क़ुरान) हमारे यहाँ असल किताब में बड़े पाये की हिकमत की है।(४) तो क्या इस वजह से कि तुम लोग हद से बाहर हो गये हो, हम बेतक़ल्लुफ़ होकर शिक्षा करना छोड़ देंगे।(५) और अगले लोगों में हमने बहुत-पैग़म्बर भेजे (६) और जो पैग़म्बर उनके पास आये उन्होंने हँसी ही उड़ाई।(७) फिर हमने उनको जो इन (मक्का के काफ़िरों में) कहीं ज़ोरावर थे मार डाला और अगले लोगों के क़िस्से चल पड़े।(८) (ऐ पैग़म्बर) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है। तो वह कहेंगे कि इनको ज़ोरावर बुद्धिमान ने पैदा किया है।(९) वही है जिसने ज़मीन को तुम लोगों के लिये फ़र्श बनाया है और तुम्हारे लिये उसमें राह निकाली ताकि तुम राह पाओ।(१०) और जिसने अटकल के

साथ आसमान से पानी बरसाया। फिर हमने उस (पानी) से मरे हुए शहर को जिला उठाया। इसी तरह तुम लोग भी निकाले जाओगे।(११) और जिसने सब चीज़ों के जोड़े बनाये और तुम्हारे लिये किश्तियाँ और चौपाये हैं जिन पर तुम सवार होते हो।(१२) कि उनकी पीठ पर बैठ जाओ फिर जब उन पर बैठ जाओ तो अपने परवरदिगार की भलाई याद करो और कहो कि वह पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे वश में किया है और हम उनको अधिकार में करने की सामर्थ न रखते थे।(१३) और हमको अपने परवरदिगार की ओर लौट आना है।(१४) और लोगों ने ख़ुदा के दिये उसके बन्दे को एक जुज़ (बेटा) क़रार दिया है। आदमी खुल्लमखुल्ला बड़ा ही कृतघ्नी है।(१५) [रुकू १ आयात १५]

क्या ख़ुदा ने अपनी सृष्टि में से (आप तो) बेटियाँ लीं और तुम (लोगों) को बेटे चुनकर दिये।(१६) और जब इन लोगों में से किसी को उस चीज़ के होने की ख़ुशख़बरी दी जाय (यानी बेटी की) जो ख़ुदा के लिए कहावत ठहराई है तो अन्दर ही अन्दर ताव खाकर उनका मुँह काला पड़ जाता है।(१७) क्या जो गहनों में पाला जावे और झगड़ते वक़्त बात न कह सके वह ख़ुदा की बेटी हो सकती है ? (१८) और इन लोगों ने फ़रिश्तों को जो रहमान (ख़ुदा) के बन्दे हैं औरतें ठहराया है। क्या जिस वक़्त ख़ुदा ने फ़रिश्तों को पैदा किया यह लोग मौजूद थे। इनका क़ौल लिखा जायगा और इनसे पूछा जायगा।(१९) और कहते हैं कि अगर रहमान (कृपालु) चाहता तो हम इनकी पूजा न करते। उन्हें इस बात की कुछ ख़बर नहीं, निरा अटकलें दौड़ाते हैं।(२०) या इनको हमने इसके पहले कोई किताब दी है कि यह उसे पकड़ते हैं।(२१) बल्कि कहते हैं कि हमने अपने बाप दादों को एक तरीक़े पर पाया और उन्हीं के क़दम ब क़दम हम भी ठीक राह चले जा रहे हैं।(२२) और (ऐ पैग़म्बर) इसी तरह हमने तुमसे पहिले जब कभी किसी गाँव में कोई (पैग़म्बर) डर सुनानेवाला भेजा

वहाँ के धनी लोगों ने यही कहा कि हमने अपने दादों को एक राह पर पाया और उन्हीं के क़दम ब क़दम चलते हैं।(२३) वह बोला कि जिस राह पर तुमने अपने बाप-दादों को पाया, अगर मैं उनसे बढ़ कर राह की सूझ (यानी दीन) लेकर तुम्हारे पास आया हूँ तो भी (तुम उसे न मानोगे)। वह बोले जो तुम लाये हो हम उसको नहीं मानते।(२४) आख़िरकार हमने उनसे बदला लिया तो देखो कि (पैग़म्बरों के झुठलानेवालों का कैसा परिणाम हुआ।(२५) [रुकू २ आयात १०]

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि जिनकी तुम पूजा करते हो मुझको उनसे कुछ सरोकार नहीं।(२६) मगर जिसने मुझको पैदा किया सो वही मुझको राह दिखायेगा।(२७) और यही बात अपनी औलाद में छोड़ गया शायद वह ध्यान दें।(२८) बल्कि हमने इनको और इनके बाप-दादों को (दुनिया) में बरतने दिया यहाँ तक कि इनके पास सच्चा दीन और खुला सुनानेवाला पैग़म्बर आया।(२९) और जब इनके पास सच्चा दीन आया तो कहने लगे यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते।(३०) और बोले कि दो बस्तियों (यानी मक्का और तायफ़) से किसी बड़े आदमी पर यह क़ुरान क्यों न उतरा।(३१) क्या यह लोग तेरे परवरदिगार की कृपा के बाँटनेवाले हैं सो इस ज़िन्दगी में इनकी रोज़ी इनमें हम बाँटते हैं और हमने (दुनियावी) दर्जों के एतबार से इनमें एक को एक पर बढ़ा रक्खा है ताकि इनमें एक को एक (अपना) आज्ञाकारी बनाये रहे और जो (माल-असबाब) यह लोग समेटे फिरते हैं तेरे परवरदिगार की कृपा (तो) इससे कहीं बढ़कर है।(३२) और अगर यह बात न होती कि सब मनुष्य एक ही तरीक़े के हो जायँगे तो जो ख़ुदा से इन्कारी हैं, हम उनके लिये उनके घरों की छतें और ज़ीने जिन पर चढ़ते हैं चाँदी के बना देते।(३३) और उनके घरों के दरवाज़े और तख़्त भी, जिन पर तकिया लगाये बैठे हैं, चाँदी के कर देते।(३४) और सोना भी देते और यह

सिर्फ़ इस जिन्दगी के फ़ायदे हैं और ऐ पैग़म्बर! आख़िरत तेरे परवरदिगार के यहाँ परहेज़गारों के लिये है।(३५) [रुकू ३ आयात १०]

और जो शख़्स (ख़ुदा) कृपालु की याद से बराता है, हम उस पर एक शैतान मुक़र्रर कर दिया करते हैं। और वह उसके साथ रहता है।(३६) और शैतान पापियों को राह से रोकता है और यह समझते हैं कि हम राह पर हैं।(३७) यहाँ तक कि जब हमारे सामने आता है तो कहता है कि अच्छा होता जो मुझमें और तुझमें पूर्व और पश्चिम की दूरी का फ़र्क़ हो जाये। तू बुरा साथी है।(३८) अब तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज यह बात भी तुम्हारे कुछ काम न आवेगी जबकि तुम और शैतान एक-साथ सज़ा में हो। (३९) तो (ऐ पैग़म्बर) क्या तुम बहरों को सुना सकते हो या अन्धों को और उनको जो प्रत्यक्ष गुमराही में हैं, राह दिखा सकते हो।(४०) फिर अगर हम तुझे (दुनिया से) उठा लें तो भी हमको इन काफ़िरों से बदला लेना है।(४१) या हमने जो उनसे वादा किया है तुझको दिखा देंगे। हम उन पर सामर्थ्यवान हैं।(४२) तो जो तुझे हुक्म हुआ है उसे तू मज़बूती से पकड़। बेशक तू सीधी राह पर है।(४३) यह तेरे और तेरी क़ौम के लिए शिक्षा है और आगे चलकर तुझसे पूछ ताछ होनी है।(४४) और (ऐ पैग़म्बर) तुझसे पहिले जो हमने पैग़म्बर भेजे उनसे पूछ। क्या हमने (ख़ुदा) कृपालु के सिवाय (दूसरे) पूजित ठहराये हैं कि उनकी पूजा की जावे।(४५) [रुकू ४ आयात १०]

और हमने मूसा को अपने चमत्कार देकर फ़िरऔन और उनके दरबारियों की तरफ़ भेजा। (मूसा ने) कहा मैं दुनिया के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ।(४६) जब मूसा हमारे चमत्कार लेकर उनके पास आया तो वह हँसने लगे।(४७) और हम जो चमत्कार उनको दिखाते थे वह दूसरे चमत्कार से (जो उनको दिखाया जा चुका था) बड़ा था और हमने उनको सज़ा में पकड़ा। शायद यह मान जावें।(४८) और कहने लगे ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने

परवरदिगार को पुकार, जैसा उसने तुझसे वादा कर रक्खा है। हम बेशक राह पर आवेंगे। (४६) फिर जब हमने उन पर से सज़ा उठा ली, वह अपने क़ौल तोड़ने लगे। (५०) और फ़िरऔन ने अपने लोगों में इस बात की मनादी करा दी कि लोगों! क्या मुल्क मिस्र हमारा नहीं और यह नहरें हमारे (शाही महल के) नीचे नहीं बह रही हैं, तो क्या तुम नहीं देखते। (५१) भला मैं इस शख़्स (मूसा) से जो एक ज़लील (आदमी) है बढ़कर नहीं हूँ। (५२) और वह साफ़ नहीं बोल सकता। (और मूसा हमसे बेहतर होता) फिर उसके लिए सोने के कंगन† (ख़ुदा के यहाँ से) क्यों नहीं आये या फ़रिश्ते उसके साथ जमा होकर क्यों नहीं उतरे। (५३) फ़िरऔन ने अपने लोगों को बेसमझ कर दिया—फिर उसी का कहा माना। बेशक यह बेहुक्म थे। (५४) फिर जब इन लोगों ने हमको ग़ुस्सा दिलाया हमने इनसे बदला लिया, फिर इन सबको डुबो दिया। (५५) फिर इनको गया-गुज़रा कर दिया और आनेवाली नस्लों के लिए कहावत बना दिया। (५६) [रुकू ५ आयात ११]

और (ऐ पैग़म्बर) जब मरियम के बेटे की मिसाल बयान की गई तो तेरी क़ौम के लोग उसको सुनकर एकदम से खिलखिला पड़े। (५७) और कहने लगे कि हमारे पूजित अच्छे हैं या ईसा। इन लोगों ने ईसा की मिसाल तेरे लिए सिर्फ़ झगड़ने के लिए सुनाई है। यह झगड़ालू क़ौम है। (५८) तो ईसा भी हमारे एक बन्दे थे। हमने उन पर भलाई की थी और इसराईल के बेटों के लिए एक नमूना बनाया था। (५६) और हम चाहते तो तुममें फ़रिश्ते कर देते कि वह ज़मीन में तुम्हारी जगह आबाद होते। (६०) और ईसा उस घड़ी (क़यामत) का एक निशान है उसमें शक न करो और मेरे कहे पर चलो। यही सीधी-सीधी राह है। (६१) और ऐसा न हो कि तुमको शैतान रोके कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६२) और जब ईसा चमत्कार लेकर आये

† उस समय सरदारों को सोने का कंगन पहनाते थे। इसीलिये फ़िरऔन ने कहा "मूसा, अगर नबी होते तो इनके हाथ में जड़ाऊ कंगन होता।"

उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे पास पक्की बातें लेकर आया हूँ और मतलब यह है कि तुम्हारी उन बातों को बयान करूँ जिनमें भेद डाल रहे हो। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।(६३) अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की पूजा करो यही सीधी राह है।(६४) तो उन्हीं में से (बहुत-से) लोग भेद डालने लगे, तो जो लोग सरकशी करते हैं क़यामत के दिन दुखदाई सज़ा के एतबार से उन पर सख्त अफ़सोस है।(६५) क्या यह लोग क़यामत ही की राह देख रहे हैं कि एकाएक इन पर आ जावे और इनको ख़बर भी न हो।(६६) जो लोग (आपस में) दोस्तियाँ रखते हैं उस दिन एक दूसरे के दुश्मन हो जायेंगे मगर परहेज़गार।(६७) [रुकू ६ आयात ११]

ऐ हमारे बन्दो! आज तुमको न किसी तरह का डर है और न तुम उदास होगे।(६८) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे।(६९) तुम और तुम्हारी बीबियाँ जन्नत में जा दाखिल हो ताकि तुम्हारी इज्ज़त की जावे।(७०) उन पर सोने की रकाबियों और प्यालों की दौड़ चलेगी और जिस चीज़ को (उनका) जी चाहे और नज़र में भली मालूम हो जन्नत में होगी और तुम हमेशा वहीं रहोगे।(७१) और यह जन्नत की वारिसी तुमको उनके बदले में जो तुम करते रहे हो मिली है।(७२) यहाँ तुम्हारे लिये बहुत मेवे होंगे जिनमें से तुम खाओगे।(७३) अलबत्ता पापी हमेशा नरक की सज़ा में रहेंगे।(७४) उनसे सज़ा हलकी न की जायगी और वह उसमें निराश रहेंगे।(७५) और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वही ज़ुल्म करते रहे।(७६) और पुकारेंगे ऐ मालिक! हमारा काम तमाम कर दे। वह कहेगा कि तुमको इसी में रहना है।(७७) हम तुम्हारे पास सच बात लेकर आये हैं लेकिन तुममें अक्सर सच से चिढ़ते हैं।(७८) क्या इन लोगों ने कोई बात ठान रक्खी है तो समझ रक्खें कि हमने भी ठान रक्खी है।(७९) या ख्याल करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे नहीं जानते और हमारे फ़रिश्ते इनके पास लिखते हैं, (८०)

(ऐ पैग़म्बर) कहो रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहिले (उसकी) पूजा करने को तैयार हूँ।(८१) जैसी-जैसी बातें बनाते हैं, उनसे आसमानों और ज़मीन और तख़्त का मालिक पाक है।(८२) तो (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों को बकने और खेल करने दे यहाँ तक कि जिस रोज़ का इनसे वादा किया जाता है (यानी क़यामत) इनके सामने आ जावे।(८३) और वही है कि आसमान में उसी की बन्दगी है और ज़मीन में भी उसी की बन्दगी है। और वह हिकमतवाला और सब चीज़ों का जाननेवाला है।(८४) जिसका राज्य आसमानों और ज़मीन और जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब पर है। वह मुबारिक़ है और उस घड़ी (क़यामत) की ख़बर उसी को है और तुम उसी की तरफ़ लौटकर जाओगे।(८५) और ख़ुदा के सिवाय जिन पूजितों को यह लोग पुकारते हैं वह सिफ़ारिश का अख़्त्यार नहीं रखते मगर जिसने सच्ची गवाही दी वे जानते थे।(८६) और (ऐ पैग़म्बर) अगर तू इनसे पूछे कि इनको किसने पैदा किया तो (म-ज़रूर) यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं।(८७) पैग़म्बर कहते रहे हैं कि ऐ परवरदिगार! ये लोग ईमान लानेवाले नहीं।(८८) तू इनसे मुँह मोड़ ले और सलाम कह, फिर आगे चलकर मालूम कर लेंगे।(८९) [रुकू ७ आयात २२]

---

४४ सूरे दुख़ान ६४

मक्का में उतरी, इसमें ५९ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा-मीम।(१) ज़ाहिर किताब की क़सम।(२) हमने मुबारिक़ रात (२७ वीं रात रमज़ान की और शब्बरात) में इसको उतारा—हमें डराना मंज़ूर था।(३) (दुनिया की) हर पुख़्ता बात उसी रात को फ़ैसल हुआ करती है।(४) हमारे ख़ास हुक्म से क्योंकि हम भेजनेवाले हैं।(५)

(ऐ पैग़म्बर) तेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। वह सुनता और जानता है।(६) आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ आसमान और ज़मीन में है उनका मालिक वही है, अगर तुमको यक़ीन हो।(७) उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही जिलाता और मारता है। (वही) तुम्हारे अगले बाप-दादों का परवरदिगार है।(८) कुछ नहीं वे धोखे में खेलते हैं।(६) सो उस दिन का इन्तिज़ार कर जिस दिन आसमान से धुआँ ज़ाहिर हो †।(१०) (और वह) सब लोगों पर छा जायगा। यह दुखदाई सज़ा है।(११) ऐ हमारे परवरदिगार हम पर से दुख को टाल हम ईमानदार हैं (१२) वह क्योंकर शिक्षा पकड़ें इनके पास पैग़म्बर खोलकर सुनानेवाला आ चुका।(१३) फिर इन्होंने उससे मुँह मोड़ा और कहा कि यह सिखाया हुआ दीवाना है।(१४) हम सज़ा को थोड़े दिनों के लिए हटा देंगे मगर तुम फिर वही करोगे।(१५) हम जिस दिन बड़ी पकड़ पकड़ेंगे, हम बदला ले लेंगे।(१६) और इनसे पहिले हम फ़िरऔन की क़ौम को आज़मा चुके हैं और इनके पास बड़े दर्जे के पैग़म्बर आये।(१७) (और उन्होंने आकर फ़िरऔन के लोगों से कहा) कि अल्लाह के बन्दों (इसराईल के बेटों को) मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे पास आया हूँ और अमानतदार हूँ। (१८) और यह कहा कि ख़ुदा से सिर न फेरो, मैं साफ़ दलील तुम्हारे सामने लाया हूँ।(१६) और इससे कि तुम मुझको पत्थरों से मारो और मैं तुम्हारे परवरदिगार की पनाह माँगता हूँ।(२०) और अगर तुमको मेरी बात का यक़ीन न हो तो मुझसे अलग हो जाओ।(२१) तब मूसा ने अपने परवरदिगार को पुकारा कि यह लोग अपराधी हैं। (२२) (ख़ुदा ने कहा कि) मेरे बन्दों (यानी इसराईल के बेटों) को रातोरात लेकर निकल जाओ, तुम लोगों का पीछा किया जायगा।(२३) और दरिया को ठहरा हुआ छोड़ जाना कि फ़िरऔनियों का सारा लश्कर डुबो दिया जायगा।(२४) यह लोग कितने बाग़ और नहरें छोड़

† अरब के निवासी सबसे बड़ी और बुरी आपत्ति को धुआँ कहते हैं।

गये।(२५) और खेत और उम्दा मकान।(२६) और आराम के सामान जिनमें मजे उड़ाया करते थे, छोड़ मरे।(२७) ऐसे ही हमने दूसरे लोगों को इसका वारिस बना दिया।(२८) तो उन पर न तो आसमान ही रोया और न ज़मीन ही रोई और न वह ढील ही दिये गये।(२९) [रुकू १ आयात २९]

और हमने इसराईल के बेटों को ज़िल्लत की सज़ा से बचा लिया (३०) वह सरकश हद से बाहर होगया था।(३१) और इसराईल के बेटों को हमने समझकर दुनिया के लोगों पर पसन्द कर लिया।(३२) और हमने उनको चमत्कार दिये जिनमें प्रत्यक्ष जाँच थी।(३३) यह कहते हैं।(३४) यह कुछ नहीं हमारा पहली ही दफ़ा का मरना है और हम दूबारा नहीं उठाये जायँगे।(३५) बस अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को ले आओ।(३६) (यह लोग बढ़कर हैं या तुब्बा (शाह यमन का ख़िताब) की क़ौम। और इनसे पहिले के लोग जिनको हमने मार डाला पापी थे।(३७) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो चीजें आसमान और ज़मीन में हैं खेल नहीं बनाया।(३८) हमने उनको ठीक काम पर बनाया मगर बहुधा लोग नहीं समझते। ३९) फ़ैसले का दिन (यानी क़यामत का दिन) इन सबका वक़्त मुक़र्रर है।(४०) उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के काम न आयेगा और न उन्हें मदद पहुँचेगी।(४१) मगर जिस पर ख़ुदा कृपा करे, वह बली दयालु है। (४२) [रुकू २ आयात १३]

सेहुँड़ (थूहड़) का पेड़ (४३) पापियों का खाना होगा।(४४) जैसे पिघला ताँबा खौलता है पेटों में खौलेगा।(४५) जैसे खौलता पानी।(४६) (हम फ़रिश्तों को) आज्ञा देंगे कि इसको पकड़ो और घसीटते हुए नरक के बीचोबीच ले जाओ।(४७) फिर सज़ा दो और इसके सिर पर खौलता हुआ पानी डालो।(४८) सज़ा चख तू बड़ा इज़्ज़तवाला सरदार है।(४९) यही है जिसकी निस्बत तुम शक करते थे।(५०) परहेज़गार चैन की जगह होंगे।(५१)

बाग़ और चश्मों में।(५२) रेशमी महीन और मोटी पोशाकें पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे।(५३) ऐसा ही होगा और बड़ी-बड़ी आँखोंवाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे।(५४) वहाँ मेवे ख़ातिर जमा से मँगवा लेंगे।(५५) पहली मौत के सिवाय वहाँ उनको मौत चखनी न पड़ेगी और ख़ुदा ने उन्हें नरक की सज़ा से बचाया।(५६) (ऐ पैग़म्बर) तेरे परवरदिगार की कृपा से यही बड़ी कामयाबी है।(५७) हमने इस (क़ुरान) को तेरी बोली में इस मतलब से सहल कर दिया है, शायद वे याद रक्खें।(५८) तो राह देख वे भी राह देखते हैं।(५९) [रुकू ३ आयात १७]

——:०:——

४५ सूरे जासियह ६५

मक्का में उतरी, इसमें ३७ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा-मीम।(१) (यह) ज़बरदस्त हिकमतवाले अल्लाह की उतारी हुई किताब है।(२) बेशक ईमानवालों के लिए आसमान और ज़मीन में बहुत निशानियाँ हैं।(३) और तुम्हारे पैदा करने में और जानवरों में जिनको (ज़मीन पर) बिखेरता है, उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं निशानियाँ हैं।(४) और रात दिन के आने-जाने में और रोज़ी जिसे ख़ुदा ने आसमान से उतारा। फिर उनके ज़रिये से ज़मीन को उसके मरे पीछे ज़िन्दा कर देता है। और हवाओं की तब्दीलियों में निशानियाँ हैं। समझनेवालों के लिए निशानियाँ हैं।(५) यह ख़ुदा की आयतें हैं जिन्हें हम तुमको ठीक पढ़कर सुनाते हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन-सी बात होगी जिसे सुनकर ईमान लायेंगे।(६) हरएक झूठे पापी के लिए अफ़सोस है।(७) ख़ुदा की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं, उनको सुनता है। फिर मारे घमण्ड के अड़ा रहता है गोया उसने इन (आयतों) को सुना ही नहीं। तो ऐसों को दुखदाई सज़ा

की खुशखबरी सुना दो।(८) और जब हमारी आयतों की कुछ भी खबर पाता है तो उनकी हँसी उड़ाता है। ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत की सज़ा है।(९) आगे इनके नरक है और जो कुछ कर्म कर गये और जिनको इन्होंने खुदा के सिवाय काम बनानेवाला बना रक्खा है इनके कुछ काम न आयेगा और उनकी बड़ी सज़ा होगी।(१०) यह हिदायत है और जो लोग अपने परवरदिगार की आयतों के इन्कार करनेवाले हुए उनको बड़ी दुखदाई सज़ा की मार है।(११) [रुकू १ आयात ११]

अल्लाह वह है जिसने नदी को तुम्हारे वश में कर दिया है ताकि खुदा की आज्ञा से उसमें जहाज़ चलें और तुम लोग उसकी कृपा से रोज़ी ढूँढ़ो और शायद तुम शुक्र करो।(१२) और जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है उसी ने अपनी कृपा से उन सबको तुम्हारे काम में लगा रक्खा है। इनमें खुदा की क़ुदरत उन लोगों के लिए जो फ़िक्र को काम में लाते हैं बहुतेरी निशानियाँ हैं।(१३) (ऐ पैग़म्बर) मुसलमानों से कहो कि जो लोग खुदा के दिनों की उम्मेद नहीं रखते उन्हें क्षमा करें ताकि अल्लाह लोगों को इनके किये का बदला दे§।(१४) जिसने नेक काम किये अपने लिए और जिसने बुराई की उस पर है, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटोगे।(१५) हमने इसराईल के बेटों को किताब और हुकूमत और पैग़म्बरी दी और उम्दा-उम्दा चीजें खाने को दीं और दुनिया जहान के लोगों पर उनको बड़प्पन दिया।(१६) और दीन की खुली-खुली बातें इन्हें बता दीं। फ़िर इल्म आ चुके पीछे आपस की ज़िद से जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं,क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार उनमें फ़ैसला कर देगा।(१७) फिर हमने तुझको उस काम के एक रास्ते पर रक्खा सो तू उसी पर चल और नादानों की ख्वाहिश पर मत चल।(१८) वह अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम न आवेगा

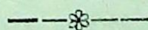
§ कहते हैं कि मक्का के एक काफ़िर ने हज़रत उमर को बुरा कहा था। उन्होंने उससे बदला लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी कि सज़ा देना अल्लाह पर छोड़ा जाय।

और अन्यायी एक दूसरे के दोस्त हैं और परहेज़गारों का अल्लाह साथी है।(१६) यह लोगों के लिए समझ की और राह की बातें हैं और जो लोग यक़ीन करते हैं उनके लिए हिदायत और कृपा है!(२०) वह जो बदी कमाते हैं क्या यह समझते हैं कि उन्हें मरने और जीने में ईमानदारों और भले काम करनेवालों के बराबर कर देंगे। यह बुरे दावे करते हैं। (२१) [रुकू २ आयात १०]

और अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को ठीक पैदा किया और मतलब यह है कि हर मनुष्य को उसके किये का बदला दिया जायगा, और लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया जायगा।(२२) (ऐ पैग़म्बर) भला देखो तो जिसने अपनी ख़्वाहिशों को अपना पूजित ठहराया और इल्म होते हुए भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानों पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया तो ख़ुदा के (गुमराह किये) पीछे उसको कौन हिदायत दे। क्या तुम नहीं सोचते।(२३) और कहते हैं बस हमारी तो यही दुनिया की ज़िन्दगी है। हम मरते और जीते हैं और हमें ज़माना (काल) मारता है और उनको कुछ ख़बर नहीं। निरी अटकलें दौड़ाते हैं।(२४) और जब इनको हमारी खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो बस यही हुज्जत करते हैं और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को ले आओ।(२५) कहो कि अल्लाह तुमको जिलाता है फिर तुम्हें मारता है। फिर क़यामत के दिन जिसमें कुछ संदेह नहीं वह तुमको इकट्ठा करेगा, अगर अक्सर लोग नहीं समझते।(२६) [रुकू ३ आयात ५]

और आसमानों और ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है और जिस दिन वह घड़ी (क़यामत) क़ायम होगी उस दिन झूठे ख़राब होंगे।(२७) और तू देखेगा कि हर गिरोह घुटने के बल बैठा होगा। हर गिरोह अपने (कर्म) लेखा के पास बुलाया जायगा जैसे तुम काम करते थे आज उनका बदला पाओ।(२८) यह हमारा दफ़्तर है तुम्हारे काम ठीक बतलाते हैं। जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे।(२६)

सो जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको उनका परवरदिगार अपनी कृपा में ले लेगा। यही प्रत्यक्ष कामयाबी है।(३०) और जो लोग इन्कार करते रहे क्या तुमको हमारी आयतें पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं मगर तुमने घमण्ड किया और तुम लोग पापी हो रहे थे।(३१) और जब कहा जाता था कि ख़ुदा का वादा सच्चा है और क़यामत में कुछ भी सन्देह नहीं तो कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या चीज़ है। हाँ हमको एक ख़याल-सा होता है, मगर हमको यक़ीन नहीं।(३२) और जैसे-जैसे कर्म यह लोग करते रहे उनकी ख़राबियाँ उन पर ज़ाहिर हो जायँगी और जिस सज़ा की हँसी उड़ाते रहे हैं वह उन्हें घेर लेगी।(३३) और कहा जायगा कि जिस तरह तुमने इस दिन के आने को भुलाये रक्खा था, आज हम भी भुला जायँगे और तुम्हारा ठिकाना नरक है और कोई मददगार नहीं।(३४) यह उसकी सज़ा है कि तुमने ख़ुदा की आयतों की हँसी उड़ाई और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुमको धोखे में डाला। आज न तो यह लोग नरक से निकाले जायँगे, और न इनको मौक़ा दिया जायगा कि राज़ी कर लें।(३५) पस अल्लाह की तारीफ़ है (जो) आसमानों का और ज़मीन का मालिक और दुनिया जहान का मालिक है।(३६) और आसमानों और ज़मीन में उसी की बड़ाई है और वही ज़ोरावर हिकमतवाला है।(३७) [रुकू ४ आयात ११]



छब्बीसवाँ पारा (हामीम)

४६ सूरे अहक़ाफ़ ६६

मक्का में उतरी, इसमें ३५ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हा मीम।(१) ज़बरदस्त हिकमतवाले अल्लाह ने किताब उतारी है।(२) हमने

आसमानों और ज़मीन को और जो आसमान और ज़मीन के बीच में है उनको किसी इरादे से और एक वक़्त खास के लिए पैदा किया है और काफ़िरों को जिस (क़यामत) से डराया जाता है उसकी परवाह नहीं करते।(३) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो खुदा के सिवाय जिन (पूजितों) को तुम पुकारते हो मुझको दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में क्या पैदा किया या आसमानों में उनका साझा है अगर तुम सच्चे हो तो इससे पहिले की कोई किताब या इल्म मेरे सामने पेश करो।(४) और उससे बढ़कर गुमराह कौन है जो खुदा के सिवाय ऐसे (पूजितों) को पुकारे जो क़यामत के दिन तक उसको जवाब न दे सकें और उनको उनकी दुआ की खबर नहीं।(५) और जब (क़यामत के दिन) लोग इकट्ठा किये जायेंगे तो यह (पूजित उल्टे) उनके वैरी हो जायेंगे और उनकी पूजा से इन्कार करेंगे।(६) और जब हमारी खुली खुली आयतें इनको पढ़कर सुनाई जाती हैं। जो लोग इन्कार करनेवाले हैं सच्चे के आये पीछे उसे कहते हैं कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है।(७) क्या यह कहते हैं कि इसको इसने (अपने दिल से) बना लिया है तू कह कि अगर मैंने इसको अपने दिल से बनाया होगा तो तुम खुदा के मुक़ाबिले में मेरा कुछ नहीं कर सकते। जैसी जैसी बातें तुम लोग बनाते हो वही उनको खूब जानता है मेरे और तुम्हारे बीच काफ़ी गवाह है और वही क्षमा करनेवाला कृपालु है।(८) (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि मैं पैग़म्बरों में कोई नया नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा। मेरी तरफ़ जो वही उतरती है मैं उसी पर चलता हूँ जो मुझको हुक्म आता है और मेरा काम खोलकर डर सुनाना है।()९ (ऐ पैग़म्बर इनसे) कहो कि देखो तो अगर यह (क़ुरान) खुदा की तरफ़ से हो और तुम इससे इन्कार कर बैठे और इसराईल के बेटों में एक गवाह ने इसी तरह की एक (किताब के उतरने) की गवाही दी और वह ईमान ले आया और तुम अकड़े ही रहे। बेशक अल्लाह अन्यायियों को हिदायत नहीं दिया करता।(१०) [रुकू १ आ. १०]

और काफ़िर मुसलमानों की बाबत कहते हैं कि अगर (दीन इस्लाम) बेहतर होता तो (यह सब आदमी) हमसे पहिले उस की तरफ़ न दौड़ पड़ते और जब क़ुरान के जरिये से इनको हिदायत न हुई तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है।(११) और इस (क़ुरान) से पहिले मूसा की किताब राह बताने वाली और दया है और यह किताब अरबी भाषा में उसको सच्चा करती है ताकि अन्यायी डराये जावें और नेकीवालों को खुशखबरी हो।(१२) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर जमे रहे तो न तो उन पर डर होगा और न वह उदास होंगे।(१३) यही बैकुण्ठवासी हैं कि उसमें हमेशा रहेंगे यह उनके कर्मों का फल है।(१४) और हमने आदमी को माता पिता के साथ भलाई करने की ताक़ीद की है कि कष्ट से उसकी माता ने उसको पेट में रक्खा और कष्ट से उसको जना और उसका पेट में रहना और उसके दूध का छूटना (कम से कम कहीं) तीस महीने में (जाकर तमाम होता है) यहाँ तक कि जब (आदमी) अपनी पूरी ताक़त को पहुँचता है यानी ४० बरस की उम्र हुई तो कहने लगा कि ऐ मेरे परवरदिगार मुझको शक्ति दे कि तू ने जो मुझ पर और मेरे मा बाप पर भलाई की हैं उनका धन्यवाद दें। और मैं ऐसे भले काम करूँ जिस से तू राज़ी हो और मेरी औलाद में नेकबख्ती पैदा कर। मैंने तेरी तरफ़ ध्यान दिया और मैं हुक्म उठानेवालों में हूँ। (१५) यही लोग बैकुण्ठवाले हैं हम इनके भले कामों को क़बूल करते और इनके अपराधों को बरा जाते हैं। ऐसा ही सच्चा वादा इनसे किया गया था।(१६) और जिसने अपने मा बाप से कहा कि मैं तुमसे नाखुश हूँ क्या तुम मुझे वादा देते हो कि मैं क़ब्र से ज़िन्दा निकाला जाऊँ गा (हालाँ कि) मुझसे पहिले कितने गरोह गुज़र गये और किसी को मरकर जीते न देखा और वे दोनों (माता पिता) खुदा से दुहाई देते हैं कि तेरा नाश जाय। ईमान ला बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है फिर कहता है कि यह तो अगलों के निरे ढकोसले हैं।(१७) यही

वह लोग हैं जिन पर जिन्नों की और आदमियों की मिली हुई संगतें जो इनसे पहिले हो गुज़री हैं उनमें यह भी सज़ा के वादे के हक़दार ठहरे। बेशक यह लोग टोटे में हैं। (१८) हर किसी के लिए कर्म के अनुसार दर्जे हैं और उनके कामों का उन्हें पूरा फल मिलेगा और उन पर ज़ुल्म न होगा। (१९) और जब काफ़िर नरक के सामने लाये जायेंगे (तो इनसे कहा जायगा) तुमने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में अच्छी चीज़ें बर्बाद कीं और उनसे फ़ायदा उठा चुके ज़मीन में तुम्हारे बेफ़ायदा अकड़ने और बेहुक्मी करने के सबब आज तुम्हें ज़िल्लत (ख्वारी) की सज़ा बदले में मिलेगी। (२०) [रुकू २ आयात १०]

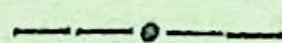
और तू आद के भाई (हूद) को याद कर जब इन्होंने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़ में (जो मुल्क यमन में एक मैदान है) डराया और उन (हूद) से आगे और पीछे बहुत डराने वाले (पैग़म्बर) गुज़र चुके (और हूद ने अपनी क़ौम से कहा) कि ख़ुदा के सिवाय किसी की पूजा न करो मुझको तुम्हारी निस्बत बड़े दिन की सज़ा का डर है। (२१) वह कहने लगे कि क्या तू हमको हमारे पूजितों से फेरने आया है अगर तू सच्चा है तो जिस (सज़ा) का वादा हमसे करता है उसको हम पर लेआ। (२२) (इसकी) खबर तो अल्लाह ही को है और मुझ को तो जो (पैग़ाम) देकर भेजा गया है वह तुमको पहुँचाये देता हूँ मगर मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग बेवक़ूफ़ी करते हो। (२३) फिर (उन लोगों ने) जब उस सज़ा को देखा कि एक बादल है जो उनके मैदानों की तरफ़ को उमड़ता चला आ रहा है तो कहने लगे कि यह तो एक बादल है† (और)

† आद एक उन्नत जाति थी जो कुमार्ग पर चलने लगी थी। उसके नेता मक्का में मेंह (वर्षा) माँगने आये। उनको तीन प्रकार के बादलों में चुनना था। उन्होंने काले बादल को स्वीकार किया। वह उनके साथ चला। वह समझते थे कि इस बादल से पानी बरसेगा और उन को बड़ा लाभ होगा परन्तु वास्तव में वह ईश्वर का कोप था। उससे वह बिलकुल नष्ट हो गये।

हम पर बरसेगा बल्कि यह वही है जिसके लिये तुम जल्दी मचा रहे थे आन्धी है जिसमें दुखदाई सज़ा है।(२४) यह अपने परवरदिगार के हुक्म से हर चीज़ को नष्ट-भ्रष्ट कर देगी चुनांचे यह लोग ऐसे तबाह हो गये कि इनके घरों के सिवाय और कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी। पापियों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं।(२५) और हमने उनको वह ताक़त दी थी जो तुम (मक्का वालों) को नहीं दी और हमने उनको कान और आँखें और दिल दिये थे लेकिन उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आये थे इसलिये कि अल्लाह की आयतों से इन्कारी थे और जिसकी हँसी उड़ाते थे उसी ने उन्हें घेर लिया।(२६) [रुकू ३ आयात ६]

और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियाँ नष्ट भ्रष्ट कर डालीं और हमने फेर-फेर कर आयतें सुनाईं शायद वे ध्यान दें।(२७) तो ख़ुदा के सिवाय जिन चीज़ों को उन्होंने नज़दीकी के लिये अपना पूजित बना रक्खा था उन्होंने उनकी क्यों न मदद की बल्कि इनकी नज़र से छिप गये और यह झूठ था जो बाँधते थे।(२८) और जब हम चन्द जिन्नों को तुम्हारी तरफ़ ले आये कि वह क़ुरान सुनें फिर जब वह हाज़िर हुये तो बोले कि चुप रहो फिर जब (क़ुरान का पढ़ना) तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ़ लौट गये कि उनको डरायें।(२९) कहने लगे ऐ हमारी क़ौम हम एक किताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतरी है। अगली किताबों को सही बताती है और सीधी राह दिखाती है।(३०) ऐ हमारी क़ौम (यह पैग़म्बर मुहम्मद) जो ख़ुदा की तरफ़ से मनादी करता है इसकी बात मानो और ख़ुदा पर ईमान लाओ ताकि ख़ुदा तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुखदाई सज़ा से तुमको बचावे।(३१) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह ज़मीन में थका न सकेगा और ख़ुदा के सिवाय कोई मददगार न होगा। यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं।(३२) क्या उन्होंने न देखा कि जिस ख़ुदा ने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया

और उनके पैदा करने में उसको थकान न हुई। वह मुर्दों के जिला उठाने में शक्तिमान है। वह तो हर चीज़ पर शक्ति रखता है।(३३) और जिस दिन काफ़िर नरक के सामने लाये जायेंगे (उनसे पूछा जायगा कि) क्या यह ठीक नहीं। वह कहेंगे हमको अपने परवरदिगार की क़सम सच है तो (ख़ुदा) आज्ञा देगा कि अपने इन्कारी के बदले में सज़ा चक्खो।(३४) तो जिस तरह हिम्मती पैग़म्बरों ने संतोष किया तुम भी संतोष करो और इनके लिये जल्दी न मचा जिस दिन वादा की बात (क़यामत) को देखेंगे। ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी दुनिया में रहे थे (ख़ुदा के हुक्मों का) पहुँचाना है। अब वही जो बेहुक्म हैं मारे जावेंगे।(३५)[रुकू४ आ.६]



४७ सूरे मुहम्मद ९५

मदीना में उतरी, इसमें ३८ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मिहरबान है। जिन लोगों ने न माना और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोका। ख़ुदा ने उनके काम गये गुज़रे कर दिये।(१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और (क़ुरान) जो मुहम्मद पर उतरा है, उसे मान लिया और वह सच है उनके परवरदिगार की तरफ़ से ख़ुदा ने उनके पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत दुरुस्त कर दी।(२) यह इसलिये है कि काफ़िर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने परवरदिगार के ठीक रास्ते पर चले। यों अल्लाह लोगों के लिये उनके हाल बयान फ़र्माता है।(३) तो जब (लड़ाई से) काफ़िरों से तुम्हारी मुटभेड़ हो तो गर्दनें काटो यहाँ तक कि जब ख़ूब अच्छी तरह उनका ज़ोर तोड़ लो तो मुश्कें कस लो। फिर पीछे या तो भलाई रख कर छोड़ दो या बदला लेकर यहाँ तक कि (दुश्मन) लड़ाई के हथियार रख दें। ऐसा ही हुक्म है और ख़ुदा

चाहता तो उनसे बदला ले लेता लेकिन यह इसलिए हुआ कि तुम में से एक को एक से आज़माये और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये उनके कामों को ख़ुदा अकारथ नहीं होने देगा।(४) उन्हें राह देगा और उनका हाल दुरुस्त करेगा।(५) और उनको बैकुण्ठ में दाख़िल करेगा जिसका हाल उसने बता रक्खा है।(६) ऐ ईमानवालों अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे पाँव जमाये रक्खेगा।(७) और जो इन्कारी हुये उनके पाँव उखड़ जायेंगे और उनका सारा किया धरा ख़ुदा अकारथ कर देगा।(८) यह इसलिये कि ख़ुदा ने जो उतारा उसको उन्होंने पसन्द न किया फिर ख़ुदा ने उनके कर्म वृथा कर दिये।(९) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखते कि अल्लाह ने उनको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और काफ़िरों के लिये ऐसा ही होता रहता है।(१०) क्योंकि अल्लाह ईमानवालों का मददगार है और काफ़िरों का कोई मददगार नहीं।(११) [रुकू १ आयात ११]

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये अल्लाह (बैकुण्ठ के) बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और काफ़िर दुनिया में फ़ायदा उठाते और खाते हैं जैसे चारपाये खाते हैं और इनका ठिकाना नरक है।(१२) और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारी बस्ती (मक्का) जिसने तुमको निकाल छोड़ा। कितनी बस्तियाँ इससे भी बलबूतों में बढ़ी चढ़ी थीं हमने उनको हलाक कर मारा और कोई भी उनकी मदद को खड़ा न हुआ।(१३) तो क्या जो लोग अपने परवरदिगार के खुले रास्ते पर हैं वह उनकी तरह हैं जिनके (बुरे कर्म) उनको भले कर दिखाए गये हैं और वह अपनी चाहों पर चलते हैं।(१४) जिस बैकुण्ठ का वादा परहेज़गारों से किया जाता है उसकी कैफ़ियत यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जिसमें बू नहीं और दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को बहुत ही मज़ेदार मालूम होंगी। और साफ़ शहद की नहरें हैं और उनके लिए वहाँ हर तरह के मेवे होंगे और उनके परवरदिगार

की तरफ़ से क्षमा। क्या (ऐसे बैकुण्ठ के रहनेवाले) उन जैसे (हो सकते हैं) जो हमेशा आग में होंगे और उनको खौलता पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आँतों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। (१५) (और ऐ पैग़म्बर) बाज़ इनमें से ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं मगर जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो जिन लोगों को इल्म मिला* है उनसे पूछते हैं कि इसने अभी यह क्या कहा था यही लोग हैं जिनके दिलोंपर अल्लाह ने मुहर कर दी और अपनी ख़्वाहिशों पर चलते हैं।(१६) और जो लोग सीधी राह पर आये हैं उससे उनकी सूझ बढ़ी है और उससे उनको बचकर चलना मिला है।(१७) तो क्या यह लोग क़यामत ही की राह देखते हैं कि एकदम से इन पर आपड़े उसकी निशानियाँ तो आही चुकी हैं फिर जब क़यामत इनके सामने आ जायगी तो उस वक्त इनका समझना इनको क्या मुफ़ीद होगा।(१८) तो जान लो कि अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं और अपने पापों का क्षमा माँग और ईमान वाले मर्दों और औरतों के लिये (भी माँगते रहो)। और तुम लोगों का चलना, फिरना, ठहरना अल्लाह को मालूम है। (१९) [रुकू २ आयात ८]

और ईमानदार कहते थे कि (जिहाद की निस्बत) कोई सूरत क्यों न उतरी। फिर जब एक सूरत साफ़ मानी उतरी और उसमें लड़ाई का ज़िक्र आया तो जिनके दिलों में रोग है तू ने उनको देखा कि वह तेरी तरफ़ ऐसे ताकते रह गये जैसे वह ताकता है जिसे मौत की बेहोशी हो। तो ख़राबी है उनका हुक्म मानना और भली बात कहना अच्छा है।(२०) फिर जब काम की ताक़ीद हो और यह लोग ख़ुदा से सच्चे रहें तो उनका भला है।(२१) और तुमसे कुछ दूर नहीं कि अगर शासक बैठे तो मुल्क में फ़साद करने लगोगे और अपने रिश्ते-नातों को तोड़ने लगोगे।(२२) यही मनुष्य हैं जिन पर ख़ुदा ने लानत की

* यह हाल उन मुनाफ़िक़ों का है जो मुहम्मद साहब की बातें सुन [illegible] उनकी हँसी उड़ाते थे और मुसलमानों से कहते कि जो बात हमसे उन्हों[illegible] कही है वह क्या है। वह तो हमारी समझ में ही नहीं आई।

है और इनको बहरा और इनको आँखों का अन्धा कर दिया।(२३) क्या यह लोग क़ुरान में ध्यान नहीं करते या दिलों पर ताले लगे हैं।(२४) जिन लोगों को सीधा रास्ता साफ़ तौर पर मालूम हो और फिर भी वह अपने उल्टे पाँव फिर गये तो शैतान ने उनके लिये बात बनाई है और उन्हें मुहलत दी है।(२५) और यह इसलिये कि जो लोग (क़ुरान को) जो ख़ुदा ने उतारा है नापसन्द करते हैं यह कहा करते हैं कि बाज़ बातों में हम तुम्हारी ही सलाह पर चलेंगे† और अल्लाह उनकी छिपी बातों को जानता है।(२६) फिर कैसी गति होगी जब फ़रिश्ते उनकी जानें निकालेंगे और उनकी पीठों और मुँहों पर मारते जाते होंगे।(२७) यह इसलिए कि जो चीज़ ख़ुदा को बुरी लगती है, यह उसी पर चले और उसकी ख़ुशी न चाही तो ख़ुदा ने उनके कर्म मेट दिये।(२८) [रुकू ३ आयात ६]

क्या वह लोग जिनके दिलों में रोग है, ख़ुदा उनकी दिली अदावतों को कभी ज़ाहिर न करेगा।(२९) और (ऐ पैग़म्बर) हम चाहते तो तुझे उन लोगों को दिखा देते कि तू उनको उनकी सूरत से पहिचान लेता और आगे तू उनकी बात के तरीक़े से उनको पहचान लेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है।(३०) और तुमको हम आज़मायेंगे ताकि तुम में से जो जिहाद करने वाले और बरदाश्त करने वाले हैं उनको हम मालूम कर लें और तुम्हारी ख़बरों को आज़मायेंगे।(३१) जिन लोगों ने साफ़ राह ज़ाहिर हुए पीछे इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोका और पैग़म्बर की दुश्मनी की। यह लोग अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे बल्कि वह उनके किये को अकारथ कर देगा।(३२) ऐ मुसलमानों अल्लाह के हुक्म पर चलो और अपने कर्मों को वृथा न करो।(३३) जो काफ़िर हुए और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोका फिर कुफ़्र ही की हालत में मर

† यहूदियों ने मक्का के काफ़िरों से वादा किया था कि यदि मुसलमानों और उनमें युद्ध हुआ तो वह मक्का वालों का साथ देंगे। उनकी यह बात ख़ुदा ने मुहम्मद साहब पर ज़ाहिर कर दी।

गये ख़ुदा उनको कदापि क्षमा न करेगा।(३४) सो तुम बोदे न बनो कि सुलह की तरफ़ पुकारने लगो और तुम्हारी ही जीत होगी और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे कर्मों को न मेटेगा।(३५) दुनिया की ज़िन्दगी खेल-तमाशा है और अगर (ख़ुदा पर) ईमान लाओ और परहेज़गारी करते रहो तो तुमको तुम्हारे फल देगा और तुम्हारे माल तुमसे न माँगेगा। (३६) अगर वह तुमसे तुम्हारे माल माँगे और तुमको तंग करे तो तुम कंजूसी करोगे और इससे तुम्हारी दिली अदावतें ज़ाहिर हो जावेंगी।(३७) ऐ लोगों जब अल्लाह की राह में ख़र्च करने को बुलाये जाते हो तो तुममें से कोई-कोई कंजूसी करता है अपने ही लिए करता है। अल्लाह तो दाता है और तुम मुहताज हो और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो (ख़ुदा) तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को ला बिठायेगा और वह तुम जैसे न होंगे।(३८) [रुकू ४ आयात १०]

—०—

४८ सूरे फ़तह १११

मदीना में उतरी, इसमें २९ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।† हमने तुझे खुली विजय दी।(१) ताकि ख़ुदा तेरे अगले पिछले पाप क्षमा करे और तुझ पर अपनी भलाइयाँ पूरी करे और तुझको सीधी राह दिखावे।(२) और तुझे भारी मदद दे।(३) उसने मुसलमानों के दिलों में सन्तुष्टता डाली ताकि उनके (पहले) ईमान के साथ और ईमान

† विजय का इस स्थान पर क्या अर्थ है इसमें विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं। कुछ कहते हैं इसका अर्थ है हुदैबिया की सन्धि, कुछ कहते हैं इसका अर्थ है मक्का की विजय और कुछ कहते हैं इस विजय से उस वचन की ओर संकेत किया गया है जो "बैअतुर्रिज़वान" के नाम से प्रसिद्ध है। उसका वर्णन आगे आता है।

ज़ियादह हो और आसमान और ज़मीन के लश्कर अल्लाह के हैं और अल्लाह जाननेवाला हिकमतवाला है।(४) ताकि ख़ुदा ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को (वैकुण्ठ) के बाग़ों में लेजा दाखिल करे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह हमेशा उनमें रहेंगे और वह उन पर से उनके पापों को उतार देगा और ख़ुदा के पास वह बड़ी कामयाबी है।(५) और ताकि मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को सज़ा दे जो अल्लाह के बारे में बुरे ख़याल रखते हैं अब यही मुसीबत के चक्कर में आ गये और अल्लाह का ग़ुस्सा उन पर हुआ और उसने इनको फटकार दिया और उनके लिये नरक तैयार किया और वह बुरी जगह है।(६) और आसमान और ज़मीन के लश्कर अल्लाह के हैं और अल्लाह बली और हिकमतवाला है।(७) (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमको हाल बतानेवाला और ख़ुशी और डर सुनाने वाला बना के भेजा है।(८) ताकि तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ ख़ुदा की मदद करो और उसका अदब रक्खो और सुबह शाम उसकी माला फेरते रहो।(९) (ऐ पैग़म्बर) जो लोग तुमसे हाथ मिलाते हैं उनके† हाथों पर ख़ुदा का हाथ है फिर जिसने (क़ौल) तोड़ा उसने अपने ही लिये तोड़ा और जिसने उस (क़ौल) को पूरा किया जिसका ख़ुदा ने वादा किया था वह उसे बड़ा फल देगा।(१०) [रुकू १ आयात १०]

(ऐ पैग़म्बर) देहाती लोग जो पीछे रह गये हैं (और इस हुदैबिया के सफ़र में शरीक नहीं हुए) तुमसे कहेंगे कि हम अपने माल और बाल-बच्चों में लगे रहे तू हमारे अपराध ख़ुदा से क्षमा

† मुहम्मद साहब ने हज़रत उस्मान को मक्का के क़ुरैश की ओर अपना दूत बना कर भेजा था। कुछ लोगों को यह समाचार मिला कि उनको काफ़िरों ने मार डाला है। इस पर मुसलमानों से मुहम्मद साहब ने एक वृक्ष के नीचे यह दृढ़ वचन लिया कि वे उस्मान के ख़ून का बदला अवश्य लेंगे। इसी को 'वैअतुर्रिज़वान' कहते हैं।

करा। (यह लोग) अपनी ज़बान से ऐसी बातें कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं। (कहो कि) अगर ख़ुदा तुमको नुक़सान पहुँचाना चाहे या फ़ायदा पहुँचाना चाहे तो कौन है जो ख़ुदा के सामने तुम्हारा कुछ भी कर सके बल्कि जो कुछ भी करते हो ख़ुदा उससे जानकार है।(११) बल्कि तुमने ऐसा समझा था कि पैग़म्बर और मुसलमान अपने घर वापिस आने ही के नहीं और यह तुम्हारे दिलों में चुभ गई थी और तुम बुरे ख़याल करने लगे थे और तुम लोग आप बर्बाद हुये। (१२) और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये तो अपने इन्कार करनेवालों के लिये दहकती आग तैयार कर रक्खी है।(१३) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है। (१४) जब तुम (ख़ैबर की) लूटों के माल लेने को जाने लगोगे तो जो लोग (हुदैबिया के सफ़र से) पीछे रह गये थे कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो। इनका मतलब यह है कि ख़ुदा के कहे हुए को बदल दें। (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कह दो कि तुम हमारे साथ न चलने पाओगे अल्लाह ने पहिले ही से ऐसा कह दिया है। यह सुन कर कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम हमसे डाह रखते हो बल्कि यह लोग कम समझते हैं।(१५) (ऐ पैग़म्बर) देहाती जो (हुदैबिया के सफ़र से) पीछे रहे इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिऐ बुलाये जावोगे। तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जायें। तो अगर ख़ुदा की आज्ञा मानोगे तो अल्लाह तुम को भला फल देगा और अगर तुमने सिर फेरा जैसे तुम पहले (हुदैबिया के सफ़र में) सिर फेर चुके हो तो तुमको दुखदाई सज़ा देगा।(१६) अन्धे पर सख़्ती नहीं और न लंगड़े पर सख़्ती है और न बीमार पर सख़्ती है और जो अल्लाह और उनके पैग़म्बर का हुक्म मानेगा वह उनको बाग़ों में दाख़िल करेगा। जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जो फिरेगा वह उसको दुखदाई सज़ा देगा। (१७) [रुकू २ आयात ७]

(ऐ पैग़म्बर) जब मुसलमान (बबूल के) दरख़्त के नीचे तुझसे हाथ मिलाने लगे अल्लाह उनसे खुश हुआ और उसने उनके दिली विश्वास को जान लिया और उनको तसल्ली दी और उसके बदले में उनको नज़दीकी फ़तह दी।(१८) और बहुत सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह बली हिकमतवाला है।(१९) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी लूटों के देने का वादा किया था। कि तुम उसे लोगे फिर यह (ख़ैबर की लूट) तुमको जल्द दी और (हुदैबिया की सुलह की वजह से अरब के) लोगों पर ज़ुल्म करने से तुमको रोका ताकि यह मुसलमानों के लिए निशानी हो और वह तुमको सीधी राह पर ले चले।(२०) और दूसरा वादा लूट का है जो तुम्हारे क़ाबू में नहीं आया। वह ख़ुदा के हाथ है और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिवान है।(२१) और अगर काफ़िर तुमसे लड़ते तो ज़रूर भाग जाते फिर कोई हिमायती और मददगार न पाते।(२२) अल्लाह की आदत है जो चली आती है और तू अल्लाह की आदतों में तब्दीली न पावेगा।(२३) और वही (ख़ुदा) है जिसने (मक्का में तुमको काफ़िरों पर फ़तह दी पीछे) उनके हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे रोक दिया और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देखता है।(२४) (यह मक्का वाले) वह हैं, जिन्होंने इन्कार किया और तुमको अदबवाली मसजिद से रोका और क़ुरबानी को बन्द रक्खा कि अपनी जगह न पहुँचे और अगर कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम नहीं जानते और तुम उनको कुचल डालते तो अनजाने पाप उनकी तरफ़ से तुम्हें पहुँच जाता तो ख़ुदा जिसे चाहे अपनी कृपा में दाख़िल करे। अगर वे लोग एक तरफ़ हो जाते तो हम काफ़िरों को दुखदाई सज़ा देते।(२५) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में नादानी की ज़िद (हठ) ठान ली तो अल्लाह ने पैग़म्बर और मुसलमानों को तसल्ली दी और उनको परहेज़गारी पर जमाये रक्खा और वह उसके योग्य और अधिकारी थे और अल्लाह हर चीज़ से जानकार है।(२६) [रुकू ३ आयात ९]

अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई

कि अल्लाह ने चाहा तो तुम अदब वाली मसजिद में अमन के साथ ज़रूर दाखिल होगे। तुम अपना सिर मुड़वाओगे और बाल कतराओगे। तुमको डर न होगा और वह जानता था जो तुम नहीं जानते थे। फिर इसके अलावा उसने एक क़रीब की फ़तह दी।(२७) वह है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे तमाम दीनों पर जीत दे और अल्लाह गवाह काफ़ी है।(२८) मुहम्मद ख़ुदा के भेजे हुए हैं और जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों के हक़ में बड़े सख्त हैं आपस में रहमदिल हैं। तू उन्हें रुकू और सिजदा करते देखेगा। ख़ुदा की कृपा और ख़ुशी चाहते हैं उनकी पहचान यह है कि सिजदे के निशान उनके माथों पर हैं। यही गुण उनके तौरात में और इन्जील में लिखे हैं जैसे खेती। उसने अपना कल्ला निकाला फिर उसे मज़बूत किया फिर मोटी हुई आखिरकार अपनी नालपर सीधी खड़ी हो गई और किसानों को ख़ुश करने लगी ताकि काफ़िरों को उनसे ईर्षा हो। जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे ख़ुदा ने क्षमा का और बड़े फल का वादा किया है।(२९) [रुकू ४ आयात ३]

—— ० ——

४९ सूरे हुजरात १०६

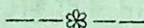
मदीना में उतरी, इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। मुसलमानों अल्लाह और उसके पैग़म्बर से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो अल्लाह सुनता-जानता है।(१) मुसलमानों अपनी आवाज़ों को पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँचा न होने दो और न उसके साथ बहुत ज़ोर से बात करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया धरा सब (अकारथ) वृथा हो जावे और तुम्हें ख़बर भी न हो।(२) जो लोग ख़ुदा के पैग़म्बर के सामने आवाज़ें नीची कर लिया

करते हैं जिनके दिलों को ख़ुदा ने परहेज़गारी के लिये जाँच लिया है। उनके लिये क्षमा और बड़ा फल है।(३) जो लोग तुमको हुजूरों (कमरों) के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अक्सर बेसमझ हैं।(४) और अगर यह सब्र करते यहाँ तक कि तू उनकी तरफ़ निकल आता उनके लिए बहुत अच्छा होता और अल्लाह बख़्शने वाला मिहर्बान है।(५) मुसलमानों! अगर कोई पापी तुम्हारे पास कोई ख़बर लावे तो अच्छी तरह से जाँच लिया करो ताकि ऐसा न हो कि तुम नादानी से किसी क़ौम पर जा पड़ो फिर अपने किये से हैरान हो।(६) और जाने रहो कि तुममें ख़ुदा का पैग़म्बर है अगर वह बहुत सी बातों में तुम्हारा कहना माना करे तो तुम्हीं पर मुश्किल जा पड़े। मगर ख़ुदा ने तुमको ईमान की मुहब्बत देदी है और उसको तुम्हारे दिलों में अच्छा कर दिखाया है और कुफ्र और घमण्ड और बेहुक्मी से तुमको नफ़रत दिला दी है। यही मनुष्य हैं जो नेक चलन हैं।(७) अल्लाह की कृपा और एहसान से और अल्लाह जानकार हिकमत वाला है।(८) और अगर मुसलमानों के दो फ़िर्क़े आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मिलाप करा दो फिर अगर उनमें का एक दूसरे पर ज़ियादती करे तो ज़ियादती करनेवाले से लड़ो यहाँ तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ ध्यान दे फिर जब ध्यान दे तो उनमें बराबरी के साथ मिलाप करा दो और न्याय करो। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है।(९) मुसलमान आपस में भाई हैं तुम अपने भाइयों में मेल मिलाप रक्खो और ख़ुदा से डरो। शायद तुम पर दया की जावे।(१०) [रुकू १ आयात १०]

मुसलमानो मर्द मर्दों पर न हँसें अजब नहीं कि वह उनसे भले हैं और न औरतें औरतों पर अजब नहीं कि वह उनसे भली हों और आपस में एक दूसरे को ताने न दो और न एक दूसरे का नाम धरो ईमान लाये पीछे बुरी आदत का नाम ही बुरा है और जो न माने तो वही अन्यायी हैं।(११) मुसलमानों! बहुत अटकलें न बाँधा करो क्योंकि कोई कोई अटकल पाप है और किसी का भेद न टटोलो और

पीठ पीछे कोई किसी को बुरा भला न कहे। क्या तुममें से अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करता है। पस इससे नफ़रत करो और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला मिहर्बान है।(१२) लोगों! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी जातें और बिरादरियाँ ठहराईं ताकि एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के नज़दीक तुममें वही ज़ियादह बड़ा है जो तुममें बड़ा परहेज़गार है। अल्लाह जानने वाला खबरदार है।(१३) (अरब के) देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये (ऐ पैग़म्बरों इनसे) कह दो कि तुम ईमान नहीं लाये। हाँ कहो कि हम ने मान लिया और ईमान का तो † अब तक तुम्हारे दिलों में गुज़र भी नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर की आज्ञा पर चलोगे तो वह तुम्हारे कामों का बदला कुछ कम न करेगा। अल्लाह क्षमा करने वाला मिहर्बान है।(१४) मुसलमान वह हैं जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये फिर शक नहीं किया और अल्लाह की राह में अपनी जानों और मालों से कोशिश की यही सच्चे हैं।(१५) (ऐ पैग़म्बर इन लोगों से) कहो कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी जताते हो। हालाँकि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज़ से जानकार है।(१६) (ऐ पैग़म्बर यह लोग) तुम पर अपने इस्लाम लाने का एहसान रखते हैं। तू कह कि मुझ पर अपने इस्लाम का एहसान न रक्खो बल्कि अल्लाह का एहसान तुम्हारे ऊपर है कि उसने तुमको ईमान की राह दिखाई बशर्ते कि तुम सच्चे हो (१७) अल्लाह आसमानों और ज़मीन के भेद को जानता है और तुम लोग जैसे-जैसे काम कर रहे हो अल्लाह उनको देख रहा है।(१८) [रुकू २ आ. ८]



† यानी तुम इस्लाम की कुछ ही शिक्षा मानते हो। इससे तुम्हारा ईमान लाना नहीं सिद्ध होता।

५० सूरे क़ाफ़ ३४

मक्का में उतरी, इसमें ४४ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। क़ाफ़—क़ुरान बुज़ुर्ग की क़सम।(१) बल्कि इन काफ़िरों को अचम्भा हुआ कि इन्हीं में का एक डर सुनानेवाला इनके पास (पैग़म्बर बनकर) आया। तो काफ़िर कहने लगे कि यह तो अद्भुत बात है।(२) क्या जब हम मर जावेंगे और मिट्टी हो जायेंगे तो (फिर उठा खड़े किये जायेंगे) यह फिर आना बहुत दूर है। मुर्दों के जिन टुकड़ों को मिट्टी कम करती है हमको मालूम है और हमारे पास याद दिलाने वाली किताब है।(३) बल्कि इन लोगों ने सच्ची बात पहुँचने पर उसको झुठलाया तो वह ऐसी बात में उलझे पड़े हैं (४) क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आसमान की तरफ़ नहीं देखा कि हमने उसको जैसे बनाया और उसको सजाया और उसमें कहीं दराज़ नहीं।(५) और ज़मीन को हमने फैलाया और उसके अन्दर भारी बोझिल पहाड़ डाल दिये और सब तरह की ख़ुशनुमा चीज़ें उसमें उगाईं।(६) हर ध्यान देने वाले बन्दे के लिए याद दिलाने को और सुलझाने को हैं।(७) और हमने आसमान से बरकत का पानी उतारा और उस (पानी) के ज़रिये से बाग़ और खेती का नाज उगाया।(८) और लम्बी लम्बी खजूरें जिनके गुच्छे ख़ूब गुथे हुए होते हैं।(९) और बन्दों को रोज़ी देने के लिये हमने मेह के ज़रिये से मुर्दा बस्ती को जिलाया इसी तरह निकल खड़े होना है।(१०) इनसे पहले नूह की क़ौम ने ख़न्दकवालों ने और समूद ने झुठलाया था।(११) और आद ने और फ़िरऔन ने और लूत ने।(१२) बनवासियों ने तुब्बा के लोगों ने सभी ने (अपने) पैग़म्बर को झुठलाया था तो हमारा वादा पूरा हुआ।(१३) क्या हम पहली बार पैदा करके थक गये हैं बल्कि उन्हें फिर पैदा होने में शक है।(१४) [रुकू १ आयात १४]

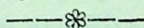
और हमने आदमी को पैदा किया और हम उसके दिली

खयालों को जानते हैं और हम धड़कती रगसे उसके ज़ियादह नज़दीक हैं। (१५) जब दो लेने वाले दाहिने और बायें बैठे हुए लेते जाते हैं†। (१६) जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं।(१७) और मौत की बेहोशी जरूर आकर रहेगी यही तो वह है जिससे तू भागता था।(१८) और नरसिंहा (सूर) फूँका जायगा यही वह दिन होगा जिससे डराया जाता है।(१९) और हर मनुष्य जो आया उसके पास एक हाज़िर हाँकने वाला और एक गवाह होगा।(२०) तू इससे ग़ाफ़िल रहा अब हमने तेरे पर्दे को तुझ पर से हटा दिया तो आज तेरी निगाह तेज़ है। (२१) और उसका साथी बोला जो कुछ मेरे पास था (कर्मलेखा) यह मौजूद है।(२२) ऐ दोनों फ़रिश्तों हर काफ़िर दुश्मन को नरक में डाल दो।(२३) नेकी से रोकने वाले, हद से बढ़ने वाले और शक पैदा कराने वाले।(२४) जिसने अल्लाह के साथ दूसरे पूजित ठहराये उन्हें सख्त सज़ा में डाल दो।(२५) उनका साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ मेरे परवरदिगार मैंने इसको सरकश नहीं बनाया बल्कि यह राह से दूर भूला हुआ था (२६) अल्लाह कहेगा मेरे पास झगड़ा न कर मैं तेरे पास पहिले ही सज़ा का डर पहुँचा चुका था।(२७) मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती और मैं बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। (२८) [रुकू २ आयात १४]

उस दिन नरक में पूछेंगे कि तू भर चुका। वह कहेगा क्या कुछ और भी है।(२९) और बैकुण्ठ परहेज़गारों के पास लाया जायगा दूर नहीं।(३०) यह है जिसका वादा तुमको हरेक रुजू लाने वाले और याद रखने वाले को मिला था।(३१) जो शख्स बेदेखे रहमान से डरता रहा और ध्यान देकर हाज़िर हुआ।(३२) (क्षेम कुशल के

† हर आदमी के साथ दो फ़रिश्ते रहते हैं। आदमी जो काम करता है या जो बात कहता है ये दोनों उसको लिखते जाते हैं। इस प्रकार हर एक का किया और कहा उसके सामने लाया जायगा।

साथ इस बैकुण्ठ) में दाखिल हो यही हमेशा रहने का दिन है।(३३) बैकुण्ठ में इन लोगों को जो चाहेंगे मिलेगा और हमारे पास और भी ज़ियादह है।(३४) और इन (मक्का के काफ़िरों) से पहिले हमने कितने गिरोह मार डाले कि बल बूते में कहीं बढ़कर थे। उन्होंने तमाम शहरों को छान मारा कि कहीं भागने का ठिकाना भी है।(३५) जो दिल वाला है या कान लगाकर दिल से सुनता है उसके लिए इन बातों में शिक्षा है।(३६) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है ६ दिन में बनाया और हम नहीं थके।(३७) तो (ऐ पैग़म्बर) जैसी-जैसी बातें (यह इन्कारी) कहते हैं, उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने और डूबने के पहिले अपने परवरदिगार की प्रशंसा के साथ दिल से याद करो।(३८) और रात में उसकी पाकी से याद करो और नमाज़ों के बाद।(३९) और सुन रक्खो कि जिस दिन पुकारने वाला पास की जगह से आवाज़ देगा कि उठो§।(४०) जिस दिन चीख़ने को सुन लेंगे वह दिन निकलने का होगा।(४१) हम ही जिलाते और मारते हैं और हमारी तरफ़ फिर आना है।(४२) जिस दिन मुर्दों से ज़मीन फट जायगी वे दौड़ेंगे। यह जमा कर लेना हमको सहल है।(४३) यह लोग जो कहते हैं हम जानते हैं और तू इन पर जबरदस्ती करने वाला नहीं। सो तू क़ुरान से उसको समझा जो हमारी सज़ा से डरता है।(४४) [रुकू ३ आयात १६]



५१ सूरे ज़ारियात । ६७

मक्का में उतरी, इसमें ६० आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। उड़ाकर बखेरने

§ हज़रत इस्राफ़ील क़यामत के दिन इस ज़ोर से सूर फूंकेंगे कि हर आदमी अपनी जगह यही समझेगा कि सूर उसके सर ही पर फूँका गया है।

† इन आयतों में हवा और बादल की क़सम खाई गई है। कुछ लोग

वालों की क़सम † ।(१) फिर बोझ उठाने वालों की क़सम ।(२) फिर नर्मी से चलने वालों की क़सम ।(३) फिर हुक्म से बाँटनेवालियों की क़सम ।(४) बेशक जो वादा तुमको मिला सच है । (५) और बेशक इन्साफ़ होने वाला है (६) आसमान की क़सम जिसमें रहते हैं ।(७) कि तुम लोग बे ठिकाने की बात में हो । ८) जो फेरा गया वही उससे फिर जाता है ।(९) अटकल के तुक्के चलाने वालों का नाश जाय ।(१०) जो ग़फ़लत में भूले हुए हैं ।(११) तुझ से पूछते हैं कि इन्साफ़ का दिन कब होगा ।(१२) जब यह लोग आग पर सेंके जायँगे ।(१३) कि अपनी शरारत के मज़े चक्खो यही तो है जिसकी जल्दी मचा रहे थे । (१४) परहेज़गार (बैकुण्ठ के) बाग़ों और चश्मों में होंगे । (१५) जो ख़ुदा ने दिया उसे पाया । यह लोग इससे पहिले भले काम करने वाले थे !(१६) रात को बहुत कम सोते थे । (१७) और सुबह के वक़्त क्षमा माँगा करते थे ।(१८) और उनके मालों में जो माँगे या न माँगे उसका हिस्सा था !(१९) और यक़ीन लाने वालों के लिए ज़मीन में निशानियाँ हैं ।(२०) और ख़ुद तुम में (भी) तो क्या तुम्हें नहीं सूझ पड़ता ।(२१) और तुम्हारी रोज़ी और जो तुमसे वादा किया जाता है आसमान में है ।(२२) आसमान और ज़मीन के परवरदिगार की क़सम यह (क़ुरान) सच है जैसा कि तुम बोलते हो । (२३) [रुकू १ आयात २३]

(ऐ पैग़म्बर) इब्राहीम के इज़्ज़तदार मेहमानों की बात तुझको पहुँचती है या नहीं । (२४) जब उसके पास आये तो सलाम किया । इब्राहीम ने भी सलाम किया (और कहा) तुम ऊपरी लोग हो ।(२५) फिर अपने घर को दौड़ा और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया ।(२६) फिर उनके सामने रक्खा और पूछा क्या तुम नहीं खाते ।(२७) फिर (इब्राहीम) उनसे जी में डरा और उन्होंने कहा मत डर और उनको एक योग्य पुत्र (इसहाक़) की ख़ुशख़बरी दी ।(२८)

---

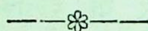
† कहते हैं इनसे फ़रिश्ते मुराद हैं ।

यह सुन कर इब्राहीम की बीवी बोलती हुई आगे आ खड़ी हुई और अपना मुँह पीट लिया और कहने लगी कि (अव्वल तो) बुढ़िया और (दूसरे) बाँझ जनेगी।(२९) (फ़रिश्ते) बोले तेरे परवरदिगार ने ऐसा ही कहा है वह हिक्मतवाला ख़बरदार है।(३०)।

सत्ताईसवाँ पारा (क़ालफ़मा ख़त्बुकुम)

(इब्राहीम ने फ़रिश्तों से) पूछा कि ऐ भेजे हुओं फिर तुम्हारा मतलब क्या है।(३१) वे बोले कि हम अपराधी मनुष्यों की तरफ़ भेजे गये हैं।(३२) कि उनपर खंजड़ के पत्थर बरसावें।(३३) कि यह खंजड़ तेरे परवरदिगार के यहाँ उन लोगों के लिये नाम पड़ गये हैं जो हद से बढ़ गये हैं।(३४) ग़रज़ (अन्त यों हुआ कि) उस बस्ती में जितने ईमानवाले लोग थे, उनको तो हमने (चुपके से) निकाल दिया (३५) (फर हमने वहाँ एक ही मुसलमान का घर (ख़ान्दान लूत) पाया।(३६) और हमने उसमें उन लोगों के लिए जो दुखदाई सज़ा से डरते हैं निशानी बाक़ी रक्खी।(३७) और मूसा के हाल में निशान है जब हमने उसको प्रत्यक्ष निशानी देकर फ़िरऔन की तरफ़ भेजा, (३८) फिर उसने अपने बलबूते में (आकर) मुँह मोड़ा और (मूसा की बाबत) कहा कि यह जादूगर या दीवाना है, (३९) फिर हमने उसको और उसके लश्करों को (सज़ा में) पकड़ा फिर उनको दरिया में डाल दिया और वह मलामती था।(४०) और क़ौम आद में भी निशानी है जब हमने उनपर मनहूस आँधी चलाई।(४१) जिस चीज़ पर से गुज़रती वह उसको (चूरा) किये बग़ैर न छोड़ती।(४२) और क़ौम समूद में भी निशान है जब उनसे कहा गया कि एक वक़्त ख़ास तक बर्त लो।(४३) फिर अपने परवरदिगार के हुक्म से शरारत करने लगे तो उनको कड़क ने पकड़ा और वह देखते रह गये।(४४) फिर उठ न सके और न बदला ले सके।(४५) और (इनसे) पहिल नूह की क़ौम थी वह बेहुक्म थ।(४६) [रुकूर आ.२३]

और हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ्य वाले हैं।(४७) और हमने ज़मीन को बिछाया सो हम क्या खूब बिछानेवाले हैं।(४८) और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए शायद तुम ध्यान दो।(४९) सो अल्लाह की तरफ़ भागो मैं उसकी तरफ़ से तुमको साफ़ तौर पर डर सुनाता हूँ।(५०) और खुदा के साथ कोई दूसरा पूजित न ठहराओ। मैं उसकी तरफ़ से तुमको साफ़ तौर पर डराता हूँ। (५१) इसी तरह पर अगलों के पास जो कोई पैग़म्बर आया उन्होंने (उसको) जादूगर या दीवाना ही बताया।(५२) क्या यह लोग एक दूसरे को वसीयत करते आये हैं। नहीं बल्कि यह लोग सरकश हैं।(५३) सो तू उनकी तरफ़ ध्यान न दे। तुझपर उलाहना न होगा।(५४) और समझते रहो कि समझाना ईमानवालों को फ़ायदा देता है।(५५) और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें।(५६) मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि मुझे खाना खिलावें।(५७) अल्लाह खुद बड़ी रोज़ी देनेवाला ताक़त देनेवाला बली है।(५८) सो उन पापियों का यही डौल है जैसे डौल पड़ा उनके साथियों का सो चाहिए कि जल्दी न करें। (५९) सो काफ़िरों पर उनके उस रोज़ के एतबार से जिसका उनसे वादा किया जाता है अफ़सोस है (६०) [रुकू ३ आ. १४]



५२ सूरे तूर ७६

मक्का में उतरी, इसमें ४९ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। तूर की क़सम।(१) और लिखी किताब की।(२) कड़े पन्नों में।(३) और बैतुल मामूर (फ़रिश्तों का आसमानी काबा) की।(४) और ऊँची छत (आसमान) की। (५) और उमड़ते हुए समुद्र की। (६) बेशक तेरे परवरदिगार की सज़ा होने को है।(७) किसी को ताक़त नहीं कि

उसको टाल सके।(८) जिस दिन आसमान लहरें मारने लगे।(९) और
पहाड़ चलने लगेंगे।(१०) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी
है।((११) जो बातें बनाते खेलते हैं।(१२) जिस दिन नरक की आग
की तरफ़ धक्के दे देकर लेजाये जायँगे।(१३) यही वह नरक है
जिसे तुम झुठलाते थे।(१४) तो क्या यह नज़रबन्दी है या तुमको
सूझ नहीं पड़ता।(१५) इसमें घुसो संतोष करो या न करो तुम्हारे
लिए समान है। और जैसे कर्म तुम करते थे तुमको इन्हीं का बदला
दिया जायगा।(१६) परहेज़गार (बैकुण्ठ के) बाग़ों और नियामतों
में होंगे।(१७) अपने परवरदिगार की दी हुई (नियामतों के मज़े
उड़ा रहे होंगे और उनके परवरदिगार ने उनको नरक की सज़ा से बचा
लिया।(१८) खाओ पिओ रुचि से अपने कामों का बदला है.(१९)
तख़्तों पर जो बराबर बिछाए गए हैं तकिये लगा लगाकर बैठे हैं
और हमने बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें उनको ब्याह दी हैं।(२०)
और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान में उनके पीछे
चली उनकी औलाद को हम उनसे मिला देंगे और उनके कर्मों से कुछ
भी न घटायेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फँसा है। (२१) और
जिस मेवे और मांस को उनका जी चाहेगा हम उनको देवेंगे।(२२)
वह आपस में वहाँ (शराब के) प्यालों की छीनाझपटी करेंगे उसमें
न बकवाद लगेगी और न कोई अपराध होगा।(२३) और लड़के
उनके पास आयेंगे जायेंगे गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं।(२४) और
एक दूसरे की तरफ़ ध्यान देकर आपस में बातें करेंगे।(२५) कहेंगे
कि हम पहले अपने घरों में डरा करते थे।(२६) सो ख़ुदा ने हम
पर कृपा की और हमको लू (नरक) की सज़ा से बचा लिया।(२७)
पहिले हम उसे पुकारते थे वह भलाई करने वाला और दयालु है।(२८)
[रुकू १ आयात २८]

तो (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों को शिक्षा दो कि तू परवरदिगार

† यानी हर एक मनुष्य अपने कर्म अनुसार या तो सुख में मस्त होगा या दुख झेल रहा होगा। कोई किसी और के कर्मों का फल नहीं बटा सकेगा।

की कृपा से जादूगर और दीवाना नहीं (२६) क्या काफ़िर कहते हैं कि शायर है। हम उसकी बाबत ज़माने की गर्दिश की राह देख रहे हैं।(३०) तू कह कि तुम राह देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूँ।(३१) क्या इनकी अक़्लें इनको ऐसा सिखाती हैं या यह लोग शरीर हैं।(३२) या कहते हैं कि इसने (क़ुरान) अपने आप बना लिया है बल्कि वह ईमान नहीं लाते।(३३) सो अगर सच्चे हैं तो इसी तरह की कोई बात ले आवें।(३४) क्या वे आप ही आप बन गये हैं या वही बनाने वाले हैं।(३५) क्या इन्होंने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया है नहीं बल्कि यक़ीन नहीं लाते (३६) क्या तेरे परवरदिगार के ख़ज़ाने उनके पास हैं या वह हाकिम हैं।(३७) या इनके पास कोई सीढ़ी है कि उस पर (चढ़कर आसमान की बातें) सुन आया करते हैं सो अगर इनमें से कोई सुन आया हो तो वह प्रत्यक्ष सनद पेश करे।(३८) क्या ख़ुदा के लिए बेटियाँ और तुम लोगों के लिये बेटे हैं।(३९) क्या तू इनसे पहुँचाने की कुछ मज़दूरी माँगता है यह बोझ से दबे जाते हैं।(४०) क्या इनके पास गुप्त भेद जानने की विद्या है वे लिख रखते हैं।(४१) या इनका इरादा कुछ धोखा देने का है तो (यह काफ़िर आप ही धोखे में हैं।(४२) या ख़ुदा के सिवाय इनका कोई पूजित है तो अल्लाह इनके शिर्क से पाक है।(४३) और अगर कोई आसमानी टुकड़ा गिरता हुआ देखें। कहने लगते हैं कि यह तो जमा हुआ बादल है।† (४४) तो (पैग़म्बर) इनको रहने दो कि वह उस दिन का इन्तज़ार करें जब कि इनको (बिजली की) कड़क पकड़ेगी।(४५) जिस दिन उनका फ़रेब उनके कुछ काम न आवेगा और न इनको मदद मिलेगी।(४६) और ज़ालिमों को क़यामत की सज़ा के सिवाय (दुनिया में और भी) सज़ा है मगर इनमें से बहुतों को

† कहते हैं कि काफ़िर मुहम्मद साहब से कहते थे कि अगर तुम वास्तव में ईश्वर के भेजे हुये नबी हो तो आकाश का एक टुकड़ा हमारे ऊपर गिरा दो जिससे हम नष्ट हो जावें। इस पर यह आयत उतरी।

मालूम नहीं।(४७) और तू अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तज़ार में रह कि हमारी आँखों के सामने है। और जिस वक़्त (सोकर) उठे अपने परवरदिगार की ख़ूबियों की पाकी बोल।(४८) और कुछ रात गये भी उसकी याद किया करो और तारों के अस्त हुये पीछे भी।(४९) [रुकू २ आ. २१]

——:०:——

५३ सूरे नज्म २३

मक्का में उतरी, इसमें ६२ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। तारे (नक्षत्र) की क़सम जब यह टूटता है।(१) तुम्हारा मित्र (मुहम्मद) बहका नहीं और न बेराह चला।(२) और वह अपनी चाह से नहीं बातें बनाता। (३) यह तो हुक्म है जो उसे भेजा जाता है।(४) बड़े बलशाली ने उसे सिखलाया है।(५) जो ज़ोरावर है। फिर सीधा बैठा।(६) और वह आसमान के ऊँचे किनारे पर था।(७) फिर वह नज़दीक हुआ और क़रीब आगया। (८) फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फ़र्क़ रह गया।(९) उस वक़्त ख़ुदा ने फिर अपने बन्दे (मुहम्मद) पर हुक्म भेजा। जो भेजा।(१०) झूठ नहीं कहा दिल ने जो देखा।(११) अब क्या तुम झगड़ते हो उसीसे इस पर जो उसने देखा।(१२) हालाँकि उसने उसको दूसरी बार देखा।(१३) अन्तिम हद की बेरी के पास।(१४) उस (बेरी) के पास बैकुण्ठ रहने की जगह।(१५) जब छा रहा था उस बेरी पर जो छा रहा था।(१६) निगाह न बहकी न हद से बढ़ी।(१७) बेशक उसने अपने परवरदिगार की निशानियों में से बड़ी निशानी देखी।(१८) (मुशरिकों) भला तुमने लात और उज्ज़ा (मूर्तियों के नाम)।(१९) और वह जो तीसरी (देवी) मनात हैं।(२०) क्या तुम लोगों के लिए बेटे और उस (ख़ुदा) के लिए बेटियाँ।(२१) अगर ऐसा हो तो यह बड़ी बेइन्साफ़ी की बात है।(२२) यह तो निरे नाम ही हैं जो तुमने और

तुम्हारे बाप दादों ने अपनी तरफ़ से रख लिये हैं खुदा ने तो इनकी कोई सनद नहीं उतारी। यह लोग तो अटकल और दिली ख्वाहिशों पर चलते हैं और इनके परवरदिगार की तरफ़ से इनके पास हिदायत भी आ चुकी है। २३) कहीं मनुष्य को मनमानी मुराद भी मिला है।(२४) सो आखिरत और दुनिया अल्लाह ही के क़ाबू में है (२५) [रुकू १ आयात २५]

और बहुत फ़रिश्ते आसमानों में हैं उनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आती। मगर जब खुदा किसी के बारे में सिफ़ारिश कराना चाहे इजाज़त दे और (फ़रिश्तों की सिफ़ारिश को) पसन्द फ़र्मावे।(२६) जिन लोगों को आखिरत का यक़ीन नहीं है वही तो फ़रिश्तों के नाम औरतों जैसे रखते हैं।(२७) और उनको इसकी कुछ खबर नहीं निरी अटकल पर चलते हैं और ठीक बात में अटकल कुछ काम नहीं आती।(२८) तो जो मनुष्य हमारी याद से मुँह फेरे और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवाय कुछ न चाहे। सो तू उस पर ध्यान न कर।(२९) यहाँ तक ही उनकी समझ पहुँची है तेरा परवरदिगार खूब जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन सीधी राह पर है।(३०) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है ताकि उन लोगों को जिन्होंने बुरे कर्म किये उनके किये का बदला दे और जिन्होंने अच्छे कम किये हैं उनको अच्छे का बदला दे।(३१) जो बड़े पापों और बेशर्मी के कामों से बचते रहते हैं मगर छोटे पाप उनसे हो जाते हैं तो तेरा परवरदिगार बड़ा क्षमा करने वाला है। वह तुमको खूब जानता है। जब उसने तुमको मिट्टी से बनाया था और जब तुम अपनी माओं के गर्भ में बच्चे थे सो अपनी सफ़ाई न जताओ। परहेज़गारों को वही खूब जानता है।(३२) [रुकू २ आ.७]

(ऐ पैग़म्बर) भला तूने मनुष्य को देखा जिसने मुँह फेरा (३३) और थोड़ा माल देकर सख्त हो गया† ।(३४) क्या उसके

---

† कहते हैं कि एक दिन वलीद बिन (सुपुत्र) मुग़ीरा मुहम्मद साहब के पीछे-पीछे चला ताकि उनकी बातें सुने। एक दूसरे काफ़िर ने यह देखकर

पास गुप्त बात जानने की विद्या है कि वह देखन लगा है।(३५) क्या उसको खबर नहीं जो कुछ मूसा के सहीफ़ों में लिखा है।(३६) और इब्राहीम के (सहीफ़ों में) जो वफ़ादार था।(३७) कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाता।(३८) और यह कि मनुष्य का उतना ही मिलेगा जितना उसने कमाया है।(३९) और यह कि उसकी कमाई आगे चलकर देखी जायगी।(४०) फिर उसको पूरा बदला दिया जायगा।(४१) और यह कि ख़ुदा तक पहुँचना है।(४२) और यह कि वही हँसाता और रुलाता है।(४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है।(४४) और यह कि उसने स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया।(४५) वीर्य से जब टपकाया गया।(४६) और यह कि दुबारा (जिला) उठाना उसके ज़िम्मे है।(४७) और यह कि वही मालदार और धनवान करता है।(४८) और यह कि वही शेरा (एक तारे का नाम) का मालिक है।(४९) और यह कि उसीने आद की (जाति) के अगलों को मार डाला था।(५०) और समूद को भी फिर बाक़ी न छोड़ा।(५१) और पहले नूह की जाति को, इसमें सन्देह नहीं कि यह स्वयं ही बड़े अत्याचारी और बड़े उपद्रवी थे (मार डाला) (५२) और उल्टा बस्तियों को (जिनमें लूत की जाति रहती थी) दे पटका।(५३) फिर उन पर जो तबाही आई सो आई।(५४) (ए आदमी) तू अपने पालनकर्ता के कौन कौन पदार्थों में संदेह किया करेगा।(५५) यह अगले डरानेवालों में से एक डरानेवाला है।(५६) नज़दीक आनेवाली समीप आ पहुँची है।(५७) अल्लाह के सिवाय किसी की सामर्थ्य नहीं कि इसको दूर कर सके।(५८) तो क्या तुम इस बात से

उससे कहा, "क्या तुमने अपने बाप दादों को बुरा जाना जो इनके पीछे चल पड़े।" उसने कहा, "ख़ुदा के डर से ऐसा कर रहा हूँ!" उसने कहा "तुम इतना धन मुझे दे दो तो तुम्हारे पाप कट कर मुझ पर आ जायेंगे। मैं तुम्हारे पापों को उठा लूंगा।" उसने यह बात मान ली परन्तु केवल थोड़ा ही दिया बाक़ी न दिया। इस पर यह आयत उतरी।

आश्चर्य करते हो।(५९) और हँसते हो और रोते नहीं।(६०) और तुम भूल में हो (६१) पस ख़ुदा को सिर झुकाओ और पूजो। (६२) [रुकू ३ आयात ३०] [★ सिजदा १२]

——:०:——

५४ सूरे क़मर ३७

मक्का में उतरी, इसमें ५५ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। क़यामत की घड़ी पास आ लगी और चाँद फट गया।(१) अगर यह कोई और निशानी भी देखें तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह जादू चला आता है।(२) और इन लोगों ने (पैग़म्बर को) झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले। मगर हर काम नियत क़ौल पर होता है।(३) और उनके पास इतनी ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें काफ़ी ताड़ना थी।(४) इसमें पूरी हिकमत है, मगर डराना कुछ काम नहीं आता। (५) सो तू उनकी तरफ़ से हट आ। जिस दिन बुलानेवाला ऐसी चीज़ की तरफ़ बुलायेगा जिसको यह न पहिचानेंगे।(६) नीची आँखें किये हुए क़ब्रों से निकलेंगे गोया फैली हुई टिड्डियाँ हैं।(७) बुलानेवाले की तरफ़ भागे जाते होंगे और काफ़िर कहेंगे कि यह सख़्त दिन है।(८) इन लोगों से पहिले (नूह) की जाति ने झुठलाया हमारे सेवक (नूह) को झुठलाया और कहा कि यह पागल (उन्मत्त) है और उसको धमकियाँ दीं।(९) फिर उसने परवरदिगार को पुकारा कि मैं दब गया हूँ तू ही बदला ले।(१०) तो उसने मूसला-धार पानी से आसमान के पट खोल दिये।(११) और ज़मीन से सोते बहा दिये तो पानी एक काम के लिए जो नियत हो चुका था मिल गया।(१२) और (नूह को) हमने तख़्तों और कीलों से बनाई हुई (किश्ती-नाव) पर सवार कर लिया।(१३) (और वह) हमारी निगरानी में पड़ी तैरती रही (यह) उस शख़्स (नूह) का बदला था जिसकी क़दर नहीं की गई थी।(१४) और हमने इसको एक निशानी

बना कर छोड़ दिया फिर कोई सोचने वाला है।(१५) फिर हमारी सज़ा और हमारा डराना कैसा हुआ।(१६) और हमने क़ुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है सो कोई जो शिक्षा ग्रहण करे।(१७) आद (की जाति) ने पैग़म्बरों को) झुठलाया तो हमारी सज़ा और हमारा डराना कैसा हुआ।(१८) हमने एक अशुभ दिन जिसकी अशुभता नहीं टलती थी उन पर सख्त जोर शोर की आन्धी चलाई।(१९) वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी कि गोया वह जड़ से उखड़े हुये खजूरों के तने हैं (२०) तो हमारी सज़ा और हमारा डराना कैसा हुआ!(२१) और हमने क़ुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है ता कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे।(२२) [रुकू १ आ. २२]

(क़ौम) समूद ने डर सुनाने वालों (पैग़म्बरों)को झुठलाया।(२३) और कहने लगे क्या हमही में के एक शख्स के कहे पर हम चलेंगे तो हम गुमराह और पागलों में होंगे।(२४) क्या हममें से इसी पर वही (ईश्वरी संदेशा) है! नहीं यह झूठा शेखी मारनेवाला है।(२५) अब कल को मालूम हो जायगा कि कौन झूठा शेखीखोरा है।(२६) हम इनके जाँचने के लिए एक ऊँटनी भेजनेवाले हैं तो तुम इनकी राह देखो और संतोष से बैठे रहो।(२७) और इनको जतादो कि इनमें (और ऊँटनी में) पानी बाँट दिया गया है तो हर (एक गिरोह अपनी अपनी) बारी पर (पानी पीने के लिये) हाजिर हो।(२८) तो उन्होंने अपने दोस्त (क़ुदार) को बुलाया तो उसने (ऊँटनी पर) हाथ डाला और कूचें काट दीं।(२९) तो हमारी सज़ा और डराना कैसा हुआ।(३०) फिर हमने उन पर एक चिंघार भेजी। तो वह ऐसी हो गई जैसी गूँदी हुई काँटों की बाढ़।(३१) (फिर हमने क़ुरान को समझने के लिए आसान कर दिया है तो कोई है कि शिक्षा पकड़े।(३२) लूत की क़ौम ने डर सुनानेवालों को झुठलाया।(३३) तो हमने उन पर पत्थर की वर्षा बरसाई मगर लूत के घर के लोगों को हम अपनी कृपा से सुबह होते २ निकाल ले गये (३४) यह हमारी तरफ़ से कृपा थी जो लोग कृतज्ञ होते (शुक्र करते) हैं हम ऐसा ही बदला देते हैं।(३५) और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया भी था मगर वह डराने में हुज्जतें निकालते

लगे।(३६) और यह उसको उसके मेहमानों की बाबत फुसलाते थे फिर हमने उनकी आँखें मेट दीं। अब हमारी सज़ा और हमारे डराने के मज़े चक्खो।(३७) और प्रातःकाल उनको सज़ा ने आ घेरा जो टाले से न टल सकती थी।(३८) अब हमारी सज़ा और हमारे डराने के मज़े चक्खो।(३९) और हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है तो कोई है कि शिक्षा ग्रहण करे।(४०) [रुकू २ आ. १८]

और फ़िरऔन के लोगों के पास डरानेवाले आये।(४१) सो ऐसा ही उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उनको ऐसा पकड़ा जैसा बली बलवान पकड़ता है।(४२) (ऐ मक्कावालों) क्या तुममें से इन्कार करनेवाले उन लोगों से बढ़कर हैं या तुम्हारे लिए क्षमा है।(४३) यह लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह अपने आप मदद कर सकता है।(४४) सो कोई दिन जाता है कि गिरोह हार जायेगा और पीठ फेर कर भागेंगे।(४५) नहीं। बल्कि वादा तो उनके साथ क़यामत का है और क़यामत बड़ी बली और कड़वी है।(४६) बेशक पापी गुमराही में और पागलपन में हैं।(४७) जिस दिन उनको उनके मुँह के बल (नरक की) आग में घसीटा जायगा (और उनसे कहा जायगा) नरक (की आग) का मज़ा चक्खो।(४८) हमने हर चीज़ को एक अन्दाज़े के साथ पैदा किया है।(४९) और हमारा हुक्म करना सिर्फ़ एक बात है जैसे आँख की झपक।(५०) और (मक्का के काफ़िर लोग) हम तुम्हारे साथ वालों को हलाक कर चुके हैं तो कोई है कि शिक्षा पकड़े।(५१) और हर काम जो उन्होंने किये हैं किताब में लिखे हैं।(५२) और हर एक छोटा और बड़ा काम सब लिखा हुआ है।(५३) परहेज़गार (बैकुण्ठ) के) बाग़ों और नहरों में होंगे।(५४) सच्ची बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर क़ब्ज़ा है बैठेंगे।(५५) [रुकू ३ आयात १५]

---

५५ सूरे रहमान ९७

मक्का में उतरी, इसमें ७८ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। रहमवाले ।(१)
ख़ुदा ने क़ुरान सिखाया। (२) उसी ने आदमी को पैदा किया।(३)
फिर उसको बोलना सिखाया। ४) सूरज और चाँद का एक
हिसाब है। (५) और बूटियाँ और दरख़्त उसी को सिर झुकाये
हुये हैं।(६) और उसी ने आसमान को ऊँचा किया है और
तराज़ू बना दी। (७) ताकि तुम लोग तौलने में कम बेश न
करो।(८) और न्याय के साथ सीधी तौल तौलो और कम न
तौलो। (९) और उसी ने दुनिया के लिये ज़मीन बना दी है ।(१०)
कि उसमें मेवे हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन पर ग़िलाफ़ चढ़े
होते हैं। (११) और अनाज जिसके साथ भुस है और ख़ुशबूदार
फूल हैं।(१२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी
नियामतों को झूठलाओगे। (१३) उसी ने मनुष्य को पपड़ी की
तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया।(१४) और जिन्नों को आग
की लौ से।(१५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी
नियामतों को झुठलाओगे। (१६) और सूरज के निकलने और
डूबने की जगहों का मालिक।(१७) फिर तुम अपने परवरदिगार
की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (१८) उसी ने दो
नदियों को मिला दिया है कि वह मिली हैं। (१९) इन दोनो के
बीच एक आड़ है कि यह उससे बढ़ नहीं सकते। (२०) तो अपने
परवरदिगार की किस नियामत को तुम झुठलाओगे।(२१) दोनों में
से मोती और मूंगे निकलते हैं।(२२) तो तुम अपने परवरदिगार की
कौन कौन नियामतों को झुठलाओगे।(२३) और जहाज़ जो
समुद्र पहाड़ों की तरह ऊँचे खड़े रहते हैं उसी के हैं।(२४) तो तुम
अपने परवरदिगार के कौन कौन से पदार्थों को झुठलाओगे।(२५)
[रुकू १ आयात २५]

(ऐ पैग़म्बर)जितनी सृष्टि ज़मीन पर है सब मिटने वाली है।(२६)

और (सिर्फ़) तुम्हारे परवरदिगार की ज़ात बाक़ी रह जायगी जो बड़प्पन वाली बड़ी है।(२७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।(२८) जो कोई आसमान में और ज़मीन में है उसी से सवाल करते हैं। वह हर रोज़ एक शान में है। (२९) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (३०) ऐ दो बोझिल क़ाफ़िलों †। हम जल्द तुम्हारी तरफ़ ध्यान देने वाले हैं।(३१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन नियामतों को झुठलाओगे। (३२) ऐ जिन्न और आदमियों के गरोहों अगर तुम से हो सके कि आसमानों और ज़मीन के किनारों से निकल भागो तो निकल देखो मगर तुम बग़ैर ज़ोर के निकल ही नहीं सकते।(३३) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे। (३४) और तुम पर आग के शोले और धुआँ भेजा जावेगा और तुम मदद भी न कर सकोगे।(३५) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(३६) फिर कब आसमान फटे और नरी की मानिन्द लाल हो जाए।(३७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(३८) तो उस दिन न तो आदमियों से उनके गुनाहों की बाबत पूछा जायगा और न जिन्नों से।(३९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(४०) पापियों को उनकी सूरत से पहचान लिया जायगा फिर पुट्ठे और पैर पकड़े जायँगे और उनको खींचकर नरक में लेजायँगे। (४१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।(४२) यही नरक है जिसको पापी लोग झुठलाते हैं।(४३) नरक में और खौलते हुए पानी में फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे।(४५) [रुकू २ आ. २०]

और जो मनुष्य अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता

† यानी मनुष्य और वह जीव जो आँखों से नहीं दिखाई देते और इसी लिये जिन्न कहलाते हैं।

रहे उसको दो बाग़ मिलेंगे।(४६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (४७) जिसमें बहुत सी टहनियाँ हैं।(४८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(४६) दोनो में दो चश्मे जारी होंगे।(५०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(५१) उनमें हर मेवे की दो क़िस्में होंगी।(५२) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(५३) फ़र्शों पर तकिये लगाये (बैठे) होंगे। ताफ़्ते के उनके अस्तर होंगे और दोनो बाग़ों के फल झुके होंगे। (५४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(५५) उनमें (पाक हूरें) होंगी जो आँख उठा कर भी नहीं देखेंगी और वैकुण्ठवासियों से पहिले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।(५६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५७) वे लाल और मूंगे जैसे हैं।(५८) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (५६) भला नेकी का बदला नेकी के सिवाय क्या हो सकता है।(६०) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(६१) और इन दो(बाग़ों)के सिवाय और दो बाग़ हैं।(६२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६३) दोनो (बाग़ ख़ूब) गहरे सब्ज़ हैं।(६४) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६५) उनमें दो चश्मे उछल रहे होंगे। (६६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(६७) उन दोनों (बाग़ों) में मेवे और खजूरें और अनार (होंगे) (६८) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे (६६) उनमें अच्छी ख़ूबसूरत औरतें होंगी।(७०) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(७१) हूरें जो ख़ीमों में बन्द हैं (७२) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-

कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(७३) बैकुण्ठवासियों से पहले न तो किसी इन्सान ने उन (हूरों) पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।(७४) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(७५) बैकुण्ठवासी वहाँ सब्ज़ क़ालीनों और उम्दा २ फ़र्शों पर तकिये लगाये होंगे।(७६) फिर तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे।(७७) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारे परवरदिगार का नाम बड़ा बरकतवाला, बड़प्पनवाला और भलाई करनेवाला है।(७८) [रुकू ३ आयात ३३]

---

५६ सूरे वाक़िआ ४६

मक्का में उतरी, इसमें ९६ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है (१) जब होने वाली होगी (क़यामत)।(२) उसके आने में कुछ भी झूठ नहीं।(३) किसी को नीचा दिखायेगी और किसी के दर्जे ऊँचे करेगी (४) जब जमीन बड़े ज़ोर से हिलने लगेगी।(५) और पहाड़ के टुकड़े टुकड़े हो जायँगे।(६) फिर उड़ती मिट्टी हो जावेंगे। (७) और तुम्हारी तीन क़िस्में हो जावेंगी।(८) फिर दाहिने हाथ वाले से दाहिने हाथ वालों का क्या कहना है।(९) और बायें हाथवाले से बायें हाथवालों का क्याही बुरा हाल है।(१०) और अगाड़ी वाले सो आगे ही हैं।(११) यही लोग पास वाले हैं।(१२) नियामत के बाग़ों में।(१३) अगलों में से एक जमात है।(१४) और पिछलों में से थोड़े। (१५) जड़ाऊ तख़्तों के ऊपर। (१६) आमने सामने तकिये लगाये बैठे होंगे।(१७) उनके पास लड़के हैं जो हमेशा (लड़के ही) बने रहेंगे।(१८) उनके पास आबख़ोरे और लोटे और साफ़ शराब के प्याले लाते और ले जाते होंगे।(१९) जिससे न तो उनके सिर में दर्द होगा न बकवाद लगेगी।(२०) और जो मेवे उनको अच्छे

लगें।(२१) और जिस क़िस्म के पत्ती का मांस उनको अच्छा लगे।(२२) और हूरें बड़ी-बड़ी आँखोंवाली जैसे छिपे हुए मोती। (२३) बदला उसका जो करते थे।(२४) वहाँ बकना और पाप की बात न सुनेंगे।(२५) मगर सलामती सलामती की आवाज़ें आ रही होंगी।(२६) और दाहिने तरफ़ वाले ! सो इन दाहिनी तरफ़वालों का क्या कहना है (२७) वे काँटे की वेरियों।(२८) और लदे हुए केलों में।(२९) और लम्बे साये में।(३०) और बहते पानी में।(३१) और बहुत मेवों में।(३२) जो न कभी खत्म हों और न रोके जायें।(३३) और ऊँचे बिछौने।(३४) हमने हूरों की एक ख़ास सृष्टि बनाई है।(३५) फिर इनको क्वाँरी बनाया है।(३६) प्यारी प्यारी समान अवस्था वाली।(३७) यह सब दाहिनी तरफ़ वालों के लिये हैं।(३८) [रुकू १ आयात ३८]

एक जमात पहिलों में से है।(३९) और एक जमात पिछलों में से है।(४०) और बाँई तरफ़ वाले क्या बुरे बाँई तरफ़ वाले होंगे (४१) कि वह आँच की भाफ़ में और गरम पानी में होंगे।(४२) और धुयें की छाओं में।(४३) जो न ठण्डी है और न इज्ज़त की।(४४) यह लोग इससे पहिले ऐश में थे।(४५) और बड़े पाप पर हठ करते रहते थे।(४६) और कहते थे जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये क्या फिर हम उठाये जायेंगे।(४७) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी।(४८) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि अगले और पिछले सब।(४९) एक मालूम वक़्त पर जमा किये जायेंगे।(५०) फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराहों।(५१) तुमको (नरक में) सेहुँड़ का दरख़्त खाना होगा।(५२) और उसी से पेट भरना पड़ेगा।(५३) फिर ऊपर से उबलता हुआ पानी पीना होगा।(५४) फिर ऐसे पीओगे जैसे प्यासे ऊँट पीते हैं।(५५) न्याय के दिन यही उनकी मेहमानी है।(५६) हमने तुमको पैदा किया है फिर भी तुम क्यों नहीं मानते।(५७) भला देखो तो जो (वीर्य्य स्त्रियों की योनि में) टपकाते हो।(५८) क्या उससे तुम (आदमी) पैदा करते हो

या हम पैदा करते हैं।(५९) हमने तुममें मरना ठहरा दिया और हम हारे नहीं रहे।(६०) कि तुम्हारी मानिन्द और क़ौम बदल लायें और तुम्हें उस जहान में उठा खड़ा करें जिसे तुम नहीं जानते।(६१) और तुम पहिली पैदायश जान चुके हो फिर क्यों नहीं सोचते।(६२) भला देखो तो जो बोते हो।(६३) क्या तुम उसको उगाते हो या हम उगाते हैं।(६४) हम चाहें तो उसको चूरा २ कर दें। और तुम बातें बनाते रह जाओ।(६५) हम टोटे में आगये।(६६) बल्कि हमारा भाग्य फूट गया।(६७) भला देखो तो पानी जो तुम पीते हो।(६८) क्या तुमने इसको बादल से बरसाया या हम बरसाते हैं।(६९) अगर हम चाहें तो उसको खारी कर दें तो तुम क्यों नहीं धन्यवाद देते।(७०) भला देखो तो आग जो तुम सुलगाते हो।(७१) इस दरख़्त को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करते हैं।(७२) हमने वे याद दिलाने और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए बनाये हैं।(७३) सो अपने परवरदिगार के नाम की माला फेर जो सब से बड़ा है।(७४) [रुकू २ आयात ३६]

तारों के टूटने की क़सम है।(७५) और समझो तो यह बड़ी क़सम है।(७६) यह बड़ी क़द्र का क़ुरान है।(७७) छिपी किताब में लिखा हुआ है।(७८) उसको वही छूते हैं जो पाक बने हैं।(७९) संसार के परवरदिगार से भेजा गया है।(८०) अब क्या तुम इस बात से सुस्ती करते हो।(८१) और अपना हिस्सा यही लेते हो कि झुठलाते हो।(८२) फिर क्यों न हो जब जान गले में पहुँच जावे।(८३) और तुम उस वक़्त देखा करो।(८४) और हम तुम्हारी निस्बत उससे ज़ियादातर पास हैं लेकिन तुम नहीं देखते +।(८५) फिर

+ एक रग (नस) ऐसी है जो शहरग कहलाती है। यदि यह न होती तो नाड़ी में धमक न होती। यह आत्मा से मिली हुई है। ख़ुदा आदमी से इससे भी अधिक समीप है। कुछ लोगों ने इस आयत का यह भी अर्थ बताया है कि आदमी मरने लगता है तो उसके क़रीबी रिश्तेदार उसके पास होते हैं। ख़ुदा हर समय उसके पास होता है और उसके सम्बन्धियों से ज़्यादा नज़दीक होता है।

अगर तुम किसी के हुक्म में नहीं हो तो क्यों ।(८६) तो तुम उसको फेर लाते अगर तुम सच्चे हो ।(८७) सो अगर वह पास वालों में हुआ ।(८८) तो आराम की रोज़ी और नियामत के बाग़ हैं । (८६) और अगर वह दाहिनी तरफ़ वालों में से है ।(६०) तो दाहिनी तरफ़ वालों की तरफ़ से तेरे लिए सलाम है ।(६१) और अगर झुठलाने वालों गुमराहों में से है ।(६२) तो उबलते पानी से मिहमानी की जावेगी ।(६३) नरक (आग) में ढकेला जावेगा ।(६४) बेशक यह बात सच विश्वास के लायक़ है ।(६५) सो अपने परवरदिगार के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर ।(६६) [रुकू ३ आयात २२]

——):०:(——

५७ सूरे हदीद ६४

मदीना में उतरी इसमें २६ आयतें और ४ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है । जो कुछ आसमानों और जमीन में है अल्लाह को पाकी से याद करते हैं और वही जबरदस्त हिकमतवाला है ।(१) आसमानों और जमीन का राज्य उसी का है । (वही) जिलाता और मारता है और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है ।(२) वही आदि है और वही अन्त है और वही प्रत्यक्ष और गुप्त है और वह हर चीज़ से जानकार है ।(३) वही है जिसने छः दिन में आसमानों और जमीन को बनाया फिर तख़्त पर जा विराजा । जो चीज़ जमीन में दाख़िल होती और जो चीज़ जमीन से बाहर आती है और जो चीज़ आसमान से उतरती और जो चीज़ आसमान की तरफ़ चढ़ती है वह जानता है और तुम जहाँ कहीं हो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम किया करते हो अल्लाह उसको देख रहा है ।(४) आसमानों और जमीन का राज्य उसी का है और सब काम अल्लाह ही तक पहुँचते हैं ।(५) (वही) रात को दिन में दाख़िल करता और दिन को रात में दाख़िल करता है । दिलों

बात की उसको ख़बर है ।(६) अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस माल में से जिसका उसे अधिकारी बनाया है ख़र्च करो । तो जो लोग तुममें से ईमान लाये और ख़र्च करते हैं उनके लिए बड़ा फल है ।(७) और तुमको क्या हो गया है कि ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते हालाँकि पैग़म्बर तुमको तुम्हारे ही परवरदिगार पर ईमान लाने के लिए बुला रहे हैं और अगर तुमको यक़ीन आये तो ख़ुदा तुम से क़ौल करा चुका है ।(८) वही है जो अपने सेवक पर खुली आयतें उतारता है ताकि तुमको अन्धकार से निकाल कर रोशनी में लाये और बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा रहम करनेवाला मिहर्बान है ।(९) और तुमको क्या हो गया है कि ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते हालांकि आसमान ज़मीन का वारिस ख़ुदा ही है, तुममें से जिन लोगों ने फ़तह (मक्का) से पहिले ख़र्च किया और लड़ाई की, वह (दूसरे लोगों के) बराबर नहीं । यह लोग दर्जे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने (मक्का की फ़तह के) पीछे (माल) ख़र्च किये और लड़े और ख़ुदा ने सभी से अच्छा वादा किया है और जैसे-जैसे काम तुम करते हो अल्लाह को उनकी ख़बर है ।(१०) [रुकू १ आयात १०]

ऐसा कौन है जो अल्लाह को ख़ुशदिली से उधार§ दे फिर वह उसको उसके लिए दूना कर दे और उसके लिए इज्ज़त का फल है ।(११) जिस दिन तू ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतों को देखेगा उसकी रोशनी उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ़ दौड़ती है । आज तुम लोगों के लिए ख़ुशी है । (बैकुण्ठ के) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं । इन्हीं में सदा रहोगे यह बड़ी कामयाबी है ।(१२) उस दिन मुनाफ़िक़ (कपटी) मनुष्य और मुनाफ़िक़ औरतें ईमानवालों से कहेंगी कि हमारा इन्तज़ार करो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ कहा जायगा अपने पीछे की तरफ़ लौट आओ और रोशनी

§ जो कोई अपना धन ख़ुदा की राह में देता है उसको ख़ुदा उसके दिए हुए धन से दूना अच्छा बदला देता है । यानी दोनो लोकों में अच्छा फल पाता है ।

तलाश कर लो। इसके बाद इन (दोनों फ़रीक़ों) के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जायगी उसमें एक दरवाज़ा होगा उसमें भीतरी तरफ़ कृपा होगी और उसकी बाहरी तरफ़ सज़ा होगी।(१३) वह (मुनाफ़िक़) ईमानवालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे वह कहेंगे थे सही मगर तुमने अपने आप को बला में डाला और तुम राह देखते थे और शक करते थे और ख़यालों पर धोखे में रहे यहाँ तक कि ख़ुदा की आज्ञा आ पहुँची और (शैतान) दग़ाबाज़ ने तुमको अल्लाह के विषय में धोखा दिया।(१४) सो आज न तो तुमसे छुड़ाई का बदला क़बूल किया जायगा और न उन लोगों से जो इन्कार करते रहे। तुम सब का ठिकाना नरक है वही तुम्हारा दोस्त है और वही तुम्हारा बुरा ठिकाना है।(१५) क्या ईमानवालों के लिये वक़्त नहीं आया कि ख़ुदा का ज़िक्र और क़ुरान के पढ़ने के लिए जो सच्चे ख़ुदा की तरफ़ से उतरा है उनके दिल पिघलें और यह उन लोगों की तरह न हो जावें जिनको पहिले किताब दी गई थी। फिर उन पर एक मुद्दत गुज़र गई और उनके दिल सख़्त हो गये और उनमें बहुत बेहुक्म हैं।(१६) जाने रहो कि अल्लाह ज़मीन को उसके मरे पीछे जिलाता है हमने तुम्हारे लिए आयतें बयान की हैं ताकि तुम्हें समझ हो।(१७) बेशक ख़ैरात करनेवाले और ख़ैरात करनेवालियाँ और (जो लोग) ख़ुदा को ख़ुशदिली से उधार देते हैं उन्हें देना मिलेगा और उनको प्रतिष्ठा का फल मिलेगा।(१८) और जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाये वही लोग अपने परवरदिगार के नज़दीक सच्चे और गवाह हैं उनको उनका फल और उनकी रोशनी (नूर) मिलेगी और जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते हैं यही लोग नरकवासी हैं।(१९) [रुकू २ आयात ६]

(लोगों) जाने रहो कि इस दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशा और ज़ाहिरी शोभा है और आपस में एक दूसरे पर घमण्ड करना और माल औलाद बढ़ाना है। यह मेह की तरह है कि काश्तकार खेती को देख कर ख़ुशियाँ मनाने लगते हैं। फिर (पक कर) ख़ुश्क हो जाती

है तो उसको देखता है कि पीली पड़ गई। फिर मड़नी में आ जाती और पिछले घर में सख़्त सज़ा है। और अल्लाह से रज़ामन्दी और माफ़ी भी है और दुनिया की ज़िन्दगी तो निरी धोखे की टट्टी है।(२०) (लोगों) अपने परवरदिगार की बख़शीश की तरफ़ लपको और बैकुण्ठ की तरफ़ (लपको) जिसका फैलाव है जैसे आसमान ज़मीन का फैलाव (और वह) उन लोगों के लिए तैयार कराई गई है जो ख़ुदा और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाते हैं। यह ख़ुदा की कृपा है जिसको चाहे दे और अल्लाह की कृपा बहुत बड़ी है।(२१) (लोगों) जितनी मुसीबतें ज़मीन पर उतरती हैं और जो तुम पर उतरती हैं (वह सब) उनके पैदा करने से पहिले हमने किताब में लिख रक्खी हैं। बेशक यह अल्लाह के पास सरल है।(२२) (और यह हमने तुमको इसलिए जताया) ताकि कोई वस्तु तुमसे जाती रहे तो उसका रंज न करो और कोई चीज़ ख़ुदा तुमको दे तो उस पर इतराओ मत और अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ीबाज़ को पसन्द नहीं करता।(२३) जो लोग कंजूसी करते हैं और लोगों को कंजूसी सिखाते हैं और जो मनुष्य मुँह फेरेगा तो कुछ शक नहीं अल्लाह बेनियाज़ तारीफ़ के लायक़ है।(२४) हमने अपने पैग़म्बरों को खुले २ चमत्कार देकर भेजा और उनकी मारफ़त किताबें उतारीं और तराज़ू ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें और लोहा पैदा किया उसमें बड़ा खटका है और (उसमें) लोगों के फ़ायदे हैं और एक मतलब यह भी है कि अल्लाह उन लोगों को मालूम करले जिन्होंने (अल्लाह) को देखा नहीं फिर भी अल्लाह और उसके पैग़म्बरों की मदद को खड़े हो जाते हैं। बेशक अल्लाह बली और ज़बरदस्त है।(२५) [रुकू ३ आयात ६]

और हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी संतान में पैग़म्बरी और किताब को रक्खा। फिर उनमें से कोई राह पर हैं और बहुतेरे उनमें बेहुक्म हैं।(२६) फिर पीछे उन्हीं के क़दम ब क़दम हमने अपने पैग़म्बर भेजे और पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इंजील दी और जो लोग उनके मुरीद हुए उनके दिलों में रहम और तरस डाल दिया और दुनिया को छोड़ बैठना (संन्यास) जिसको

उन्होंने अपने आप पैदा किया था। हमने वह उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था। मगर (उन्होंने) ख़ुदा की प्रसन्नता हासिल करने के लिये जैसा उसको निबाहना चाहिए था न निबाह सके तो जो लोग इन में से ईमान लाये हमने उनको उनका फल दिया और इनमें से बहुतेरे तो बे हुक्म हैं।(२७) ईमानवालों! अल्लाह से डरते रहो और उसके पैग़म्बर (मुहम्मद) पर ईमान लाओ कि वह अपनी कृपा में से तुमको दोहरा हिस्सा दे और तुमको ऐसा नूर दे जिसकी रोशनी में चलो और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है।(२८) किताबवाले जान रक्खें कि वह ख़ुदा की कृपा पर कुछ भी अधिकार नहीं रखते और इसी लिए कि कृपा अल्लाह के हाथ है जिसको चाहे दे और अल्लाह की कृपा बड़ी है।(२९) [रुकू ४ आयात ४]

——०——

अट्ठाईसवाँ पारा (क़द समिअल्लाह)

५८ सूरे मुजादिलः १०५

मदीना में उतरी, इसमें २२ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है§ (ऐ पैग़म्बर) अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो अपने पति के विषय में तुमसे झगड़ती और ख़ुदा से शिकायत करती थी और अल्लाह तुम दोनो की बातचीत को सुन रहा था। बेशक अल्लाह सुननेवाला

† हज़रत ईसा के माननेवाले बड़े नेक तपस्वी और बड़े दयालु होते थे, इंजील द्वारा संन्यास ज़रूरी न होने पर भी उन्होंने संन्यास अर्थात् संसारी सुखों से अपने को अलग कर रखा था, यह ईश्वर की प्रसन्नता के लिये था।

§ इस्लाम से पहले यदि कोई अपनी पत्नी को मा या बहन कह देता था तो वह स्त्री उस पुरुष पर सदा के लिए हराम हो जाती थी। इस्लाम के बाद एक आदमी से ऐसी ही भूल हो गई। औरत रोती पीटती मुहम्मद साहब के पास आई। उस पर यह आयत उतरी।

देखनेवाला है।(१) जो लोग तुममें से अपनी बीवियों को मा कह बैठते हैं वह तो उनकी मा नहीं हो जातीं। उनकी माताएँ तो वही हैं जिन्होंने उनको जना है और उन्होंने एक बेहूदा और झूठी बात कही और अल्लाह क्षमा करनेवाला है।(२) और जो लोग अपनी बीवियों से मा कह बैठते हैं फिर जो कहा था उससे फिरना चाहते हैं तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक ग़ुलाम छोड़ना होगा। यह तुमको शिक्षा दी जाती है और ख़ुदा तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है।(३) फिर जो यह न कर सके तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहिले लगातार दो महीने के रोज़े रक्खे और जो यह न कर सके तो साठ ग़रीबों को खाना खिलादे। यह इसलिए है कि तुम अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान ले आओ। यह अल्लाह की बाँधी हुई हदें हैं और काफ़िरों को दुखदाई सज़ा है।(४) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर के विरुद्ध आचरण करते हैं वह ख़्वार हुए जैसे इससे पहिले लोग ख़्वार हुए थे और हमने साफ़ आयतें उतारीं और काफ़िरों के लिए ख़्वारी की सज़ा है। (५) जब अल्लाह उन सब को उठायेगा फिर जैसे-जैसे कर्म यह लोग करते रहे हैं इनको बता देगा। अल्लाह तो उनके कर्मों को गिनता गया और यह उनको भूल गये और अल्लाह सब चीज़ों का निगराँ है।(६) [रुकू १ आ. ६]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह सबसे जानकार है। जब तीन (आदमी) का मशविरा होता है तो अवश्य उनका चौथा वह होता है और पाँच का (सलाह मशविरा) होता है तो ज़रूर उनका छठा वह होता है और इससे कम हों या ज्यादा कहीं भी हों वह अवश्य उनके साथ होता है फिर जैसे-जैसे कर्म यह करते रहे हैं क़यामत के दिन वह उनको जता देगा अल्लाह हर चीज़ को जानता है।(७) (ऐ पैग़म्बर) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिनको कानाफ़ूसी करने से मनाकर दिया गया था। फिर जिससे उनको मना कर दिया गया था लौट कर वही करते हैं। और वह पाप और ज़ियादती करने की और पैग़म्बर

से सरकशी करने की कानाफ़ूसी करते हैं और जब यह तेरे पास आते हैं तो ऐसी दुआ देते हैं जैसी अल्लाह ने तुझे दुआ नहीं दी और यह अपने जी में कहते हैं कि हमारे कहने पर ख़ुदा हमको सज़ा क्यों नहीं देता। इनके लिए नरक काफ़ी है वह उसी में दाख़िल होंगे और वह बुरी जगह है।(८) मुसलमानों! जब तुम कानाफ़ूसी करो तो पाप की और ज़ियादती करने की और पैग़म्बर की बेहुक्मी की बातें एक दूसरे के कान में न किया करो। हाँ नेकी और परहेज़गारी की और अल्लाह से डरते रहो जिसके सामने इकट्ठा होना है।(९) ऐसी कानाफ़ूसी तो एक शैतानी हरकत है ताकि जो ईमान लाये हैं उदास होवें। हालाँकि बेहुक्म ख़ुदा उनको कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकते और ईमानवालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें।(१०) ईमानवालों! जब तुमसे कहा जावे कि मजलिस में खुल २ कर बैठो तो तुम जगह छोड़ २ कर बैठो। ख़ुदा तुम्हारे लिए ज्यादा कर देगा और जब कहा जाय उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। जो लोग तुममें से ईमान रखते हैं और इल्मदार हैं, अल्लाह उनके दर्जे ऊँचे करेगा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है।(११) ईमानवालों जब तुमको पैग़म्बर के कान में कोई बात कहनी हो तो अपनी बात कहने से पहिले कुछ ख़ैरात (पुण्य) लाकर आगे रख दिया करो। यह तुम्हारे लिये भलाई है और ज्यादा पाक है। फिर अगर तुम यह न कर सको तो अल्लाह क्षमा करनेवाला मेरहबान है। (१२) क्या तुम (पैग़म्बर से) कान में§ कोई बात कहने से पहिले कुछ पुण्य लाकर आगे रखने से डर गये तो जब तुम (ऐसा) न कर सको तो ख़ुदा ने तुम्हारा यह अपराध क्षमा कर दिया तो नमाज़ें पढ़ो और जकात दो और अल्लाह

§ कुछ मुनाफ़िक़ अपनी शान जताने और यह दिखाने को कि वे मुहम्मद साहब के बड़े मुँह लगे हैं कान में बातें करते थे, उनका भण्डाफोड़ करने के लिये ये आयतें उतरीं। झूँठे भला क्यों पुण्य करते।

और उस पैग़म्बर का हुक्म मानो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है ।(१३) [रुकू २ आयात ७]

क्या तूने उन्हें नहीं देखा जिन्होंने ऐसे मनुष्यों से दोस्ती की जिन पर ख़ुदा का क्रोध है। यह लोग न तुममें हैं न उन्हीं में और वह जान-बूझकर झूठी बातों पर क़समें खाते हैं। (१४) उनके लिये ख़ुदा ने सख्त सज़ा तैयार कर रक्खी है इसमें शक नहीं की यह मनुष्य बुरा करते हैं।(१५) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रक्खी है और यह ख़ुदा की राह से लोगों का रोकते हैं तो उनके लिए ख्वारी की सज़ा है।(१६) अल्लाह के यहाँ न इनके माल कुछ इनके काम आयेंगे और न इनकी औलाद। यह नरकगामी मनुष्य हैं सो हमेशा नरक ही में रहेंगे। (१७) जिस दिन अल्लाह इन सबको (जिला) उठायेगा तो यह उसके आगे क़समें खावेंगे जैसे यह मुसलमानों के आगे क़समें खाया करते हैं और समझते हैं कि ख़ूब कर रहे हैं। बेशक यही लोग झूठे हैं ।(१८) शैतान ने इन पर क़ाबू जमाया है और उसने इनको ख़ुदा की याद भुला दी है यह शैतानी गिरोह हैं और शैतानी गिरोह नाश होंगे ।(१९) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से विरोध करते हैं वही ज़लील होंगे ।(२०) ख़ुदा तो लिख चुका है कि हम और हमारे पैग़म्बर ज़बर रहेंगे। बेशक अल्लाह ज़ोरावर ज़बरदस्त है ।(२१) (ऐ पैग़म्बर) जो लोग अल्लाह और अख़ीर दिन का विश्वास रखते हैं उनको न देखोगे कि ख़ुदा और उसके पैग़म्बर के दुश्मनों के साथ दोस्ती रक्खे चाहे वह उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके वंश ही के हों। यही हैं जिनके दिलों के अन्दर ख़ुदा ने ईमान लिखा दिया है और अपनी गुप्त कृपा से उनको मदद की है और वह उनको बाग़ों में ले जाकर दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वह हमेशा उन्हीं में रहेंगे। ख़ुदा उनसे और वह ख़ुदा से ख़ुश यह ख़ुदाई गिरोह है। ख़ुदाई गिरोह ही की जीत होगी ।(२२) [रुकू ३ आयात ९]

——:o:——

५९ सूरे हशर १०१

मक्का में उतरी, इसमें २४ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह की माला फेरते हैं और वह बली हिकमतवाला है।(१) वही है जिसने किताब वालों में से इन्कारियों को उनके घरों से (जो मदीना में बसते थे) पहिलो† हशर के लिए निकाल बाहर किया (मुसलमानों) तुम यह न ख्याल करते थे कि यह निकलेंगे और वह इस ख्याल में थे कि उनके क़िले उनको ख़ुदा के मुक़ाबिले में बचा लेंगे। तो जिधर से उनका ख्याल भी न था ख़ुदा ने उनको घेर लिया और उनके दिलों में धाक बैठा दी कि उन्होंने अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों से अपने घरों को ख़राब कर डाला तो आँखवालों शिक्षा पकड़ो।(२) और अगर ख़ुदा ने देश-निकाले की सज़ा न लिख दी होती तो वह उनको दुनिया में सज़ा देता और अन्त में उनको नरक की सज़ा है।(३) यह इस सबब से कि इन्होंने ख़ुदा और उसके पैग़म्बर को दुश्मनी की और जो ख़ुदा से दुश्मनी करे तो ख़ुदा की मार सख़्त है।(४) (मुसलमानों इनके) खजूरों के दरख़्त जो तुमने काट डाले या इनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया (ठूँठ कर दिया) तो यह ख़ुदा ही के हुक्म से था और इस लिये कि बदकारों को ज़लील करे (५) और जो (माल) ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को मुफ़्त में उनसे दिलवा दिया हालाँकि तुमने उसके लिए न तो घोड़े दौड़ाये और न ऊँट मगर अल्लाह अपने पैग़म्बरों में से जिसको चाहे जीत देता है और अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिमान है।(६) जो (माल) अल्लाह अपने

† इन आयतों में बनी नुज़ैर का हाल है। यह लोग यहूदी थे। यह मुसलमानों के विरुद्ध मुशरिकों की सहायता करते थे। इनको लड़कर इस बात पर विवश किया गया कि यह अपना घर छोड़कर कहीं और चले जायें। यही पहला हशर था।

पैग़म्बर को बस्तियों के लोगों से दिला दे सो अल्लाह का और पैग़म्बर का और रिश्तेदारों का और अनाथों का और ग़रीबों का और यात्रियों का है। यह इसलिये कि जो तुममें से धनी हैं यह माल उन्हीं के लेने देने में आता जाता न रहे और जो चीज़ पैग़म्बर तुमको दे दिया करें वह ले लिया करो और जिस चीज़ से मना करें उससे रुके रहो। ख़ुदा से डरो। ख़ुदा की मार बड़ी सख़्त है।(७) यह (लूट का माल) तो ग़रीब देश-त्यागियों के लिये है जो अपने घर और माल से निकाल दिये गये कि वह ख़ुदा की कृपा और उसकी रज़ामन्दी की चाहना में लगे हैं और ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की मदद करते हैं। यही लोग सच्चे हैं।(८) और वह माल उनके लिये है। जिन्होंने इस घर (यानी मदीना में) और ईमान में जगह पकड़ रक्खी है। जो उनके पास हिजरत (देश त्याग) करके आता है उसको प्यार करते और जो कुछ उन (देश त्यागियों) को दिया जाय उससे दिल तंग नहीं करते और उनको अपनी जानों पर मुक़द्दम§ रखते हैं अगर्चि आप तंगी में हों और जो अपने जी के लालच से बचाया गया वही मुराद (मन चाहा) पावेगा। (९) और वह माल उनके लिये हैं जो इन (देश त्यागियों) के बाद आये कहते हैं कि हमारे परवरदिगार! हमको और हमारे इन भाइयों को भी जो हमसे पहिले ईमान लाये क्षमा कर और हमारे दिलों में ईमानवालों को बुराई न डाल। ऐ हमारे परवरदिगार तूही मेहरबान और दया करनेवाला है।(१०) [रुकू १ आयात १०]

(ऐ पैग़म्बर) क्या तूने उन लोगों को न देखा जो मुनाफ़िक़ (दग़ाबाज़ कपटी) हैं किताबवालों में से काफ़िरों से कहते हैं कि अगर तुम निकाले जाओगे तो हम भी तुम्हारे साथ निकल आवेंगे और तुम्हारे सम्बन्ध में हम कभी किसी का कहना न मानेंगे और

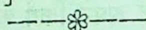
§ पहली आयतों में उन लोगों का वर्णन था जो मक्का से मदीना चले आये थे। इन आयतों में उनकी प्रशंसा की गई है जो मदीना मे रहते थे और अंसार या सहायक कहलाते थे।

अगर तुमसे लड़ाई होगी तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और अल्लाह गवाही देता है कि वह झूठे हैं।(११) अगर वह निकाले जावें यह उनके साथ न निकलेंगे और उनसे लड़ाई हुई तो यह कभी इनकी मदद न करेंगे और जो मदद देंगे तो पीठ देके भागेंगे फिर कहीं मदद न पावेंगे।(१२) इनके दिलों में तुम्हारा डर खुदा से भी बढ़कर है यह इस सबब से है कि यह लोग नासमझ हैं।(१३) यह सब मिलकर भी तुमसे नहीं लड़ सकते मगर क़िले वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ से। आपस में इनकी बड़ी धाक है तू इनको एक समझता है हालाँकि इनके दिल फटे हुये हैं यह इस लिये कि यह बेसमझ हैं।(१४) इनकी† मिसाल उन जैसी मिसाल है जो थोड़े ही दिनों पहिले अपने किये का मज़ा चख (चुके) और इनको दुखदाई सज़ा है।(१५) इनकी मिसाल शैतान जैसी मिसाल है जब वह आदमी से कहता है कि इन्कारी हो। फिर जब वह इन्कारी हुआ तो कहता है कि मुझको तुझसे कुछ मतलब नहीं। मैं अल्लाह से डरता हूँ जो संसार का परवरदिगार है। (१६) तो इन दोनो का परिणाम यही होना है कि दोनो नरक में जावेंगे। उसी में हमेशा रहना होगा और सरकशों की यही सज़ा है।(१७) रुकू २ आयात ७]

मुसलमानों! खुदा से डरते रहो और हर आदमी का ख्याल रखना चाहिये कि उसने कल के लिये क्या कर रक्खा है और खुदा से डरो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है।(१८) और उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने खुदा को भुला दिया तो खुदा ने भी ऐसा किया कि यह अपने आपको भूल गये। यही बे हुक्म हैं।(१९) नरकवासी और बैकुण्ठवासी बराबर नहीं बैकुण्ठवासी ही कामयाब हैं।(२०) (ऐ पैग़म्बर) अगर हमने यह क़ुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि वह खुदा के

† यह बद्र के काफ़िरों की ओर संकेत है। बद्र की लड़ाई मे उनकी बहुत बुरी हार हुई थी।

डर के मारे झुक गया और फट गया होता और हम यह मिसाल लोगों के लिये बयान फ़र्माते हैं ताकि वह सोचें '(२१) वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला बड़ा मिहरबान रहमवाला है।(२२) वही अल्लाह जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। बादशाह है, पाक है, निर्दोष है, शान्तिदाता निरीक्षक है, शक्तिवाला है, बड़ा तेजस्वी है। यह लोग जैसे-जैसे शिर्क (ईश्वर की जाति व गुण में साझा) करते हैं अल्लाह उससे पाक है।(२३) वही अल्लाह पैदा करनेवाला, बनानेवाला, सूरतें देनेवाला है उसके सब नाम अच्छे हैं जो कुछ ज़मीन आसमानों में है वह उसी की माला फेरा करते हैं और वह ज़ोरावर हिकमतवाला है।(२४) [रुकू ३ आयात ७]



६० सूरे मुम्तहना। ९१

मदीना में उतरी, इसमें १३ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है, ऐ ईमानवालों! अगर तुम हमारी राह में जेहाद करने और हमारी रज़ामन्दी ढूढ़ने के लिये निकले हो तो हमारे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम तो उनकी तरफ़ मुहब्बत के पैग़ाम भेजते हो हालाँकि तुम्हारे पास जो सच बात आई है वह उससे इन्कार करते हैं। पैग़म्बर को और तुमको इस बात पर निकालते हैं कि तुम ख़ुदा पर जो तुम्हारा परवरदिगार है ईमान लाये हो। तुम छिपाकर उनकी तरफ़ प्रेम (मुहब्बत) के संदेशे भेजते हो और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो कुछ ज़ाहिरा करते हो हम ख़ूब जानते हैं और जो कोई तुममें से ऐसा करे सो वह सीधी राह से भटक गया।(१) और वह तुम्हें पावें तो तुम्हारे दुश्मन हो जावें और तुम्हारी तरफ़ अपने हाथ चलायेंगे और बुराई के साथ अपनी ज़बान भी और चलायेंगे कि तुम भी काफ़िर हो जाओ।(२) क़यामत के दिन न तुम्हारी रिश्तेदारी तुमको काम आवेगी और न तुम्हारी संतान (औलाद) वह तुम में

फ़ैसला कर देगा और ख़ुदा तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।(३) इब्राहीम में और उसके साथियों में तुम्हारे लिये अच्छा नमूना है। जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम तुमसे और जिनका तुम अल्लाह के सिवाय पूजते हो उनसे अलग हैं। हम तुमको नहीं मानते और हममें और तुममें दुश्मनी और बैर हमेशा के लिए खुल पड़ा जब तक तुम अकेले ख़ुदा पर ईमान न ले आओ मगर इब्राहीम का कहना बाप के लिये यह था कि मैं तेरे लिये क्षमा माँगूगा हालाँकि ख़ुदा के आगे तेरे लिये मेरा कुछ ज़ोर तो चलता नहीं। ऐ हमारे परवरदिगार हम तुझी पर भरोसा करते हैं और तेरी तरफ़ ध्यान धरते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है।(४) ऐ हमारे परवरदिगार हम पर काफ़िरों को विजय न दे और ऐ हमारे परवरदिगार हम को क्षमा कर तू बली हिकमतवाला है।(५) तुमको उनकी भली चाल चलनी है जो अल्लाह पर और आख़िरी दिन पर उम्मेद रखते हैं और जो कोई मुँह फेरे तो ख़ुदा बेपरवाह और तारीफ़ के लायक़ है।(६) [रुकू १ आयात ६]

अजब नहीं कि अल्लाह तुम में और काफ़िरों में जिनके साथ तुम्हारी दुश्मनी है दोस्ती पैदा कर दे और अल्लाह सब कर सकता है और अल्लाह क्षमा करनेवाला मिहर्बान है।(७) जो लोग तुम से दीन में नहीं लड़े न उन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई करने और न्याय का बर्ताव करने से ख़ुदा तुमको मना नहीं करता। अल्लाह न्याय पर चलने वालों को चाहता है।(८) अल्लाह तुम्हें उनकी दोस्ती से मना करता है जो तुमसे दीन के बारे में लड़े और जिन्होंने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में दूसरों की मदद की और जो कोई ऐसों की दोस्ती रक्खे तो वही लोग ज़ालिम हैं।(९) ऐ ईमानवालों! जब तुम्हारे पास ईमानवाली औरतें घर छोड़कर आवें तो उनको जाँचो अल्लाह उनके ईमान को ख़ूब जानता है अगर तुम्हें मालूम हो कि वह ईमानवाली हैं तो उनको काफ़िरों के पास न फेरो। वह काफ़िरों को हलाल नहीं और न काफ़िर उन्हें हलाल हैं और जो उन काफ़िरों ने ख़र्च किया है उनको दे दो और

तुम पर पाप नहीं कि उन औरतों से निकाह (ब्याह) करो जब कि तुम उनको उनके मिहर (पति का क़रार स्त्री के लिये) दे दो और तुम काफ़िर औरतों का निकाह न थाम रक्खो § और जो तुमने ख़र्च किया है मांग लो और उन काफ़िरों ने जो ख़र्च किया है वे भी मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है जो तुम्हारे बीच फ़ैसला करता है अल्लाह जाननेवाला हिकमतवाला है।(१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से काफ़िरों की तरफ़ कोई औरत निकल जावे फिर तुम काफ़िरों को ख़फ़ा होकर मारो (यानी लड़ाई करके लूटो तो लूट के माल में से) उनको जिनकी औरतें जाती रही हैं उतना माल दे दो जितना उन्होंने ख़र्च किया था और अल्लाह से डरो जिस पर ईमान लाये हो।(११) ऐ पैग़म्बर जब तेरे पास मुसलमान औरतें आवें और इस पर तेरी चेली बनना चाहें कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी नहीं ठहरावेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी (व्यभिचार) करेंगी और न लड़कियों को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के आगे कोई लफंट बनाकर खड़ा करेंगी और न अच्छे कामों में तुम्हारी बे हुक्मी करेंगी तो (इन शर्तों पर) तुम उनको चेली बना लिया करो और ख़ुदा के सामने उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।(१२) ऐ मुसलमानों ऐसे लोगों से दोस्ती न करो जिनपर ख़ुदा का कोप है। यह तो पिछले दिन से ऐसे आशा तोड़ बैठे हैं जैसे काफ़िर क़ब्र वालों (के जी उठने) से निराश हैं।(१३) [रुकू २ आयात ७]

---

६१ सूरे सफ़्फ़ १०९

मदीना में उतरी, इसमें १४ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमान में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह की पाकी बोलने में लगे हैं

---

§ यानी जो औरतें मुसलमान नहीं उनको अपने अधिकार में न रक्खो इनको

और वही ज़बरदस्त हिकमतवाला है।(१) ऐ ईमानवालों क्यों मुँह से कहते हो जिसको तुम नहीं करते।(२) अल्लाह को सख़्त ना पसन्द है कि कहो और करो नहीं (३) बेशक ख़ुदा उन लोगों को प्यार करता है जो उसकी राह में क़तार बाँधकर लड़ते हैं। वह गोया एक दीवार है जिसमें सीसा पिला दिया गया है।(४) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयों मुझे क्यों सताते हो हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ हूँ तो जब वह टेढ़े हो गये, ख़ुदा ने उनके दिल टेढ़े कर दिये और ख़ुदा बे हुक्म लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।(५) और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटों मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ। तौरात जो मुझसे पहिले है उसकी सचाई करता हूँ और एक पैग़म्बर की ख़ुशख़बरी देता हूँ जो मेरे बाद आयेगा उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह खुली निशानियाँ लेकर आया वह बोले कि यह तो साफ़ जादू है।(६) और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा हालाँकि वह इस्लाम (मुसलमानी मत) की तरफ़ बुलाया जाये और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं करता।(७) अल्लाह की रोशनी† मुँह से बुझा देना चाहते हैं और अल्लाह को अपनी रोशनी पूरी करनी है हालाँकि काफ़िरों को यह बुरा ही लगे। (८) [रुकू १ आयात ८]

वही है जिसने अपना पैग़म्बर शिक्षा और सच्चा मत (दीन) देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर जय दे और शिर्क करने वाले को भले ही बुरा लगे। (९) ऐ ईमानवालों मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुमको दुखदाई सज़ा से बचा दे।(१०) ख़ुदा और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और ख़ुदा की राह में अपने माल और अपनी जानों से कोशिश करो यह तुम्हारे लिये भला है अगर्चि समझ हो।(११) वह तुमको तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें

उनका मिहर देकर अलग कर दो ताकि वह जिससे चाहें अपना ब्याह कर लें।

† रोशनी का अर्थ है मुहम्मद साहब या उनका लाया हुआ धर्म इस्लाम।

बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। हमेशगी के बाग़ों में अच्छे मकान हैं यह ही बड़ी कामयाबी है। (१२) एक और चीज़ जिसे तुम पसन्द करोगे यानी ख़ुदा की तरफ़ से मदद और थोड़े ही दिनों में एक जीत और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दे।(१३) और ईमानवालों! ख़ुदा की मदद करनेवाले हो जाओ जैसे मरियम के लड़के ईसा ने हव्वारियों से कहा था कि अल्लाह की तरफ़ मेरा कौन मददगार है फिर इसराईल की संतान में से एक गिरोह ईमान लाया और एक ने इन्कारी की। तो जो लोग ईमान लाये थे हमने उनको उनके दुश्मनों के मुक़ाबिले में मदद दी और उनकी जीत हुई।(१४) [रुकू २ आयात ६]

---

६२ सूरे जुमा ११०

मदीना में उतरी, इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह की पवित्रता बखानने में लगे हैं जो बादशाह ज़ोरावर हिकमतवाला है।(१) वही है जिसने मूर्खों में उनमें का एक पैग़म्बर भेजा कि वह उनको उसकी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाये और उनको पाक करे और उनको किताब और हिकमत (तदबीरें) सिखाये हालाँकि इससे पहिले वह ज़ाहिरा गुमराही में थे।(२) और दूसरों में (यानी अजम के लोगों में यानी यह पैग़म्बर अजम के लोगों में भी है।) जो अभी उन अरबवालों में नहीं मिले और वह बली हिकमतवाला है।(३) यह ख़ुदा की कृपा है जिसे चाहे देवे और अल्लाह की कृपा बड़ी है।(४) (यहूदियों ने) जिन लोगों पर तौरात लादी गई, फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया तो उनकी मिसाल किताब लादे गधे जैसी है। जो लोग ख़ुदा की आयतों को झुठलाते हैं उनकी मिसाल बड़ी बुरी है और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता।(५) तो

कह कि ऐ यहूद अगर तुमको दावा है कि तमाम आदमियों में से तुम्हीं खुदा के दोस्त हो तो अगर तुम सच कहते हो तो मौत को मनाओ ।(६) उन कामों के कारण से जो अपने हाथों कर चुके हैं वह कभी मौत को न मनायेंगे अल्लाह अन्यायियों को जानता है ।(७) तो कह कि मौत जिससे तुम भागते हो वह जरूर तुम्हारे सामने आवेगी । फिर तुम गुप्त और प्रत्यक्ष जानने वाले खुदा की तरफ़ लौटाये जाओगे और वह तुमको जरूर काम बतायेगा ।(८) [रुकू १ आयात ८]

ऐ ईमानवालों जब (शुक्र) के दिन नमाज के लिए अजाँ दी जावे तो तुम अल्लाह को याद को दौड़ो और बेचना छोड़ दो अगर तुमको समझ है तो यह तुम्हारे लिये भला है। (९) फिर जब नमाज खत्म हो जावे तो अपनी-अपनी राह लो और खुदा की याद में लग जाओ और अधिकता से खुदा की याद करते रहो ताकि तुम छुटकारा पाओ ।(१०) और जब यह तिजारत या खेल देखते हैं तो उसकी तरफ़ दौड़ जाते हैं और तुमको खड़ा छोड़ देते हैं तो कह कि जो कुछ खुदा के यहाँ है वह खेल और तिजारत से भला है और अल्लाह रोजी देनेवालों में सबसे अच्छा है ।(११) [रुकू २ आयात३]

—०—

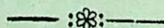
६३ सूरे मुनाफ़िक़ून १०४

मदीना में उतरी, इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जब तेरे पास मुनाफ़िक़ आते हैं तो यह कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि तू बेशक खुदा का पैग़म्बर है । और खुदा जानता है कि तू उसका पैग़म्बर है । मगर खुदा गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ बेशक झूठे हैं ।(१) यह अपनी क़समों को ढाल बनाते हैं और लोगों को खुदा की राह से रोकते हैं । ये लोग बुरे काम करते हैं ।(२) यह इसलिए कि अब वह ईमान लाये पीछे फिर काफ़िर हो गये हैं तो उनके दिलों पर मुहर

कर दी गई है और वह समझते नहीं। (३) और जब तू उनको देखता है तो तुझको उनके शरीर अच्छे मालूम होते हैं और अगर यह बातें करते हैं तो उनकी बातों को सुनता है। वह गोया लकड़ी के कुन्दे हैं जो दीवार से लगे हुए हैं कि हर एक बला उन्हीं पर आई। यह दुश्मन हैं बस इनसे बच। ख़ुदा उनको मेट दे यह किधर को फिरे जा रहे हैं।(४) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ ख़ुदा के पैग़म्बर तुम्हारे लिये माफ़ी माँगे तो अपने सिर मरोरते हैं और तू उनको देखेगा कि रोकते और ग़रूर करते हैं। (५) उसके लिए बराबर है चाहे उनके लिए क्षमा माँग या न माँग ख़ुदा उनको कदापि क्षमा न करेगा बेशक ख़ुदा बेहुक्म लोगों को राह नहीं देता। (६) यही हैं जो कहते हैं किजो लोग ख़ुदा के रसूल के पास रहते हैं उन पर ख़र्च न करो यहाँ तक कि खण्ड-खण्ड हो जावें और आसमान और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं। मगर मुनाफ़िक़ नहीं समझते। (७) कहते हैं अगर हम मदीने फिर गये तो जिनका ज़ोर है वहाँ से वह ज़लील लोगों को ज़रूर निकाल देंगे और ज़ोर अल्लाह का, पैग़म्बर का और ईमानवालों का है। लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते।(८) [रुकू १ आयात ८]

ऐ ईमानवालों तुमको तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करें और जो कोई करेगा तो वही टोटे में रहेगा।(९) और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से ख़र्च करो पहिले इससे कि तुममें से किसी को मौत आ जावे और वह कहे कि ऐ मेरे परवरदिगार तू ने मुझको थोड़े दिन और क्यों न ढील दी कि ख़ैरात करता और नेक लोगों में से होता।(१०) और जब किसी जीव का काल आ जावेगा तो ख़ुदा उसको हरगिज़ न ढीलेगा और ख़ुदा तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है।(११) [रुकू २ आ. ३]



६४ सूरे तग़ाबुन १०८

मदीना में उतरी, इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मिहर्बान है। जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है सब अल्लाह की पाकी बोलने में लगे हैं उसी का राज्य है और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।(१) वही है जिसने तुमको पैदा किया। फिर कोई तुममें इन्कारी है और कोई ईमानदार और जो करते हो अल्लाह देखता है।(२) आसमान और ज़मीन को तदबीर से बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं। और तुम्हारी अच्छी सूरतें खींचीं और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।(३) वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो और ख़ुदा दिलों की बातें जानता है।(४) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर पहुँची जिन्होंने इससे पहिले इन्कार किया था और अपने कामों के बवाल का मज़ा चक्खा और उनको दुखदाई सज़ा होनी है।(५) इसलिए कि उनके पास पैग़म्बर खुली दलीलें लेकर आये और बोले कि क्या आदमी हमें राह दिखायेंगे और उन्होंने (पैग़म्बर को) न माना और मुँह फेरा और अल्लाह ने परवाह न की और ख़ुदा बे परवाह तारीफ़ के लायक़ है।(६) काफ़िर दावा करते हैं कि वे उठाये न जावेंगे। तू कह हाँ! मुझे अपने परवरदिगार की क़सम तुम उठाये जाओगे। फिर तुम्हें जताया जावेगा जो तुम करते थे और यह अल्लाह पर आसान है।(७) तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है और जो तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है।(८) इकट्ठा करने के दिन, जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वह दिन हार जीत का है और जो कोई ख़ुदा पर ईमान लाये और नेक काम करे तो वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर करेगा और उसको बैकुण्ठ में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं उसमें वह हमेशा रहेंगे यह बड़ी कामयाबी है।(९) और जो काफ़िर हुए और हमारी

आयतों को झुठलाया वह नरकबासी हैं। उसमें हमेशा रहेंगे और बुरी जगह है। १०) [रुकू १ आयात १०]

अल्लाह के हुक्म बिना कोई आफ़त नहीं आती और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे ख़ुदा उसके दिल को ठिकाने से लगाये रखेगा और अल्लाह हर चीज़ से जानकार है।(११) और अल्लाह की और पैग़म्बर की आज्ञा मानो, फिर अगर तुम मुँह मोड़ो तो पैग़म्बर का काम तो साफ़ साफ़ पहुँचा देना है।(१२) अल्लाह है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं और ईमानवालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें।१३) ऐ ईमानवालों तुम्हारी कोई-कोई बीबियाँ और सन्तान तुम्हारे दुश्मन हैं सो उनसे बचते रहो। और जो क्षमा कर दरगुज़र करो और बख़्श दो तो ख़ुदा भी बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।(१४) तुम्हारा धन और सन्तान तुम्हारी जाँच के लिए है और ख़ुदा के यहाँ बड़ा फल है।(१५) तो अल्लाह से डरो जितना डर सको और सुनो और मानो और अपने भले को ख़र्च करो और जो कोई अपने जी के लालच से बचा वही लोग मुराद पावेंगे।(१६) अगर तुम अल्लाह को ख़ुशदिली से उधार दो तो वह तुमको उसका दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह क़दर जानने वाला दयालु है।।(१७) गुप्त और प्रत्यक्ष का जानने वाला बली हिकमत वाला है।(१८) [रुकू २ आयात ८]

———:o:———

६५ सूरे तलाक़ ९९

मदीना में उतरी, इसमें १२ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। ऐ पैग़म्बर जब तुम बीबियों को तलाक़ देना चाहते हो तो उनको उनकी इद्दत* के शुरू

† हिजरत के बाद मुसलमानों का एक जत्था मदीना आना चाहता था। उनके बेटे और बीबियाँ रोने लगीं और उनको रुक जाना पड़ा। यह आयतें उन्हीं के लिए उतरीं।

* इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिसमें तलाक़ दी हुई औरत या जिसका पति मर गया है ब्याह नहीं कर सकती।

में तलाक़ दो और (तलाक़ के बाद ही से) इद्दत गिनने लगो और ख़ुदा से जो तुम्हारा पालनकर्त्ता है डरते रहो उन्हें उनके घरों से न निकालो और वह ख़ुद न निकलें। हाँ खुल्लमखुल्ला बेशर्मी का काम कर बैठें तो इनको घर से निकाल दो। अल्लाह की बाँधी हद्दें हैं और जिस मनुष्य ने अल्लाह की हद्दों से क़दम बाहर रक्खा उसने अपने ऊपर ज़ुल्म किया। कौन जाने शायद अल्लाह तलाक़ के बाद कोई सूरत पैदा कर दे!(१) फिर जब वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो दस्तूर के मुआफ़िक़ उनको रक्खो या दस्तूर के बमूजिब उनको विदा कर दो और अपने में से दो विश्वसनीय आदमियों को गवाह कर लो और ख़ुदा के आगे गवाही पर क़ायम रहो। यह उसको शिक्षा दी जाती है जो ख़ुदा पर और क़यामत पर ईमान रक्खे और जो कोई ख़ुदा से डरा तो वह उसके लिये राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा जहाँ से उनको ख़याल भी न हो।(२) और जो मनुष्य ख़ुदा पर भरोसा रक्खेगा तो ख़ुदा उसको काफ़ी है। अल्लाह अपना काम पूरा कर लेता है अल्लाह ने हर चीज़ का अन्दाज़ा ठहरा रक्खा है (३) और तुम्हारी औरतों में से जिनको रजस्वला (हैज़ में) होने की उम्मेद नहीं अगर तुमको संदेह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और जिन औरतों को रजस्वला होने की नौबत नहीं आई (यही तीन माह इनकी इद्दत) और गर्भवती स्त्रियाँ उनकी इद्दत बच्चा जनने तक और जो ख़ुदा से डरता रहेगा ख़ुदा उसके काम आसान करेगा।(४) यह ख़ुदा का हुक्म है जो उसने तुम पर उतारा है और जो कोई ख़ुदा से डरे तो वह उसकी बुराइयों को उससे दूर कर देगा। और उसको बड़ा फल देगा।(५) तलाक़ दी हुई औरतों को अपनी सामर्थ्य के बमूजिब वहीं रखो जहाँ तुम रहो और उन पर सख़्ती करने के लिये दुख न दो और अगर गर्भवती हों तो बच्चा जनने तक उनका ख़र्च उठाते रहो और अगर वह तुम्हारे लिये दूध पिलायें तो उनको उनकी दूध पिलाई दो और आपस की सलाह से दस्तूर के मुवाफ़िक़ काम करो और अगर आपस

में ज़िद करोगे तो दूसरी औरत उसको दूध पिलावेगी।(६) सामर्थ्य वाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार ख़र्च करे और जिसकी रोज़ी नपी तुली हो तो जैसा उसको ख़ुदा ने दिया है उसी के बमूजिब ख़र्च करे और अल्लाह किसी को कष्ट देना नहीं चाहता मगर जितना उसने उसे दिया। अल्लाह तंगी के बाद आसान कर देगा।(७) [रुकू १ आ. ७]

और कितनी बस्तियाँ थीं कि उन्होंने अपने परवरदिगार के हुक्म से और उसके पैग़म्बर के हुक्म से सिर उठाया पर अनदेखी तो हमने उनसे सख़्त हिसाब लिया और उनको आफ़त डाली।(८) तो उन्होंने अपने किये का मज़ा चक्खा और उनको परिणाम (अख़ीर) में घाटा हुआ।(९) ख़ुदा ने उनके लिए बुरी मार तैयार कर रक्खी है तो बुद्धिमानों! जो ईमान ला चुके हो ख़ुदा से डरो।(१०) और अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ समझौती उतारी। पैग़म्बर जो अल्लाह की खुली आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाता है ताकि जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं उनको अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में लावे और जो कोई ख़ुदा पर ईमान लाये और भल काम करे तो वह उनको बैकुण्ठ में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह हमेशा उन्हीं में रहेंगे। अल्लाह ने उसको अच्छी रोज़ी दी है।(११) ख़ुदा वह है जिसने सात आसमानों को बनाया और उसी के मानिन्द ज़मीन भी। इन दोनो के बीच हुक्म उतरते रहते हैं ताकि तुम जानो कि ख़ुदा हर चीज़ कर सकता है और अल्लाह के इल्म जानकारी में हर चीज़ समाई है।(१२) [रुकू २ आयात ५]

——:o:——

६६ सूरे तहरीम १०७

मदीना में उतरी, इसमें १२ आयतें और २ रुकू हैं

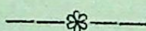
ऐ पैग़म्बर अपनी बीबियों को ख़ुश करने के लिए तू अपने ऊपर उस§ चीज़ को क्यों हराम करता है जो ख़ुदा ने तेरे लिए हलाल की है

§ कहते हैं कि एक दिन मुहम्मद साहब ने अपनी बीबी जैनब के यहाँ

और ख़ुदा बख़्शने वाला मिहरबान है।(१) तुम लोगों के लिये ख़ुदा ने तुम्हारी क़समों के तोड़ डालने का भी हुक्म रक्खा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और वह जानकार हिकमतवाला है।(२) और जब पैग़म्बर ने अपनी बीबियों में से किसी से एक बात चुपके से कही और जब उसने उसकी ख़बर कर दी और ख़ुदा ने उस पर इस बात को ज़ाहिर कर दिया तो पैग़म्बर ने कुछ कहा और कुछ टाल दिया। फिर जब वह उस बीबी को जता दिया तो वह बोली तुमको यह किसने बताया। वह बोला मुझको उस ख़बरदार जानने वाले ने बताया है।(३) अगर तुम दोनो (हिफ़सह और आयशा) अल्लाह की तरफ़ तोबा करो क्योंकि तुम दोनो के दिल टेढ़े हो गये हैं और जो तुम दोनो पैग़म्बर पर चढ़ाई करोगी तो अल्लाह और जिब्राईल और नेक ईमान वाले उसके दोस्त हैं और उसके बाद फ़रिश्ते उसके मददगार हैं।(४) अगर पैग़म्बर तुम सबको तलाक़ (छोड़) दे तो अजब नहीं कि उसका परवरदिगार तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी बीबियाँ दे। जो इमानवाली, हुक्म उठाने वाली, तोबा करने वाली, नमाज़ में खड़ी होने वाली, बन्दगी बजा लाने वाली, रोज़ह रखने वाली, ब्याही हुई (विवाहिता) और क्वाँरी हों।(५) ऐ ईमानवालों! अपने को और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी हैं और पत्थर हैं। जिस पर कठोर हृदय और बलवान फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं कि जो कुछ ख़ुदा उनको हुक्म करता है उससे बेहुक्मी नहीं करते और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है करते हैं।(६) ऐ काफ़िरों आज के दिन कुछ उज़्र न करो वही बदला पाओगे जो तुम करते हो।(७) [रुकू १ आयात ७]

शहद खा लिया था। दूसरी बीबियों ने जिनका नाम आयशा और हफ़सा था, आप से कहा कि आप के मुँह से दुर्गन्ध आती है इस पर आपने कहा कि मैं अब भविष्य में कभी शहद न खाऊँगा। कुछ लोग कहते हैं कि बीबी हफ़सा को खुश करने के लिए आपने बीबी मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया था इस पर यह आयतें उतरीं।

ऐ ईमानवालों! ख़ुदा के सामने साफ़ दिल से तोबा करो शायद तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दे और तुमको बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उस दिन ख़ुदा नबी को और जो उसके साथ ईमान लाये उनको लज्जित न करेगा उनकी रोशनी (तेज) उनके आगे और दाहिनी ओर दौड़ती होगी और वह कहेंगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारी रोशनी को हमारे लिये पूरा कर दे और हमको बख़्श दे। बेशक तू हर चीज़ पर शक्तिमान है।(८) ऐ पैग़म्बर काफ़िरों से और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कर और उन पर सख़्ती कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है। (ख़ुदा ने काफ़िरों के लिए नूह† की बीबी और लूत की बीबी की मिसाल बयान की है।(९) दोनों हमारे दो भले सेवकों के अधिकार में थीं। मगर उन दोनों ने उनको दण्ड दिया। पस वह दोनो सेवक (बन्दे) उन औरतों से ख़ुदा को सज़ा न उठा सके और उनसे कहा गया कि तुम दोनो दाख़िल होनेवालों के साथ नरक की आग में दाख़िल हो।(१०) और ख़ुदा ने ईमानवालों के लिए फ़िरऔन की मिसाल बयान की है। जब उस औरत ने कहा कि ऐ मेरे‡ परवर्दिगार मेरे लिए बैकुण्ठ में अपने पास एक घर बना और मुझको फ़िरऔन और उसके काम से बचा निकाल और ज़ालिम से बचा निकाल।(११) और इमरान की बेटी जिसने अपनी शिह्वत को जगह रोकी और हमने उसमें अपनी रूह फूँक दी और वह अपने परवरदिगार की बातें और उसकी किताबों को मानती थी और ख़ुदा की आज्ञाकारिणी (हुक्मबरदार) थी (१२) [रुकू २ आयात ५]



† नूह और लूत की बीबियाँ काफ़िरों में से थीं इस लिए ईश्वर के कोप से न बच सकीं।

‡ फ़िरऔन की स्त्री इन्कारियों में से नहीं थी। फ़िरऔन ने उसको बहुत दुख दिया फिर भी वह ईमान पर जमी रही।

उनतीसवाँ पारा (तबारकल्लज़ी)

६७ सूरे मुल्क ७७

मक्का में उतरी, इसमें ३० आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। उसकी बड़ी बरकत है जिसके हाथ में राज्य है। और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।(१) जिसने मरना, जीना बनाया ताकि तुमको जाँचे कि तुममें कौन अच्छा काम करता है और वह बली क्षमा करनेवाला है।(२) जिसने तर ऊपर सात आसमान बनाए। भला तुमको दयावान की कारीगरी में कोई कसर दिखाई देती है फिर एक निगाह दौड़ा कहीं दरार दिखाई देती है।(३) फिर दुबारा निगाह दौड़ा तेरी नज़र खिसयानी होकर थकी हारी तेरी तरफ़ उलटी लौट आवेगी (४) और हमने पहिले आसमान को दीपकों से सजा रक्खा है और हमने इन (दीपकों) को शैतानों के लिए मार की चीज़ बनाई है और हमने उनके लिए नरक की सज़ा तैयार कर रक्खी है।(५) और जो लोग अपने परवरदिगार को नहीं मानते उनके लिए नरक की सज़ा है और बुरी जगह है।(६) जब (ये) उसमें डाले जावेंगे तो वह उसका दहाड़ना (चिल्लाना) सुनेंगे और वह भड़क रही होगी।(७) कोई दममें मारे जोश के फट पड़ेगी। जब-जब कोई गिरोह उसमें डाला जायगा तो जो उस पर तैनात हैं उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास डराने वाला नहीं आया।(८) वह कहेंगे हाँ डरानेवाला तो हमारे पास आया था मगर हमने झुठलाया और कहा ख़ुदा ने तो कोई चीज़ नहीं उतारी। तुम बड़ी भटक में पड़े हो।(९) और कहेंगे अगर हमने सुना और समझा होता तो नरकवासियों में न होते।(१०) तो उन्होंने अपना पाप मान लिया पस नरकवासियों पर लानत है।(११) जो लोग बेदेखे अपने परवरदिगार से डरते हैं उनके लिये बख़शिश और बड़े फल हैं।(१२) और तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो वह दिलों के

भेद को जानता है।(१३) भला वह न जाने जिसने बनाया और वही बारीक बात को देखने वाला खबरदार है।(१४) [रुकू १ आयात १४]

वह है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को (नरम) कर दिया। उसकी चलने की जगहों पर चलो और उसका दिया हुआ खाओ। और जी उठकर उसी की तरफ़ चलना है।(१५) जो आसमान में है क्या तुम उससे नहीं डरते कि ज़मीन में तुमको धँसा दें और वह झकोरे मारा करें।(१६) क्या तुम उनसे निडर हो गये जो आसमान में हैं कि तुम पर पत्थर बरसावें जो तुम को मालूम हो जायगा कि हमारा डराना कैसा हुआ।(१७) और जो लोग इनसे पहिले हो गये हैं उन्होंने भी हमारे (पैग़म्बरों) को झुठलाया था तो हमारी नाखुशी कैसी हुई।(१८) क्या इन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो उनके ऊपर पर खोले और समेटे हुये उड़ते हैं दयावान ही उनको थामे रहता है वह हर चीज़ को देखता है।(१९) भला दयावान के सिवाय ऐसा कौन है जो तुम्हारा लश्कर बनकर तुम्हारी मदद करे निरे धोके में।(२०) अगर खुदा अपनी रोज़ी रोक ले तो भला ऐसा कौन है जो तुम को रोज़ी पहुँचा दे मगर काफ़िर तो सरकशी और भागने पर अड़े बैठे हैं।(२१) तो क्या जो मनुष्य अपना मुँह औंधाये हुए चले वह ज़्यादा पर है या वह मनुष्य जो सीधी राह पर चलता है।(२२) ((ऐ पैग़म्बर) कहो कि वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आखें और दिल बनाये तुम थोड़ा ही शुक्र करते हो।(२३) ऐ पैग़म्बर कहो कि वही है जिसने तुमको ज़मीन में फैला रक्खा है और उसी के सामने जमा किये जाओगे।(२४) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब होगा।(२५) (ऐ पैग़म्बर) जवाब दो कि इसका इल्म तो खुदा ही को है और मैं तो साफ़ तौर (से) डराने वाला हूँ।(२६) फिर जब देखेंगे कि वह वादा (क़यामत) पास आ पहुँचा तो काफ़िरों की शक्लें बिगड़ जाँयगी और कहा जायगा यही वह (सज़ा) है जो तुम माँगा करते थे।(२७) (ऐ पैग़म्बर) कहो अगर अल्लाह मुझको और जो लोग मेरे साथ हैं उनको मार डाले

या हमारे हाल पर कृपा करे तो कोई है जो काफ़िरों की दुखदाई सज़ा से शरण दे।(२८) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि वही (ख़ुदा) कृपा करनेवाला है हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है तुमको मालूम हो जायगा कि कौन प्रत्यक्ष गुमराही में था।(२६) कहो देखो तो तुम्हारा पानी सूख जावे तो कौन है जो तुमको बहता हुआ पानी ला देगा।(३०) [रुकू २ आयात १६]

——❀——

६८ सूरे क़लम २

मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहरबान है। नून—क़लम की और जो कुछ वह लिखते हैं उसकी क़सम।(१) तू अपने परवरदिगार की कृपा से पागल नहीं है§।(२) और तुझको अटूट फल है।(३) और तू बड़ी प्रकृतिवाला है।(४) सो अब तू देखेगा और वे भी देख लेंगे।(५) कि तुममें से अब कौन विचल रहा है।(६) ऐ (पैग़म्बर) बेशक तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही उनको भी ख़ूब जानता है जो सीधी राह पर हैं।(७) सो तू झुठलानेवालों का कहा न मान।(८) वे चाहते हैं किसी तरह तू ढीला हो तो वे भी ढीले हों।(६) और किसी क़समें खाने वाले नीच के कहे में मत आ जाना।(१०) और न किसी चुग़लख़ोर की जो चुग़ली खाता फिरे।(११) और अच्छे कामों से रोकता है ज़्यादती करने वाला पापी है।(१२) बद है इसके बाद बदनाम।(१३) इस लिए कि धन संतान रखता है।(१४) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।(१५) हम उसकी नाक पर दाग़ देंगे।(१६) हमने उनको जाँचा है जैसा हमने बाग़वालों को जाँचा

§ वलीद बिन मुग़ीरा मुहम्मद साहब को पागल कहता था। इन आयतों में उसको झूठा बताया गया है।

था कि जब उन्होंने क़सम खाई कि वह जरूर सुबह होते ही उसके फल तोड़ेंगे ।(१७) और अल्लाह ने चाहा (इन्शा अल्लाह) नहीं कहा था।(१८) फिर तेरे परवरदिगार की तरफ़ से एक घूमनेवाली (बला) उस बाग़ पर आगई और यह सो रहे थे !(१९) और सुबह होते होते वह (बाग़) ऐसा रह गया जैसे कोई सारे फल तोड़ कर ले गया है ।(२०) फिर सुबह होते ही आपस में बोले ।(२१) अगर तुमको तोड़ना है तो सवेरे अपने खेत पर चलो ।(२२) तो वह चले और चुपके-चुपके बातें करते जाते थे ।(२३) आज के दिन वहाँ कोई फ़क़ीर तुम्हारे पास न आयेगा ।(२४) और सवेरे जोर से लपकते चले ।(२५) मगर जब वहाँ देखा तो बोले हम सचमुच भटक गये हैं ।(२६) नहीं हमारा भाग्य फूटा ।(२७) उनमें से जो भला था कहने लगा । क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि खुदा को पाकी से क्यों नहीं याद करते ।(२८) वह बोले कि हमारा परवरदिगार पाक है बेशक हमही अपराधी थे ।(२९) तो आपस में से एक दूसरे को दोष देने लगे ।(३०) बोले हम पर शोक हम सरकश थे ।(३१) कुछ आश्चर्य नहीं कि हमारा परवरदिगार उसके बदले हमको उससे अच्छा दे । हम अपने परवरदिगार से आरज़ू रखते हैं ।(३२) इस प्रकार आफ़त आती है और आखिरत की आफ़त तो सबसे बड़ी है अगर उसको समझ होती ।(३३) [रुकू १ आयात ३३]

परहेज़गारों के लिए उनके परवरदिगार के यहाँ नियामतों के बाग़ हैं ।(३४) तो क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के बराबर कर देंगे ।(३५) तुम को क्या हुआ कैसी बात ठहराते हो ।(३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसको तुम पढ़ते हो ।(३७) कि वहाँ तुमको मिलेगा जो तुमको अच्छा लगेगा ।(३८) क्या तुमने हमसे क़समें ले रक्खी हैं जो क़यामत के दिन चली जावेंगी कि तुम्हारे लिये वही मिलेगा जो तुम ठहराओगे ।(३९) उनसे पूछ कि तुममें से कौन इसका ज़िम्मा लेता है ।(४०) या इन्होंने शरीक ठहरा रक्खें हैं पस अगर सच्चे हों तो अपने शरीकों को ला हाज़िर करें ।(४१) जिस

दिन पर्दा उठा दिया जायगा और उनको सिजदे (दण्डवत करने) के लिये बुलाया जायगा वह सिजदह न कर सकेंगे।(४२) उनकी आँखें नीची होंगी ज़िल्लत उनके चेहरों पर छागई होगी और जब भले चंगे सिजदे के लिये बुलाये जाते थे।(४३) अब मुझे और इस (क़ुरान) के झुठलाने वाले को छोड़। हम उन्हें दर्जा ऐसे नीचे उतारेंगे कि यह न जानें।(४४) और उनको ढील देता चला जा रहा हूँ बेशक हमारा दाँव पक्का है।(४५) क्या तू उनसे नेग (मज़दूरी) माँगता है जो वह जुरमाने (चट्टी) के बोझ से दबे जाते हैं।(४६) क्या वह ग़ैब की (गुप्त) बात जानते हैं और उसको लिख रखते हैं।(४७) अपने परवरदिगार के हुक्म के लिये ठहरा रह और मछली वाले (यूनिस) की तरह न हो जिसने ग़ुस्से में दुआ की (४८) अगर तेरे परवरदिगार की कृपा उसको न सम्हालती तो वह चटियल मैदान में फेंक दिया गया होता।(४९) फिर उसको उसके परवरदिगार ने आनन्दित किया और नेकों में कर दिया (५०) और क़रीब है कि काफ़िर अपनी निगाहों§ से (ऐ मोहम्मद) तुझे डिगादें जब कि वह क़ुरान सुनते और कहते हैं कि वह तो दीवाना है।(५१) और यह तो संसार के लिए सिर्फ़ शिक्षा है।(५२) [रुकू २ आयात १९]

——o——

६९ सूरे हाक़्क़ा ७८

मक्का में उतरी, इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहरबान है। होनहार बात।(१) होनहार बात क्या चीज़ है।(२) और तूने क्या समझा होने वाली बात क्या चीज़ है।(३) समूद और आद ने क़यामत को झुठलाया।(४) सो समूद तो कड़क से मार डाले गये।(५) और आद रहे सो सख़्त हवा के सर्राटे से मार डाले गये।(६) उसने उस

§ यानी ऐसा घूर घूर कर देखते हैं कि तुम डर जाओ और क़ुरान सुनना बन्द कर दो।

(हवा) को सात रात और आठ दिन लगातार उन पर चला रक्खा था। फिर तू उन लोगों को गिरा हुआ देखता गोया कि वह खजूर की खोखली लकड़ियाँ हैं (७) तो क्या तू इनमें से किसी को भी बाक़ी देखता है।(८) और फ़िरऔन और जो लोग उससे पहले थे; और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले सब पापी थे।(९) फिर परवरदिगार के पैग़म्बर का हुक्म न माना फिर उनको बड़ी पकड़ ने पकड़ा।(१०) जब पानी का तूफ़ान (नूह के वक़्त में) आया तो हम्हीं ने तुमको सवार कर लिया था।(११) ताकि हम उसको तुम्हारे लिये एक यादगार बनायें और याद रखने वाले कान उसको याद रक्खें।(१२) फिर जब सूर (नरसिंहा) एक बार फूँका जायगा। (१३) और ज़मीन और पहाड़ उठाये जायेंगे और एक दम तोड़े जायेंगे।(१४) तो होने वाली उस दिन हो जायगी।(१५) और आसमान फट जायगा और वह उस दिन सुस्त हो जायगा।(१६) और फ़रिश्ते किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे परवरदिगार के तख़्त को आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे।(१७) उस दिन तुम सामने लाये जाओगे और तुम्हारी बात छिपी न रहेगी। (१८) सो जिसकी किताब उसके दाहिने हाथ में दीजावेगी वह कहेगा लो मेरा कर्मलेखा पढ़ो।(१९) मुझको यक़ीन था कि मेरा हिसाब मुझको मिलेगा।(२०) तो वह ख़ुशी की ज़िन्दगी में होगा।(२१) ऊँचे बाग़ों में।(२२) जिसके फल झुके होंगे।(२३) खाओ और पियो बसबब उसके जो तुमने गुज़रे दिनों में किया है (२४) और वह शख़्स जिसको उसकी किताब बायें हाथ में दीजावेगी वह कहेगा अफ़सोस मुझको मेरा यह कर्मलेखा न मिला होता।(२५) और न मैं अपने इस हिसाब को जानता।(२६) अफ़सोस यहीं मेरा ख़ातमा हुआ होता।(२७) मेरा माल मेरे काम न आया।(२८) मेरी बादशाही मुझसे जाती रही।(२९) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक़ (क़ैदी सुतिया) डालो।(३०) फिर इसको नरक में ढकेल दो। (३१) और इस सत्तर हाथ लम्बी ज़ंजीर

से बाँध दो।(३२) वह अल्लाह पर जो सबसे बड़ा है यक़ीन नहीं लाता था।(३३) और न लोगों को ग़रीबों को खिलाने के लिए जोश दिलाता था।(३४) तो आज के दिन यहाँ उसका कोई दोस्त नहीं।(३५) और न खाना सिवाय ज़ख्मों के धोवन के।(३६) यह खाना सिर्फ पापी ही खावेंगे।(३७) [रुकू १ आयात ३७]

जो कुछ तुम देखते हो मैं उसकी क़सम खाता हूँ।(३८) और जो तुम नहीं देखते (उसकी भी)। (३९) यह (क़ुरान) एक फ़रिश्ते का है। (४०) और यह कवि (शायर) का कहा नहीं तुम बहुत ही कम मानते हो।(४१) और न परियों वाले का कहा हुआ है तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो।(४२) यह संसार के परवरदिगार का उतारा हुआ है।(४३) और अगर यह हम पर कोई बात बना लाता। (४४) तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ते।(४५) फिर उसकी गर्दन काट डालते।(४६) फिर तुम में इससे कोई रोकनेवाला नहीं। (४७) और यह डरने वालों के लिये शिक्षा है।(४८) और हमको मालूम है कि तुम में कोई-कोई झुठलाते हैं। (४९) और यह काफ़िरों के लिये पछतावा है।†(५०) और यह सचमुच ठीक है।(५१) अब अपने परवरदिगार के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर।(५२) । [रुकू २ आयात १५]

—o—

७० सूरे मआरिज ७९

मक्का में उतरी इसमें ४४ आयतें और २ रुकू हैं

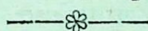
अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। एक पूँछनेवाले ने बस सज़ा के बारे में जो होनेवाली है पूँछा।(१) काफ़िर कोई उसको रोक नहीं सकता।(२) ख़ुदा के मुक़ाबले में जो सीढ़ियों (आसमान) का मालिक है।(३) उनसे फ़रिश्ते और रूह

† यानी काफ़िर क़यामत के दिन पछतायेंगे कि हमने क़ुरान को ख़ुदा का कलाम क्यों नहीं माना ताकि आज हम ईश्वर के कोप से बचे रहते।

उसकी तरफ़ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज़ ५० वर्ष का है।(४) पस तू अच्छी तरह संतोष कर।(५) वह उसे दूर देखते हैं।(६) और (हम) उसे क़रीब देखते हैं।(७) उस दिन आसमान पिघले ताँबे की तरह हो जावेगा।(८) और पहाड़ जैसी रँगी हुई ऊन, (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा।(१०) वह सब उन्हें दिखलाये जावेंगे पापी चाहेंगे उस दिन की सज़ा के बदले में अपने बेटे दे दें।(११) और अपनी जोरू अपने भाई को। (१२) और अपने कुटुम्ब को जिसमें रहता था। (१३) और जितने ज़मीन पर हैं सारे (दे डालें) फिर आप को बचावें। (१४) सो तो टलना नहीं है वह तपती आग है।(१५) मुँह की खाल खींचने वाली।(१६) यह, जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा (उसको) पुकारती है।(१७) और जिसने माल जमा करके बरतन में रक्खा।(१८) आदमी बे सब्र पैदा किया गया है। (१९) जब उसको बुराई लगती है तो घबड़ाता है।(२०) और जब भलाई पहुँचती है, तो अपने तईं (अच्छे कामों से) रोक लेता है।(२१) मगर नमाज़ पढ़ने वाले।(२२) जो अपनी नमाज़ पर क़ायम हैं।(२३) और जिनके माल में हिस्सा ठहर रहा है। (२४) माँगनेवालों और बे माँगनेवालों के लिये।(२५) और जो इन्साफ़ के दिन का यक़ीन करते हैं।(२६) और अपने परवरदिगार की सज़ा से डरते हैं। (२७) उनको परवरदिगार की सज़ा से निडर न होना चाहिए।(२८) और जो अपनी शहवत की जगह (विषय इन्द्रियाँ) थामते हैं।(२९) मगर अपनी जोरुओं और बाँदियों से सो उन पर उलाहना नहीं।(३०) मगर जो लोग इसके अलावा और की ख़्वाहिश करते हैं तो वह ज़ियादती करने वाले हैं।।(३१) जो लोग अमानत और अपने अहद को निबाहते हैं।(३२) और जो लोग अपनी गवाहियों पर क़ायम हैं। (३३) और जो लोग अपनी निमाज़ की ख़बर रखते हैं।(३४) तो यही लोग इज़्ज़त के साथ बैकुण्ठ में होंगे।(३५) [रुकू १ आयात ३५]

काफ़िरों को क्या हो गया जो तेरे सामने दौड़ते आते हैं।(३६)

दाहिने और बायें से गरोह गरोह होकर। (३७) क्या हर शख़्स इनमें से चाहता है कि नियामत के बाग़ में दाख़िल हों।(३८) हर्गिज़ नहीं हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया जो वह जानते हैं। (३९) तो मैं पूरब और पश्चिम के परवरदिगार की क़सम खाता हूँ कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं। (४०) इस बात पर कि उनसे बिहतर उनके बदले औरों को ले आवें और हम आजिज़ नहीं होने के।(४१) सो तू उन्हें छोड़ कि बातें बनावें और खेलें यहाँ तक कि उस दिन से मिलें जिसका वादा दिया गया है।(४२) जिस दिन क़ब्रों से दौड़ते निकलेंगे जैसे किसी निशाने पर दौड़े जाते हैं। (४३) ज़िल्लत के मारे निगाह नीची किये होंगे। यह वह दिन है जिसका उनसे वादा है।(४४) [रुकू २ आयात ९]



७१ सूरे नूह ७१

मक्का में उतरी, इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है! हमने नूह को उसकी जाति की तरफ़ भेजा कि दुखदाई सज़ा आने से पहिले अपनी जाति को डरावे।(१) (उनसे) कहा भाइयों मैं उसको डर सुनाने आया हूँ। (२) कि ख़ुदा की पूजा करो और उससे डरते रहो और मेरा कहा मानो। (३) तो वह तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा और नियत समय तक तुमको मुहलत देगा। जब ख़ुदा का नियत किया हुआ वक़्त आवेगा तो वह टल नहीं सकता। शोक! तुम समझते होते। (४) कहा ऐ परवरदिगार मैंने अपनी जाति को रात दिन पुकारा (५) फिर मेरे बुलाने से और ज्यादा भागते ही रहे। (६) और जब मैंने उनको पुकारा कि तू उन्हें क्षमा करे उन्होंने अपने कानों में उँगलियाँ डालीं और अपने कपड़े लपेटे और ज़िद्द की और अकड़ बैठे। (७) फिर मैंने उनको पुकार कर बुलाया। (८) फिर मैंने उनको ज़ाहिरा समझाया और गुप्त भी समझाया।(९) फिर

मैंने कहा कि अपने परवरदिगार से पापों की क्षमा माँगो । वह बख्शने वाला है । (१०) आसमान से तुम पर झड़ी लगाकर बरसायेगा । (११) और धन और संतान से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिए बाग़ उगायेगा और नहरें जारी करेगा ।(१२) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से बुजुर्गी की उम्मेद नहीं रखते ।(१३) उसने तुमको तरह-तरह का बनाया । (१४) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने कैसे तर-ऊपर सात आस्मान बनाये ।(१५) और उनमें चन्द्रमा को उजेले के लिये और सूर्य का चिराग़ बनाया । (१६) और खुदा ने तुम्हें ज़मीन से एक क़िस्म से उगाया । (१७) फिर तुम्हें ज़मीन में मिला देगा और फिर तुमको निकाल खड़ा करेगा । (१८) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया है । (१९) कि उसमें खुले रास्तों से चलो । (२०) [रुकू १ आयात २०]

नूह ने कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार यह मुझसे नटखटी करते हैं और उनके कहे पर चलते हैं जिनको उनके धन और उनकी सन्तान ने टोटे में डाल रक्खा है । (२१) और उन्होंने बड़े-बड़े फ़रेब किये । (२२) और बोले कि अपने पूजितों को न छोड़ो वद† को और सोवा† को और यग़ूस† और ययूक़† और नस्र† को (२३) और बहुतेरों को गुमराह कर चुके हैं और ऐसा कर कि ज़ालिमों में गुमराही ही बढ़ती जावे ।(२४) तो यह अपने ही पापों के कारण से डुबाये गए फिर नरक की आग में डाल दिये गए और उन्होंने खुदा के मुक़ाबिले में किसी को मददगार न पाया ।(२५) और नूह ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार दुनिया में काफ़िरों का कोई घर न छोड़ ।(२६) अगर तू उन्हें रहने देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इनसे जो सन्तान चलेगी वह भी कुकर्मी काफ़िर ही होगी । (२७) ऐ मेरे परवरदिगार मुझको और मेरे मा बाप को और जो मनुष्य ईमान लाकर मेरे घर में आये उसको और ईमानदार मर्दों और ईमानदार औरतों को क्षमा कर और ऐसा कर कि ज़ालिमों (अत्याचारियों) की तबाही बढ़ती चली जावें । (२८) [रुकू २ आ. ८]

—०—

† ये अरब की मूर्तियों के नाम है जो नूह के ज़माने में पूजी जाती थीं ।

७२ सूरे जिन्न ४०

मक्का में उतरी इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। कह दे कि मुझको हुक्म आया है कि जिन्नों के कई लोग† (क़ुरान) सुन गये हैं और (उन्होंने) कहा हमने अजीब क़ुरान सुना।(१) जो ठीक बात की शिक्षा देता है और हम उस पर ईमान लाये और हम किसी को भी अपने परवरदिगार का शरीक न ठहरायेंगे। (२) और हमारे परवरदिगार की इज्ज़त बहुत बड़ी है उसने न किसी को जोरू और न किसी को संतान बनाया।(३) और हममें कुछ मूर्ख हैं जो ख़ुदा पर बढ़-चढ़कर बातें बनाते हैं।(४) और हम ख्याल करते थे कि आदमी और जिन्न कोई ख़ुदा पर झूठ नहीं बोल सकता। (५) और आदमियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो जिन्नों में से कुछ लोगों की शरण लेते हैं और उन्होंने जिन्नों के घमण्ड को और भी बढ़ा दिया है।(६) और वह ख्याल करते थे जैसा तुम ख्याल करते थे कि ख़ुदा कभी किसी को पैग़म्बर बनाकर नहीं भेजता।(७) और हमने आसमान को टटोला तो उसको सख्त चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया। (८) और हम वहाँ बैठने की जगहों में बैठकर सुना करते थे फिर अब जो कोई सुनना चाहे अपने लिये आग का अंगारा पायेगा।(९) और हम नहीं जानते कि ज़मीन के रहनेवालों को कुछ नुक़सान पहुँचाना मंज़ूर है या उनके परवरदिगार ने उनके हक़ में भलाई करना विचारी है। (१०) और हम में कोई-कोई नेक हैं और कोई-कोई और तरह के हैं। हमारे जुदे-जुदे फ़िर्क़े होते आये हैं।(११) और हमने समझ लिया कि न तो ज़मीन में ख़ुदा को हरा सकते हैं और न भाग कर उससे बच सकते हैं।(१२)

---

† कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद साहब खजूर के एक बाग़ में क़ुरान पढ़ रहे थे कि कई जिन्न वहाँ आये और ईमान लाये और अपनी जाति वालों से जा कर इसकी चर्चा की।

और हमने जब राह की बात सुनी तो हम उसको मान गये । पस जो मनुष्य अपने परवरदिगार पर ईमान लायेगा उसको न किसी नुक़सान का भय होगा न अत्याचार (ज़ुल्म) का। (१३) और हममें कोई आज्ञाकारी हैं और कोई अत्याचारी हैं सो जो कोई हुक्म में आये उन्होंने सीधी राह ढूंढ़ निकाली ।(१४) और जिन्होंने मुँह मोड़ा वह नरक के लट्ठे बन गये ।(१५) और यह कि अगर लोग सीधी राह पर रहते तो हम उन्हें पानी पिलाते ।(१६) ताकि उनको उसमें जाँचें और जो कोई अपने परवरदिगार की याद से फिर गया तो वह उसको सख्त सज़ा में दाखिल करेगा ।(१७) और मसजिदें सब खुदा की हैं तो खुदा के साथ किसी को न पुकारो ।(१८) और जब खुदा का बन्दा (मुहम्मद) खड़ा होकर उसको पुकारता है तो पास आकर ये उसको घेर लेते हैं । (१९) [रुकू १ आयात १९]

कह कि मैं तो अपने परवरदिगार को पुकारता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं करता ।(२०) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि तुम्हारा नुक़सान या फ़ायदा मेरे अधिकार में नहीं ।(२१) (ऐ पैग़म्बर) कहो मुझे अल्लाह के हाथ से कोई न बचावेगा। और मैं उसके सिवाय कोई रहने की जगह नहीं पाता ।(२२) मगर (मेरा काम) खुदा के समाचारों का पहुँचा देना है और जो कोई अल्लाह का और उसके पैग़म्बर का हुक्म न माने सो उसके लिये नरक की आग है जिसमें वह हमेशा रहेंगे। (२३) जब तक उसको न देख लें जिनका उनसे वादा किया जाता है तो उस वक़्त जान लेंगे कि किसके मददगार कमज़ोर और गिनती में थोड़े हैं। (२४) (ऐ पैग़म्बर) कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा हुआ वह नज़दीक है या मेरा परवरदिगार उसको देर में लायेगा ।(२५) वह भेद का जाननेवाला है और अपने भेद की खबर किसी को नहीं देता ।(२६) मगर जिस पैग़म्बर को पसंद कर लिया उसके आगे और पीछे चौकीदार चला जाता ।(२७) ताकि वह जाने उसने उनके समाचार पहुँचा दिये और यूँ हो उसने उनके सब मामलों को हर प्रकार अपने अधिकार में कर रखा है और एक-एक चीज को गिन रखा है ।(२८) [रुकू २ आयात ९]

———

७३ सूरे मुज़्ज़म्मिल ३

मक्का में उतरी, इसमें २० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान (है)। ऐ चादर ओढ़े हुए (मुहम्मद) (१) रात को (नमाज़ के लिए) खड़े रहा करो ! मगर थोड़ी देर।(२) आधी रात या उसमें थोड़ी कम कर। (३) या आधी से कुछ बढ़ा दिया कर। और क़ुरान को ठहर-ठहर कर पढ़ा कर।(४) अब हम तेरे ऊपर भारी बात डालेंगे।(५) रात का उठना (इन्द्रियों) के रोकने में बहुत अच्छा होता है और ठीक-ठीक दुआ माँगने में भी।(६) दिन को तुझे बहुत काम रहता है।(७) और अपने परवरदिगार का नाम याद कर और सबको छोड़कर उसी की तरफ़ लग जा। (८) वही पूरब और पश्चिम का मालिक है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं पस उसी को काम सँभालने वाला बना। (९) और वे लोग जो कुछ कहते हैं उसका संतोष कर और ख़ूबसूरती के साथ उन्हें छोड़ दे। (१०) और मुझको और झुठलाने वालों को जो आराम में रहे हैं छोड़ दे और उन्हें थोड़ी मुहलत दे।(११) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढेर है।(१२) और खाना जो गले से न उतरे और दुखदाई सज़ा है। (१३) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ काँपने लगेंगे और पहाड़ भुरभुरे टीले हो जावेंगे।(१४) हमने तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर भेजा है वह तुम पर गवाही देगा जैसा कि हमने फ़िरऔन के पास पैग़म्बर भेजा था।(१५) मगर फ़िरऔन ने पैग़म्बर से नटखटी की तो हमने उसको सख़्त सज़ा में पकड़ा।(१६) फिर अगर उस दिन से इन्कारी रहे जो लड़कों को बूढ़ा कर देता है तुम क्योंकर बचोगे।(१७) उस दिन आसमान फट जायगा और उस (ख़ुदा) का वादा हो जायगा।(१८) यह तो एक समझौता है—तो जो चाहे अपने परवरदिगार की राह ले।(१९) [रुकू १ आयात १९]

तेरा परवरदिगार जानता है कि तू दो तिहाई रात और आधी रात और तिहाई रात (नमाज़ को) उठता है और उनमें से जो तेरे साथ हैं

एक गरोह उठता है और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा करता है वह जानता है कि तुम इसको निबाह न सकोगे। पस तुम पर मेहरबान हुआ। अब क़ुरान में से जिस क़दर आसान हो पढ़ो। ख़ुदा जानता है कि तुममें कुछ बीमार होंगे और कुछ ऐसे जो दुनिया में ख़ुदा की कृपा ढूँढ़ते फिरेंगे और कुछ ऐसे भी जो ख़ुदा की राह में लड़ाई करेंगे तो जो उसमें से आसान हो पढ़ो और नमाज़ पर क़ायम रहो और ज़कात दो और अल्लाह को ख़ुशदिली से क़र्ज़ दे दिया करो और जो नेकी अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको अल्लाह के यहाँ पाओगे। वह बहुत बढ़कर है और उसका फल भी बहुत बड़ा है और अल्लाह से अपने पापों की क्षमा माँगते रहो—अल्लाह बड़ा क्षमा करनेवाला कृपालु है।(२०)[रुकूर२आ.१]

---

७४ सूरे मुद्दस्सिर ४

मक्का में उतरी इस में ५६ आयतें और २रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है।(ऐ पैग़म्बर वही यानी आयत के भय से जो) चादर ओढ़े हुए (हो)।(१) उठ और लोगों को) डरा।(२) और अपने परवरदिगार की बड़ाई कर।(३) और अपने कपड़ों को पाक रख।(४) और नापाकी से अलग रह।(५) और ज्यादा करने के लिए किसी पर अहसान न रख।(६) और अपने परवरदिगार की राह देख।(७) जब सूर (नरसिंहा) फूँका जायगा।(८) तो वह दिन काफ़िरों के लिए ऐसा कठिन होगा (९) कि उसमें आसानी न होगी।(१०) मुझे और उस शख़्श को जिसे मैंने अकेला पैदा किया छोड़ दो।(११) और मैंने उसको बहुत माल दिया।(१२) और लड़के जो उसके सामने हाज़िर रहते हैं।(१३) और हर तरह का सामान उसके लिए इकट्ठा कर दिया है।(१४) इस पर भी वह उम्मेद लगाये बैठा है कि हमें और भी कुछ दे।(१५) हर्गिज़ नहीं वह हमारी आयतों का दुश्मन था।(१६) हम जल्द उसे सख़्त सज़ा में फसावेंगे।(१७) वह तदबीर में लगा है और तदबीर कर रहा है।(१८) नाश हो—वह

कैसी तदवीरें कर रहा है।(१६) फिर भी वह नाश हो फिर कैसी तदवीरें कर रहा है। (२०) फिर उसने देखा (२१) फिर नाक चढ़ाई और मुँह सिकोड़ लिया।(२२) फिर पीठ फेर ली और घमण्ड किया। (२३) और कहने लगा कि ये जादू है जो चला आता है‡ (२४) ये तो बस किसी आदमी का कहा हुआ है।(२५) हम उसको जल्दी नरक में झोंक देंगे !(२६) और तू क्या जाने कि नरक (आग) क्या चीज़ है।(२७) वह न बाक़ी रखती है और न छोड़ती है।(२८) शरीर को झुलसा देती है।(२६) उस पर १६ चौकीदार हैं।(३०) और हमने फ़रिश्तों ही को आग का चौकीदार बनाया है और इनकी गिनती हमने काफ़िरों की जाँच के लिए ठहराई है ताकि किताबवाले यक़ीन करलें और ईमानवालों का और भी ईमान हो और किताबवाले और ईमानवाले शक न करें और जिन लोगों के दिलों में रोग है और जो काफ़िर हैं बोल उठें कि ऐसी बातों को कहने से ख़ुदा का क्या प्रयोजन है। इसी तरह ख़ुदा जिसको चाहता है भटकाता है और जिसको चाहता है राह दिखाता है और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करों का हाल उसके सिवाय कोई नहीं जानता और यह लोगों के वास्ते शिक्षा है।(३१) [रुकू १ आयात ३१]

नहीं-नहीं चाँद के समय।(३२) और रात को जब वह गुज़रने लगे।(३३) और सुबह को जब वह रोशनी हो।(३४) यह नरक एक बड़ी बात है।(३५) यह लोगों को डराना है।(३६) तुममें से उस शख़्स को जो आगे बढ़ना चाहे और पीछे रहना चाहे।(३७) हर एक जी अपने किये में फँसा है (३८) मगर दाहिनी तरफ़ वाले (३६) कि वह बैकुण्ठ में पूछते होंगे।(४०) अपराधियों से।(४१) कौन चीज़ तुमको नरक में ले आई। (४२) वह कहेंगे हम

‡ ये आयतें वलीद बिन मुग़ीरा के विषय मे उतरीं। उसने पहले तो क़ुरान सुन कर उसकी प्रशंसा की लेकिन बाद में अबू जिहल के भड़काने से उसको जादू बताने लगा। वह बड़ा धनी था और उसके कई लड़के थे। क़ुरैश में उसका बड़ा ऊँचा स्थान समझा जाता था।

नमाज़ न पढ़ते थे।(४३) और न हम ग़रीबों को खाना खिलाते थे (४४) और हम हुज्जत करने वालों के साथ हुज्जत किया करते थे।(४५) और हम न्याय के दिन को झुठलाते थे।(४६) यहाँ तक कि हमको विश्वास आया। (४७) फिर किसी सिफ़ारिशी की सिफ़ारिश उनके काम नहीं आयेगी। (४८) और उनको क्या हो गया है कि वह इस शिक्षा से फेरते हैं।(४९) गोया कि ये गधे हैं जो भाग जाते हैं।(५०) शेर के आगे से भागे जाते हैं। (५१) बल्कि इनमें का हरएक आदमी चाहता है कि उसको खुली किताबें मिल जावें। (५२) हर्गिज़ नहीं ये आख़िरत (क़यामत) से नहीं डरते। (५३) हर्गिज़ नहीं यह तो एक शिक्षा है। (५४) तो जो कोई चाहे इसको याद रक्खे।(५५) और जब तक ख़ुदा न चाहे वह हर्गिज़ याद न करेंगे वह डर के लायक़ और बख्शने के लायक़ है।(५६) [रुकू २ आयात २५]

—•—

७५ सूरे क़यामत ३१

मक्का में उतरी इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ।(१) और मैं जी की क़सम खाता हूँ जो (बुरे कामों पर) अपने आप मलामत करता है।(२) क्या आदमी ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा न करेंगे।(३) और हम इस बात पर शक्तिमान हैं कि उसके पोर पोर ठिकाने से बैठा दें।(४) बल्कि आदमी चाहता है कि उसके सामने ढिठाई करे।(५) वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा।(६) तो जब आँखें पथरा जायँगी।(७) और चन्द्रमा में ग्रहण लग जावेगा।(८) और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जायँगे। (९) तो उस दिन आदमी कहेगा की भागने की जगह कहाँ है। (१०) हरगिज़ नहीं शरण की जगह नहीं है।(११) उस दिन तेरे परवरदिगार की तरफ़ जाकर ठहरना होगा।(१२) उस दिन आदमी को बता दिया जायगा

कि उसने पहिले कैसे काम किये हैं और पीछे क्या छोड़ा है।(१३) बल्कि आदमी तो अपने आप पर खुद जलील होगा।(१४) और अगर्चि वह अपने बहुत उज़्र लावे।(१५) अपनी जुबान न हिला कि उसके लिए जल्दी करने लगे।(१६) उसका जमा करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मे है।(१७) जब हम उसको (जिब्रील के द्वारा) पढ़ा लिया करें तो तू भी उसके पीछे-पीछे पढ़।(१८) फिर उसका बयान करना हमारे ज़िम्मे है।(१९) मगर तुम कुछ जल्दबाज़ हो हो।(२०) दुनिया को छोड़ बैठे और आखिरत को पसंद करते हो (२१) उस दिन कितने मुँह ताज़े हैं।(२२) अपने परवरदिगार को देख रहे होंगे।(२३) और कितने मुँह उस दिन उदास होंगे।(२४) समझ रहे होंगे कि उनके साथ ऐसी सख़्ती होने को है जो कमर तोड़ देगी।(२५) नहीं जब जान हँसली तक आ पहुँचेगी।(२६) और कहा जायगा कौन झाड़-फूँक करेगा।(२७) और उसको विश्वास हो जायगा कि यह जुदाई है।(२८) और पिण्डली-पिण्डली से लिपट जायगी।(२९) उस दिन तेरे परवरदिगार की तरफ़ चलना होगा।(३०) [रुकू १ आयात ३०]

तो उसने न यक़ीन किया और न नमाज़ पढ़ी।(३१) बल्कि उसने उनको झुठलाया और पीठ फेरदी।(३२) फिर अपने घर को अकड़ता गया।(३३) खराबी तेरी फिर खराबी तेरी।(३४) फिर खराबी तेरी खराबी पर खराबी तेरी।(३५) क्या आदमी ख़याल करता है कि वह बेकार छोड़ दिया जायगा।(३६) क्या वह वीर्य की एक बूँद न था जो टपका।(३७) फिर लोथड़ा हुआ फिर बनाया और ठीक किया।(३८) फिर उस वीर्य से स्त्री और पुरुष का जोड़ा बनाया।(३९) क्या ऐसा शख़्स मुर्दे को नहीं जिला सकता।(४०)। [रुकू २ आयात १०]

——०——

† यानी क़ुरान को याद रखने के लिए जल्दी-जल्दी ज़बान न चला, इसका याद करना और उसका जमा करना हमारा काम है।

७६ सूरे दहर ९८

मक्का में उतरी, इसमें ३१ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। क्या आदमी के ऊपर से जमाने में एक ऐसा समय बीता जब वह कुछ भी चर्चा के योग्य न था।(१) हमने आदमी को मिले हुए वीर्य से पैदा किया कि उसको जाँचे इसलिये उसका सुननेवाला और देखनेवाला बनाया।(२) हमने उसे राह दिखा दी है अब वह शुक्रगुजार हो या नाशुक्रा।(३) हमने इन्कारियों के वास्ते जंजीरें और तौक़ और दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है।(४) निस्सन्देह सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिसमें कपूर की मिलावट होगी।(५) सोता जिसका पानी अल्लाह के सेवक पीवेंगे। और उसको जहाँ चाहें वहाँ ले जावेंगे।(६) वह अपनी मन्नतें (मन की कल्पना) पूरी करते हैं और उस दिन (क़यामत) से डरते हैं जिसकी बुराई फैली हुई होगी।(७) और उसकी मुहब्बत के लिए ग़रीबों को और अनाथों को और क़ैदियों को खाना खिलाते हैं।(८) हम तो तुमको खुदा की प्रसन्नता के लिए खिलाते हैं हम तुमसे बदला चाहते हैं और न धन्यवाद।(९) हमको अपने परवरदिगार से उस दिन का डर लग रहा है जब लोग मुँह बनाये भौंहें चढ़ाये होंगे।(१०) तो खुदा ने उस दिन की विपदा से बचा लिया और उनको ताजगी और खुशहाली उन्हें पहुँची।(११) और जैसा उन्होंने संतोष किया था उसके बदले में वैकुण्ठ और रेशमी वस्त्र उन्हें दिये।(१२) वैकुण्ठ में तख्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे न वह वहाँ धूप ही देखेंगे न ठण्ड।(१३) और उन पर वहाँ के वृक्षों की छाया होगी और उनपर फल भी नजदीक झुके होंगे।(१४) और उन पर चाँदी के बरतनों और गिलासों का दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे।(१५) शीशे भी चाँदी के वह उन्हीं के लिए बने होंगे।(१६) और वहाँ उनको प्याले पिलाये जायँगे जिसमें सोंठ मिली होगी।(१७) एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसबील होगा।(१८) और उनके गिर्द हमेशा नौजवान लड़के फिरते

हैं। जब तू उन्हें देखे बिखरे मोती समझेगा।(१९) जब तू देखे यहाँ पदार्थ और बड़ा राज्य तुमको दिखाई देगा।(२०) उनके ऊपर बारीक हरे रेशम और गाढ़े रेशम के कपड़े हैं और चाँदी के कड़े पहिने हैं और उनका परवरदिगार उन्हें पाक शराब पिलावेगा।(२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कमाई नेग लगी।(२२) [रुकू१ आ. २२]

हमने तुझ पर धीरे-धीरे क़ुरान उतारा।(२३) तू अपने परवरदिगार की राह देख और उनमें से किसी पापी नाशुक्रे की न मान।(२४) और अपने परवरदिगार का नाम सुबह और शाम याद कर।(२५) और कुछ रात में उसका सिजदा (दण्डवत) कर और बढ़ी रात तक उसकी पाकी बोल।(२६) यह लोग तो बस जल्दी होने वाली बात पसंद करते हैं और इस भारी दिन को छोड़ देते हैं।(२७) हमने उनको पैदा किया और उनकी गिरहबन्दी मजबूत बाँधी और जब हम चाहेंगे उनके बदले उन्हीं जैसे लोग ला बसायेंगे।(२८) शिक्षा है फिर जो कोई चाहे अपने परवरदिगार की तरफ़ पहुँचने का रास्ता ले।(२९) और तुम न चाहोगे। जब तक अल्लाह न चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिकमत वाला है।(३०) जिसको चाहे अपनी कृपा में ले लेता है और सरकश लोगों के लिए उसने दुखदाई सजा तैयार कर रक्खी है।(३१) [रुकू २ आयात ९]

—— :❀: ——

७७ सूरे मुर्सलात ३३

मक्का में उतरी इसमें ५० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। उन हवाओं की क़सम जो मामूली चालों से चलाई जाती हैं।(१) फिर जोर पकड़ कर तेज हो जाती हैं।(२) फिर बादलों को फैला देती हैं।(३) जुदा कर देती हैं (४) और दिलों में याद दिलाती हैं।(५) ताकि दलीलें समाप्त हों और डराया जाय।(६) तुम से जो वादा किया गया है वह जरूर होकर रहेगा।(७) यानी जब नक्षत्र (सितारे) धामे पढ़ जाँय।(८) और जब आसमान फट जावे।(९)

और जब पहाड़ उड़ाये जाँय।(१०) और जब पैग़म्बर नियत समय पर हाज़िर किये जावें।(११) कौनसा दिन इनके लिए नियत था।(१२) न्याय का दिन।(१३) और तू क्या जाने न्याय का दिन क्या चीज़ है।(१४) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है।(१५) क्या हमने अगलों को मार नहीं डाला (१६) फिर उनके पीछे हम पिछलों को कर देते हैं।(१७) पापियों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं।(१८) उस दिन झुठलाने वालों को तबाही है (१९) क्या हमने तुमको तुच्छ पानी से नहीं पैदा किया।(२०) फिर हमने उसको नियत समय तक एक रक्षित जगह में रक्खा।(२१) एक नियत समय तक रक्खा।(२२) फिर हमने अन्दाज़ा लगाया तो कैसा अच्छा अन्दाज़ किया।(२३) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है।(२४) क्या हमने ज़मीन को समेट जाने वाली नहीं बनाया† (२५) ज़िन्दों और मुर्दों के लिये।(२६) और उसमें ऊँचे-ऊँचे बोझिल पहाड़ खड़े किये और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया।(२७) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है।(२८) जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे उसकी तरफ़ चलो।(२९) छाया में चलो जिसके तीन टुकड़े हैं।(३०) उसमें ठण्डक नहीं और न गर्मी से बचाव है।(३१) वह महलों के बराबर लपटें फेंकती होगी।(३२) गोया वह ज़र्द (पीले) ऊँट हैं।(३३) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है।(३४) यही वह दिन है कि वह बात न कर सकेंगे।(३५) और न उनको आज्ञा दी जावेगी की उज़्र करें।(३६) क़यामत के दिन झुठलाने वालों की तबाही है।(३७) यही तो न्याय का दिन है। हमने तुमको और अगलों को जमा किया है (३८) तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चल सके तो चलाओ (३९) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है (४०) [रुकू १ आयात ४०]

परहेज़गार तो ज़रूर छाओं में और चश्मों में होंगे।(४१) और

† पृथ्वी (ज़मीन) ज़िन्दा आदमी को भी अपनी पीठ पर समेटती है और मुर्दा को भी। ज़िन्दा को अपनी पीठ पर समेटे है और मुर्दा को अपने पेट में।

मेवों में जो उनको भाते हों, होंगे।(४२) अपने किये का फल शौक से खाओ पीयो।(४३) नेक लोगों को हम इस तरह बदला देते हैं।(४४) उस दिन झुठलाने वालों पर बर्बादी है। (४५) (दुनिया में) खाओ और कुछ फ़ायदा उठाओ बेशक तुम अपराधी हो।(४६) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी हो।(४७) जब उन्हें (नमाज़ के वक़्त) कहा जाय झुको तो नहीं झुकते।(४८) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (४९) अब इसके बाद कौनसी बात पर यह ईमान लावेंगे।(५०) [रुकू २ आयात १०]

तीसवाँ पारा (अम)

७८ सूरे नबा ८०

मक्का में उतरी, इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला है। यह लोग आपस में क्या बात पूँछ रहे हैं। (१) क्या बड़ी ख़बर (क़यामत †) की बात।(२) जिसके बारे में यह जुदा-जुदा राय रखते हैं। (३) तो जल्द इनको मालूम हो जायगा।(४) फिर जल्द इनको मालूम हो जायगा (५) क्या हमने ज़मीन को फ़र्श, (६) और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया। (७) और हमने तुमको जोड़ा-जोड़ा (मर्द-औरत) पैदा किया।(८) और हमही ने तुम्हारी नींद को (मूजिब) आराम बनाया।(९) और हम ही ने रात को पर्दा बनाया। (१०) और हम ही ने दिन को रोज़ी के लिए बनाया। (११) हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात पुख़्ता (आसमान) बनाये। (१२) और हमने चमकता चिराग़ (सूर्य को) बनाया।(१३) और हमने बादलों से ज़ोर का पानी बरसाया।(१४) ताकि उससे अनाज और सब्ज़ियाँ निकालें।(१५) और घने घने

---

† क़यामत (महाप्रलय) क्या है ? इसके लिए पहला सिपारा देखिये।

बाग़ निकालें।(१६) बेशक फ़ैसले के दिन का एक वक़्त मुक़र्रर है।(१७) उस दिन सूर फूँका जायगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह चले आओगे। (१८) और आसमान फटकर दरवाज़े दरवाज़े हो जायेंगे। (१६) और पहाड़ चलाये जायेंगे वह धूल होकर रह जायेंगे।(२०) बेशक दोज़ख़ घात में है।(२१) सरकशों का (वही) ठिकाना (है) ।(२२) उसी में बरसों पड़े रहेंगे। (२३) वहाँ न ठंडक और न पीने (का मज़ा) चक्खेंगे। (२४) मगर गर्म पानी और पीव के सिवाय उनको कुछ पीने को भी नहीं मिलेगा।(२५) (यह उनके आमाल का) पूरा बदला (है) (२६) यह लोग हिसाब की उम्मीद न रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झुटलाते थे।(२८) और हमने हर चीज़ को लिख रक्खा है।(२६) तो (अपने किये का) मज़ा चक्खो और हम तो तुम्हारे लिए सज़ा ही बढ़ाते जायेंगे।(३०) [रुकू १ आयात ३०]

परहेज़गार बेशक कामयाब होंगे।(३१) (यानी रहने को) बाग़ और (खाने को) अंगूर (३२) और नौजवान औरतें हमउम्र।(३३) और छलकते हुए प्याले। (३४) वहाँ यह लोग न तो बेहूदा बात सुनेंगे और न ख़ुराफ़ात।(३५) यह तुम्हारे परवरदिगार का हिसाब से दिया (उनके कर्मों का बदला है)। (३६) आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ पैदाइश इन दोनों के बीच है सबका मालिक बड़ा मेहरबान है। क़यामत के दिन उस से बात नहीं कर सकेंगे।(३७) जब कि जिब्रील और फ़रिश्ते पाँति की पाँति खड़े होंगे किसी के मुँह से बात तो निकलने की नहीं। मगर जिसको (ख़ुदा) रहमान आज्ञा दे और वह बात भी ठीक कहे।(३८) यह दिन सच्चा है बस जो चाहे अपने परवरदिगार के साथ ठिकाना बना रक्खे। (३६) हमने तुमको नज़दीक आने वाली (क़यामत) सज़ा से डरा दिया है कि उस दिन आदमी उन (कर्मों) को देखेगा जो उसने अपने हाथों भेजे हैं और काफ़िर चिल्ला उठेगा कि ऐ काश मैं मिट्टी होता (४०) [रुकू २ आयात १०]

——:o:——

७९ सूरे नाज़िआत ८१

मक्का में उतरी, इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से (जो) रहमवाला मेहरबान है। § और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो घुसकर (सख़्ती से) रूह निकालते हैं।(१) और उन (फ़रिश्तों) की जो आसानी से जान निकाल लेते हैं।(२) और उन (फ़रिश्तों) को जो (आसमान और ज़मीन) के बीच तैरते फिरते हैं।(३) फिर दौड़कर आगे बढ़ते हैं।(४) फिर जैसा हुक्म होता है बन्दोबस्त करते हैं।(५) जिस दिन ज़मीन काँप उठेगी।(६) और भूकम्प के बाद भूकम्प आयेंगे।(७) उस दिन (लोगों के) दिल धड़क रहे होंगे।(८) उनकी आँखें झुकी होंगी।(९) (गुनहगार) कहते हैं क्या हम उल्टे पाँव लौटाये जायँगे।(१०) क्या जब (गल-सड़कर) हम हड्डियाँ हो जायँगे।(११) कहते हैं कि ऐसा हुआ यह तो लौटना नुक़सान की बात है।(१२) वह तो एक झिड़की है (१३) और एक दम से लोग मैदान में आ मौजूद होंगे।(१४) (ऐ पैग़म्बर) मूसा का क़िस्सा भी तुमको पहुँचा है।(१५) जब कि उनको तोआ के पाक मैदान में उनके परवरदिगार ने पुकारा था।(१६) कि फ़िरऔन* के पास जा उसने सिर बहुत उठा रक्खा है।(१७) फिर कहा कि भला तुझको इसकी भी कुछ फ़िक्र है कि तू पाक साफ़ हो जाय।(१८) और मैं तुझको तेरे परवरदिगार की तरफ़ रास्ता दिखाऊँ और तू डरे।(१९) फिर मूसा ने उसको बड़ी (असा) करामात दिखाई।(२०) तो उसने झुठलाया और न माना।(२१) फिर लौट गया और तदबीर करने लगा।(२२) यानी (लोगों को) जमा किया और मुनादी करा दी।(२३)

---

§ इन आयतों में जिसकी क़सम खाई गई उसके बारे में एक मत नहीं है। कोई-कोई कहता है कि ये सब वायु हैं। कोई कहता है कि ये एक तरह के जीव हैं। अधिकतर लोगों का विचार है कि ये फ़रिश्ते हैं।

*फ़िरऔन व हज़रत मूसा का हाल जानने के लिए पहला सिपारा देखिये।

और कह दिया कि मैं तुम्हारा बड़ा परवरदिगार हूँ।(२४) तो ख़ुदा ने उसको आख़िरत और दुनिया में धर पकड़ा।(२५) जो मनुष्य (ख़ुदा से) डरता है उसके लिए इसमें शिक्षा है। (२६) [रुकू १ आ. २६]

क्या तुम्हारा पैदा करना मुश्किल है या आसमान का कि उसको उस (ख़ुदा) ने बनाया।(२७) उसकी छत को ख़ूब ऊँचा रक्खा। फिर उसको हमवार किया। (२८) और उसकी रात को अँधेरा बनाया और (दिन को) उसकी धूप निकाली। (२९) और इसके बाद ज़मीन को बिछाया। ३०) उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला।(३१) और पहाड़ों को गाड़ दिया। (३२) (यह सब) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के फ़ायदे के लिये (किया)।(३३) तो जब बड़ी आफ़त आ पड़ेगी। (३४) जो कुछ आदम ने किया है उस दिन उसको याद आयेगा। (३५) और दोज़ख़ सब देखने वालों के सामने ज़ाहिर किया जायगा।(३६) तो जिसने सरकशी की। (३७) और दुनिया की ज़िन्दगी को मुक़द्दम रक्खा।(३८) तो ठिकाना दोज़ख़ है।(३९) और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों (नफ़स) को इच्छाओं (ख़्वाहिशों) से रोकता रहा।(४०) तो (उसका) ठिकाना बहिश्त है।(४१) (सो ऐ पैग़म्बर) तुम से क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उसका वक़्त कब है। (४२) तुम उसका वक़्त बताने की चर्चा में कहाँ पड़े हो। (४३) (आख़िरी) थाह तेरे परवरदिगार को ही है। (४४) तू तो बस उसको डरा सकता है जो उससे डरे।(४५) लोग जिस दिन क़यामत को देखेंगे तो (मालूम होगा) गोया वह बस दिन के अख़ीर पहर ठहरे या अव्वल पहर (४६)। [रुकू २ आ. २०]

—०—

८० सूरे अबस २४

मक्का में उतरी इसमें ४२ आयतें और १ रुकू हैं

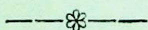
अल्लाह के नाम से (जो) रहमवाला मेहरबान है। (मुहम्मद) इतनी बात पर ग़ुस्से में हुए और मुँह मोड़

बैठे† ।(१) जब एक अन्धा§ उनके पास आया ।(२) और (कहा ऐ पैग़म्बर) तू क्या जाने शायद वह पाक हो जाय ।(३) या शिक्षा सुने या उसको शिक्षा लाभदायक हो ।(४) तो जो मनुष्य बेपरवाही करता है ।(५) उसकी तरफ़ तू ख़ूब ध्यान देता है ।(६) हालाँकि वह पाक न हो तो तुझ पर कुछ (इल्ज़ाम) नहीं ।(७) और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आये । (८) और जो डर कर आये ।(९) तो उससे बेपरवाही करता है ।(१०) देखो क़ुरान तो नसीहत है । (११) जो चाहे इसे याद रखे ।(१२) और क़ाबिल-अदब वर्क़ों में (लिखा हुआ है) । (१३) जो ऊँचे पर रक्खे (और) पाक हैं । (१४) ऐसे लिखने वालों के हाथों में ।(१५) जो बुज़ुर्ग और भले हैं ।(१६) आदमी पर मार । वह कैसा नाशुक्रा है ।(१७) (ख़ुदा ने) उसको किस चीज़ से पैदा किया ।(१८) नुत्फ़े (वीर्य) से उसको बनाया फिर उसका एक अन्दाज़ा बाँध दिया। (१९) फिर उसके लिए राह आसान की । (२०) फिर उसको मार दिया । फिर उसको क़ब्र में दाख़िल किया ।(२१) फिर जब चाहेगा उसको उठा कर खड़ा करेगा ।(२२) नहीं, ख़ुदा ने जो कुछ आदमी को आज्ञा दी उसने उसकी तामील नहीं की । (२३) तो आदमी को चाहिए कि अपने खाने की तरफ़ देखे । (२४) कि हमने पानी बरसाया । (२५)

† यह आयतें अब्दुल्ला के बारे में उतरी । वह अन्धे थे । एक दिन मुहम्मद साहब अरब के बड़े-बड़े सर्दारों को इस्लाम की बातें समझा रहे थे कि यह आगये और बीच में बोल उठे कि हम को बताइये । यह बात मुहम्मद साहब को बुरी लगी । इसी पर उनको इस तरह समझाया गया ।

§ एक बार रसूलुल्लाह मक्का के सरदारों में इस्लाम की चर्चा कर रहे थे । उसी समय एक अन्धे साथी ने आकर आँहज़रत से 'क़ुरान' की बाबत पूछना शुरू किया । मक्का के रईस घमंडी थे । रसूलल्लाह ने भी उनके बीच उस अन्धे को आया देख मुँह घुमा लिया । ख़ुदा ने आँहज़रत को चेतावनी दी कि अन्धा ग़रीब जो ख़ुदा से डरता है उसकी परवाह न करके उन लोगों की फ़िक्र करते हो जो अपने घमंड में दीन की कोई परवाह नहीं करते ।

फिर हमने ज़मीन को फाड़ा।(२६) फिर हमने ज़मीन में (अनाज) उगाया (२७) और अंगूर और तरकारियाँ।(२८) और जैतून और खजूरें (२९) और घने-घने बाग़। (३०) और मेवे और चारा (३१) तुम्हारे और चारपायों के लिए।(३२) तो जिस वक़्त शोर (प्रलय) होगा जिसके सुनने से कान बहरे हो जायँ (३३) जिस दिन आदमी अपने भाई।(३४) और अपनी मा और अपने बाप।(३५) और अपनी बीबी और अपने बेटों से भागेगा।(३६) इनमें से हर मनुष्य को उस दिन (अपने-अपने छुटकारे की) फ़िक्र लगी होगी कि बस वही उसके लिए काफ़ी होगी।(३७) कितने मुँह उस दिन चमकते होंगे।(३८) हँसते ख़ुशियाँ करते।(३९) और कितने मुँह उस दिन (ऐसे) होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी।(४०) उन पर स्याही छाई होगी।(४१) यही काफ़िर बदकार हैं।(४२) [रुकू १ आ. ४२]



८१ सूरे तकवीर ७

मक्का में उतरी, इसमें २९ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जिस वक़्त सूरज लपेट लिया जाय।(१) और जिस वक़्त तारे झड़ें।(२) और जिस वक़्त पहाड़ चलाये जायँ।(३) और जिस वक़्त दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ छुटी-छुटी फिरें।(४) और§ जिस वक़्त जंगली जानवर आ मरें।(५) और जिस वक़्त दरिया पाट दिये जाँय।(६) और जिस समय रूहों (जीवों) को मिलाया जाय।(७) और जिस समय लड़की से जो ज़िन्दा क़ब्र में रख दी गई थी पूछा जाय।(८) कि किस क़ुसूर के बदले में मारी गई।(९) और जिस समय कर्मों का लेखा खोला जाय।(१०) और जिस समय आसमान की खाल खींची जाय।(११) और जिस समय दोज़ख़

§ यह हाल क़यामत का है। उस दिन ज़मीन और आसमान सब का बुरा हाल होगा और कोई किसी की बात न पूछेगा।

की आग दहकाई जाय।(१२) और जिस समय बहिश्त नज़दीक लाया जाय।(१३) (उस समय) हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वह (आख़िरत) लाया होगा।(१४) तो मैं उन (सितारों) की क़सम खाता हूँ जो चलते-चलते पीछे हटने लगते हैं।(१५) और जो सैर करते और ग़ायब हो जाते हैं।(१६) और रात की क़सम जब उसका उठान हो।(१७) और सुबह की (क़सम) जिस वक़्त उसकी पौ फटती है।(१८) बेशक यह (क़ुरान) एक प्रतिष्ठित फ़रिश्ते का पैग़ाम है।(१९) अर्श के मालिक (ख़ुदा) के नज़दीक उसका बड़ा रुतबा है।(२०) सरदार और अमानतदार है।(२१) और (ऐ मक्का वालों) तुम्हारे दोस्त (मुहम्मद कुछ) बावले नहीं।(२२) और बेशक उन्होंने उस (जिब्रील) को साफ़ आसमान में देखा।(२३) और यह गुप्त बातें छिपाने वाला नहीं।(२४) और यह (क़ुरान) शैतान मरदूद का कहा हुआ नहीं है।(२५) फिर तुम किधर (बहके) चले जा रहे हो।(२६) यह क़ुरान तो दुनिया जहान के लिए शिक्षा है।(२७) (लेकिन) उस शख़्स के लिए जो तुममें से सीधी राह पर चले।(२८) और तुम कुछ नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह तमाम संसार का परवरदिगार है, चाहे।(२९) [रुकू १ आयात २९]

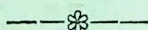
---

८२ सूरे इन्फ़ितार ८२

मक्का में उतरी, इसमें १९ आयतें और १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मिहर्बान है। जब कि आसमान फट जाये।(१) और जब सितारे झड़ पड़ें।(२) और जब नदियाँ बह चलें।(३) और जब क़ब्रें उखाड़ दी जायँ।(४) (तब) हर मनुष्य जान लेगा जो (कर्म) उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा।(५) ऐ आदमी किस चीज़ ने तेरे परवरदिगार बुज़ुर्ग के बारे में तुझको धोखा दिया है।(६) जिसने तुझको बनाया और दुरुस्त बनाया और तेरे जोड़-बन्द मुनासिब रक्खे।(७) जिस सूरत से चाहा

तेरा पैबन्द (जोड़) मिला दिया।(८) मगर बात यह है कि तुम सज़ा को नहीं मानते।(९) हालाँकि तुम पर चौकीदार हैं।(१०) आलीक़दर लिखने वाले।(११) जो कुछ भी तुम करते हो उनको मालूम रहता है।(१२) बेशक सुकर्मी मजे में होंगे।(१३) और वह कुकर्मी बेशक दोज़ख में होंगे।(१४) और क़यामत के दिन उसमें दाख़िल होंगे।(१५) और वह उससे भाग नहीं सकते।(१६) और (ऐ पैग़म्बर) तू क्या जाने क़यामत का दिन क्या चीज़ है।(१७) फिर भी तू क्या जाने क़यामत का दिन क्या चीज़ है।(१८) जिस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स को कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकेगा और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी।(१९) [रुकू १ आयात १९]



८३ सूरे ततफ़ीफ़ (मुतफ़्फ़फ़ीन) ८६

मक्का में उतरी, इसमें ३६ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से रहमवाला मेहर्बान है। कम देने (तौलने) वालों की तबाही है।(१) जब मनुष्यों से माप लें तो पूरा-पूरा लें।(२) और जब दूसरों को नापकर या तौलकर दें तो कम दें।(३) क्या इनको इस बात का ख़याल नहीं कि (क़यामत को) यह उठा खड़े किये जायंगे।(४) बड़े दिन को।(५) जिस दिन लोग दुनिया के परवरदिगार के सामने खड़े होंगे।(६) कुकर्मी लोगों के कर्म रोज़नामचा और क़ैदियों के रजिस्टर में हैं।(७) और (ऐ पैग़म्बर) तू क्या समझे कि क़ैदियों का रजिस्टर क्या चीज़ है।(८) वह किताब है (जिसकी ख़ानापूरी होती रहती है) (९) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है।(१०) जो क़यामत के दिन को झुठलाते हैं।(११) और उस दिन को वही झुठलाता है जो (पापी) हद से बढ़ जाता है।(१२) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाँय तो कहे कि अगले लोगों के ढकोसले हैं।(१३) बल्कि इनके दिलों पर इनके आमालों के जंग बैठ गये हैं।(१४) यही

अपने परवरदिगार के सामने नहीं आने पायेंगे।(१५) फिर यह लोग अवश्य दोज़ख में दाखिल होंगे।(१६) फिर कहा जायगा कि यही तो वह है जिसको तुम झुठलाते थे।(१७) अच्छे मनुष्यों का कर्म लेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है।(१८) और (ऐ पैग़म्बर) तुम क्या समझो कि बड़े रुतबे वाले लोगों का रजिस्टर क्या चीज़ है।(१९) एक किताब है (जिसकी) खानापूरी होती रहती है।(२०) फ़रिश्ते जो नज़दीक हैं उस (पर तैनात हैं)।(२१) बेशक अच्छे (मनुष्य) आराम में होंगे।(२२) तख्तों पर बैठे देख रहे होंगे।(२३) तू उनके चेहरों पर नियामत की ताज़गी देखेगा।(२४) उनको खालिस शराब मुहर की हुई पिलाई जायगी।(२५) जिस (बोतल) की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिए कि उसी पर इच्छा करें।(२६) और उस (शराब) में तसनीम (के पानी) की मिलावट होगी।(२७) (तसनीम बैकुण्ठ का एक) चश्मा है जिसमें से नज़दीक के (मनुष्य) पियेंगे।(२८) बेशक मुजरिम ईमानवालों के साथ हँसी किया करते थे।(२९) और जब उनके पास से गुज़रते, इशारा करते थे।(३०) और जब लौटकर अपने घर जाते तो बातें बनाते थे।(३१) और जब इनको देखते तो बोल उठते कि यही गुमराह हैं।(३२) हालाँकि ईमान वालों पर निगहबान बनाकर तो (इनको) नहीं भेजा गया।(३३) तो आज (क़यामत में) ईमानवाले काफ़िरों पर हँसेंगे।(३४) तख्तों पर बैठे (सैर) देख रहे होंगे।(३५) अब तो काफ़िरों ने अपने किये का बदला पाया।(३६) [रुकू १ आयात ३६]

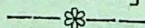
—o—

८४ सूरे इन्शिक़ाक़ ८३

मक्का में उतरी इसमें २५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है। जब आसमान फट जायगा।(१) और अपने परवरदिगार की बात सुनेगा और यह उसका फ़र्ज़ ही है।(२) और जब जमीन तान दी जायगी।(३) और

जो उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जायगी।(४) और अपने परवरदिगार की बात सुनेगी और यह तो उसका फ़र्ज़ ही है।(५) ऐ आदमी तू कोशिश करके परवरदिगार की ओर जाता है और तू उससे ज़रूर मिलेगा।(६) तो जिसको उसका कर्म-लेखा दाहिने हाथ में दिया जायगा।(७) तो उससे आसानी के साथ हिसाब लिया जायगा।(८) और वह ख़ुश-ख़ुश अपने बाल बच्चों में वापिस जायगा।(९) और जिसको उसका कर्म-लेखा उसकी पीठ के पीछे से दिया जायगा।(१०) वह मौत मनावेगा।(११) और जहन्नुम में जायगा।(१२) (यह) अपने बाल बच्चों के साथ मगन था।(१३) वह समझता था कि (ख़ुदा की ओर) फिर न आएगा।(१४) हाँ उसका परवरदिगार उसे देख रहा था।(१५) सो मैं शाम की सुर्ख़ी की क़सम खाता हूँ।(१६) और रात को जिन चीज़ों पर वह अन्धेरा करती है।(१७) और चाँद की क़सम जब पूरा हो।(१८) कि तुम दर्जा बदर्जा मञ्ज़िल को तै करोगे।(१९) तो इन (काफ़िरों को) क्या है कि ईमान नहीं लाते।(२०) और जब इनके सामने क़ुरान पढ़ा जाय तो सिजदा नहीं करते।(२१)☆[सि.१३] बल्कि काफ़िर झुठलाते हैं।(२२) और ख़ुदा ख़ूब जानता है जो कुछ दिल में रखते हैं।(२३) तो (ऐ पैग़म्बर) इनको दुखदाई सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो।(२४) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिये अत्यन्त उत्तम फल है।(२५) [रुकू १ आयात २५]



८५ सूरे बुरूज २७

मक्का में उतरी, इसमें २२ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। आसमान की क़सम जिसमें बुर्ज हैं।(१) और उस दिन की जिसका वादा है।(२) और गवाह† की और जिसके सामने गवाही देता है उसकी (क़सम)।(३)

† यहाँ गवाह का क्या अर्थ है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके विषय

और खाइयाँ खोदने वाले मारे गये।(४) आग खरे ईंधन से।(५)
जब वह खुद उस पर बैठे हुए थे।(६) और ईमानवालों पर अपने
किये के गवाह थे।(७) और वह ईमानवालों की इसी बात से चिढ़े
कि वह अल्लाह पर ईमान लाये जो बलवान और प्रशंसनीय है।(८)
आसमानों और ज़मीन का राज्य उसी का है और अल्लाह हर चीज़
से जानकार है।(९) जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली
स्त्रियों को दुःख देते हैं और तौबा नहीं करते तो उनको दोज़ख की सज़ा है
और उनको जलने की सज़ा है।(१०) जो लोग ईमान लाये और
उन्होंने सुकर्म किए उनके लिए (बहिश्त के) बाग़ हैं जिनके नीचे
नहरें बह रही होंगी यही बड़ी कामयाबी है।(११) तेरे परवरदिगार
की पकड़ बहुत सख्त है।(१२) वही पहली बार पैदा करता और
दुबारा भी करेगा।(१३) और वह बख़शने वाला और प्रेम करने
वाला है।(१४) अर्श (तख्त) का मालिक बड़ी शान वाला है।(१५)
जो चाहता है करता है।(१६) क्या तेरे पास लश्करों की खबर
पहुँची है।(१७) फ़िरऔन की और समूद की।(१८) मगर काफ़िर
झुठलाने में (लगे) हैं।(१९) और अल्लाह उनको उनके सब ओर
से घेरे हुए है।(२०) बल्कि यह क़ुरान बड़ी शान का है।(२१)
लौह-महफ़ूज़† में लिखा हुआ है।(२२) [रुकू १ आयात २२]

———o———

में लोगों के मत अलग-अलग हैं। कोई कहता है शाहिद वह है जो क़यामत में जमा होंगे और कोई कहता है कि खुदा शाहिद है और बन्दे मशहूद और कोई कहता है कि शाहिद आदमी के अंग हैं और वह आप मशहूद है।

† मक्का के बेदीन लोग दीन वालों पर ज़ुल्म कर रहे थे। उन्हें खाइयों में डालते, ज़िन्दा जला देते थे। उसीकी तरफ़ यह इशारा है; व दीनदारों को दिलासा है कि अंत में सचाई ही की जीत है। 'लौह महफ़ूज़' लोहे की एक तख्ती है जिसमें खुदा ने सब कुछ शुरू से आख़ीर तक लिख रक्खा है जो दुनिया में होने वाला है इसे जान लेना इन्सान की ताक़त से बाहर है।

८६ सूरे तारिक़ ३६

मक्का में उतरी, इसमें १७ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। आसमान की और रात को आने वाले की क़सम।(१) और तू क्या समझे कि रात को आनेवाला क्या है।(२) वह चमकता हुआ तारा है।(३) कोई मनुष्य नहीं जिस पर चौकीदार न हो।(४) तो मनुष्य को चाहिये कि वह जिस चीज़ से पैदा किया गया है।(५) वह पानी से पैदा किया गया है जो (वीर्यपात के समय) उछल कर।(६) पीठ और छाती की हड्डियों के बीच से निकलता है।(७) बेशक ख़ुदा (मरे पीछे) उसके लौटाने पर शक्तिमान है।(८) जिस दिन भेद जांचे जायगे।(९) (उस दिन) न तो आदमी का कुछ बल चलेगा और न कोई सहायक होगा।(१०) पानी वाले आसमान की क़सम।(११) और फट जानेवाली ज़मीन की क़सम।(१२) ज़रूर यह कथन बिलकुल सही है।(१३) और यह कुछ हँसी की बात नहीं।(१४) यह (काफ़िर) दाँव कर रहे हैं।(१५) और हम (अपने) दाँव कर रहे हैं।(१६) तो (ऐ पैग़म्बर) इन काफ़िरों को मुहलत दे इनको थोड़ी सी मोहलत दे।(१७) [रुकू १ आयात १७]

—०—

८७ सूरे आला ८

मक्का में उतरी इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर) अपने आलीशान परवरदिगार के नाम की माला फेर।(१) जिसने (सृष्टि को) बनाया और दुरुस्त किया।(२) और जिसने अन्दाज़ा किया और राह लगा दी।(३) और जिसने चारा निकाला।(४) फिर उसको काला-काला कूड़ा कर दिया।(५) (ऐ पैग़म्बर) हम तुमको (क़ुरान) पढ़ा देंगे तुम भूलने न पाओगे।(६) मगर जो

ख़ुदा चाहे निःसन्देह ख़ुदा पुकार कर पढ़ने को भी जानता है और आहिस्ता पढ़ने को भी।(७) और हम तेरे लिये और भी आसानी कर देंगे।(८) याद दिलाते रहो। (जहाँ तक) याद दिलाना लाभदायक हो।(९) जो डरता है वह समझ जायेगा।(१०) मगर भाग्यहीन तो उससे भागता ही रहेगा।(११) जो बड़ी आग में पड़ेगा।(१२) फिर न तो उसमें मरे ही गा और न ज़िन्दा ही रहेगा।(१३) जो पाक रहा वही कामयाब हुआ।(१४) और अपने परवरदिगार का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा।(१५) मगर तुम लोग दुनिया की ज़िन्दगी को पकड़ते हो।(१६) हालाँकि क़यामत कहीं बढ़कर और अधिक पुख़ता है।(१७) यही बात तो अगली किताबों में है।(१८) यानी इब्राहीम और मूसा की किताबों में है।(१९) [रुकू १ आयात १९]

——०——

८८ सूरे ग़ाशियह ६८

मक्का में उतरी इसमें २६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। तुझको उस छिपा रखने वाली (क़यामत) की कुछ बात पहुँची है।(१) कितने मुँह उस रोज़ उतरे हुए होंगे।(२) मेहनत उठा रहे होंगे।(३) थक रहे होंगे दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे।(४) इनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा।(५) काँटों के सिवाय और कोई खाना इनको मयस्सर नहीं।(६) जिनसे न तो मोटा हो और न भूख ही जाय।(७) कितने मुँह उस रोज़ ख़ुश होंगे।(८) अपनी कोशिश से ख़ुश।(९) ऊपर वाले स्वर्ग में होंगे।(१०) वहाँ बेहूदा बातें न सुनेंगे।(११) उसमें चश्मे बह रहे होंगे।(१२) उसमें ऊँचे तख़्त होंगे।(१३) और आबख़ोरे रक्खे होंगे (१४) और गाव तकिये एक पंक्ति में लगे होंगे।(१५) और मसनद बिछे हुए।(१६) तो क्या यह ऊँटों की तरफ़ नहीं देखते

कि कैसे पैदा किये गये हैं।(१७) और आसमान की तरफ़ कि वह कैसा ऊँचा बनाया गया है।(१८) और पहाड़ों की तरफ़ कि वह कैसे खड़े किये गये हैं।(१९) और ज़मीन की तरफ़ कि कैसी बिछाई गई है।(२०) तो (ऐ पैग़म्बर) याद दिलाये जा तू तो बस याद ही दिलाने वाला है।(२१) तू उन पर दरोग़ा तो नहीं है।(२२) मगर जो मुँह फेरे और इन्कार करे।(२३) तो ख़ुदा उसको बड़ी सज़ा देगा।(२४) निस्सन्देह इनको तो हमारी तरफ़ लौटकर आना है।(२५) फिर उनसे हिसाब लेना हमारा काम है।(२६) रुकू १ आयात २६]

——०——

८९ सूरे फ़जर १०

मक्का में उतरी, इसमें ३० आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहरबान है। सुबह की क़सम (१) और दस§ रातों की (क़सम)।(२) जुफ़्त और ताक़ की क़सम।(३) और रात जब कि गुज़रने लगे।(४) बुद्धिमानों के लिए तो इनमें बड़ी भारी क़सम है।(५) क्या तूने न देखा कि तेरे परवरदिगार ने आद* के साथ कैसा किया।(६) इरम के साथ

§ रातों से क्या मतलब है? कोई कहता है इनसे १ से १० रमज़ान मुराद है और कोई कहता है उनसे १ से दसवीं ज़िलहिज्ज (हज का महीना)।

* मिस्र के फ़िरऔनों की तरह अरब में भी 'आद' और 'समूद' नाम की दो बड़ी नामवर क़ौमें हो गुज़रीं थीं। इनको आलीशान इमारतें व बड़ी-बड़ी गुफ़ाएँ बनवाने का बड़ा शौक़ था। बड़े मज़बूत व ताक़तवर लोग थे। बाद में बुराई में पड़कर सरकश और ज़ालिम हो गये। ख़ुदा ने उनको सज़ा दी और वह क़ौमें मटियामेट हो गईं। अरब के दक्खिन में 'आद' और उत्तर-पश्चिम की ओर 'समूद' लोगों के खण्डहर अब भी कहीं-कहीं देखने को मिलते हैं।

कैसा किया।(७) जो ऐसे बड़े डील-डौल के थे कि शहरों में कोई उन ऐसे पैदा नहीं हुए।(८) और समूद जिन्होंने घाटी में पत्थरों को तराश कर घर बनाया था।(९) और फ़िरऔन तो मेख़ें रखता था।(१०) जो शहरों में सरकश हुए।(११) और उनमें बहुत फ़साद किया।(१२) तो तेरे परवरदिगार ने इस पर सज़ा का कोड़ा फटकारा।(१३) तेरा परवरदिगार (नाफ़र्मानों की) ज़रूर घात में है।(१४) लेकिन मनुष्य है जब उसका परवरदिगार उसको जाँचता है और इज्ज़त और नियामत देता है तो कहता है कि मेरे परवरदिगार ने मुझे प्रतिष्ठा दी है।(१५) और जब वह उसको दूसरी तरह जाँचता है और उस पर उसकी रोज़ी तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरा परवरदिगार मुझे तंग करता है।(१६) हरगिज़ नहीं बल्कि तुम अनाथ की ख़ातिर नहीं करते।(१७) और न एक दूसरे को ग़रीबों का खाना खिलाने का बढ़ावा देते हो।(१८) और मुर्दों तक का छोड़ा हुआ माल समेट-समेट कर खाते हो।(१९) और माल को बहुत ही प्यारा समझते हो।(२०) हरगिज़ नहीं जब ज़मीन मारे धक्के के चकनाचूर हो जाय(२१) और तेरा परवरदिगार आ गया और फ़रिश्ते पाँति की पाँति (२२) और उस दिन जहन्नुम नज़दीक लाया जावेगा उस दिन आदमी याद करेगा मगर उसके याद करने से क्या होगा।(२३) वह कहेगा हा शोक! मैंने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहिले से कुछ किया होता।(२४) तो उस दिन उसकी जैसी कोई सज़ा न देगा (२५) और न कोई उसके जैसा जकड़ेगा।(२६) ऐ इतमीनान पाने वाली रूह (आत्मा)।(२७) अपने परवरदिगार की ओर चल तू उससे राज़ी और वह तुझसे राज़ी।(२८) फिर मेरे बन्दों में जा मिल।(२९) और मेरे बहिश्त में जा दाख़िल हो।(३०) [रुकू १ आयात ३०]

——०——

९० सूरे बलद ३५

मक्का में उतरी, इसमें २० आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। मैं इस शहर (मक्का) की क़सम खाता हूँ।(१) तू इसी शहर से उतरा हुआ है।(२) और क़सम है पैदा करने वाले (आदम) की और उसकी औलाद की।(३) हमने आदमी को मेहनत के लिये बनाया।(४) क्या वह इस ख़्याल में है कि उस पर किसी का बस न चलेगा?(५) वह कहता है कि मैंने बहुत माल उड़ा दिये।(६) क्या वह यह समझता है कि उसे कोई नहीं देखता।(७) क्या हमने उसके दो आँखें नहीं बनाईं (८) और जीभ और दो ओंठ नहीं दिये।(९) और उसको दो राहें (नेकी-बदी) नहीं दिखाईं।(१०) फिर वह घाटी में से होकर नहीं निकला।(११) और (ऐ पैग़म्बर) तू क्या जाने घाटी क्या चीज़ है।(१२) गर्दन का छुड़ा देना (ग़ुलाम आज़ाद करना)।(१३) या भूख के दिनों में खाना खिलाना।(१४) नातेदार अनाथ को।(१५) या दीन मिट्टी पर बैठने वाले को खिलाना।(१६) फिर उन लोगों में होना जो ईमान लायें और एक दूसरे को सब्र और रहम की शिक्षा देते रहें।(१७) यही लोग ख़ुशनसीब होंगे।(१८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही बदबख़्त होंगे।(१९) इनको आग में डालकर किवाड़ भेड़ दिये जाँयगे।(२०) [रुकू १ आ.२०]

———o———

९१ सूरे शम्स २६

मक्का में उतरी, इसमें १५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। सूरज और उसकी धूप की क़सम।(१) (बाद में) जब चाँद उदय होता है उसकी क़सम।(२) और दिन की क़सम जब कि वह सूरज को उदय करे।(३) और रात की क़सम जब वह सूरज को छिपाले।(४) और

आसमान की और जिसने उसको बनाया।(५) और ज़मीन की क़सम और जिसने उसे बिछाया।(६) और इन्सान की क़सम और जिसने उसे दुरुस्त बनाया।(७) और उसके दिल में उसकी बदी और परहेज़गारी सुझा दी।(८) जिसने अपने जीव को पाक किया वह मुराद को पहुँचा।(६) और जिसने उसको दबा दिया वह घाटे में रहा।(१०) समूद ने अपनी सरकशी की वजह से (पैग़म्बर को) झुठलाया।(११) जब कि उन में एक बड़ा कुकर्मी उठा।(१२) तो ख़ुदा के पैग़म्बर ने उनसे कहा कि यह ख़ुदा की उँटनी है इसे पानी पीने दो।(१३) इस पर भी उन लोगों ने सालेह को झुठलाया और उँटनी के पाँव काट डाले तो उनके परवरदिगार ने उनके पाप के बदले उन्हें मार डाला और सबों को बराबर कर दिया।(१४) और वह नहीं डरता कि बदला लेंगे।(१५) [रुकू १ आयात १५]

——०——

९२ सूरे लैल ९

मक्का में उतरी, इसमें २१ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। रात की क़सम जब कि वह ढाँकले।(१) और दिन की (क़सम) जब वह ख़ूब रोशन हो।(२) और उसकी क़सम जिसने नर-मादा को बनाया।(३) तुम लोगों की कोशिश बेशक जुदा-जुदा है।(४) तो जिसने दान दिया और बुराई से बचा।(५) और अच्छी बात को सच समझा।(६) तो हम आसानी की जगह उसे आसान कर देंगे।(७) और जो कंजूसी करे और बेपरवाही करे।(८) और अच्छी बात को झुठलाये।(६) तो हम उसको सख़्ती की ओर पहुँचायेंगे (१०) और जब गिरेगा तो उसका माल उसके कुछ भी काम न आयेगा।(११) हमारा काम तो राह दिखा देना है।(१२) और

क़यामत और दुनिया हमारे ही अधिकार में हैं।(१३) और हमने तो तुमको भड़कती हुई आग से डरा दिया है।(१४) इससे वही भाग्यहीन दाख़िल होगा।(१५) जो झुठलाता और मुँह फेरता रहा।(१६) और परहेज़गार (संयमी) उससे दूर रक्खा जायगा।(१७) जिसने अपने को पाक करने के लिए अपना माल दिया।(१८) और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला दे।(१९) (वह तो सिर्फ़) ऊँचे परवरदिगार की प्रसन्नता चाहता है।(२०) और वह अवश्य प्रसन्न होगा।(२१) [रुकू १ आयात २१]

——०——

९३ सूरे ज़ुहा ११

मक्का में उतरी, इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। दिन चढ़े की क़सम।(१) और रात की क़सम जब ढाँकले।(२) तेरे परवरदिगार ने तुझको छोड़ा नहीं* और न वह नाख़ुश हुआ। (३) और तेरी इस ज़िन्दगी से आख़िरत अच्छी होगी।(४) और तेरा परवरदिगार आगे चलकर तुझको इतना देगा कि तू ख़ुश हो जायगा। (५) क्या तुझको उसने अनाथ नहीं पाया और (फिर) जगह दी।(६) और तुझको गुमराह देखा और राह दिखाई। (७) और तुझको मुफ़लिस पाया और मालदार बना दिया। (८) तो अनाथ पर ज़ुल्म न कर।(९) और माँगने वाले को मत झिड़क।(१०) और अपने परवरदिगार के एहसानों को बयान कर दे।(११) [रुकू १ आ. ११]

——०——

* एक मौक़े पर रसूलुल्लाह के पास आयतों का आना रुक गया था। लोग ताना कसने व मज़ाक़ उड़ाने लगे थे। आँहज़रत भी उदास थे। उसी समय उनको दिलासा देते हुए यह आयत उतरी कि ख़ुदा ने (ऐ पैग़म्बर) तुझको कभी नहीं छोड़ा। वह तुझको इतना कुछ देगा जिसके आगे सब मात हैं।

९४ सूरे इन्शिराह (अलम नशरह) १२

मक्का में उतरी, इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। (ए पैग़म्बर) क्या हमने तेरा हौसला नहीं खोल दिया।(१) और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।(२) जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रक्खी थी।(३) और तेरा ज़िक्र ऊँचा किया।(४) सख़्ती के साथ आसानी भी है। (५) निस्सन्देह मुश्किल के साथ आसानी है।(६) तो अब तू फ़ारिग़ हुआ तो (इबादत में) मेहनत कर।(७) और अपने परवरदिगार की तरफ़ ध्यान दे।(८) [रुकू १ आयात ८]

—०—

९५ सूरे तीन २८

मक्का में उतरी, इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। अंजीर और जैतून की क़सम।(१) और तूरसीनोन (पहाड़) की (२) और इस शहर (मक्का) की क़सम जिसमें चैन है। (३) हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी सूरत में पैदा किया।(४) फिर हमने नीचे फेंक दिया।(५) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिए बहुत फल है। (६) तो इसके बाद कौन चीज है जिससे तू न्याय के दिन को झुठलाता है।(७) क्या ख़ुदा सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है ? (८) [रुकू १ आयात ८]

—०—

९६ सूरे अलक़ १

मक्का में उतरी, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। अपने परवरदिगार का नाम लेकर जिसने पैदा किया क़ुरान पढ़े चलो।(१) आदमी

को जमे हुए † लोहू से बनाया (२) पढ़ चलो तेरा परवरदिगार बड़ा करीम है।(३) जिसने क़लम के द्वारा विद्या सिखाई।(४) मनुष्य को वह बातें सिखाईं जो उसे मालूम न थीं। (५) मगर नहीं आदमी तो बड़ा सरकश है। (६) इसलिए कि अपने तईं ग़नी देखता है (७) (तुझ) अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटकर जाना है।(८) क्या तूने उस शख़्स को देखा जो मना करता है।(९) जब एक बन्दा नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है।(१०) भला देख तो अगर वह सच्ची राह पर हो।(११) या परहेज़गारी सिखाता है।(१२) क्या तूने देखा कि अगर वह झुठलाता और पीठ फेरता है ? (१३) क्या वह नहीं जानता कि ख़ुदा देख रहा है ? (१४) नहीं अगर वह बाज़ न आया तो हम उसको उसके पट्टे पकड़कर ज़रूर घसीटेंगे।(१५) झूठे गुनहगार के पट्टे।(१६) तो उसको चाहिए कि अपने साथ बैठने वालों को बुला ले।(१७) हम भी दोज़ख़ के फ़रिश्तों को बुलायेंगे।(१८) (हरगिज़ नहीं)। तू उसकी कही न मान, सिजदा कर और (ख़ुदा के) क़रीब हो।(१९) [रुकू १ आ. १४] ★ [सिजदा १४]

——०——

९७ सूरे क़द्र २५

मक्का में उतरी, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। हमने यह क़ुरान क़द्र की रात§ से उतारना शुरू किया है। (१) और तू क्या जाने क़द्र की रात क्या है।(२) क़द्र की रात हज़ार महीनों से बढ़कर है। (३) उसमें हर काम के लिए फ़रिश्ते और रूह अपने परवरदिगार की आज्ञा से उतरते हैं। (४) वह रात सलामती की है वह प्रातःकाल तक रहती है।(५) [रुकू १ आयात. ५]

——०——

† इस सूरत की पहली पाँच आयतें क़ुरान की सारी आयतों से पहले उतरीं।

§ यह नहीं बताया जा सकता कि कौन सी रात क़द्र की रात है। हाँ

९८ सूरे बय्यिनह १००

मदीना में उतरी इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जो लोग किताब वालों और शिर्क करने वालों में से इन्कारी हुए वे मानने वाले न थे। जब तक उनके पास कोई खुली हुई दलील न पहुँचे। (१) (और वह दलील यह थी कि) ख़ुदा की ओर से कोई पैग़म्बर आये और पवित्र किताब पढ़कर सुनाये।(२) उनमें पक्की बातें लिखी हों। (३) दूसरी किताब वालों ने दलील आये पीछे भेद डाला है।(४) हालाँकि (क़ुरान में भी पिछली किताबों की ही तरह) उनको (पैग़म्बर के द्वारा) यही आज्ञा दी गई कि पवित्र अल्लाह की ही बन्दगी की नीयत से एक तरफ़ होकर उसकी पूजा करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें। यही सही दीन है।(५) किताब वालों और शिर्क-वालों ज़कात में से जो लोग इन्कार करते रहे दोज़ख़ की आग में होंगे। हमेशा इसी में रहेंगे यह लोग सबसे बुरे हैं।(६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वही लोग सबसे अच्छे हैं।(७) इनका बदला इनके परवरदिगार के यहाँ रहने के बाग़ (बहिश्त) हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे ख़ुश और वे अल्लाह से ख़ुश। यह उनके लिए है जो अपने परवरदिगार से डरें।(८) [रुकू १ आ.८]

——:०:——

९९ सूरे ज़िलज़ाल ९३

मदीना में उतरी, इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जब ज़मीन अपने भूचाल से हिलाई जावे। (१) और ज़मीन अपना बोझ निकाल डाले।(२) और मनुष्य बोल उठे कि उसे क्या हो गया। (३) उसी

रमज़ान के अन्तिम सप्ताह में कोई एक रात ज़्यादातर मुसलमान मानते हैं।

दिन वह अपनी खबरें सुनायेगी।(४) इसलिए कि तेरा परवरदिगार उसको हुक्म भेजेगा।(५) उस दिन लोग जुदा-जुदा हालतों में लौटेंगे ताकि उनको उनके कर्म दिखलाये जायँ।(६) तो जिसने थोड़ी भी नेकी की वह उसको देखेगा।(७) और जिसने थोड़ी भी बुराई की वह भी उसको देखेगा।(८) [रुकू १ आयात ८]

---

१०० सूरे आदियात १४

मक्का में उतरी, इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। हाँफकर दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम।(१) जो फिर टाप मारकर आग निकालते हैं।(२) फिर सुबह के वक़्त छापा जा मारते हैं।(३) फिर वह उस वक़्त भी (दौड़-धूप से) ग़ुब्बार उड़ाते हैं।(४) फिर उसी वक़्त फ़ौज में जा घुसते हैं।(५) मनुष्य अपने परवरदिगार का बड़ा कृतघ्नी (नाशुक्रा) है।(६) और वह इसको ख़ूब जानता है।(७) और वह माल पर प्रेम करने में मज़बूत है।(८) तो क्या इनको मालूम नहीं जब वह मनुष्य जो क़ब्रों में हैं उठा खड़े किये जायेंगे।(९) और दिलों में जो बाते हैं वह ज़ाहिर कर दी जायेंगी।(१०) उस दिन उनका परवरदिगार ही उनसे बख़ूबी जानकार होगा।(११) [रुकू १ आयात ११]

---

१०१ सूरे क़ारिअ़ह ३०

मक्का में उतरी, इसमें १७ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। खड़खड़ाने वाली (१) खड़खड़ाने वाली क्या चीज़ है।(२) और तू क्या जाने खड़खड़ाने वाली क्या चीज़ है।(३) जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिंगों की तरह होंगे (४) और पहाड़ धुनी हुई ऊन के मानिन्द

हो जायेंगे।(५) तो जिसके कर्म भारी होंगे। (६) तो वह ख़ुशी की ज़िन्दगी में होगा।(७) और जिस किसी का वज़न हल्का होगा।(८) तो ठिकाना उसका हावियह होगा।(९) और तू क्या जाने वह (हावियह) क्या चीज़ है।(१०) वह (दोज़ख़ की) जलती हुई आग है।(११) [रुकू १ आयात ११]

——❀——

१०२ सूरे तकासुर १६

मक्का में उतरी, इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है। तुम्हारी बहुतायत की ख़्वाहिशों ने भूल में डाल रक्खा है।(१) यहाँ तक कि तुम क़ब्र में पहुँचो।(२) नहीं-नहीं तुमको मालूम हो जायगा।(३) फिर नहीं-नहीं तुमको मालूम हो जायगा।(४) बात यह है अगर तुम यक़ीन करना जानो।(५) तो तुम अवश्य दोज़ख़ को देख लोगे। (६) फिर ज़रूर उसे तुम यक़ीनी आँखों से देखोगे।(७) फिर उस दिन नियामतों के विषय में तुम से पूँछ-ताछ अवश्य होगी।(८) [रुकू १ आ.८]

————

१०३ सूरे असर १३

मक्का में उतरी इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (असर) ढलते दिन की क़सम। (१) आदमी घाटे में है।(२) मगर (वह नहीं) जो ईमान लाये और जिन्होंने सुकर्म किये और एक दूसरे को हक़ की शिक्षा देते रहे एक दूसरे को सब्र करने की शिक्षा देते रहे।(३) [रुकू १ आ. ३]

——❀——

१०४ सूरे हुमज़ह ३२

मक्का में उतरी, इसमें ९ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। हर ताना देने वाले और ऐब चुनने वाले की ख़राबी है।(१) जो माल जमा करता

और गिन-गिन कर रखता रहा ।(२) वह समझता है कि उसका माल हमेशा साथ रहेगा ।(३) नहीं वह तो जरूर जलती हुई आग में डाला जायगा । (४) और तू क्या जाने जलती हुई आग क्या चीज़ है ।(५) वह ख़ुदा की भड़काई हुई आग है । (६) दिलों तक की ख़बर लेगी ।(७) वह उनके ऊपर चारों तरफ़ से बन्द (घिरी) होगी ।(८) (आग के) बड़े-बड़े खम्भों की तरह पर ।(९)[रुकू १ आ.९]

——:०:——

१०५ सूरे फ़ील १९

मदीना में उतरी, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है ।(ऐ पैग़म्बर) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ कैसा बर्ताव किया§ ।(१) क्या उसने उनके दाँव बेकार नहीं कर दिये ।(२) और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे ।(३) जो उन पर कंकड़ की पथरियाँ फेंकते थे ।(४) यहाँ तक कि उनको खाये हुए भूसे की तरह कर दिया । (५) [रुकू १ आयात ५]

——०——

१०६ सूरे क़ुरैश २९

मक्का में उतरी इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं ।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है । इस वास्ते कि क़ुरैश को मिला रक्खा चाव पैदा किया । (१) जाड़े और गर्मी के

§ रसूलुल्लाह की पैदायश से पहले, हब्शा के बादशाह के एक गवर्नर ने यमन में 'सुनआ' एक शानदार गिरजा बनवा कर यह ख्वाहिश की कि काबा की इज़्ज़त घट कर 'सुनआ' की हो जाय। इसी सिलसिले में उसने काबा को मिटाने के लिए मक्का पर चढ़ाई की । उसकी फ़ौज में बड़े-बड़े हाथी भी थे । किन्तु ख़ुदा के फ़ज़ल से रास्ते ही में चिड़ियों के गोल के गोल आये और उनकी कंकड़ियों की मार से ही लश्कर खत्म हो गया ।

सफ़र में उन्हें चाव दिलाया।(२) तो उनको चाहिए इस घर (काबा) के मालिक की पूजा करें।(३) जिसने उनको भूख में खिलाया और उनको (सफ़र के) डर से बचाया।(४) [रुकू १ आयात ४]

१०७ सूरे माऊन १७

मक्का में उतरी, इसमें ७ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर) क्या तूने उसको देखा जो क़यामत के न्याय को झुठलाता है।(१) और यह ऐसा मनुष्य है जो अनाथ को धक्के दे देता है। (२) और (ग़रीब) के खिलाने का बढ़ावा नहीं देता। (३) तो उन नमाजियों की ख़राबी है। (४) जो अपनी नमाज़ की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं।(५) जो लोगों को (अपने नेक काम) दिखलाते हैं।(६) और रोज़मर्रह की बर्तने की चीज़ों को भी (देने में) इन्कार करते हैं।(७) [रुकू १ आयात ७]

१०८ सूरे कौसर १५

मक्का में उतरी, इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं.

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। हमने तुझे कौसर (यानी बहुतायत से चीज़ें) दीं। (१) बस अपने परवरदिगार की नमाज़ पढ़ और बलि (क़ुर्बानी) दे। (२) तेरे दुश्मन का नाम-लेवा न रहेगा।(३) [रुकू १ आयात ३]

१०९ सूरे काफ़िरून १८

मक्का में उतरी, इसमें ६ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहरबान है। तू कह कि काफ़िरों।(१) मैं उन बुतों की पूजा नहीं करता जिनकी तुम पूज

करते हो।(२) और जिसकी (ख़ुदा की) मैं पूजा करता हूँ तुम भी उसकी पूजा नहीं करते।(३) और (आगे भी) न मैं उनकी पूजा करूँगा जिनकी तुम पूजा करते हो।(४) और न तुम उसकी पूजा करोगे जिसकी मैं पूजा करता हूँ। (५) तुमको तुम्हारा दीन और मुझको मेरा दीन।(६) । [रुकू १ आयात ६]

———

११० सूरे नस्र ११४

मदीना में उतरी, इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। जब कि ख़ुदा की मदद से फ़तह आई।§ (१) और तूने लोगों को देखा कि ख़ुदा के दीन में गिरोह के गिरोह दाखिल हो रहे हैं।(२) तो अपने परवरदिगार की प्रशंसा के साथ तस्बीह से याद करने में लग जा और उससे पापों की क्षमा माँग निस्सन्देह वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है।(३) [रुकू १ आयात ३]

——०——

१११ सूरे लहब ६

मक्का में उतरी इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। अबूलहब † के दोनो हाथ टूट गये और वह नष्ट हुआ।(१) न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई। (२) वह जल्दी ही लौ उठती हुई आग में दाखिल होगा। (३) और उसकी बीबी

---

§ मदीने में हिजरत के समय रहने पर, बाद में मक्के के सरदारों से हुई व फ़तह हासिल हुई।

† हज़रत रसूलुल्लाह के चचा अबूलहब और उनकी बीवी जो इनके नाम के दुश्मन थे, दुनिया में तबाह हो गये उसी का ज़िक्र है।

भी जो ईंधन ढोती (फिरती) है।(४) उसकी गर्दन में खजूर की रस्सी होगी।(५) [रुकू १ आयात ५]

---

११२ सूरे इख़लास २२

मक्का में उतरी इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर) कहो कि वह अल्लाह एक है।(१) अल्लाह बेपरवाह है।(२) न कोई उससे पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ।(३) और न कोई उसकी समता का है।(४) [रुकू १ आयात ४]

---

११३ सूरे फ़लक़ २०

मदीना में उतरी, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो रहमवाला मेहर्बान है। (ऐ पैग़म्बर) कहो कि सुबह के मालिक से शरण माँगता हूँ।(१) तमाम सृष्टि की बुराइयों से।(२) और अँधेरी रात की बुराई से जब अँधियारी छा जाये।(३) और गंडों पर फूँकने वालों की बुराई से।(४) और ईर्ष्या करने वालों की बुराई से जब ईर्ष्या करने लगें। (५) [रुकू १ आ. ५]

---

११४ सूरे नास २१

मदीना में उतरी, इसमें ६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो मेहरबान है।(ऐ पैग़म्बर) कह कि मैं आदमियों के परवरदिगार की शरण माँगता हूँ।(१) लोगों के मालिक की।(२) लोगों के पूज्य की।(३) उसकी (शैतान की) बुराई से जो सनकारे और छिप जावे।(४) वह जो लोगों के दिलों में (बुरे) ख़्याल डालता है। (५) जिन्नों या आदमियों से (इनकी बुराइयों से पनाह माँगता हूँ) । (६) [रुकू १ आयात ६]

—समाप्त—

छप रहा है ! छप रहा है ! छप रहा है !

.कुरान शरीफ़ मूल-टीका सहित

हिन्दी लिपि में

★ मूल अरबी आयतें हिन्दी अक्षरों में ऐसी पद्धति से लिखी गई हैं कि ठीक अरबी शैली में पढ़ा जा सके।

★ स्वाद, से, सीन; तो, ते; जीम, ज़ाल, ज़े, ज़ो, ज़्वाद; हे, बड़ी हे जैसे एक ही समान मिलते जुलते अक्षरों को अलग अलग चिह्न देकर स्पष्ट किया गया है। ताकि पढ़ने-समझने में धोखा न हो।

★ साथ में सरल हिन्दुस्तानी ज़बान में अनुवाद तथा टिप्पणी (फुटनोट) भी हैं।

★ इस सजिल्द बड़े आकार के ग्रंथ का हदिया (नज़र) २५) रु० से कम न होगा। डाक खर्च ३) मिल कर २८) रु० होगा। २०) पेशगी भेज कर नाम रजिस्टर करा लेने पर छपते ही इसकी प्रति रजिस्ट्री द्वारा खरीदार को भेज दी जाय गी। जो सज्जन कम से कम ६ माह का इन्तज़ार कर सकें वे ही पेशगी भेजने की कृपा करें।

पता— श्री प्रभाकर साहित्यालोक

रानीकटरा, लखनऊ

—: हिन्दी में 'इस्लामी साहित्य' :—

तर्जुमा क़ुरान शरीफ़ हिन्दी मू० ८)

विश्व के एक बड़े जन-समुदाय का सर्वमान्य ईश्वरीय धर्मग्रन्थ। आज से १४०० वर्ष पूर्व, अरब मरुस्थल की अपौरुषेय क्रान्ति, तत्कालीन समाज का जीता-जागता चित्र, रूढ़ियों को हटाकर सुधार की ओर प्रगति आदि, सभी मुस्लिमों तथा ग़ैर-मुस्लिमों के पढ़ने-देखने योग्य संपूर्ण नागरी अनुवाद। मूल्य आठ रुपया मात्र। डाक-व्यय अलग।

संक्षिप्त जीवन-चरित्र

हज़रत अबूबकर ०.५० न० पै०   हज़रत उमर ०.५० न० पै०
" उस्मान ०.५० न० पै०   " अली ०.५० न० पै०
पारह अम्म (अरबी-मूल देवनागरी अक्षरों में) ०.५० न० पै०
क़ुरान पर एक दृष्टि ०.३१ न० पै०

अरब एक संक्षिप्त इतिहास—प्रो० हिट्टी मू० ८)

मुहम्मद साहब से पूर्व और पश्चात् अरब की सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति; इस्लाम का उदय; एशिया, योरोप और अफ्रीका के सुदूर अधिकांश भूखण्डों तक उसका चरमोत्कर्ष और फिर विलासिता व घरेलू युद्धों और नृशंस रक्तपात में पड़कर विस्तृत अरब साम्राज्य और खलीफाओं का पतन और पराभव—इन सब का जीता-जागता चित्र, प्रोफेसर हिट्टी के अँग्रेजी में प्रकाशित "शार्ट हिस्ट्री आफ़ अरब" के इस हिन्दी अनुवाद मे पाठकों को प्राप्त होगा। हिन्दी जगत् में इतिहास का यह अध्याय अब तक अप्राप्य था।

एशिया भूखण्ड की सभ्यता और संस्कृति एवं प्राचीन इतिहास के विद्यार्थियों के लिए तो यह एक अनिवार्य पठनीय ग्रंथ प्रकाशित हुआ है। मूल्य ८) मात्र, डा० खर्च पृथक् १)

श्री प्रभाकर साहित्यालोक, २३, श्रीराम रोड, लखनऊ

